वर्ष १
अङ्क ४

अर्जुन

सचित्र-साप्ताहिक

श्रद्धानन्द अंक

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम् ।

सर्वत्याग



वीर श्रद्धानन्द

वार्षिक मूल्य ३।।]   सम्पादक— { इन्द्र विद्यावाचस्पति, कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार }   [एक अंक का मूल्य -)

विषय-सूची

विषय	लेखक	पृष्ठ-संख्या
१ सम्पादकीय		३
२ दयालु हृदय श्रद्धानन्द	श्री सी० एफ० एन्डरूज	५
३ अमर बलिदान	श्री राजेन्द्रप्रसाद	५
४ म० मुन्शीराम के भव्य-दर्शन		५
५ योग्य देशभक्त	श्रीगोपालकृष्ण देवधर, पूना	५
६ ओ दुर्गम-पथ के नवगामी ! (कविता)		६
७ स्वामी जी का एक पत्र		७
८ सत्य और श्रद्धा का मूर्तरूप	श्री रवीन्द्रनाथ टागोर	७
९ आर्य-संस्कृति का निर्माता	श्री कोंडा वेंकटपय्या	८
१० त्याग और साहस का अवतार		८
११ सत्य और उच्चता की साक्षात मूर्ति	डा० सत्यपाल	८
१२ अमर कीर्ति चिरंजीवी हो	श्री हरदयाल नाग	८
१३ चित्रावली		९
१४ वीर और महान्	श्रीमती सरोजिनी नायडू	१०
१५ निस्वार्थ संन्यासी	श्री सत्यमूर्ति एम. एल. ए.	१०
१६ आदर्श आचार्य और समाजसुधारक	श्री धर्मदेव विद्यावाचस्पति	११
१७ कर्तव्यनिष्ठ संन्यासी	कुमार गंगानन्दसिंह	१२
१८ सत्याग्रह और बारडोली	श्री वैजनाथ महोदय	१३
१९ सच्चा कर्मयोगी श्रद्धानन्द	प० दीनदयालु शास्त्री	१५
२० सर्वस्व-त्यागी संन्यासी	श्री श्रीप्रकाश एम. एल. ए.	१५
२१ स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्यस्मृति	श्री वेंकटेशनारायण तिवारी	१५
२२ साहित्य-समालोचन		१६
२३ अपराधी कौन ? (धारावाही उपन्यास)	श्री देव	१७
२४ किसान ही भारत की संस्कृति हैं		१८
२५ चित्रावली		१९
२६ आदर्श शिक्षा-विशेषज्ञ	प्रो० एस. एन. फैरवानी	२०
२७ भारत का सेवक	श्री मोहनलाल सक्सेना	२०
२८ भारत का पंचवर्षीय आयोजन	श्री चन्द्रराज भंडारी	२१
२९ स्वामी श्रद्धानन्द	श्री धर्मवीर वेदालंकार	२३
३० सप्ताह की हलचल		२५
३१ सप्ताह की डायरी		२६

अर्जुन

रविवार, ता० २५ दिसम्बर १९३४ ई०

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

विश्वास का पुजारी

लोग प्रायः आश्चर्य किया करते हैं कि स्व० श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी अपने लगभग ४५ वर्ष के जीवन में इतनी भिन्न-भिन्न संस्थाओं में कार्य कैसे किया? फिर वह भिन्न-भिन्न संस्थायें भी ऐसी कि एक दूसरे से सर्वथा अलग और कहीं-कहीं परस्पर विरुद्ध प्रतीत होती हैं।

एक समय ऐसा था कि दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मसजिद के मिम्बर पर व्याख्यान के लिये खड़ा करके दिल्ली के मुसलमानों ने एक आर्य संन्यासी को अद्भुत सम्मान दिया था। दूसरे समय उन्हीं दिल्ली के मुसलमानों ने उसी आर्य-संन्यासी को इस्लाम का कट्टर दुश्मन समझा, यहां तक कि उन्हीं में से एक ने उन्हें अपनी गोली का निशाना बना दिया। यह सिद्धान्त सर्वसम्मत है कि प्रेम से प्रेम और द्वेष से द्वेष की भावना पैदा होती है। पहली घटना सूचित करती है कि श्री स्वामी जी को मुसलमानों से इतना प्रेम था कि मुसलमान उन्हें अपना लाडला नेता समझते थे, तो दूसरी घटना से प्रतीत होता था कि मुसलमानों के चित्त में उनकी ओर भयानक अविश्वास का भाव पैदा हो चुका था।

एक समय हम श्री स्वामी जी को आर्यसमाज के प्रचार कार्य में सम्पूर्ण शक्ति का व्यय करते देखते हैं, तो दूसरे समय उन्हीं को हम आर्यसमाज के क्षेत्र को अत्यन्त संकुचित बतला कर उसमे असन्तोष प्रकट करता हुआ पाते हैं।

समय आता है कि श्री स्वामी जी कांग्रेस के अग्रणियों में गिने जाते हैं। मार्शल-ला की गहरी चोट से व्याकुल पंजाब में कांग्रेस का अधिवेशन करना श्री स्वामी जी का ही काम था। वह उस समय महात्मा गांधी की दाईं भुजा समझे जाते थे। कुछ वर्ष पीछे उनके हृदय में कांग्रेस कार्यक्रम असन्तोष पैदा हुआ तो उससे त्यागपत्र देकर अलग हो गये।

आपने दलितोद्धार सभा बनाकर हरिजनोद्धार का श्रीगणेश किया। जब आगरा में शुद्धि का कार्य प्रारम्भ हुआ तो आप वहां गये और शुद्धि की बागडोर को सम्भाला। गुरुकुल विश्वविद्यालय के लिये आपने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। परन्तु जब देखा कि उसके संचालकों की और उनकी नीति पर मतभेद है तो गुरुकुल को छोड़ कर दिल्ली चले आये। जब शुद्धि-सभा के कार्य को अनुदार धारा में बहते देखा तो उसे भी छोड़ कर समाज-सेवा का स्वाधीन मार्ग ग्रहण कर लिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री स्वामी जी ने अनेक पहले से विद्यमान संस्थाओं के साथ कार्य किया, अपने ढंग पर कार्य करने के लिये कई नई सार्वजनिक संस्थाओं का निर्माण किया और समय आने पर उन संस्थाओं को छोड़ कर दूसरे क्षेत्र में प्रवेश करने में भी संकोच नहीं किया।

एक पक्षपात-हीन दर्शक, जिसने श्री स्वामी जी के व्यक्तित्व को भली प्रकार नहीं समझा है इस विवेचना से घबराउ ठेगा और सोचेगा कि शायद उनके जीवन में, और विचारों में अस्थिरता का अंश काफी था परन्तु असलीयत यह नहीं है। इस अनेक संस्था-विचरण की घटना की तह में कौनसी वस्तु काम करती है यह जानने के लिये हमें यह देख लेना चाहिये कि श्री स्वामी जी के सम्पूर्ण सार्वजनिक जीवन का प्रेरक कारण और पथ-प्रदर्शक कौनसा सिद्धान्त था, और उनके कार्य करने का ढंग क्या था?

श्री स्वामी जी के सारे सार्वजनिक जीवन को हम एक ही लक्ष्य की पूर्ति के लिये एक लम्बी कुरबानी कह सकते हैं। वह लक्ष्य क्या था? श्री स्वामी जी का विश्वास था कि आर्य-जाति और आर्यावर्त का भविष्य बहुत उज्ज्वल और आशामय है। वह आर्य-जाति को द[illegible]र निर्दोष देखना चाह[illegible], संसार में बसने वाली अन्य जातियों के बराबर का देखना चाहते थे। आर्यावर्त को अपनी मातृ-भूमि समझने वाली जाति उनके लिये आर्य-जाति थी, इस प्रकार उनके जीवन का प्रधान लक्ष्य आर्य-जाति और आर्यावर्त को प्रबल और स्वाधीन बनाना था।

इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये ही उनका सारा जीवन व्यतीत हुआ। जिधर उन्हें आवश्यकता प्रतीत हुई, उधर ही वह झुक पड़े। जो निर्बलता उन्हें सबसे अधिक हानिकारक मालूम हुई, वह उसी के निवारण के लिये लग गये, संस्था को ग्रहण किया और छोड़ा। नई संस्थायें बनाईं और त्याग दीं। यदि उन्होंने किसी संस्था को अपने लक्ष्य की पूर्ति में सहायक पाया तो उसे अपना लिया, और यदि उसे निकम्मा पाया तो छोड़ दिया। वह संस्थाओं के गुलाम नहीं थे, संस्था उनके लिये साधन थी, उद्देश्य थी। उनका व्यक्तित्व इतना बड़ा था, कि वह किसी एक संस्था के डिब्बे में बन्द नहीं किया जा सकता था। वह संस्थाओं के बन्धनों से अधिक महान थे। संस्थायें उनकी औज़ार थीं, वह संस्थाओं के औज़ार नहीं थे।

उनके जीवन का यही लक्ष्य था कि आर्य-जाति अपने सब दोषों को भस्मप्राय करके गौरव और स्वाधीनता के ऊंचे पद पर विराजमान हो। यह उनका विश्वास था कि आर्य-जाति का भविष्य चमकीला है। इस विश्वास पर उन्होंने अपनी सारी शक्ति, सारी सम्पत्ति और सारी विभूति को लगा दिया। यह उनकी विशेषता थी। वह कभी आधे दिल से किसी वस्तु को अनुभव नहीं करते थे। जब अनुभव करते थे तो पूरे दिल से, और जब उसके लिये प्रयत्न आरम्भ करते थे तो सारी शक्ति से। जिस संस्था में काम किया, सारी शक्ति लगा कर किया। जब उसे असमर्थ पाकर छोड़ा तो पूरी तरह छोड़ दिया, क्यों कि उनका लक्ष्य वह संस्था नहीं था, अपितु आर्य-जाति का विशाल भविष्य था।

बात यह है कि वह विश्वास के बन्दे थे। जो लोग विश्वास की महिमा को नहीं जानते, उन्हें स्वामीजी का जीवन परस्पर विरोधों से पूर्ण दिखाई देगा, परन्तु वस्तुतः उसमें एक सुन्दर समानता पाई जाती है। जब मुसलमान स्वामी जी से प्रेम करते थे, तब उनके हृदय में आर्यत्व से कुछ कम प्रेम नहीं था, और जब मुसलमान उनकी जान के प्यासे थे, तब उनके हृदय में इस्लाम से शत्रुता नहीं थी। वह जिस समय जैसा अनुभव करते थे, वैसा ही कहते और वैसा ही करते थे। भय उन्हें किसी भाव को प्रकट करने या कार्य को कर डालने से नहीं रोक सकता था। संसार को वह अपने विश्वास पर ठुकरा सकते थे, यही कारण था कि सामान्य विवेचक को उनके जीवन में परस्पर विरोध दिखाई देता है, क्यों कि सामान्यविवेचक का दिमाग संस्थाओं की सीमा को पार नहीं कर सकता, वह संस्था को साधन नहीं, लक्ष्य ही मानता है। जो व्यक्ति संस्था और आदर्श में भेद नहीं कर सकता, वह श्री स्वामी जी के जीवन के रहस्य को भी नहीं जान सकता।

सम्पादकीय विचार

हिन्दुस्तानियों के लिये स्थान नहीं

दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानी निवासियों की स्थिति बिगड़ती ही जा रही है। कहने को तो दक्षिण अफ्रीका और ब्रिटिश साम्राज्य के राजनीतिक संसार को यही विश्वास दिलाते हैं कि भारतवासियों और गोरों में भेदभाव कम हो रहा है और परस्पर विरोध कम हो रहा है। उस दिन दक्षिण अफ्रीका के प्रसिद्ध राजनीतिक जनरल स्मट्स ने इङ्गलैंड से व्याख्यान देते हुए कहा था कि "यह संसार तभी रहने योग्य हो सकता है, यदि इस में निवास करने वाले पुरुष और स्त्री स्वाधीन हो

सकें, उन्हें केवल क्रिया और भाषण की ही स्वाधीनता न हो परन्तु एक सुखी जीवन व्यतीत करने का भी सुअवसर प्राप्त हो' कितना सुन्दर वाक्य है, परन्तु दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले भारतवासियों के साथ गोरे निवासियों की ओर से जो सलूक हो रहा है, उसे देखें तो वह कितना भद्दा है। पुरानी शिकायतें तो अभी चली ही जाती हैं, वर्षों की लीपा-पोती में भी वह दूर नहीं हुई। नई बात यह है कि जौन्सबर्ग में लारी चलाने वाली एक कम्पनी को लाइसेन्स देने वाले महकमे ने सूचना दी है कि केवल उन्हीं कम्पनियों को लारी चलाने का लाइसेन्स दिया जा सकता है जो दो तरह चलावें। एक फर्स्टक्लास कही जायेंगी और दूसरी सैकन्ड क्लास। फर्स्ट क्लास पर स्पष्ट शब्दों में लिखा होना चाहिये कि वह केवल गोरों के लिये है और सैकेन्ड क्लास पर लिखा होना चाहिये कि वह कालों के लिये है। गोरों की लारी या कार में काला आदमी न बैठ सकेगा। जनरल स्मटस का पेश किया हुआ आदर्श कितनी सुन्दर रीति से व्यवहार में लाया जा रहा है। एक लेखक ने कहा है कि बड़ा राजनीतिज्ञ वह है जो कहे वैसा जैसा कहना चाहिये और करे वैसा जैसा करना चाहिये। जनरल स्मटस भी बहुत बड़े राजनीतिज्ञ हैं। बात यह है कि भारतवासी जब तक अपने देश में ही राजनीतिक गुलाम हैं, तब तक उन्हें देश से बाहिर स्वतन्त्र पुरुषों के से सलूक की आशा नहीं रखनी चाहिये। ब्रिटिश साम्राज्य में हो या उसके बाहिर भारतवासी केवल तभी सम्मान की दृष्टि से देखे जायेंगे जब अपने देश में वह सम्मानित होंगे। जब तक वह देश में परतन्त्र हैं, तब तक मान लेना चाहिये कि पृथ्वी पर किसी देश में भी उनके लिये आदर का स्थान नहीं है।

हैदराबाद और आर्यसमाज

गत सप्ताह ही में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री नारायण स्वामी जी ने हैदराबाद रियासत और आर्य समाज के सम्बन्ध में दो वक्तव्य प्रकाशित किये हैं। हमें वह दोनों ही परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं। एक बयान में आपने आर्य-जगत् को विश्वास दिलाया था कि अब उस रियासत में आर्य समाज के प्रचार कार्य पर कोई पाबन्दी नहीं रही। दूसरे बयान में आप फरमाते हैं कि प० रामचन्द्र आर्योपदेशक और प० चन्द्रभान जी उपदेशक के सम्बन्ध में देशनिकाले की जो आज्ञायें दी गई थीं वह अभी तक वापिस नहीं ली गईं। रियासत में आर्यसमाज पर रुकावटों के सम्बन्ध में वर्तमान आन्दोलन का अन्त प० रामचन्द्र जी के वियोग और फिर पाबन्दी लगने से ही तो हुआ था। वह पाबन्दी जैसी की तैसी विद्यमान है। तब यह कैसे कहा जा सकता है कि अब रियासत में आर्यसमाज के प्रचार पर कोई पाबन्दी नहीं रही यह ठीक है कि अभी उस दिन सार्वदेशिक सभा के कुछ अधिकारी रियासत में गये थे और उन्होंने मोक्ष परमात्मा के स्वरूप और डार्विन के विकासवाद पर कुछ व्याख्यान दिये थे, जिन्हें रियासत ने नहीं रोका परन्तु उससे यह तो सिद्ध नहीं होता कि रियासत में आर्यसमाज के प्रचार पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई गई। उपदेशकों पर पाबन्दी लगाई गई थी और वह अब तक विद्यमान है। हमारी राय में तो सार्वदेशिक सभा ने आर्यजगत् को निराधार आश्वासन देने में बड़ी भूल की है। आर्यसमाज के प्रचार पर बाधा पड़ने से जो उत्साह और आवेश आर्यसमाज में पैदा हुआ था वह तो झूठे आश्वासन के जल से शान्त हो गया, और जो पाबन्दियां थीं, वह अब तक विद्यमान हैं। यदि सार्वदेशिक सभा के महानुभाव हमें यह बतला सकें कि हैदराबाद रियासत में वह कौन कौनसी पाबन्दियें आर्य समाज के प्रचार पर थीं, जो अब हटाली गई हैं तो हम उनके कृतज्ञ होंगे। हम तो समझते हैं कि कानूनी तौर पर खास आर्यसमाज पर पहले भी कोई पाबन्दी नहीं थी जो हटाई गई हो और व्यवहार में आर्य समाज पर जबरदस्त पाबन्दी लगाई गई थी, जो अब तक विद्यमान है। या तो आन्दोलन निर्मूल था, या आश्वासन निराधार है।

—

सम्मेलन का सभापतित्व

महात्मा गांधी इन्दौर में होने वाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन का सभापतित्व स्वीकार नहीं कर सके, अब स्वागतसमिति ने पूज्य मालवीय जी का निर्वाचन किया है। समस्त हिन्दी संसार इस निर्वाचन का स्वागत करेगा। पूज्य मालवीयजी के हिन्दी पर बड़े उपकार हैं। महात्मा जी से दूसरे दर्जे पर यदि भारत के किसी नेता ने हिन्दी प्रचार को अपना विशेष लक्ष्य बनाया है, तो वह मालवीय जी हैं, हम इस चुनाव का अभिनन्दन करते हैं।

—

शेखावाटी के समाचार

शेखावटी में किसानों पर जमींदारों के अत्याचारों के जो समाचार आ रहे हैं वह सनसनी पैदा करने वाले हैं। आश्चर्य है कि जयपुर की रियासत इस विक्षोभ को दबाने में बहुत सफल नहीं हुई। जयपुर के शासन में कहीं न कहीं कोई पेच अवश्य ढीला है। नहीं तो वहां प्रजा के परस्पर संघर्ष की घटनाओं का ऐसा तांता न लगा रहता। हमारे कुछ आलोचकों ने लिखा है कि हम ठिकानदारों के अत्याचारों की कहानी को बढ़ा कर प्रकाशित कर रहे हैं। सम्भव है, हमारे संवाददाता के भेजे हुए समाचारों में किसी हद तक अत्युक्ति हो परन्तु हमें जो प्रतिवाद प्राप्त होते हैं, उन्हें हमने कहीं अधिक अयुक्तिपूर्ण पाया है। प्रजा के दो हिस्सों में देर तक ऐसा झगड़ा बना रहे और एक हिस्सा दूसरे हिस्से पर ज्यादती करता रहे, यह रियासत के शासन पर गहरा धब्बा है। जयपुर के शासक को किसी श्रेणी का पक्षपात न करके न्याय करना चाहिये। जबरदस्त तो अपनी रक्षा स्वयं कर सकता परन्तु निर्बल तो अपनी रक्षा के लिये शासक का मुंह ताकता है। शेखावाटी के किसान भी निर्बल होने के कारण शासक की बाट जोह रहे हैं, हमें आशा है, कि जयपुर के शासकों की नींद खुलेगी और वह निर्बल की रक्षा के लिये अपना हाथ बढ़ायेंगे। निर्बल की आह बहुत बुरी होती है, वह बड़े-बड़े विशाल पर्वतों को गिरा देती है। जयपुर रियासत के कर्णधारों को शीघ्र ही सचेत होना चाहिये।

अश्लीलता के विरुद्ध जिहाद

सङ्गीत और चित्रकला मनुष्य के हृदय के उच्चतम उद्गार हैं। मनुष्य अपने हृदय के भावों को जब उनके सुन्दर और उग्र रूप में प्रकाशित करना चाहता है, तब सगीत और चित्र कला का प्रयोग करता है। यही कारण है कि जिन व्यक्तियों ने परमात्मा या प्रकृति की सुन्दरता में अपने को तल्लीन कर दिया है, वह संगीत और चित्र द्वारा ही अपने हृदय को स... प्रकाशित कर... ।

आश्चर्य की बात यही है कि मनुष्य के उच्चतम भावों को प्रकाशित करने का जो उपाय है उसी को मनुष्य अपने गन्दे और नीच भावों के कारण कलुषित कर देता है। यह समाचार पढ़ कर चित्र और सङ्गीत से प्रेम रखने वालों को हर्ष होगा कि भारत-सरकार असेम्बली में शीघ्र ही ऐसा कानून पेश करेगी, जिससे समाचार-पत्रों, हैण्डबिलों अथवा पोस्टरों द्वारा ही निकाले गये अश्लील विज्ञापन बन्द हो जायगे। इससे आशा है कि गन्दे फिल्मों का प्रचार रुक जायेगा, और फ़िल्म बनाने वाली कम्पनियां गन्दे फिल्म बनाने बन्द कर देंगी। आशा है, इस नये कानून से एक उपयोगी कारीगरी, जो शिक्षा की सहायिका हो सकती है, वह जनता की गिरावट का कारण बनने से बच जायगी।

—:—

दयालु-हृदय श्रद्धानन्द

(ले०—श्री० सी० एफ० एन्डरूज)



श्री सी० एफ० एण्डरूज

स्वामी श्रद्धानन्द मेरे घनिष्ठ मित्र थे। जितना प्रेम मैं उन्हें करता था, उतना बहुत कम को इस जीवन में मैंने किया है।

हमारी मित्रता में कभी अन्तर नहीं आया। स्वामी जी के श्रेष्ठ चरित्र की महत्ता के कारण ही उनके प्रति मेरा प्रेम इतना सच्चा और गहरा हुआ। स्वामी जी भी मुझे स्नेह करते थे—यह जान कर मुझे बहुत हर्ष होता था।

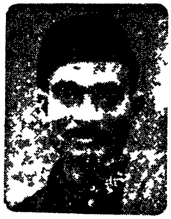
इस बलिदान दिवस पर मुझे कुछ लिखने के लिये कहा गया है। आज मैं वर्धा में महात्मा गान्धी के साथ बैठा हुआ हूं। आज मैं उस दिन के बाद के पिछले २० सालों पर दृष्टि-निक्षेप कर सकता हूं, जिस दिन मैंने महात्मा गान्धी को अपने मित्र महात्मा मुन्शीराम का परिचय दिया था। हम उस समय दक्षिणी अफ्रीका में थे। गुरुकुल और महात्मा मुन्शीराम के प्रति मेरे उत्साह पर महात्मा गान्धी मुस्कराये थे। वह भी उस समय की प्रतीक्षा में थे, जब कि वह गुरुकुल पहुंच कर उस महान् आत्मा के दर्शन का आनन्द स्वयं उठावें। हम दोनों ने एक-दूसरे को वचन दे दिया था कि यदि सम्भव हो, तो हम दोनों इकट्ठे ही महात्मा मुन्शीराम का दर्शन करें।

इस वार्षिक पुण्य-तिथि पर मैं जो सन्देश देना चाहता हूं, वह बहुत ही सरल है। मुझे आशा है कि यह आर्य-समाज के प्रत्येक सदस्य तक और उनके द्वारा शेष भारत तक पहुंच जायगा। मैं तो यह भी चाहता हूं कि यह सन्देश उससे भी परे—बृहत्तर भारत तक—समुद्रों से पार—पहुंच जाय, जहां सुन्दर कार्य करते हुए मेरे अनेक आर्य-समाजी मित्र विद्यमान, हैं जो मुझे केवल इसलिये प्रेम करते हैं, क्यों कि मैं स्वामी जी को प्रेम करता था।

मेरा सन्देश यह है कि स्वामीजी का हृदय बहुत दयालु था। जब भी दरिद्रों, दलितों और विपत्तिग्रस्तों के नाम पर उनसे अपील की जाती थी, तो उनका हृदय द्रवित हो जाता था। इस लिये इस वार्षिक स्मृति के दिन स्वामी जी को प्यार करने वालों में से प्रत्येक के हृदय में पहला विचार यही उठना चाहिये कि वह दरिद्रों की सेवा करे, जिन्हें वह प्रेम करते थे। सबसे अधिक हमें उन हरिजनों की—परमात्मा के पुत्रों की—चिन्ता करनी चाहिये, जिनके लिये उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था।

अमर बलिदान

(ले०—राष्ट्रपति बा० राजेन्द्रप्रसाद)



श्री० बा० राजेन्द्रप्रसाद

स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदर्श जीवन में बलिदान की भावनाएं प्रारम्भ से ही व्यक्त हो चुकी थीं। उनके द्वारा स्थापित किया गया 'गुरुकुल' देश की सब से पहले स्थापित की गयीं संस्थाओं में से वह महान संस्था है जिसे सार्वजनिक सहयोग भली-भांति प्राप्त है और देश के विद्यालयों में आज वह एक सफल राष्ट्रीय विद्यालय है। हिन्दी भाषा तथा साहित्य में स्वामी जी को विशेष अभिरुचि थी। आर्यसमाज के महान स्तम्भ होते हुए स्वामी जी ने अस्पृश्यता निवारण के प्रोग्राम को केवल अपनाया ही नहीं था वरन उसे कार्यरूप में भी परिणत किया था। सामाजिक सुधारों के कार्यों को उन्हों ने निर्भयता पूर्वक अपने हाथों में लिया। वास्तव में वह अग्रगण्य समाज सुधारक थे। शुद्धी-आन्दोलन पर तो उन्होंने अपना अमूल्य जीवन ही न्यौछावर कर दिया। उनके साहसी तथा प्रतिभाशाली जीवन की अपेक्षा उनकी चिरस्मरणीय मृत्यु (अमर बलिदान) देश के युवकों के लिये कहीं अधिक उत्साह वर्धक सिद्ध होनी चाहिये।

—:—

म० मुन्शीराम का भव्य दर्शन



"एक महान् भव्य और शानदार मूर्ति जिस को देखते ही उसके प्रति आदर का भाव पैदा होता है, हमारे आगे हम से मिलने के लिये आती है। आधुनिक चित्रकार ईसा मसीह का चित्र बनाने के लिए उसको अपने सामने रख सकता है और मध्य-कालीन चित्रकार उसको देख कर सन्त पीटर का चित्र बना सकता है। यद्यपि उस मछियार की मूर्ति के अपेक्षा यह मूर्ति कहीं अधिक भव्य है, प्रभावोत्पादक है।"

—रम्जे मेकडानल्ड

योग्य देश-भक्त

(ले०—श्री ०गोपालकृष्ण देवधर, प्रधान—सर्वेण्ट्स आव इण्डिया)

स्वामी श्रद्धानन्द जी मेरे निजी मित्र थे और जब उनका गुरुकुल कांगड़ी आरम्भिक अवस्था में ही था, तभी सन १६०४ में मुझे उनके साथ रहने का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ था। स्वामी जी ने अपना जीवन देश की सेवा पर निछावर कर दिया था और इसी कारण उनके जीवन तथा कार्य के विषय में लिखते हुए मुझे प्रसन्नता होती है। स्वामी जी के विषय में अपने निजी घनिष्ठ ज्ञान के आधार पर कह सकता हूं कि उनका जीवन आदर्श था तथा धार्मिक और सामाजिक सुधारों के लिये उनका उत्साह भारत के एक योग्य देश-भक्त पुत्र के अनुरूप ही था।

मैं श्रद्धानन्द बलिदान-जयन्ती उत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हूं।

—:—

स्वामी जी का मिशन आर्य-समाज के आदि सिद्धान्तों से ऊंचा उठ कर उस स्थान पर पहुंच चुका था कि जहां पर समाज नाम का मर्ज रहता ही नहीं।



ओ दुर्गम पथ के नवगामी !

(१)
ओ दुर्गम पथ के नवगामी !
ओ महामहिम ! ओ निष्कामी !
ओ वन्दनीय ! ओ कृती, कुशल !
ओ अग जग के हित हितकामी !

(२)
सून बीहड़ में यह उपवन !
थी लगन तुम्हारी लासानी।
वह जन-सेवा वह जग-सेवा !
हे तन–मन–धन सरवस दानी !

(३)
अनमोल पलों का मोल न था—
हो गई सुर्खों की पामाली।
सर्व त्याग—त्याग की सीमा थी—
यह रम्य वाटिका थी पाली।

(४)
अध-खिली कली देखी, देखी
दुनिया विस्मय मे सकुचानी।
था तुम्हें मोद, हाँ, तोल न थी
हो गया हृदय पानी-पानी।

(५)
पर उसी समय तुम चले गये,
कर दी कैसे यह नादानी ?
या देवों को इस उपवन की
सुषमा दिखलाने की ठानी ?

(६)
सौरभ पराग से फूलों के,
अब फ़ल रही डाली–डाली।
है शोक यही, तुम यहाँ नहीं,
ओ नन्दन कानन के माली !

(७)
उस ओर तुम्हारी करुणा को,
हम देख रहे है अन्त नहीं।
इस ओर कहें क्या, लज्जित हैं,
'क्या कहें' यही तो ज्ञात नहीं।

(८)
विनिमय थोड़ा भी कर पाते—
इतना साहस सामर्थ्य कहाँ ?
चिर-ऋणी बन हैं फिर बोलो,
कुछ बोल सकें यह समय कहाँ ?
—द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'।

राष्ट्रीय मनोवृत्ति का निदर्शन

स्वामी जी का एक पत्र

२४ सेप्टे. १९२०

गुरुकुल
१० आश्विन, १९७७

श्रीमान् लाला रामकृष्ण जी प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब,

नमस्ते!

इस समय मेरी सम्मति में असहयोग की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि के भविष्य का निर्भर है। यदि यह आन्दोलन असफल हुआ और महात्मा जी को सहायता न मिली तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न ४० वर्ष पीछे जा पड़ेगा। यह जाति के जीवन व मृत्यु का प्रश्न हो गया है।

इसलिए मैं इस काम में शीघ्र ही लग जाऊंगा। यदि आपकी सम्मति में इस काम में लगने के लिये मुझे गुरुकुल की आचार्य... समाज के अन्य कामों से अलग हो जाना चाहिए तो मैं सबका त्यागपत्र देने को तैयार हूँ। ... करेंगे तो मैं पत्रिका में भेज दूंगा। इस कार्य से रुक नहीं सकता, मुझे यह काम इस समय सर्वोपरि दीखता है।

आपका
श्रद्धानन्द

उक्त पत्र स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी से आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी को लिखा था। उन दिनों आप गुरुकुल के मुख्यअधिष्ठाता थे और महात्मा गांधी के चलाये हुए असहयोग आन्दोलन को राष्ट्र के लिये जीवन मरण का प्रश्न समझकर आपने प्रधान जी को अपने निश्चय की सूचना दी थी।

इस पत्र से स्वामी जी की राष्ट्र के प्रति उच्च भावना व कर्तव्य बुद्धि का अच्छा परिचय मिलता है।

यह पत्र अर्जुन कार्यालय से प्रकाशित "स्वामी श्रद्धानन्द" से लिया गया है।

सत्य और श्रद्धा का मूर्तरूप



मृत्यु के ऊपर विजय

(ले०—कविवर रवीन्द्रनाथ)

हमारे देश में जो लोग सत्याग्रह करने के अधिकारी हैं और जिनमें उस व्रत का प्राणपण से पालन करने की शक्ति है, उनकी संख्या बहुत कम है। इसलिये देश की यह दुर्गति है। जहां इस प्रकार का चित्त दैन्य है, वहां स्वामी श्रद्धानन्द के सदृश वीर की मृत्यु कितनी शोकप्रद है। इसके वर्णन की कोई आवश्यकता नहीं। इस में एक बात है, जिनकी मृत्यु जितनी ही अधिक शोचनीय हो, उसी परिमाण में उनके चरित्र और प्राण की महत्ता प्रकट होती है। इतिहास में यह दिखलाई देता है कि जो पुरुष अपना सर्वस्व अर्पण करके कल्याण व्रत को अर्पण करते हैं, उन्हीं के ललाट में अपमान और अपमृत्यु विजय की टीका लगा देती है। महापुरुष आते हैं, प्राण को मृत्यु के ऊपर विजयी करने के लिये, हमारे सत्य को जीवनी की सामग्री बनाने के लिये। खाद्य-द्रव्य में प्राण-संचार करने का जो उपकरण करता है, वही आयु और वैज्ञानिक के परीक्षागार में भी विद्यमान है। किन्तु जब तक उद्भिद और प्राणी वर्ग में वह प्राण-संचार का उपकरण सजीवता का आकार धारण नहीं करता, तब तक प्राणों की पुष्टि नहीं होती। सत्य के सम्बन्ध में यही बात लागू होती है। केवल बातों ही बातों से उस सत्य सम्बन्ध को जीवन-गत कर लेने की शक्ति कितने आदमियों में है? सत्य को बहुत लोग जानते हैं, लेकिन उसे मानते वे ही मनुष्य हैं, जो विशेष शक्तिवान हैं। प्राण देकर सत्य का पालन करने ही से हम उसे सार्वजनिक धरोहर के रूप परिणत कर देते हैं। यह मानना ही बड़ी शक्ति का काम है। जो लोग इस शक्ति की सम्पदा को समाज के अर्पण करते हैं, उनका दान अमित है। सत्य के प्रति निष्ठा रखने का यह आदर्श स्वामी श्रद्धानन्द इस दुर्बल देश को दे गये।

अपनी साधना का परिचायक (सन्यास आश्रम का द्योतक) जो नाम उन्होंने ग्रहण किया था, वही नाम (श्रद्धानन्द) उनके जीवन में सार्थक हो गया। सत्य में उनकी असीम श्रद्धा थी। इस श्रद्धा में सृष्टि-शक्ति है। इस शक्ति द्वारा अपनी साधना को उन्होंने रूपमूर्ति दी है, और उसे वे सजीव कर गये हैं। इसलिये उनकी मृत्यु ने आलोक के समान प्रज्वलित होकर उनकी श्रद्धामयी, भयहीन, कान्तिमान, अमृतछवि को उज्ज्वल करके प्रकाशित किया।

(यह उद्गार कविवर ने स्वामी जी के बलिदान के अवसर पर प्रकट किये थे। —संपादक)

आर्य संस्कृति का निर्माता

धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक परतन्त्रता का शत्रु

(ले० श्री कोंडो वकटपय्या, मु गेर)

— —



श्री कोंडा वकटप्पया

हमारे राष्ट्रीय नताओं की श्र णी में स्वामी श्रद्धानन्द का कत्व विशेष स्थान रखता था। की शक्ति अनन्त थी और व्यक्ति- महान था। उनकी रग-रग में भक्ति की भावना भरी हुई थी। होंन अपना सारी ... ।श्यक । चारित्रक ... मातृभूमि की मवा नमा दिया। आर्य समाज स्वामी के अनथक परिश्रम व लगन क सदैव कृतज्ञ रहेगा।

स्वामी जी क जीवन का एक उद्देश्य था, भारतवर्ष के युवकों चरित्र की पवित्रता सिखा कर ान व अर्वाचीन दोनों प्रकार क मे शिक्षित करना। चरित्र की त्रता और प्राचीन ज्ञान वास्त- आर्य सस्कृति की प्राप्ति क नितान्त आवश्यक है। इसी य म उन्होंन गगा के पवित्र तट गुरुकुल खोला था वह आज भी े असीम भक्ति और मवा का ा स्मृति-स्तम्भ है।

यह एक प्रमुख कांग्रसी नता भी असहयोग के प्रसिद्ध दिनों में न अपन को सम्पूर्ण रूप म उस म क अन्दर होम कर दिया वृद्धावस्था एव अस्वस्थ होन भी सम्पूर्ण कष्ट सहे।

हिन्दू-मुसलिम समस्या क हल ाय व जी-जान स उत्सुक थ। ालों में होन वाल हिन्दू-मुसलिम ों के रक्तपात और लूटमार न करुणार्द्र हृदय को पिघला । वह दिन रात इस बुराई का करन क लिय कोशिश करन इसी के दो उपाय शुद्धि और ा थ। दश के एक भाग न विरोध किया किन्तु उनक नश्चय हढ़ सकल्प क कारण यह म ऊचे शिखर पर पहुच गया। इसी के लिय अनथक परिश्रम करते हुए वे बीमार हो गय और उन्हें एक कायर धर्मान्ध मुसलमान न मार डाला।

इस प्रकार हमारा एक महान नता उस बुराई से युद्ध करते हुए

त्याग और साहस का अवतार

पं० जवाहरलाल नेहरू के उद्गार

स्वामी जी का नाम याद करके बहादुरी हिम्मत और त्याग की तस्वीर सामन आ जाती है और इस तस्वीर को देख कर कुछ अपनी भी हिम्मत बढ जाती है। गुरुकुल के विद्यार्थी तो उनक बच्चे ही हैं और उनक सामन तो यह तस्वीर हमेशा रहती ही होगी। भला उनका और क्या सन्देश दिया जावे? हमार देश में आज कल स्वतन्त्रता का युद्ध जारी है और हर एक भारतवासी को वीरता की आवश्यकता ह। मैं आशा करता हू कि गुरुकुल क सब विद्यार्थी स्वा० श्रद्धानन्दजी की याद करक वीर सिपाही बनेंग और दश की आजादी की लड़ाइ में भाग लेंगे।

(आपन गत वर्ष गुरुकुल क विद्यार्थियों के पास स्वामी जी क सम्बन्ध में उपयुक्त उद्गार भजे थ। —सपादक)

गिर गया जो बुराई क लिय श्राप रूप है और स्वराज्य-प्राप्ति में आज भी बाधक है।

हम स्वामी जी क चरित्र में विभिन्न मूल्यवान गुणों का विचित्र और दुर्लभ सम्मिश्रण पाते हैं। व गुण उनकी प्रत्यक घटना में प्रगट होते हैं।

सत्य और उच्चता की साक्षात मूर्ति

पंजाब की सेवाओं की स्मृति

लेखक—

डा० सत्यपाल



डा० सत्यपाल

मनुष्य-जीवन में जो भी सत्य और उच्च है, उस सब की स्वामी श्रद्धानन्द साक्षात मूर्ति थे। मुझे अभिमान है कि मैंन उन्हीं के चरणों में बैठ कर धम की शिक्षा ग्रहण की थी। वह अपन सिद्धान्तों क लिये जीते थे, और उन्हीं की रक्षा में उन्होंन निधड़क अपना जीवन निछावर कर दिया। वह दया और प्रेम का स्रोत होते हुए भी दृढ़ तथा कठोर थे। वह किसी से घृणा न करते हुए भी किसी क सामन झुकन वाले न थे। उन्होंन देश तथा देशवासियों की भलाई के लिये बड़ा भारी त्याग किया था। उन्होंने पजाब के मार्शल-ला की भयंकर ज्वालाओं में जल कर भी अत्याचार के शिकारों की जो सहायता की थी उसे कोई क्षण भर के लिये भी नहीं भूल सकता। मुझे भय है कि वर्तमान साम्प्रदायिक झगड़ों और मतभेदों के जोश में हम उनको योग्य सम्मान नहीं कर सकेंगे। मैं स्वामी जी का सदा प्रेम, श्रद्धा, भक्ति, आदर और कृतज्ञतापूर्वक बार-बार याद किया करता हू।

—**—

अमर कीर्ति चिरंजीवी हो

(लेखक—श्री हरदयाल नाग चांदपुर, बगाल)

स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज क शाकाहारी दल क नता थे। वह स्वय उच्च जाति के हिन्दू होते हुए भी दलित जातियों पर सवर्णों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों को महन नहीं कर सके। उन्होंने मनुष्य जाति की सेवा में ही अपना जीवन समर्पण कर दिया। वह इस प्रकार क आदर्श हिन्दू थे जिनक मस्तिष्क मे जातीय मतभेद साम्प्रदायिक राग-द्वेष, अस्पृश्यता तथा सामाजिक अयोग्यताएं आदि असमानता फैलान वाली बातें सदैव के लिये कतई दूर हो गयीं कुछ समय तक उन्होंने कांग्रेस का कार्य भी अत्यन्त दृढ़ता के साथ सम्पन्न किया था परन्तु बाद में वह सामाजिक सुधार के कार्य में ही सलग्न हो गय थे। वह वेदों के अपूर्व ज्ञाता थे और उनका वेदों का अनुपम ज्ञान उनके अनुयायियों के लिये सूर्य की भांति प्रकाश देने वाला था। उन्होंने अपन जीवन का अन्तिम भाग दलित जातियों के उत्थान में ही व्यतीत किया।

भारतीय जनता के लिय उनका जीवन-बलिदान और सेवा तथा धार्मिक रूढ़िवाद सामाजिक अत्याचार एव राजनीतिक परतन्त्रता से मुक्ति पान के लिय हमेशा उत्तेजना का कार्य करता रहेगा।

वैदिक धर्म की जगत-व्यापी सुकीर्ति का प्रचार करन के लिये अन्त तक पूर्ण परिश्रम के साथ यहाँ तक जुटे रहे कि उन्होंने अमर शहीद की भांति प्राण त्याग किया। प्रत्यक हिन्दू को उनके अमर बलिदान की हृदय से सराहना करनी चाहिये। स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी की अमर कीर्ति जगत में चिरजीवी हो!

—

म० मुन्शीराम—दर्शन

श्री म० मुन्शीराम जी का परिवार



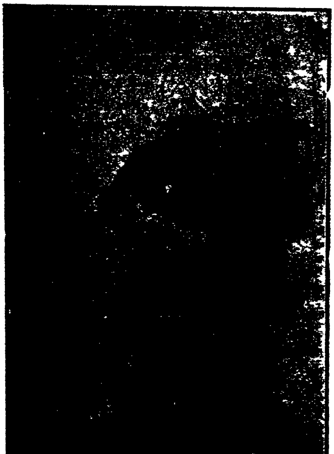
बैठे हुए श्री स्वामी जी के पिता ला० नानकचन्द। खड़े हुए दायीं ओर से बड़े भाई ला० आत्माराम ला० मुन्शीराम (मुख्तार)। बालक स्वामी जी का भतीजा रामनाथ।

श्री मुन्शीराम जी का परिवार



पोषिता कन्या कन्या अमृत कला व श्रीमती वेदकुमारी। श्री मुन्शीराम जी दोहती को लिये हैं।

वकील मुन्शीराम



म० मुन्शीराम



वीर और महान्

(ले०—श्रीमती सरोजिनी नायडू)



मेरी स्मरण शक्ति के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द मेरे जीवन-काल के महान व्यक्ति थे। मेरा यह अनुभव है कि भारत के साहसिक काल के वह संरक्षक थे। उनके सुन्दर स्वास्थ्य महान व्यक्तित्व तथा अनुपम बुद्धिमत्ता ने उन्हे उनके साथियों का शिर-मौर बना दिया था। एक बार तो वह अपने जीवन-काल में गुरुकुल कांगड़ी जैसे महान विद्यालय के गवर्नर रह चुके थे। मरते दम तक उन्होंने एक महान वीर की भांति जीवन व्यतीत किया। आश्चर्यजनक कार्यशैली तथा चामत्कारिक बुद्धिमत्ता के वह अद्वितीय उदाहरण थे। उन्होंने भारतीयों के कई सामाजिक तथा राष्ट्रीय सुधारों में बड़ी बहादुरी से कार्य किया था।

निस्वार्थ संन्यासी

(ले०—श्री एस० सत्यमूर्ति एम० एल० ए०)

मुझे यह जान कर प्रसन्नता हुई कि श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती पर स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन और उनके ध्येय पर आप एक अंक प्रकाशित कर रहे हैं। उन्होंने वस्तुतः ही अपने जीवन को देश और जाति की सेवा में उत्सर्ग कर दिया था। वे एक सच्चे कर्मयोगी और असली अर्थों में सन्यासी थे, जिन्हें अपना कोई स्वार्थ नहीं था और जिन्होंने अपनी जाति की उन्नति में पूर्ण मनोयोग से काम किया था, जिसकी हमें सराहना करनी चाहिये। उनमें एक आदर्श 'हिन्दू' और एक आदर्श 'भारतीय' का सुन्दर मेल था। ऐसे आदमी सदा नहीं पैदा होते। उनका जीवन एवं मृत्यु, दोनों महत्त्वपूर्ण थे।



मि० सत्यमूर्ति

परमेश्वर करे कि हम उनके उदाहरण से धर्म और देश की सेवा करना सीखें और संसार को दिखावें कि हिन्दू-धर्म एक सहिष्णुता का धर्म है और एक स्वतन्त्र पुरुषों तथा स्वतन्त्र स्त्रियों का धर्म है।

स्वामी जी के धर्मगुरु



महर्षि दयानन्द

स्वामी जी के जीवन सङ्गी



डा० सुखदेव जी

आदर्श आचार्य और समाज-सुधारक पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्द

(ले०—श्री धर्मदेव सिद्धान्तालङ्कार विद्यावाचस्पति)

स्वर्गीय पूज्यपाद धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का पुण्य स्मरण करते ही मेरे मन में दिव्यानन्द का संचार हो जाता है। मैं इसे अपने पूर्व जन्म के अनेक पुण्यों का प्रभाव समझता हूं कि मुझे उनके पवित्र चरणों में बैठ कर विद्याभ्यास करने और फिर कई वर्षों तक उनकी सुखदायिनी छत्रच्छाया में समाज-सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। ऐसे महात्माओं के सम्पर्क में आना सचमुच बड़े ही सौभाग्य का चिन्ह होता है। गुरुकुल का प्रत्येक ब्रह्मचारी उनके अन्दर आदर्श आचार्य के सब लक्षण पाता था। आचार्य शब्द का अर्थ 'आचारं ग्राहयति' है अर्थात् जो सदाचार को ग्रहण कराये। श्री पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सारा ध्यान ब्रह्मचारियों को सदाचारी बनाने की ओर रहता था। बड़े प्रेम से वे विद्यार्थियों को धर्म के विषय में अनुभव और रहस्यपूर्ण उपदेश (विशेषतः महाविद्यालय विभाग में प्रवेश के समय) दिया करते थे, जो उनके लिये सदा मार्गदर्शक का काम करते थे। वे सदा कहा करते थे कि आचार्य को ब्रह्मचारियों के लिये न केवल पिता को जैसे कि मनुस्मृति में 'तदा मातास्य सावित्री, पिता त्वाचार्य उच्यते' आदि श्लोकों में बताया गया है किन्तु वेद के आदेशानुसार माता का भी स्थान ग्रहण करना चाहिये। अपने जीवन में उन्होंने इसी आदर्श को पूर्णतया स्थापित किया था। उन्होंने न केवल वैदिक आदेशानुसार 'मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु' कह कर प्रत्येक ब्रह्मचारी के साथ अपना हार्दिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया था, बल्कि सचमुच गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों को वे अपना पुत्र समझते और सम्बोधन करते थे। ब्रह्मचारी भी उनके प्रति वही शुद्ध भाव रखते थे। उनके सामने अपने हृदय को खोलने में किसी को कोई संकोच न होता था, बल्कि सारे संशय दूर होकर मन में एक दिव्य शक्ति और आनन्द का अनुभव होता था। वे भय वा दण्ड के जोर से नियन्त्रण (Discipline) रखने वा शासन करने के विरोधी थे। वे प्रेम के द्वारा ही शासन करते या नियन्त्रण रखते थे। विद्यार्थियों के साथ उनका सम्बन्ध इतना घनिष्ठ था कि उनकी छोटी से छोटी बातों और चेष्टाओं का उन्हें ध्यान रहता था तथा उनमें वे दिलचस्पी (Interest) दिखाते थे। उनके उपदेश विद्यार्थियों के सरल हृदयों पर कैसा जादू का सा असर करते थे—यह बतान की आवश्यकता नहीं। सन्यासाश्रम में प्रवेश से पूर्व भी मुझे कई बार उनके दिव्य उपदेशामृत को पान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वे प्रायः वीर्य-रक्षा ब्रह्मचर्य, आर्य-संस्कृति और श्रद्धा पर बल दिया करते थे। सन् १९१४ या १९१५ में कनेटा आर्य-समाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिये उपदेश में:—

"जब दांत न थे तब दूध दियो,
जब दांत दिये तब अन्न न देइ है।
जल में, थल में पशु पक्षिन की
सबकी सुध लेत सो तोइ न देइ है॥
काहे को सोच कर मन मूरख
सोच कर कछु हाथ न ऐ है।
जान को देत अजान को देत,
जहान को देत सो तोइ न देइ है॥

इत्यादि श्रद्धासूचक, प्रभावजनक वाक्य आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं। यद्यपि तब मैं केवल ७वीं श्रेणी का एक छोटा बालक था।

व्रतं च श्रद्धां चोपमीमन्धे त्वा दीक्षितो अहम्। व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ इत्यादि उनके अत्यन्त प्रिय वेदमन्त्र थे, जिनकी वे बड़े ही हृदयग्राही शब्दों में व्याख्या किया करते थे। उनकी सरलचित्तता का विद्यार्थियों पर बड़ा ही उत्तम प्रभाव पड़ता था। समविकास अर्थात् शारीरिक मानसिक, आत्मिक शक्तियों के विकास को शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य समझते हुए वे समाज ही पर जोर देते थे तथा इस बात का सदा ध्यान रखते थे कि ब्रह्मचारियों की प्रत्येक शक्ति का विकास हो। कुश्ती, तैरी, घुड़सवारी खेल आदि में भी वे उतनी ही दिलचस्पी दिखाते थे, जितनी पढ़ाई तथा सभाओं आदि में। योगदर्शन आदि की व्याख्या करके तथा वैयक्तिक उदाहरण के द्वारा वे ब्रह्मचारियों के अन्दर श्रद्धा तथा भक्ति-भाव को भी बढ़ाने का वे विशेष यत्न करते थे। वे स्वयं प्रति दिन व्यायाम करते तथा सन्ध्या, अग्निहोत्र, स्वाध्याय आदि नियमों का बड़ी तत्परता से पालन किया करते थे। उनका सम्पूर्ण जीवन आदर्शरूप था। ऐसे आदर्श-आचार्यों द्वारा ही गुरुकुल जैसी उत्तम संस्थाएं जगत् के लिये आदर्शरूप बन सकती हैं इसमें कोई सन्देह नहीं।

आदर्श समाज सुधारक

जहां श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज एक आदर्श आचार्य थे वहां वे आदर्श समाज-सुधारक भी थे। आदर्श समाज-सुधारक के लिये यह आवश्यक है कि उसका वैयक्तिक जीवन अत्यन्त उच्च और पवित्र हो। वह जिस बात का प्रचार करता हो, स्वयम् आचरणरूप में उसे लाता हो, उसके अन्दर पूर्ण निर्भयता और साहस हो वह सत्यनिष्ठ श्रद्धालु और कर्तव्यपरायण हो। ये सब गुण श्री पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्द जी के अन्दर कूट कूट कर भरे हुए थे। उनका अपना जीवन सत्यमय और श्रद्धामय था। वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की पवित्रता पर उनका सदा ही जोर रहा करता था। इसी लिये सन्ध्या-हवन, स्वाध्यायादि के नियमपूर्वक श्रद्धा सहित अनुष्ठान पर वे बड़ा बल देते थे तथा स्वयं इन सब का भली भांति अनुष्ठान पूर्ण श्रद्धा के साथ किया करते थे। गुणकर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था के वे पूर्ण पक्षपाती किन्तु कल्पित जात-पात के कट्टर विरोधी थे। अपनी सुपुत्रों का विवाह उन्होंने मित्रों और सम्बन्धियों के (यहां तक कि अनेक उस समय के प्रसिद्ध आर्य सज्जनों के) विरोध करने पर भी जात-पात तोड़ कर ही करवाया था। अपने सुपुत्रों को भी जात-पात तोड़ कर ही विवाहार्थ प्रेरित किया था। उन्होंने इस सुधार को इतना आवश्यक समझा था कि पिछले दिनों यह घोषणा ही करदी थी कि मैं केवल उन्हीं विवाहों में आशीर्वाद दिया करूंगा जो जात पात तोड़ कर किये गये। स्त्री-शिक्षा विषयक सुधार के कार्य को हाथ में लेने से पूर्व उन्होंने स्वयम् अपनी धर्मपत्नी को शिक्षिता बनाने तथा अपनी सुपुत्रियों के लिये उचित शिक्षा दिलाने का प्रबन्ध किया था। अस्पृश्यता वा अछूतपन के कलंक को हटाने के लिये भी सबसे पूर्व उन्होंने गुरुकुलादि में हरिजन भाइयों को प्रविष्ट कराया था, जिसका यह परिणाम है कि आज कितने ही हरिजन भाई गुरुकुल में अध्ययन कर के वेद-शास्त्र-प्रवीण स्नातक बन चुके हैं, जिनकी जात-पात को पूछने तक का किसी को साहस नहीं हो सकता। क्रियात्मक सुधारक के रूप में उन्होंने आल इण्डिया कांग्रेस कमिटी में यह प्रस्ताव रक्खा था कि प्रत्येक सदस्य को अपने घर दलित-जाति के (हरिजन) सेवक को ही रखना चाहिये। यह हर्ष की बात है कि पूज्य महात्मा गान्धी जी अब इस प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन कर रहे हैं। यद्यपि उस समय इसे स्वीकृत न किया गया था। पूज्यपाद स्वामी जी का यह अनुभव सिद्ध दृढ़ विश्वास था कि जब तक कल्पित जाति-भेद वा जात-पात के भाव तथा आचार जनता में कायम हैं तब तक शुद्धि अस्पृश्यता निवारण दलितोद्धार आदि के आन्दोलन कभी सफल नहीं हो सकते, इसी लिये वे जात-पात के तोड़ने पर विशेष बल देते थे और अन्तर्जातीय भोजन और विवाह के कट्टर पक्षपाती थे। वे पूंजीवाद और अधिकार लिप्सा के घोर विरोधी तथा स्वराज्य के लिये प्रबलशाली स्वार्थत्यागी तपस्वी महात्मा थे। श्रद्धानन्द-दल की स्थापना इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिये की गई है। ऋषि दयानन्द के आदर्श-शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के पवित्र सन्देश को आर्य-जनता के सामने रख कर यह दल आर्य-समाज में आन्तरिक सुधार के लाने और उस आदर्श जीवित, जाग्रत शक्तिशाली समाज बनाने का प्रयत्न कर रहा है। इस लिये वैयक्तिक जीवन के सुधार और पवित्रता के लिये जहां इसके प्रत्येक सदस्य को प्रति दिन सन्ध्या और स्वाध्याय की प्रतिज्ञा करनी होती है वहां क्रियात्मक समाज सुधारों के लिये उसे यह भी प्रण करना होता है कि वह अपना अथवा स्वयं विवाहित होने की दशा में अपनी सन्तति की जात पात तोड़ कर ही विवाह करवायगा। इस प्रकार की दृढ़ लिखित प्रतिज्ञा के बिना जात-पात के भूत से समाज का छुटकारा असम्भव है और जब तक उससे छुटकारा न हो जाय शुद्धि दलितोद्धार आदि के आन्दोलनों में सफलता असम्भव है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वर्ण-व्यवस्था के गुण, कर्म स्वभाव को न रखा जाय उसका तो खयाल रखा जाना ही चाहिये किन्तु इस अत्यावश्यक सुधार को लाने के लिये कर्मवीर आर्यों को यह जात-पात तोड़ने की प्रतिज्ञा अवश्य

कर्तव्यनिष्ठ सन्यासी

(ले०—कुमार गगा नन्दसिह)

स्वर्गाय स्व मी श्रद्धानन्द जो को पुराल स्मृति आज भी इतनी जा ी है कि उम दुहरान की कतई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती । उनकी महानता के सम्बन्ध मे निम्न लिखित पद प्राय' सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होग—

N ɔ coward Soul is ine
No trembler in the worl l s storm troubled sph ere
I see Heaven s glories hine
And faith Shines ı ıal, arming me from fear

"मरी आत्मा मे दुर्बलता का लेश मात्र भी नहीं है। आपत्तियों म परिपूर्ण ससार क किसा भी क्षेत्र मे कोई वस्तु भयोत्पा क नहीं है । मै सर्वत्र ईश्वर को उज्ज्वल



कर्तव्यनिष्ठ सन्यासी

स्वामी श्रद्धानन्द

प्रकाश रखता हू । मरा दृढ आत्म-विश्वास और श्रद्धा भय को मर पास नहीं फटकन देते "

O God wi hin m breast
Al ight , ev r p rt
De ty

"मर हृदय प सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रकाश सदैव उपस्थित रहता है।'

उन्होंने एक महान् कर्तव्य निष्ठ की भांति हजारों लड़ाइयां एक वीर योद्धा के रूप में लड़ीं। वह विजयी होकर हिन्दू धर्म के लिये बड़ी वीरता के साथ जीवित रहे और उसी के निमित्त प्राण त्याग किया। उन के पवित्र हृदय में द्वेष भय तथा अश्रद्धा का लेशमात्र भी नहीं था। वह अपने जीवन में कठिनाइयों से कभी नहीं घबड़ाये, परिश्रम से भी कभी नहीं थके और अपनी विजयों पर कभी गर्व नहीं किया। उन्होंने अपने ध्येय की पूर्ति सदैव दृढ़ निश्चय के

साथ की और वह किसी भी प्रयत्न मे कभी नहीं हिचकिचाय और न कभी कदम पीछे को हटाया। उनका सिवा मित्र के कोई शत्रु न था। उन्होंने अपन हत्यारे का भी विश्वास किया । उन के अमर बलिदान ने वास्तव मे हिन्दू धर्म उच्च सिद्धांतों को प्रकाश में ला दिया।

ऐसे महान् हिन्दू के प्रति मैं सम्मानपूर्वक श्रद्धाञ्जलि समर्पण करता हूं। मेरी भगवान से हार्दिक प्रार्थना है कि उक्त अमर बलिदान का उदाहरण हमें दिन प्रति दिन उत्साहित करता रहे।

करनी चाहिय। ऐम सदाचारी सन्ध्या हवन, स्वाध्यादि का श्रद्धा-पूर्वक अनुकरण करन वाले विद्वान कर्मवीर आर्य सज्जनो को ही आर्यसमाजो का अधिकारी चुना जाना चाहिय न कि कवल धनियों को जिनमे म बहुतो को न सिद्धान्त-ज्ञान होता है न धर्म-प्रेम । पूजीवाद और अधिकार लिप्सा का रोग आर्यसमाज की जड को खोखला कर रहे है उनका जितनी जल्दी नाश हो उतना ही समाज क लिय हित कर होगा। श्री पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वदेशी वस्तुओं और खादी क वस्त्रो के प्रयोग क भी बड़े पक्षपाती थ, अत. श्रद्धानन्द दल क सदस्यो को शुद्ध स्वदेशी अर्थात खादी वस्त्रो और यथा सम्भव स्वदेशी वस्तुओं क ही प्रयोग का भी प्रतिज्ञा लेना होता है। आर्यसमाज की उन्नति मे सब स अधिक बाधा आज कल आर्यों क क्रियात्मक जीवन न होन क कारण पड रही है। ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द जी क सच्चे भक्तों को अपन जीवन का सर्वथा पवित्र बना लेना चाहिये। इस प्रकार ही हम स्वर्गीय धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी क प्रति अपना सच्ची भक्ति प्रकट कर सकत है न कि कवल उन का गुणगान करन म। परम पिता परमात्मा हमे आदर्श आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी क सच्च अनुरूप शिष्य बनन की सामर्थ्य प्रदान कर यही प्रार्थना है।

सत्याग्रह और बारडोली

(ले०— बैजनाथ महोदय बी० ए०)

सत्याग्रह एक जबरदस्त शक्ति है, इस बात का अनुभव तो हमें अभी अभी इन तीन चार वर्षों में हुआ। अब तो बच्चे बच्चे की जबान पर सत्याग्रह है। वह कुछ कुछ उसकी शक्ति को भी जानने लग गया है। सारे संसार में उसकी कीर्ति छा गई है और हिंसक युद्धों से ऊब कर वह अब इस पुण्य शक्ति के विकास की राह देख रहा है। पर १०, १५ साल पहले यह बात नहीं श्रीमहात्मा जी ने दक्षिण अफरीका में जो युद्ध किया था भारतीय जनता ने—राजनीति में दिलचस्पी रखने वाली जनता ने उसके समाचार पढ़े थे। पर जब तक उस महान शक्ति के प्रत्यक्ष दर्शन का योग उसे नहीं मिला था वह उसकी यथार्थ शक्ति का अनुमान नहीं लगा सकी थी। महात्मा जी भारत में आये तभी से हमें कहना होगा इसका भी पदार्पण भारत में हुआ। चम्पारन का सत्याग्रह एक प्रान्तीय वस्तु थी। वहां तो सत्याग्रह को अपनी शक्ति आजमाने की कहने लायक जरूरत भी न पड़ी। रौलट कानून के विरुद्ध छेड़े गये सत्याग्रह से असल में देश को सत्याग्रह का सब से पहला परिचय मिला है रौलट कानून के समय देश के इस कोने से लेकर उस कोने तक मानो बिजली दौड़ गई थी। अंगरेजी साम्राज्य को भी भारतीय जनता की जागृति शक्ति को देखने का सब से पहला अवसर तभी मिला। उसकी आंखें चौंधिया गईं। तथापि उस समय एक तरफ न जनता को शिक्षित करने को काफी समय मिला था और न उधर सरकार को भी इस नवीन शक्ति का सामना करने के लिये आवश्यक समय मिल पाया था। यहां वहां उपद्रव हुए, गोलियां चलीं कुछ मरे, कुछ घायल हुए कहीं तार टूटे कानून के विरोध में देश भर में हड़ताल हुई हजारों जगहों पर सभायें हुईं, सारे देश के कोने कोने से उस काले कानून का विरोध हुआ और बस जैसे ही पैदा हुआ था, मर भी गया।

पर जनता का पुण्य प्रकोप जाग उठा था, साम्राज्य द्वारा की जाने वाली देश की लूट, अन्याय और अत्याचार उसके लिए असह्य हो उठे थे। शीघ्र ही असहयोग घोषित करने की नौबत आई। अदम्य उत्साह था पर महात्मा जी ने शीघ्र ही देखा कि इस उत्साह में अनुशासन Discipline की मात्रा आवश्यक परिमाण में नहीं है। चौरीचौरा ने साक्षी दी और आन्दोलन स्थगित हो गया। अनेक युयुत्सु देशभक्तों का उत्साह भङ्ग भी हुआ। पर सेनापति की आज्ञा को सबने सर झुकाया। लोग इसे सत्याग्रह की पराजय मान कर टीका टिप्पणी करने लगे। पर इस महाशक्ति की जड़ धीरे धीरे देश में जमती ही गई। एक तरफ जहां हिन्दू-मुसलमानों की आपसी लड़ाई निराशों को अधिक निराश कर रही थी, वहां खेड़ा बोरसद गुरु का बाग और झण्डा सत्याग्रह देश में सत्याग्रह के क्रमिक विकास की साक्षी दे रहे थे। एक तरफ कानून के योद्धा धारा सभाओं में—सरकार के अपने अखाड़े में—उससे लोहा ले रहे थे तो दूसरी तरफ महात्मा जी तथा उनके चुने हुए अपरिवर्तनवादी कार्यकर्त्ता गावों में बैठकर धीरे-धीरे लोक शक्ति का आवाहन करने के लिये जुट पड़े थे।

गुजरात में बारडोली इनका एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। वह बम्बई इलाके की एक अत्यन्त उपजाऊ तहसील है। लोग सम्पन्न हैं। कणबी नामक एक परिश्रमी और सुसंगत जाति की संख्या यहां काफी मात्रा में है और सब से बड़ी बात तो यह थी कि यहां के कई लोग दक्षिण अफ्रीका में महात्मा जी की युद्ध नीति का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर चुके थे।

राजनैतिक कार्यकर्त्ता साधारणतया (अगर अविनय न हो तो, मेरा यह नम्र धारणा है कि) उतावले होते हैं। अपनी जल्दबाजी के कारण हम कितनी ही जगह पास आई हुई और निश्चित विजय को खो देते हैं। जहां शोभा के (Grace) साथ कोई काम हो सकता है, हमारा अविश्वास और उतावलापन ऐसी परिस्थिति में हमें डाल देता है, जहां लज्जित होकर हमें पीछे हटना पड़ता है। दूरदर्शिता की दृष्टि से भी हम गलती कर जाते हैं। आवश्यक मात्रा में बल-सञ्चय करने से पहले ही लड़ाई छेड़ बैठते हैं।

बारडोली में डेरा डालने वाले कार्यकर्ताओं ने इस बात में बड़ी सावधानी से काम लिया। पहले-पहल शिक्षा और खादी से उन्होंने शुरुआत की। प्रांत को आर्थिक दृष्टि से निरीक्षण (Economic Surrey) किया और इसके जरिये से प्रदेश की सारी गरीब अमीर जनता से परिचय प्राप्त कर लिया। बारडोली का 'स्वराज्य' आश्रम गुजरात में खादी का सब से बड़ा केन्द्र था। इस आश्रम के द्वारा ताल्लुके में जगह-जगह प्राथमिक तथा माध्यमिक शालायें खोल दी गई थीं। शिक्षा का पाठ्यक्रम उनका अपना स्वतन्त्र था।

इस प्रदेश की जनता दो हिस्सों में बटी हुई है। उच्च जातियां उजली परज (प्रजा) कहलाती हैं। और निवासी नीची जातियां काली प्रजा कहलाती हैं। उजली परज की आबादी लगभग ३८००० प्रजन में से कणबी २००००) है और काली परज ४६०००। जैसे अछूतों को आज कल हम हरिजन कहने लगे हैं उसी प्रकार काली परज को इधर दस बारह साल से रानी परज भी कहा जाता है। खेती प्रधानतया कणबियों के हाथों में है और काली परज के लोग खेतों पर मजदूरी करके अपना पेट पालते हैं। दुबला गामीत डोढिया आदि इनके आन्तरिक भेदोपभेद हैं। कार्यकर्ताओं ने वहां जाकर कणबी तथा रानी परज के संगठन और सेवा का काम अपने हाथों में ले लिया।

ग्राम-संगठन या सेवा के लिये प्रचार की भी आवश्यकता है। पर वह प्रचार उससे भिन्न होता है जिसे हम आज कल प्रचार करते हैं। प्रचार करते समय प्रायः काम की अपेक्षा अपना ध्यान हम अधिक समझते हैं।

गांवों में जाकर इससे पहिले कि हम से कुछ बन पड़े, हम अखबारों की तरफ दौड़ लगा कर इस बात की ढुग्गी पीटने का उद्योग करते हैं कि हम मूल-संग्राम यो जिले का उद्धार करने के लिये निकल पड़े हैं। बारडोली के सेवकों ने गलती से बचने का इस में भी खूब ध्यान रक्खा। वे चुपचाप गांव में जाते और जिस किसी तरह उनसे बन पड़ता जनता के लिये अपने को उपयोगी बनाने का यत्न करते। उस के अन्दर मनुष्योचित स्वाभिमान को जगाते। नीति सदाचार, प्रामाणिकता आदि प्राथमिक और अच्छी बातों पर बार-बार कथाओं, व्याख्यानों तथा खानगी बात-चीत में जोर दे देकर धीरे-धीरे उसके अन्दर सोई हुई शक्ति का ज्ञान उसे करा देने का यत्न करना सम्भव है यह बात कई राजनीतिक कार्यकर्ताओं को बहुत मामूली समय लगने वाली तथा रूक्ष दिखाई देती है। किन्तु गांवों का संगठन करने वाले तथा राष्ट्र का निर्माण करने वाले के लिये यही सब से पहली और अधिक महत्वपूर्ण वस्तु है। जनता के अन्दर एक बार स्वाभिमान, सत्यनिष्ठा तथा अपने अधिकारों का भान उन्हें प्रदान करने की शक्ति को जगा देने के बाद वह सत्ता से खुद समझ लेती है। वह खुद अपना नेता बन जाती है। उस की 'भेड़ वृत्ति' को मिटा कर उसके अन्दर सिंह वृत्ति जगा देने की जरूरत है। फिर तो एक-एक आदमी सत्ता के लिये भारी हो जाता है।

फिर जोशीले व्याख्यान दे देकर जनता को उभाड़ने की जरूरत नहीं रह जाती। उसे यह नहीं समझाना पड़ता कि फलां बात में मेरा मान या अपमान हुआ। वह अपने मान-अपमान को खुद समझ लेती है और खुद ही लड़ाई छेड़ देती है। बारडोली में यही हुआ। लड़ाई के लिये उसे उभाड़ने के बजाय उसे तो बार-बार यह समझाना पड़ा कि सोच-समझ कर लड़ाई छेड़नी चाहिये पर वह दृढ़ थी। +

शान्ति-काल में एवं व्यक्तिगत बातों में तो भले ही किसी तरह काम चल जाय पर सामूहिक लड़ाई में तो अनुशासन अनिवार्य है। फिर यह ऐसी चीज है जिसके लिये दृढ़ अभ्यास की आवश्यकता होती है। हम प्रान्तीय परिषद करते हैं, राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन करते हैं, तब स्वयं-सेवकों के तात्कालिक संगठन बना लेते हैं। काम भी वैसा ही होता है। बारडोली में अनुशासन इतना कड़ा था कि सरकार उसके कारण हैरान थी। जनता की मजबूती अनुशासन, गुप्तचर विभाग प्रकाशन और सरदार वल्लभ भाई का नेतृत्व बारडोली की विजय के प्रधान कारण हैं।

लड़ाई का कारण तो प्रायः सर्वविदित ही है। ब्रिटिश-भारत में समय समय पर (तीस-तीस साल में) जमीन का लगान निश्चय करने की प्रथा है। सन् १८९२-९४ की लगान की जांच के बाद सरकार ने ताल्लुके पर ५,८५००० से ६ ७५००० तक लगान बढ़ा दिया। लगान वृद्धि के

+ इसका ताजा उदाहरण सीकर का जाट-आन्दोलन है।

कारण भी बताने पड़ते हैं। बारडोली के मामले में जो कारण बताये थे वे सब गलत थे, बल्कि सबूत तो यह कहता था कि लगान बढ़ने के बजाय घटना चाहिये। जनता ने वैध उपायों का अवलम्बन करके जब देख लिया कि उनका कोई नतीजा नहीं निकल रहा है, तब सत्याग्रह का अवलम्बन किया। सरकार की तरफ से बहुतेरी धमकियां दी गईं पर औरतों तथा भीलों के समान अकिंचन अवस्था में रहने वाले दुबला राज परज जाति के लोगों ने तक तहसीलदारों तथा कलक्टरों को उस तेजस्विता का परिचय दिया है जिसे देख कर उन्हें लज्जित होकर चल देना पड़ा है।

साम, दान, दण्ड, भेद सभी उपायों से सरकार ने काम लेती थी, पर जनता इतनी मजबूत थी कि सरकार और उसके अधिकारियों की कुछ भी न चलती था, पर इसका श्रेय स्वयं सेवकों के संगठन और अनुशासन पर भी था। बारडोली ताल्लुके का एक-एक गांव सैनिकों की छावनी बन गया था। स्वयं सेवक आंखों में तेल डाल कर पहरा देते रहते और अधिकारियों को दूर से देख कर ही गांव को सावधान कर देते। बस चारों तरफ सन्नाटा छा जाता। किसानों के मकानों के बारे में पूछ-ताछ करने के लिये तक कोई नजर न आता। मकान माल और मवेशी नीलाम करने के लिये कोई बोली लगाने वाला और जब्त सामान को उठाने वाले मजदूर तक नहीं मिलते थे। और तो ठीक, कीचड़ में गवरनर की मोटर फंस गई उसे निकालने के लिये आदमी मिलना मुश्किल हो गया था। सरकारी अफसरों को चाय के लिये अगर पाव भर दूध की या शक्कर की जरूरत होती तो वह भी बगैर विभागपति की आज्ञा के उन्हें कोई नहीं दे सकता था। जनता को बहकाने के लिये सरकार की तरफ से जो पर्चे बांटे जाते उनके बदले में पहले या तो पर्चे गायब हो जाते या उनकी खिल्ली उड़ाने के लिये दूसरे पर्चे बंट जाते। सत्याग्रह गुप्तचर विभाग के मार्फत अधिकारी तंग थे।

समाचार विभाग का संगठन भी आश्चर्यजनक था। चार घण्टे के अन्दर लम्बे से लम्बे फासले से प्रधान कार्यालय में खबर पहुंच जाती। और २४ घण्टे के अन्दर अन्दर विभाग पति के पास उसका जवाब पहुंच कर उस पर अमल भी होने लग जाता। कोई यह न कह सकता था कि यह काम इतनी देर में कैसे होगा या मुझसे न होगा। जिस किसी ने ऐसा कहा उसे अयोग्य बता कर अलग कर दिया गया। हुक्म की तामील अनिवार्य थी।

सारा ताल्लुका (जिसमें लगभग १२५ गांव हैं) १२ विभागों में बांट दिया गया था और प्रत्येक विभाग पर डा० सुमन्त मेहता डा० चन्दुलाल देसाई वृद्ध अब्बास तयब जी दरबार गोपालदास भाई, श्री रविशंकर भाई व्यास आदि जैसे लोकप्रिय चतुर मुस्तैद नेता विभागपति मुकर्रर कर दिये गये थे। ताल्लुके में होने वाली प्रत्येक महत्वपूर्ण घटना को ताल्लुके के अन्दर कोने कोने में फैलाने के लिये सत्याग्रह खबर नामक एक दैनिक शुरु कर दिया गया था। जिसकी प्रतिदिन १८०० प्रतियां छपती थीं और वितरित होती थीं। इस प्रचार का असर आस पास के जिलों तक बड़ौदा की प्रजा पर भी पड़ा उनके अन्दर भी अपूर्व जागृति फैल गई। सरकारी अधिकारियों तथा उनके सहायकों का बहिष्कार जब इतना कठोर हो गया कि उनके ठहरने तथा खान-पीन का सामान मिलना भी कठिन हो गया तब वे पड़ोस के ताल्लुकों में रहने लगे। पर अब तो इस ताल्लुके की प्रजा ने भी निश्चय कर लिया कि वह अधिकारियों की सहायता न करेगी।

सरकार की तरफ से ऊपर से तो बड़ी शान दिखाई जाती। अधिकारी गवरनर कहते और व्याख्यान देते कि सरकार नहीं हट सकती इसका मजा चखाया जायगा इत्यादि। पर छः महीने के अन्दर ही उसे प्रजा की मांग को स्वीकार करके लगान की जांच करने के लिये जांच कमीशन नियुक्त करना पड़ा।

युद्ध का इतिहास अत्यन्त रमणीय और शिक्षाप्रद है। और यद्यपि अब तो देश उससे कहीं बड़े और लोमहर्षण युद्ध में से गुजर चुका है तथापि बारडोली का सत्याग्रह ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जिस समय सारे देश में निराशा और आत्म विस्मृति का वायु मण्डल छा रहा था बारडोली के वीर किसानों ने देश में नवीन चैतन्य भर के आशा का संचार कर दिया। १९३०-३१ की विजय का रहस्य बारडोली की विजय ही है।

पर सन् १९३० और ३२ के युद्ध के बाद जनता में फिर सत्याग्रह की शक्ति और उपयोगिता के बारे में सन्देह पैदा होने लग गया है। किन्तु हम जरा भी सोचें तो फौरन समझ में आ जायगा कि इस मनोमोहक युद्ध में भी हमने सत्याग्रह को अपनी शक्ति दिखाने का पूरा अवसर नहीं दिया। हमारा सारा यत्न सैकड़ों कानून तोड़ने वालों की सचाई, चरित्र, अनुशासन, बलिदान की शक्ति और अन्य अनेक प्रकार की स्वच्छता की तरफ भी अगर हम उतना ही ध्यान देते तो शायद आज हमें न तो इतनी जल्दी युद्ध स्थगित करना पड़ता और न हम अपने आपको इस निराशामय वायुमन्डल में पाते।

पर बीती बातों पर पश्चाताप और शिकायतें करना वृथा है। हम सब अपनी दुर्बलताओं को खूब अच्छी तरह समझने लग गये हैं और यदि अब केवल राजनीतिक परिणाम दिखाने की उतावली को छोड़कर न खामियों को दूर करते हुए देश के संगठन में हम जुट जायंगे तो फिर दस साल के अन्दर संसार को एक चमत्कार करके दिखा सकेंगे।

इसी लेखक द्वारा लिखित बारडोली सत्याग्रह का इतिहास 'विजयी बारडोली' सस्ता साहित्य मन्डल नया बाजार दिल्ली से मंगा कर पढ़ें।

———

सच्चा कर्मयोगी श्रद्धानन्द

(ले०—प० दीनदयालु शास्त्री, झज्झर)

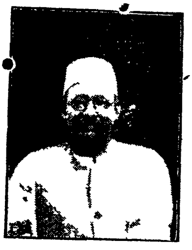
श्री स्वामी श्रद्धानन्द का नाम हिन्दू जाति की नसों में नये रक्त का सचार करन वाला है। अपन जीवन के मध्य काल में व आर्य-समाज के उच्च कोटि क नता थे और मैं उस समय सनातन-धर्म का जोरों स प्रचार कर रहा था। उस समय हमें यह भान न होता था कि हम दोनों कन्धे से कन्धा मिला कर एक मिशन के लिये एक मन होकर काम करेंगे, परन्तु हिन्दुओं की करुणाजनक दशा को देख कर स्वामी जी का आर्द्र-हृदय पिघल उठा और व बड़े उदार-भाव लेकर अपन जीवन क सन्ध्या-काल में हिन्दू-सभा क नता बन। उस समय हमें कई वर्ष साथ २ काम करन का अवसर मिला और मुझे याद है कि जाति-हित की दृष्टि से कई बार उन्होंन मेर अनुरोध का पालन कर अपन भावों की उदारता दिखाई। उनके हृदय में अनाथ हिन्दू-जाति का दर्द भरा था और इसी कारण हिन्दु-सभा क क्षेत्र मे मेरा उनके साथ अच्छा सहयोग रहा। उन्होंन आर्य-समाज के लिय नहीं; किन्तु हिन्दु-जाति, आर्य-भूमि और आर्य-सस्कृति की रक्षा क व्रत मे अपन प्राणों की आहुति दी है। वह सच्चे कर्मयोगी थे। गुरुकुल कागड़ी उनकी कर्मनिष्ठा का प्रबल उदाहरण है।

मुझे सन्तोष है, उनक देहावसान क समय मैं उनके बहुत निकट था और अन्तिम सस्कार मे उपस्थित रह सका। लाहोर में सब हिन्दु-मतों और सम्प्रदायो की ओर स जो सम्मिलित विराट सभा हुई थी, उसक अध्यक्षरूप म स्वामी जी की आत्मा की पारलौकिक शान्ति क लिये प्रार्थना करान का भी गौरव-पूर्ण कर्तव्य मुझे ही सौंपा गया था। उनका निधन ऐसा हुआ था जिसके कारण उनकी स्मृति आर्य-समाजी, सनातन-धर्मा जैनी, सिख बौद्ध सभी की अपनी सम्पत्ति बन गई है।

आज न स्वामी श्रद्धानन्द हैं न लाला लाजपतराय। पजाब की वीर-भूमि सूर्य और चन्द्रमा के समान तेजस्वी इन दोनों पुत्रों क अभाव में आज शून्य दिखाई देती है। ऐसे सहयोगियों क पीछे अधिक काल तक जीते रहने के कारण मेरे हिस्से में अब उनकी उत्तम कृतियों के स्मरण करान का कठिन कर्तव्य बचा रह गया है। इस कर्तव्य का पालन करता हुआ मैं सब भाइयों म यही अनुरोध करता हू कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलि-दान-तिथि के अवसर पर उस व्रत का श्रद्धापूर्वक स्मरण करना चाहिय, जिसकी सिद्धि क मार्ग में उस वीर कर्मयोगी न अपन उत्कृष्ट जीवन का उत्सर्ग किया है।

सर्वस्व त्यागी संन्यासी

(ले०—श्री श्रीप्रकाश एम० एल० ए०)



स्वामी श्रद्धानन्द जी क बलिदान-दिवस पर मैं उन्हें सादर सप्रेम स्मरण करता हू। उनक प्रत्यक्ष कार्य में साहस भरा रहता था। दूसरों के विचारों की या अधपरम्परा की उन्हें कोई चिन्ता न थी। जो ठीक समझते थे करते थ। उसक लिय अपना सर्वस्व दे देत थे। वर्तमान भारत के वे विशेष पुरुषो में हैं। हम सब उनक योग्य हो सकें यही आज हमारी आशा और अभिलाषा है।

—स्वामी जी धर्म समाज तथा राजनीति तीनों ही क्षेत्रों म रहे और तीनों ही क्षेत्रों मे अपना चिरस्थायी प्रभाव छोड़ गये। लोकमान्य तिलक की भाँति स्वामी श्रद्धानन्द भी अपन समय क प्रसिद्ध लड़ैया थे। सच तो यह है कि जिस लड़ाई को उन्होंन अपन हाथ में लिया अन्त म विजय प्राप्त करके ही दम लिया।

स्वामी श्रद्धानन्द की पुण्यस्मृति

(ले०—श्री वेंकटेशनारायण तिवारी)

इस बीसवीं सदी के जिन भारतीय महापुरुषो क श्रीचरणो में बैठने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है और जिनकी स्मृतियो और पावन कृतियों म मैं अपनी जीवन-यात्रा मे प्रभावित और निमन्त्रित हुआ हू उनमे स्वामी श्रद्धानन्द का एक विशेष स्थान है। शब्द के व्यापक अर्थ में वह महात्मा थे महापुरुष थ। ससार के अधिकाश लोगों ने उन्हे इसी रूप में जाना और पूजा। मेरे लिये भी वह महात्मा और महा-पुरुष थे और इसी भाव स मै प्रेरित होकर जब उन स पहली बार मिला था, तब मैंने उनके प्रति अपनी श्रद्धांजली की भेंट चढ़ाई थी। उसी घड़ी स उन्हो ने अपने अपार और अथाह प्रेम-पूरित वात्सल्य से मुझे अपने विशाल हृदय में समेट कर रख लिया और इस उदारता क साथ रख लिया कि मैं हमेशा क लिये बेकौड़ी पैसे का भक्त बन गया। उनकी वीर गति पर मैं रोया। उन आँसुओ स रोया जिनमे कोई अपने पूज्य बड़े क विछोह म रोता है। उस दिन मेरे लिये ससार स एक ऐसा आत्मीय उठ गया, जिसकी अटल सहानुभूति और आत्मीयता का मुझे सकट क समय पर पूर्ण भरोसा था

स्वामी जी सच्चे मित्र थ। जिस का साथ दिया अन्त तक साथ दिया। हा निबाहने में व एक ही थे। पात्र की योग्यता अयोग्यता की उन्हे चिन्ता नहीं, उसकी कृतज्ञता कृतघ्नता की उन्हें परवाह नहीं। व सच्चे थ सत्य क पुजारी थे। साथ ही मतभेद का आदर करना भी वे जानते थे यदि मतभेद की जड़ मे विद्वेष न हो और न हो स्वार्थ की प्रेरणा।

वह वीर थ। इसी लिये वह महापुरुष हुए। इसी लिये वह महात्मा कहलाय। वीरता और हृदय की सकीर्णता एक साथ नहीं रह सकता। उनम वह छू कर भी नहीं गई थी। हृदय उनका विशाल था। दान मे प्यार में विचार मे और त्याग कर्म में देश के लिये आकाक्षाओ मे जिस पहलू से उनक जीवन पर नजर डालिये उसी दृष्टि म उनमें विशालता दिखाई देती है। इस पर भी अज्ञजन उन्हें किसी खास समाज का उपासक समझते और बदनाम करते रहे। उनको मुझे मालूम है साम्प्रदायिकता मे उतनी ही चिढ़ थी, जितनी किसी राष्ट्रवादी को हो सकती है। परिस्थितियों म विवश होकर उन्हें परिमिति क्षेत्रों मे विवश होकर काम करना पड़ा, परन्तु इसका एक मात्र कारण यह न था कि वह किसी समाज या सम्प्रदाय को कम प्यार करते थ। बल्कि यह थी कि वह सत्य को अधिक प्रिय समझते थे। अन्याय और अन्याचार क वह जन्म-शत्रु थे। आमरण उन्होंन इनक प्रति लड़ाई जारी रक्खी। पीड़ितों और पीड़ा मे उन्हें जो चोट लगती थी, इसका अन्दाजा व ही लगा सकते हैं जो उनक करीब थे।

वह वीर की तरह जिये। वीर ही की तरह उन्होंन मृत्यु को भी अपनाया। अपनी जिन्दगी और मौत से वह हमको दिखा गये कि वीर कैसे जीते और मरते हैं और इसी के द्वारा उन्होंन हमें सिखाया कि उनक देशवासियों को भी जो वीर भूमि म पैदा हुए और वीरों की सन्तान कहलाते हैं वीरों ही की तरह कैसे जीना और मरना चाहिये। उनका नाम इतिहास में अमर है। उनका जीवन हमारे राष्ट्र की पवित्र निधि है।

उनके बलिदान की जयन्ती पर मैं प्रेम और श्रद्धा की तुच्छ अञ्जली चढ़ाता हुआ उनकी स्मृति को बार-म्बार प्रणाम करता हू।

—'वसुधैव कुटुम्बकम्' कहनेवाले श्रद्धानन्द के विशाल आकाश सम हृदय को साम्प्रदायिकता के घेरे में घेरा नहीं जा सकता।

स्वामी जी का जीवन धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक सभी दृष्टियों से भारत के अपने युग का राष्ट्रीय इतिहास है।

साहित्य-समालोचन

समालोचनार्थ सब पुस्तकों की दो-दो प्रति आनी चाहियें। एक पुस्तक आने पर समालोचना न हो सकेगी।

कराची-कांग्रेस की रिपोर्ट।—डिमाई अठपेजी साइज सजिल्द पृष्ठ १६२। प्रकाशक—श्री आर० के० सिधवा और डा० ताराचन्द लालवानी, प्रधान मन्त्री, ४५ वीं भारतीय राष्ट्र-महासभा।

कांग्रेस का करांची अधिवेशन अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण था। जबरदस्त लड़ाई के बाद गान्धी इरविन पैक्ट के रूप में सरकार से बराबरी की हैसियत में समझौता करने कांग्रेस ने जो विजय प्राप्त की थी लोगों में उसका उत्साह छाया हुआ था। पीढ़ियों से खोया हुआ आत्म-विश्वास फिर जागृत हुआ था। हालांकि सरदार भगतसिंह की फांसी ने हमारी उमङ्गों पर एक लात जमा दी थी और राष्ट्रीयता के उग्र जीवित अवतार गणेशशङ्कर विद्यार्थी की शहादत ने हमारी आंखों को गीला कर दिया था फिर भी अपनी विजय का थोड़ा मद हमारी आंखों में उस समय छाया हुआ था। देशप्रिय सेन गुप्त ने बड़े तपाक से कहा था कांग्रेस के पास अद्भुत शक्ति है, आज कांग्रेस चाहे तो जरा सी देर में इस देश से ब्रिटिश सरकार को उखाड़ सकती है। ऐसी परिस्थिति में स्वभावतः उस अधिवेशन में बड़ा जीवन था। जनता के मौलिक अधिकारों की सर्वप्रथम घोषणा का श्रेय भी इसी अधिवेशन को प्राप्त है। अतः इसकी कार्यवाही रोचक और ज्ञातव्य ही नहीं स्फूर्ति-प्रेरक भी है। सरकारी दमन-दावानल के कुछ विश्राम करते ही स्वागत-समिति ने अधिवेशन की बाकायदा रिपोर्ट प्रकाशित कर दी है यह उसके लिये धन्यवाद की बात है। परन्तु हमें बहुत अफ़सोस है जिस हिन्दी पर कांग्रेस में इतना जोर दिया जा रहा है उसी की इसमें दुर्गति है। स्वागताध्यक्ष और राष्ट्रपति के भाषण दिये तो गये थे हिन्दी में पर इसमें कुछ भी हिन्दी में नहीं मिलते अलबत्ता उनके अंग्रेजी रूप मौजूद हैं। प्रस्ताव और कार्यवाही वर्णन सब अंग्रेजी में है। हिन्दी हिन्दुस्तानी में हुए भाषण हिन्दी में अवश्य दिये गये हैं पर उनकी वाक्य रचना शाब्दिक अशुद्धियों और छपाई-सफाई पर किंचित मात्र ध्यान नहीं दिया गया प्रतीत होता। हिन्दी के प्रति स्वागत-समिति की ऐसी उपेक्षा अक्षम्य है। कराची में हिन्दी की छपाई आदि की असुविधाओं की कठिनाई हम समझ सकते हैं पर उस हालत में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी से इसके लिये मदद ली जा सकती थी। जो हो, 'आफिशियल रिपोर्ट' होने से यह रिकार्ड की चीज तो है ही। आशा है आगे से स्वागत-समितियां इस ओर पूरा ध्यान रखेंगी। कम से कम अ० भा० कांग्रेस कमिटी को तो इसकी देख-भाल रखनी ही चाहिये।

—————

सुदर्शन (हिन्दी दैनिक) सम्पादक श्री कामताप्रसाद जैन और श्री सुदर्शनलाल जी जैन। प्रकाशक श्री खतीलाल अग्निहोत्री सुदर्शन प्रेस एटा (यू० पी०)। अर्जुन साइज के चार पृष्ठ। मूल्य १ पैसा प्रति अंक।

यह जैनियों का पत्र है, पहले साप्ताहिक निकलता था, अब आठवें वर्ष में दैनिक रूप धारण किया है। विविध समाचार और विषयों का सङ्कलन है परन्तु विचारों में कट्टरता प्रतीत होती है। समाज की कुरीति से पीड़ित एक बहन को दी गई सम्पादक जी की यह सलाह इसकी नीति का द्योतक एक छोटा सा पर स्पष्ट नमूना है—शास्त्रों की यही आज्ञा है कि पुरुष सदैव निर्दोष है और स्त्री सदैव सदोष है। हम मजहब में अकल को दखल देना कुफ्र समझते हैं। हमारे विचार में तो आप कानों में तेल डाल कर चुपचाप पड़ी रहें इसी में तुम्हारा समाज का और हमारा कल्याण। एक ही सम्बोधन में एक जगह आप और दूसरी जगह तुम पत्र की 'अपनी' सम्पादकीय भाषा की विशेषता का उदाहरण है। निस्सन्देह यह साहस की बात है कि एटा जैसी छोटी जगह से यह दैनिक निकाला गया है। यदि अपनी नीति एवं भाषा में उन्नति करले तो आशा है यह चल निकलेगा।

—मुकुन्दबिहारी वर्मा।

—————

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका—ले०—ऋषि दयानन्द। प्रकाशक—आर्य-साहित्य-मण्डल, अजमेर। पृष्ठ संख्या ४७०। मूल्य ।=)

उत्कृष्ट कोटि का आर्यसामाजिक साहित्य अत्यन्त सुलभ करके आर्य संसार का उपकार जितना आर्य साहित्य-मण्डल ने किया है, उतना अन्य किसी संस्था ने नहीं किया, यह आज निःसंकोच कहा जा सकता है। चारों वेदों का सरल हिन्दी भाष्य ३५) में देना साधारण साहस नहीं है। कुछ समय से मण्डल ने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का सुलभ संस्करण डालने का बीड़ा उठाया है। गत शताब्दी के अवसर पर उसने ।) में सत्यार्थप्रकाश बेच कर प्रकाशन-संसार में हलचल करदी थी। अब उसने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ।=) में देकर असमर्थ व आर्य विद्यार्थियों के लिये महान उपकार किया है।

पुस्तक की छपाई सफाई अच्छी है। संस्कृत और भाषा के भागों तथा प्रश्नों व उत्तरों को पृथक २ पराग्राफ में छापने से पाठकों को समझने में सुगमता होगी। मूल पुस्तक के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि नवयुग के निर्माता वेदों के भाष्य-कार ऋषि दयानन्द के भाष्य की भूमिका रूप यह ग्रन्थ है। यू० पी० के विश्वविद्यालयों में इसे पाठ्यक्रम में नियत किया जा चुका है।

आर्य-जगत तो आर्य साहित्य-मण्डल के इस प्रयत्न का स्वागत करेगा ही, वेद के प्रेमी अन्य मतावलम्बी भी इसे पढ़ेंगे।

—कृष्णचन्द्र

—•—

पेटेन्ट स्लेट तख्ती—हकीम सैयद अब्दुलाशाह साहब जजानी ने इस स्लेट तख्ती का आविष्कार कर विद्यार्थियों का वास्तव में बहुत उपकार किया है। एक तरफ यह स्लेट का काम देती है और एक तरफ तख्ती का। तख्ती में भी एक खूबी है कि मुलतानी मिट्टी लगाये बिना ही पानी से साफ हो जाती है। स्कूलों के विद्यार्थी इस स्लेट-तख्ती का प्रयोग कर भारत के इस नये, छोटे परन्तु उपयोगी आविष्कार का आदर करेंगे, ऐसी आशा है। हकीम साहब ने मुसलमान होते हुए भी अपनी कम्पनी का नाम कृष्ण भारत स्लेट तख्ती कम्पनी रखा है। यह कम्पनी करौलबाग दिल्ली में स्थित है।

—

प्राप्ति-स्वीकार

तत्त्वार्थ सूत्र जैनागम समन्वय पर एक दृष्टि—ले०—प्रो० बनारसीदास। प्रकाशक—ला० रामलाल जी इन्द्रचन्द्र जी पारख मालीवाड़ा, दिल्ली।

सदुपदेश माला—संग्रहकर्त्ता चन्द्रभान विद्यार्थी और शिवनाथ विद्यार्थी। प्रकाशक श्री हिन्दू विद्यार्थी सम्प्रदाय कालपी। मूल्य ।-)।

सुलभ पैसा-माला के चार पुष्प—(१) हंसी का फव्वारा (२) छेड़छाड़ (३) काम की बात (४) बदी। प्रकाशक—पापुलर हाउस लिमिटेड ब्यावर।

असूल बायोकमिस्ट्री—ले०—डा० के० पी० सक्सेना एम० डी०, एम० बी० एस०। प्रकाशक—आलीजाह दरबार प्रेस ग्वालियर। मू० १)।

—•—

धारावाही उपन्यास

अपराधी कौन ?

(ले०—श्री देव)

बीजारोप

(१)

'यारो, आज सगमलाल के बाग पर चढ़ाई होगी। उस बाग का माली बड़ा मूजी है। उस दिन जब हम उसके बाग में घुसे थे, तब उसने बहुत गालियाँ दीं और लाठी से सिर फोड़ देने की धमकी दी। आज उसे मजा चखाया जाय।'

'ठीक है। ठीक है। आज वहीं धावा हो।'

प्रस्ताव करने वाले का नाम उम्मेदसिंह था और अनुमोदन करने वालों के नाम थे बशीर, तिखूँ और गेंदा। उम्मेदसिंह की आयु लगभग १२ वर्ष की होगी, शेष तीनों लगभग उसकी ही उम्र के थे। यह चाण्डाल चौकड़ी एक वृक्ष की छाया में बैठकर युद्ध की तैयारियां कर रही थी।

बशीर बोला, 'भाई, कल तो बहुत ही मजा आया। जब हमने उस बनिये की दुकान पर जाकर जलेबी के थाल को उल्टा दिया, तब वह सटी लेकर हम लोगों को मारने भागा इतने में लाला की धोती की लांग खुल गई। जितने में वह लांग बांधता, उतने में हम लोग हाथ और मुँह में जलेबियां भर कर भाग निकले बस लाला जी, आँखें फाड़ते और गालियाँ बकते ही रह गये।

तिखूँ ने कहा 'क्या कहते हो यार, उस वक्त उस लाला का पेट देखने ही के लायक था। मानो आटे की बोरी ऊपर नीचे झूल रही हो।

उम्मेदसिंह ने गप्पों के सिलसिले को काटते हुए कहा कि 'अब समय खोना व्यर्थ है। सब अपने अपने घर चलें, और कोई घन्टे भर में सगमलाल के बाग के पिछवाड़े की ओर जो पीपल का पेड़ है उसके नीचे इकट्ठे हों। दोपहर के समय माली और मालिन दोनों ही चारपाइयों पर लेट कर खुर्राटे भरने लगते हैं। यही वक्त अमरूदों के पेड़ पर छापा मारने का है। उम्मेदसिंह उस शैतान पार्टी का नेता था। वह सूझ और हिम्मत में अपने साथियों में बढ़ा चढ़ा था। सबने उसकी सलाह का स्वीकार किया और अपने अपने घरों की ओर रवाना हो गये।

उम्मेदसिंह ने भी अपने घर की ओर कदम बढ़ाया। इस इतिहास का प्रारम्भ भारत की राजधानी दिल्ली की उस बस्ती में होता है, जिस का नाम सब्जीमन्डी है। दिल्ली के बड़े-बड़े बाजार अपनी-अपनी विशेषताओं के लिये प्रसिद्ध है। चाँदनी चौक जौहरी के लिये, चावड़ी बाजार वेश्याओं के लिये, खारी बावली मिर्चों की घास के लिये और सब्जी मन्डी मच्छरों और बदबू के लिये मशहूर हैं। ऐसी सब्जी मन्डी की बस्ती के एक बहुत ही गन्दे हिस्से में एक छोटा झोंपड़ा था जिस में उम्मेदसिंह और उसकी मा रात में सोया करते और दिन में चूल्हा जलाकर रोटी बनाते थे।

६ वर्ष हुए, उम्मेदसिंह का बाप इन्फ्लुएन्जा की बीमारी से मर गया। वह एक मिल में काम करता था। मेहनती आदमी था। दिन में दस घन्टे परिश्रम करके रुपया डेढ़ रुपया कमा लेता था। उसका नाम जवाहरसिंह था। वह जात का चोहान राजपूत था। उम्मेदसिंह की माता का नाम अनारो था। जवाहर सिंह जो कुछ कमाकर लाता था वह अपनी औरत के हाथ पर रख देता था। दोनों की अच्छी निभती थी। हां कभी कभी सातवें आठवें दिन झगड़ा हो जाता था, क्योंकि जिस दिन मिल की छुट्टी होती थी, उससे पहली रात मजदूरों की तबाही का द्वार खुलता था। उस रात मजदूरों की पार्टियां शराब चढ़ाती थीं और जुआ खेलती थीं। जवाहिरसिंह उन मजलिसों से अलग नहीं रह सकता था। कुछ न कुछ खोकर आता था। अनारो बेचारी उस रात दुःख की घड़ियां बिताती थी कभी कभी लड़ती झगड़ती भी परन्तु क्या करती। बेचारी लाचार थी। स्वयं जितना मितव्यय कर सकती थी करती थी। परिणाम यह था कि उनके गृहस्थ की गाड़ी किसी न किसी तरह चली जाती थी यद्यपि बचता कुछ भी नहीं था। जो पैसा अनारो के प्रयत्न से बचता था वह जवाहर की बोतल के साथ बह जाता था।

एक प्रातःकाल जवाहिर देर तक चारपाई पर से न उठा। पहली रात उसने मजदूरों की मडली में शराब पीकर व्यतीत की थी। सुबह तीन बजे घर पर आया, और चारपाई पर पड़ गया। रात ठण्डी थी। हवा लग गई। सुबह उठा तो जोर का ज्वर चढ़ा हुआ था, और गला रुधा हुआ था। दोपहर बाद मिल के डाक्टर ने आकर देखा तो बतलाया कि इन्फ्लुएन्जा हो गया है। टूटी हुई झोंपड़ी, थोड़ा कपड़ा और पथ्य की कमी भला इन्फ्लुएन्जा का इलाज क्या होता? तीसरे दिन निमोनिया के चिन्ह प्रकट हो गये, और आठवें दिन प्राणों ने शरीर का साथ छोड़ दिया। बेचारी अनारो ६ वर्ष के लड़के के साथ इस भयानक संसार में अकेली रह गई।

पहले तो अनारो को चारों ओर अन्धेरा दिखाई देने लगा। वह बहुत रोई परन्तु कब तक रोती। अपना और बच्चे का पेट केवल आंसुओं से न भर सकी। जब बच्चा भूख से पीड़ित होकर 'मा भूख लगी है, रोटी दे' की रट लगाता तो बेचारी अनारो अपना दुख भूल जाती। कई कई दिनों तक रोजगार की तलाश में घूमने के पीछे एक पड़ौसी ने सलाह दी कि सब से अच्छी बात यह होगी कि जिस मिल में जवाहिरसिंह काम करता था, उसी के सेक्रेटरी के पास जाकर नौकरी मांगो, सेक्रेटरी दयावान आदमी है शायद कोई काम दे दे। अनारो को सलाह पसन्द आई। वह उम्मेद की उंगली पकड़ कर सेक्रेटरी के पास हाजिर हुई और आखों में आंसू भर कर कोई रोजगार मांगा। सेक्रेटरी का दिल अच्छा था। जब तक मिल की गांठ पर आंच न पहुंचती हो तब तक वह दया को नहीं छोड़ता था। उसने अनारो को मिल में काम दिला दिया।

तब से अनारो प्रतिदिन काम पर जाती है। कुछ दिन तक तो वह उम्मेद को अपने साथ ले जाती थी। परन्तु वह बड़ा चंचल और शरारती लड़का था। बहुत दिक किया करता था। जब वह आठ वर्ष का होगया तो अनारो उसे सुबह का कलेवा देकर कारखाने चली जाती, और पड़ोसिन से कह जाती कि जरा देखते रहना, उम्मेद इधर उधर न भाग जाय। बारह बजे कारखाना एक घन्टे के लिये बन्द होता था, उस समय अनारो घर आती और सुबह की बनाई हुई रोटियां खुद खाती और उम्मेद को भी खिलाती थी। वह एक बजे फिर मिल में चली जाती, और शाम तक वहीं रहती। इतने समय तक उसकी राय में उम्मेद पड़ोसी के बच्चों के साथ खेला करता था।

परन्तु उम्मेद क्या करता था? वह मा के चले जाने पर घर का दरवाजा बन्द करके बाहिर निकलता और बच्चों में खेलने में लग जाता था। जब तक छोटा था तब तक तो घर के पास ही खेला करता, परन्तु आयु के साथ ही उसकी दुनिया भी बढ़ती गई। आहिस्ता-आहिस्ता वह अपनी पार्टी के साथ दूर-दूर के दौरे लगाने लगा। कभी ओट पर तो कभी जोतगढ़ पर। कभी रोशनारा बाग में तो कभी बफखाने के मोमन वाली झील के किनारे। सारांश यह कि शैतान बच्चों की वह पार्टी चारों ओर चक्कर लगाती और शरारतें करती थी। उम्मेद अपनी मण्डली के सब बच्चों में मजबूत और चालाक था इसलिये उस मण्डली का अगुआ बनने में देर न लगी। अनारो अपने बच्चों को मनुष्य समाज के बनाये हुए किसी स्कूल में न भेज सकी, परन्तु कुदरत ने उसके लिये अपने स्कूल के द्वार खोल दिये। वातावरण ने उम्मेद को अपने ढांचे में ढालना आरम्भ कर दिया। ४ वर्ष तक उम्मेदसिंह की स्वाभाविक शक्तियों पर गन्दे वातावरण की प्रतिक्रिया का जो परिणाम हुआ उसकी झांकी हम अभी दिखा चुके हैं। वह एक ऐसा आवारा, शरारती चण्डाल चौकड़ी का अगुआ बन गया जिसने सारी सब्जी मण्डी पर धाक जमा रखी थी।

(२)

सगमलाल के बाग के आम बहुत प्रसिद्ध थे। वह मीठे भी थे और नर्म भी। दिल्ली ठीक फलों के लिये विख्यात है। बाजार में यदि कोई स्वादु फल बिकता हो तो समझ लो कि वह किसी बाहिर की मन्डी से आया है। खास दिल्ली अत्यन्त नीरस है। उसे बाहिर वाले ही रसदार बताते हैं। परन्तु सगमलाल के बाग में अमरूदों की पौद बाहर से लाकर लगाया गयी थी। इस साल उस बाग का ठेका लिया था। नत्थन माली उसकी स्त्री और चार बच्चे बड़ी मेहनत से बाग की रखवाली करते थे। उनके जीवन का तो यही आधार था। और कभी बन्दर आग पर टूट पड़ते और कुछ फलों को बिगाड़ जाते तो नत्थन के लिये तो मानो भूकम्प आ जाता। उसकी आशाओं का महल टूट जाता क्योंकि इस वर्ष अमरूदों की अच्छी फसल को देख कर उसने लड़की की शादी करने का निश्चय कर लिया था।

(क्रमशः)

किसान ही भारत की संस्कृति है

संसार की एकता संस्कृति से होगी

श्रीमती सरोजिनी नायडू का भाषण

———:o:———

'भारत की संस्कृति किसान हैं, केवल टागोर की कविता भारत की संस्कृति नहीं बल्कि वास्तविक अर्थों में किसान ही भारत की संस्कृति हैं।''

गत १६ दिसम्बर को लिटररी लीग की ओर से की गई एक सभा मे श्रीमती सरोजिनी नायडू ने 'संस्कृति' बड़ा पर बड़ा हृदयग्राही भाषण दिया। सभा में पंजाब सरकार के अनेक अधिकारी गण्यमान्य नागरिक और विद्वान् उपस्थित थे। उसके कुछ अंश निम्न लिखित हैं—

लिटररी लीग की चेष्टाय भारतीय संस्कृति तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिये—संसार भर की संस्कृति का समर्थन करना चाहिये। मैंने संसार का जितना भ्रमण किया है मुझे मानवी एकता की उतनी ही अधिक आवश्यकता प्रतीत हुई है। सभी देश वाले एकेश्वर प्रेम के गीत गाते हैं। सारे संसार का उपास्य देव एक ही है। तो भी संसार मे झगड़े उठ रहे है। आप मान चित्र देखिये हर देश जुदा-जुदा रंग मे दिखाया गया है हालांकि सब का कलेजा मानवी प्रेम और एकता का संदेश दे रहा है। राजनीतिक दृष्टि मे हम में भले ही खड़ेबन्दी हो पर हमारे दिल विशाल और उदार होने चाहिये। इन सब झगड़ों का बेहतर इलाज सांस्कृतिक एकता ही हैं। हमे अपनी संस्कृति पर गर्व होना चाहिये और उसके सही अर्थ समझने की चेष्टा करनी चाहिये। सांस्कृतिक एकता की दृष्टि से पंजाब पर बड़ी भारी जिम्मेदारी है। यहां हिन्दू मुसलमान, सिख पारसी और ईसाई आदि सभी संस्कृतियों के आदमी रहते हैं। उनमे एकता होनी चाहिये।

संस्कृति युक्त जीवन

संस्कृति की एकता ही किसी देश की इच्छाओ का रूप ग्रहण करती है और फिर देश संयुक्त होकर इस योग्य हो जाता है कि वह अपने संग्राम मे सफल हो सके। संस्कृति राष्ट्रीय जीवन के लिये अत्यावश्यक है। हमारे सामने इस समय जो समस्यायें है उन्हें हम कल भूल जायगी। कल हमारे सामने नई समस्यायें होंगी। इन समस्याओं को संस्कृति युक्त व्यक्ति ही हल कर सकते है। आज इस दुनिया मे अशान्ति और उसके बड़े कारनामे उठ गये हैं लेकिन महात्मा बुद्ध के शब्द अभी तक मौजूद है। उन्हें दुनिया क्या भूल नहीं सकती? इस लिये कि महात्मा बुद्ध ने संसार में सच्चाई मानवी स्वतन्त्रता और आत्म सम्मान का प्रचार किया।

आपने भारतीय युवकों से अपील की कि वह पीछे की ओर न देखें



श्रीमती सरोजिनी नायडू

बल्कि भारत के भविष्य की ओर ध्यान दें वह अपना स्वर्ग खुद तैयार करे वह भावी भारत का स्वप्न रखे। यही स्वप्न और इरादे की दृढ़ता भारतीयों के भविष्य को शानदार बनायगी। क्या भारत में कोई ऐसा युवक है जो इस बात को अनुभव न करता हो कि मातृभूमि गुलामी की जंजीरो मे जकड़ी हुई है। वह कौन सा युवक है जो मातृभूमि की गुलामी पर लज्जा से सिर नहीं झुकाता। मेरा सिर लज्जा से झुक जाता है, जब में मातृभूमि को वर्तमान अवस्था में देखती हू।

देशभक्ति का भाव

सांसारिक जीवन मे मनुष्य को विभिन्न विभागों मे काम करना होता है। कोई मजदूर होता है तो कोई मन्त्री। हम सब में जातीयता और देशभक्ति का भाव कूट कूट कर भरा होना चाहिए। जब किसी जाति मे देश भक्ति का भाव पैदा हो जाय तो फिर वह अपनी बुरी अवस्था को अनुभव करने लगता है। संस्कृति ही एक जाति का सच्चा दर्पण है। इस के बिना आप जाति के कष्टों का अनुभव नहीं कर सकते। महात्मा गांधी के शब्दों में संस्कृति का मतलब यह है कि आप का आदर्श मनुष्य मात्र की सेवा हो। इस समय आपके मध्य हजारों नहीं लाखों आदमी कष्ट में हैं

गांधी जी कई बार साधारण सी बात करते हैं, लेकिन अगर उस पर ठन्डे दिल मे विचार किया जाय तो वह बिलकुल ठीक और सच होती है।

कृषि ही संस्कृति है

महात्मा जी कहते हैं कि कलचर (संस्कृति) ही एग्रीकलचर (कृषि) है। एक आदमी यह सुनकर हंस पड़ेगा, लेकिन जब इस पर गहरी दृष्टि से देखा जाय तो यह ठीक मालूम होता है। आज करोड़ो किसान जो आपको रोटी देने के लिये लहू पसीना एक कर देते हैं और उनकी स्त्रियाँ आप के लिये सूत कातकर आप को कपड़ा देती हैं, आज उनकी क्या हालत है? भारत की संस्कृति किसान हैं। केवल टैगोर की कविता भारत की संस्कृति नहीं, बल्कि वास्तविक अर्थों में किसान ही भारत की संस्कृति है। हमें अपनी संस्कृति को ठीक दर्जे पर लाने के लिए अपनी मातृभाषा को अपनाना चाहिये जो, अश्रु बहा रही है। किसानों की हालत बेहतर बनाये। कलचर (संस्कृति) के वास्तविक अर्थ यही हैं। इसलिए मैं मिनिस्टर आफ एग्रीकलचर (कृषि-मन्त्री) का स्वागत करती हू। महात्मा जी का कहना है कि हम प्रेम और सेवा से ही संसार पर विजय प्राप्त कर सकते हैं तलवार से नहीं यह कितनी साधारण बात है लेकिन अक्षरशः ठीक है। भारत तब ऊंचा होगा जब भारतीय यूनिवर्सिटियों मे मुसलमान प्रोफेसर संस्कृत पढ़ाते नजर आयेंगे और हिन्दू प्रोफेसर फारसी और अरबी पढ़ायेंगे। मैं हिन्दू मुस्लिम एकता का यही स्वप्न देखती हू और यह स्वप्न जरूर पूरा होगा।

———

श्रद्धानन्द–दर्शन

मुन्शीराम मे श्रद्धानन्द



पानी में खड़े होकर बाल तोड़ने की विधि पूरी हो रही है।

अमर बलिदान



गोली लगन क बाद का, चित्र



हुतात्मा श्रद्धानन्द (चिता में)

आदर्श शिक्षा-विशेषज्ञ

(ले०—श्री सेवाराम फेरवानी)

मैं उनसे गुरुकुल कांगड़ी में मिला था। वह एक वीर आत्मा थी जो एक महान आदर्श शिक्षा के प्राचीन आदर्श को अमल में लाने का यत्न कर रही थी। मनुष्य जीवन के उस महान माली ने अपने मानवी पौधों की क्यारी गंगा के किनारे हिमालय के चरणों में हरिद्वार के समीप ही लगायी थी। वह ऐसा तीर्थ है जहां वर्ष के प्रत्येक मास में हजारों तीर्थ यात्री आते रहते हैं। और यह क्यारी धीरे धीरे सख्या में रतो कार्यकर्ताओं महत्वकांक्षाओं और बाह्य संसार पर शिक्षा तथा सामाजिक क्षेत्रों में अपना प्रभाव डालती हुई व्यापक बन गई। उन्होंने समझ लिया था कि सामाजिक पुनरुत्थान के लिये शिक्षा सब से प्रबल साधन है। नवीन युग को पूर्व तथा पश्चिम की शिक्षा प्रणालियों में जो कुछ सर्वोत्तम था उसकी आवश्यकता थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उस शिक्षा प्रणाली को विकसित करने का यत्न किया जिसमें गुरु शिष्य के पारस्परिक सम्पर्क से योग्यता को उत्पन्न किया जाता है और उस योग्यता को मनुष्य के मानसिक आध्यात्मिक तथा सामाजिक जीवन में जो भी कुछ सर्वोत्तम वस्तु हो उसकी ओर झुकने का अभ्यास कराया जाता है। गुरुकुल मनुष्य में इसी योग्यता को उत्पन्न करने तथा प्राकृतिक और सांस्कृतिक सम्पर्कों से उन्नत करने का प्रचुर अवसर देता था। पर्वत की शोभा नदी का शांत शीतलतापूर्ण प्रवाह, विस्तीर्ण सुन्दर रम्य उपवन व घाटियाँ पर्वत की उपत्यका का वन, सुनहली उषा और रंगीन सूर्यास्त, ये सब ब्रह्मचारियों के विकास में सहायक होते थे और व्यावहारिक आदर्शों तथा आदर्शवादियों का भी वहां अभाव नहीं था। वे सब उनके (स्वामी जी के) उच्च प्रयोजन की प्रबल पूर्ति में सहायक होते थे और वहां बैठ कर स्वामी श्रद्धानन्द मानवी जीवन के शांत प्रवाहित स्रोत का निरीक्षण परीक्षण पूजन और पालन करते थे। और उनका काम बार २ धन्य था। उसको करने वाले और देखने वाले धन्य थे और वे ब्रह्मचारी भी धन्य थे जो इस उच्च वातावरण में पले थे।

—**—

शव का सम्मान



श्रद्धानन्द बाजार में अर्थी निकाली जा रही है



मद्रास की धर्म यात्रा में लिया गया चित्र

भारत का सेवक

ले०—श्री मोहनलाल सक्सेना

स्वामी जी के दिल व दिमाग के अनेक गुणों और उनके विविध कामों की स्मृति हमारे मन में इतनी ताजा है कि उनके दुहराने की आवश्यकता नहीं। हम में से जो कोई उनके सम्पर्क में आया वह उनकी निःस्वार्थ लगन शुद्ध ईमानदारी दूरदृष्टि मिशनरी उत्साह और सब से बढ़ कर उनके निर्भीक साहस तथा अनथक परिश्रम से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। उनके विषय में सचमुच कहा जा सकता है कि जिये भी देश के लिये और मरे भी देश के लिये उन्होंने भारत की धार्मिक सामाजिक शैक्षणिक और राजनीतिक उन्नति के लिये काम किया। उनका दृष्टिकोण ही क्रांतिकारी था। वह प्रत्येक प्रश्न पर बुद्धि-पूर्वक विचार करते थे और अनेक सुधार जो शासन पूर्व होने चाहिये थे, उनके ही तत्व में आरम्भ हुए। उनका आदर्श जीवन त्याग तथा सेवा का अविच्छिन्न इतिहास है और भारत के प्रत्येक सच्चे सुपुत्र को उसका अनुकरण करना चाहिये। भारत की भावी सन्तति अभिमान और कृतज्ञता के साथ उसका स्मरण करेगा।

———

भारत के लिये पंचवर्षीय आयोजन

एक नवीन कार्यक्रम का मसविदा

(लेखक—श्री चन्द्रराज भण्डारी विशारद)

(गतांक से आगे)

इस लेखमाला क सुयोग्य लेखक श्री चन्द्रराज भण्डारी ने पिछले लेखों में भारत में एक पंचवर्षीय आयोजन की आवश्यकता और उसके मुख्य आधारभूत सिद्धान्तों का विवेचन किया था। इस लेख में उन्होंने उसके तीन पहलुओं पर प्रकाश डाला है, सरकार से कैसे सहायता ली जाय, आर्थिक व्यवस्था क्या हो, आयोजन का संगठन कैसे हो? हमें आशा है, हमारे पाठक और विचारक इस लेखमाला का अध्ययन और मनन करेंगे।

असेम्बली के मेम्बरों का संगठन

लेकिन इन तत्वों का व्यावहारिक रूप बनाने के पूर्व यह बात भली प्रकार ध्यान में रखना चाहिये कि यहाँ पर गवर्नमेन्ट हमारी अपनी नहीं है। इस प्रकार के रचनात्मक कार्यों की सिद्धि में लाखों, करोड़ों रुपये के प्रारम्भिक व्यय की आवश्यकता होती है। ऐसे भारी व्यय की समस्या गवर्नमेन्ट ही आसानी से हल कर सकती है। रूस की शिक्षा और अर्थ व्यवस्था में इतनी शीघ्र जो उन्नति हुई उसका एक प्रधान कारण उनकी अपनी गवर्नमेन्ट का होना था। ऐसी स्थिति में अपनी गवर्नमेन्ट न होने से हमारी कठिनाइयाँ कई गुना अधिक बढ़ जाती हैं। फिर भी मौजूदा गवर्नमेन्ट से हम अधिक से अधिक लाभ उठा सकें इसका हमें अवश्य प्रयत्न करना चाहिये।

पर इसके लिये असेम्बली के साथी गैरसरकारी सदस्यों का एक मजबूत संगठन बनाने की आवश्यकता होगी। हमारा ऐसा खयाल है कि अगर मतभेद का विषय न हो, प्रयत्न में कमी न हो और कोई प्रभावशाली व्यक्ति इस कार्य को हाथ में ले तो इसमें बहुत कुछ सफलता हो सकती है। शिक्षा का प्रोग्राम ऐसा है कि अगर गवर्नमेन्ट की कोई कूटनीति काम न कर रही हो तो इस विषय में सभी मेम्बर एक हो सकते हैं। इसी प्रकार आर्थिक समस्या का प्रश्न ऐसा है जिसमें मिल-मालिक और पूँजीपतियों के प्रतिनिधि एकमत न होंगे, फिर भी यदि प्रयत्न किया जाय तो बहुमत इस बात के लिये तैयार हो सकता है। इस प्रकार यदि असेम्बली का बहुमत संगठित करने में हम लोग सफल हुए तो हमारी एक बहुत बड़ी कठिनाई दूर हो जायगी।

असेम्बली के मेम्बरों का यह संगठन हमारे आयोजन में क्या-क्या सहायतायें देगा, यह तो समय-समय पर पैदा होने वाली आवश्यकताओं से तय होगा, फिर भी कम से कम नीचे लिखी बातों की सहायता के लिये तो उसे गवर्नमेन्ट से अवश्य ही अपनी मांग पेश करनी होगी:—

१—भारतवर्ष में गवर्नमेन्ट के जितने भी हाईस्कूल हैं इनके कोर्स में परिवर्तन कराना। जितने फालतू विषय पढ़ाये जाते हैं उनको बन्द करवा कर, कृषि उद्योग और सैनिक शिक्षा को अनिवार्य करवाना। इस बात का प्रयत्न करना कि गवर्नमेन्ट अपने प्रत्येक हाईस्कूल और मिडिल स्कूल के साथ एक-एक उद्योग शाला की स्थापना कर, जिसमें प्रांत के प्रधान उद्योगधन्धों की मशीनें फिट की हुई हों। इन मशीनों पर सब विद्यार्थी अनिवार्य रूप से अपने प्रान्त के उद्योग-धन्धों की शिक्षा प्राप्त करें। इन्हीं स्कूलों के आस-पास जो मैदान हों उनमें कृषि की व्यावहारिक शिक्षा देने के लिये हर प्रकार के नवीन प्रयोगों को बतलाने की व्यवस्था हो। इसी प्रकार इन स्कूलों के विद्यार्थियों को सैनिक-शिक्षण देने की व्यवस्था की जाय। इन तीन विषयों के बदले में दूसरे विषय जितने भी कम किये जा सकें, कर दिये जायं।

(२) ग्रामों के अन्दर राष्ट्र की ओर से जो पाठशालायें स्थापित की जायं, उन्हे मासिक या सालाना अधिक से अधिक सहायता दिलाने की व्यवस्था की जाय। उन शालाओं के लिये कृषि के व्यावहारिक प्रयोग सिखाने को जमीन के टुकड़े भी मुफ्त में दिलाने की कोशिश की जाय।

(३) जो मशीनरियां विलायत, अमेरिका या जरमनी से आती हैं, उनके बनवाने के कारखाने यहीं पर खुलवाने का उद्योग किया जाय जिससे वे सस्ती पड़ें।

(४) व्यक्तिगत रूप से ग्रामों में जो व्यक्ति मशीनें लगाना चाहें उनके लायसन्स उन्हें आसानी से मिल जायं तथा बड़े स्केल पर कारखाने खोलने वालों को जहां तक सम्भव हो लायसेन्स न दिये जायं इस बात



श्री चन्द्रराज भन्डारी

की व्यवस्था करना।

अगर असेम्बली के मेम्बरों का संगठन उपर्युक्त बातों में आंशिक सफलता भी प्राप्त कर सका, तो हमारी बहुत बड़ी कठिनाइयें दूर हो जायंगी।

खर्च की व्यवस्था

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रमों को सफल करने के लिये लाखों करोड़ों रुपये के खर्च की आवश्यकता होती हैं, अगर खर्च में कमी हो गई तो सारी आयोजन शेखचिल्ली की कहानियों से अधिक महत्व की नहीं हो सकती। जैसा कि हम आगे चल कर लिखेंगे कि प्रथम वर्ष में ही शिक्षा का प्रचार करने के लिये कम से कम दस हजार और अधिक से अधिक पच्चीस हजार युवक ग्रामों में भेजे जायं। कम से कम यदि इनका औसत वेतन बीस या पच्चीस रुपया भी मान लिया तो दो लाख से पांच लाख रुपये मासिक व्यय की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार ट्रेनिंग स्कूलों के तथा आर्थिक योजनाओं के इत्यादि सब मिला कर करीब दस लाख रुपये मासिक खर्च की हमको योजना करनी होगी। यह प्रश्न साधारण नहीं है, इसी स्थान पर आकर बड़े २ आयोजन असफल होजाते हैं। इसके लिये इस विषय में हमें अपनी गृह-व्यवस्था बहुत मजबूत कर लेनी होगी। इस समस्या को हल करने के लिये तीन-चार मार्ग बहुत महत्वपूर्ण हैं।

लाटरी

खर्च की समस्या को हल करने के लिये लाटरी-प्रथा एक बहुत ही उपयोगी वस्तु है और इसमे सफलता भी काफी मिल सकती है। आर्थिक कठिनाई और चन्दे की भरमार के इस युग में आप किसी से एक रुपया भी चन्दा मांगते जावें, तो देने वाले की आंखों में अवश्य कांटा खटकेगा, मगर यदि उसे यह प्रलोभन हो कि अगर मेरी किस्मत अनुकूल हो, तो भर दिये हुये पाँच रुपये के बदले में एक लाख रुपया भी मुझे मिल सकता है तो बहुत हर्ष से उस जोखिम में पड़ जायगा और खासकर उस हालत में तो वह बिलकुल संकोच न करेगा, उसे यह विश्वास होगा कि यह सारा कार्य राष्ट्रीय हित की दृष्टि से किया जा रहा है। जब गोआ के समान फारेन कण्ट्री में हमारे देश के पैसे से प्रति मास दो २ लाटरियाँ खुलती हैं और करीब एक-एक लाख रुपया इनाम मे बांट देती हैं तब हमारे देश की, देश के गण्यमान्य पुरुषों द्वारा स्थापित की हुई, राष्ट्रीय हित के ध्येय को सम्मुख रखने वाली लाटरियां क्यों नहीं सफल होंगी?

अच्छी व्यवस्था करने से प्रति मास चार-पांच लाख रुपये की आमदनी सहज ही निकल सकती है। कुछ समय तक यदि इन लाटरियों ने ईमानदारी से इनाम बांट दिया तो फिर कैनवेसिंग की जरूरत न रहेगी घर बैठे लोग उत्साहपूर्वक टिकिट मगवा लिया करेंगे।

नैतिक दृष्टि से इस प्रश्न पर विचार करना ही व्यर्थ है क्योंकि जब इस सारे आयोजन में राष्ट्रीय हित की भावना गर्भित है जब इसका उद्देश्य महान् और पवित्र है, तब नैतिक समर्थन भी इस का हो जाता है।

मुट्ठी प्रथा

खर्च के मसले का हल करने का दूसरा उपाय मुट्ठी प्रथा है। प्रत्येक

ग्राम्य स्कूल में एक बड़ी पेटी लगी रहे। इन स्कूलों में जो विद्यार्थी पढ़ने के लिय आवें उनका यह आवश्यक कर्तव्य रहे कि प्रतिदिन एक मुट्ठी अनाज अपने घर मे लेते आवें और इस पेटी में डाल दें। इसके सिवाय जब फसल का समय आवे तब प्रति क्लास मे प्रति हल दस सेर अनाज के लिये लिया जाय। अगर ये दोनों प्रथाए सफल हो गई तो इनमे इतनी आमदनी हो जायगी जिससे प्रत्येक ग्राम्य स्कूल का खर्चा उसी ग्राम मे निकल आवेगा और लोगों को कुछ बोझ भी मालूम न होगा।

सङ्गठन और नियन्त्रण

यह अत्यन्त आवश्यक है कि जो कुछ भी कार्य किया जावे वह चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, उसका सगठन और उसका नियन्त्रण आदर्श रहे बिना इन दो गुणों क पर्याप्त मात्रा में हुए कोई भी आयोजन सफल नहीं हो सकता। इस सारे आयोजन का सगठन कैसे किया जाय यह बात परिस्थिति और सुविधाओं को देख कर उसी समय तय की जा सकती है। फिर भी इस सारे आयोजन के तीन हिस्से किये जा सकते हैं (१) केन्द्रीय संस्था (२) प्रांतीय सस्था (३) जिला संस्था।

(१) केन्द्रीय सस्था—इसका स्थान सारे भारतवर्ष में किसी एक चुने हुए स्थान पर रहे। देश के चुने हुए गण्यमान्य नेता, प्रतिभाशाली विद्वान और महान विचारक इसके सदस्य रहें। इसकी दो कमेटियां रहे। एक शिक्षा सम्बन्धी योजना करने वाली और दूसरी आर्थिक योजना करने वाली। दोनों कमेटियों के सुविधानुसार उचित संख्या में मेम्बर बनाए जायं दोनों कमेटियों पर एक २ प्रेसिडन्ट हों और इन दोनों प्रेसिडेन्टों पर एक प्रधान प्रेसिडन्ट हो। इस संस्था का कर्तव्य सारी योजना का रूप और उसकी नीति को निश्चित करता रहे। समय २ पर मार्ग में जो-जो कठिनाइयां आवें, उनके निराकरण के उपाय यहा से निश्चित किये जावें। संक्षिप्त में आयोजन की सारी जवाबदारी इस संस्था पर रहे। इसके सेक्रेटरी की टेबिल पर इस बात की रिपोर्ट हमेशा मिलनी चाहिये कि सारे देश में कहा कहा पर क्या गतिविधि हो रही है।

प्रांतीय संस्था

(२) प्रांतीय कमेटिया प्रत्येक प्रांत के प्रधान स्थान पर होना चाहिये। इन में भी अर्थ और शिक्षा की दो शाखाएं होनी चाहिए और उनके आवश्यकतानुसार सदस्य होने चाहियें। प्रांत के चुने हुए नेता और धुरन्धर विद्वान इसके सदस्य होने चाहियें। केन्द्रीय संस्था से जो आदेश आवें, उनका पालन कमेटियों से करवाना, प्रांत की आवश्यकतानुसार केन्द्रीय संस्था की सलाह से नवीन योजनाएं बनवाना, स्कूलों के मास्टरों और इन्स्पेक्टरों की देखरेख में करवाना, इत्यादि प्रांत की तमाम जिम्मेदारी इस सस्था पर रहेगी। अपने प्रान्त की रिपोर्ट प्रतिमास सेन्ट्रल बोर्ड के पास भेजना इसका कर्तव्य रहेगा।

(३) जिला कमेटियां का स्थान जिला केन्द्र में रहेगा। प्रत्येक जिले के इन्सपेक्टर का आफिस भी इसी के अन्तर्गत रहेगा। ये इन्सपेक्टर भी इसके वैतनिक सदस्य रहेंगे। जिले के तमाम स्कूलों की, ग्राम पंचायतों की और उद्योगशालाओं की देखरेख करनी इस कमेटी के आधीन होगा। यह कमेटी अपनी साप्ताहिक या मासिक रिपोर्ट प्रांतीय संस्था को भेजेगी।

ये सब संस्थाएं परस्पर एक दूसरे से इतनी सम्बद्ध रहें और इनका नियंत्रण इतना उच्चकोटि का रहे कि प्रति मिनिट देश के अन्दर क्या उन्नति हो रही है, कहां कहां पर क्या भूलें हो रही हैं। ये सब बातें जिला संस्था से लेकर केन्द्रीय संस्था को नक्शे की तरह मालूम हो। नियंत्रण के सम्बन्ध में हमको गवर्नमेंट के पोस्ट विभाग का अनुकरण करना चाहिये।

अस्तु! इतनी बातों का विवेचन करने के पश्चात अब हम यह देखेंगे कि पांच वर्ष के अन्दर हम शिक्षा और अर्थ-सम्बन्धी योजना को किस प्रकार सफल कर सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द

(ले०—श्री धर्मवीर वेदालंकार मन्त्री श्रद्धानन्द ट्रस्ट)



प० धर्मवीर वेदालंकार

अमर महात्मा श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन त्याग और सेवा की साक्षात् प्रतिमा है। वह जिस दिशा में चल पड़ा उधर ही उसका स्मारक बन गया। उसने एक दिन स्वप्न लिया था। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धार का आर्यसंस्कृति के प्रचार का। वह स्वप्न महान था अक्रियात्मक था परन्तु था आदर्शवाद-पूर्ण। उस महान आदर्श के लिये वह मतवाला बना दीवाना बना, भिखारी बना। अन्त में उस स्वप्न को पूरा करने वाला बना। आज गुरुकुल उस मतवाले महात्मा मुन्शीराम और स्वा० श्रद्धानन्द का एक जीवित स्मारक है।

भारत के विशाल और विस्तृत क्षेत्र में कार्य करते हुए उसके हाथों में एक झण्डा रहता था जिस पर यह श्लोक अंकित था—

नाहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

उसे न सम्पत्ति की चाह थी—न स्वर्ग की कामना थी। उसे एक ही चाह थी और वह थी 'दुःख से संतप्त प्राणियों के दुखों का निवारण करना'। उसने जहां जिस पर आपत्ति के बादल मंडराते हुए देखे वहां वह सूर्य बनकर चमक उठा और बादलों को तितर-बितर कर दिया।

पटियाला केस में आर्य समाजियों की सहायता करना, धौलपुर राज्य में समाज मन्दिर के मामले में राज्य के विरुद्ध प्रतिवाद करना और अनशनव्रत करते हुए निर्भीकता से डटे रहना स्वर्गीय ला० लाजपतराय को आर्यसमाजी बना कर अपनाना आर्यसमाज तथा आर्यसमाजियों की रक्षा की सदा चिन्ता करते हुए क्रियात्मक कार्य करना उस महात्मा मुन्शीराम वा सन्यासी श्रद्धानन्द का ही काम था। जिन सिख भाइयों ने स्वामीजी के विरुद्ध एक दिन बड़ा आन्दोलन किया था उन्हीं सिखों के लिये आपत्ति के समय में उन्होंने ६२ वर्ष की अवस्था में जेल काटी। मार्शल-ला के दिनों में पञ्जाब में जब डायर ओडवायर का अत्याचार पूर्ण आतंक छाया हुआ था और अमृतसर के जलियान वाला बाग में उपस्थित जनसंख्या को सरकार ने मशीनगनों से भून दिया था उसी जमाने में उसी अमृतसर में इन्डियन नेशनल कांग्रेस को आमन्त्रित करना सन्यासी श्रद्धानन्द का ही काम था। रोलट एक्ट के जमाने में घण्टाघर में संगीनधारी सिपाहियों के सामने छाती तानकर यह कहते हुए ललकारना खड़ा हूं गोली चलाओ उस सन्यासी का ही काम था।

वह साहसी और निर्भीक वीर आर्य समाज हिन्दूसमाज, सिक्ख समाज वा राजनैतिक क्षेत्र में अपने महान व्यक्तित्व का एक अमिट स्मारक छोड़ गया है।

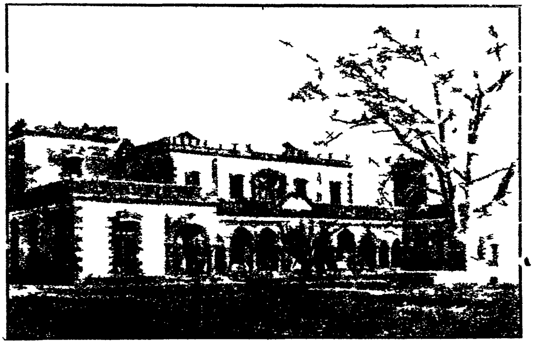
महात्मा मुन्शीराम स्त्री जाति की दशा को देख कर विह्वल हो उठा। उसने एक दिन अपनी प्यारी पुत्री वेदकुमारी को एक गीत गाते हुए सुना— ईसा है राम रमैया।
ईसा है कृष्ण कन्हैया॥

उस दिन उस महात्मा ने अपनी सन्तान को अनार्य-संस्कृति की शिक्षा से शिक्षित होते हुए देख कर एक कन्या स्कूल की स्थापना कर दी जो आज 'जालन्धर कन्या महाविद्यालय' के नाम से प्रसिद्ध संस्था है उस संस्था के द्वारा उसने स्त्री जाति पर होने वाले अन्याय को दूर किया और स्त्री-शिक्षा व आर्य संस्कृति का प्रचार किया। वह संस्था भी स्वामी श्रद्धानन्द की स्मारक है।

× × × ×

'हिन्दू-समाज का सङ्गठन और एकता उस सन्यासी का एक मुख्य मिशन था। वह सारी उमर लड़ता रहा एक बुराई के खिलाफ वह था जात पात और छूत-छात। उसके 'हिन्दू-सङ्गठन' हिन्दू समाज की जात पात और छूत छात पर कुठाराघात करने में था। उसका शुद्धि और अछूतोद्धार का व्यापक आन्दोलन इसी बुराई के आधार पर था। उसने अछूतों पर अमानुषिक अन्याय देखे—उसका दिल दहल उठा। उसने व्रत किया—संकल्प किया हम अछूत कहाने वाले भाइयों को गले लगा कर—हिन्दु-जाति के अङ्ग बनाने और आर्य संस्कृति से दीक्षित करने का। उसने हिन्दू-समाज में क्रान्ति का बिगुल बजा दिया। जिस बिगुल की चीखती हुई आवाज को आर्य-समाज के साथ २ सनातनधर्म सभा और कांग्रेस ने भी सुना और क्रियात्मक कार्य जारी किया। दलितोद्धार वा हरिजनोद्धार का जो कार्य अधूरा रह गया था उसे आज देश के प्रधान नेता महात्मा गांधी ने सिद्ध करने का व्रत धारण कर लिया है वास्तव में महात्मा के प्रसिद्ध कार्य महात्मा ही सिद्ध कर सकते हैं। आज श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती के अवसर पर हम उस महान सन्यासी का ला... सेवक समाज सुधारक आर्य-संस्कृति का रक्षक ... प्रचारक स्त्री जाति के बन्धनों का मोचक अछूतों का मित्र राष्ट्र निर्माता राष्ट्रीय ... तथा हिन्दु जाति के कर्णधार के रूप में देख कर उनके महान व्यक्तित्व से अपने जीवन में नवीन शक्ति स्फूर्ति तथा उत्साह प्राप्त कर सकते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द की अमर कृति



गुरुकुल विश्वविद्यालय का प्राचीन भवन

भारतीय नरेन्द्रों को भड़काने का असफल प्रयत्न

पार्लमेंट के ४३ सदस्यों का महाराज पटियाला के नाम पत्र

महाराजाओं का जवाब

महाराजा पटियोला ने गत १७ दिसम्बर को वह पत्र प्रकाशित कर दिया जो पार्लमेंट के ४३ प्रमुख सदस्यों ने आपके नाम भेजा था। उस पत्र के उत्तर में आपने अन्य चार महाराजाओं के साथ जो पत्र लिखा था वह भी प्रकाशित कर दिया गया है।

मम्बरा का पत्र

लन्दन, ४ जुलाई १९३४

...गण

आपने तथा आपके ...श के सामने खतरा उपस्थित है उसे देखते हम यह पत्र लिखने का साहस रहे हैं। हम समझते हैं कि आप ... आपके साथ अन्य महाराजे ...पेपर के प्रस्तावों को कुछ भय व ...का की दृष्टि में देखते हैं। हम ...को विश्वास दिलाते हैं कि इस ...का एक बड़ा भाग भी इस योज... को एसा ही समझता है। हम ... इस योजना को पालमेंट में पास होने देने के लिये कटिबद्ध हैं।

आप नरेन्द्र मण्डल के चांसलर और अपनी स्टैंडिंग कमेटी का ... में खतरे का निवारण कर ...ते हैं ब्रिटिश सरकार का ऐलान ...कि वह आप लोगों की सहमति ...बिना इस योजना को लागू नहीं ...गी अतः आप इसका विरोध कर ...इसे रद्द कर सकते हैं। हम जानते ...कि आप पर इस सुधार योजना ...स्वीकार करने के लिये दबाव ...ला जा रहा है। यदि आप दबाव ...आ जायगे तो आपका नाश निश्चित ...और यदि आप दबाव में नहीं ...यगे तो भय की कोई बात नहीं ...गी।

हम आपको विश्वास दिलाते हैं इस देश में ह्वाइटपेपर का विरोध ...रहा है। अनुदार दल का जो वर्तमान काल में सरकार को चला ...है बड़ा भाग खुले तौर पर या ...दर ही अन्दर इस योजना का ...रोधी है। यदि उनको मालूम हो ...य कि आप लोग भी इसके विरोध हैं तो निश्चय से पालमेंट द्वारा ...की विजय होगी। आपको मारफत ...सम्पूर्ण राजाओं को विश्वास



महाराजा पटियाला

दिलाना चाहते हैं कि यदि आप अपने निश्चय पर दृढ़ रहेंगे तो हम आपका पूरा साथ देंगे और सम्राट के साथ आपके प्रतिज्ञात सम्बन्धों पर कोई आंच न आवेगी।

हस्ताक्षर—वस्टमिंस्टर के डयूक बक्लाच के डयूक एथोलकी डकज हार्टिंगटन की मार्क्विस वाइकाउन्ट फिट्ज एलन विस्काउन्ट वर्टिस, विस्काउन्ट लिमिंगटन, विस्काउन्ट चपलिन विस्काउन्ट वाल्मा विस्काउन्ट हरफोर्ड, कनमयर के आर्च विंस्टन चर्चिल लार्ड कार्सन लार्ड बैनबरी लार्ड एम्पथिल लार्ड चार्नवुड लार्ड लारन्स, लार्ड रडुस्सेल लार्ड किलफोर्ड लार्ड मऊन्ट टम्पल लार्ड लेकनफील्ड लार्ड इग्लिंगटन, लार्ड क्वीन बोरा, सर हेनरी पेजक्राफ्ट सर अल्फ्रेड नोकस मेजर कोटलिड सर विलियम वलैन्ड के० एपलिन, सर आर्चिबाल्ड वायह कार्पेन्टर सर माईकेल आडवायर, सर रोजर कद्रा, सर जार्ज बोरो, मेजर जनरल बनान, लेडी हाऊस्टन, वाईमेस के अर्ल लार्ड कार्नवालिस, पैटिक हानर हर्बर्ट, विलियम्स, सोमर विले, एलन चार्लटन, लार्ड कैरिंगटन, ले० कमांडर पीटर एग्न्यू।

राजाओं का उत्तर

पटियाला-हाउस नई देहली
२८-१०-३४

मित्र-गण!

आपने महाराजा पटियाला की मारफत जो महत्वपूर्ण पत्र हमें लिखा, उसके लिये हम कृतज्ञ हैं। १९३२ में नरेन्द्र-मण्डल ने उन शर्तों का उल्लेख कर दिया था जिनकी पूर्ति पर हम ...में शामिल हो सकेंगे। हम देखते हैं कि ह्वाइट पेपर में उनमें से कितनी ही शर्तों को पूरा नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों में मार्च १९३३ में मण्डल ने फिर उन विशेष शर्तों को दुहरा दिया था, जिनकी पूर्ति पर ही हम संघीय प्रस्तावों को स्वीकार कर सकेंगे।

यदि संयुक्त पार्लमेन्टरी कमेटी अपनी रिपोर्ट में इन शर्तों को नहीं मानेगी तो हम पुनः अपनी राय कायम करने में आजाद होंगे।

हस्ताक्षर—भूपेन्द्रसिंह (पटियाला) उदयभानसिंह (धौलपुर) एस० एम० अब्बासी (बहावलपुर), यादवेन्द्रसिंह (पन्ना), राजेन्द्रसिंह (झालावाड़)।

मालवीय जी इङ्गलैण्ड जायंगे

विश्वस्त-सूत्र से ज्ञात हुआ है कि पं० मदनमोहन मालवीय आगामी अप्रैल मास में इंग्लैंड जायंगे। वहां आप ज्वा० पार्ल० कमेटी की रिपोर्ट विशेषतः साम्प्रदायिक फैसले के विरुद्ध आन्दोलन करेंगे। सम्भवतः आप एक डेपूटेशन के नेता बनकर जायंगे। डेपूटेशन में कौन होंगे—इस सम्बन्ध में विचार किया जा रहा ।

रूस और फ्रांस में गुप्त सम्बन्ध

लण्डन के "स्टार" पत्र में प्रकाशित हुआ था कि फ्रांस तथा रूस में ऐसी एक गुप्त सन्धि हो गई है कि यदि जापान रूस पर आक्रमण करे तो फ्रांस रूस को ४००० मिलियन फ्रैंक के शस्त्रास्त्र देगा और यदि फ्रांस तथा जर्मनी में लड़ाई हो जाय तो रूस फ्रांस को इतने ही मूल्य का अस्त्र देगा और दोनों देश परस्पर हवाई तथा सैनिक कमीशनों का अदला-बदला कर लेंगे।

लण्डन के रूसी राजदूत ने तथा पैरिस के जानकार हलकों ने इस समाचार का प्रतिवाद किया है और बतलाया है कि फ्रान्स तथा रूस में केवल इतनी सन्धि हुई है कि दोनों देश किसी तीसरे राष्ट्र से बिना एक-दूसरे की सलाह लिये कोई सन्धि न करेंगे।

अहमदाबाद में आम हड़-ताल होगी ?

ज्ञात हुआ है कि स्थानीय मिल-मालिक संघ ने कल रात को श्रमजीवी संघ का मुकाबला करने के लिये एक युद्ध-समिति की नियुक्ति की है। श्री कस्तूरभाई लालभाई तथा अन्य ४ मिलों के एजेण्टों को युद्ध-समिति का सदस्य बनाया गया है। श्रमजीवी-संघ द्वारा आम हड़ताल की घोषणा किये जाने पर यह युद्ध-समिति हड़तालियों के प्रयत्नों का भरसक मुकाबला करेगी। समस्त मिलों से हड़तालियों का मुकाबला करने के लिये चन्दा एकत्र किया जायगा और उस मिल को मोवजे रूप में सहायता भी दी जायगी, जिसे हड़तालियों द्वारा नुकसान पहुंचाया जायगा।

सप्ताह की हलचल

कौंसिलों में रिपोर्ट की छीछालेदर

पंजाब कौंसिल में रिपोर्ट अस्वीकृत

यू० पी० कौंसिल में गरमागरम बहस

ज्वायन्ट पार्लमेन्टरी कमेटी की रिपोर्ट पर प्रांतीय कौंसिलों में बहस हो रही है। पंजाब-कौंसिल ने तीन दिन की बहस के बाद प्रस्ताव स्वीकार कर लिया कि इस कौंसिल की राय में ज्वायन्ट पार्लमेन्ट कमेटी की रिपोर्ट भारतीय आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं करती।

बहस में अनेक सदस्यों ने बहुत अच्छे भाषण दिये। मौ० अफ़जल-हक ने कहा कि इंगलैंड के चर्चिल से हमें इतना डर नहीं, जितना स्थानीय कौंसिलों के चर्चिलों से है। इस रिपोर्ट में भारत को ऐसी कोई चीज नहीं मिलती, जिस पर वह गर्वानुभव कर सके। चौ० हबीबुल्ला ने रिपोर्ट को अपर्याप्त असन्तोषप्रद और निराशाजनक बताते हुए इस पर किये गये श्रम व व्यय के लिये भी अफसोस जाहिर किया। सरदार सम्पूर्ण-सिंह ने साम्प्रदायिक निर्णय का विरोध किया।

यू० पी० कौंसिल

यू० पी० कौंसिल में भी रिपोर्ट पर विचार हुआ। अधिकांश वक्ताओं ने रिपोर्ट के प्रति असन्तोष ही प्रकट किया। ठाकुर बलवन्त सिंह ने कहा रिपोर्ट का पन्ना-पन्ना भारतीयों के प्रति अहिंसा से भरा हुआ है। हाफिज मुहम्मद इब्राहीम ने कहा कि सर्वोत्तम संरक्षण तो सद्भाव ही से हो सकता है। मि० चिन्तामणि ने रिपोर्ट की खूब छीछालेदर की और कहा कि नये विधान से तो वर्तमान स्थिति ही अच्छी है। परन्तु अर्थ-सदस्य ने अंत में कहा कि चाहे तीन दिन तक गुलगपाड़ा कर लो, अंत में इसे मानोगे ही।

बंगाल और मद्रास कौंसिलों में भी रिपोर्ट पर विचार हो रहा है। सीमाप्रांतीय कौंसिल की खास बैठक इस पर विचार करने के लिये बुलाई जा रही है।

हाउस आफ लार्डस में रिपोर्ट स्वीकृत होगई

हाउस आफ लार्डस ने बहुमत से ज्वायन्ट सिलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया। लार्ड सैलिसबरी ने अनुदार दल की ओर से जो संशोधन रखा था, वह ६० के विरुद्ध २३६ के भारी बहुमत से गिर गया।

लार्ड लिनलिथगो, लार्ड सैंकी और लार्ड रीडिंग आदि प्रमुख वक्ताओं ने रिपोर्ट का समर्थन किया।

लार्ड रीडिंग ने रिपोर्ट का समर्थन करते हुए कहा कि

> पहले मुझे भय था कि ३५ करोड़ भारतीयों के मुकाबले में थोड़े से अंगरेज कैसे ठहर सकेंगे, लेकिन राजाओं के सम्मिलित होने से वह भय जाता रहा है।

प्रस्ताव को पास कराने के लिये नये नये लार्ड लाकर बिठाये गये हैं, यह कहते हुए मजदूर दल ने किसी तरफ भी वोट देने से इन्कार कर दिया।

भागलपुर में भूकम्प

१६ दिस० को सवेरे ४ बजे यहां कुछ सैकण्ड तक हलका सा भूकम्प आया, पर जान-माल के नुकसान की कोई खबर नहीं मिली है।

डा० सत्यपाल को सजा

ता० १७ दिसम्बर की शाम को ४ बजे देहली एडीशनल मजि० मि० पूल ने डा० सत्यपाल को राजद्रोहात्मक भाषण देने के अपराध में १ वर्ष सख्त कैद की सजा दी। सुना है कि वे अपील करेंगे।

—:—

हाथ-कुटा चावल, हाथ-पिसा आटा और गुड़ खाओ

अ० भा० ग्राम्य उद्योग संघ का कार्यक्रम

अ० भा० ग्राम्य-उद्योग-संघ की प्रबन्ध-समिति ने एक अपील निकाल कर अपने तात्कालिक कार्यक्रम पर प्रकाश डाला है।

बोर्ड की एजेन्सियां स्थापित करने की बात एक ओर रख कर इसमें जनता से फिलहाल यह कहा गया है कि हाथ-कुटे चावल, हाथ की चक्की से पिसे आटे और गावों में बने गुड़ का व्यवहार बढ़ाया जाय। तेल घानी का खिचा अच्छा होता है या मिल का, इस बारे में तो अभी रायें एकत्र की जा रही हैं, परन्तु हाथ-कुटे चावल हाथ-पिसे आटे और गुड़ के बारे में तो ऐसी बहुत सी रायें मिल चुकी हैं, जिनमें निश्चय है कि मिल के पोलिशदार चावल, मिल के पिसे आटे और मिल में बनी शक्कर से वे ज्यादा उपयोगी हैं। यदि इन सलाहों पर ध्यान दिया जाय, तो ग्रामों को आर्थिक लाभ होगा और तन्दुरुस्ती पर भी अच्छा असर पड़ेगा।

गांवों की सफाई

साथ ही बोर्ड की यह भी इच्छा जाहिर की गई है कि सफाई का काम ढीला नहीं छोड़ना चाहिये। पढ़े-लिखे को गांवों में जाकर सीधे-सादे तरीके से गांवों की सड़कें बनाने, पाखाना पेशाब के लिये नये सुधरे हुए उपाय करने और कुओं-तालाबों के साफ करने तथा ग्रामीणों को पानी के उपयुक्त उपयोग की शिक्षा देने के काम करना चाहिये।

ग्राम्य एजेन्टों के नियम

महात्मा जी का वक्तव्य

म० गांधी ने एक वक्तव्य में कहा है कि मेरे पास कुछेक ऐसे आदमियों के पत्र आये हैं, जो अ० भा० ग्राम्य व्यवसाय संघ के लिये बतौर एजेन्ट मुफ्त काम करने के लिये तैयार हैं एजेन्टों की ड्यूटियां निम्न प्रकार होंगी :—

(१) एजेन्ट को सेन्ट्रल आफिस के कार्यक्रम पर चलना होगा। (२) प्रत्येक एजेन्ट को अपने इलाके के गांवों के स्वास्थ्य व सफाई का ध्यान रखना पड़ेगा। (३) ग्रामों के फालतू उपज के लिये बाजार तलाश करने पड़ेंगे। (४) एजेण्ट को अपने इलाके को लोकमत कार्यक्रम के पक्ष में करना होगा। (५) उसे अपने काम के लिये चन्दा एकत्र करने की इजाजत होगी। सेन्ट्रल आफिस से कोई सहायता न मिलेगी। निजी खर्च के लिये वह का रुपया इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं होगी। (६) एजेण्ट रुपये-पैसे का ठीक ठीक हिसाब रखना होगा। (७) उसे इस बात की इजाजत होगी कि अपने काम चलाने के लिये वेतनभोगी आदमी रख ले। (८) सेन्ट्रल आफिस उसके कार्य का निरीक्षण करेगा। (९) प्रति मास अपने कार्य की रिपोर्ट सेन्ट्रल आफिस को करनी पड़ेगी। (१०) यदि इस सम्बन्ध में कुछ गड़बड़ होगी तो एजेन्सी तोड़ दी जायगी

साप्ताहिक डायरी

शेखूपुरा की खबर है कि १२ सशस्त्र डाकुओं ने शाहदरा इलाके के दो ग्रामों में जबरदस्त डाके डाले। पहिला मुबारकपुर के एक मालदार जमींदार के घर तथा दूसरा उमो-डामर के साहूकार की दुकान पर डाला।

—पटना का समाचार है कि स्विटजरलैण्ड इन्टरनेशनल वालंटियर सरविस तथा बिहार रिलीफ कमेटी की ओर से २००० पीड़ित परिवारों के लिये मकान बनवाने की योजना तैयार की जा रही है।

—लाहौर से खबर आई है कि बहावलपुर के नवाब ने आज्ञा निकाली है कि सब कर्मचारी चाहे हिन्दू मुसलमान या ईसाई हो, तुर्की टोपी पहन कर दफ्तरों में आया करें।

—कोनार (लिथुआनिया) का सम्वाद है कि १०६ नाजियों के विरुद्ध कोर्ट मार्शल आज आरम्भ होगा। उन पर सशस्त्र क्रांति द्वारा लिथुआनिया का एक भाग जर्मनी को देने, जर्मनी के नाजी दल से गुप्त सम्बन्ध रखने का तथा आतंकवाद का अभियोग है।

मैं चाहता हूं कि जिन व्यक्तियों ने अपने नाम बतौर एजेन्ट काम करने के लिये, मेरे पास भेजे हैं, वे श्री कुमारप्पा वर्धा से पत्र व्यवहार करें। स्मरण रहे कि प्रबन्ध बोर्ड किसी एजेण्ट को भी आर्थिक सहायता नहीं देगा।

सुधारों को मत ठुकराओ अन्यथा कुछ भी न मिलेगा

वायसराय का भाषण

वायसराय आजकल कलकत्ते में और सभाओं सम्मेलनों व पार्टियों में व्याख्यान दे रहे हैं। १९ दिसम्बर को एक भाषण में वायसराय ने पार्लमेंटरी कमेटी की रिपोर्ट का समर्थन करते हुए भारतीयों को यह धमकी दे दी कि प्रस्तावित सुधारों को स्वीकार न करना भारत को अनिश्चित काल के लिये वर्तमान अवस्था में रखना है अर्थात यदि ये अस्वीकृत किया गया तो कोई सुधार नहीं मिलेगा।

—जबलपुर का समाचार है कि यू० पी० पुलिस के एक सिपाही के मझिकपुर में किसी मामले की खोज के लिये कुछ आदमियों के नाम नोट करने पर लोगों ने उसे पीटा। सिपाही जान-बचाकर थाने में भागा। थाने से कुछ सिपाहियों व अफसरों का दल घटना स्थल पर पहुंचा और कुछ गिरफ्तारियां कीं जिस कारण दुकानदारों ने ४ रोज की हड़ताल कर दी। अब मजि० व सु० पु० के समझाने से खुल गया है।

—मेरठ षड्यन्त्र-केस के भूतपूर्व कैदी श्री फिलिप स्प्रैट को १५ दिन तक हिरासत में रखने का हुक्म दिया गया है। आपको कल रात इमर्जेन्सी पावर्स एक्ट' के अनुसार गिरफ्तार किया गया है।

—पञ्जाब कौंसिल के देहाती दल (रूरल पारटी) ने पञ्जाब कर्जा बिल पर गवर्नर की की हुई सिफारिशें स्वीकार करली हैं। फलत: २१ ता० को ये कौंसिल में स्वीकृत हो गईं। सरकार के साथ मिल कर देहाती दलने साहूकारों की सब मांगों को ठुकरा दिया।

—भारत मन्त्री ने सरदार बहादुर मोहनसिंह (पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य) को इण्डिया कौंसिल का सदस्य नियुक्त किया है। सरदार बहादुर फरवरी १९३५ के आरम्भ में अपना कार्य भार सम्भाल लेंगे।

—भगभक्त नामक एक व्यक्ति को छः नला रिवाल्वर तथा छः करतूस रखने के अभियोग में नौ वर्ष की सख्त सजा हाईकोर्ट से मिली है।

—कलकत्ता का समाचार है कि श्री सुभाषचन्द्र बोस को १८ ता० सायं ७ बजे पुलिस के पहरे में मेडिकल कालिज हस्पताल ले जाया जायगा, क्यों कि वहां उन्हें एक्सरे परीक्षा के लिये चार दिन रहना पड़ेगा।

—पेशावर का समाचार है कि सीमा प्रान्त में गत ११ मास में ४९८ हत्यायें हो चुकी हैं जिनमें से ३८ नवम्बर में हुई हत्याओं में से २७ पेशावर में हुई हैं।

—कपूर्थला में कप्तान अजीज अहमद और लैफ्टिनेण्ट सादिक अहमद ना० चौ० अब्दुल अजीज के भाइयों को जिनकी सम्पत्ति कोर्ट आफ वार्ड्स करदी थी, अब वापिस करदी गई है और उन पर से पाबन्दियां हटाली गई हैं।

—कलकत्ते में अब तक १०० डाक-हड़ताली गिरफ्तार किये जा चुके हैं।

—बेलग्रेड के १५ दिसम्बर के समाचार के अनुसार स्कोपल जी म्युनिसिपैलिटी ने निश्चय किया है कि थियेटरों व नाचघरों में राग-मजे करने वालों पर ११ बजे के बाद १ पेनी, आधी रात बाद २ पेनी व सारी रात के लिये बेरोजगारों के पोषण के लिये टैक्स लिया जायेगा।

—मार्सेल्ज की खबर है कि शिया फिजो जहाज के डूब जाने से २१ आदमियों की जानें गई हैं।

—मुजफ्फरपुर से समाचार आया है कि वहां ४ ४५ पर तथा माणिकगंज (ढाका) में १-१५ पर भूकम्प के हलके २ धक्के मालूम हुए।

—मालूम हुआ है कि सम्भवतः जनवरी के मध्य में देहली में अ० भा० कांग्रेस कार्य समिति की बैठक होगी।

—मास्को से समाचार मिला है कि सेण्ट्रल वोल्गा प्रान्त के ताशला ग्राम में सोवियट अधिकारियों पर आतंक जमाने का प्रयत्न करने के अपराध में ४ व्यक्तियों को मृत्यु-दण्ड मिला है।

—इन्दौर में होने वाले अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति-पद के सम्बन्ध में महात्मा गान्धी से उत्तर आने पर स्वागतसमिति ने प० मदनमोहन मालवीय को सभापति चुना है।

—इस्ताम्बूल (टरकी) का समाचार है कि अनातोलिया प्रान्त में भयंकर भूकम्प से बीस आदमी मर गये, सैंकड़ों घायल हो गये तथा हजारों बे घर-बार हो गये ... कड़ियर के आस पास भूकम्प के धक्के अब तक आ रहे हैं। वायकजूर में धक्कों ने गांवों को नष्ट कर दिया है। रेडक्रास सोसायटी की ओर से वायुयानों द्वारा सहायता पहुंचाई जा रही है।

—नई देहली में भारतीय व्यापारिक संघ के फेडरेशन की कार्य-समिति की बैठक ला० श्रीराम के निवास स्थान पर हुई जिसमें निश्चय किया गया कि ज्वा० पा० क० की रिपोर्ट भारत के व्यापारियों को अस्वीकार है, क्यो कि इसकी सिफारिशें भारतीय राजनीतिज्ञों की मांगों से बहुत कम व ह्वाइट पेपर की योजनाओं से भी गई बीती है। उनकी राय है कि इन संरक्षणों से भारतीय व्यवसाय को हानि पहुंचेगी।

—अक्तूबर में ११ लाख पौंड सूत विदेशों से आया।

मधुबनी में ता० १६ को सवेरे एक असाधारण दृश्य नजर आया—

भिन्न भिन्न कुए-तालाबों में क्रमशः पानी घटने-बढ़ने लगा, जिससे वहां नहाते हुओं को बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ कुओं का पानी तो बिलकुल ऊपर तक आ गया और फिर बैठ गया। यही विचित्र बात मधुबनी के आस-पास के गांवों में भी हुई।

—विमलप्रसाद जैन के भाई जुगमन्दरप्रसाद को पंजाब क्रिमिनल ला अमेण्डमेन्ट एक्ट के अंतर्गत २४ घन्टों में दिल्ली से बाहर हो जाने का नोटिस मिला है।

—लखनऊ में कांग्रेस के भावी अधिवेशन करने की तैयारियां शुरू हो गई हैं। लेकिन सेठ अचलसिंह आदि इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि अधिवेशन आगरे में किया जाय, क्योंकि कराची कांग्रेस ने आगरा में अधिवेशन करने का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया था।

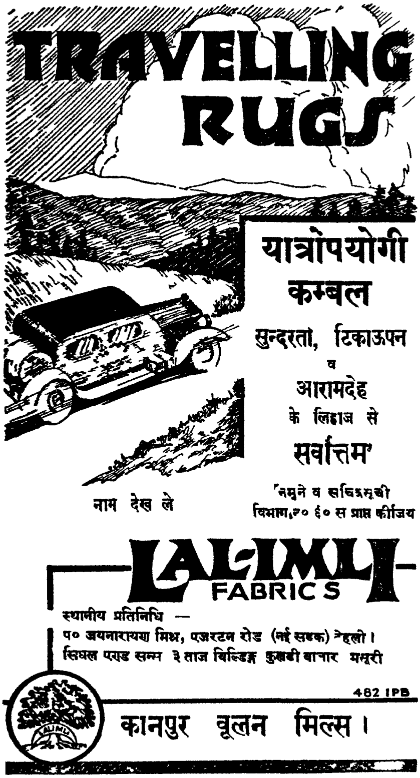
—खालसा दरबार ने ज्वायन्ट सिलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट को रद्द करने का निश्चय किया है।

—भारत के विभिन्न विभागों में श्रद्धानन्द सप्ताह मनाया गया।

—भारत सुधार-बिल २२ जनवरी को प्रकाशित कर दिया जायगा।

—सरकारी गजट के अनुसार इन्डियन टैरिफ एक्ट और रिजर्व बैंक की कुछ धारायें १ जनवरी १९३५ से लागू हो जावेंगी।

—एक प्रस्ताव में इण्डियन कामर्स फेडरेशन की वर्किंग कमिटी ने मोदी-विलियम समझौते का विरोध किया है।



वैस्टर्न इंडिया लाइफ इन्शोरेन्स कम्पनी लि०,

हेड आफिस—सतारा स्थापित १६१३

विशेषताए

सर्वोत्तम जब्त न होने वाली धारा — सर्वोच्च रिजर्व का अनुपात

सब से अधिक मितव्यता — सुरक्षित व लाभदायक धन विनियोग — बोनस सब से अधिक

प्रीमियम की दरें कम — स्त्री का बीमा होता है

स्त्री पुरुष दोनो का सम्मिलित बीमा भी होता है।

वार्षिक किश्त पर २॥ प्रति सैकड़ा छूट

जीवन बीमा कराने का यही ठीक कम्पनी है

पूरे ब्योरे के लिये निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें —

मैनेजर

वेस्टर्न इण्डिया लाइफ इन्शुअरन्स कम्पनी लिमिटेड सतारा।

हेड आफिस

अलीगढ में

'अर्जुन'

कहां मिलता है

(१) मास्टर छोटेलाल जी बुकसेलर, अचल रोड, अलीगढ़।

(२) सिंगल एन्ड कम्पनी, न्यूज पेपर एजेन्ट, मानिक चोक, अलीगढ़।

(३) मि० बाबूलाल शर्मा, न्यूज पेपर एजेन्ट, अलीगढ।

एम्पायर आफ इन्डिया लाइफ एश्योरेन्स कम्पनी, लि०

(स्थापित १८६७)

(हेड आफिस बम्बई)

(२८ फरवरी १६३४ को समाप्त होने वाले साल का कारोबार)

नया कारोबार	१ ३८ ०० ००० रु० से अधिक
आय	७३ ३७ ००० रु० से अधिक
पावना (एसेटस)	४ ३७ ५१ ००० रु० से अधिक
दावे अदा किये गये	४ ०० ०० ००० रु० से अधिक
चालू बीमा	११ १८ ०० ००० रु० से अधिक

व्यय का अनुपात २२ परसेन्ट — पोलिसी रद्द होने का अनुपात ४ परसेन्ट

एजेन्सी के नियम बड़े मुनाफे के हैं। विवरण के लिये लिखिये —

दी ब्रांच सेक्रेटरी चांदनी चौक देहली।

नेशनल इनश्योरेन्स कं० लि०

हेड आफिस—नेशनल इनश्योरेन्स बिल्डिङ्ग ७ काउन्सिल स्ट्रीट, कलकत्ता।

१६३३ का लेखा

नया कारोबार १ ६७ ०० ००० रु० से ऊपर

कम्पनी हर प्रकार से उन्नतिशील है।

सब प्रकार का जीवन बीमा निहायत कम प्रीमियम दर पर किया जाता है।

विशेषतायें

स्त्रियों का सम्मिलित स्थायी प्रतिबन्ध पालसिया तिगुन लाभ की पोलसिया बच्चों के विवाह व शिक्षा के प्रबन्ध का पालसिया भी जारी की जाती है। एजेन्सी के लिये लिखिये —

माहनलाल निर्मलदास
ब्रांच सेक्रेटरी देहली ब्रांच गङ्गानिवास
चांदनी चौक पो० ब० १०६ देहली।
टेलीफोन नम्बर ५१६४

मि० गुरसरननिवास
एजेन्सी सुपरडन्ट लश्कर ग्वालियर
या मि० एस० एन० दास गुप्त चीफ
एजेन्ट अलाहाबाद सरकल
८ क्लाइव रोड अलाहाबाद।

आग, मोटर व जोखम आदि के बीमे के लिये—

नेशनल फायर एन्ड जनरल एश्योरेन्स कम्पनी लि०

हेड आफिस —नेशनल इनश्योरेन्स बिल्डिङ्ग ७ काउन्सिल हाउस स्ट्रीट कलकत्ता को लिखें।

देहली एजेन्सी —गङ्गानिवास चांदनी चौक पो० १००६ देहली। टेलीफोन न० ५१६।

आर० जी० दास एन्ड क० मैनेजर।

भारत के वीर नेता

स्वामी श्रद्धानन्द का

प्रामाणिक जीवन चरित्र

स्वामी श्रद्धानन्द की विशद जीवनी का अभाव बहुत दिनों से लोगों को खटक रहा था। जिस महापुरुष की अदम्य कर्म-निष्ठा और अविचल दृढ़ता ने लाखों मनुष्यों के भीतर जीवन का मन्त्र फूंका है जिनके अपूर्व आत्मत्याग ने देश की मृतात्मा में प्राण-सचार किया है, जिसके रोमांचकर बलिदान ने देशवासियों की रग-रग मे एक विचित्र सिहरण का प्रकम्पन तरङ्गित किया है, उसके वैचित्र्यमय जीवन की तरङ्गाभिघातपूर्ण प्रगति से देश की जनता अपरिचित रहे, उसकी संघर्ष-विघर्षमयी लीला के पूर्ण रसामृत-पान से वञ्चित रहे, यह बात वास्तव मे खटकने की है।

इसी कमी को पूरा करने के लिये **पं० सत्यदेव विद्यालंकार** ने उक्त ग्रन्थ लिखा है और **पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति** ने उसका सम्पादन किया है।

कुछ सम्मतियां पढ़िये—

महापुरुषों की जीवनी लिखने का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को नहीं होता। सच्ची और प्रभावोत्पादक जीवनी लिखने में विद्वत्ता की उतनी आवश्यकता नहीं होती जितनी आवश्यकता होती है चरित-नायक के मूल प्राण को समझने की। यह तभी हो सकता है जब चरित-लेखक के हृदय में नायक की व्यक्तिगत सत्ता personality के प्रति सम्पूर्ण सहानुभूति हो; अर्थात् वह चरित-नायक को उसके सार्वजनिक कार्यों की महत्ता से पहचानने की चेष्टा न करके उसके हृद्गत जीवन—उसकी अन्तःसलिला आत्मा के अदृश्य संघर्ष-विघर्ष के साथ अपने हृदय को आन्तरिक अनुभूति मिलाकर उसका यथार्थ प्रस्फुटन करने का प्रयत्न करे। महापुरुष की जिस व्यक्तित्व की सत्ता से सार्वजनिक कार्यों का निर्माण होता है उस background में डालकर कार्यों को अधिक महत्व देना समाचारपत्रों का काम है जीवनी-लेखक का नहीं। जीवनी-लेखक एक प्रकार का कवि है। उसे कार्य की अपेक्षा व्यक्ति के प्रति अधिक सहानुभूति होनी चाहिए



स्वामी श्रद्धानन्द

तभी वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सकता है। विद्यालंकार जी ने जो जीवनी लिखी है उसकी सफलता का रहस्य यहीं पर है। स्वामी जी के वैयक्तिक जीवन के विकास पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया है और उसका विश्लेषण बड़ी निपुणता के साथ किया है।

हम श्री सत्यदेव विद्यालंकार को उनकी सफलता पर बधाई देते हैं। वास्तव मे स्वामी जी के चरित्र और जीवन के चित्र को जिस सुन्दरता से उन्होंने अंकित किया, वह प्रशंसनीय है। जीवनी-लेखन की कला में वह पूर्णतया सिद्धहस्त मालूम होते हैं। पुस्तक की छपाई-सफाई सुन्दर है। बहुत-से चित्र भी दिये गये हैं। पृष्ठ-संख्या प्रायः साढ़े छः सौ है।

—विश्वमित्र

प्रस्तुत पुस्तक में उसके सुयोग्य लेखक ने एक निष्पक्ष किन्तु सहानुभूति-पूर्ण कलम से स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन की घटनाओं को अंकित किया है। सत्यदेव जी ने अपनी अधिकारपूर्ण भाषा में चरित्र-नायक के जीवन के सब पहलुओं पर प्रकाश डाला है। पुस्तक की भाषा, घटनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण तथा सम्पादन बड़ा मनोहर है। कहीं-कहीं लेखक ने जब जीवन के अत्यन्त सूक्ष्मतम मानव रहस्य को छू दिया है, वहां पर एकाएक लेखनी चूम लेने का मन हो जाता है। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि सत्यदेव जी को इस पुस्तक में जो सफलता मिली है, हम तो उसे ईर्षा की दृष्टि से देखते हैं। प्रत्येक भारतवासी के घर इस पुस्तक की एक प्रति होनी चाहिये। —कर्मवीर।

जीवनी बड़े विस्तार और परिश्रम से लिखी गई है। इस की भाषा बड़ी सुन्दर और सरल है। —श्री रामकृष्ण

इस जीवनी ने मेरी इन सब चिरसंचित आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा कर दिया। इस जीवनी से भारतीय जनता के सम्मुख सर्वथा ही एक नवीन दृष्टिकोण रखा गया है। जीवनी में जो एक बड़ी खूबी है, वह यह है कि आदि से अन्त तक जीवन-चरित्र एक सिलसिले में बांधा गया है। उसमें जो परिणाम निकाले गये हैं, वे कल्पना के आधार पर नहीं किन्तु तथ्य के आधार पर निकाले गये हैं। पुस्तक समाप्त करते ही मेरे मुख से अनायास ये शब्द निकल पड़े कि "रत्न विलोक्य द्विगुणा ग्रहणे प्रवृत्तिः।" रत्न की आभा देखकर उसको लेने की इच्छा दुगुना हो जाती है। —श्री परम

श्री सत्यदेव जी ने उस वीर संन्यासी के इस त्रिविध जीवन को अपनी ऐसी सरस भाषा में लिखा है कि उसे पढ़ते ही बनता है। सत्यदेव जी गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक हैं और स्वामी जी के चरणों में बरसों शिक्षा लेते रहे हैं, अतः स्वामी जी का जीवन चरित्र लिखने के वे यथार्थ अधिकारी भी हैं। आर्यसमाज और सरकार, राजनीति के विस्तृत क्षेत्र में, गुरुकुल और सरकार, गुरुकुल और महात्मा गान्धी तथा अमर-पद की प्राप्ति आदि प्रकरण लिखने में लेखक की रुचि, विचार तथा लेखनी ने एकरूप होकर एक विचित्र, मधुर तथा प्रोज्ज्वल साहित्य की सृष्टि कर दी है।

—श्री दीनदयालु शास्त्री

इस ग्रन्थ में तीन दर्जन चित्र हैं। पृष्ठ संख्या ६५० है। परन्तु मूल्य केवल ३॥) और उस पर भी

रियायती मूल्य केवल २॥)

आप आज ही आर्डर देकर अपने लिये पुस्तक मंगा लें। इस से अधिक प्रमाणिक चरित्र नहीं मिलेगा।

मैनेजर, विजय पुस्तक भंडार, दिल्ली।

पं० रामगोपाल विद्यालंकार प्रिंटर और पब्लिशर के लिये अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार देहली में छपा।

अर्जुन

सचित्र-साप्ताहिक

वर्ष १ अङ्क ३

॥ अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे, न दैन्यं न पलायनम् ॥



लाला श्रीराम



खान अब्दुलगफ्फार खां



मि० आर्थर हैण्डर्सन



डा० सत्यपाल

वार्षिक मूल्य ३।।)]

सम्पादक— { इन्द्र विद्यावाचस्पति
कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार

[एक अंक का मूल्य -)

C.G.M.T.C. DELHI

विषय-सूची

विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
सम्राट के प्रमुख व्यक्ति (चित्र)		मुख पृष्ठ
सम्पादकीय		३
मि० आर ह डसन		५
ब लखाना म (कविता)	श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निगुण	६
चार सुना कर अब ना जाग (कविता)	हितैषी भलावलपुरी प्रेमी	६
वाणी का झंकार		६
भारत का पञ्चवर्षीय आयोजन	श्री चन्द्रराज भन्डारी	७
हमारी चित्रावली (१)		६
सिक्ख कमेटी का रिपोर्ट		१०
हिन्दू शास्त्रों में तलाक	श्री जगदीश्वरनाथ वर्मा बी० ए० एल० बी०	११
अप्रत्यक्ष निर्वाचन रीति	श्री दत्तात्रेय वा जावलेकर एम ए एल एल बी	१२
मुगल काल में संस्कृत		१५
शुद्ध वस्त्र व शुद्ध परिधान		१५
स्वास्थ्य सुधार		१
रंगमंच		१७
विश्व चित्र		१८
हंसी दिल्लगी		१८
हमारी चित्रावली (२)		१६
सरला (कल्पना)	श्री ओंकारनाथ गुप्त दिनकर	२०
प्रकृति में शिल्पकला		२१
साहित्य समालोचन		२२
गांधी विलिंगडन का पत्र-व्यवहार		२३
बूंदों में सन्देशा	एक परदेशी	२४
सप्ताह का हलचल		२५
साप्ताहिक डायरी		२६

—— o ——

अर्जुन

रविवार, ता० १५ दिसम्बर १६३४ ई०

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

राष्ट्रीय मुस्लिम नेताओं से निवेदन

भारतवर्ष इस समय एक बड़े मानसिक संग्राम में से गुजर रहा है। सदियों तक हम ऐसे वायुमंडल में रहे हैं, जो धार्मिकता के अणुओं से भरपूर था। मुसलमान राज्य काल में वह वायुमंडल और भी अधिक गहरा हो गया। राजा और प्रजा का भेद धार्मिक रेखाओं से सीमित था, इस कारण राजनीति का संघर्ष धार्मिक संघर्ष के रूप में परिणत हो गया। जो व्यक्ति राज्य से विद्रोह करता था, वह प्रायः राज्य के धर्म का भी बागी बन जाता था। इस प्रकार राजनीति उथल-पुथल में से गुजर कर भी मध्यकालीन भारत धार्मिक दृष्टिकोण से बाहिर न जा सका। परन्तु भारत में अंग्रेजी का आधिपत्य होने के साथ ही परिस्थिति बदल गई। यदि केवल दो धर्म होते एक राजा का और दूसरा प्रजा का तो परिस्थिति वैसी ही बनी रहती, राजनीति का रंग धार्मिक ही रहता। परन्तु राज्य का धर्म ईसाई है, और प्रजा हिन्दू, मुसलमान, पारसी आदि कई मार्गों में नियुक्त है। राजनीति और धर्म की सीमायें एक नहीं रहीं। उनमें बहुत अन्तर हो गया। ब्रिटिश सरकार ने इस परिस्थिति को बहुत शीघ्र पहिचान लिया और भारत में ब्रिटिश राज्य को धार्मिक दृष्टि से पक्षपात हीन बनाने का यत्न किया। यद्यपि ब्रिटिश राज्य से अब तक ईसाई मिशन को सहायता मिलती है तो भी व्यवहार में सरकार धर्म को भिन्नता का कारण नहीं बनने देती। एक अंग्रेज भारतवर्ष अपने को इंग्लैंड का वासी अंग्रेज समझ कर राज्य करता है, ईसाई समझ कर नहीं। इसका प्रधान कारण यह है कि योरप की जातियां अपनी राजनीति को धर्म से सर्वथा अलग कर चुकी हैं। एक अंग्रेज इंग्लैंड की राजनीति में भी ईसाई बन कर प्रवेश नहीं करता, केवल अंग्रेज बन कर प्रवेश करता है। उसकी सांसारिक मनोवृत्ति ही नैतिक और राष्ट्रीय बन गई है। इसी कारण वह भारत में भी नैतिक और राष्ट्रीय दृष्टिकोण से ही शासन करता है। वह भारतवासियों को एक अधीन देश के व्यक्ति समझ कर उन पर राज्य करता है, उन्हें ईसाई भिन्न धर्मी समझ कर नहीं। भारत में ब्रिटिश राज्य की सफलता के अनेक कारणों में से एक यह भी है। यदि अंग्रेज ईसाई दृष्टिकोण से भारत का शासन करते, तो भारत की प्रजा कभी की एक होकर खुले विद्रोह के लिये खड़ी हो चुकी होती, क्योंकि तब तो वह संघर्ष ईसाई और ईसाई भिन्न का हो जाता, जिसमें हिन्दू मुसलमान पारसी सब एक हो जाते। परन्तु बड़ी दूरदर्शिता से अंग्रेजों ने भारत शासन से धार्मिक दृष्टिकोण को विदा कर दिया।

इस परिस्थिति के कारण भारतवासी अंग्रेजों की अपेक्षा बहुत निर्बल हो गये क्योंकि जहां अंग्रेज भारत के शासन में केवल राजनीतिक दृष्टिकोण से देखते थे वहां भारतवासी अभी उसी मध्य कालीन धार्मिक वातावरण में विचर रहे थे। यदि सारे भारतवर्ष में केवल एक ही धर्म के मानने वाले लोग बसे हुए होते तो कोई हानि न होती, परन्तु हमारे भाग्यों से भारत में अनेक धर्म हैं। धार्मिक दृष्टि से भारतवासी बिखरे हुए हैं यदि धार्मिक दृष्टि मुख्य रहेगी तो भारतवासी कभी एक न हो सकेंगे। वह केवल राजनीतिक राष्ट्रीय दृष्टि से ही भिन्नताओं को भुला कर एक मंच पर आ सकते हैं। एकता के बिना देश का स्वाधीन होना असम्भव है। अंग्रेज हर तरह से प्रबल हैं। उनका दृष्टिकोण राजनीतिक है वह अनुभवी शासक हैं, उनकी युद्ध शक्ति पृथ्वी पर अद्वितीय है, इन सब कारणों के साथ एक बड़ा कारण यह मिल जाता है कि भारतवासी अभी तक धार्मिक वायुमडल में सांस ले रहे हैं, जिससे उनके राष्ट्रीय बन्धन दृढ़ नहीं होने पाते। अपने जीवन को धार्मिक बनाना एक वस्तु है, सार्वजनिक जीवन के हरेक पहलू को साम्प्रदायिक दृष्टि से देखना दूसरी वस्तु। हमारा यह दोष है कि हम अब तक भी मार्ग जीवन अपनी आंखों पर से धार्मिक साम्प्रदायिक ऐनक को नहीं उतार सकते। परिणाम यह है कि हम एक नहीं हो सकते। एकता के लिये जो यत्न किये जाते हैं, वह सफल नहीं होते क्योंकि हम अपने साम्प्रदायिक मतभेदों को रोजी नामों द्वारा सुलझाने का प्रयत्न करते हैं, जो सर्वथा असम्भव है। जब तक हमारा सार्वजनिक दृष्टिकोण धार्मिक या साम्प्रदायिक है, तब तक भिन्नता का दूर होना सर्वथा असम्भव है। स्मरण रखना चाहिये कि राजी नामा भिन्नता को दूर नहीं करता, वह उस पर मुहर लगाता है। यदि हम भिन्नता को दूर करना चाहते हैं तो उसका एक ही उपाय है कि हम लोगों का दृष्टिकोण ही बदल जाय। हम सार्वजनिक जीवन में साम्प्रदायिकता को सर्वथा निकाल दें। जब कोई राजनीतिक मामला पेश हो तो हम अपने को हिन्दू मुसलमान या पारसी न अनुभव करते हुए केवल भारतवासी अनुभव करें। जब हमें कोई अंग्रेज दिखाई देता है तब हम यह नहीं सोचते कि वह एक ईसाई है, बल्कि यही सोचते हैं कि वह एक ऐसी जाति का सदस्य है, जो भारत पर शासन करती है। इसी प्रकार जब हम किसी भारतवासी को देखें, तो हमारे मनमें यह भाव उत्पन्न न हो हम किसी हिन्दू या मुसलमान को देख रहे हैं, प्रत्युत यह भाव पैदा हो कि हम एक ऐसे देश वासी को देख रहे हैं, जिस पर अंग्रेजों की हुकूमत है। हमारी दृष्टि राजनीतिक ही होनी चाहिये—तभी भारत के राजनीतिक जीवन में से भिन्नता की जहर को दूर किया जा सकता है।

यो तो उपर्युक्त की परिवर्तन-सभी भारत वासियों में आवश्यकता है, हिन्दू भी इस रोग के वैसे ही रोगी हैं जैसे मुसलमान, परन्तु एक बात हमें बड़े दुःख से माननी पड़ेगी। हिन्दुओं में एक ऐसा समूह पैदा हो गया है, जो सार्वजनिक जीवन में साम्प्रदायिकता को जहर समझता है और जैसा समझता है वैसा कहता है। वह हिन्दुओं को प्यारी से प्यारी और पुरानी से पुरानी रूढ़ियों को धक्का पहुंचा कर भी अपने देश की राजनीति को साम्प्रदायिकता से मुक्त कराने का प्रयत्न करता है परन्तु मुसलमानों में अभी ऐसे सुधारक दल का अभाव है। कालिजों में और ऐसे नोजवानों में जो अभी व्यावहारिक क्षेत्र में नहीं आये, विशुद्ध-राष्ट्रीय विचारों के मुसलमानों की कमी नहीं है, परन्तु सार्वजनिक जीवन में प्रवेश होते ही एक मुसलमान में परिवर्तन आ जाता है और वह स्वयं या जाहिल मुसलमान जनता के नाम पर कट्टर साम्प्रदायिक बनने की चेष्टा करने लगता है। हमारे सार्वजनिक जीवन में सौभाग्य से कुछ ऐसे मुसलमान नेता भी हैं, जिनका दृष्टिकोण राष्ट्रीय है, परन्तु हम ऐसे राष्ट्रीय दृष्टिकोण को क्या करें, जो अपने विशुद्ध मनोवैज्ञानिक रूप में मुसलमान जनता के सामने आने से घबराता है। यह हमारे राष्ट्रीय जीवन का दुःखद पहलू है कि हमारे ऊंचे से ऊंचे राष्ट्रीय नेता जाहिल मुसलमानों के साम्प्रदायिक संस्कार को गहरी चोट लगाने से डरते हैं। वह बिलकुल खुलकर उन बुराइयों के विरुद्ध आन्दोलन नहीं करते, जिनके कारण नासमझ मुसलमान भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिये खतरनाक बन रहे हैं। गहरी नींद के तोड़ने के लिये जोरदार धक्के की जरूरत होती है। साम्प्रदायिता की अफीम के कारण उत्पन्न भारतवासियों की इस गहरी राजनीतिक नींद को भी तब तक नहीं तोडा जा सकता, जब तक इनकी धार्मिक-साम्प्रदायिक भावनाओं पर बलवान् आघात न हों। हिन्दुओं में ऐसे आघात पहुंचाने वाले लोग पैदा हो गये हैं। दुःख की बात है कि मुसल-

सम्पादकीय विचार

अंगरेज राजनीतिज्ञों की मिली भगत

ब्रिटिश पालियामेन्ट में ज्यायन्ट पार्लमेन्टरी रिपोर्ट के समर्थन का प्रस्ताव स्वीकार होगया। कहा जाता है कि प्रस्ताव बहुत भारी बहुमत से पास हुआ। पक्ष में ४९१ और विरोध मे ४९ मत थे। आज तक वर्तमान मन्त्रिमन्डल को इतना बड़ा बहुमत प्राप्त नहीं हुआ।

मान राष्ट्रीय नताओं को अभी तक एक विशेष भीरुता ने नहीं छोड़ा। वह अभी अपने जाहिल अनुयायियों के भावों को ठस पहुचान से घबराते हैं। यही कारण हैं कि वह एक प्रकार से अनुयायी-विहीन नता ही बने हुए हैं। नहीं तो क्या यह सम्भव था कि मौ० अब्दुलकलाम आजाद डा० अन्सारी और डा० महमूद जैसे नताओं के रहत भी काग्रेस असम्बली के चुनाव में केवल तीन मुसलमान कुर्सियो पर कब्जा कर सकती और यदि सच पूछो तो उन तीनो में से शायद एक का भी श्रेय मुसलमान कांग्रेसी नताओ को नहीं है। एक खान अब्दुलगफ्फार खा को छोड़ कर शायद ही किसी मुसलमान राष्टीय नता को यह कहन का साहस हो कि उसके मुसलमान अनुयायी हैं इसका कारण केवल यह है कि वह लोग मुसलमानों के साम्प्रदायिक कुसस्कारो को गहरी ठस पहुचान से घबरात हैं आग खड़े होकर उन्हें फटकारन की हिम्मत नहीं रखत। मुसलमान नता अपन अनुयायियो को मनोवृत्ति को राष्ट्रीय नहीं बना सके। इस लिये वह उन्हें अपन साथ दूर तक नहीं लेजा सकत। हम यह कहन का साहस करत हैं कि मौ० अब्दुलकलाम या डा० अन्सारी का राष्ट्रीय क्षेत्र मे स्वतन्त्र हिन्दू अनुयायियो के भरोसे पर ही है मुसलमान अनुयायियो के भरोसे पर नहीं। क्या राष्ट्रीय मुसलमान नता इस शोकजनक परिस्थति मे परिवर्तन करन का प्रयत्न न करेंगे।

ब्रिटिश पार्लमेन्ट में क्या हुआ। जरा इसके रहस्य पर तो दृष्टि डालिये। इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में पार्लमेन्ट में तीन पारटियां थीं, पहली और मुख्य पारटी तो सरकारी थीं, जिसके नता मि० बाल्डविन हैं। वह अनुदार दल के नाम से विख्यात हैं। दूसरी पारटी को, जो अनुदार दल का ही एक भाग है, चर्चिल पारटी के नाम से पुकारा जा सकता है, क्योंकि उसका सब से जबरदस्त वकील मि० चर्चिल है। तीसरी मजदूर पारटी थी। इनमें से पहली पारटी व्हाइटपेपर की प्रधान समर्थिका होने के कारण प्रस्ताव से सहमत थी। हाउस आफ कामन्स में सब से बड़ी पारटी वही है।

कहा जाता था कि जब प्रस्ताव पालियामन्ट के सामन आयगा, तब उसका बहुत जबरदस्त विरोध होगा। अनुदार दल का एक बड़ा भाग उसका विरोधी है। वह रिपोर्ट को क्रांतिकारी समझता है। यह भी आशा थी कि मजदूर-दल भारत का प्रश्न लेकर पार्लमेन्ट में प्रस्ताव का विरोध करेगा क्योंकि वह व्हाइट-पेपर को अपर्याप्त समझता है।

खूब जोरदार भाषण हुए। सभी ने अपनी भाषण-शक्ति की परीक्षा दी। जब सम्मति देन का समय आया तब क्या हुआ? मजदूर दल के सशोधन के विरोध में अनुदार दल के सभी सदस्यों ने राय दी, और चर्चिल दल के सशोधन का विरोध करन में मजदूर दल भी शामिल होगया। परिणाम यह हुआ कि दोनों सशोधन गिर गये और वर्तमान प्रस्ताव स्वीकार हो गया। वस्तुत वर्तमान प्रस्ताव के स्वीकार होन में तीनों ही दलों का हाथ है। एक सशोधन चर्चिल पारटी की राय से गिरा और दूसरा मजदूर पारटी की वोटों से। परिणाम यह हुआ कि मूल प्रस्ताव की शानदार विजय हुई।

इसे हम ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की मिली भगत कह सकते हैं। विरोधी दल वस्तुतः वर्तमान प्रस्ताव को गिराना चाहते तो उन्हें इसके विरोध में सम्मति न देकर केवल सरकार के विरुद्ध ही सम्मति देनी चाहिये थी। असली बात यह है कि अंगरेज राजनीतिज्ञ भारतवर्ष के सम्बन्ध में सोचते हुए कभी उस दृष्टिकोण को सामने नहीं रख सकते जो भारतवासियों को बिलकुल स्वाभाविक प्रतीत होता है। प्रथम तो यह कि इंगलैंड का कोई राजनीतिक दल भारत के प्रश्न पर जीत-हार या जीवन-मृत्यु का निर्णय नहीं कराना चाहता। भारत को पारटी की जद से बाहिर रखा जाता है। भारत के सम्बन्ध में यहां तक तो उचित समझा जाता है कि शाब्दिक सम्मति प्रकट करदी जाय, परन्तु यह अत्यन्त अनावश्यक और अनुचित समझा जाता है कि उस पर कोई पारटी जीत हार की बाजी लगा दे एक प्रकार से भारत के विषय में उसी दल की नीति चलती है, जो इंगलैंड की राजनीति में प्रबल हो। दूसरे दल उस पर टीका तो कर देते हैं परन्तु विघ्नकारी नहीं होने। पार्लमेन्ट में रिपोर्ट सम्बन्धी प्रस्ताव पर जो बहस हुई, उसमें भी यही सत्य दिखाई दिया, देखन में कुश्ती थी, परन्तु वस्तुतः पहलवान आपस में मिले हुए थे। दोनों दलों ने ससार की दृष्टि में सरकारी प्रस्ताव का विरोध किया परन्तु दोनों ही दलों ने एक दूसरे के विरुद्ध सरकारी प्रस्ताव का समर्थन किया। परिणाम यह हुआ कि सरकार की जबरदस्त जीत हुई।

इस बहस के सम्बन्ध में कुछ बातें विशेष ध्यान देन योग्य हैं। मि० रम्समेकडानल्ड साहिब मौन रहे। मि० लायडजार्ज अपने बन्धु बांधवों सहित अनुपस्थित रहे। मजदूर-दल का विरोध प्रायः यहीं तक परिमित रहा कि भारत-वासियों को औपनिवेशिक स्वराज्य देन का जो वायदा किया गया था वह पूरा क्यों नहीं किया गया। आत्मनिर्णय और पूर्ण उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की तो कोई चर्चा ही नहीं थी। भारतीय दृष्टिकोण तो किसी की दृष्टि में ही नहीं था।

कुछ भारतवासी अब तक भी विलायत की ओर दृष्टि गाड़े रहते हैं। वह कभी तो मजदूर-दल से आशायें बांधन लगते हैं, और कभी उदार दल से। अंगरेज भारतवर्ष के लिये समान हैं, चाहे वह किसी भी दल के सदस्य हों। उनके लिये इंगलैंड और इंगलैंड का भूमन्डल व्यापी साम्राज्य सब से प्रथम है। भारतवर्ष उनके लिये गौण है। पार्लमेन्ट की ताजा बहस से यदि कुछ बात सिद्ध हो रही है तो यही कि भारतवासियों को किसी अंगरेज के मुह की ओर न देख कर केवल अपनी भुजाओं की ओर ही देखना चाहिये।

रेडियो या रोटी

हमारे सम्वाददाता तथा प० नरदेव शास्त्री के लेखों ने सर्व साधारण का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है कि देहरादून के जिले में ब्राडकास्टिंग का स्टेशन बनेगा, और देहात में रेडियो का प्रबन्ध किया जायगा, जिसके लिये ग्राम के लोगों को तरह-तरह की दलीलों से उद्यत किया जा रहा है। ग्रामवासियों से कहा जाता है कि रेडियो द्वारा उन्हें मुफ्त गान सुनाये जायगे। खेती कैसे करनी चाहिये, और टिड्डी-दल से कैसे बचना चाहिये—ऐसे-ऐसे प्रश्नों के उत्तर उन्हें रेडियो-द्वारा सुनाये जायगे। ऐसे ही सब्ज बाग दिखा कर ग्रामवासियों से चन्दा भी लिया जा रहा है। प्रश्न यह है कि क्या भारतवर्ष के जमींदार या किसान इतने समृद्ध हैं कि उनकी जेब में से रेडियो के लिये पैसा लिया जाय? मनुष्य को सबसे पहले रोटी चाहिये और फिर कपड़ा। उनके बाद जीवन की शेष आवश्यकतायें हैं। उन आवश्यकताओं के पूर्ण हो जाने पर शौक की चीजों की बारी आती है। रेडियो का नम्बर शौक की वस्तुओं में पीछे है। यह तो अमीरों को भी आसानी से नसीब नहीं होता। ऐसे-ऐसे शौक के लिये उन देहातियों से पैसा लेना जिनकी आवश्यकतायें भी कठिनता से पूरी होती हैं बड़ा अन्याय है। सयुक्त प्रान्त की सरकार ने क्या सोच कर यह आयोजन किया है यह समझना कठिन है। एक विदेश में राज्य करने वाली सरकार प्रायः चाहती है कि सम्वाद भेजन और सवारी ले जाने के जितने साधन हैं, वह उन्नत हों और उसके हाथ में रहें। रेडियो भी सम्वाद भेजने का एक साधन है। जैसे रेल और तार शासन को चलाने के मुख्य साधन हैं, वैसे रेडियो भी सरकार के लिये अत्यन्त उपयोगी हो सकता है। सरकार बड़ी प्रसन्नता से अपने हाथों को दृढ़ करने के लिये रेडियो लगा सकती है परन्तु उसका खर्च ग्रामवासियों पर डालना कहां का न्याय है?

विश्व-नाटक के पात्र

नोबेल प्राइज़ का विजेता आर्थर हैण्डर्सन

इंगलैंड के मि० आर्थर हैन्डर्सन को शांति के लिये प्रयत्न करने के उपलक्ष में नोबेल प्राइज मिला है। इंगलैंड-वासी इससे बहुत प्रसन्न हैं। योरोप वाले आश्चर्य-चकित हैं और भारतवासी आंखें मल कर पूछते हैं कि क्या हम सपना देख रहे हैं।

मि० आर्थर हैन्डर्सन इंगलैंड की पुरानी मजदूर-पारटी के एक प्रधान नेता हैं। वह मि० रम्से मकडानल्ड के दायें हाथ हैं। जब तक मजदूर-पारटी इतनी प्रबल नहीं हुई थी कि वह इंगलैंड में मन्त्रि-मन्डल बना सके, तब तक मि० रेम्से मेकडानल्ड प्रभृ को बड़े शांति प्रेमी और उन्नति के समर्थक समझे जाते थे। वह अन्तर्जातीय शांति चाहते थे वह पराधीन जातियों के लिये आत्म-निर्णय का प्रयोग चाहते थे वह पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के कट्टर विरोधी थे। अंगरेज जाति या यों कहिये एंग्लो सैक्सन जाति की अपनी विशेषतायें हैं। उनका चरित्र संसार से विलक्षण है। उनके स्वभाव में दृढ़ता और धैर्य का राजीनामे और धूर्तता के साथ अद्भुत मेल है। एंग्लो सैक्सन जाति के व्यक्ति की यह विशेषता है कि वह जल्दी पैर आगे नहीं बढाता। परन्तु जब एक बार बढ़ा लेता है तो पीछे पैर नहीं रखता। छोटा मोटा धक्का या प्रतिरोध उसके कदम को नहीं उखाड़ सकता। इतना ही नहीं बड़े से बड़े पराजय को भी वह स्वीकार नहीं करता, और मैदान छोड़ने का नाम नहीं लेता। इन गुणों के साथ साथ दो दोष भी हैं। वह सिद्धान्त या सचाई के वहम में पड़ना पसन्द नहीं करता। सिद्धान्त और सचाई उसके औजार हैं, जो समय पर काम लाये जाते हैं वह उनका औजार नहीं। इस कारण सिद्धान्त और सचाई के मामले में रात-दिन राजीनामे किये जाते हैं और मजा यह कि अपनी नैसर्गिक धूर्तता से दुनिया को यही बतलाता है और शायद अपने हृदय को भी यही बतलाता है कि वह सिद्धान्त और सत्य पर दृढ़ है स्वभाव की यह विशेषतायें ही इंगलैंड की सफलता और निष्फलता के कारण हैं। इंगलैंड साम्राज्य चलाने में सफल परन्तु दूसरे के हृदयों में अपने लिये आदर भाव पैदा करने में निष्फल हुआ है। इंगलैंड का मजदूर दल पहले से ही अंगरेजीपन का एक नमूना रहा है। उसने साम्यवाद के सिद्धान्त पर राजीनामे का पैबन्द लगा कर वृध-मजदूर-दल नामकी एक ऐसी वस्तु तैयार की है कि दुनिया में उसकी उपमा मिलना कठिन है। मि० आरथर हैन्डर्सन उसी मजदूर-दल के नेता और संचालकों में से एक हैं।

ब्रिटिश मजदूर दल के सिद्धान्तों की परीक्षा के तीन अवसर आये। पहला अवसर योरोप के महायुद्ध के समय आया। लड़ाई की घोषणा रूस और जर्मनी में हुई। फ्रांस रूस का मित्र बन कर बीच में आ कूदा। इधर इंगलैंड एक प्रकार से युद्ध से बिलकुल असम्बद्ध था। यह आवश्यक नहीं था कि वह युद्ध में कूदता। इंगलैंड का मजदूर-दल भी अन्य संसार के मजदूर दलों की भांति शांति की शपथ लेता था और संसार को निःशस्त्र करना चाहता था। उस समय इंगलैंड में उदार-दल का शासन था। जब मध्य योरोप में युद्ध की काली गरजने लगी तो साम्राज्यवादी इंगलैंड भला कैसे दूर रह सकता था। जर्मनी के दमन और साम्राज्य-विस्तार का ऐसा दूसरा अवसर कहां मिलता। इंगलैंड भी लड़ाई में शामिल हो गया। वह मजदूर-दल की सिद्धान्त-परीक्षा का समय था। यदि उसे सिद्धान्त और सचाई से कुछ भी प्रेम होता तो वह युद्ध का प्रबल विरोध करता। परन्तु अंगरेज ही क्या जो साम्राज्य के लिये सिद्धान्त के साथ राजीनामा न करे, जब युद्ध के चलाने के लिये सब दलों का सम्मिलित मन्त्रिमंडल बनाया गया तो उसमें मजदूर दल भी सम्मिलित हो गया और जरा मजे की बात तो देखिये कि यही शांति के प्रचारक और नोबेल प्राईज के विजेता मि० हेंडसन साहब ही मन्त्री के आसन पर बिठाये गये थे। जब तक सम्मिलित मन्त्रिमंडल युद्ध को चलाता रहा हेन्डरसन साहब उसके सदस्य बने रहे।

दूसरा अवसर तब आया जब मजदूर-दल शक्ति-सम्पन्न होकर इंगलेंड के भाग्यों का निर्माता बना। भारतवर्ष में उस समय स्वराज्य का आंदोलन चल रहा था। ब्रिटिश सरकार जो डोमिनियन स्टेटस भारत को देना चाहती थी उसे भारतवासी पर्याप्त नहीं समझते थे। इस पर देश में घोर असन्तोष की लहर चल गई, और महात्मा जी ने नमक-सत्याग्रह जारी कर दिया। मजदूर दल तो केवल भारत के लिये ही नहीं अपितु सारी दुनिया के लिये आत्म-निर्णय के सिद्धान्त का समर्थक था। भारतवर्ष भी आत्म-निर्णय के असूल पर चलना चाहता था। भारत में कैसी शासन-प्रणाली हो इसका निर्णय वह स्वयं करना चाहता था। यदि मजदूर-दल और उसके नेता पूरी तरह सोलहों आने अंगरेज न होते तो शायद भारत का राजनीतिक इतिहास किसी दूसरी तरह ही लिखा जाता। परन्तु मजदूर दल उस समय भी कसौटी पर आया, और खोटा साबित हुआ। भारत में आर्डिनेन्स राज्य की पहले पहल स्थापना मजदूर दल के समय में ही हुई। आर्डिनेन्स राज्य का दूसरा नाम नंगा स्वेच्छाचार रखा जा सकता है। आत्म-निर्णय के पक्ष का समर्थन करने वाली राजनीतिक पारटी नंगे स्वेच्छाचार की नीति का संचालन करे, यह भी दृश्य इंगलैन्ड में ही दिखाई दे सकता था। नंगे स्वेच्छाचार का समर्थन करने वाले मन्त्रिमन्डल में मि० हेन्डरसन विशेष स्थान रखते थे। मि० रम्से मेकडानल्ड के दूसरे दर्जे पर वही थे। मि० हैन्डरसन ने अपनी शांति प्रियता की नीति को भारत में आर्डिनन्स राज्य के रूप में चलते बहुत शान्ति से देखा।

तीसरा अवसर तब आया जब मजदूर-पारटी के अधिकांश सदस्यों ने अनुदार दल के साथ मिल कर मन्त्रिमन्डल बनाने से इन्कार कर दिया। उस समय एक ओर मजदूर दल के वह सदस्य थे जो अभी शक्ति की शराब में इतने मस्त नहीं हुए थे, वह मन्त्रिमन्डल से दूर रहना चाहते थे। परन्तु मि० रम्से मेकडानल्ड और मि० हन्डसन साम्राज्य के संचालन का मजा ले चुके थे। उन्होंने मजदूर-दल को छोड़ना स्वीकार किया। परन्तु उस अनुदार-दल का साथ न छोड़ा जो सिद्धान्त रूप से मजदूर दल का कट्टर विरोधी है।

मि० हैण्डर्सन साम्राज्यवाद के प्रधान समर्थक और साम्यवाद के घोर विरोधी अनुदार दल से मिलकर इंगलैंड की वर्तमान नीति का संचालन कर रहे हैं। इधर कई वर्षों इंगलैंड को निःशस्त्रीकरण का नया शौक पैदा हुआ है। बात यह है कि इंगलैंड का पेट अब भर गया है। इधर ऊपर से बटोर कर उसने बहुत कुनबा इकट्ठा कर लिया है। महायुद्ध में जर्मनी के अधिकांश उपनिवेश भी ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल हो गये हैं। अब और क्या चाहिये, यही उनका जुड़ा रहे तो अच्छा है। लड़ाई से इंगलैंड जो कुछ प्राप्त कर सकता था, प्राप्त कर चुका। अब उसे युद्ध से हटाते हैं। क्योंकि उसमें साम्राज्य की दीवार में कहीं न कहीं छिद्र हो जाने का भय है। इस कारण इंगलैंड ने निःशस्त्रीकरण का बीड़ा उठाया है। उसने शक्ति और सुलह के नाम पर एक लम्बे-नाटक का आयोजन कर रखा है, जिसका प्रधान अभिनेता मि० हैन्डर्सन को कहना चाहिये।

(शेष पृष्ठ ' पर)

बन्दीखाने में:—

खोलो, मेरे बन्धन खोलो !
हाय ! मौन बन मुझे न मारो कोई मुझ से बोलो ॥
वह प्रभात की स्वर्णिम रेखा,
नभ मे नक्षत्रों का लेखा,
रजत रश्मियों को कब देखा,
देखा था युग बीते हैं यह आकुलता लो तोलो।
अब तो कोई बन्धन खोलो !

पत्थर की इन दीवालों मे,
विजडित लोहे के तालो मे,
'शासन-शासन' के नालों मे—
पलता हू, है यही दया बस ओ लो चाहे रो लो।
कब तक ? कोई बन्धन खोलो !

मै जग देखू जिय हुलसाऊ
तट पर सन्ध्या-गीत सुनाऊं
तन मे मुक्त पवन छू आऊ
चार पलों के लिये (मुक्ति दो) पी लूगा विष घोलो—
सुन लो कोई बन्धन खोलो !

—द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' ।

———: :———

जाग मुसाफिर अब तो जाग !

आलस नींद बहुत दिन सोया,
सुन्दर समय व्यर्थ ही खोया,
हुआ सवेरा उषा थिरकती
खुले पूर्व के भाग। जाग मुसाफिर अब तो जाग !
सारा विश्व सचेत खड़ा है:
धर्म कर्म का पर्व पड़ा है,
कुछ करले भरले नव युग के
उर मे नव अनुराग। जाग हितैषी अब तो जाग !
क्यो पागल में पड़े अकेले,
बढ़-चढ़ जा ओ अलबले,
बुला रही वसुधा बलिवेदि
उठ ! चल कर कुछ त्याग। जाग मुसाफिर अब तो जाग !
—हितैषी भलावलपुरी प्रेमी'

— ——::———

(पृष्ठ ५ का शेष)

मि० हन्डर्सन एक नर्म स्वभाव वाले, योग्य और वाग्मी राजनीतिज्ञ हैं। वह बहुत देर तक किसी भी विषय की सरल शब्दो मे दार्शनिक व्याख्या कर सकते हैं। कई वर्षो मे वह अन्तर्राष्ट्रीय सुलह की सुदीर्घ व्याख्या कर रहे हैं। इधर इंगलैंड के बन्दरगाहों पर जहाजो के निर्माण के कारखाने घटाटोप धुंआ छोड़ते हुए अपना काम कर रहे हैं हवाई जहाजो और तोपो, और गोलो और टंको की उपज उसी वेग मे जारी है और उधर निःशस्त्रीकरण कानफरेन्स के अधिवेशन धड़ाधड़ हो रहे हैं। एक अधिवेशन असफल होता है तो भी मि० हन्डर्सन दूसरे अधिवेशन को बुला लेते हैं। भाषण पर भाषण हो रहे हैं, वक्तव्य पर वक्तव्य निकाले जा रहे हैं कि किसी तरह शस्त्रों का बनना बन्द हो, परन्तु इगलेंड और फ्रास जर्मनी और इटली के कारखानों मे हथियारो की तैयारी का वेग बढ़ता जाता है। फिर भी शाबाश है मि० हेन्डर्सन को, कि निःशस्त्रीकरण की चर्चा किये ही जाते हैं। जब हथियार बनाने के कारखाने की चिमनी प्रातः काल मजदूरों के बुलाने के लिये सीटी बजती हैं तो मि० हैन्डर्सन कानो मे अगुली दे लेते होंगे, और फौरन निःशस्त्री करण के सम्बन्ध मे ब्राडकास्ट द्वारा संसार मे शान्ति पर भाषण सुनाने लगते हैं।

धन्य है, ऐसे शांति प्रेमी मि० हन्डर्सन और उनसे भी अधिक धन्य हैं वह निर्णायक लोग, जिन्हों ने उन्हें शान्ति-प्रेम के कारण नोबेल प्राइज का अधिकारी समझा है।

———

वीणा की झंकार

परोपकार इसे कहते हैं। जहाँ उसे उपकार समझा जाय, वहाँ से हरेक आदमी परोपकारी बन जाता है, पर असली उपकार यही है कि जनाब, आप हजार बार इन्कार कीजिये उपकार का घूंट आपके गले मे उतार ही दिया जायगा।

* * *

हिन्दुस्तानी असभ्य थे, कोरे जगली थे, योरपियन लोगों को उनकी हालत पर दया आ गई, वह हिन्दुस्तानियो को सभ्यता सिखाने के लिये हजारों मील की यात्रा करके आपहुचे। नासमझ हिन्दुस्तानियों ने बहुत हाथ पांव पटके, कि सभ्यता का घूंट न पियेंगे, पर परोपकारी योरपियन कहाँ मानने वाले थे।

* * *

डाक्टर का यही तो धर्म है। बीमार ने दवा पीने से इन्कार किया तो डाक्टर यही करता है कि उसे लिटाकर और हाथ पांव दबाकर मुह मे डालकर दवा पेट में उतार देता है। परोपकारी पश्चिमवासियो ने हिन्दुस्तानी मरीज को शिकजों में कसकर सभ्यता कानून और अमन की कड़वी दवा उसके मुंह में ठूस ही तो दी।

* * *

पर हिन्दुस्तानी भी बहुत ही नाशकि और मूर्ख हैं। हरेक घूंट पर अड़ते हैं, हाथ पाव मारते हैं, और चिल्लाते हैं। अब इंगलेंड ने भारतवर्ष पर बड़ी कृपा करके दवा की एक नई खुराक तैयार की है, जिससे भारत वर्ष के सब रोगों को एक दम ही समाप्त हो जाने की आशा है। क्योंकि मरीज की यह रात दिन की चीख पुकार और हलचल समाप्त हो जायगी।

* * *

परन्तु यह मरीज बड़ा नासमझ है कि दवा न लूंगा-न लूगा। परन्तु डाक्टर भी कमाल का परोपकारी है। दवा तैयार किये जा रहा है। थोड़े दिनों की और बात है। दवा बिलकुल तयार होकर बोतल मे डाल दी जायगी, और हिन्दुस्तान के लिये रवाना कर दी जायगी।

* * *

यह अहमक हिन्दुस्तानी जरूर शोर मचायेंगे और कहेंगे कि हम दवा नहीं लेते, पर डाक्टर कहां मानने वाला है। छाती पर सवार होकर बीमार के गले में दवा को उतारेगा। तुम कहोगे 'नहीं-नहीं' वह कहेगा 'जरूर'।

* * *

संसार इस परोपकार का दूसरा नमूना नहीं दिखा सकता। लेने वाला कहता है कि 'भाई मैं नहीं लेना चाहता'। पर देने वाला कहता है 'मैं जरूर दूंगा। तुझे जरूर लेनी पड़ेगी। भलमनसाहत से न लेगा तो जबरदस्ती से, लाठी के जोर से दूंगा। ऐसे परोपकारियों को नारद बाबा का नमोनमः।

* * *

इधर सुनते हैं, दिल्ली के देहातियों में सभ्यता के प्रचार का काम परोपकारियों की ओर से बड़े जोर शोर से उठाया गया है। नागलोई में एक नुमायश होगी। तरह तरह की चीजें दिखाई जायंगी। रस्मोरिवाज और ललितकला की शिक्षा देने के लिये नाच का भी खास प्रबन्ध किया जायगा।

* * *

कुछ लोग इस पर भी बावेला कर रहे हैं। इन गवारों मे कोई पूंछे कि भाई आखिर तुम लोग कब तक ऐसे ही बुद्धू बने रहोगे। नाच देखने से मनुष्य शाइस्तगी सीखता है और फिर चीफ कमिश्नर साहिब भी खुद तशरीफ लायेंगे। ऐसे शुभ अवसर पर देहातियों को नाच द्वारा कुछ सभ्यता का उपदेश दे दिया जाय तो क्या हर्ज है।

* * *

यार लोगों ने तरीका तो अच्छा निकाला है। उस दिन दिल्ली में जमींदार एसोशियन का जलसा था। था। ख्याल था कि भोले-भाले जमींदार लोग आसानी से ग्रामोफोन बन कर कह देंगे कि 'हा-हजूर' आपकी व्हाइटपेपर स्कीम हमारे लिये बहुत अच्छी है। पर जमींदारों में भी बागी घुस गये है। सारा गुड़ गोबर कर दिया। प्रस्ताव पास न होने दिया।

* * *

नागलोई मे सब बागी सीधे हो जायगे। कुछ तो चीफ कमिश्नर साहब के आने का जोर, और उस पर नाच और गाना। जब तबले और सारंगी की मस्ती में देहाती लवलीन होंगे, तब परोपकारी लोग बोतलों का प्रसाद बांटेंगे और फिर यार लोग देख लेंगे कि कौनसा माई का लाल है जो ऊंचे स्वर से न पुकार उठेगा कि 'हां, ठीक है, जनाब आप जो कुछ फरमा रहे हैं! सब कुछ ठीक है।

—नारद

—

साम्यवाद

असहयोग आंदोलन की गिरती हुई अवस्था में देश के अन्दर जो नवीन प्रोग्राम बने उनमें साम्यवाद का प्रोग्राम प्रमुख है। इसके प्रधान विधायक पं० जवाहरलाल नहरु हैं, जो इस समय सारे भारत में महात्मा गांधी के पश्चात् दूसरे नम्बर के प्रमुख नेता हैं। उनके जीवन का एक-एक परमाणु त्याग, तपस्या और सारी मानव जाति के पवित्र हित की भावनाओं से भरा हुआ है। इस में कोई सन्देह नहीं कि साम्यवाद का प्रोग्राम मानव-जाति के लिये उच्च-संस्कृति का एक दिव्य सन्देश है। अभी तक के अनुभवों से यही कहा जा सकता है कि समाज की आर्थिक समस्या को हल करने तथा मानवीय संस्कृति का ध्येय ऊंचा उठाने में अभी तक ससार में जितने आयोजन बने, उन में साम्यवाद ही सब मे अधिक सारगर्भित और सफल है। मगर इसके साथ ही यह भी सत्य है कि अभी तक सारे संसार मे यह आंदोलन केवल रूस मे ही सफल हो सका है और वह भी अनेक परिवर्तनों के साथ। इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिये कि दूसरे देशों मे साम्यवाद की आवश्यकता महसूस नहीं होती, अथवा उनके यहां आर्थिक संकट की समस्या नहीं है। मगर, आज तो हम यह देख रहे हैं कि रूस को छोड़कर प्रायः ससार के तमाम देशों मे इसका जोरों मे विरोध हो रहा है तथा इसके पनपने में बहुत बाधाएं खड़ी की जा रही हैं।

ऐसी स्थिति में जब कि ससार के स्वतन्त्र और शिक्षित देशों में इस आंदोलन की यह हालत है, तब भारतवर्ष के समान गुलाम और अज्ञान से आच्छादित देश में मानवीय संस्कृति के इस उच्चतम कार्यक्रम की सफलता की आशा इस समय कैसे की जा सकती है। सबसे बड़ी बात जो इस कार्यक्रम की सफलता में सन्देह पैदा करती है, वह यह है कि यहां के मौलिक संस्कारों में साम्यवाद की गन्ध भी नहीं है। दूसरे देशों में तो केवल राजकीय और आर्थिक कारण ही मानवीय समानता में बाधक हो रहे हैं। मगर यहां तो उन से भी बीस गुना अधिक धार्मिक और सामाजिक कारण समानता के मार्ग में रोड़ा अटका रहे हैं। गत असहयोग आंदोलन में भी इन जातीय और धार्मिक मतभेदों का ताण्डव नृत्य हम भली प्रकार देख चुके हैं और हम यह भी महसूस कर चुके हैं कि इस आंदोलन की असफलता के अनेक कारणों म यह कारण भी बहुत प्रबल था।

भारत के लिये पंचवर्षीय आयोजन

एक नवीन कार्यक्रम का मसविदा

(लेखक—श्री चन्द्रराज भण्डारी विशारद)

(गताक से आगे)

अतएव इस आंदोलन के बारे में भी यह कहा जा सकता है कि सिद्धान्त रुप में हम इसे चाहे स्वीकार कर लें, मगर इसका जो कान्स्टीट्यूशन रूस में बना हुआ है, उसकी नकल के द्वारा हम इस देश मे सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। खास करके सम्पत्ति के राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध मे रूस की जो व्यवस्था है वह यहाँ पर कदापि सफल नहीं हो सकती। व्यक्तिगत सम्पत्ति की भावनायें यहा पर इतनी मजबूती के साथ जमी हुई हैं कि उनको बदलने में बहुत लम्बे समय की दरकार होगी। जब से मानवीय सस्कृति का आरम्भ हुआ है, हम व्यक्तिगत सम्पत्ति के आदी हो रहे हैं। कुछ तो ये संस्कार स्वयं ही अपने मन में मजबूती के साथ स्थान कायम किये हुये हैं और कुछ इन्हें उन लोगों का समर्थन मिल जाता है, जिनके स्वार्थ की सारी भित्ति ही इन पर ठहरी हुई है। राज्य, धर्म, पूंजी आदि के ठेकेदारों का स्वार्थ अभी भी दुनिया में अपना मजबूत अस्तित्व कायम किये हुए है। ऐसी स्थिति में सम्पत्ति के राष्ट्रीय करण की समस्या कम-से-कम भारत में तो अभी सफल नहीं हो सकती।

कहने का तात्पर्य यह है कि साम्यवाद और अहिंसात्मक आन्दोलन के मूल सिद्धान्तों को स्वीकार करते हुए भी हमको अपना कांस्टीट्यूशन बिलकुल नवीन और विचारपूर्ण बनाना होगा। समय चाहे कुछ अधिक लग जाय मगर हमको अपनी राष्ट्रीय मजबूती ऐसी सुदृढ कर लेनी होगी जो समय के वज्र-प्रहार से भी न हिल सके।

इस सारी वस्तुस्थिति पर विचार कर लेने के पश्चात अब हम अपने आयोजन के तात्विक और व्यावहारिक रूप पर कुछ प्रकाश डालना चाहते हैं—



श्री चन्द्रराज भन्डारी

नवीन आयोजन की रूप-रेखा

उपर्युक्त प्रसिद्ध कार्यक्रमों के अलावा और भी छोटे बडे कार्यक्रम देश के सामने चल रहे हैं मगर उनके संचालकों तक को यह विश्वास नहीं है कि उनके आंदोलन देश को अन्तिम मकसद तक पहुंचा देंगे। वे केवल उन्हें आपत्तिकाल का धर्म समझ कर धकाये चले जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में उन सब की आलोचना करना व्यर्थ है।

ऐसे विकट समय में देश के सामने ऐसे कार्यक्रम की बडी भारी आवश्यकता है जो सीधे और साफ रास्ते से उसे अपने मकसद पर पहुंचा दे। ऐसे कार्यक्रम की रूप-रेखा तैयार करते समय हमको यह ध्यान रखना होगा कि इस समय संसार में चलने वाले प्रत्येक आन्दोलन के प्रधान और अच्छे तत्व हमारे कार्यक्रम में आ जायं और उनमें जितनी बुराइयां हैं उनसे उनको बचाया जाय।

आयोजन के मूल-सिद्धान्त

सब से पहले हम को इस बात पर विचार करना होगा कि इस नवीन आयोजन की स्थापना इस समय हमे किन सिद्धान्तों पर करनी होगी?

सहयोग या असहयोग

पहला ही प्रश्न जो हमारे सामने उपस्थित है वह यह कि इस आन्दोलन में सहयोग के सिद्धात को स्वीकार किया जाय या असहयोग के? इस बात पर विचार करने समय हमको यह बात मद्दे नजर रखनी होगी कि हमे इस समय क्रांति के रचनात्मक अग की ओर ही अधिक ध्यान देना है। इतने दिनों के अनुभव से हम यह बात भली प्रकार जान चुके हैं कि जब तक आन्दोलन की रचनात्मक का प्रबल धक्का सहन करने के योग्य न हो जाय तब तक विनाशात्मक (Destructive Programme) क्रांति का कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता। हम यह नहीं कहते कि रचना का सभी कार्यक्रम पहले पूरा कर लिया जाय। हम जानते हैं कि रचना का कार्य अनन्त है और वह विनाशात्मक आंदोलन की सफलता के पश्चात ही भली प्रकार फल-फूल सकता है उसके पहले उसकी गति बहुत धीमी रहती है। मगर यह सब होने पर भी इतनी रचना तो हमको अवश्यमेव पहले करना हो पड़ेगी जो ध्वंसात्मक कार्यक्रम के भावी प्रबल धक्के को सहन करने योग्य हो जाय।

ऐसी स्थिति में जब कि हमें अपनी सारी शक्तियां रचनात्मक आन्दोलन में लगानी है असहयोग का सिद्धान्त कभी सफल नहीं हो सकता। असहयोग का सिद्धान्त ध्वंसात्मक क्रान्ति का एक सिद्धान्त है और उसमें वह सफल भी हो सकता है। मगर रचनात्मक कार्यक्रम (Constructive Programme) के अंदर तो यह सिद्धान्त हानिकर ही सिद्ध होगा। रचना का कार्य तो सहयोग की भावनाओं से ही सफल हो सकता है। इसमें हमें अपने मूल सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए अधिक से अधिक जितना भी सहयोग प्राप्त हो सकेगा करना होगा। फिर चाहे वह गवर्नमेन्ट के द्वारा हो चाहे जनता के द्वारा, चाहे जमींदारों और पूंजीपतियों के द्वारा हो चाहे मजदूरों और किसानों के द्वारा, चाहे हिन्दुओं के द्वारा हो चाहे मुसलमानों के द्वारा।

हिंसा या अहिंसा

दूसरा प्रश्न हिंसा या अहिंसा का है यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिये कि भारत को केवल अपना ही उद्धार करना है प्रत्युत अपने उद्धार के साथ उसे सारे ससार को विश्वभाव का सन्देश देना है—सारी मानवीय संस्कृति को एक कदम आगे बढ़ाना है। जिस भारत का नेतृत्व कृष्ण, बुद्ध, महावीर और गांधी जैसे विश्वभाव के अनुयायियों ने किया है उस देश का अन्तिम लक्ष्य हिटलर

और मुसोलिनी के लक्ष्य की तरह राष्ट्रवाद के संकीर्ण दायरे में जाकर समाप्त हो जाय यह बात मानी नहीं जा सकती। भारत की राष्ट्रीयता जाग्रत होगी मगर अपने साथ ही साथ वह संसार में विश्वभाव को भी जाग्रत करेगा और अन्त में उसी में लीन हो जायगा।

ऐसी स्थिति में भारतीय आन्दोलन में हिंसा की भावनाएं नहीं पनप सकतीं और न इस समय ऐसी भावनाओं के लिये किसी प्रकार क्षेत्र ही तैयार है। अगर इस समय में लोगों की जबरदस्ती से व बलात्कार पनपीं भी तो बहुत शीघ्र अपने साथ सारे आन्दोलन को लेकर डूब जायगा।

नवीन आयोजन का कार्यक्रम स्थिर करने के पूर्व तीसरा प्रश्न जो हमारे सम्मुख उपस्थित होता है वह यह कि नवीन विज्ञान के द्वारा परिचलित यंत्र कला को इस आयोजन में स्वीकार किया जाय या नहीं।

नवीन यंत्रकला

गांधीवाद यंत्र कला के विरुद्ध है। मगर १८ वर्ष के लम्बे अनुभवों ने हमको यह बतला दिया है कि चरखा या उसी के समान दूसरी वस्तुएं भारत की अर्थ समस्या को हल करने में बिलकुल नाकामयाब हैं। हाल ही में ग्राम संघ की नवीन योजना में भी महात्मा जी ने देश के प्राचीन उद्योग धन्धों को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया है सम्भवतः महात्मा जी के महान व्यक्तित्व के प्रताप से इस प्रोग्राम में भी कुछ हलचल पैदा हो जाय मगर लम्बी दौड़ ( ) के पश्चात् मालूम होगा कि इस प्रकार का कोई भी प्रोग्राम देश की आर्थिक समस्या को हल नहीं कर सकता। जब हम को देश की आर्थिक मसला हल करना है तब हमको सारी वस्तु स्थिति को सामने रखकर ही काम करना होगा। इस मामले में केवल अन्धानुकरण से काम नहीं चल सकता। यंत्रकला के बिना अब किसी भी देश का आर्थिक प्रतिस्पर्धा के मैदान में टिक सकना असम्भव है जिस प्रकार हिंसा और अहिंसा के सम्बन्ध में हमारा आयोजन गांधी जी का अनुसरण करेगा उसी प्रकार यंत्रकला के सम्बन्ध में वह रूस का अनुगामी होगा। जिस प्रकार रूस ने अपने देश के एक छोर से दूसरे छोर तक विद्युत शक्ति को सुलभ कर दिया है और थोड़े ही समय में अपने यहां की आर्थिक समस्या को उसने हल कर लिया है उसी प्रकार हमको भी देश के एक छोर से दूसरे छोर तक छोटे छोटे गांवों से लेकर बड़े २ शहरों तक विद्युत शक्ति का जाल बिछा देना होगा तथा गांव में हर तरह की छोटी छोटी इण्डस्टीज कायम करके उनका परिचालन विद्युत् शक्ति द्वारा करना होगा। इस यंत्रकला के पहुंचते ही छोटे २ गांवों में अत्यन्त शीघ्रता से नवजीवन और नवीन सभ्यता का संचार हो जायगा।

लेकिन यंत्रवाद से उत्पन्न बुराइयों—साम्राज्यवाद और पूंजीवाद से बचाना होगा। व्यवस्था और आयोजन ऐसा होना चाहिये जिसमें यंत्रकला का पूरा पूरा लाभ भी हम ले सकें और वर्गों की विषमता का दुःख भी हमें न उठाना पड़े। इस सम्बन्ध का व्यवहारिक विवेचन हम आगे चल कर करेंगे।

सहयोग अहिंसा और यंत्रकला के सिद्धान्तों को स्वीकार करने पर अब हमारे लिये यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने आयोजन में जिस मार्ग का अवलम्बन करना चाहें उसका निश्चय करें।

वैसे देखा जाय तो भारत की सामाजिक स्थिति का प्रत्येक अङ्ग टूट कर नष्ट भ्रष्ट होने के समीप पहुंच गया है। राजनैतिक धार्मिक सामाजिक आर्थिक सभी अङ्गों में पुनर्निर्माण की आवश्यकता महसूस हो रही है पर यदि सर्वाङ्गीण निर्माण एक साथ प्रारम्भ किया जायगा तो उसमें सफलता की आशा कम है।

हमारा ख्याल है कि यह सब पुनर्निर्माण की महान समस्या एक मात्र जनसमाज की शिक्षोन्नति से ही हल हो सकता है। अगर कोई ऐसा कार्यक्रम बनाया जाय जिसमें देश के एक छोर से दूसरे छोर तक प्रत्येक स्त्री पुरुष का मस्तिष्क उचित शिक्षा के प्रकाश से प्रकाशित हो जाय। तो हमारी बहुत बड़ी समस्या का सर्वाङ्गीण प्रचार हुआ यानी धर्म राज्य समाज इत्यादि सभी संस्थाओं की बुराइयां एक साथ दूर हो जायगी।

मगर शिक्षा का प्रचार भी तब तक सम्भव नहीं हो सकता जब तक मनुष्य की रोटी का सवाल हल नहीं होता धर्म राज्य और समाज के रोगों को दूर करने के लिए तो शिक्षा का प्रचार होने तक मनुष्य कुछ सब्र भी कर सकता है मगर रोटी का सवाल तो ऐसा है जिसे दिन में दो बार अनिवार्य रूप से हल करना ही पड़ता है चाहे शिक्षा का प्रचार हो चाहे न हो। इस प्रश्न के हल के लिए मनुष्य किसी भी सिद्धि की प्रतीक्षा नहीं कर सकता।

उपरोक्त दोनों समस्याओं में एक गुण यह भी है कि इनके सम्बन्ध में किसी जनसमुदाय का मतभेद नहीं हो सकता। शिक्षा प्रचार के लिये हिन्दू मुसलमान सनातनी सुधारक गवर्नमेन्ट, जनता पूंजीपति और मजदूर किसी में भी प्रत्यक्ष मतभेद नहीं हो सकता।

इन दोनों कार्यक्रमों के सिवाय समाज राज्य धर्म-सम्बन्धी जितने भी प्रयोग हैं उन में बहुत बड़ा विरोध बढ़ने की सम्भावना है। अतएव जब तक यह दोनों प्रोग्राम अपनी रचना पूरी न कर लें तब तक प्रत्यक्ष रूप में इन बातों पर अधिक जोर न दिया जाय अप्रत्यक्ष रूप में तो इन संस्थाओं पर जो प्रभाव पड़ने वाला है वह पड़ेगा ही।

उपरोक्त सारे विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि देश की मौजूदा परिस्थिति में जो भी आयोजन बनाया जाय, उसमें दो ही बातों की प्रधानता रखी जाय। (१) शि- और (२) अर्थ।

(क्रमश)

——

यूरोप के कुछ राजनीतिक कर्णधार

जर्मनी के सेनापति



मि० वान ब्लामबर्ग

कहा जाता है कि आप का हिटलर से सेना में नाजियों के हस्तक्षेप के विषय पर मतभेद हो रहा है। आप हस्तक्षेप के विरुद्ध हैं।

फ्रांस के पर-राष्ट्रसचिव



मि० पीयरी लेवल

आपने राष्ट्र-संघ की बैठक में यूगोस्लेविया का पक्ष लेते हुये हंगरी पर इस दोषारोपण का समर्थन किया कि यूगोस्लेविया-नरेश की हत्या में उसका हाथ है।

फ्रांस का सेनाध्यक्ष



मार्शल पीटेन

मि० डूमर्ग के अवकाश ग्रहण करने पर आप ही फ्रांस के राष्ट्रपति बनेंगे। ऐसा विश्वास किया जा रहा है।

इटली के सर्वेसर्वा



मि० मुसोलिनी

इटली के आर्थिक पुनर्निर्माण के सिलसिले में आपने हुक्म जारी किया है कि सब व्यापारी अपने विदेशी पावने इटली-सरकार को बेच दें। नियम उल्लंघन करने पर सजा मिलेगी।

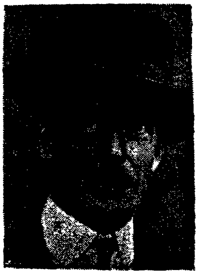
इंग्लैन्ड के युद्ध-सचिव



मि० हैलिशम

अभी आपने घोषणा की है कि इंगलैंड को फ्रांस व जर्मनी की सैनिक तैयारियों से डरने की जरूरत नहीं है।

इंगलैंड के राजदूत



लार्ड एंथनी ईडन

आप राष्ट्र-संघ में यूगोस्लेविया और हंगरी के पारस्परिक समझौते के लिये बहुत प्रयत्न कर रहे हैं।

भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य नहीं मिलेगा

पार्लमेंट में ज्वायंट सिलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट स्वीकृत

मजदूर-दल का संशोधन गिर गया

४६ पक्ष मे ४६१ विपक्ष में

> सरक्षणों का दृढ़ता स उपयोग किया जायगा।
>
> —सर होर
>
> रिपोर्ट के पत्रे-पत्रे मे अविश्वास भरा हुआ है।
>
> —मेजर एटले
>
> भारतीय जिस चीज के लिये चिल्ला रहे थे, उसकी जगह रिपोर्ट ऐसा बम का गोला है जो उनकी मौजूदा स्वतन्त्रता को भी नष्ट कर देगा।
>
> —कर्नल वेजवुडबेन
>
> 'अब समय आ गया है कि हम डोमिनियन स्टेटस ,के भ्रमात्मक शब्द को छोड दे, जिसने बहुत गलतफहमियाँ पैदा की हैं।'
>
> —आर्च बिशप कैंटरबरी

हाउस आफ कामनन्स मे ६ दिसम्बर से ज्वायन्ट सिलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट पर बहस शुरु हुई, जो १२ तारीख को समाप्त हुई।

सर सेम्युअल होर ने करतलध्वनि के बीच ६ तारीख को हाउस आफ कामन्स में निम्न सरकारी प्रस्ताव पेश किया —

'यह हाउस सिलेक्ट कमेटी की सिफारिशो को भारतीय शासन विधान मे सशोधन करने का आधार मान कर स्वीकार करता है और उचित समझता है कि उस रिपोर्ट के आधार पर एक बिल पेश किया जाय।

स्कीम का उद्देश्य

विस्तार की बातों मे न जाने का आग्रह करते हुए आपने कहा तथा भारत मे सद्भाव रखने वाले व्यक्तियों स अपील की कि व कुल योजना को एक साथ ग्रहण करें और यह विश्वास करें कि

कमेटी तथा सरकार की यही इच्छा है कि भारत को स्वशासन का अधिक स अधिक मौका दिया जाय और इसके लिये व एसी स्कीम पेश कर रहे हैं जो हमारा विश्वास है भारत को हमेशा ब्रिटिश साम्राज्य का भागीदार रखने में सहायक होगा और जिस भविष्य मे प्रगति होने के बीज मौजूद हैं।

तीन निष्कर्ष

कमेटी सैकड़ों बैठकें करके दर्जनों गवाहियां लेकर और विस्तृत आवेदन पत्रों पर विचार करके तथा भारत व बर्मा के सार्वजनिक व्यक्तियों स विचार विनिमय करके तीन मुख्य निष्कर्षों पर पहुंची है—(१) प्रांतीय स्वतन्त्रता (२) अ० भा० सघ और (३) सरक्षणों के साथ उत्तरदायित्व।

ब्रिटिश शिक्षा और भारतीय अनुभव का परिणाम

उक्त तीन निष्कर्ष आपने बताया कि विधान सम्बन्धी सिद्धान्तो पर विचार करने वालों के दिमाग की उपज नहीं है बल्कि १०० साल की ब्रिटिश शिक्षा और इतने ही समय के भारतीय अनुभव का फल है। क्योंकि भारत के राजनीतिज्ञों को कई पीढ़ियों स पार्लमेंट की नकल करने की शिक्षा दी गई है, बाल विवाह मन्दिर-प्रवेश अस्पृश्यता-निवारण जैसे भारत के सामाजिक प्रश्न अधिकाधिक आगे आ रहे हैं और यह बात अधिक स अधिक स्पष्ट होती जाती है कि जिम्मेदार भारतीय राजनीतिज्ञ ही उन्हें सम्हाल सकते हैं। साथ ही आर्थिक दृष्टि स आवागमन के उत्तम साधनों के कारण तथा ऊंचे तटकर की वजह से यह अनिवार्य हो गया है कि भारतीय रियासतें भी केन्द्रीय भारतीय शासन में सीधा भाग लें।

प्रांतीय स्वतन्त्रता

की सफलता के लिये आपने कहा कानून और व्यवस्था को मिनिस्टर के सुपुर्द किया जाना आवश्यक है।

अखिल भारतीय सघ

के सम्बन्ध में आपने कहा कि यदि केन्द्र का मौजूदा रूप में ही छोड कर हम प्रांतो में उत्तरदायी सरकारों की स्थापना कर दें तो इससे भारत की एकता नष्ट होने का भय है। दूसरे एसा होने पर केन्द्रीय सरकार को लोकमत का सहारा न रहेगा। प्रांतीय सरकारों की कृपा पर उसे अवलम्बित रहना पडेगा। भारत की आर्थिक साख पर इस (स्थिति) का इसका बहुत बुरा असर पडेगा और देशी नरेशो व देशी रियासतों का हालत आसपास के शक्तिशाली प्रांतों के मुकाबले में बहुत कमजोर हो जायगी। अत प्रान्तीय स्वतन्त्रता को स्वीकार करने पर अ० भा० सघ अनिवार्य हो जाता है और अ० भा० सघ हो तो यह भी आवश्यक है कि वह भारतीय सघीय धारा सभा के प्रति उत्तरदायी हो तथा देशी नरेश भी उसमें शामिल रहें।

सरक्षणो के साथ उत्तरदायित्व

के सम्बन्ध में आपने कहा कि जिसने इस समस्या पर निष्पक्ष-रूप से विचार किया है वह हरेक स्पष्ट रूप से यह जान गया है कि प्रांतीय स्वतन्त्रता तथा अ० भा० सघ की सफलता के लिये कुछ ऐसे सरक्षणों का होना आवश्यक है जिस से सरकार की स्थिरता एव सुरक्षा में कोई बाधा न पड़े।

ये सरक्षण विधान की प्रगति रोकने के लिये नहीं हैं न इसी लिये बनाये हैं कि एक हाथ जो दिया जाय उसे दूसरे हाथ से ले लिया जाय। हर हालत मे तो हिन्दुस्तान की मौजूदा हालत व बातों के ही सीधे परिणाम हैं।

सेना नहीं सौंपी जा सकती

सेना के सम्बन्ध में आपने कहा कि वस्तुस्थिति इस समय यह है कि हिन्दुस्तान स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता और भारतीय सेना का एक बड़ा हिस्सा ब्रिटिश तथा इम्पीरियल सैनिकों का है। इम्पीरियल सेना को इम्पीरियल पार्लमेंट के अलावा और किसी के मातहत नहीं किया जा सकता।



सर सेम्युअल होर

भारतीय तथा प्रान्तीय सरकारों का समर्थन

पिछले तीन सप्ताहों में आपने कहा, मेरे दरयाफ्त करने पर भारत के गवरनर-जनरल, भारत-सरकार तथा सब प्रान्तीय सरकारों ने अपनी यह सम्मति प्रकट की है कि सिलेक्ट कमेटी की स्कीमों को आधार मान कर भारतीय शासन-विधान बनाया गया तो वह कार्यान्वित हो सकेगा।

सरक्षण कागजी नहीं

विशेष उत्तरदायित्व के नाम से जो सरक्षण हैं उन्हें ब्रिटेन की अपेक्षा भारत के हित में बताते हुये पुलिस सरक्षणों पर आपने बहुत जोर दिया और आतंकवाद के विरुद्ध गवरनर-जनरल व गवरनरों को दिये जाने वाले विशेषाधिकारों को भी ठीक ही बतलाया। साथ ही इस बात पर भी जोर दिया कि सरक्षण कोरे कागजी नहीं हैं, मौके पर उनका दृढ़ता स उपयोग किया जायगा।

कांग्रेस और सुधार

असेम्बली-चुनाव में कांग्रेस की जीत पर आश्चर्य प्रकट करते हुए आपने कहा कि वायसराय और मैं तो कई सालो स इसके लिये प्रयत्न ही कर रहे थे कि कांग्रेस असहयोग के ऊजड़ क्षेत्र स किसी प्रकार वापस कौंसिलों में आकर जिम्मेदारी के साथ सार्वजनिक कार्य करने लगे। कांग्रेस की कान्स्टिट्युएन्ट असेम्बली की मांग बिलकुल अव्यावहारिक है। मैं जानता हूं कि कांग्रेस ने इस स्कीम के विरुद्ध प्रस्ताव पास किया है परन्तु मुझे आशा है कि बाद में वह पुनः विचार करेगी।

पन्ने पन्ने में अविश्वास

मेजर एटली (लेबर) ने रिपोर्ट का विरोध करते हुए कहा कि—

(शेष पृष्ठ २५ पर)

महिला-जगत

क्या तलाक हिन्दू-संस्कारों के विरुद्ध है ?

(ले०—श्री जगेश्वरनाथ वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०)

कहा जाता है कि तलाक को हिन्दू संस्कारों के विपरीत होने के कारण ही विवाह-पद्धति में स्थान नहीं दिया गया है। किन्तु जैसा कि आगे देखेंगे, वास्तव में ऐसा नहीं है। हम यह मान लेने को तैयार हैं कि जहां तक स्मृतियों का सम्बन्ध है, उनमें कुछ को छोड़कर अधिकांश स्मृतिकारों ने या तो तलाक को निकृष्ट बताकर इसका विरोध ही किया है या किसी विशेष कारण वश इस विषय में मौन भंग करने का साहस ही नहीं कर सके हैं।

जिन्होंने तलाक की अवहेला की है, उन्होंने भी केवल स्त्रियों ही को इस अधिकार से वंचित किया है — पुरुषों के विषय में वह भी कोई ऐसा स्पष्ट विधान नहीं कर गये हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि शास्त्रानुसार कोई भी व्यक्ति एक ही समय में एक से अधिक कितनी ही स्त्रियों का स्वामी बन सकता है। अतएव वह दूसरी स्त्री को पत्नी-रूप में ग्रहण करने से पूर्व पहली स्त्री का परित्याग करने के लिये बाध्य नहीं है। फिर तलाक के प्रश्न पर माथा पच्ची करने की आवश्यकता ही क्या थी ?

पुरुषों को यथेच्छ कई २ स्त्रियों के स्वामी बन सकने की आज्ञा देकर तथा स्त्रियों के आत्म-रक्षा के अधिकार (तलाक) का अपहरण करके समाज ने अपनी न्याय-प्रियता का कैसा सुन्दर परिचय दिया है ? यह कहना अक्षम्य असत्य है कि मोक्ष हिन्दुओं में वैवाहिक संबन्ध के अटूट होने के कारण शास्त्रों के एक दम प्रतिकूल है। हमारे धर्म ग्रन्थों में ऐसी कितनी ही परिस्थितियों का उल्लेख है जिनकी उपस्थिति मे विवाह-सम्बन्ध धर्मव्यवस्था के विरुद्ध हो जाने के कारण अविच्छिन्न नहीं रह सकता।

औरों की बात तो जाने दीजिये, स्वयं मनु ने लिखा है :—

काममामरणात्तिष्ठेद्‌गृहे कन्यर्तुमत्यपि
नचैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित।
उन्मत्तं पतितं क्लीबमबीज पापरोगिणाम्
न त्यागोऽस्ति द्विषन्त्याश्च न च
दायापवर्तनम्।

यह निश्चित है कि कानून द्वारा केवल उसी रीति या प्रथा का निषेध किया जाता है जो किसी समय या स्थान की विशेष स्थिति में बुरी असंगत और त्याज्य समझी जाय। इस लिये हम कह सकते हैं कि शास्त्रकारों ने तलाक का प्रतिषेध करके ज्यादा से ज्यादा यह सिद्ध कर दिया है कि उनके समय में यह प्रथा किसी न किसी रूप में भारत में विद्यमान थी और स्मृतिकार इसका अस्तित्व मिटा देने के लिये यथा-साध्य युद्ध करने में तल्लीन थे। नीच कही जाने वाली जातियों में तो तलाक की परिपाटी परम्परा से चली आती थी, इस से भी उक्त कथन की पुष्टि होती है।

अपने समय की सर्वस्वीकृत प्रथाओं का प्रतिपालन करना और कुप्रथाओं का खण्डन करना ही स्मृतिकारों का मुख्य कार्य था। इस से तो केवल यही पता चलता है कि जहां तक मोक्ष का सम्बन्ध है, एक निर्दिष्ट समय में विद्वानों ने इसका विरोध करना आरम्भ कर दिया था। और विरोधियों की संख्या दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ने लगी थी। इसी बहुमत की छाया स्मृति-साहित्य में भी मिलती है। फिर भी इस में सन्देह नहीं कि प्राचीन काल में तलाक की प्रथा कभी न कभी अवश्य आम थी। और समय के हेर फेर के साथ साथ इस विषय में लोगों का यह मत भी परिवर्तित होता गया और यह प्रथा धीरे धीरे निन्दनीय होती गई। किंतु फिर भी थोड़े बहुत नीचे दर्जे के लोग इसका अनुसरण करते रहे और धर्म-शास्त्रों को अपने व्यावहारिक जीवन में हस्तक्षेप करने की आज्ञा न दे सके।

यह कहना ठीक नहीं है कि तलाक हिन्दू-संस्कृति के विपरीत और विवाह के उद्देश्य के प्रतिकूल है। अभी भी ऐसे शास्त्र-लिखित प्रमाणों का एक दम ह्रास नहीं हुआ है, जिससे यह प्रथा सनातन सिद्ध होती है। कौटिल्य प्राचीन स्मृतिकारों में विशेष स्थान रखता है, मनुस्मृति की रचना से बहुत पहले कौटिल्य-कृत अर्थशास्त्र उपलब्ध था। यहां यह एक बात विशेषरूप से दर्शनीय है कि वर्तमान मनुस्मृति का एक अङ्ग तो कौटिल्य ही के विचारों की छाया मात्र प्रतीत होता है। किन्तु दूसरे अङ्गों में मनु और कौटिल्य में भारी मत भेद दिखाई देता है। केन का विचार है कि प्रस्तुत मनुस्मृति का एक अङ्ग तो सम्भव है कौटिल्य ही के समय का या उससे भी पुराना हो। पर दूसरे अङ्ग निःसन्देह उससे बाद के हैं। इससे अनुमान किया जाता है कि मनुस्मृति के हम तक पहुंचने में उसका वास्तविक रूप बहुत कुछ भ्रष्ट हो चुका है।

कौटिल्य-कृत स्मृति की रचना का समय निर्धारित करते हुए केन ने लिखा है कि ईसा से ३०० वर्ष पूर्व और २०० वर्ष बाद के युग में किसी समय उसकी रचना हुई है। इस प्राचीन ग्रन्थ में मोक्ष (तलाक) का जिन शब्दों में समर्थन किया गया है वह इस प्रकार है :—

"नीचत्वं परदेशं वा प्रस्थितो
राज किल्बिषी।
प्राणाभिहन्ता पतितस्त्याज्यः
क्लीबोऽपि वा पतिः"।

आगे चलकर कौटिल्य फिर कहता है :—

अमोक्ष्या भर्तुरकामस्य द्विषती भार्या
भार्यायाश्च भर्ता।
परस्पर द्वेषान्मोक्षः। अमोक्षो धर्म
विवाहानामिति॥

पहले श्लोक में कौटिल्य स्त्रियों को अपरिमित अधिकार दे गया है कि वे अपने पति से सम्बन्ध विच्छेद कर सकती हैं, यदि उनका स्वामी दुराचारी हो, विदेश वासी हो राजद्रोही हो, नपुन्सक हो, उनकी हत्या कर डालने की धमकी देता हो, या जाति च्युत हो

यदि विवाह संस्कार का अभिप्राय सतानोत्पत्ति ही मान लिया जाय तो ऊपर गिनाई गई परिस्थितियों में इस आशय की पूर्ति की कोई आशा नहीं हो सकती। अतएव स्त्री-पुरुष दोनों उस समय तक गृहस्थ धर्म का उचित पालन करने में असमर्थ रहेंगे, जब तक कि वे बन्धन मुक्त न हो जायं।

कौटिल्य की दृष्टि मे विवाह संसारिक जीवन के सुख का मूल कारण भी है :—

अमोक्ष्या भर्तुरकामस्य द्विषती भार्या,
भार्यायाश्च भर्ता परस्पर द्वेषान्मोक्षः

अत अगर सतानोत्पत्ति के पुण्य कार्य की पूर्ति मे कोई बाधा न हो तो तलाक इन की उस समय तक आज्ञा नहीं दी जा सकती जब तक स्त्री-पुरुष दोनो एक दूसरे से घृणा न करते हो। दाम्पत्य जीवन पारस्परिक प्रेम के अभाव के कारण भार हो जाता है। घर में हर घड़ी कलह रहने से पति-पत्नी के साथ २ सतान का चरित्र भी दूषित हो जाता है और उनकी उन्नति के मार्ग बन्द हो जाते हैं, जिससे केवल समाज, सम्प्रदाय, या देश ही की हानि नहीं होती वरन् मनुष्य मात्र को क्षति पहुंचती है।

कौटिल्य के मतानुसार अगर स्त्री पुरुष दोनो में से कोई एक दूसरे से घृणा करे तो तलाक की आज्ञा नहीं दी जानी चाहिये। यहां यह बता देना अनुचित न होगा कि हिंदू शास्त्रकार ने जहां तक तलाक का सम्बन्ध है पुरुषों को 'शरय मोहम्मदी' की तरह एक दम स्वच्छाचारी तथा स्वच्छन्द नहीं बना दिया है जिस से वे जब चाहे स्त्रियों का परित्याग कर सकें। वरन तलाक के अधिकार को सीमाबद्ध कर के भारी अनर्थ की सम्भावना का सदा के लिये गला घोट दिया है।

तलाक की उपेक्षा करने वालों का कथन है कि कौटिल्य का भी यही मत है कि जिस वैवाहिक-सम्बन्ध पर धर्मशास्त्र की छाप लगी हो वह हर हालत में अविच्छिन्न है और स्त्री या पुरुष कोई इसको भंग नहीं कर सकता। ऐसा कहने के लिये वह प्रायः कौटिल्य के इन शब्दों का आश्रय लेते हैं :—

"अमोक्षो धर्म विवाहानाम्।"

पर यह युक्ति उस समय एक दम सार-हीन मालूम होती है, जब कौटिल्य को कुछ स्थितियों में तलाक का समर्थन करते देखते हैं। क्योंकि यदि विपक्षियों का यह तर्क ठीक मान लिया जाय तो इसका यह मतलब होगा कि उस युग मे दो प्रकार के विवाह-संस्कार होते थे। एक तो वे जिनकी पूर्ति विधिविधान-पूर्वक हुई हो, और दूसरे वह जो नियम-धर्म से विमुख होकर पूर्ण हुए हो। पर दूसरे प्रकार के विवाहों का प्रचलित होना तो स्वयं विरोधियों को भी स्वीकार न होगा और न ही ऐसे विवाह-सम्बन्ध से मोक्ष प्राप्त करने के लिये स्मृतिकारों ने अपना समय नष्ट किया होगा। प्रत्यक्ष है कि जो लोग विवाह करने के लिये धर्मोल्लंघन करने का साहस कर सकते हैं वे

तलाक के लिये धर्मपरायण बन कर शास्त्रों की शरण लेने की मूर्खता क्यों करेंगे? अत कौटिल्य के इन शब्दों का यही अर्थ हो सकता है कि जिन स्थितियों का ऊपर वर्णन किया जा है उनके अतिरिक्त वैवाहिक सम्बन्ध हर प्रकार से अखण्डित है।

दूसरा धर्म-ग्रन्थ जो इस विषय पर प्रकाश डालता है पाराशर स्मृति है। इस कृति का मूल कारण कलियुग के आचार विचारों का निर्दिष्ट करना है। प्रस्तुत स्मृति केन के मतानुसार ईसा के १०० वर्ष से ५०० वर्ष बाद तक के युग में लिखी गई है। याज्ञवल्क्य ने (जो ईसा के २०० से ३०० वर्ष पश्चात के युग में हुए हैं) अपनी कृतियों में पाराशर स्मृति का उल्लेख किया है इससे सिद्ध है कि मूल ग्रंथ बहुत पुरानी कृति है।

पाराशर स्मृति विधवा-विवाह और तलाक का इन शब्दों में समर्थन करता है —

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ।

पञ्चस्वापत्सु नारीणाम् पतिरन्यो विधीयते॥

नारद स्मृति का भी यही विधान है कि यदि पुरुष क्लीब हो तो स्त्री मोक्ष प्राप्त करने की अधिकारिणी है —

त्रीनृतून समतिक्रम्य कन्यान्यं वरयेत वरम्।

(नारद)

अर्थात कन्या ३ महीने तक प्रतीक्षा करे तदुपरान्त अपना दूसरा विवाह कर ले।

गौतम भी उक्त वर्णित स्मृतिकारों से पूर्णतया सहमत हैं। अत यह निर्विवाद है कि प्राचीन भारत में तलाक प्रथा धर्मानुकूल थी, पर जब इसका विरोध किया जाने लगा तो विपक्ष की पुष्टि के लिये स्मृतियों में से इन "सम्बन्ध" अंशों को निकाल डाला गया इसका प्रमाण मनु के इन शब्दों में मिलता है —

'प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौ नरः समाः।

विद्यार्थं षड् यशोऽर्थं वा कामार्थं त्रींस्तु वत्सरान्।

गौतम और दूसरे स्मृतिकारों ने भी लिखा है कि वह नारी जिसका स्वामी किसी धर्म-कार्य के सम्पन्न करने के लिये विदेश चला गया हो,

यहाँ कन्या शब्द का प्रयोग भ्रमोत्पादक है। सम्भव है इस श्लोक में भी बाद में कुछ काट-छाट की गई हो। —लेखक

८ वर्ष तक उसकी राह देखे और अथवा जिसका पति विद्योपार्जन के निमित्त विदेश गया हो ६ वर्ष तक प्रतीक्षा करे, और वह स्त्री जिसका भर्ता यश अर्जन इत्यादि के लिये देश छोड़ गया हो वह ३ वर्ष तक उसके लौटने की कामना करे।

बड़े आश्चर्य की बात है कि मनु और उसके अनुयायी सभी इसके आगे बिलकुल मौन हैं और इस विषय में एक शब्द भी मुंह से नहीं निकालते हैं कि यथाविधि नियत समय का अन्त हो जाने के बाद भी यदि किसी का पति न लौटे तो उस अबला को क्या करना चाहिये? एक दूसरे श्लोक में मनु ने पुरुषों के लिये भी ऐसा ही समय नियत किया है और उन्हें आदेश दिया है कि समयान्त पर वह दूसरा ब्याह कर ले। इन दोनों श्लोकों के अवलोकन से पता चलता है कि स्त्रियों को भी यही अधिकार दिया गया था पर बाद में विपक्ष ने प्रस्तुत स्मृतियों में से यह अंश निकाल निकाल दिया है। जिससे उक्त श्लोक अधूरा और सार-हीन रह गया है।

समझ में नहीं आता कि प्रतीक्षा के समय के अनन्तर यदि स्त्री मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकती तो फिर प्रतीक्षा करने का क्या आशय था? इसके अतिरिक्त मनु के मोक्ष के पक्ष में होने का एक और प्रमाण यह है कि अगर किसी स्त्री का ऐसे पुरुष से पल्ला बांध दिया जाय जो क्लीव उन्मादी या कुष्ठ तथा अन्य किसी असाध्य रोग से पीड़ित हो और वह उसे छोड़ कर दूसरा सम्बन्ध करे तो मनु के मतानुसार अक्षम्य नहीं है।

केन के मतानुसार मनुस्मृति ईसा की मृत्यु से २०० वर्ष पहले और २०० वर्ष बाद के युग में पुनः लिखी गई है। ठीक यही बात अन्य ग्रंथों पर भी लागू है। एक ऐतिहासिक उदाहरण से हमारे इस कथन की और भी पुष्टि हो जाती है। यह घटना इस प्रकार है कि बंगाल के नन्द नाम के एक ब्राह्मण ने केवल अपने पक्ष के समर्थन के लिये दत्तक चन्द्रिका नामी एक जाली पुस्तक की रचना करके उसे प्राचीन ग्रंथ बताते हुए प्रमाण स्वरूप पेश किया था। ऐसी और भी कितनी ही बातें हैं जिनसे उस समय के भ्रष्ट ब्राह्मणों की करतूतों का भण्डाफोड़ होता है और पता चलता है कि नन्द की तरह अन्य लोग भी इसी प्रकार अपनी नीचता का ढिंढोरा पीटते रहे हैं।

कम से कम यह मान लेने में तो कोई आपत्ति नहीं है कि समयानुकूल हमारी रीतियों में सदा से परिवर्तन होता रहा है। रामनद के प्रसिद्ध अभियोग में प्रिवी-कौंसिल ने भी इसे स्वीकार कर लिया है। और यह तो हम पहले ही कह आये हैं कि एक समय तलाक की प्रथा को निन्दनीय समझ कर धर्म-ग्रंथों में से निकाला जा चुका है फिर भी इसका मतलब यह नहीं है कि एक अच्छी बात जो कभी किसी विशेष कारण-वश बुरी समझी जाने लगी थी। यदि सब वही हमारे लिये हितकर हों तो हम उसे केवल इसी लिये अस्वीकार करदें कि वह कभी त्याज्य समझ ली गई थी। रोगी को पथ्य न देने से त्याज्य या सदा के लिये बुरा नहीं हो जाता। इसके अतिरिक्त यदि हमें शास्त्रों में पहले कभी घर न बसाने का अधिकार था तो अब भी उस अधिकार का सदुपयोग किया जा सकता है।

सिगरेट शराब नहीं पियेंगी

पांच हजार युवतियों की प्रतिज्ञा

ब्रिसबन के रोमन कैथोलिक आर्कबिशप शराबखोरी और धूम्रपान के विरुद्ध जबरदस्त आंदोलन कर रहे हैं। इनका यह आंदोलन मुख्यतया युवतियों के चरित्र एवं स्वास्थ्य-सुधार के लिये है। उपासना के समय वह प्रत्येक युवती से शपथ कराते हैं कि २५ वर्ष की उम्र तक शराब न पियेंगी। उनका कहना है कि अब तक पांच हजार युवतियाँ ऐसी प्रतिज्ञा कर चुकी हैं। भारतवर्ष के छात्र और युवकों में सिगरेट का प्रचार बढ़ रहा है। क्या वे इससे शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते?

रूसी स्त्रियां पहले से बहुत सुखी हैं

एक प्रोफेसर का आंखों देखा वर्णन

'रूस वाले समाज को नया रूप देने के लिये आजकल बड़ा भारी परीक्षण कर रहे हैं।' यह कहते हुए दिल्ली-मिशन कालेज के प्रो० स्पीयर ने लाहौर में अपना आंखों देखा वर्णन सुनाया और रूसी स्त्रियों के बारे में कहा है —

रूसी स्त्री की दशा में जितना परिवर्तन हुआ है, उतना परिवर्तन किसी और की दशा में नहीं हुआ। कम्यूनिस्टों ने यह चेष्टा की है कि स्त्रियों को अपने भरण पोषण के लिये आदमी का मुंह ताकना न पड़े। रसोई धातु और पति की दासता के झंझट को भी कम करने की चेष्टा की गई है। सरकार ने अपनी ओर से रसोई घर खोले हैं जहां स्त्री पुरुष आकर भोजन कर जाते हैं। हरेक कारखानों में बच्चों को खिलाने और प्रसूति का प्रबन्ध है। उन्हें हर काम में मर्दों की बराबर समझा जाता है।

रूस में विवाह ठेका नहीं समझा जाता। भावी दम्पती को एक घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर कर देने होते हैं।

आज कल रूसी स्त्रियां पहले की अपेक्षा बहुत प्रसन्न और सुखी हैं।

—

अप्रत्यक्ष निर्वाचन-विधि

(ले० श्री दत्तात्रय बी० वाव्ले एम० ए० एल० एल० बी० अजमेर)

ज्वायन्ट पार्लमेंटरी कमेटी की रिपोर्ट के सम्बन्ध में भारतीय लोकमत क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर उपरोक्त रिपोर्ट के प्रति देश-व्यापी विरोध, निराशा तथा घृणा की भावनाओं ने स्पष्ट दे दिया है। पहले व्हाइट पेपर के संरक्षणों, गवर्नर तथा गवरनर जनरल के विशेष उत्तरदायित्व (Special Responsibilities) तथा विशेष अधिकार (Special powers) और सेना तथा वैदेशिक-विभाग आदि पर गवर्नर जनरल के एकाधिकार की योजनाओं ने भारतीयों के पास कुछ रहने ही नहीं दिया था और अब इस कमेटी ने रही सही कमी को भी पूरा कर दिया है। किन्तु यह सब जिस चतुरता व चालाकी से किया गया है, उसका ज्वलन्त उदाहरण सिलेक्ट कमेटी की उस योजना में ही मिल सकता है, जिसके अनुसार केन्द्र की मुख्य प्रतिनिधि सभा असेम्बली के भारतीय प्रतिनिधियों के निर्वाचन की पुरानी प्रथा की बजाय एक नवीन प्रथा के उपयोग की सिफारिश की गई है।

इस नवीन निर्वाचन विधि का नाम है 'इन्डायरक्ट मेथड आफ इलेक्शन'। अन्य उपयुक्त पर्यायवाची के अभाव से हम इस विधि को हिन्दी में 'अप्रत्यक्ष' निर्वाचन विधि कहें तो अनुपयुक्त न होगा। भिन्न २ निर्वाचन विधियों के गुण दोष तथा परिणामों के विषयों से जो लोग अनभिज्ञ हैं, उन्हें इस परिवर्तन में विशेष दोष अनुभव न होगा। विचार पूर्वक देखने से अनुभव होगा कि यह निर्दोष दीखने वाला परिवर्तन 'विष-कुम्भ पयोमुख' से कम घातक नहीं है।

चुनाव की पुरानी व नवीन विधि

अभी तक भारतीय धारा सभा के सदस्यों को चुनने की जो विधि प्रचलित है उससे लगभग सब लोग परिचित हैं। इस प्रथा को 'डायरक्ट मेथड आफ इलेक्शन' (Direct Method of Election) कहते हैं क्योंकि इसके अनुसार प्रत्येक मतदाता जिस उम्मेदवार को चुनना चाहता है उसके लिये स्वयं अपने हाथ से 'वोट' दे सकता है। 'व्हाइट-पेपर' ने भी इसी पुरानी प्रथा का समर्थन किया है, किन्तु ज्वायन्ट सिलेक्ट कमेटी ने जिस विधान की योजना की है उसके अनुसार वोटर 'हाउस आफ असेम्बली' के सदस्यों को स्वयं न चुन सकेगा। निर्वाचकों के इस कार्य को उनके प्रांत की कौंसिलें करेंगी। असेम्बली में जाने वाले जनता के प्रतिनिधियों को जनता स्वयं न चुन सकेगी।

जहाँ प्रांतीय कौंसिलें न होंगी जैसे देहली, अजमेर तथा बिलोचिस्तान, वहाँ असेम्बली के मेम्बर को या तो सरकार नामजद करेगी या जनता द्वारा निर्वाचित एक अस्थायी निर्वाचक-सभा (Electoral College) उसे चुनेगी। मेम्बर का चुनाव होते ही यह निर्वाचक सभा भी बर्खास्त हो जायगी। उदाहरणार्थ देहली व अजमेर के वोटरों को प्रथम कुछ लोगों को उस निर्वाचक सभा के लिये चुनना पड़ेगा और तब निर्वाचक सभा के ये सदस्य चाहे जिसे जनता की प्रतिनिधि बना कर भेज देंगे।

परिवर्तन के कारण

अब प्रश्न यह है कि जिस प्रचलित निर्वाचन विधि को कायम रखने की 'व्हाइट पेपर' ने सिफारिश की, भारत के प्रत्येक राजनीतिज्ञ ने तथा गोलमेज कानफरन्स के हर एक सदस्य ने जिसका जोरदार शब्दों में एक स्वर से समर्थन किया, जो प्रथा संसार की समस्त मुख्य प्रतिनिधि सभाओं के लिये प्रचलित है और विशेष कर संघ-शासन व्यवस्था (Federal Constitution) में जो प्रथा अनिवार्य समझी जाती है तथा जिस प्रथा को गत बारह वर्षों से कार्यान्वित कर भारतवासियों ने सफल बनाया है, आज उसे ज्वायन्ट कमेटी क्यों बदलना चाहती है ? और विशेष कर उस अवस्था में जब कि भारतवर्ष में भी संघ-शासन की स्थापना (Federation) का कमेटी स्वयं समर्थन करती है।

ज्वायन्ट कमेटी ने उपरोक्त सारे प्रश्नों पर विचार किया और उनकी यथार्थता को भी अस्वीकार नहीं किया। किन्तु यह सब होने पर भी कमेटी ने अप्रत्यक्ष निर्वाचन को ही प्रचलित करने का निश्चय किया और इसका कारण वही प्रसिद्ध व अन्तिम है कि जो अन्य सब युक्तियों के असफल होने पर अंग्रेज भारत के लिये उपयोग में लाते हैं। अर्थात भारतवर्ष की परिस्थिति इतनी विचित्र तथा भिन्न है कि जो सिद्धान्त सर्वमान्य हैं उन्हें भी हम भारतवासियों के लिये उपयुक्त नहीं समझते। उनका कथन है कि भारत इतना विशाल देश है कि संघ-शासन व प्रजातन्त्र का प्रयोग इससे पूर्व कभी इतने बड़े परिमाण पर नहीं किया गया। अतः व्हाइट-पेपर के अनुसार जब ३७५ सदस्यों का एक विशाल धारा सभा का आयोजन किया जा रहा है और भारतवासियों को पूर्ण उत्तरदायित्व देने के लिये १४ प्रतिशत लोगों को मत देने का अधिकार दिया जा रहा है, तब वर्तमान प्रचलित निर्वाचन विधि को कायम रखने का परिणाम यह होगा कि भारतवर्ष को हम जो प्रतिनिधि-शासन व्यवस्था दे रहे हैं उसका महत्व सर्वथा नष्ट हो जायगा क्योंकि प्रतिनिधि शासन की वास्तविकता के लिये यह आवश्यक है कि निर्वाचित प्रतिनिधि सदा अपने निर्वाचकों के सम्पर्क में रहें तथा उसके निर्वाचक सदा अपने प्रतिनिधियों के कार्यों पर नजर रख सकें। परन्तु प्रचलित प्रत्यक्ष निर्वाचन विधि के रहते यह सर्वथा असम्भव है और इसका कारण है भारत की विचित्र परिस्थिति। भारत में अभी रेल, तार, डाक आदि एक दूसरे को सम्पर्क में लाने वाले साधनों की बड़ी कमी भी है। दूसरे यहाँ इतनी भिन्न-भिन्न भाषायें हैं कि प्रतिनिधि और उसके निर्वाचकों में वास्तविक सम्बन्ध स्थापित होना कठिन है। सब से बड़ी कठिनता तो यह है कि अधिकांश निर्वाचक सर्वथा अशिक्षित हैं। इन बाधाओं के अतिरिक्त ज्वायन्ट सिलेक्ट कमेटी के सदस्यों को सब से अधिक चिन्ता इस बात की थी कि भावी फेडरल असेम्बली का उम्मीदवार किस प्रकार इतने बड़े २ निर्वाचन क्षेत्रों के वोटरों तक अपने विचार पहुंचा सकेगा। भावी शासन-व्यवस्था के एक-एक निर्वाचन क्षेत्र में लगभग दो-दो लाख मतदाता होंगे। अतः यदि प्रचलित निर्वाचन विधि का ही उपयोग किया गया तो किसी प्रकार का भी उत्तरदायित्व-पूर्ण प्रतिनिधित्व असम्भव हो जावेगा, क्योंकि बहुसंख्यक निर्वाचकों के प्रति न तो उनका प्रतिनिधि अपना कोई उत्तरदायित्व अनुभव करेगा और न ही निर्वाचक उसे अपने विचारों का यथार्थ प्रतिनिधित्व करने पर विवश कर सकेंगे।

अतः कमेटी इस परिणाम पर पहुंची कि यदि उपरोक्त सारी कठिनताओं को दूर करने का कोई उपाय है तो वह है अप्रत्यक्ष निर्वाचन विधि। इस विधि के प्रयोग से विशेष निर्वाचन क्षेत्रों तथा बहुसंख्यक निर्वाचकों के कारण जो बाधाएं उत्पन्न होंगी वे दूर की जा सकेंगी क्योंकि अप्रत्यक्ष निर्वाचन में इन निर्वाचकों को यह अधिकार ही न रहेगा कि वे केन्द्रीय धारा सभा के लिये किसी को अपना प्रतिनिधि चुन सकें। उनके इस कार्य को प्रांत की कौंसिल करेगी।

न रहेगा बांस न बजेगी बांसरी

ज्वायन्ट कमेटी का यह उपाय ठीक वैसा ही है जैसा कि किसी रोग को दूर करने के लिये रोगी का ही अन्त कर दिया जावे। कुछ कठिनाइयों तथा दोषों को दूर करने के लिये जनता से उनका महत्वपूर्ण अधिकार ही छीन लिया गया, जिससे न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।

ज्वायन्ट कमेटी की लचर दलीलें

इस नवीन निर्वाचन विधि की हानियों पर विचार करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि ज्वायन्ट कमेटी ने जिन कारणों की आड़ में यह बल बोई है, वे कहाँ तक युक्तिसंगत तथा यथार्थ हैं। भारत की विचित्र तथा विभिन्न परिस्थिति का तर्क एक ऐसा दुधारा हथियार है कि जिसका अपनी सुविधानुसार अंग्रेज राजनीतिज्ञ चाहे जिस प्रकार उपयोग कर सकते हैं। उसका एक मात्र उद्देश्य किसी प्रकार अपनी नीति का समर्थन करना मात्र होता है।

भारत जैसे विशाल देश में कभी संघ शासन (Federation) की स्थापना इससे पूर्व नहीं हुई यह कहकर सब में अनिवार्य समझी जाने वाली प्रत्यक्ष निर्वाचन विधि का विरोध करते समय सम्भवतः ज्वायन्ट कमेटी यह भूल गई कि संघ-शासनों में आदर्श समझा जाने वाला 'अमरिका' वर्गक्षेत्र में भारत से ठीक दूना है और भारत के भावी निर्वाचकों की संख्या की दृष्टि से लगभग तिगुना है। 'व्हाइटपेपर' के अनुसार मताधिकार दे जाने पर भी हमारी जनसंख्या का केवल १४ प्रतिशत भाग निर्वाचक हो सकेगा बाकी ८६ प्रतिशत भारतवासी मताधिकार से हीन से सर्वथा मूक रहेंगे। अतः भावी शासन की कठिनताएं बताने

के लिये भारत की ३५ करोड़ जनसंख्या का उदाहरण देना सर्वथा असंगत और अनुपयुक्त है। अतः यह स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष निर्वाचन के महत्वपूर्ण अधिकार से वंचित करने के लिये भारत की विशाल जनसंख्या का हौवा दिखाना केवल एक बहाना मात्र है।

विपरीत इसके इतिहास में आप को एक भी ऐसा उदाहरण न मिलेगा कि जब भारत जैसे 'महाद्वीप' में कभी वर्तमान अंग्रेजी शासन के समान 'केन्द्रीय शासन (Unitary Government) की स्थापना की गई हो। आधुनिक शासनविशेषज्ञ तो एक मत से यह स्वीकार करते हैं कि बड़े-बड़े देशों के लिये 'केन्द्रीय शासन सर्वथा अनुपयुक्त है। संघ शासन का तो आविष्कार ही बड़े देशों में केन्द्रीय शासन की अनुपयोगिता व हानियों के कारण हुआ है। विशाल देशों में प्रान्तीय-स्वाधीनता (Provincial Autonomy) और केन्द्रीय सत्ता तथा एकता (Central Authority and Unity) के आवश्यक किन्तु परस्पर विरोधी सिद्धान्तों का सुन्दर समन्वय करने के लिये संघ की स्थापना अनिवार्य समझी जाती है। आदर्श शासनव्यवस्था के लिये ये दोनों सिद्धान्त इतने आवश्यक हैं कि केन्द्रीय शासनों को भी अधिकार-विभाजन' (Devolution of Authority) की शरण लेकर संघ शासन के आदर्श को स्वीकार करना पड़ रहा है। अतः अप्रत्यक्ष निर्वाचन की योजना करके हमारे भावी संघ के स्वाभाविक विकास में भारत की विचित्र स्थिति को लाकर दलील देकर रोड़ा अटकाना सर्वथा निंदनीय है, क्योंकि प्रत्यक्ष विधि द्वारा निर्वाचित मुख्य प्रतिनिधि सभा (Lower Chamber) के बिना वास्तविक संघ (Federation) की स्थापना कठिन है।

इससे भी विचित्र कारण जो ज्वायन्ट कमेटी ने अपनी योजना के समर्थन में दिया है वह है उसकी 'भारतवासियों को वास्तविक प्रतिनिधि शासन देने की चिन्ता'। कमेटी का विचार है कि यदि हमारा निर्वाचन कायम रखा तो भारत को सच्चा स्वराज्य प्राप्त न हो सकेगा। हम वास्तविक 'स्वराज्य' देने का ब्रिटिश सरकार को हम से भी अधिक चिंता है यह कम आश्चर्य की बात नहीं है? इसमें सन्देह नहीं कि 'स्वराज्य' व प्रतिनिधि शासन की वास्तविकता के लिये यह आवश्यक है कि जनता के प्रतिनिधि सदा जनता के समर्थन से रहें तथा लोकमत को शिक्षित करें। इसी प्रकार जनता को भी अपने प्रतिनिधियों को अपनी इच्छा तथा आवश्यकता के अनुकूल चलाने तथा उनके प्रत्येक कार्य पर नजर रख कर जनता के प्रति अपने उत्तरदायित्व का अनुभव कराने की सुविधा तथा अवसर प्राप्त होना चाहिये। परन्तु इसका उपाय यह नहीं था कि प्रत्यक्ष के स्थान में अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रचलित किया जाय। संयुक्त कमेटी राय में विशाल निर्वाचन क्षेत्रों तथा उनमें बहुसंख्यक निर्वाचक होने के कारण यदि प्रचलित निर्वाचन विधि का ही उपयोग किया गया तो उपरोक्त प्रतिनिधित्व का आदर्श असम्भव होगा किन्तु कमेटी की यह युक्ति सर्वथा निर्मूल है। प्रथम तो यह विचार ही भ्रमपूर्ण है कि भावी शासन में निर्वाचनक्षेत्र बड़े होंगे क्योंकि इन क्षेत्रों का परिमाण फेडरल असेम्बली के सदस्यों की संख्या के विपरीत अनुपात पर निर्भर है, भावी असेम्बली में ब्रिटिश भारत के निर्वाचित सदस्यों की संख्या २५० होगी अतः समस्त ब्रिटिश भारत लगभग २५० निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजित किया जायगा और परिणामस्वरूप उस समय के निर्वाचनक्षेत्र वर्तमान क्षेत्रों से आकार में भी कम होंगे। क्योंकि आजकल असेम्बली में केवल १०४ निर्वाचित सदस्य हैं। इसमें सन्देह नहीं कि निर्वाचन क्षेत्र छोटे होने पर भी निर्वाचकों की संख्या अब से कहीं अधिक होगी क्योंकि जिस अनुपात में क्षेत्र छोटे होंगे उससे कहीं अधिक अनुपात में निर्वाचक बढ़ेंगे परन्तु इसका उपाय अप्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा उनके अधिकार छीनना नहीं था। असेम्बली के सदस्यों की संख्या और अधिक बढ़ाकर निर्वाचन क्षेत्रों का परिमाण निर्वाचकों की संख्या की वृद्धि के अनुपात में और अधिक घटाया जा सकता था और इस प्रकार निर्वाचकों की संख्या का प्रश्न हल हो जाता। अमरिका की जनसंख्या यद्यपि भारत की जनसंख्या का तीसरा हिस्सा भी नहीं है किन्तु फिर भी वहाँ की मुख्य प्रतिनिधि सभा हाउस आफ रिप्रेजेन्टेटिवज के सदस्यों की संख्या ५०० है। अतः भारत जैसे उन्नत देश का केवल ३५० सदस्यों की प्रतिनिधिसभा में आसानी से वृद्धि की जा सकती थी, जिससे उपर्युक्त निर्वाचन-क्षेत्रों तथा निर्वाचकों की दोनों समस्यायें सरलता से हल हो जातीं व जनता को उसके स्वनिर्णय के अधिकार से वंचित करने की भी आवश्यकता न होती। किन्तु ज्वायन्ट कमेटी इस उपाय का अवलम्बन कैसे करती? उसका उद्देश्य तो वस्तुतः न्याय के अनुसार 'व्हाइट पेपर' द्वारा दिये गये यत्किंचित अधिकारों को भी छीनना था न कि उनमें और वृद्धि करना।

दूसरे यदि हम यह मान भी लें कि भावी निर्वाचन-क्षेत्र बड़े होंगे तथा उनमें निर्वाचकों की संख्या के कारण अनेक कठिनतायें उत्पन्न होंगी तब भी यह समझना कठिन है कि अप्रत्यक्ष निर्वाचन' द्वारा उन कठिनताओं का किस प्रकार निराकरण होगा। मेरे विचार में तो निर्वाचन विधि के प्रश्न से इस विषय का कोई विशेष सम्बन्ध ही नहीं है। जब तक निर्वाचकों की संख्या कम न हो तब तक किसी भी विधि से निर्वाचन हो, ये कठिनायें—यदि वास्तविक हैं तो—अवश्य उत्पन्न होंगी और अप्रत्यक्ष निर्वाचन में तो जहाँ प्रान्तीय कौंसिलें नहीं हैं और भी अधिक होंगी, क्योंकि वहाँ निर्वाचकों को असेम्बली के एक प्रतिनिधि के स्थान में निर्वाचक-सभा के लिये अनेक प्रतिनिधि चुनने पड़ेंगे। अतः स्पष्ट यह न कह कर कि भारतीयों को और मताधिकार न देने चाहियें उन्होंने अप्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा उस मताधिकार को ही निस्सार कर दिया।

जिस निर्वाचक और निर्वाचित के आवश्यक सम्पर्क की आड़ लेकर अप्रत्यक्ष निर्वाचन का समर्थन किया गया, वह सम्पर्क तो इस अप्रत्यक्ष विधि के कारण नष्ट हो जायगा। जनता के हाथ में अपने प्रतिनिधि को चुनने का अधिकार जाने से ही, निर्वाचित सदस्य जनता के प्रति अपना कोई उत्तरदायित्व अनुभव न करेगा और न जनता के विचारों तथा हितों की उसे चिन्ता होगी। ऐसी स्थिति में उसे प्रतिनिधि कहना व्यर्थ है। उम्मेदवार का एकमात्र उद्देश्य निर्वाचक सभा के मुट्ठी भर सदस्यों को प्रसन्न करना मात्र होगा, क्योंकि वे ही उसके भाग्य-विधाता होंगे। किन्तु उसके प्रति भी उम्मेदवार का उत्तरदायित्व चुनाव होते ही समाप्त हो जायगा, क्योंकि तब इस अस्थायी निर्वाचक सभा का अस्तित्व मिट जायगा। अतः अप्रत्यक्ष निर्वाचन का एकमात्र परिणाम यह होगा कि हमारा प्रतिनिधि सिवाय अपने अन्य किसी के प्रति अपने को उत्तरदाता न समझेगा।

अप्रत्यक्ष निर्वाचन का समर्थन करने के लिये संयुक्त कमेटी ने जो एक और युक्ति दी है वह है भारतवर्ष में अनेक भाषाओं का होना। भाषा विभिन्नता के कारण प्रतिनिधि तथा उनके निर्वाचकों में इच्छित सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सकता। कमेटी के इन 'सर्वज्ञ' सदस्यों को हमारी भाषा विभिन्नता की कैसी विचित्र कल्पना है? सम्भवतः वे समझते हैं कि भारत में प्रत्येक मनुष्य अपनी अलग बोली बोलता है अन्यथा एक ही निर्वाचन-क्षेत्र के प्रतिनिधि तथा निर्वाचकों के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न भाषाओं की कल्पना करना कठिन है।

अन्त में रेल, तार, डाक तथा शिक्षा की कमी के प्रश्न को लेकर ज्वायन्ट कमेटी ने प्रत्यक्ष निर्वाचन विधि की कठिनाइयों को दर्शाने का यत्न किया है किन्तु यह युक्ति भी उतनी ही असंगत है कि जितनी अन्य। अन्य अनेक सभ्य देशों में भी इन साधनों की कमी है। किन्तु वहाँ प्रत्यक्ष निर्वाचन में कोई कठिनता नहीं होती। ज्वायन्ट कमेटी के अनुभवी तथा विज्ञ सदस्यों से यह छिपा नहीं था कि भारत में भी कांग्रेस जैसी सुसंगठित राजनीतिक पार्टी उपस्थित है। वर्तमान असेम्बली के चुनाव ने इस विषय में कांग्रेस की शक्ति तथा संगठन का जो परिचय दिया है वह ज्वायन्ट कमेटी इतनी शीघ्र भूल नहीं सकती।

अप्रत्यक्ष निर्वाचन के सम्बन्ध में ज्वायन्ट कमेटी ने जो उपरोक्त अनेक युक्तियाँ दी हैं उन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर प्रत्येक विचारशील मनुष्य इसी परिणाम पर पहुंचे बिना न रहेगा कि ज्वायन्ट कमेटी का एकमात्र उद्देश्य व्हाइट पेपर में दिये गये थोड़े बहुत अधिकारों को भी सर्वथा निष्फल तथा नष्ट करना मात्र है। कमेटी की युक्तियों का निर्णय यह तो निकल सकता था कि भारत की विशालता, विचित्रता, रेल, तार व शिक्षा की कमी वृहत निर्वाचन-क्षेत्रों तथा बहुसंख्यक निर्वाचकों के कारण उत्पन्न हुई अनेक बाधाओं तथा कठिनाइयों के कारण भारतवासियों को किसी प्रकार के अधिकार न देने चाहियें तथा जो दिये गये हैं वे भी वापिस लेने चाहियें। क्योंकि जैसा हमने ऊपर बताने का प्रयत्न किया ज्वायन्ट कमेटी की इन युक्तियों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष निर्वाचन से कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः इतने उत्तम तर्क तथा सुन्दर युक्तियों के पश्चात यह परिणाम न निकाल कर केवल अप्रत्यक्ष निर्वाचन की योजना करना अंगरेजों की कूट-

(शेष पृष्ठ १८ पर)

मुगलकालीन संस्कृति

हिन्दू मुस्लिम एकता का सुन्दर प्रयत्न

सर तेज बहादुर सप्रू का भाषण

गत ५ दिसम्बर को सर तेज बहादुर सप्रू ने पंजाब नेशनल लाइब्रेरी लाग में निम्न लिखित भाषण दिया —मैं इस स्थान पर राजनीतिक प्रश्नों पर विचार नहीं करना चाहता। जब कभी मुझे समय मिला है मैं बराबर भारतीय इतिहास का अध्ययन करता हूं और पिछले १२ महीनोंमें मैंने भारतीय इतिहास—खासकर गत ४०० वर्षों का इतिहास पढ़ता रहा हूं। इसके पढ़ने के पश्चात इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि अगर कोई भारत को समझना चाहता है तो से मुगलकालीन इतिहास को पढ़कर उसका तत्व समझना चाहिये। इसमे पाठकों को बहुत सी बात समझ में आ जायगी और उनकी सहानुभूति बढ़ जायगी। आज की कितनी ही समस्याओं को समझने लिये मुगलकालीन इतिहास पढ़ने की बड़ी भारी जरूरत है। कुछ अंश तक यह सत्य है कि आज भारत की जो अवस्था है वह विगत १८ वीं शताब्दी के परिणामस्वरूप है।

किन्तु यह सत्य है कि मुगल साम्राज्य के अन्तिम दो तीन सौ वर्ष भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण वर्ष थे और इनकी तुलना रोम के इतिहास की जा सकती है। मैं इसी परिणाम पर पहुंचा हूं कि अगर भारत पर मुगल शासन का कुछ प्रभाव पड़ेगा तो उस काल की राजनीतिक और शासन सम्बन्धी बातों का प्रभाव नहीं पड़ेगा बल्कि प्रभाव पड़ेगा उस बात का जिसे उन लोगों ने देश में एक संस्कृति की स्थापना के लिये किया।

कितने ही यूरोपियन आलोचक कहेंगे कि उनमें बड़ी विभिन्नता थी और एक वर्ग दूसरे से अलग था। मैं भी इसी बात को मानता हूं कि वे अलग अलग थे और एक ऐसे बिन्दु पर दोनों न पहुंच सके जहां दोनों मिल सकें। किन्तु जब वे संस्कृति पर विचार करेंगे तब क्या वे साहस-पूर्वक कह सकते हैं कि मुगल काल में केवल मुस्लिम अथवा केवल हिन्दु संस्कृति थी? उस समय उन्हें पता चलेगा कि दोनों सम्प्रदायों के सम्मिलित प्रयत्न के फलस्वरूप तत्कालीन संस्कृति का जन्म हुआ था। कुछ हिन्दुओं ने फारसी में बड़ी सुन्दर कवितायें लिखीं और कुछ मुसलमा-



सर तेजबहादुर सप्रू

नों ने हिन्दी में सुन्दर कवितायें लिखीं क्योंकि १५० वर्ष पहले जब वर्तमान शासन प्रणाली की स्थापना नहीं हुई थी तब दोनों ही सम्प्रदायों के विचारों के आदान प्रदान का माध्यम एक ही था। हमारा वर्ष बाद तक मुगल काल पर और भी अमिट छाप पड़ जायगी उस समय भी लोग इस बात के लिये उन लोगों की प्रशंसा करेंगे कि एक ही संस्कृति के विकास के लिये इन लोगों ने प्रयत्न किया था। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि पिछले चालीस पचास वर्षों में जो मनोवृत्ति पनपती आ रही है वह मेरे ख्याल में बहुत ही शोचनीय मस्तिष्क की उपज है।

तत्कालीन संस्कृति की एकता उन का पारस्परिक विभिन्नताएं न्यूनतम हो गयी थी और ऐसा उनकी सहिष्णुता के कारण हुआ था। मुझे तो संस्कृति की यह एकता आज विछिन्न हुई दिखायी पड़ती है। संस्कृति की यह एकता दोनों सम्प्रदायों में जितनी एकता स्थापित करती है उतनी कोई मिनिस्टर के किसी भी विधान से नहीं हो सकता। परन्तु आज इस संस्कृति पर खतरा आ गया है। दोनों सम्प्रदाय एक दूसरे से अलग होते जा रहे हैं। अगर हिन्दू यह सोचते हों कि एक दिन ऐसा आयगा कि भारत में मुसलमान नहीं रह जायंगे अथवा अगर मुसलमान एक ही विचार हिन्दुओं के सम्बन्ध में रखें तो हिन्दुओं और मुसलमानों का ऐसा सोचना उनकी अज्ञानता का सूचक है। मेरा विश्वास है कि अगर इतिहास के विभिन्न कालों में धर्म के कारण दोनों सम्प्रदायों में वैमनस्य उत्पन्न हुआ है तो संस्कृति ने दोनों में ऐक्य की स्थापना हुई है।

शुद्धाहार और शुद्ध वस्त्र

श्री पूनमचन्द ने नागपुर में विद्यार्थियों को भाषण देते हुए कहा—

आज कल उच्च शिक्षा की प्राप्ति में जो भारी व्यय और शक्ति का अपव्यय होता है उतना बदले में लाभ नहीं होता। यदि विपुल धन खर्च कर हमने कोई डिग्री प्राप्त करली परन्तु तो भी हम अपना आजीविका सुलभता से न चला सके और न अपने कर्तव्याकर्तव्य को समझे तो ऐसी उच्च शिक्षा से क्या लाभ? विद्यार्थी प्रति मास घर से मनीआर्डर मंगाया करते हैं यदि मनीआर्डर में जरा विलम्ब हुआ तो घर वालों को भला बुरा कहने लगते हैं पर वे यह नहीं सोचते कि आज कल के जमाने में पैसा कितना कठिनाई से अर्जन किया जाता है। हमारे विद्यार्थियों को घर की आवश्यकताओं का ध्यान नहीं रहता उनका एकमात्र यही लक्ष्य रहता है कि किस प्रकार शान और फैशन में अपने दिन गुजरें।

केवल स्कूली ज्ञान में अपने आप को विद्वान समझ लेना भारी भूल है। सच्चा ज्ञान तो पाठ्य पुस्तकों के बाहर विविध पुस्तकों में भरा है। जो सामान्य और व्यावहारिक ज्ञान में शून्य है वह यदि डिग्री धारी बन भी गया तो उससे समाज और देश को क्या लाभ? मैं तो सच्चा ज्ञान और सच्ची शिक्षा उसी को मानता हूं जो हमें अपने कर्तव्य का बोध करावे।

मैं विद्यार्थियों को अक्सर देश देशों की लम्बी-लम्बी बातें करते हुए पाता हूं। परन्तु अफसोस की बात यह है कि हमारा देश क्या है उसकी संस्कृति क्या है उसकी आवश्यकता क्या है और हमारा उसका प्रति मैं कहां तक जिम्मेदारी है उसका विचार करते हुए वे भूले ही दिखाई देते हैं। विद्यार्थियों को यह खूब अनुभव कर लेना चाहिये कि जब तक वे अपने राष्ट्र और राष्ट्र धर्म को न पहचानेंगे तब तक उनकी शिक्षा और उनकी लम्बी लम्बी बातें सब व्यर्थ हैं।

मैं विद्यार्थियों के लिये दो बातों को प्राथमिक महत्व देता हूं वे हैं शुद्धाहार और शुद्ध वस्त्र परिधान बिना शुद्ध आहार के आत्मा की ज्योति प्रगट नहीं हो पाती और बिना उस ज्योति को प्रगटाये मनुष्य को सच्ची कर्तव्यानुभूति नहीं होती। शुद्ध वस्त्र परिधान शरीर और आत्मा दोनों की शक्ति को बढ़ाता है। एक वक्त जहां ज्ञानपूर्वक मनुष्य ने शुद्ध वस्त्र परिधान किया कि उसके कर्तव्य के द्वार स्वयमेव खुल जाते हैं और उसे अपना कर्तव्य स्पष्टतया दृष्टिगोचर होने लगता है। शुद्धाहार और शुद्ध वस्त्र वाले व्यक्ति के मार्ग में सहस्त्र सहस्त्र बाधायें भी रोड़ा नहीं डाल सकतीं तो एक आध की बात ही क्या। मैं शुद्धाहार करने और शुद्ध वस्त्र धारण करने का प्रतिज्ञा करने का अनुरोध करता हूं। मैं इन दोनों का खूब अच्छा अनुभव कर चुका हूं और अपने अनुभव से मुझे जो आशातीत लाभ हुआ है उसके आधार पर आपको भी एतदर्थ आग्रह करता हूं। यदि रसिये होने आत्मा संसार में अपना उल्लेखनीय अस्तित्व नहीं रख सकता। व्यक्ति का सर्व परि कर्तव्य आत्मा को बलिष्ठ बनाना है आत्मा को बलिष्ठ बनाने में ये दो ही मूलाधार हैं।

स्वास्थ्य-सुधार

हाथ का कुटा चावल

महात्मा गांधी का ग्राम सुधार आंदोलन केवल किसानों के हित की दृष्टि से ही नहीं मनुष्य के स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक है। हाथ के कुटे चावलों का प्रयोग करने से अनेक बीमारियां नहीं होतीं। आयुर्वेद शास्त्र में जहाँ चिकित्सा का विधान है वहां प्रत्येक रोग के दूर करने के उपाय भी बतलाये गये हैं। वेद में मूसल उलूखल मार्जना पेषना और चुर्ण का बहुत विधान है सोमयाग में और चन्द्र की चतुर्दशी यज्ञ में जहां अग्नि इन्द्र और प्रजापति का पूजन होता है वहां खैर वृक्ष की लकड़ी का मूसल तथा बबूल वृक्ष का उलूखल बनाने का विधान है। खैर की छाल और बबूल की छाल खून को शुद्ध करता हैं। १८ प्रकार के कुष्ठ को उपरोक्त दोनों वृक्ष लाभप्रद हैं। सफेद कोढ़ (फुलबहरी) को खैर का काढ़ा आराम करता है। खैर के वृक्ष के नीचे बैठने से बाल रक्त और फोड़े फुन्सी तथा भयकर व्रण आराम होते हैं।

दूध मथने का मथना (रई) भी खैर का होना चाहिये उसमें मथे में दही दूध मक्खन रक्त को शान्त करने वाले होते है। कीकर की छाल उपदंश फिरंग रोग को आराम करता है कीकर का गोंद स्त्रियों के प्रदर और कमर के दर्द को आराम करतो है।

इस से यह स्पष्ट होता है कि हाथ से कूटे चावल अथवा हाथ का पिसा आटा लाभकारी होता है

प्रकृति ने प्रत्येक चावल आटा दाल फल कन्द मूल आदि पांच वायु द्रव्यों में पांच भौतिक तत्वों का समावेश कर रखा है। दांतों से चूस कर गन्ध का रस पीने से ही शारीर बल पैदा होता है। किन्तु लोहे के यन्त्र में पिसा हुआ रस वायु पैदा करता है।

—शिवचन्द्र वैद्य

चश्मा उतार दो

इस युग की चकाचौंध में हमारी आंख अधिक खराब होती जा रही है। ६० फी सदी व्यक्तियों की आंखों में कोई न कोई मन्द दृष्टि का रोग प्रवेश पाता दिखाई देता है। दृष्टि सुधारने के लिये डाक्टर प्रायः चश्मा की आशा पर चढ़ा देते हैं। स्वाभाविक दृष्टि तथा मैं भी आंख सुधर सकता है इसकी कल्पना बहुत कम किया जाता है। पलकें बार बार गिराने से भी आंखों की ज्योति बढ़ती है— इस कथन को सुन कर तो हमारे बहुत से पाठक हँस भी सकते हैं पर बात सच है। थकी आंखों को विश्रान्ति देने का उपाय बार-बार पलकें मारना ही है। जिन्हें लिखने पढ़ने का बहुत अभ्यास हो वे दिन में अपनी पलकों को कई बार गिराया उठाया करें इससे उनकी दृष्टि के अनेक दोष दूर हो जायगे। किसी एक पदार्थ के एक ही स्थान पर दृष्टि जमा कर देखने से आंखों पर जोर पड़ता है अतः पदार्थ के चारों ओर देखना ही श्रेयस्कर है। पढ़ते समय प्रत्येक पंक्ति के प्रारम्भ और अन्त में पलक गिराना चाहिये। कई पाठक बिना पलक गिराये ही पढ़ते जाते हैं इससे उनकी आंखों पर दबाव पड़ता है और वे खराब हो जाती है। लिखते समय कलम की निब की ओर देखना चाहिये। और बीच बीच में पलक गिराते रहना चाहिये। इस तरह लिखने से हस्ताक्षर भी सुधर जायगे। सिनेमा की आजकल बाढ़ आ रही है। सिनेमा से नेत्रों की ज्योति क्षीण होती है यह बात बहुत प्रचलित हो रही है। यदि चित्रपटों के दृश्यों को बिना पलक गिराये देखा जायगा तो यह निश्चित है कि आंख खराब हो जायगी परन्तु यदि पर्दे के चारों ओर नजर दौड़ाई जायगी तो नेत्र बिगड़ने के बजाय सुधर जायगे। इसी प्रकार स्त्रियें सीते वक्त भी दृष्टि को एक ही जगह जमाये रहती है—बड़ी विलम्ब में पलकें गिराती हैं इसी से हम कहते हैं बार-बार पलकें गिराने का अभ्यास रखिये।

दन्त-रक्षा के नियम

१—दांतों को नित्यप्रति दोनों समय प्रात व सायंकाल दन्तधावन (दांतुन) अथवा किसी उत्तम दन्त मंजन से साफ करना चाहिये यदि दांतुन करने का दोनों समय मौका न मिल सके तो प्रातःकाल तो अवश्य ही दांतुन करना चाहिये।

२—जहां तक हो सके दांतुन करने के लिये मौलसिरी बबूल नीम आक बड़ (बरगद) करंज (कंजा) पीपल खैर गूलर बेल और आम इन वृक्षों की दांतुन जो बारह अंगुल लम्बी सीधी और सब से छोटी अंगुली के समान मोटी हो ले और उसके अग्र भाग को नरम कूंची के सदृश्य बना ले उस कूंची से धीरे धीरे प्रत्येक दांत को घिस घिसकर साफ करे। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि दांतुन के घिसने से मसूड़े नहीं छिलने पावें मसूड़ों को बचाकर दांतों को साफ करना चाहिये।

३—कोई चीज खाने या भोजन कर लेने के बाद तुरन्त ही खूब कुल्ले कर डालने चाहियें। जिससे दांतों में खाये हुए पदार्थ का कुछ भी अंश लगा नहीं रहे।

४—अत्यधिक गरम बहुत ठंडी और ज्यादा खट्टी खारी व चरपरी चीजों के खाने से दांतों व मसूड़ों को नुकसान पहुंचता है इसलिये ऐसी चीजें नहीं खानी चाहिए।

५—बहुत से आदमी दांतों को कुरेदते रहते हैं या दांतों से भारी बोझ उठाते हैं यह ठीक नहीं है—क्यों कि ऐसा करने से दांतों की जड़ें ढीली पड़ जाती हैं और दांत जल्दी ही उखड़ जाते हैं।

६—हमने देखा है बहुत से शिक्षित व अर्द्ध शिक्षित लोग बालों के बने हुए टूथ ब्रुश द्वारा दांतों को मांजते हैं। यह रिवाज बहुत बुरा है। इसे छोड़ देना चाहिये कारण यह है कि बाल चाहे किसी भी प्रकार के हो दांत व मसूड़ों को नुकसान पहुंचाते हैं। इसलिये इस टूथ ब्रुश द्वारा दांतों को साफ करने की प्रथा को छोड़कर दातुन अथवा अंगुलियों से दन्त मन्जन करना चाहिये।

दांतुन से दांतों को साफ करना तो अच्छा है ही परन्तु यदि समय समय पर अथवा कहीं बाहर यात्रा या परदेश आदि में दातुन नहीं मिल सके तो ऐसे मौके पर दन्त मंजन बहुत काम देते हैं इसके सिवाय जब दांत व मसूड़ों में भयंकर रोग पैदा हो जाते हैं तो ऐसे समय तो बिना उत्तम दन्त मंजन के काम नहीं चलता।

बिजली के खतरे से बचने के उपाय

१—नासिखुओं से फिटिंग न कराइये और सस्ती फिटिंग के लोभ में पड़कर व्यर्थ ही अपनी विपत्ति न बढ़ाइये।

२—बिगड़े हुये टेबिलफैन (या टेबिल लैम्प) से काम मत लीजिये।

३—इधर उधर हटाई जाने वाली दुकान की बत्ती का होल्डर, पीतल का न रख कर रबर का रखिये। बिजली की प्रवाह बन्द किये बिना बत्ती का बल्व न बदलिये और न लैम्प या पंखे को ही उठाइये।

४—इसी तरह टेबिल पर चलते हुये पंखे या जलते हुए लैम्प की तार की डोरी को भी बिजली का सम्बन्ध काटे बिना हाथ मत लगाइये। सम्भव है कुछ खराबी आ जाने के कारण उसमें भी बिजली का प्रवाह आ गया हो।

५—साल में एक बार किसी योग्य आदमी से फिटिंग तथा पंखे आदि की जांच करा लिया कीजिये।

६—दो छेदों वाला प्लग न लगवा कर तीन छेदों वाला लगवाइये। इसके दो छेद में तो बिजली का प्रवाह ले जाने वाले दोनों तार लगा दिये जायगे और तीसरे छेद वाला तार ज़मीन में खूब गहरा गाड़ दिया जायगा, जिससे बिजली का धक्का लगने की सम्भावना न रहेगी।

७—सतर्क रहते हुए बहुत ज्यादा भय भी न कीजिये क्योंकि बिजली के धक्के की अपेक्षा यह विश्वास कि बिजली से आदमी फौरन मर जाता है ज्यादा नुकसान पहुंचाता है। (संकलित)

न्यूथियेटर्स, कलकत्ता की आने वाली फिल्में

न्यूथियेटर्स कम्पनी ने पूर्णभक्त, चण्डीदास, सीता आदि सर्वोत्कृष्ट फिल्में बनाकर भारतीय सिनमा-जगत में अपना नाम अमर कर लिया है। इस कम्पनी की आने वाली फिल्मों के नाम 'भूकम्प के बाद', 'कारवान-ए-हयात' व 'देवास' हैं।

'भूकम्प के बाद'

नामक फिल्म दिसम्बर के तृतीय सप्ताह में परदे पर आ जायगी। इस ... के० सी० ड काम करते हैं।

'कारवान-ए-हयात'

नाम की फिल्म भी तयार हो चुकी है। इसका प्रदर्शन बम्बई व कलकत्ता में शीघ्र ही किया जायगा। शामा जुत्शी, सहगल, नवाब आदि अभिनेता व अभिनेत्रियां इस में काम करती हैं।

'देवास'

नाम की फिल्म बंगाला में होगी। इसका शूटिंग शीघ्र शुरु होगा।

राजपूताना फिल्म लिमिटेड

अजमेर में उपरोक्त नाम से एक फिल्म-कम्पनी की स्थापना हुई है। इस कम्पनी के डायरक्टर रायसाहब पं० मिट्ठनलाल भार्गव बी० ए०, एल एल० बी० एडवोकेट (जनरल एशोरेन्स सोसायटी के चेयरमन) श्री मथुराप्रसाद शिवहरे आदि अनुभवी व ख्याति लब्ध महानुभाव हैं। जैसा कि विवरण-पत्रिका को देखने से विदित होता है, यह कम्पनी सिनमा की दुनिया में युगान्तर पैदा करने के लिये बनाई गई है।

वर्तमान फिल्म-कम्पनियों ने अब तक अधिकांश ऐसी ही फिल्में बनाई हैं जिन में आशकी माशूकी का ही बोल-बाला है। अब राजपूताना फिल्म्स लिमिटेड ने प्रेम फिल्म बनाने की घोषणा की है, जिन में सामाजिक सुधार, ग्राम्य पुनर्निर्माण व सवसाधारण को शिक्षित बनाने में सहायता मिलेगी। उन्नति की दौड़ में पिछड़े हुए भारत को वस्तुतः इस समय ऐसी ही कम्पनियों की आवश्यकता है। हमें श्री मथुराप्रसाद शिवहरे सरीखे अनुभवी व्यवसायी से बहुत कुछ आशायें हैं। ईश्वर करे उक्त कम्पनी की महत्वाकांक्षायें सफल हों।

सिनेमा की दुनिया

कहां कितने सिनेमा घर हैं

संयुक्त अमरीका	१७८००
कनडा	११००
जापान	१६१८
जर्मनी	५९९१
रूस	३५००
ग्रेट ब्रिटेन	८९५०
भारतवर्ष	५००

माइमैन उर्फ पियाप्यारे

इम्पीरियल फिल्म कम्पनी का यह खेल खासा है। मिस सुलोचना, डी० बिल्लिमोरिया, मा० गुलाम मोहम्मद, मा० हादी, मिस चन्दा आदि प्रख्यात अभिनेता व अभिनेत्रियां इस में काम करती हैं।

फोटोग्राफी रिकार्डिङ्ग और सीन-सीनरी इम्पीरियल के अच्छे होते हैं। प्रस्तुत फिल्म में भी इन बातों का भली प्रकार खयाल रखा गया है।

हां, डायरक्टर साहब कहीं-कहीं भूल कर गये हैं। एक तो मिस चन्दा के गाने कई रख दिये गये हैं। हमारे खयाल में किश्ती में बैठकर गाया हुआ एक गाना ही पर्याप्त था। दूसरे पुराने किले की लड़ाई को बहुत तूल दे दिया गया है। उसे इतना लम्बा करने की जरूरत नहीं थी।

यह तो हुई फिल्म की एक-दो त्रुटियां अब इसकी विशेषताओं को और लीजिये। दो रंगीन चित्र देखते ही बनते हैं। नावों व मोटर-नावों की दौड़ सुन्दर प्रतीत होती है। बन्दूकों की लड़ाई के दृश्य भी खराब नहीं हैं। सब से मजेदार घटना तो वह रही, जहां राजकुमारी चन्दा पैदल चलती है और रोहित डाकू मोटर में। जयसिंह (गुलाम मोहम्मद) का बार-बार एक आंख की ऐनक चढ़ाना भी हास्योत्पादक है।

अभिनय की दृष्टि से चन्दा (सुलोचना), जयसिंह (गुलाम मोहम्मद), रोहित (बिल्लीमोरिया), व गुमनाम बुढ़िया का पार्ट सराहनीय है।

फिल्म निर्माताओं से

यदि फिल्म-निर्माता भारतीय मूक जनता के हित को दृष्टि में रख कर फिल्म बनायेंगे; तो राष्ट्र उनका आभारी होगा। निःसन्देह जनता की रुचि जिम्मेदार व्यक्तियों द्वारा ही बदली जा सकती है।

—ट्रीब्यून

अमरीकन फिल्म स्टारों की तनख्वाहें

संयुक्त अमरीका में प्रमुख फिल्म स्टारों को प्रति सप्ताह निम्न प्रकार तनख्वाह मिलती हैं—

ग्रेटा गारबो	१८००	पाउंड
विलरो ग्रेफर	१,१००	
मौरिस कयूमिलर	१,१००	,,
जान बर्रीमोर	१३००	
नारमा शायरार	१०००	,,
एन हार्डिंग	१०००	

और भारतीय फिल्म स्टारों में किसी को ४०००) मासिक से अधिक नहीं मिलते।

"भक्त-सञ्जीवनी"

अप्रत्यक्ष निर्वाचन-विधि

(पृष्ठ १४ का शेष)

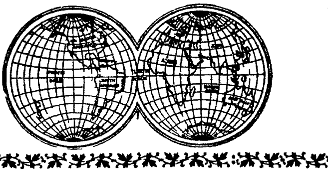
नीति तथा चातुरी के अतिरिक्त और क्या हो सकता है ? जो गुड़ देने से मरे उसे विष क्यों दिया जाय इस नीति का प्रयोग करके ज्वायन्ट कमेटी ने अप्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा वही उद्देश्य सिद्ध किया है जो श्वेतपत्र को सर्वथा वापिस लेने से किया जा सकता था। और यही कारण है कि मैं अप्रत्यक्ष निर्वाचन विधि की योजना को 'विषकुम्भं पयोमुखम्' से कम घातक नहीं समझता।

राष्ट्रीयता पर कुठाराघात

अपने शासकों को स्वयं चुनने का अधिकार इतना महत्वपूर्ण है कि उसके बिना किसी भी देश में स्वभाव्य निर्णय तथा राजनैतिक उत्तरदायित्व का भाव उत्पन्न नहीं हो सकता और इस भावना के बिना राष्ट्रीयता का प्रादुर्भाव असम्भव है। ज्वायन्ट कमेटी ने अप्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा हमारे देश में उगती हुई राष्ट्रीयता की भावनाओं का प्रतिनिधित्व के आदर्श की आड़ लेकर नष्ट करने की योजना की है।

दुर्भाग्य से हमारा देश बहुत काल तक प्रान्तीय साम्प्रदायिक तथा जातिगत आदि राष्ट्रीयता विरोधी विचारोंका आगार रहा है किन्तु अब हम इन घातक भावों की हानियों को अनुभव करने लगे हैं और अब हमारे विचारों में भारतीय एकता तथा 'स्वदेशाभिमान की मात्रा बढ़ रही है। यह भला इंगलैंड के कूट-नीतिज्ञ शासकों को कब सहन हो सकता था ? अतः श्वेत-पत्र तथा ज्वायन्ट कमेटी की साम्प्रदायिक तथा अप्रत्यक्ष निर्वाचन की योजनाओं द्वारा वे हमको फिर उसी राष्ट्रीयता-विरोधी वातावरण में लाना चाहते हैं। केन्द्रीय धारा सभा के लिये अपना प्रतिनिधि चुनते समय जनता के हृदय में भारत की एकता तथा अखिल भारतीय प्रश्नों में अपने हित अनहित की कल्पना उत्पन्न हुये बिना नहीं रह सकती थी किंतु अब अप्रत्यक्ष निर्वाचन की प्रथा के कारण निर्वाचनों के सम्मुख सदा प्रान्तीय व साम्प्रदायिक प्रश्न रहेंगे स्वदेश तथा राष्ट्रीय एकता के भावों का प्रादुर्भाव होने के लिये सर्वसाधारण को बहुत कम अवसर मिल सकेगा। एकता तथा राष्ट्रीयता के स्थान में विभिन्नता व प्रान्तीयता ही हमारा लक्ष्य बन जायगा। हमारी राजनैतिक एकता को नष्ट करने का इससे अधिक घातक और क्या उपाय हो सकता है।

विश्व-वैचित्र्य



५६ दिन मे चांद तक पहुंच सकते है

एक वैज्ञानिक ने हाल में पूर्ण-रूपेण हिसाब लगा कर बतलाया है कि यदि स्काट और कैम्बल (जिन्होंने लन्डन मलबूर्न हवाई दौड़ मे इनाम प्राप्त किया है) १७५ मील प्रति घन्टे की रफ्तार से ५६ दिन तक उड़ते रहें तो चांद तक पहुंच सकते हैं।

—:o:—

एक साथ ७ बच्चे जने

करान के चुगशान जिले में एक मल्लाह की स्त्री ने एक साथ ७ बच्चे जने हैं। जच्चा व बच्चे मजे मे हैं।

—:—

बन्दर पर मुकद्दमा

हाल में लेम्बथ (इंगलैंड) नामक स्थान पर सेशनजज की अदालत में एक विद्वान बन्दर के विरुद्ध कई व्यक्तियों पर हमला करने के अभियोग में मुकद्दमा पेश हुआ है। कहते हैं कि उक्त बन्दर ४ यूरोपियन भाषा जानता है।

एक मक्खी १॥ मास के करीब जिन्दा रहती है और इस बीच में ७०० के लगभग अण्डे देती है।

वर्तमान प्रजासत्तात्मक युग में प्रत्यक्ष निर्वाचन को नागरिता व राजनैतिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन समझा जाता है किंतु ज्वायन्ट कमेटी की नवीन योजना जनता के लिए निर्वाचनों की इस उपयोगिता को सर्वथा नष्ट कर देगी। अजमेर देहली आदि स्थानों में जहां प्रान्तीय कौंसिलें आदि नहीं हैं असेम्बली का निर्वाचन ही राजनैतिक शिक्षा तथा नागरिकता की भावनाओं के प्रकार का एक मात्र साधन था किन्तु अब ज्वायन्ट कमेटीकी दया से इन स्थानों का राजनैतिक जीवन ही एक प्रकार से नष्ट हो जावेगा।

आदमी के सिर पर सींग

बिलासपुर से खबर मिली है कि वहां एक २४ वर्षीय युवक के सिर पर सींग का आपरेशन हुआ है। कहते हैं कि उक्त युवक के सिर पर २० वर्ष की उम्र में सींग उग आया और वह ४ इंच ऊंचा तथा ३ इंच मोटा था। डाक्टरों का कहना है कि जिन्दगी में उन्होंने अभी तक ऐसा आदमी नहीं देखा था।

—

पढ़ा-लिखा पैदा हुआ

नीलगिरी के पास एक गांव में एक ब्राह्मण देवता के घर में एक लड़का पैदा हुआ। उसे शहद चटाया गया। संयोगवश कुछ शहद उसकी उंगली पर लग गया और उसका हाथ साथ वाली मेज पर लगा। लोगों ने देखा कि उस पर 'अम्मा' शब्द लिखा हुआ था। माता-पिता यह देखकर हैरान रह गये। लड़का अभी तक जीवित है।

—

७ वर्ष की उम्र में गणितज्ञ

सायप्रस में एक चमार के ७ वर्षीय लड़के को 'आइन्स्टीन (एक प्रमुख गणितज्ञ) कहा जाता है। उसने निम्नांकित दो प्रश्नों का उत्तर ३० सेकिण्ड में दे दिया—

'तुम्हारी उम्र कितने घंटे है ?'

'६ पौंड ७ शिलिंग ७॥ पैन्स में कितने फारदिंग होते हैं ?"

—

हाथ मिलाना बन्द

रोम में फैसिस्ट पार्टी के सेक्रेटरी ने यह घोषणा की है कि जो लोग दायां हाथ उठाने की बजाय बायां हाथ मिलायें, उन पर नजर रक्खी जाय।

इस घोषणा का अभिप्राय परिचितों के परस्पर मिलाप के समय हाथ मिलाने की रस्म को बन्द करना है।

—

हंसी-दिल्लगी

गांव का पुजारी मन्दिर की मरम्मत कराने के लिये चन्दा एकत्र करता फिर रहा था। चन्दा मांगते वह एक बनिये की दुकान पर पहुंचा और रुपया मांगा। बनिये ने जवाब में कहा—

पुजारी जी ! आज कल बहुत मन्दा है। सुबह से शाम तक धेली के पैसे नहीं बट्टे जाते। इसके अतिरिक्त मुझे बाजार का कर्जा भी चुकाना है। इस लिये मैं आपको कानी कौड़ी भी नहीं दे सकता।'

पुजारी—"लेकिन तुम्हारे सिर पर जितना कर्ज कृष्ण भगवान का है उतना किसी दूसरे का नहीं है। लाओ चन्दा !'

बनिया—'यह तो ठीक है—मगर, वह कर्ज-वसूली के लिये अपने एजन्ट कभी नहीं भेजता !'

*   *   *

पिता—"कहो आज स्कूल में तुम्हें पहला दिन कैसा मालूम हुआ ?"

पुत्र—"मेरे चारों तरफ जो लड़के बेंच पर बैठे थे, वे तो बहुत अच्छे थे—मगर कुरसी पर जो बुड्ढा बैठा था, वह मुझे पसन्द नहीं आया !"

*   *   *

तुम्हारे शरीर में कितनी पसलियां हैं ?"

जनाब मैं गिन नहीं सकता, क्यों कि हाथ लगाते ही मुझे गुदगुदी होने लगती है।

*   *   *

माली—"क्या यह गेंद तुम्हारी है ?"

लड़का—'कोई खिड़की तो नहीं टूटी है ?"

माली—"नहीं बेटे।"

लड़का—'फिर तो यह मेरी ही गेंद है।'

*   *   *

एक छोटा बालक चिल्लाता हुआ चौराहे पर पहुंचा और पहरा देते हुए सिपाही से बोला—

'मि० पुलिसमैन आध घंटे से एक आदमी मेरे पिता से लड़ रहा है। जल्दी चलो।'

पुलिसमैन—तुमने मुझे पहले से ही क्यों न बुलाया था ?'

बालक—क्योंकि १ मिनट पहले तक मेरे पिता उस आदमी को दबोचे हुए थे।'

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान



प० घासीराम का अन्तिम दर्शन

हिजली के दो नजरबन्द





श्री मोतीलाल पांडे श्री लालचन्द पांडे

श्रीधर दयाल



आपने गुरुकुल वृन्दावन को १००० दान दिया है।

नोबेल प्राइज के निराश उम्मीदवार



डा० जान मौट

यूरोप का रहस्यमय व्यक्ति



सर बजिल जहरोफ

नोबेल प्राइज के निराश उम्मीदवार



मिगुल यूनामुना

कहानी

सरला

(लेखक—श्री ओंकारनाथ गुप्त 'दिनकर')

स

वह एक बाल-विधवा थी। अपने जीवन की स्वर्णमयी उषा में ही वह अपना सर्वस्व खो चुकी थी। वह अपने देवता की पूजा करने के हेतु सूर्योदय की प्रतीक्षा में सामग्री जुटा ही रही थी कि काल-राहु दीप्तिमान दिनेश को निगल गया और वह केवल माथा ठोंक कर रह गई, कुम्हलाई पद्मिनी सी।

वह दुखिनी थी! निष्ठुर दैव ने उसका सौभाग्य-सूचक सिंदूर ध्वंस कर उसे दुखगर्त मे धकेल दिया था। उन्मादिनी सी वह अपने दुःख-राज्य को वाहन किये ईश्वरीय-न्याय पर सन्तोष किये बैठी थी। अपने परमेश्वर की सेवा से वंचित रहकर उसने भगवान-सेविका होने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। संसार सागर में अपनी जीर्ण तरी का सुचारु-रूप से संचालन करने के हेतु वह भगवान् से प्रार्थना किया करती थी परन्तु आह! उसकी इस साधना में उसकी बढ़ती हुई उमर सहायक न होकर बाधक थी। विरह पीड़ा एवं वेदना की तरंगें उसकी जीर्ण तरी को जगा देती थी।

वह युवती थी। शरीर के रोम-रोम मे योवन टपका पड़ता था। चिर विवाह के संताप से कनकमात्र और भी अधिक आभासित होता था मधुमास का वह शीतलमन्द सुगन्ध-सन्त समीर उसे किसी अज्ञान दिशा की ओर बहा ले जाता था। उसे एक तीव्र पीड़ा का अनुभव होना था। नील वर्ण गगन में गौरवान्वित विहार करते हुए निशिनाथ की किरणें उसे नाश्मा तीर सी प्रतीत होती थीं। शायद वह उन्हे सहन करने मे असमर्थ थी बालक की भांति वह उठती थी।

उसका नित्य का नियम था अश्रु-प्रवाह करना। एकान्त मे अश्रुमुक्ता के हार पिरा-पिरो कर पुनः धूलि में रमा देना ही उसकी दिनचर्या थी। आह, उसका यह संसार कितना नीरस था कितना शून्य था।

उसका दुःख था असहनीय। उसने संताप से अपने माता-पिता को भी द्रवित कर दुखी बना दिया था। उसकी चिंता ही उसकी वेदना का कारण थी। उसके सुख के लिये वे सर्व त्याग करने को और धन समाज, तथा प्राण तक विसर्जन करने को उद्यत थे। उनका एक मात्र अभिलाषा सरला को सुखी बनाने की थी और उसके लिये प्रयत्न कर रहे थे।

र

वि० आ० कार्यालय में मन्त्री महोदय विचार मग्न बैठे थे। सहसा एक अपरिचित व्यक्ति ने कमरे में प्रवेश किया।

'आइये, पधारिये!' नम्रभाव से मन्त्री जी ने कहा। एक क्षण तक दोनो मौन रहे।

निस्तब्धता भंग करते हुए मन्त्री महोदय ने पूछा—मेरे योग्य सेवा?

'मैंने एक पत्र आपके नाम भेजा था।' आगन्तुक ने कहा—'परन्तु उस का उत्तर अभी तक न मिल पाया।'

'श्रीमान जी का शुभ नाम?

'मुझे शरच्चन्द्र एडवोकेट कहते हैं।'

'अच्छा तो आप बनारस से पधार रहे हैं' मन्त्री जी ने कहा'

'जी हाँ' उन्होंने कहा।

'अभी हम इस विषय में कुछ नहीं कर सकते। दुःख है कि आप को इतना कष्ट उठाना पड़ा।'

'बात यह है कि मुझे यह काम अत्यन्त शीघ्र करना है।'

शरच्चन्द्र इतना कह ही पाये थे कि विनयकुमार ने अन्दर प्रवेश किया। उन्हें आते देख मन्त्री जी ने आदरपूर्वक कहा—'आइये मि० विनय!'

'आपका परिचय' बैठते हुए विनयकुमार ने एडवोकेट की ओर संकेत करके पूछा।

आप बनारस के श्री शरच्चन्द्र एडवोकेट हैं।

आपके दर्शनों से मुझे बड़ा हर्ष हुआ' हाथ मिलाते हुए विनयकुमार ने कहा।

मन्त्री ने एडवोकेट महोदय से पूछा 'आपकी पुत्री की अवस्था?'

'यही १७-१८ वर्ष' सहमते हुय शरच्चन्द्र बोले।

'यदि कोई उसे देखना चाहे तो आपको कुछ आपत्ति तो न होगी।' हिचकिचाते हुए विनयकुमार ने पूछा, और उत्तराभिलाषी वह उनके मुख की ओर उत्सुकता से देखने लगा।

'कुछ नहीं' उन्होंने कहा।

'तो अब आप बनारस कब पधार रहे हैं।'

'कल सायंकाल' शरच्चन्द्र जी बोले।

तो मैं आपसे कल स्टेशन पर ही वेटिंगरूम में मिलूंगा।'

एडवोकेट महोदय कुछ लज्जित से हुए। विनय के प्रति स्नेह का अंकुर उनके हृदय-क्षेत्र में अनायास ही उत्पन्न होगया।

ला

विनयकुमार एक प्रतिष्ठित एवं धनाढ्य पिता के इकलौते पुत्र हैं। आप पर लक्ष्मी की असीम कृपा है। वे और उनकी माता केवल दो ही प्राणी एक बड़ी सम्पत्ति के स्वामी हैं। सामाजिक विचार आप में कूट-कूट कर भरे हुए है। आपकी शिक्षित माता की हार्दिक अभिलाषा है कि आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर संसार में नाम प्राप्त करें। विनय एम० ए० के अन्तिम वर्ष में शिक्षा पा रहे हैं। माता विद्याध्ययन-काल में विवाह करना पुत्र के प्रति अक्षम्य भूल समझती थी। इसी लिये विनय अभी तक अविवाहित हैं।

सन्ध्या का समय है। अन्धकार का राज्य क्षण-प्रतिक्षण विस्तृत और प्रगाढ़ होने लगा। चांद और सितारे संसार के नक्शे को बदलने में व्यस्त हैं। मां-बेटा इस सन्धि-बेला का अवलोकन कर रहे थे। नौकर ने भोजन का थाल लाकर उनके सन्मुख रख दिया। किन्तु विनय मग्न ही बने रहे।

'विनय भोजन करो ना' माता ने कहा।

'करता हूं माता जी' कह कर विनय भोजन करने लगे।

'तो क्या निश्चय किया विनय!' माता ने विनय की ओर देखते हुए पूछा।

'यही कि मैं सरला के कष्ट दूर करने में भरसक प्रयत्न करूंगा।' विनय ने दृढ़ता-पूर्वक कहा।

'तो क्या उसके दुख दूर करने का यही एकमात्र उपाय है कि तुम उसके साथ विवाह करो? क्या किसी दूसरी रीति से उसकी सहायता नहीं कर सकते?' माता ने पूछा।

'नहीं माता जी! मैं अपने कई मित्रों से उसके साथ विवाह करने का आग्रह कर चुका हूं। किन्तु सब यही उत्तर देते हैं कि तुम्हीं करलो ना' वे ऐसा करके जाति और समाज का विरोध करने को तैयार नहीं।

'तो क्या तुम्हें उस विरोध का सामना नहीं करना पड़ेगा?'

'करना पड़ेगा या नहीं, यह तो समय आने पर ज्ञात होगा। किन्तु यदि करना भी पड़ेगा तो मुझे इसकी चिन्ता नहीं। मैं उसका प्रतिकार करने को उद्यत हूं।' यह कहते हुए तेज की एक अपूर्व आभा विनय मुख मन्डल पर आभासित हो उठी। 'अधिक से अधिक लोग मेरा जाति-बहिष्कार कर देंगे, खान-पान बन्द कर देंगे और इससे अधिक?'

दूसरे दिन ही जब लोगों ने उक्त विवाहित जोड़ी को देखा तो सब उनके इस महान त्याग एवं साहस पर मुग्ध थे। समाज के गौरव! उत्साही नवयुवक धन्य है। ऐसे नवयुवक ही असहाय-सहाय और अबलाओं के बल बन सकते हैं। शेष सब तो ढकोसला और आडम्बर है।

—

धारावाही उपन्यास

अर्जुन मे प्रकाशित होगा

साप्ताहिक अर्जुन के आगामी अंक से एक मनोरंजक धारावाही उपन्यास प्रकाशित किया जायगा। पाठक धैर्य से प्रतीक्षा करें।

नागपुर विश्वविद्यालय हिन्दी साहित्य-समिति के प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर जो गत ता० ८ और ९ दिसम्बर को विश्वविद्यालय लायब्ररी हाल में अत्यन्त समारोह के साथ मनाया गया कर्मवीर के यशस्वी संपादक पं० माखनलाल जी चतुर्वेदी ने सभापति पद से जो विद्वतापूर्ण काव्यमय एवं ओजस्वी भाषण दिया उसके कुछ अंश ये हैं —

राष्ट्रभाषा का स्वरूप

आज से सोलह वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार के लिये गांधी जी ने कुछ तरुणों की मांग की थी। हमारे प्रांत से मैंने पं० हृषिकेश जी का नाम सूचित किया। फलतः वे मद्रास इलाके में गये और उनके तथा उनके परिश्रमी साथियों के प्रयत्नों का फल है जो सात लाख मद्रासी भाई राष्ट्रभाषा सीख चुके हैं। मद्रास सरीखे अहिन्दीभाषी प्रांत में यदि इतनी विस्मयजनक सफलता मिली तो कोई कारण नहीं कि हमारे प्रांत में भी यदि सच्चे कार्यकर्त्ता मिलें तो ऐसा ही कार्य न हो।

आज भारत में यह प्रश्न उठता है कि राष्ट्रभाषा का असली स्वरूप क्या होना चाहिये? क्या वह सूर और तुलसी की हिन्दी हो सकती है या साहित्यिक आचार्यों और महारथियों की? मेरा तो यह मत है कि भारत की राष्ट्रभाषा तो वह हिन्दी है जो संतों की प्रामाणों की या तीर्थयात्रियों की भाषा होती है। राष्ट्रभाषा को व्यापक स्वरूप बनाने के लिये हिन्दी को अपने संकुचित दायरे में से निकलना पड़ेगा। उसमें बंगालीपन भी होना चाहिये मराठीपन भी होना चाहिये गुजरातीपन भी होना चाहिये सब पन होने चाहिये। इस लिये भाषा स्वतन्त्र रूप धारण करे।

तुकाराम और तुलसी

हिन्दी का प्रचार किसी भाषा के विरोध या द्वेष की भावना से नहीं किया जाना चाहिये। यदि रामदास को त्यागकर कबीर को पढ़ने का कोई प्रचार करे तो मैं कहूंगा कि फिर कबीर के ग्रन्थों को जला दो यदि तुकाराम को भूलकर तुलसी के पाठ करने की कोई हिदायत दे तो मैं कहूंगा कि तुलसी रामायण को जमीन में गाड़ दो। लेकिन सत्य बात तो यह है कि रामदास और तुकाराम सूर और तुलसी, सभी अपने अपने युग के निर्माता थे द्रष्टा थे महात्मा थे। सभी ने विश्व के सत्य को खोजा और जैसा पाया वैसा लिख दिया। अतः सभी वंदनीय हैं। लेकिन जब हम राष्ट्रीयता के चश्मे से देखते हैं तब हमें मानना चाहिये एक राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिये एक ही भाषा का मातृभाषा के अलावा होना आवश्यक है।

प्रकृति से शिक्षा लो

राष्ट्रभारती का स्वरूप

श्री माखनलाल चतुर्वेदी का भाषण

राष्ट्रभारती के चरणों में

अपने प्रांत और भाषा का अभिमान हर एक के दिल में होना चाहिये। किन्तु वह कदापि अपनी सीमा न लांघे। निर्मल राष्ट्रीयता के लिये उसके बलिदान की जरूरत पड़े तो उस कर्तव्य में तनिक भी हिचकिचाहट न होनी चाहिये। माली तो श्रमपूर्वक अपने पुष्पों के पौधों की सेवा करता है उन्हें बढ़ने देता है फलने-फूलने देता है। पुष्प उसकी सौंदर्यप्रिय मनोवृत्ति की साध है। किंतु उसे जब किसी महान देवता की पूजा करनी पड़ती है तब वही माली निर्दय बनकर अपने कुसुमों को छीनी सूजी से छेद छेद कर एक माला का निर्माण करता है और वह माला देवता के चरणों में अर्पित कर अपने को धन्य मानने लगता है। इसी तरह जब हमें राष्ट्रीयता का आवाहन मिले तब अपनी परिमितताओं और संकीर्णताओं को भूलकर हमें माँ के चरणों में अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित करना चाहिये।

भाषा की प्रतिभा

सन् १९१[illegible] में जब स्व० लोकमान्य तिलक के साथ मैं यात्रा कर रहा था तब उन्होंने कहा था कि हिन्दी में मुझे बाणेदारपणा (ओजस्विता) नहीं दीख पड़ता। एक राष्ट्रभाषा होने के पक्ष में तो मैं अवश्य हूं किन्तु इस कमी की पूर्ति कैसे की जाय? यह सत्य था। आज खुशी की बात है कि आपकी स्वागतकारिणी के सभापति तथा प्रांत के भूतपूर्व मिनिस्टर श्री कन्नमवार ने हिन्दी को यह सार्टिफिकेट दिया है कि उसमें जोर है मर्दानगी है। सच तो यह है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के सर्वथा योग्य है किन्तु जब तक हिन्दी बोलने वालों में देशभक्ति की चमक उत्पन्न न हो तब तक उस भाषा में तेज नहीं आवेगा।



श्री माखनलाल चतुर्वेदी

साहित्य और जीवन

लोग साहित्य को जीवन से भिन्न मानते हैं। काम कला के लिये की आवाज उठाने वाले महारथी साहित्य को जीवन से जुदा मानते हैं। वे कहते हैं साहित्य अपने लिये ही है। साहित्य का यह धन्धा नहीं है कि वह हमेशा मधुरध्वनि ही निकाला करे और पैर में घुंघरू बांधकर मनोरंजन ही किया करे। साहित्य सम्पूर्ण जीवन का प्रतिबिम्ब है। धर्म राजनीति सब उसके अंग हैं। जीवन को हम एक रामायण से मान लें। रामायण जीवन का प्रभात का मनोरम बालकांड ही नहीं है किन्तु करुणा के रस में ओतप्रोत अरण्यकांड भी है और धधकती हुई युद्धाग्नि में प्रज्वलित लंकाकांड भी है। मेरे मित्र मुझसे पूछते हैं आपके कवि और राजनीतिक साथ ही साथ जिंदा कैसे रहते हैं मैं कहता हूं भाई संध्या होती है गगन के दीपक जलने लगते हैं शांति का राज्य स्थापित हो जाता है। तब मैं अपनी बांसुरी लेता हूं और एक तरफ बैठ कर सब में लय बनाने बैठ जाता हूं। मेरे वेणुवादन में कोई पागल होवे या न होवे मैं तो हो ही जाता हूं। रात्रि की निस्तब्धता के गायन में मैं प्रेरणा पाता हूं और जब प्रभात होता है विश्व के सहारे को मैं लड़ने का मुझे आशा मिलती है तब मैं उसी बांसुरी से रण के नक्कारे पर डंके की चोट लगाता हूं और रणक्षेत्र की तरफ कूच कर देता हूं। साहित्य ही जीवन की भित्ति है। उसमें रेलगाड़ी के डिब्बों की तरह अलग अलग अंगों के लिये स्थान नहीं है।

नवीन और पुरातन

कुछ लोगों का मत है कि नया जमाना नवीनता का तकाजा करता है। उसमें पुरातनकालीन साहित्य के लिये जगह नहीं है। लेकिन यह स्मरण रहे कि यदि आप ऐसा साहित्य-निर्माण करना चाहते हैं जो वर्षों और युगों के परों पर चढ़ कर भविष्य की वस्तु बने तो आपको पुरातन साहित्य की अवश्य ही सहायता लेनी पड़ेगी। जीवन-साहित्य के धनुष पर निश्चय का तीर रख कर जितना पीछे उसे आप खींचेंगे उतना ही आगे वह जावेगा। अमर भविष्य के निर्माण में भूतकाल से सम्बन्ध स्थापित करने वाला कड़ी वर्तमान है। अतः वर्तमान साहित्य भूतकाल के साहित्य से कतई भिन्न नहीं हो सकता।

साहित्य में विनोद

विनोद साहित्य का एक अंग है। चाहे तो विनोद को आप साहित्य का एक पागलपन कह सकते हैं। विनोद प्रतिभा का विश्रामागार है। बुद्धि से अवकाश-ग्रहण है। उसमें सत्य होता है। शिवत्व होता है और खिलखिला डालने वाला सौंदर्य तो उसमें होता ही है। विचार इस मनोवृत्ति में मदारी के बन्दर की तरह कुलांटें खाते हैं और नाच कूद के लोग निभाते हैं। किंतु इसके यह माने हरगिज नहीं हैं कि बुद्धि के ईश्वरीय गेरावन पर म्युनिसिपल कमेटी का कचरा ढोया जाय विनोद की सीमा होनी है। विनोद की आड़ में पाप का आक्रमण करना गन्दे छींटे उड़ाना अधःपतन के अड्डे स्थापित करना है

साहित्य क्या है?

कुछ लोग गर्व के साथ कहते हैं अजी साहब हम साहित्य वाहित्य से कुछ नहीं करना हम तो राजनीतिज्ञ हैं। हमारे यहां विचार इस ढंग नहीं है। हम अपने जीवन को साहित्य के अमृत से सींचकर अमर बनाने का पुरुषार्थ करने का स्वप्नमात्र देखा करते हैं। इंग्लैंड का प्राइम मिनिस्टर मैकडानल्ड शासन के सूत्र हाथ में लेने के पहले [illegible] कलम हाथ में लेता है [illegible] राजनीति [illegible] राजनीति की गद्दी में उतरने के बाद साहित्य के चरणों में [illegible] अपने [illegible] जब तक साहित्य का व्यापक [illegible] का भलीभांति नहीं समझ सकते तब तक हम दुनिया के सभ्य राष्ट्रों की बराबरी में नहीं बैठ सकते साहित्य कल्पनाओं के मन्दिर में [illegible] का—

बिजली की व्यापक चकाचौंध है। वह मानव हृदय का मुग्ध संस्कार है मानव सुख के फूला लड़ाके सिपाहियों के रक्त-बिन्दुओं का संग्रह है। साहित्य वह जहाँ कल्पना की जीभ लिखने लगे, और कलम की जीभ बोलने लगे। साहित्य अनन्त जाग्रत आत्माओं के ऊँचे और गहरे स्वप्न हैं। वह मानव जीवन का आजतक पनपी हुई सुसंस्कृत महत्ता का मन्दिर है। वह प्रयत्नों की जमीन को परिणामों के आसमान से मिलाने वाला सुनहरा जीना है। साहित्य पशुत्व और मानवत्व के बीच का सीमारेखा है। यदि साहित्य के नाम पर भगवान व्यास और वाल्मीकि श्रीकृष्ण और राम का निर्माण न करते तो पतित और पीड़ित मानव समाज किसका नाम लेकर अपने दुखों में शान्ति पाता? यदि साहित्य स्वर्ग न उतार देता मन्दिरों में किसकी आरती उतरे वहाँ उल्लू बोलें चमगादड़ टंग रहे। मस्तिष्क के मन्दिर में भी तो साहित्य की मूर्ति में खाना है यही तो हो रहा है। हम साहित्य के प्रति उदासीन रह ही नहीं सकते। साहित्य को तलाक देकर न तो राष्ट्रीयता ही पनप सकती है न मानवता।

प्रकृति की भूमिका

मैं विद्यार्थियों से अपील करता हूँ कि वे सजीव साहित्य का अध्ययन करें। आप लोग तालीम पाते हैं। किताब के कीड़े बन जाने के बाद भी दुनियावी ज्ञान की दृष्टि से आप प्रायः शून्य रहते हैं मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप, इस तंग वातावरण में से निकलकर जरा खुली हवा में जाएँ और प्रकृति की पुस्तिका को देखें जो विश्व के कोने कोने में फैलकर आपको प्रतिक्षण उसका अध्ययन करने के लिये आमन्त्रित करती है। नगाधिराज की चोटियों में गिरिकन्दराओं में निवास करने वाले, तथा नदी सरोजों में विहार करने वाले देवता की पूजा करना तो सीखो। हम शिव की पूजा करते हैं लेकिन उसी शिव के सदृश और जो कहता हुआ किसान है उसकी ओर ध्यान तक नहीं देते। एक शिव के सिर में गंगा बहती है दूसरे किसान रूपी शिव के सिर से पसीना बह रहा है। एक के गले में सांप लटका हुआ है, दूसरे के गले में कर्ज और कष्ट का सांप लटका हुआ है। एक नग्न है और वह नग्नता उसकी पवित्रता का द्योतक है। दूसरा नग्न इसलिये है कि हम उसकी लज्जा ढकने के लिये एक गज कपड़ा भी नहीं दे सकते। एक को तो हम पूजा करते हैं दूसरे को हम निर्भयता से पैरों तले रौंदते हैं। आप उस बच्चे को भी याद कर अक्षरों की तालीम तो पुस्तक भले ही दे किन्तु जीवन की तालीम तो सेवा ही दे सकती है। यदि प्रकृति की गोद में आप नम्रता, अध्ययन-प्रियता और हृदय ले कर जावें तो वह आपकी सबसे बड़ी शिक्षक बन सकती है।

साहित्य-समालोचन

समालोचनार्थ सब पुस्तकों की दो-दो प्रति आनी चाहियें। एक पुस्तक आने पर समालोचना न हो सकेगी।

साम्यवाद या गांधीवाद—लेo—श्री मंगलानन्द प्रभाकर प्रकाशक—पुस्तक एजेन्सी दरीबा कलाँ, दिल्ली। पृष्ठ संख्या १८५। मूo १)।

आज कल साम्यवाद की चर्चा है। हिन्दी जनता भी स्वभावतः साम्यवाद के सम्बन्ध में अधिकाधिक जानने के लिये उत्सुक है। साम्यवाद पर अनेक पुस्तकें भी लिखी गई हैं। श्री मंगलानन्द ने प्रस्तुत पुस्तक में साम्यवाद का प्रतिपादन करते हुए गांधीवाद की भी व्याख्या करने का साहस किया है। आपकी पुस्तक का सारांश यह है कि भारत की समस्या का हल साम्यवाद है गांधीवाद नहीं। ऐसा मत रखने का प्रत्येक को अधिकार है। लेकिन प्रस्तुत पुस्तक के लेखक ने जिस ढंग से गांधीवाद की आलोचना की है वह निहायत भद्दा और कुरुचिपूर्ण है।

लेखक ने गांधीवाद को समझने का बिलकुल यत्न नहीं किया। आपकी लेखन-शैली व गम्भीरता दिखाने के लिये यहाँ दो-तीन उदाहरण दे देना पर्याप्त होगा—

सत्याग्रह से गांधी जी स्वराज्य हस्तगत करना चाहते हैं। असम्भव है! एक हँसने का विषय है। कोरी मूर्खता है। जब हम दूसरे से रोटी भी आज माँग कर नहीं खा सकते तब क्या एक स्वर्णराज्य भीख मांगने से या सत्याग्रह जैसे मरियल शस्त्र से पा सकते हैं! सोचना ही पागलपन है। (पृष्ठ २५)

"हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई का सेनापति एक अहिंसक महात्मा है न कि खून में देश को डुबो देने वाला एक हिंसक... क्या हम देश छोड़ कर सन्यास ले लें या देश पर मर मिट कर स्वाधीनता का सच्चा आनन्द लें? (पृष्ठ ४१)

'गांधीवाद का विष' नामक अध्याय में लेखक ने पंo जवाहरलाल के स्वतन्त्र विचारों और प्रभावशाली भाषण (लाहौर की कांग्रेस के सभापतिपद से दिये गये) की खूब प्रशंसा करते हुए लिखा है—'परन्तु गांधीवाद का अदृश्य जादू किसी पर विदित भी न हुआ। उन्होंने ऐसा वशीकरण मारा कि युवक-सम्राट जवाहरलाल जी को पंडाल से बाहर निकलने के पूर्व ही अपने विचार सड़ियल प्रतीत होने लगे। वे अहिंसावतार गांधी के पट्ट शिष्य बन गये। उसी दिन से इस युवक का पतन समझो।' (पृष्ठ १४७) इसी तरह एक और अध्याय गांधीवाद का कोढ़ लिखा है। उसमें तो और भी अनर्गल अशिष्ट बातें लिखी हैं। हमें आश्चर्य है कि ऐसी भ्रष्ट पुस्तक को छापा क्यों गया, लेखक साम्यवाद और हिंसात्मक क्रांति में विश्वास रखते हैं। परन्तु साम्यवाद को समझते भी मालूम नहीं होते। इसी लिये साम्यवाद के सिद्धान्त की विवेचना करने की अपेक्षा आपने दो एक हिन्दी पुस्तकों से रूस की वर्तमान उन्नति पर ही अधिक लिखा है।

हम प्रकाशक से अनुरोध करेंगे कि वह इस भ्रष्ट पुस्तक की सब प्रतियों को जला कर देश-प्रेम का परिचय दें। लेखक से भी एक बात कहनी है कि वे अपनी लेखनी केवल उसी विषय पर चलावें, जिस पर उनका अधिकार हो।

स्वार्थी संसार (नाटक)—लेo—श्री शिवरामदास। प्रकाशक—उपन्यास बहार आफिस, बनारस। पृष्ठ संख्या १०७। मूल्य १)।

श्री शिवरामदास इससे पहले भी बहुत से नाटक लिख चुके हैं। उनके प्रायः सब नाटकों में वर्तमान कुटिल संसार की सामाजिक बुराइयों का नग्न-चित्र खींचा जाता है। प्रस्तुत नाटक का भी उद्देश्य स्पष्ट है।

यदि पाठक इसमें साहित्यिक भाषा, पात्रों का चरित्र-चित्रण ढूंढने का प्रयत्न करेगा, तो उसे अवश्य निराश होना पड़ेगा। लेकिन लेखक का ऐसा उद्देश्य भी नहीं जान पड़ता। सर्वसाधारण के लिये 'रंगमंच' पर खेलने लायक नाटक लिखना ही उनका उद्देश्य जान पड़ता है और इसमें वे सफल हुए हैं। लेकिन यदि उद्देश्य के साथ ही स्वाभाविकता चरित्रों के विकास व भाषा-परिवर्तन की ओर भी कुछ अधिक ध्यान देते, तो नाटक अधिक उपयोगी हो जाता। धर्मपाल का आदर्श की बातें करते हुए पिता को गालियां सुनाने लगना असंगत जान पड़ता है। इसी तरह तोताराम का अपनी लड़की से अपना कलुषित हृदय खोल देना अस्वाभाविक प्रतीत होता है। तोताराम का चरित्र दिखाने के लिये स्वगत या किसी अन्य मित्र के साथ वार्तालाप दिखाया जा सकता था। आशा है, लेखक आगे से इन निर्देशों का ध्यान रखेंगे।

—कृष्णचन्द्र

रामायण सार—संग्रहकर्ता—श्री अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, प्रकाशक—तेजनारायण वाजपेयी, कुमार प्रेस १०९ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट कलकत्ता; पृष्ठ संख्या २७८, मूल्य ॥)।

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस का सार है। रामायण धर्मग्रन्थ है, इसलिये प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति को इसकी आवश्यकता अनुभव होती है। संग्रहकर्ता महोदय ने गागर में सागर भरने का प्रशंसनीय कार्य किया है। चूंकि रामायण बड़ी पुस्तक है और एक सप्ताह से कम में खत्म नहीं हो सकती, इसलिये इस पुस्तक में इसका सार निकाल कर रख दिया गया है। इस में कथा का सिलसिला टूटने नहीं पाया है और साधारण धर्म, राज धर्म, भक्ति, ज्ञान, वैराग्यादि सम्बन्धी विचार भी नहीं छूटने पाये हैं। पुस्तक की छपाई भी अच्छी है।

उलझन—लेo—श्री चन्द्र शर्मा प्रकाशक—देवदत्त एण्ड कम्पनी, चेम्बरलेन रोड, लाहौर। पृष्ठ संख्या १०१, मूल्य ।॥); छपाई साफ व सुन्दर।

यह पुस्तक ११ सुन्दर कहानियों का संग्रह है। प्रायः सब कहानियां एक दूसरी से बढ़-चढ़ कर हैं। 'उलझन' शीर्षक वाली कहानी तो वस्तुतः उलझन ही है। पाठक उसमें उलझे बिना नहीं रहता। चन्द्र शर्मा की कहानियों में मैंने यह विशेषता पायी कि वे छोटी, सरस और भावपूर्ण हैं। 'चन्द्र' जी से हिन्दी साहित्य को बड़ी बड़ी आशायें हैं।

— जगन्नाथ गुप्त

कुछ समाचारपत्रों में बून्दी राज्य के बारे में जो लेख प्रकाशित हुआ है जिससे बाहर के लोग जो बून्दी से बिल्कुल अपरिचित हैं यही अनुमान करेंगे कि परदेशियों ने रियासत बून्दी में कोई घोर अन्धेर मचा रखा है। निम्नलिखित कुछ पंक्तियाँ वास्तविक स्थिति पर प्रकाश डालने के लिये लिखी गई है।

देशी और परदेशी के प्रश्न को कुछ समय के लिये एक ओर रख कर न्याय से देखा जाय तो रियासत बून्दी आज इस बात पर गर्व कर सकता है कि उसके उच्च पदाधिकारियों में से एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो किसी रूप में भी रिश्वत लेता हो। पुराने जमाने में बून्दी की पोल मशहूर थी। परन्तु आज अन्य रियासतों वाले भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि यदि बून्दी की उन्नति की ओर यही खबर रही और महाराजाधिराज श्रीमान् ईश्वरीसिंह जी यदि अन्य राज्य कर्मचारियों के साथ प्रेम तथा उदारता से सहयोग करते हुए स्वयं राज्य कार्य्य व हर प्रकार के सुधार में दिलचस्पी लेते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब कि यह छोटी सी रियासत बहुत उन्नति कर जायगी।

बून्दी के कई महकमों पर अनेक आक्षेप किये गये हैं। कहा गया है कि पोलीस और अन्य महकमों पर रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है परन्तु अस्पताल और शिल्प पर कुछ ध्यान नहीं दिया जा रहा। सत्य यह है कि गत वर्ष पोलीस पर कुछ भी नया खर्च नहीं किया गया। केवल दो जगह जहां कि बाहर के कंजरों के गुजरने के नाके ख्याल किये जाते हैं पोलीस लाइन बनवाई गई है। वह भी पोलीस डिपार्टमेंट ने गार्ड की कच्ची चुनाई में पुरानी बनी हुई इमारत में वृद्धि करके अपने ही बजट की बचत में बनवाई है। दूसरी ओर मेडिकल डिपार्टमेंट में बड़े अस्पताल के अलावा हिन्डोली और केशवराय पाटन में नये निहायत उम्दा और अप टु डेट चिकित्सालय बनवाये गये हैं। जहां एक डाक्टर काम करता था वहाँ आज पांच डा० हैं। लेडी डाक्टर का कदाचित् जहां पहले नाम भी नहीं सुना गया होगा। वहाँ आज मैटर्निटी हास्पिटल अलहदा खोल दिया गया है। बड़े अस्पताल में मरीजों के रहने की जगह दुगनी कर दी गई है और और बढ़ाई जा रही है। क्या यह बातें ठीक नहीं और क्या इससे यह सिद्ध नहीं कि उक्त आक्षेप मिथ्या हैं।

रियासती दुनिया

बून्दी में परदेशी का प्रश्न

(ले० एक परदेशी)

(राजपूताने की प्रायः सभी रियासतों में देशी परदेशी का आन्दोलन थोड़ा बहुत चल रहा है। इस लेख में उसके एक पहलू पर विचार किया गया है। आशा है रियासती प्रजा इस प्रश्न रुचि लेगी —सम्पादक)।

आगे चल कर लेखक महोदय ने इस बात पर शोक और क्रोध प्रगट किया है कि परदेशी यहां नौकरियें और व्यापार करते हैं। परदेशियों के व्यापार करने के आक्षेप का उत्तर हम आगे चलकर देंगे ही। परदेशी आफिसरों के बारे में इतना ही कहना है कि इनमें से हर एक को राज्य ने स्वयम् खोज २ कर मंगाया है। क्यों बुलाया है यह तो बून्दी वाले भाई ही जाने क्योंकि इन आफिसरों के आने के पहले की हालत इन आफिसरों की अपेक्षा बून्दी निवासी भाई ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं।

देशी और परदेशी

रियासतों में देशी और परदेशी का प्रश्न हर जगह उठाया जाता है। इस विषय की बारीकी से देखा जाय तो यह दुःखप्रद होता हुआ भी अति मनोरंजक है। भारतीय निःसन्देह बहुत सभ्य हैं परन्तु यदि बाहर की अन्य सभ्य जातियां यह सुने कि जिस भारतवर्ष को वह एक राष्ट्र समझती हैं उसी में दस मील दूरी पर जाकर मनुष्य परदेशी कहलाने लग जाता है तो वह कदाचित् विश्वास भी न करें। हिन्दुस्तान में ही एक हिन्दुस्तानी का अपने दूसरे हिन्दोस्तानी भाइयों द्वारा परदेशी कह कर पुकारे जाना एक अद्भुत तमाशा नहीं तो क्या है? क्या बून्दी राजा सारे भारत के लिये अमेरिका बनाना चाहता है? बून्दी ही नहीं जैसा कि कहा जा चुका है यह प्रश्न करीबन सब रियासतों में उठाया जा रहा है और कुछ समाचारपत्रों में तो इससे सम्बन्ध रखने वाले लेख और समाचार इस जोर से छापे जाते हैं कि वास्तविक राजनैतिक दुर्घटनाओं पर भी इतना जोर नहीं दिया जाता। इस विषय का बाहरी स्वरूप कुछ ऐसा है कि जब तक गौर से न देखा जाय इस सम्बन्ध में उठाई हुई आवाज बिल्कुल सत्य और उचित जान पड़ता है। और हालांकि अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि यह आन्दोलन वास्तव में केवल रियासतों के कुछ विशेष लोगों द्वारा परिचालित होता है। इन भाइयों ने कदाचित् कभी ख्याल भी नहीं किया कि वह और उनके भाई अंग्रेजी भारत में क्या आर्थिक लाभ उठा रहे हैं। कलकत्ता बम्बई आदि भारत के सब से बड़े व्यापारिक केन्द्रों में ० फीसदी से ज्यादा व्यापार रियासती मारवाड़ियों के हाथ में है। आज यदि इन्हें वहां से निकाल बाहर किया जाय यह कह कर कि भइया जाओ यहां तो केवल यहीं के आदमी दुकान खोल सकते हैं और व्यापार कर सकते हैं तो रियासतों की क्या दुर्दशा हो यह पूछिये रियासत बीकानेर से जोधपुर से व राजपूताने की अन्य सब बड़ी रियासतों से जहां पर कि गांव २ में इन्हें अंग्रेजी राज्य में दुकान खोले हुये और व्यापार करते हुये सेठों के बनाये शाही महल और अट्टालिकायें धर्मार्थ खोले हुए रेल्वे स्टेशन तक मिलेंगी। हम पूछते हैं कि स्वयं सैकड़ों और हजारों की संख्या में जाकर अंग्रेजी राज्य में वहां के लोगों के बराबरी के अधिकार से व्यापार व अन्य कार्य्य करना और अपनी रियासत में यदि कोई अंग्रेजी राज्य वाला दीख भी जाय तो उसके पीछे पड़ जाना स्वार्थ अन्याय और ज्यादती नहीं तो क्या है? क्या यही बात बून्दी पर लागू नहीं है? क्या बून्दी में ऐसे कोई सेठ नहीं जिनकी दुकानें और सारा कारोबार अंग्रेजी राज्य व अन्य किसी रियासत में है? क्या ऐसे लोग नहीं जिनकी नौकरियें अंग्रेजी राज्य में हैं? ऐसे व्यक्ति आपको बीसियों और सैकड़ों की तादाद में मिलेंगे और बाहर के आदमी (जिन्हें यह परदेशी शब्द से पुकारते हैं जैसे कि इनमें कोई राष्ट्रीय सम्बन्ध ही न हो) तो यहां गिनी चुनी संख्या में ही मिलेंगे। ऐसी अवस्था में देशी और परदेशी के उठाये हुये शोरोगुल का कारण स्वार्थ और अविद्या नहीं तो क्या है?

हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि रियासतों में बेरोजगारी और दीनता बढ़ती जा रही है परन्तु यह कह देना उचित होगा कि यह बेरोजगारी और दीनता अंग्रेजी भारत की बेरोजगारी और दीनता का प्रतिबिम्बमात्र है क्योंकि रियासतों और अंग्रेजी भारत के आई गहन जन्म निकट सम्बन्ध होने के कारण रियासतों पर पड़े बिना नहीं रह सकता। इसका जुम्मेवार न रियासतें हैं और न ही अंग्रेजी भारत वाले इसकी एक मात्र जुम्मेवार जैसा कि सब जानते हैं है इन दोनों की पराधीनता जिसे रियासतों की प्रजा और उनके भाई अंग्रेजी भारत वाले (परदेशी) परस्पर सहयोग से प्रेम से ही हटा सकते हैं।

झाबुआ में सुधार

भारत देशी राज्य प्रजा परिषद् के संयुक्त मंत्रियों ने निम्नलिखित वक्तव्य प्रेस को दिया है—

झाबुआ शासन के वास्ते भारत सरकार के दीवान नियुक्ति के निर्णय के विपरीत झाबुआ के सिंहासन हीन शासक को वर्तमान कौंसिल की योजना स्वीकार की गई है। यह कौंसिल राजा की इच्छानुसार है जनता का इसमें प्रतिनिधित्व नहीं है। इसी प्रकार एक भारतीय जूनियर सिविलियन द्वारा शासन चलाने की मांग ठुकरा कर जनता की मांग पर भी ध्यान नहीं दिया गया किन्तु झाबुआ की जनता को यह जान कर सन्तोष हो रहा है कि मालवा एजेन्सी के पोलिटिकल एजेन्ट आ० के० एस० फिट्ज शासन व्यवस्था में काफी दिलचस्पी ले रहे हैं।

बड़वानी राज्य में दो लाख रु० कर्ज लेने से राज्य की आर्थिक अवस्था में कुछ सुधार अवश्य हुआ इसी प्रकार जनता की अन्य शिकायतें व राज्य की अव्यवस्था की भी बारीकी से जांच होने की आवश्यकता है। निम्नलिखित व्यक्तियों को राजा के दुर्व्यवहार नाजायज हिरासत व जब्त धन दौलत आदि के कारण मावजा व नुकसानी मिली है

श्री सौभाग्यमल पोरवाड़ ७
केसरीमल भंडारी
हेमराज जाजड़ ८
चुन्नीलाल मांडिया)
नन्दा तेली ,
सदीक अहमद)

इसके अतिरिक्त अन्य लोगों की जांच का परिणाम क्या आता है यह देखना को है।

———

म० गाँधी को सीमाप्रान्त में जाने की आज्ञा नहीं मिली

सीमांत में जाना अवांछनीय

लार्ड विलिङ्गडन



महात्मा गान्धी



वायसराय का उत्तर

अभी पत्र-व्यवहार जारी है

म० गाधा न वह पत्र व्यवहार प्रकाशित कर दिया है जो उन मे और वायसराय मे सीमाप्रात जान के सम्बन्ध मे हुआ था। वायसराय न म० गांधा क वहा जान को आपत्तिजनक और अवाछनीय बताया है। अभी तक म० गा धा का पत्र व्यवहार जारी ह।

महात्मा जी का वक्तव्य

पत्र-व्यवहार प्रकाशित करत हुए महात्मा जी न एक वक्तव्य भा प्रकाशित किया है जिसम इस बात को दुर्भाग्य पूर्ण बताया है कि अखबारो में उनक और वायसराय क बाच होन वाले पत्र व्यवहार की मनमानी खबर प्रकाशित हुई हैं। वायसराय स पूछ कर पत्र-व्यवहार प्रकाशित करन को बात कहत हुए महात्माजी लिखत है —

परन्तु मैं जनता को इस बात स आगाह करता हू कि वह यह न समझ लें कि पत्र-व्यवहार समाप्त हो गया और मैं वायसराय की राय क विरुद्ध सीमाप्रान्त जाकर गिरफ्तार होन के पहल मोके की प्रतीक्षा में हू।

इस समय सविनय अवज्ञा करने की मरी काइ इच्छा नहीं है।

मेरा उद्देश तो यही है कि परमेश्वर क एक विनम्र सेवक क रूप में सीमाप्रान्त क उन लोगों स मिलू और उनको जानू जोकि अपन को खुदाई खिदमतगार कहत हैं।

क्योंकि अब उनका नता गिरफ्तार कर लिया गया है इसलिये मेरी यह इच्छा और भी बढ़ गई है लेकिन

मेरा तत्कालिक उद्देश्य सरकारी आज्ञा भग करन स पूरा नहीं हो सकता। अत इसके लिये आवश्यक अनुमति प्राप्त करन को मैं उन सब वैध उपायों स काम लूगा जो कि सम्भव हैं यदि मेर उद्देश्य पर सन्देह हो मुझे वहां जान स रोकन का कारण हो तो मैं इस सन्देह को दूर करन का प्रयत्न करूगा। मेरा प्रयत्न तो यही है कि मनुष्य का हैसियत स जहा तक सम्भव हो मैं सरकारी आज्ञा भग करन क हरक अवसर को टालू। अत आम जनता तथा खास कर सीमाप्रान्त क मित्रों स मैं कहूगा कि व धीरज रक्खें। पर अन्त में क्या होगा यह ठीक समय पर उन्हें मालूम हो जायगा। साथ ही पत्र सम्पादकों से भी मेरी प्रार्थना है कि बिना मुझ स सचाई जान इस सम्बन्ध में वे कुछ प्रकाशित न करें।

महात्मा जी का पत्र

वायसराय के प्राइवट सेक्रटरी को वर्धा से १५ नवम्बर को म०गांधी न पत्र भेजा जिस में लिखा कि आधे दिसम्बर के बाद अपन तई यह जानन-समझन के लिए कि खान साहब अब्दुलगफ्फार खां के अहिंसा के उपदेश न उन के अनुयायियों में कहां तक प्रवेश किया है मैं सीमाप्रांत जाना चाहता हू। साथ ही ग्राम्य-उद्योगों की वृद्धि में भी मैं उन को मदद करना चाहता हू। यह कहन को जरूरत नहीं कि सरहदियों में सरकारी कानून भग की भावना फैलान का मेरा कोई इरादा नहीं है।

हालांकि सीमाप्रांत जान के सम्बन्ध में मुझ पर कोई कानूनी पाबन्दी तो नहीं है तथापि मैं ऐसी कोई बात नहीं करना चाहता जिसके कारण सरकार से मेरा सघर्ष हो। जहा तक मनुष्य की हैसियत से सभव हो मेरी दिली इच्छा है कि मैं ऐसे सघर्ष में न पड़ू।

अत क्या आप कृपा करक इस सम्बन्ध में वायसराय के विचार जान कर मुझे सूचित करेंगे?

प्राइवेट सेक्रेटरी का जवाब

महात्मा जी क उक्त पत्र क उत्तर में २५ नवम्बर को वायसराय क प्राइवट सेक्रटरी न, वायसराय की ओर से इस बात पर हर्ष प्रकट करते हुए कि आज्ञा भग करन की महात्मा जी की कोई इच्छा नहीं है लिखा कि

इस प्रश्न पर सीमाप्रांत की सरकार तथा अपनी कौंसिल से सलाह कर वायसराय और व सब इस सर्वसम्मत निश्चय पर पहुच हैं कि अभी आप का सीमाप्रांत जाना वांछनीय नहीं है।

अवांछनीय क्यों है?

उक्त पत्र पर २८ नवम्बर को महात्मा जी न फिर पत्र भेजा जिस में यह बतान के लिए कहा कि उन का सीमाप्रात जाना अवांछनीय क्यों है और अभी से आप का क्या अभिप्राय है?

'अभी' का अर्थ

इस क उत्तर मे २ दिसम्बर को प्राइवट सेक्रटरी न लिखा कि 'अभी' स मतलब यह है कि जब तक वायसराय को यह सन्तोष न हो जाय कि आपका वहा जाना आपत्तिजनक न होगा उन्होंन हाल के वर्षों की घटनाओं तथा वर्तमान परिस्थिति पर पूर्ण विचार करके ही ऐसा निश्चय किया है।

पत्र-व्यवहार प्रकाशित करने की इजाजत

इसक बाद ८ दिसम्बर को महात्मा जी न तार देकर अखबारों में मनमानी खबरें प्रकाशित होन की वजह स पत्र-व्यवहार प्रकाशित करन की इजाजत मांगी और साथ ही यह भी लिखा कि मै ईश्वर से प्रार्थना करते हुए सीमाप्रात जान संबंधी अपने कर्तव्य पर विचार कर रहा हूँ।

इस पर १० दिसम्बर को तार से प्राइवेट सेक्रेटरी द्वारा पत्र-व्यवहार प्रकाशित करन की इजाजत मिली।

भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य नहीं मिलेगा

(पृष्ठ १० का शेष)

इसके पन्ने-पन्ने में भारतीयों के प्रति अविश्वास भरा हुआ है, जब कि हम जानते हैं कि जो भी भारतीय ऊंचे ओहदे पर गया वह किसी अङ्गरेज से कम योग्य साबित नहीं हुआ। कांग्रेस दल ही ऐसा है जो किसी शासन-विधान को चला सकता है। कांग्रेस ही देश के युवकों से बलिदान की मांग कर सकती है। अपनी मांग पर ही वह चुनाव में सफल रही है।

मि० इसाकफ़ुट (लिबरल)

ने साधारणतः रिपोर्ट का समर्थन किया, पर सङ्घीय धारा सभा में अप्रत्यक्ष चुनाव का विरोध किया।

लार्ड वूल्मर

कन्जरवेटिव विरोधियों के प्रमुख थे। आपने मि० फुट से असहमत होते हुए कहा कि सरकारी प्रस्ताव-समस्या को हल करने के सर्वोत्तम उपाय नहीं है और वे भारत तथा साम्राज्य को बुराइयों, खतरों एवं दुर्घटनाओं में डाल देंगे। सरकार इन सुधारों से जो मशीन तैयार कर रही है उस पर कांग्रेस कब्जा कर लेगी, जो मि० डि वेलरा की तरह भारत से अंगरेजों को निकालने पर तुली हुई है।

कांग्रेस के प्रभावपूर्ण होने के आपने ये कारण बतलाये—

(१) वही एक सङ्गठित दल है, (२) इतिहास बताता है कि गरम सदा नरमों को हजम कर जाते हैं सो कांग्रेस माडरेटों को खतम कर देगी (३) चुनाव के समय मनमाने वादे करके तथा वक्तव्य निकाल कर संसार के सब से अज्ञान (भारतीय) मतदाताओं पर वह अपना जादू चला लेगी।

आपने केन्द्र को उत्तरदायित्व दिये बगैर पहले सिर्फ प्रान्तीय स्वतन्त्रता, वह भी कुछ हेर-फेर के साथ देने पर जोर दिया।

चांद की जगह बम

करनल वेजवुड ने सुधारों की कड़ी आलोचना की। आपने कहा कि भारत में इनसे कोई खुश नहीं है, बल्कि भयभीत हैं। वह तो 'जिस चांद के लिये चिल्ला रहे थे, उसकी जगह ऐसा बम का गोला है' जो उन की मौजूदा स्वतन्त्रता को भी नष्ट कर देगा। साम्प्रदायिक निर्वाचन का भी आपने जोरों से विरोध किया और कहा कि प्रजातन्त्र में एक बार यह विष घुसा नहीं कि फिर कभी प्रजातन्त्रीयता नहीं हो सकती। राजाओं को प्रभुत्व देने का भी आपने विरोध किया।

सर डोनल्ड सोमरवेल

ने सुधारों का समर्थन करते हुए कहा—यदि वर्तमान अवसर खो दिया गया तो भविष्य में संघ कठिन ही नहीं, असम्भव हो जायगा।

दूसरे दिन का विवाद मजदूर दल के मि० मोरगन जोन्स के भाषण से आरम्भ हुआ।

बर्मा का पृथकरण

बाद में सहकारी भारत-मन्त्री मि० बटलर ने बर्मा के पृथक्करण का विस्तार से उल्लेख किया और इसमें बर्मा का हित बताया, साथ ही बर्मा को ब्रिटिश सरकार का एक जबर्दस्त अधिकृत प्रदेश बताया।

मजदूरदल के संशोधन के विरुद्ध सर जान साइमन का भाषण हो जाने के बाद मि० चर्चिल ने ७० मिनट तक पुनः अपने पक्ष का प्रतिपादन किया। आपने कहा कि आयर्लैण्ड और दक्षिण अफ्रीका से भारत की तुलना करना ठीक नहीं है। 'मोण्टफोर्ड स्कीम में अनेक बड़े बड़े प्रयोग किये गये, परन्तु, बहुतों का यह विश्वास है कि वही भारत की आज की सारी गड़बड़ी की जड़ है।

भारत की एकता अपने आप कोई उद्देश्य नहीं है। उद्देश्य तो भारत का हित है।

सर आस्टिन चैम्बरलेन

ने मि० चर्चिल को जवाब देते हुए रिपोर्ट का समर्थन किया।

भारतीय भावनाओं पर ज्यादा ध्यान दो

मि० लेन्सबरी ने भारतीय पक्ष लिया। आपने कहा कि भारतीयों की भावनाओं पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिये। इस बात को भी हमें याद रखना चाहिये कि हम ३५ करोड़ भारतीयों के हित पर विचार तो कर रहे हैं, पर विचार में भारतीय कोई भी शामिल नहीं है।

भारत को निश्चितरूप से यह जानने का अधिकार है कि डोमीनियन स्टेटस अब सरकारी नीति रही है या नहीं? भारत के सम्बन्ध में मैं आप को चुनौती देता हूं। वाइसरायों राजकुमारों तथा ड्यूक आफ कनाट के द्वारा हमने उन्हें स्वराज्य का सन्देश भेजा है। पर इन प्रस्तावों में ऐसा कुछ नहीं है। इन से आम लोगों को कोई अधिकार नहीं मिलता, न भारतीयों को अपने मामलों का प्रबन्ध और नियन्त्रण स्वयं करने का ही हक मिलता है।

मि० बाल्डविन

ने अपने अंतिम भाषण में सबकी बातों का जवाब दिया और नये सुधारों के बारे में कहा—

यह सच है कि कांग्रेसियों ने इसमें इन्कार किया है तथा अन्य राजनैतिक दलों ने इनकी बहुत टीका टिप्पणी की है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि जिम्मेदार भारतवासी इसके शुरू होने पर इसमें भाग नहीं लेंगे।

संशोधन गिरा, प्रस्ताव पास

अन्त में मत लिये गये, जिसमें भारत को डोमीनियन स्टेटस देने सम्बन्धी मजदूर-दल का संशोधन तो ४९ के विरुद्ध ४९१ के भारी बहुमत से रद्द हो गया और रिपोर्ट को भावी शासन सुधार का आधार मानने का मूल सरकारी प्रस्ताव १२७ के विरुद्ध ४९० के बहुमत से पास हुआ।

हाउस आफ लार्डस की बहस

'डोमिनियन स्टेटस' शब्द छोड़ने पर जोर

हाउस आफ लार्डस में १२ तारीख को लार्ड (इरविन) के प्रस्ताव के साथ ज्वायण्ट सिलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट पर जो बहस शुरू हुई थी १३ ता० को भी वह जारी रही।

डोमीनियन स्टेटस शब्द छोड़ो

केण्टरबरी के आर्चबिशप ने इस दिनका विवाद शुरू करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि हम 'डोमीनियन स्टेटस' के भ्रमात्मक शब्द को छोड़ दें जिसने कि बहुत गलतफहमियां पैदा की है।

लार्ड सेलिसबरी का विरोध

लार्ड सेलिसबरी ने प्रस्तावों का विरोध करते हुए कहा कि सिलेक्ट कमेटी ने इस बातपर ध्यान नहीं दिया है कि उसके प्रस्ताव सम्भव भी हैं या नहीं और परस्पर विरोधी बातों का हल न कर उनको दरगुजर करने की कोशिश की है।

सप्ताह की हलचल

सीमान्त गांधी ने सफाई नहीं दी

अदालत में बयान

बम्बई १३ दिसम्बर

आज चीफ प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट के इजलास में खान अब्दुल गफ्फार खां का मामला पेश हुआ सरकारी वकील ने इस्तगासे के तीन गवाहों से जिरह की, इसके बाद खां की ओर से श्री भूलाभाई देसाई ने निम्न बयान पेश किया:—

मूलतः अनुवाद सही है और मेरे कानूनदां दोस्तों के कथनानुसार उसमें ऐसी बातें हैं, जो ताजीरात हिन्द की उस धारा में आ सकती है जिसके मातहत मुझ पर जुर्म लगाया है।

मैं एक वफादार कांग्रेसमैन हूं और फिलहाल जेल न जाने की उसकी नीति को मैंने स्वीकार किया है, इसलिए राजद्रोहात्मक बातें कहने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी। अतः मुझे इस बात के लिए अफसोस है कि चाहे अनिच्छा से ही क्यों न हो पर मैंने अपने भाषण में ऐसी बातें कहीं जिन पर मुकदमा चल सकता है।

> **अब्दुलगफ्फार खां को २ साल की कैद**
>
> अभी खबर मिली है कि शनिवार को मजिस्ट्रेट ने दो साल की सजा सुना दी।

अगर मेरे सारे भाषण को पढ़ा जाय, तो मुझे आशा है कि अदालत को यह सन्देह नहीं रहेगा कि सरकार पर दोषारोपण करने के बजाय आन्दोलन के निर्माण पहलू पर जोर देना ही मेरा उद्देश्य था।

इस्तगासे की कार्यवाही

तदनन्तर मि० वोकर पब्लिक प्रोसीक्यूटर ने खान अब्दुलगफ्फार को वह भाषण पढ कर सुनाया जो उन्होंने २७ अक्तूबर को बम्बई में दिया था। मि० वोकर ने आगे कहा कि भाषण खतरनाक था और उसमें राजद्रोह की झलक था। भाषण में सरकार के विरुद्ध कई बातें कही गई। उदाहरणतः

सरकार हिन्दू मुसलिमों को भिड़ाती है, सीमान्त में पठानों को तंग करती है इत्यादि ।

इस्तगास की ओर से निम्न अभियोग लगाये गये:---

(१) सम्राट का वफादार प्रजा में असन्तोष पैदा करना ।

(२) भारत-सरकार के विरुद्ध लोगों को भड़काना ।

फैसले के लिए आगामी शनिवार की तारीख लगा दी गई

—:—

डा० सत्यपाल पर मुकदमा

डा० सत्यपाल पर १२ नवम्बर को चुनाव के सिलसिले में दिये गये एक भाषण पर मि० पूल की अदालत में राजद्रोह के अभियोग में मुकदमा चल रहा है। पबलिक प्रासीक्यूटर ने पहले ही प्रेस-रिपोर्टरों को भाषण के अंश न छापने की ताकीद करदी है। मि० आसफअली ने डाक्टर साहब की ओर से पैरवी की। उन्होंने कहा कि सरकारी अनुवादक का अनुवाद गलत है। फिर सारे भाषण का सारांश चुनाव के लिए अपील करना थो, न कि ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध नफरत फैलाना। भाषण के किसी एक वाक्य को पृथक कर वक्ता की मनोवृत्ति को नहीं पहचान सकते। इस तरह तो बाइबिल भी राजद्रोहपूर्ण हो जायगी, जिसमें तलवार से शासन करने वाली सरकार का तलवार से नाश होना लिखा है। एक भी गवाह सरकार ऐसा पेश नहीं कर सकी जिसे वह भाषण सुनकर ब्रिटिश राज्य से नफरत हो गई हो।

फैसला १७ दिसम्बर को सुनाया जायेगा।

———

सेन्ट्रल बैंक आफ इन्डिया

गवर्नमेन्ट आफ इंडिया के अर्थ-विभाग से प्रकाशित की गई एक विज्ञप्ति द्वारा यह घोषणा की गई है कि रिजर्व बैंक आव इंडिया के सब से पहले सेन्ट्रल बोर्ड के लिए निम्न लिखित ८ डायरेक्टर नियुक्त किये गये हैं—

बम्बई रजिस्टर—सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, एफ. ई. दीनशा।

कलकत्ता रजिस्टर—सर एडवर्ड बेन्थल, रायबहादुर सर बद्रीदास गोयनका।

दिल्ली रजिस्टर—खाँ बहादुर नवाब सर मुजामिल्ला खाँ।

अलीगढ़-सर सुन्दरसिंह मजीठिया।

मदरास रजिस्टर—दीवानबहादुर एम. रामचन्द्र राव।

रंगून रजिस्टर—यू-चाह ओह।

सपरिषद् गवरनर-जनरल द्वारा निम्न लिखित ४ डायरक्टर नियुक्त किये जायंगे:—

सर होमी मेहता (बम्बई), ए. ए. ब्रूस (रंगून), ला० श्रीराम (दिल्ली), ओदम हाजी मोहम्मद सेठ, मदरास।

एक सरकारी अफसर भी सपरिषद् गवरनर जनरल द्वारा नियुक्त किया जायगा।

जे. डब्ल्यू. केली सी. आई. ई. करन्सी का कन्ट्रोलर।

इस प्रकार उक्त डायरक्टरों, गवरनर तथा दो डिप्टी गवर्नरों सहित रिजर्व बैंक आफ इंडिया का पूरा सेंटल बोर्ड बन जायगा।

—:—

साप्ताहिक डायरी

८ दिसम्बर, १९३४

—मनिल्ला (इटली) की खबर है कि वहां सातवें तूफान से उत्तरी लूज़ोन द्वीप में १६ फिलोपाइनी डूब गये।

—जोसफ रायटर नामक एक आस्ट्रियन को, जिसे हाल ही में पुलिस पर हमला करने के अभियोग में ६ मास की सजा हुई थी, जब दो यूरोपियन अफसर लोनावला से बम्बई ले जा रहे थे। वह चलती गाड़ी से कूद कर भाग गया।

९ दिसम्बर, १९३४

—नागेर कस्थल (मद्रास) का समाचार है कि दक्षिण ट्रावनकोर में कादिया पट्टनम के समुद्र तट पर स्थित एक गाँव में ईसाइयों तथा मुसल्मानों का एक मस्जिद के सामने बाजा बजाने पर झगड़ा हो गया जिसमें ४ ईसाई घायल हुए।

—लाहौर में मौ० हबीबुर्रहमान लुधियानवी के सभापतित्व में मजलिसे-अहरार-ए हिन्द की कार्यकारिणी की एक बैठक हुई, जिसमें कपूर्थला राज्य के विरुद्ध अहरार आन्दोलन बन्द करने का निश्चय हुआ।

—लन्दन ९ दि० के समाचार के अनुसार दो जापानी नाविक अफसरों के सिंगापुर आ जाने से पुलिस ने कई धावे मारे जिसमें कुछ कागजात जब्त किये और दोनों को सिंगापुर छोड़ने का हुक्म दिया गया।

१० दिसम्बर, १९३४

—बड़े दिनों में इन्दौर में होने वाले अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्वागत समिति ने सर्व सम्मति से म० गांधी को सम्मेलन का सभापति चुना है।

—हैदराबाद (दक्खन) की खबर है कि गोवद गांव में दो पार्टियों के झगड़े के मुकदमे का गुलबरगा के सेशनजज ने फैसला सुना दिया है जिसमें १७ अभियुक्तों को प्राण दन्ड तथा और बाकी दो को छोड़ दिया।

—श्री अभ्यंकर एम० एल० ए० अपने पैरों का इलाज कराने बम्बई पहुंच गये हैं और डा० देशमुख ने मुआयने के पश्चात कहा कि कोई खतरा नहीं है।

—इलाहाबाद का समाचार है कि स्थानीय प्रेस कर्मचारियों की एक मीटिंग पुरुषोत्तम पार्क में हुई, जिसमें यूनियन बनाने का निश्चय करने के पश्चात एक प्रस्ताव द्वारा श्री एम० एन० राय की रिहाई की माँग की गई और जब तक वे रिहा न हो, जेल बदलने की प्रार्थना की गई, जहां उनका इलाज हो सके।

—स्वर्गीय जगमोहनलाल (ढाका के एक प्रख्यात व्यापारी) पटना-यूनिवरसिटी को अपने नाम पर एक मेडिकल कालेज स्थापित करने के लिये ४ लाख रुपये देने की वसीयत कर गये हैं।

—खबर है कि अ० भारतीय हिन्दू महासभा के कानपुर अधिवेशन में इस प्रस्ताव पर विचार किया जायगा कि ज्वाइन्ट पार्लमेंटरी कमेटी की सिफारिशों व साम्प्रदायिक फैसले के सम्बन्ध में हिन्दू दृष्टिकोण को समझाने के लिये एक डेपूटेशन लन्दन भेजा जाय।

—महाराजा कपूर्थला ने आज एक भाषण में यह स्पष्ट घोषित कर दिया है कि रियासत के प्रधान-मंत्री के पद पर कर्नल फिशर (राजनैतिक विभाग) को नियुक्त किया जायगा। फिलहाल यह नियुक्ति २ वर्ष के लिये होगी। कर्नल फिशर जनवरी १९३५ के अन्त तक अपने पद का चार्ज ले लेंगे।

—आज चारसद्दा के अ० कमिश्नर ने स्थानीय जेल में एक अदालत की, और करीब ४०० व्यक्तियों को जिन्हें चिमनई नामक प्रख्यात बागी की सहायता करने के अभियोग में जाब्ता फौजदारी की ११०वीं धारा के अनुसार गिरफ्तार किया गया था, अदालत में पेश किया गया। गिरफ्तार व्यक्तियों को ५००)-५००) की जमानत पर छोड़ दिया। साथ ही उन्हें नोटिस दिये गये कि नकचलनी से रहने के लिये उन से क्यों दो-दो हजार रुपये की जमानत न ली जाय।

—लन्दन का १० दिसम्बर का समाचार है कि मजदूर दल के सदस्य मि० मार्गन जोन्स के एक प्रश्न का उत्तर देते हुये मि० बटलर ने कहा कि श्री शरतचन्द्र बोस को असेम्बली में उपस्थित होने की इजाजत नहीं मिल सकती क्योंकि आप राजबन्दी हैं और देश की आन्तरिक शान्ति को कायम रखने के लिये आपको जेल में रखना आवश्यक है।

११ दिसम्बर १९३४

—चटगाँव की खबर है कि चार विचाराधीन कैदियों को जेल अनुशासन भंग करने के अपराध में ८-८ मास की सख्त सजा दी।

—बंगाल के जिलों में ३५२१ मनुष्यों ने, १९३४ में आत्म हत्यायें की।

—मिदनापुर जिला मजि० ने बंगाली भद्रलोक नवयुवकों का मिदनापुर के मुख्य-मुख्य स्थानों में साइकिल पर घूमना बन्द कर दिया है।

—मदरास कौंसिल में जस्टिस पारटी की एक बैठक बोब्बली के राजा की अध्यक्षता में हुई जिसमें जस्टिस पारटी के चीफ व्हिप चेट्टी नाद के कुमार राजा मि० एम० ए० मुथिया चट्टी (मदरास के मेयर) पर यह दोष लगाया कि उन्होंने पारटी का साथ न देकर कांग्रेसी उम्मेदवार की सहायता की। उन्होंने प्रस्ताव पास होने के पूर्व ही इस्तीफा दे दिया जो पास कर लिया गया।

१२ दिसम्बर १९३४

—लखनऊ में ह्विट रोड तथा लटूश रोड के संगम पर तीन शस्त्र-धारी व्यक्तियों ने एक बनिये पर आक्रमण किया और घायल करके भाग गये। मुन्नन नामक एक व्यक्ति की गिरफ्तारी हुई है।

—कानपुर काटन मिल के ६०० कर्मचारियों ने वेतनों में वृद्धि कराने के लिये हड़ताल करदी है और सुनते हैं मिल-मालिकों ने नोटिस निकाला है कि यदि वे काम पर न आवेंगे तो उनकी जगह दूसरे आदमी लगा लिये जायंगे।

—मालूम हुआ है कि भारत की आर्थिक कठिनाइयों के कारण परशिया और अफगानिस्तान के चाँदी के सिक्कों को भारत में आने से रोकने पर भी, सुना जाता है, लगभग ५००० सिक्के भारत में रोजाना आ रहे हैं।

—पंजाब यूनिवरसिटी के एक एम० ए० ने शेखूपुरा में धोबी का कार्य आरम्भ कर दिया है।

—:०:—

साप्ताहिक 'अर्जुन'

का

श्रद्धानन्द-अंक

२३ दिसम्बर को प्रकाशित होगा

राष्टीयता क परम उपासक राष्ट्रीय शिचा के पिता, दलिता क सच्चे हितचिन्तक महान् हिन्दू महान् भारतीय अमरशहीद श्रद्धय स्वा० श्रद्धानन्द का कौन नहा जानता। उन्हीं की वी पराय स्मृति म अङ्क पकाशित हागा।



अमरशहीद श्रद्धेय स्वा० श्रद्धानन्द

इस मे कविवर रवीन्द्र नाथ, देशभक्त सी० एफ० एन्डरूज, श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीप्रकाश, श्री कोंडा वेंकटपैप्या, कुमार गंगानन्द सिंह, श्री हरदयाल नाग सत्यमूर्ति आदि के लेख प्रकाशित होंगे।

म० गांधी, श्री राजेन्द्रप्रसाद आदि अन्य नेताओं के लेखों के लिये कोशिश की जा रही है।

अंक को बड़ी सजधज के साथ निकाला जा रहा है। अनेक सुन्दर चित्र भी दिये जावेंगे।

विज्ञापनों के लिये विज्ञापनदाता जल्दी करें। समय बहुत थोड़ा है।

मैनेजर, साप्ताहिक 'अर्जुन' देहली।

प० रामगोपाल विद्यालंकार प्रिंटर और पब्लिशर के लिये अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार देहली में छपा।

वर्ष १

अङ्क ३०

सोमवार २४ जून सन् १९३५ ई० Monday 24th June 1935.



स्वर्गीय देशबन्धु चितरञ्जनदास

वार्षिक मूल्य ३।।)] सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार [एक अङ्क का मूल्य =)

विषय-सूची

—::*::—

विषय		लेखक	सख्या
१ सप्ताह क प्रसिद्ध व्यक्ति			मुखपृष्ठ
२ सप्ताह की डायरी			३
३ सप्ताह की हलचल			४
४ सम्पादकीय			५
५ देशबन्धु चतरञ्जनदास			७
६ वदना	(कविता)	श्री छैलबिहारी दीक्षित	८
७ मोता	,,	श्री जगन्नाथप्रसाद उपाध्याय	८
८ प्रकृति प्रेम	,,	श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र	८
६ राष्ट्र-भाषा		श्री 'कण्टक'	८
१० हमारी चित्रावली (१)			६
११ अशिक्षा और दरिद्रता			१०
१२ महिला जगत्			
स्त्रियों को पत्र-व्यवहार आयोजना		श्री॰ बा॰ वि॰ ठाकुर	११
आप चूड़ियाँ किस से पहनती हैं?		श्री किशोरीदास	११
स्त्री श्रमजीवियों की समस्या			१२
१३ उपनिवेश स्वराज्य ग्राविष्य मडल का विकास		श्री रमण वर्मा	१३
१४ सफाई पर गांधी जी			१५
१५ अपराधी कौन? (उपन्यास)		श्री देव	१६
१६ योषापस्मार या हिस्टीरिया		श्रीमती राजकुमारी मिश्रा 'रमा'	१७
१७ बाह्मण का आत्मोत्सर्ग			१७
१८ सूर्योदय के नियम			१७
१६ साहित्य समालोचन			१८
२० हमारी चित्रावली (२)			१६
२१ सिनेमा की दुनियाँ			
अमेरिका में नया फिल्म		श्री लक्ष्मणप्रसाद छेदीलाल	२०
ऐम फिल्म किस लिये		श्री सत्यव्रती	२०
२२ दस्तकार	(कहानी)	श्री बलदेव मिश्र	२१
२३ आँखों में धूल		श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र	२२
२४ बालबन्धु-परिषद्			२३
२५ व्यापारिक ससार			२५



साप्ताहिक डायरी

१५ जून

—मेरठमें शोराब दरवाजेके पास चमारों और मुसलमानों में झगड़ा हो गया, जिससे एक दर्जन से अधिक चमार घायल हुये हैं। झगड़े का कारण चमारों का एक धर्मशाला बनाना बताया जाता है। पुलिस मामले की तहकीकात कर रही है।

—बम्बई हाईकोर्ट में महन्त दामोदरलाल ने नाथद्वारा विषयक जो दावा किया हुआ था, उसे वापिस लेने की उन्होंने दरख्वास्त दे दी है।

—गाजियाबाद म्युनिसिपैलिटी ने युक्तप्रान्तीय सरकार द्वारा बनाये गये नियमों के अनुसार कमेटी की सीमा में पतंग उड़ाना मना कर दिया है।

—धर्मी का पति गोपा और भाई बाथिया सिरोही वालों के बहकाने में आ गये हैं और वह एकाएक बम्बई से गायब हो गये हैं।

१६ जून

—कनाडाका 'इम्प्रेस आफ ब्रिटेन' नामक जहाज "काफरिस्तान" नामक ब्रिटिश स्टीमरसे मकलेगन प्वाइंट तथा फेमपाइन्ट के बीच कोहरे के कारण टकरा गया।

—शिकारपुर के हिन्दुओं ने १००० आठ क्वेटा में भूकम्प से मरे हुये हिन्दुओं के लिये किये। २०० ब्राह्मणों ने आठ सरकार की रसम अदा की। ३००० बच्चों के सिर मुंडवाये गये।

—दादू (करांची) में बड़े जोर का हवाई तूफान आने से मकानों की छतें उड़ गई और वृक्ष जड़ से उखड़ गये।

—आगरा की एक बारात मोटर लारी में सवार थी। लारी के टकराने से बारात के ४ आदमी मर गये और २१ घायल हुये।

१७ जून

—लाहौर की गुफारखां की फीरोज मिल्स में भीषण आग लगने के फलस्वरूप ४ व्यक्ति जल कर मर गये ५००००) की हानि हुई बताई जाती है।

—लाहौर म्युनिसिपैलिटी ने क्वेटा भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ १५०००) देने का निश्चय किया है।

—सरकार की ओर से यह प्रकाशित हुआ है कि क्वेटावासियों को मलबे के अन्दर दबी हुई सम्पत्ति के सम्बन्ध अपनी दरख्वास्त डिप्टी कमिश्नर या पोलीटिकल एजन्ट के पास छपे हुये फार्मों पर तुरन्त भेज देनी चाहिये।

—पं० बचरदास दोशी को अहमदाबाद जिला मजिस्ट्रेट की आज्ञा का उल्लंघन करने के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया गया है।

—अजमेर शूटिंग केस के सम्बन्ध में दो गिरफ्तारियां और हुई हैं, जिन में से एक गवर्नमेंट कालिज के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी हैं।

—अमृतसर सदर पुलिस स्टेशन के सब इन्सपेक्टर मलिक बशीर हयात को रिश्वत लेने के अभियोग में बरखास्त कर दिया गया है।

—महाराजा भावनगर के जन्म दिवस के समारोह में विद्यार्थियों और अनाथालयों में इनाम बांटे गये। अनेक विधवाओं के लिये आजीवन पेन्शनें नियत की गई।

—पोरबन्दर स्टेट में १९३३-३४ में १४ लाख की बचत हुई है।

—७ जून को समाप्त होने सप्ताह में बंगाल के विभिन्न जिलों में ३६ डाके पड़े हैं।

—बम्बई के श्रमजीवी नेता श्री० नैयर सेठ को भारतीय दण्ड विधान की धारा १२४ "अ" के अनुसार गिरफ्तार कर लिया है।

—फकीरचन्द अग्रवाल नामक एक मारवाड़ी ३०००) के नोट लिये हुये बड़ा बाजार कलकत्ते में गुजर रहा था ३ व्यक्तियों ने उस पर हमला कर के रुपया छीन लिया और फरार हो गये।

—बरेली में एक पति ने अपनी स्त्री को इसलिये मार डाला कि वह उसके साथ उसी समय चलने को राजी न हुई।

—लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त इन्द्रपाल की अपील हाईकोर्ट में आज पेश हुई।

—मि० सी० डब्ल्यू० कारसन ग्वालियर के नये अर्थसदस्य बनाये गये हैं।

१९ जून

—मिडिलवेस्ट (अमेरिका) में बाढ़ आने से १७८ आदमी डूब गये।

—लाहौर केन्द्रीय टेलीग्राफ आफिस के कर्ताराम नामक एक क्लर्क को गबन के अभियोग में १२ साल सख्त कैद की सजा दी हुई है।

—बम्बई खुफिया पुलिस ने गिरगांव के कई मकानों की तलाशी ली और जब्तशुदा साहित्य बरामद किया।

—इलाहाबाद पुलिस ने 'अभ्युदय' प्रेस पर छापा मारा और वहां से एक सार्वजनिक नोटिस की असली कापी अपने साथ ले गई।

—झुंझुनू पुलिसने एक चोरी के सम्बन्ध में लाडनू (मारवाड़) के एक सुनार के घर पर छापा मारा और ६० तोले सोना और ३०६ तोले चांदी बरामद की।

१८ जून

—तिरुकल इकन्द्रम (मद्रास) में भीषण अग्निकांड के कारण एक कार, एक होटल, तीन दुकान तथा एक मकान जल कर राख हो गया। एक लाख की हानि का अन्दाजा किया जाता है।

नेब्रास्का, टैक्सास, ओकलहोमा आदि में ६० लाख डालर का नुकसान हुआ है।

—कोलम्बो के एक स्कूल से कुछ विद्यार्थी साहसिक कार्यों के करने के लिये घर से जंगल में भाग गये।

—खबर है कि नये शासन विधान के मातहत पंजाब कौन्सिल के चुनाव के लिये अभी से तैयारियां हो रही हैं। सर फजलीहुसैन के मुकाबिले में अताउल्लाशाह बुखारी को खड़ा होने पर जोर दिया जा रहा है।

—पीर शाहनशाह ने एक वक्तव्य द्वारा सरकार से खान अब्दुलगफ्फार खां को साबरमती जेल से बदलने की प्रार्थना की है।

—बम्बई कारपोरेशन में गोवध बन्द कराने की एक सुन्दर योजना पेश की गई है।

—बम्बई से चलने वाली मद्रास मेल गाड़ी के इंजिन पर घोर वर्षा के कारण लाइन के पास की पहाड़ी से भारी पत्थर गिर पड़ा।

—राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू ने करांची में कांग्रेस-भवन का शिला न्यास किया।

२० जून

—म० गांधी को एक लाख की प्रतिज्ञान थैली देने के लिए इन्दौर में हरिभाऊ जी सरगर्मी से आन्दोलन कर रहे हैं।

—ट्रांसवाल (दक्षिण अफ्रीका) कौंसिल में यह कानून बन गया है कि एशिया निवासी गोरी मेमों को नौकर न रख सकें।

—ग्वालियर के मन्दिर से २०००) की स्वर्ण मूर्तियां चोरी चली गयी हैं।

—बम्बई सरकार ने फ्री प्रेस जरनल की २००००) रु० की जमानत जप्त कर ली है। क्वेटा में प्रवेश निषेध पर लिखे गये लेखों पर सरकार को आपत्ति थी।

—हरिजन सेवक संघ कालीकट में एक चमड़े का कारखाना खोलने पर विचार कर रहा है।

—पार्लमेंट के एक सदस्य ने अपनी पत्नी के विरुद्ध तलाक की दरख्वास्त दी है, क्योंकि आगा खां के पुत्र से उसका अनुचित सम्बन्ध था।

२१ जून

—पेशावर में भयंकर अग्निकांड से बहुत भारी क्षति हुई है। आग बुझाने के लिए फौज को बुलाना पड़ा।

—शेखूपुरा के समीप चनाब का बन्द टूट जाने से कई गांव बह गये। तीन आदमी लापता हैं।

—ईरान के राजदूत ने एक विज्ञप्ति द्वारा सब भारत-प्रवासी ईरानियों को अंग्रेजी पोशाक पहनने की सलाह दी है।

—करांची कारपोरेशन ने एक मत से राजेन्द्र बाबू को अभिनन्दन पत्र देने का निश्चय किया है।

—शोलकी (गोंडल) बस्ती में बिजली गिरने से १४ आदमी मर और चार घायल हो गये।

सप्ताह की हलचल

केन्द्रीय सहायता कमेटी

राष्ट्रपति कराची में

वायसराय भी क्वेटा जावेंगे

कलकत्ता सहायता नहीं देगा

राष्ट्रपति बा० राजेन्द्रप्रसादजी ने निम्न लिखित सदस्यों की क्वेटा के भूकम्प पीड़ितों की सहायता करने के लिये सेन्ट्रल रिलीफ कमिटी नियुक्त कर दी है—

सेठ जमनालाल बजाज सरदार वल्लभभाई पटेल प० मदनमोहन मालवीय सर प्रफुल्लचन्द्रराय श्री० भूलाभाई देसाई सेठ घनश्यामदास बिड़ला, श्री० मथुरादास विसन, जो डा० खानसाहब, श्रीमती पेरिन कप्तान, मि० जमशेदमहता शेख अब्दुलमजीद दीवान बहादुर मुरलीधर, डाक्टर गोपीचन्द लाला दुनीचन्द (अम्बाला) सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर मौ० अब्दुलकादिर कसूरी लाला दुनी चन्द [लाहौर] लाला घनश्यामराम (डेरागाजीखाँ), श्री० जयरामदास दौलतराम तथा डा० चोथराम। डा० चोथराम उक्त कमेटी में सेक्रेटरी के रूप में कार्य करेंगे।

राष्ट्रपति बा० राजेन्द्रप्रसाद ने सिंध के कमिश्नर से भी लगभग ४५ मिनट तक बातचीत की। ज्ञात हुआ है कि उन्होंने यह बात बहुत ज़ोर देकर कही कि गैर सरकारी संस्थाओं को यदि क्वेटा में प्रवेश करने दिया जाता तो अनेक व्यक्तियों के जीवन की रक्षा हो जाती और कुछ सम्पत्ति भी बचा ली जाती।

वायसराय क्वेटा जावेंगे

भूकम्प में हुई क्षति को अपनी आँखों से देखने के लिये वायसराय ? जुलाई को वहाँ जाने वाले हैं। कहते हैं कि आप स्थानीय अधिकारियों से क्वेटा के भविष्य के बारे में विचार विनिमय करेंगे। आप के आने तक मि० स्टग स्पेशल भूकम्प कमिश्नर भूकम्प-पीड़ित इलाके की पैमायश शुरू कर देंगे।

कलकत्ता सहायता न देगा

गत १९ मई को यूरोपियन ग्रुप के नेता मि० हालमस ने कलकत्ता कारपोरेशन की बैठक में क्वेटा के भूकम्प-पीड़ितों की सहायता के लिये खोले गये वाइसराय फंड में कारपोरेशन की ओर से १५,०००) दिये जाने का प्रस्ताव उपस्थित किया। थोड़ी देर तक वादविवाद होने के पश्चात डिपुटी मेयर ने उक्त प्रस्ताव को अनियमित ठहरा दिया। डिपुटी मेयर ही उक्त बैठक के अध्यक्ष थे।

७५ मील भूमि फटी

'स्टेट्समैन' का विशेष सम्वाद दाता लिखता है कि ३१ मई को क्वेटा में जो भूकम्प हुआ, उसमें मस्तुंग और कलात के बीच में ७५ मील तक पृथ्वी में दरारें फट गई है। यह दरार शुरू में ७ फीट से लगाकर २० तक चौड़ी है और आखिर में २३ इंच चौड़ी है।

लोगों का कथन है कि भूकम्प से पहले चिलतान की पहाड़ियों में से एक विचित्र रोशनी उठी, जिससे एक दम चारों ओर प्रकाश हो गया। यह रोशनी दरार के साथ साथ बढ़ती हुई दृष्टिगोचर होती थी।

भूकम्प से कलात के पास एक प्याला नुमा कुआँ बन गया है।

सिविल प्रबन्ध

बलोचिस्तान के एजेन्ट सर नार मन केटर शिमला से क्वेटा लौट आये हैं। आशा है वह इस सप्ताह के अन्त तक फौज से अब्ज़ा ले बलोचिस्तान का प्रबन्ध सम्भाल लेंगे। शिमला से एक आर्डिनेन्स जारी करके उन्हें वहाँ काम करने के लिये विशेषाधिकार दिये जायेंगे ताकि सिविल अधिकारी लूट मार रोक सकें और सफाई करा सकें आवश्यकता पड़ने पर लूट के बालकों को अलग करा सकें, तथा अनुमति लेकर को क्वेटा से बाहर निकाल सकें।

जर्मनी की नौसेना

ब्रिटेन से संधि

लण्डन में १८ जून को वैदेशिक मन्त्री सर सेम्युअल होर ने एक विज्ञप्ति द्वारा यह घोषणा करदी कि ब्रिटिश गवर्नमेंट ने जर्मन सरकार के उस मसविदे को स्वीकार कर लिया है, जिसमें उसने अपनी नौसेना ब्रिटिश साम्राज्य की नौसेना का ३५ प्रतिशत रखने की प्रार्थना की थी। ब्रिटिश गवर्नमेंट उक्त मसविदे को भविष्य में नौसेना सम्बन्धी शक्ति को सीमित करने के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण समझती है। उसको यह भी पक्का विश्वास है कि समझौता हो चुका है और यह समझौता दोनों राष्ट्रों के लिये निश्चित रूप से स्थाई होगा। आशा है कि संसार के समस्त राष्ट्रों की नौसेना को सीमित करने के लिये भी यह मसविदा अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। ब्रिटिश गवर्नमेंट जर्मनी की सरकार द्वारा सुझाये गये उन तरीकों से भी सहमत हो गई है जिनके अनुसार जर्मनी में नौसेना को ३५ और १०० के अनुपात में सीमित किया जावेगा।

पनडुब्बियों के वज़न को जर्मनी ब्रिटेन के मुकाबले में ४५ प्रतिशत तक बढ़ा सकेगा।

कानफरेन्स की आयोजना

फ्रांस को ब्रिटिश गवर्नमेंट ने अपने विशेषज्ञों को लण्डन में भेजने के लिये पहले ही लिख दिया है जिससे आगामी नौसेना कान्फरेन्स पहले ही से पूरी तैयार की जा सके। इसी प्रकार से इटली तथा रूस को भी अपने २ विशेषज्ञों को उक्त तैयारी के लिये लण्डन भेजने के लिखा गया है।

मि० एडिन पैरिस जायेंगे

मि० एन्थोनी एडिन २० जून को पेरिस जायेंगे और वह वहाँ जा कर फ्रांस की गवर्नमेंट के दिमाग से एन्ग्लो-जर्मन सन्धि से उत्पन्न हुये विचारों को हटाने का भरसक प्रयत्न करेंगे।

फ्रांस की महत्वकांक्षा

उक्त समझौते के सम्बन्ध में फ्रांस गवर्नमेंट ने जो पत्र ब्रिटिश गवर्नमेंट को लिखा है उससे यह स्पष्टरूप से सिद्ध होता है कि फ्रांस की सरकार अपनी नौसेना को और भी अधिक बढ़ाना चाहती है।

जर्मन गवर्नमेंट अपना कार्यक्रम पेश करेगी

आगामी कुछ ही दिनों में ब्रिटेन तथा जर्मनी के प्रतिनिधियों में इस बात का भी निबटारा हो जायगा कि भविष्य में नौसेना सम्बन्धी सामग्री दोनों देशों में कितनी मात्रा तक तयार की जा सकेगी।

श्रीमती कमला नेहरू

आपरेशन सफलतापूर्वक होगया

बर्लिन से खबर मिली है कि १८ जून को श्रीमती कमला नेहरू का आपरेशन सफलतापूर्वक समाप्त होगया। डा०अटल ने बर्लिन से माता स्वरूपरानी नेहरू के पास भुवाली के पते निम्न तार भेजा है—

'कमला नेहरू का आपरेशन अच्छी तरह हो गया।'

यह खबर तार द्वारा प० जवाहरलाल नेहरू के पास जेल में भी भेज दी गई है।

पुलिस की सरगर्मियां

क्या नया केस चलेगा ?

दैनिक 'अर्जुन' के गाजियाबाद स्थित सम्वाददाता को मालूम हुआ है कि पुलिस एक नया षडयन्त्र केस चलाना चाहती है। मेरठ के खास पर्चों के तथा अजमेर गोली कांड को भी उसी में मिलाया जायगा। मथुरा, खुरजा, खेकड़ा, गाजियाबाद, मेरठ आदि स्थानों पर बहुत सी तलाशियाँ हुई। बहुत से गिरफ्तार भी किये गये हैं।

अजमेर में एक अभियुक्त ने पुलिस को लम्बा बयान दिया है, ऐसा भी मालूम हुआ है। पुलिस बहुत सतर्क हो गई है। ख्याल किया जाता है कि और भी गिरफ्तारियाँ होंगी। कई जमानत पर रिहा भी हो गये है।

इण्डिया बिल का द्वितीय वाचन

लार्ड सभा में इण्डिया बिल का द्वितीय वाचन बहुमत से पास हो गया। इसका विरोध भी खूब हुआ। एक्सटर के बिशप लार्ड विलियम गेस्की ने मेसिल ने कहा कि आज कल सब राष्ट्रों में प्रजातन्त्र फेल हो रहा है। इसलिये उसे भारत में भी प्रचलित नहीं करना चाहिये।

चीन जापान का संघर्ष

सरकार स्तीफा देगी

चीन और जापान की स्थिति अभी तक पहले जैसी ही भीषण है। दो चार जगह गोलियाँ चलने की भी खबरें मिली हैं। चीन सरकार ने ६ प्रधान शक्तियों से बीच में पड़ने की प्रार्थना की है लेकिन किसी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की। जापान की कुछ शर्तें तो स्वीकार हो भी गई हैं, लेकिन सब शर्तों को स्वीकार करना कठिन है। नानकिंग सरकार के अधिकांश सदस्यों की राय तो यह है कि सरकार स्तीफा देदे, लेकिन शर्तों पर हस्ताक्षर न किया जाय।

अर्जुन

सोमवार ता० २४ जून १९३५ ई०

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

संसार में शक्ति का दौरदौरा

शक्तिहीन होना ही पाप है

(ले०—श्री० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

जापान चीन पर हावी होता जा रहा है। उत्तरीय चीन पर तो उसका अबाधित राज्य सा स्थापित हो रहा है। संसार जानता है कि चीन प्रान्तों पर अधिकार करने का जापान को कोई अधिकार नहीं है। चीन भी इस बात को समझता है। परन्तु वह क्या करे नानकिंग की सरकार के सिर पर जब जापान का अल्टीमेटम फेंका जाता है तो सिवा सिर झुकाने के उसके पास कोई उपाय शेष नहीं रहता। वह सिर झुकाकर जापान की आज्ञा को मान लेता है और अपने शरीर के प्यारे अङ्गों को बलात्कारों द्वारा कटते देखकर चुप रह जाता है। इसके कारण क्या हैं?

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के समझने वाले जानते हैं कि इसके मुख्य कारण दो हैं। एक तो चीन की निर्बलता, और दूसरा अन्य देशों की बलात्कार के रोकने में अशक्ति। चीन की अशक्ति उसकी राजनीतिक परिस्थिति का परिणाम है। आज भी चीन पर एक ही शासन का पूरा अधिकार स्थापित नहीं हो सका। चीन दलों में बंटा हुआ है। वह अपने सैनिक शरीर का पूरा स्वामी नहीं। चीन का जो भाग बोल्शेविक असर में है, उसका झुकाव रूस की ओर है। जो भाग बोल्शेविक प्रभाव में नहीं, वह बोल्शेविज्म से और इसी कारण रूस से इतना डरता है कि वह जापान को भी गनीमत समझता है। चीन के एक भाग की सरकार दूसरे भाग की सरकार पर झपटने के लिये सदा तैयार रहती है। यह घर की फूट है, जिसने चीन को सर्वथा अपाहज बना रक्खा है। जापान की सामुद्रिक, स्थलीय और हवाई युद्ध शक्ति बहुत उन्नत हो गई है। चीन उसका सामना नहीं कर सकता। घर की फूट उसे शत्रु का सुलभ शिकार बना रही है। वह जापान का सामना नहीं कर सकता।

उधर जापान की महत्त्वाकांक्षा का अन्त नहीं है। वह एक छोटा सा देश है। उसकी जनसंख्या प्रतिदिन बढ़ रही है। वह कहां रहे और अपनी रोजी कहां तलाश करे? व्यापार की वृद्धि के लिये भी जापान ऐसे स्थान टटोलता है जहां उसे दूसरी जाति की प्रतिस्पर्धा का भय न हो। जापान के आसपास के द्वीप गोरों के प्रभुत्व में आ चुके हैं, एक ओर अमरीका ने अपने पांव फसा रखे हैं, तो दूसरी ओर इंग्लैंड का साम्राज्य फैला हुआ है। जापान अपने को चारों ओर से फौलादी दीवारों से घिरा हुआ पाता है केवल एक ही दिशा उसे ऐसी दिखाई देती है जिधर उसका पांव बढ़ सके। वह दिशा चीन की है। जापान शक्तिसम्पन्न है और चीन शक्तिहीन है। जापान चीन में अपना प्रभुत्व चाहता है। वह चाहता है कि चीन में उसका हाथ ऊंचा रहे। व्यापार चले तो जापान का, यदि पूंजी लगे तो जापान की। यदि चीन को इंजिनियरों या अर्थविशेषज्ञों की आवश्यकता हो तो वह जापान से ही आने चाहियें। यदि चीन की सरकार को रुपया कर्ज लेने की जरूरत हो तो जापान से ही लेना चाहिये। जापान इस प्रकार से चीन पर अपना अबाधित प्रभुत्व चाहता है। चीन की अशक्ति उसकी सहायता कर रही है। चीन का उत्तरीय भाग जापान के वश में आ रहा है

यदि कोई दूसरा समय होता तो जापान इस स्वच्छन्दता से और बेफिक्री से मनमानी न कर सकता, क्योंकि तीन शक्तियां उसका हाथ पकड़तीं। अमरीका इंगलैंड और रूस—यह तीन शक्तियां ऐसी हैं, जो चीन पर जापान के प्रभुत्व को पसन्द नहीं कर सकती। इसमें उन देशों के राजनीतिक हित और गौरव को बड़ी ठेस पहुंचती है। अमरीका ने चीन से बड़ा लाभ उठाया है। लगभग एक शताब्दी तक चीन का शासन अमरीका के धन और जन पर ही चलता रहता है। जापान उस असर को दूर कर रहा है। वह अमरीका के गले में हाथ देकर बाहिर निकाल रहा है। अमरीका का हित और गौरव चाहता है कि वह जापान के आक्रमण को रोके, पर अमरीका ने अपने लिये एक नीति बना रखी है जिसे मनरो सिद्धांत के नाम से पुकारा जाता है। उस सिद्धांत का अभिप्राय यह है कि अमरीका न अपने इलाके में किसी अन्य देश का दखल चाहता है और न दूसरों के मामले में स्वयं हस्तक्षेप करना चाहता है। अमरीका संसार में रहता हुआ भी संसार से अलग रहना चाहता है, क्योंकि उसे साम्राज्य की लालसा नहीं है। उसके पास भूमि और द्रव्य की कमी नहीं है। जापान चीन से अमरीका को निकाल रहा है, तो भी अमरीका चुप है। जापान को मालूम है कि अमरीका लड़ना नहीं चाहता।

दूसरा देश जो जापान की वर्तमान नीति से असन्तुष्ट है, इंग्लैंड है। इंग्लैंड अपने को पूर्व का स्वामी समझता है। भारत के कारण एशिया में उस की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। इस स्थिति की रक्षा के लिये पहले इंग्लैंड व जापान ने बड़ी गहरी सन्धि कर रखी थी वह सन्धि जापान और इंग्लैंड के हितों को एक साथ बांधती थी, उसका कारण भी था। रूस दोनों का शत्रु था। इंग्लैंड भी रूस से डरता था और जापान भी। दोनों मित्र बन गये। इंग्लैंड ने रूस के दलन में जापान की खूब सहायता की। रूस कुचला गया, और अन्त में इंग्लैंड का मित्र बन गया। अब इंग्लैंड को रूस के विरुद्ध जापान की आवश्यकता न रही। दोनों की सन्धि टूट गई। जापान स्वतन्त्र हो गया, और उसने चीन पर प्रभुत्व जमाना आरम्भ कर दिया। अब इंग्लैंड के सामने मार्ग तो स्पष्ट पड़ा हुआ है। उसे जापान का हाथ रोकना चाहिये परन्तु जापान जानता है कि इंग्लैंड लड़ना नहीं चाहता। शायद गत दो सदियों में इंगलैंड की स्थिति इतनी कमजोर कभी नहीं हुई, जितनी आज-कल है। उसने चादर को नाप बिना ही हाथ-पांव फैला लिये थे जो लाचार होकर सुकेड़ने पड़े। जितना फैलाव है, वह भी समाला नहीं जा रहा है। आयरलैंड स्वतन्त्र हो ही गया। मिसर और भारत क्रान्ति के द्वार पर खड़े हैं उपनिवेश तो मौका ही देख रहे हैं। आज इंगलैंड पर कोई मुसीबत आये तो वह बिलकुल अलग होने को तैयार बैठे हैं। इंगलैंड एक ऐसे सम्मिलित कुटुम्ब का स्वामी है जिस का प्रत्येक सदस्य अलहदा होने की धमकी दे रहा है। ऐसे कुल के बुजुर्ग के लिए दुश्मनों से लड़ना बहुत कठिन है। इंग्लैंड लड़ाई से घबराता है और इस बात को जर्मनी और जापान समझ गये हैं, केवल इंग्लैंड ही क्या — योरप के बहुत से देश युद्ध से घबराये हुए हैं। उनकी इस निर्बलता से लाभ उठा कर जर्मनी और जापान — और इटली — मन मानी कर रहे हैं। १९१४ से पूर्व क्या कोई अनुमान भी लगा सकता था कि जापान चीन को खा जायगा और इंग्लैंड दूर बैठा हुआ टुकर टुकर मुंह ताका करेगा।

तीसरा देश, जो जापान की बढ़ती से असन्तुष्ट हो सकता है, रूस है। रूस और चीन की सीमा मिलती है। स्वाभाविक है कि यदि चीन की निर्बलता से लाभ उठाया जा सके तो रूस को पीछे न रहना चाहिये, परन्तु दो बातें ऐसी हैं, जो रूस को लड़ने से रोकती हैं, पहली बात तो यह है कि रूस की पूर्वीय सीमा उसके केन्द्र से बहुत दूर है, इस कारण पूर्वीय सीमा पर युद्ध करना उसके लिए अत्यन्त कठिन है। गत रूस जापान युद्ध में यह सिद्ध हो चुका है। अब रूस आसानी से पूर्वीय युद्ध में शामिल नहीं होगा। दूसरी बात यह भी है कि रूस का वर्तमान बोल्शेविक शासन विदेशी युद्ध के विरोध में ही स्थापित हुआ है। जार और उसके पीछे

सम्पादकीय विचार

एक लिपि की आवश्यकता

हमने गत सप्ताह अन्त प्रान्तीय साहित्य संघ की उपयोगिता बताते हुए लिखा था कि इससे प्रान्तीयता की क्षुद्र भावना का विनाश होगा। प्रान्तीयता की भावना को नष्ट करने के लिए लिपि के एकीकरण की भी अत्यन्त आवश्यकता है। यदि सब प्रान्तीय भाषाओं की लिपि एक हो जाय तो न केवल सब प्रान्तीय भाषायें एक दूसरे के अत्यन्त निकट आ जायगी लेकिन विभिन्न प्रान्त निवासी भी एक दूसरे के पास पहुंच जावेंगे, एक दूसरे के साहित्य से, एक दूसरे की मनोवृत्तियों और विचारधाराओं से परिचित हो जायगे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने गत अधिवेशन में काका कालेलकर के संयोजकत्व में लिपि समिति नियुक्त की है। काका कालेलकर ने विभिन्न प्रान्तीय विद्वानों को निमन्त्रित किया है। हमें आशा करनी चाहिये कि वे अपनी योग्यता से सब प्रान्तों के साहित्यिकों को एक लिपि के सवाल पर सहमत कर लेंगे। लिपि के सुधार पर भी उक्त लिपि समिति विचार करेगी। प्राचीन लिपि विज्ञान के अद्वितीय विद्वान महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचन्द ओझा और प्रेस टाइप की मशीनरी के आविष्कर्ता हरि जी गोविल आदि को भी निमन्त्रित किया गया है। यदि एक संशोधित लिपि पर सब विभिन्न प्रांतीय विद्वान सहमत हो जावें तो प्रांतीय-भाषाओं की प्रेस सम्बन्धी बहुत सी कठिनतायें भी दूर हो जावेंगी और वे बहुत उन्नत हो सकेंगी। हमें निश्चय है कि यदि इस दशा में गम्भीरता, लगन और धैर्य से प्रयत्न किया गया, तो इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

मध्यम श्रेणी के लोगों के हाथों से रूस की प्रजा ने राष्ट्र शक्ति इसीलिये छीन ली कि वह स्वदेश के हित को विदेशी युद्ध पर कुर्बान कर रहे थे। साम्यवादी सरकार लड़ाई में नहीं पड़ना चाहती।

इस प्रकार अमरीका, इग्लैंड और रूस लड़ाई छेड़ने से घबराते हैं। जापान इस स्थिति को समझता है और उससे लाभ उठाना चाहता है। चीन निर्बल होने के कारण जापान के आक्रमणों को रोक नहीं सकता। जापान युद्ध शक्ति के बल पर मनमाना कर रहा है। राष्ट्र संघ एक नपुंसक संस्था है, एक धोखे की टट्टी है। तब बेचारे चीन की रक्षा कौन करे।

निर्बलता राजनीति में सब से बड़ा पाप है। चीन उसी पाप का फल भोग रहा है।

दहेज की प्रथा पर बलि

आशापुरा (जयपुर) से एक मनुष्य के दहेज की वेदी पर बलिदान होने का समाचार मिला है। घटना यह बताई जाती है कि वह बरात का उचित सम्मान न कर सका और पूरा दहेज न दे सका इसपर बरातियों ने उसे खूब बुरा-भला कहा। वह अपने अपमान को सहन न कर सका। उस ने अपनी आत्म हत्या कर ली। दहेज की प्रथा ने हजारों घरों को बरबाद किया है। गरीब हजारों माता पिता अपनी शक्ति से अधिक धन देने के कारण तबाह हो गये हैं। उन्हें अपना घर-बार तक बेचने के लिए विवश होना पड़ता है। न जाने कब इस राक्षसी प्रथा का नाश होगा। यह ठीक है कि बहुत से नवयुवक यह नहीं चाहते कि उनके पिता दहेज के लिए उनके विवाह के अवसर पर इतना झगड़ा करें। लेकिन अपने पिता आदि को समझाने के लिए उनमें साहस का अभाव होता है। कन्या के पिता से उसकी प्राण प्रिय पुत्री को लेकर ही सन्तोष करने वाले अनेक नवयुवक मिल जाते हैं लेकिन आवश्यकता यह है कि वे निर्भय होकर अपने वृद्धजनों को कह दें कि दहेज की चर्चा न करें। बिना साहस के दहेज की राक्षसी प्रथा कभी दूर नहीं हो सकती।

राजेन्द्रबाबू की अपील

यह जान कर क्वेटा के भूकम्प पीड़ितों को अवश्य सन्तोष होगा कि राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू ने उनकी सहायता के लिये बड़े जोरों से काम करना शुरू कर दिया है। अन्य सब कार्यक्रम छोड़ कर भूकम्पपीड़ितों की सेवा को उन्होंने मुख्य कार्यक्रम बना लिया है और इसके लिये वे सिन्ध और पञ्जाब का दौरा भी कर रहे हैं। यह ठीक है कि यदि उन्हें भूकम्प के एक दम बाद क्वेटा जाने दिया जाता तो वे बहुत सी जानें बचा सकते, सम्पत्ति का बटवारा ठीक समय कर सकते तथा भूकम्प पीड़ितों को हार्दिक आश्वासन दे सकते। लेकिन देश के दुर्भाग्य से सरकार ने उन्हें यह कार्य वहां जा कर नहीं करने दिया। परन्तु इन बाधाओं से वे निराश नहीं हुए। क्वेटा से बाहर गये हुए भूकम्प पीड़ितों की सेवा का संगठन वे अत्यन्त योग्यता से करने लगे हैं। हमने अर्जुन के गतांक में भूकम्प-पीड़ितों का भविष्य समस्या की गम्भीरता पर कुछ प्रकाश डाला था। भूकम्प पीड़ितों की समस्या का अत्यन्त व्यय साध्य है। अर्जुन के प्रत्येक पाठक से हमारा अनुरोध है कि वह यथाशक्ति राष्ट्रपति के कोश में सहायता दे। अर्जुन के पाठकों ने बिहार के भूकम्पपीड़ितों की खास सेवा की थी। अब हमें फिर आशा है कि वे अपने कर्तव्य का पालन करेंगे।

जर्मनी की विजय

जर्मनी और ब्रिटेन में जो सामुद्रिक सेना सन्धि हुई है उसे पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हर हिटलर को अपने प्रयत्न और आन्दोलन में सफलता हो रही है। उसने बड़ी दृढ़ता के साथ जर्मनी की मांगों को रखा। उसने सारे संसार को यह जता दिया कि जर्मनी समानाधिकार लेकर छोड़ेगा, वह हीन स्थिति में रह नहीं सकता। सब राष्ट्रों ने पहले तो इसे गीदड़ भभकी समझा, लेकिन वह अपनी मांगों पर दृढ़ रहा। राष्ट्रसंघ में उसकी बात नहीं सुनी गयीं, उसने राष्ट्रसंघ को धता बता दिया। अब सब राष्ट्रों की आंखें खुलीं। फ्रांस जर्मनी की मांगों का विरोध करता रहा। फ्रांस के कूट सन्धि चक्र बड़े जोरों से चलने लगे। जर्मनी को घेरने वाले अनेक राष्ट्रों से फ्रांस ने सन्धि कर ली। एक बार ऐसा मालूम होने लगा कि राजनैतिक युद्ध में जर्मनी हार रहा है, लेकिन ब्रिटेन के साथ की गई इस सन्धि ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जर्मनी राजनैतिक युद्ध में भी अन्य राष्ट्रों का मुकाबला कर सकता है। वर्सेलीज सन्धि के अनुसार जर्मनी जल सेना नहीं रख सकता था, लेकिन इस सन्धि द्वारा वह अपने तटवर्ती समुद्र में बहुत शक्तिशाली नौसेना रख सकेगा। ब्रिटेन की सेना सारे साम्राज्य में फैली हुई है, जर्मनी की सम्पूर्ण सेना वहीं रहेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि उस समुद्र पर जर्मनी का प्रभाव बहुत हो जायगा। फ्रांस यद्यपि इस सन्धि को पसन्द नहीं करता, तथापि अभी तक उसे इस सन्धि का तीव्र विरोध करने का भी साहस नहीं हुआ है। स्थलसेना व वायुसेना तो जर्मनी कायम कर ही चुका है। जलसेना कायम करना कहीं अपने पुराने औपनिवेशिक साम्राज्य को पुनः प्राप्त करने की भूमिका तो नहीं है?

रूजवेल्ट का नया बिल

संयुक्तराष्ट्र अमरिका के राष्ट्रपति मि० रूजवेल्ट का नया टैक्स बिल वर्तमान समय की गति का अच्छा परिचायक है। इसके अनुसार धनिकों की व्यक्तिगत बड़ी भारी आर्थिक आय व उत्तराधिकार में मिलने वाली आमदनी पर १६ फी सदी तक टैक्स लगाया जायगा। साम्यवाद का सिद्धान्त है कि किसी आदमी को विरासत में जायदाद नहीं मिलनी चाहिये उस पर तो राष्ट्र का अधिकार है। मि० रूजवेल्ट का बिल उसी दिशा में पहला कदम है। भारत में यह कब आयगा?

विश्व-नाटक के पात्र

देशबन्धु चितरंजनदास

कलकत्ते के घाट पर श्रद्धालुओं के उद्योग से देशबन्धु चितरंजनदास की एक विशाल मूर्ति स्थापित की गई है। उस मूर्ति का सिर आकाश से बातें कर रहा है। उसका कलेवर साधारण से बहुत बड़ा है। उसकी शान निराली बतलाई जाती है।

वह मूर्ति एक उपलक्षमात्र है। देशबन्धुदास ने भारत की राजनीति में, जो ऊंचा और शानदार स्थान प्राप्त कर लिया है, मूर्ति की ऊंचाई और शान उसकी एक स्थूल निशानी है। कुछ समय के लिये, योग्यता और भाग्य के सहारे से देश के राजनीतिक जीवन में नाम पा जाना, या ऊंचे स्थान पर जा बैठना बहुत आसान है, परन्तु जाति के भूतल पर पांव के स्थायी निशान छोड़ जाना राष्ट्र के उद्धार का एक नया मार्ग बतला जाना, इतिहास के पृष्ठों पर अपने व्यक्तित्व की छाप लगा जाना इतना आसान नहीं है। देशबन्धुदास उन व्यक्तियों में से थे, जिन्होंने केवल अपने समय के लिये देश के सार्वजनिक जीवन में एक विशेष स्थान को नहीं भरा था, अपितु सदा के लिये देश की सन्तानों के हृदयों में अपना स्थान बना लिया है, क्योंकि वह तो मनुष्य की देह में एक जीता जागता आदर्श था, चमकीली देशभक्ति का एक पाठ थो, और मुर्दा दिलों का प्रोत्साहन था।

ऐसे विचारकों की कमी नहीं है जो देश को बहुत सुन्दर स्कीमें बना कर दे सकते हैं। उनमें योग्यता भी होती है और कल्पना भी। उनको योग्यता की धाक देश पर बैठ जाती है। अन्य लोग उनसे विचार लेते हैं और उसे कार्य में परिणत करते हैं एक दूसरी तरह के व्यक्ति भी बहुत मिल जायेंगे, जो दिये हुये विचारों और बनी हुई स्कीमों के अनुसार कार्य करने में चतुर होते हैं। वह कार्यकुशल व्यक्ति सेना के अच्छे उपनायक हो सकते हैं। परन्तु ऐसे विरले होते हैं, जिनमें दोनों विशेषतायें हों। जो स्कीम बना भी सके, और कार्य परिणत भी कर सकें। आदर्श की रचना भी करें, और उसकी ओर बढ़ने का रास्ता भी तलाश करे। ऐसे व्यक्ति महापुरुष कहलाते हैं क्योंकि उनमें विचार और क्रिया का उत्तम मिश्रण रहता है।

देशबन्धुदास ऐसे महापुरुषों का एक उत्तम नमूना थे। उनमें कल्पना भी थी, और क्रिया भी। वह कवि भी थे, और कारीगर भी। उन्होंने भारत की राजनीति में देश का एक नया आदर्श स्थापित किया, और उस तक पहुंचने का एक मार्ग भी आविष्कृत किया।

राजनीति में देशबन्धुदास के स्थान का निर्णय करने से पूर्व हमें यह देख लेना चाहिये कि उनके कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने के समय देश में कौनसी प्रवृत्तियें काम कर रही थीं। दो प्रवृत्तियें तो प्राचीन थीं। कुछ लोग अपने आप को लिबरल कहते थे। उनकी नीति 'नर्म नीति' कहलाती थी। वह भीख नीति के मानने वाले थे। दूसरी नीति का नाम गर्म नीति था। उसके समर्थक स्वराज्य की लड़ाई को स्वावलम्बन के



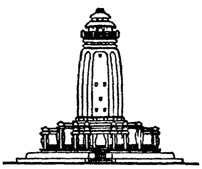
स्वर्गीय देशबन्धु चितरञ्जनदास

सिद्धान्त के अनुसार चलाना चाहते थे। जिस समय देशबन्धु ने एक मुख्य कार्यकर्त्ता के रूप में राजनीति में प्रवेश किया, उस समय कांग्रेस में से नर्मदल लगभग निकल चुका था, और राष्ट्रीय संग्राम की बागडोर गर्म दल के हाथ में, जिसके नेता लोकमान्य तिलक थे, आ चुकी थी। देशबन्धुदास लोकमान्य तिलक के एक प्रतिष्ठित अनुयायी के रूप मे राजनीतिक क्षेत्र में प्रविष्ट हुए।

उनके राजनीति में आने के पश्चात एक और प्रवृत्ति पैदा हुई। महात्मा गांधी ने राजनीति में सत्याग्रह नामक शक्ति का नवीन आविष्कार किया। वह शस्त्र देश भर के सामने रौलट ऐक्ट के विरुद्ध आन्दोलन के रूप में उपस्थित किया गया। यह एक तीसरी प्रवृत्ति थी, जो शीघ्र ही भारत के राष्ट्रीय वातावरण पर छा गई। देशबन्धुदास ने आरम्भ में इस प्रवृत्ति का थोड़ा सा विरोध किया क्योंकि उनका दिमाग उस प्रवृत्ति की असम्भवता को समझ रहा था, परन्तु मार्ग इतना आदर्शवाद से भरा हुआ था, उसके पेश करने वाले का व्यक्तित्व इतना महान् था कि देशबन्धुदास तथा उसी प्रवृत्ति के अन्य भारतवासी देर तक उस प्रवृत्ति का सामना न कर सके। उनकी देशभक्ति इतनी प्रबल थी कि केवल सम्भव असम्भव के मतभेद के कारण उन्हें महात्मा जी का विरोध करना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

देशबन्धुदास महात्मा जी के सत्याग्रह में पूरे जोर शोर से कूद गये। कलकत्ते के सर्वोत्कृष्ट कानूनदां

देशबन्धु स्मृति मन्दिर



गत १६ जून को इसका उद्घाटन किया गया था।

को जो पुष्कल आमदनी हो सकती है, उसे लात मारी। फूलों की सेज पर पले हुए शरीर को तपस्या की भट्टी में झोंक दिया। अपनी सम्पूर्ण शक्ति देश की सेवा में अर्पण कर दी। थोड़े ही समय में नवयुवक चितरञ्जनदास केवल कलकत्ते का ही नहीं, बंगाल का सर्वमान्य नेता और बताज बादशाह बन गया। उस समय देशबन्धुदास महात्मा गांधी के सब से बड़े लेफ्टिनन्ट समझे जाते थे।

यहां तक तो देशबन्धुदास का नेतृत्व महात्मा गांधी के नेतृत्व का एक अंग था, परन्तु १९२२ के पश्चात जब सत्याग्रह तथा असहयोग का दौरा देश में हलका हुआ तब एक ऐसी मुर्दनी सी छा गई कि उसके तोड़ने का कोई उपाय नहीं दिखाई देता था। उबाल उतर चुका था। देश में निराशा का अंधेरा छाया हुआ दिखाई देता था। उस समय देशबन्धुदास के दिमाग ने काम किया और उस अंधेरे में प्रकाश की रेखा पैदा की। उसने लड़ाई का एक ऐसा मार्ग निकाला, जो सत्याग्रह के प्रतिकूल होते हुये भी समय के अनुकूल था। उस मार्ग का नाम हम 'चौमुखी लड़ाई' रखते हैं।

वह मार्ग उस समय नया दिखाई देता था, परन्तु वस्तुत: वह बिलकुल नया नहीं था। वह उस नीति का ही दूसरा रूप था, जिसके समर्थक लोकमान्य तिलक थे। लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी—यह दोनों महापुरुष एक ही मन्दिर के पुजारी होते हुए भी दो मार्गों के अनुयायी थे। म० गांधी का मार्ग अधिक आदर्शवादी था, लोकमान्य तिलक का मार्ग अधिक क्रियात्मक। लोकमान्य मनुष्यों को मनुष्य समझ कर चलते थे, महात्मा गांधी उन्हें देवता बना कर आगे कदम रखना चाहते थे। महात्मा गांधी का मार्ग आदर्शप्रेमी भारतवासियों को बहुत प्यारा लगता था, परन्तु भारत से बाहिर का संसार ऐसी सीधी चाल से नहीं चलता। लोकमान्य तिलक की नीति मनुष्य के गुण और अवगुण दोनों को लेकर चलती थी, पर महात्मा गांधी की नीति मनुष्य के उत्कृष्ट अंश के आधार पर ही बनाई गई था। लोकमान्य तिलक लक्ष्य—स्वराज्य को साधनों से स्थान देते थे, महात्मा गांधी साधन सत्याग्रह को लक्ष्य—स्वराज्य—से ऊंचा स्थान देते हैं, देशबन्धुदास इन दोनों में लोकमान्य तिलक की नीति के प्रवर्तक थे। देशबन्धुदास ने, जिस नीति का आविर्भाव किया वह लोकमान्य तिलक की नीति का समयानुसार बदला हुआ रूप था।

देशबन्धु की यह विशेषता थी कि उनकी कल्पना जिस कविता को बनाती थी, उनकी कार्य शक्ति उसे कर डालती थी। वह सपना भी ले सकते थे और सपने को जीवित रूप में ला सकते थे। देशबन्धु ने जिस समय चौमुखी लड़ाई का झण्डा ऊंचा किया, और नक्कार पर चोट देकर देश के नौजवानों को ललकारा—तब एक बार तो देश भर में बिजली सी दौड़ गई। बंगाल में तो मानो आग की लपटें निकलने लगीं। भावुक बंगाल भी उससे पूर्व कभी भावुकता की वैसी जबरदस्त लहर में कभी नहीं बहा था। उस लहर में देशबन्धु ने अपना सर्वस्व बहा दिया और उनके साथ ही हजारों देशभक्तों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। उस समय देश के

(शेष पृष्ठ २७ पर)

वेदना !

[१]

अरी निष्ठुरते, तेरी राह—
दुखी हृदय की आत्म कहानी,
कसक, आह, आँखों का पानी,
इठलाती मद-भरी जवानी,
लुटा रहा यह पागल—
जीवन की कुछ संचित चाह !
अरी निष्ठुरते, तेरी राह !!

(२)

अरी निष्ठुरते, तेरी राह—
अब तक देखा बहुत तमाशा,
घटा न मन की प्रेमपिपासा,
पल पल बढ़ती रही निराशा,
डूब रहा सौंदर्य सिन्धु में—
थक कर मिली न थाह !
अरी निष्ठुरते, तेरी राह !!

[३]

अरी निष्ठुरते तेरी राह—
मलयानिल मस्ती में डाले,
छल क कुछ सुस्मृति में छाले,
बढ़ी वेदना कौन सम्भाले,
उमड़ रहा है अन्तस्तल में—
वेदन आह प्रवाह !
अरी निष्ठुरते, तेरी आह !!

—कुंजबिहार पण्डित 'कामक'

मोती

(समस्या)

भई सो भई अब चेत करो,
पतलून उतार कसो भाई धोती;
व्यर्थ की वृन्त-कथा तजि के,
गहो हाथ वैदिक शिक्षा की पोथी।

स्वदेशी हो तन पर, स्वतन्त्रता हो मन पर,
जगादो स्वदेशी की जगमग ज्योति।
खेती कला व्यवसाय करो,
सब बन करके चमकेंगे मोती ही मोती।

—जगन्नाथ उपाध्याय

प्रकृति-प्रेम *

(१)

मेरा हृदय उछलता है हाँ,—
तभी मस्त हो हर्ष विभोर;
नील व्योम में इन्द्र धनुष हो
(मिले क्षितिज के दोनोंछोर)।

(२)

बाल्य काल में मेरे था—
यह इसी रूप में ऐसा ही।
और आज मैं युवा हुआ अब,
इन्द्र धनुष है वैसा ही।

(३)

यह ऐसा हो रहे मनोहर—
वयोवृद्ध जब हो जाऊं।
और नहीं तो आँखें मूंदूं—
इस मिट्टी में मिल जाऊं।

(४)

मानव का है जनक बाल ही
स्रष्टा है सब बातों का।
(अभी संस्मरण है ताजा ही—
गत दिवसों का, रातों का)।

[५]

मेरी अन्तिम आकांक्षा है,
अभिलाषा है यही हिये।
प्रकृति पुजारी बना रहूं मैं
रहूं हृदय में प्रेम लिये।

[६]

मेरे भावी के सारे दिन—
और प्रकृति मेरी प्यारी।
प्रेम रज्जु में बंधे परस्पर—
रहें (रहे जग सुखकारी)।

—द्विजेन्द्रनाथ मिश्र

राष्ट्र-भाषा

प्रबल, प्रतापी, परिपूरन, पियूष-पगी,
दीन हिन्द-वासियों की भव्य अभिलाषा है।
सरला, सुभाव भरी नागरी गुणागरीय,
राष्ट्रीय जीवन की प्राण-प्रद स्वासा है।
कलित-कलेवर कमनीय 'करुणेश' रची,
कटिये कलेश बची एक यही आशा है।
ओज भरी, चोज भरी, खोज भरी भारत की
ललित लिलाट-बिन्दी हिन्दी राष्ट्र-भाषा है।

'करुणेश' दिल्ली

* कविवर वर्ड्सवर्थ की The Rain bow का रूपान्तर

पं० बेचरदास दोशी



अहमदाबाद में न आने की आज्ञा को उल्लंघन करने के अपराध में आप गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

श्रीमती अमृतकौर



आपने पंजाब के अनेक नेताओं व संस्थाओं के अनुरोध से अपना उपवास स्थगित करने की घोषणा की है।

श्रीगो० कृ० देवधर



आपकी अध्यक्षता में सर्वैण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी का ३० वां वार्षिकोत्सव मनाया गया।

मि० रूजवेल्ट



आपने न्यू रिकवरी एडमिनिस्ट्रेशन को कायम रखने के लिये बनाये गये नये बिल को स्वीकार कर लिया है।

मैक्स बेयर



आप विश्वविजयी मुक्केबाज थे लेकिन ब्रिटेन के एक डाक मजदूर ने इकने गत सप्ताह आपको हरा दिया।

डा० सत्यपाल



आप अभी जेल में बन्द हैं, लेकिन पंजाब कांग्रेस कमेटी ने आपको ही अध्यक्ष चुना है।

गुलाबचन्द



आप की रहस्यपूर्ण हत्या के सम्बन्ध में दिल्ली सैशन्स जज के यहां बहुत सनसनीखेज मुकदमा चल रहा है।

पटियाला नरेश



आपने घोषणा की है कि आप नये बनने वाली संघ सरकार में अवश्य सम्मिलित होंगे।

रामप्रताप



रामप्रताप की रहस्यपूर्ण हत्या के सम्बन्ध में भी दिल्ली सैशन्स जज के यहां बहुत सनसनीखेज मुकदमा चल रहा है।

अशिक्षा और दरिद्रता

ब्रिटिश शासन की देन

एक फ्रांसीसी पर्यटक के विचार

——:**:——

पिछले दिनों पीरो लोगारडी नामक एक फ्रांसीसी पत्रकार ने भारत की यात्रा करके यहां की राजनैतिक परिस्थिति पर अपने देश के पत्रों में लेख लिखे, उनके एक लेख के कुछ अंश यहां दिये जाते हैं, जो कई पत्रों में उद्धृत हो चुके हैं।

दो दृश्य

दिल्ली का स्टेशन है। प्लेटफार्म पर लाल दरियां बिछी हुई हैं, एक सुन्दर सफेद गाड़ी प्रतीक्षा में खड़ी है, सेना के सिपाही हथियारबन्द खड़े हैं, भारत के कमान्डर-इन चीफ हिज एक्सीलेन्सी दी फील्ड मार्शल दिल्ली से बाहर जा रहे हैं। करीब एक दर्जन दर्शक आपके देखने के लिये वहां उपस्थित हैं।

दूसरे दिन उसी समय, उसी स्टेशन के उसी प्लेटफार्म पर, जहां न अब दरी बिछी है और न सिपाहियों का पहरा है, जनता की अपार भीड़ हो रही है। मामूली पुलिस उसका प्रबन्ध नहीं कर सकती, करीब सौ स्वयंसेवक प्रबन्ध कर रहे हैं और जनता उनके अनुशासन में चलती है। थोड़ी देर बाद गाड़ी स्टेशन पर आ पहुंची, लाखों की संख्या में उपस्थित जनता के जय-घोष से प्लेटफार्म गूंज उठा। एक दुबला पतला, श्यामवर्ण आदमी, दोनों हाथ जोड़े हुये गाड़ी में से उतरा, लोगों ने उसे हार पहिनाये, वह जनता के अभिवादन के लिये सिर झुकाता हुआ, जनता के एक जुलूस द्वारा ले जाया गया। वह व्यक्ति कांग्रेस का प्रधान राजेन्द्र बाबू है। इंगलैंड में वे राष्ट्रीय कांग्रेस को 'एक मुट्ठी भर लोगों का आन्दोलन' या एक 'छोटा अल्पमत' कहते हैं।' पर एक मुट्ठी भर दृढ़ विश्वासी लोग ही दूसरी जाति का सञ्चालन करते हैं जैसे एक मस्तिष्क सारे शरीर का संचालन करता है।

भारत की गरीबी

पत्रकार ने आगे लिखा है:—मैं पं० जवाहरलाल नेहरू से मिलना चाहता था, पर मालूम हुआ, वे जेल के सींखचों में बन्द हैं, इस लिये मैं एक दूसरे प्रभावशाली कांग्रेस नेता से मिला, उन्होंने मुझ से कहा—"सच्चाई यह है कि हम एक मुद्दत से इंगलैंड को कामधेनु बने हुये हैं और उसके बदले में उसने हमें दो चीजें दी हैं—निर्धनता और अशिक्षा। हमारी निर्धनता का दृश्य तुम गांवों में जाकर देख सकते हो। क्या यह सरकार के ऊपर लाञ्छन नहीं है कि ऐसी धनी और उर्वरा भूमि के किसान गरीब हैं। मेरे पास इसके लिये कोई जवाब नहीं था, क्योंकि अपने भ्रमण में मैं उस गरीबी का दृश्य देख चुका था।

अशिक्षा

के सम्बन्ध में सरकार द्वारा प्रकाशित एक मोटी किताब उठाकर उसमें दिये गये आंकड़ों से मुझे बतलाया गया—पैंतीस करोड़ भारतीयों में केवल दो करोड़ ऐसे मिलेंगे, जिन की पढ़े-लिखे व्यक्तियों में गिनती कर ली जाय। सवा दो करोड़ से कम व्यक्ति लिख पढ़ सकते हैं यानी पांच साल के लड़कों को छोड़कर प्रति हजार पीछे करीब आठ। पचीस लाख आदमी अंग्रेजी जानते हैं यानी प्रति दस हजार पीछे एक सौ साठ पुरुष और अठारह स्त्रियां। इस अशिक्षा का कारण क्या है? निर्धनता—सात आठ वर्ष के लड़के स्कूल में पढ़ने नहीं जा सकते हैं, क्योंकि उनके स्कूल जाने का मतलब है घर वालों को एक मुट्ठी अन्न कम मिलना, ऐसे देश में जहां रोज के अकालों की मार से गरीब लोग पिस जा रहे हों। वहां शिक्षा का प्रचार कैसे हो?

फिर भी भारत में शिक्षा का प्रबन्ध कुछ तो है। हिन्दू यूनिवर्सिटी एक सुन्दर विश्वविद्यालय है। इस का विज्ञान-विभाग, इसके बड़े-बड़े हाल, मशीनरी से भरी हुई इस की गेलरियां, इस के लेक्चर-रूम और सम्पूर्ण संसार से चुने हुए अधिकारी देख कर मेरा हृदय प्रसन्न हो गया। रियासतों में भी अनेक अच्छे स्कूल चल रहे हैं।

कपूर्थला में, जहां मैं भारतीय नरेशों में सब से अधिक सुशिक्षित और शौकीन राजा का मेहमान था, मैंने ऐसा एक स्कूल देखा। स्कूल में विज्ञान, साहित्य, हिन्दी, पंजाबी उर्दू, अंग्रेजी और फ्रैंच पढ़ाये जाते थे। मैंने विद्यार्थियों को विक्टर ह्यूगो व जोन एकार्ड की पुस्तकों से अनुवाद करते देखा। जब मैंने स्कूल-अध्यापक को विद्यार्थियों की जानकारी और शुद्ध उच्चारण के लिए बधाई दी तो वह बहुत खुश हो कर मुझे कहने लगे कि—इन विद्यार्थियों ने फ्रैंच इसी साल से शुरू की है। मैं चाहता हूं कि आप दूसरी कक्षा के मेरे विद्यार्थी देखते, लेकिन आज उन की 'क्लास' नहीं लगी।

मैंने महाराजा से भी बहुत बातें कीं। उन्होंने कहा कि—भारत में आज-कल बड़ी नाजुक हालत है। लेकिन मुझे निश्चय है कि शासन-सुधारों के प्रचलित होने पर बहुत सी कठिनाइयां दूर हो जावेंगी। भारतीय-राजा अपने देश के हितैषी हैं। वे ब्रिटिश-सरकार से भी बना कर रहने के उत्सुक हैं। वे इंगलैंड-नरेश से प्रेम व मित्रता के सूत्र से बन्धे हुए हैं।

महाराज ने बतलाया कि उन्होंने अपने राज्य में प्रतिनिधि-मण्डल कायम किया है, यानी प्रजा-प्रतिनिधियों को भी अपने राज-काज संचालन के हक दिये हैं। आपने कहा कि सेना के बजट व्यक्तिगत घरेलू खर्च और वैदेशिक सम्बन्ध के अधिकार अपने-अपने हाथ में ही रखे हैं।

मैंने महाराजा को बताया कि मैं उनका स्कूल देख कर बहुत खुश हुआ हूं। उनकी आंखें चमकने लगीं, क्योंकि वे अपने शासन की प्रशंसा सुनकर असीम प्रसन्न होते हैं। उन्होंने कहा—पिछले २० सालों से मैंने कपूरथला में शिक्षा को अनिवार्य कर दिया है। इसका परिणाम यह है कि आज हमारे यहां अशिक्षा कम है।

जिस वक्त आप से पूछा गया कि इंग्लैंड-सरकार भारत में अनिवार्य शिक्षा कर देने के लिये क्यों नहीं जोर देती, तो महाराज ने कहा—"इस मामले में मैं अपनी कोई राय देने का साहस नहीं कर सकता।" इस जवाब के साथ मुझे एक हिन्दुस्तानी पत्र के उस कार्टून की याद आ गई, जिस में इंगलैंड की कैंची हिन्दुस्तान की कारीगरी, स्वतन्त्रता और शासन की दीप-ज्योति को कतर रही थी।

दोनों के दृष्टिकोण में अन्तर

लेख में आगे कहा गया है—एक कांग्रेसमेन से पूछा गया तो उन्होंने बतलाया कि सरकार हिन्दुस्तानियों को इस लिए शिक्षित नहीं बनाती कि जैसे ही वे पढ़-लिख कर अपनी गरीबी दूर कर लेंगे तो वे इस अंग्रेजी-राज्य के जुए को अपने कंधे से उतार फैंकेंगे।

सरकारी आदमी का इस सम्बन्ध में यह कहना है—कांग्रेस एक खुराफाती संस्था है, हम उस की अधिकांश मांगों को पूरा करना चाहते हैं। हम उसे स्वराज्य भी देंगे, पर इंगलैंड को हिन्दुस्तान में जो पूंजी लगी हुई है, उस की रक्षा के लिए विशेष अधिकार रक्खेंगे। धनी हिन्दुस्तानी तो अपना माल अंग्रेजी-बैंकों में ही रखते हैं, हिन्दुस्तानियों में नहीं। मैं विश्वास दिलाता हूं कि हिंदुस्तान को जो सुधार मिल रहे हैं, वह कांग्रेस के दबाव के कारण नहीं मिल रहे हैं। सच्चाई कहां है? सुधार आवश्यक हैं और अंग्रेज भी इस आवश्यकता को महसूस करते हैं और इसी लिए सुधार कर भी रहे हैं। लेकिन, उन की गति बहुत कम है। जनता में संतोष की जगह असंतोष हो रहा है और प्रत्येक नई रियायत उनका असंतोष बढ़ाती जाती है।

लेखक ने अपने लेख के अन्त में लिखा है—एक महान् देश की यह गरीबी और दासता ब्रिटिश साम्राज्य के सफेद चोगे पर काला धब्बा है। हिन्दुस्तान को स्वतन्त्रता देने से ही इंगलैंड को इज्जत मिल सकती है।

———

महिला-जगत्

स्त्रियों की पंचवर्षीय योजना

मैसूर की स्त्रियों का अशिक्षा के विरुद्ध जहाद

(ले०—श्री बा० सि० ठाकुर)

———:***:———

मैसूर दक्षिण भारत की एक समुन्नत रियासत है। ब्रिटिश भारत से यह कई बातों में बढ़ी-चढ़ी है। अब यहां स्त्री-शिक्षा की दिशा में एक ऐसा कदम उठाया जा रहा है, जो यदि सफल हो गया तो ऐसी आशा की जाती है कि पांच साल के अन्दर-अन्दर रियासत की आधी (अर्थात ५० प्रतिशत) स्त्रियां शिक्षित हो जायंगी।

मैसूर स्टेट वीमन्स कानफरेन्स (रियासत के महिला-सम्मेलन) को इस बात का श्रेय है कि उसने रियासत-भर की बालिग् अर्थात् युवा स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए एक पंच-वर्षीय योजना तैयार की है। योजना बनाने वालों का ऐसा ख्याल है कि अगर इस योजना में रियासत की सरकार ने पर्याप्त आर्थिक सहायता प्रदान की तो निश्चित किये हुए पांच वर्षों के अन्दर-अन्दर रियासत की ५० प्रतिशत (अर्थात् आधी) स्त्रियां अवश्य शिक्षित हो जायंगी।

योजना क्या है ?

स्टेट वीमन्स कानफरेन्स के मैसूर-राज्य में, आठ इलाके या जिले हैं। उक्त योजना को कार्यान्वित करने के लिये उनमें से हरेक जिले में एक ग्रेजुएट (डिग्रीधारी) महिला को नियुक्त किया जायगा, जो वहां की स्थानीय महिला-सभा के अध्यक्ष की सहायता से योजनान्तर्गत सामाजिक एवं शिक्षा-सम्बन्धी कार्य देगी तथा कानफरेन्स के आदर्शों का प्रसार करेगी। कार्य-विस्तार के लिए जिलों, ताल्लुकों और गांवों में भी कानफरेन्स की शाखायें खोली जायंगी और सभी ताल्लुकों और गांवों में सामाजिक एवं शिक्षा-सम्बन्धी काम के केन्द्र स्थापित किये जायंगे। वेतनिक और अवैतनिक दोनों तरह के कार्य-कर्ता रक्खे जायंगे।

सामाजिक कार्यों के लिए निश्चित रूप से प्रेम स्वास्थ्य-गृह खोले जायंगे, जिनमें सैनिक विषयों की शिक्षा दी जायगी तथा जिनके द्वारा सन्तति, बच्चा-सम्बन्धी एवं स्वास्थ्य-विषयक ज्ञान कराया जायगा। गरीबों और जरूरतमन्दों को दवाई मुफ्त बांटी जायगी और प्रति सप्ताह निश्चित किये हुए दिनों में निश्चित समय पर गांवों में जाकर स्वास्थ्य-सफाई-सम्बन्धी वार्तालाप किया जायगा तथा ऐसी विज्ञप्तियां बांटी जायंगी, जिन में बताया जायगा कि ग्रामों के पुनरुत्थान के लिए क्या-क्या किया जाना चाहिये और उसमें स्त्रियां क्या भाग ले सकती हैं। नैतिक और धार्मिक शिक्षा दी जायगी, पुराण पढ़े जायंगे और हरि-कथा होंगी, लिखने-पढ़ने और हिसाब रखने की शिक्षा दी जायगी। जेल व अस्पतालों में स्त्रियों को लेजाकर वहां की वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराया जायगा, साथ ही प्रसव के वक्त प्रसूति-गृहों में जाने के लिए स्त्रियों को प्रेरित किया जायगा। दिमागी इलाजों के अस्पतालों (पागलखाने आदि) में जाकर वहां दिये जाने वाले भोजन एवं इलाज पर सूक्ष्म दृष्टि रखनी होगी। हर महीने संगीत-समारोह होंगे, आवश्यक विषयों पर व्याख्यान दिये जायंगे और बालिग् स्त्रियां कसीदे आदि का जो काम करेंगी, उसकी बिक्री की व्यवस्था की जायगी। घरेलू और मर्दाने खेलों तमाशों की व्यवस्था होगी। साथ ही दूध की भी व्यवस्था की जायगी।

शिक्षा की दिशा में साप्ताहिक क्लासों की व्यवस्था की जायगी, जिन में उनके आस-पास रोज-मर्रा होने वाली घटनाओं की ओर स्त्रियों की दिलचस्पी पैदा की जायगी, जिन स्त्रियां ने बचपन में स्कूली-शिक्षा नहीं पाई, उन्हें भारत के इतिहास और संसार के भूगोल की शिक्षा दी जायगी। समाचार-पत्र पढ़ कर सुनाये जायंगे। पुराणों और इतिहास की कथायें सुनाई जायंगी। हरि-कथा की ओर स्त्रियों की अधिक रुचि होती है, इस लिए वे इस कार्य की ओर उत्साह के साथ बढ़ेंगी। धार्मिक और नैतिक ज्ञान-शिक्षा के साथ नागरिक-जीवन के कर्तव्यों का भी ज्ञान कराया जायगा। चलते-फिरते पुस्तकालयों को उत्साहित करके मातृ-भाषा के सचित्र समाचार-पत्रों को जारी किया जायगा। ये कुछ खास तरीके हैं, जो उनके ज्ञान को अच्छी तरह खोलेंगे। आधुनिक समस्याओं पर विज्ञप्तियां बांटी जायंगी। बहस व मुबाहिसे में भाग लेने के लिए उत्साहित किया जायगा।

तात्पर्य यह है कि इस छोटे-से प्रोग्राम में सब आवश्यक बातें आ गई हैं। इससे अर्थोपार्जन के लिए बुद्धि बढ़ेगी और अन्धकार दूर हो कर जागृति पैदा होगी। स्त्रियों को अपनी जिम्मेदारी का ज्ञान होगा। इस समय डिप्टी कमिश्नरों की स्त्रियां स्थानीय सभाओं में सभानेत्रियों की हैसियत से सोसायटी का कार्य कर रही हैं। इससे अधिक और कोई उपाय नहीं है, जिसके द्वारा कानफरेन्स के कार्य को गांवों और ताल्लुकों में एक दम फैला दिया जाय और स्त्रियों को एक साथ अपना लिया जाये, पर सोसायटी को एक बड़ी भारी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है कि जब डिप्टी कमिश्नरों की बदली हो जाती है तो उनकी स्त्रियों को भी स्थान छोड़ देना पड़ता है। इस अवस्था में कार्य वहीं अधूरा रह जाता है। अतः काम स्थायी रूप से जारी रखने के लिये गांवों और ताल्लुकों में एक "क्वालिफाइड लेडी" की आवश्यकता का महसूस किया जाना स्वाभाविक ही है।

मैसूरी स्त्रियों के इस प्रयत्न से भारत की अन्य स्त्रियों को भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और उन्हें भी अपनी प्रगति के लिए इसी प्रकार कोई समिति व कार्यक्रम बनाकर काम करना चाहिये। ऐसा हो तो वे उसी प्रकार निश्चित अवधि में अग्रगामी हो सकती हैं, जैसे रूस में पंचवर्षीय आयोजन के फलस्वरूप रूसी प्रजा हुई है।

———

आप चूड़ियां किस से पहनती हैं— स्त्रियों से या पुरुषों से ?

पुरुषों से चूड़ियां पहनने के खिलाफ चेतावनी

[ले०—श्री किशोरीदास बाजपेयी]

—(::)—(::)—

हमारे देश की सौभाग्यवती महिलायें मंगल प्रतीक समझकर अपने हाथों में चूड़ियां सदा पहनती हैं। जब वियोग दशा में सब आभूषण दूर हो जाते हैं और शरीर की कृशता हद दर्जे को पहुंच जाती है, तब भी चूड़ियां हाथों में पड़ी हुई सौभाग्य सूचित करती रहती हैं। इसी लिये एक कवि ने काग उड़ा कर प्रिय-आगमन का शकुन लेती हुई नायिका की दशा दर्शाते हुए लिखा है—

'उड़ि काग-गरे परीं चारिक चूरी।'

खैर, हम कविता नहीं कर रहे हैं, एक काम की बात कह रहे हैं।

यों भारतीय स्त्री चूड़ी को बहुत महत्व देती है। पहिले मनिहारिनें घर घर आकर चूड़ियां पहना जाती थीं। परन्तु अब उनकी जगह आदमी चूड़ी पहिनाने घूमने लगे हैं, जिनमें से अनेक मनचले गुण्डे होते हैं। औरतें इन्हें घर के भीतर बैठा कर चूड़ी पहनती हैं, जब कि घर के पुरुष भी प्रायः वहां उपस्थित नहीं होते। ऐसे अवसर का लाभ उठा कर ये स्त्रियों से इधर-उधर की चर्चा छेड़ते हैं, और फिर हंसी मजाक तक की नौबत आ पहुंचती है। बड़ी-बड़ी पर्दे वालियां तक, जो अपने घर वालों के सामने या तो निकलती ही नहीं, और यदि निकलती हैं तो लम्बा घूंघट काढ़कर, एक-दो बार के बाद उनसे ऐसी हिल-मिल जाती हैं कि संकोच को प्रायः तिलांजलि ही दे बैठती हैं। चूड़ी चढ़ाते वक्त इधर-उधर से हाथ दाबना और स्त्री के कष्ट व्यक्त करने पर रहस्य-पूर्ण आवाजकशी करना तो मनिहारों (चूड़ी पहनाने वालों) के लिये एक साधारण बात हो गई है, जो है तो बड़ी आपत्ति-पूर्ण, पर रहती है प्रायः उपेक्षित ही। कभी-कभी तो इन लोगों के द्वारा स्त्रियों के बहका-बहका कर पथ भ्रष्ट करने एवं भगा-भगा लेने तक की खबरें सुनाई पड़ती हैं। फिर भी हम चेत नहीं रहे—यह कितने दुख की बात है।

हम लोगों को उचित है कि घरों में स्त्रियों को अच्छी तरह समझा दें और कड़ी हिदायत करदें कि किसी आदमी के हाथ से अपना हाथ देकर चूड़ी कभी मत पहनो। चूड़ी वालों से कह दिया जाय कि खबरदार तुम घर के भीतर पांव न रखना। चूड़ी बेचने वाली स्त्री से ही चूड़ियां पहननी चाहियें।

———

स्त्री-श्रमजीवियों की समस्या

मजदूर स्त्रियां

संसार में मशीनों के प्रचलन से जहां बहुत से लाभ हुए, वहां उससे हानि भी कम नहीं हुई। इसका सबसे भयंकर परिणाम यह हुआ कि इसने घरू-उद्योग धन्धों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। पूंजीपतियों के कारखाने खुल गये और उनमें मजदूर लोग एक बड़ी तादाद में कारखानेदारों के गुलाम बनकर काम करने लगे। जब मालिकों के अत्याचार बढ़ने लगे तो मानव-प्रकृति के अनुसार समाज को भी अपना संगठन और प्रचार करने की बात सूझी। सरमायदारों ने पहिले तो उन मांगों का विरोध किया पर समय की प्रगति को वे अपनी मालो ताकत से रोक न सके। यहां तक कि पूंजीपतियों की हिमायती और उनके ही बल पर चलने वाली सरकारों को भी मजदूरों की सुविधा के लिये कानून बनाने पड़े, मिलों में

काम करने वाली स्त्रियों

और बच्चों के लिये भी बहुत फैक्टरी कानून बने। सब से पहिले सन् १८९१ में एक कानून बना, जिस के अनुसार स्त्रियों का रात के समय काम करना बन्द किया गया। इसके बाद सन् १९ १ में दूसरा कानून बना जिस के अनुसार स्त्रियों को दिन-रात के चौबीस घंटों में से केवल (!) ग्यारह घंटे काम के लिये नियत किये गये। इसके अलावा उन्हें काम करने के समय बीच में ढाई घण्टा आराम करने के लिये दिया गया। सन् १९९२ के नये कानून द्वारा स्त्रियों के काम का समय प्रातःकाल साढ़े पांच बजे से लेकर सायंकाल के सात बजे के बीच में स्थिर किया गया। औरतों से एक ही दिन में दो कारखानों में काम कराये जाने से मिल-मालिकों को रोका गया और मैनेजरों को आज्ञा दी गई कि वे औरतों और बच्चों को कानून द्वारा प्रतिपादित काम के घंटों को बता दिया करें। लेकिन उक्त

कानून की धारायें

कपास ओटने और रूई कातने के कारखानों में लागू नहीं होती हैं। सन् १९२२ के कानून में कुछ और भी धारायें हैं, जिनमें बाहर की जगह में स्त्रियों और बच्चों से काम लिया जाना गैर कानूनी है। खानों में रोजाना काम करने वाले मजदूरों के लिये कुछ कानून भिन्न हैं। सन् १९२८ के खानों सम्बन्धी कानून के अनुसार औरतों के काम के घंटे सन् १९३० की पहली अप्रैल से १२ घंटे मुकर्रर किये गये। औरत मजदूरों की रक्षा के लिये ये कानून काफी नहीं हैं। इंगलैंड, अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस और इटली के औरत-मजदूर रक्षा-कानून इन कानूनों से अधिक उदारतापूर्ण हैं।

हिन्दुस्तान के फैक्टरी कानून

औरतों के लिये रात में साढ़े दस घंटे आराम के लिये रखते हैं और प्रातःकाल साढ़े पांच बजे से सायंकाल के सात बजे तक काम का समय निर्धारित करते हैं। लेकिन उन में ऐसी कोई धारा नहीं जिस से ऋतु बदलने के साथ उनके काम करने का समय भी बदल दिया जाय और साधारण कारखानों तथा जहरीली चीजें तैयार करने वाले विशेष कारखानों में कुछ भेद स्थापित हो सके। काम का समय इस प्रकार से निश्चित किया जाना चाहिये कि मजदूरों के लिये काम भार रूप न हो जाय। हिन्दुस्तान गर्म देश है। गर्मी के दिनों में मजदूर लगातार काम नहीं कर सकते इसलिये उनको गर्मी के मौसम में दिन का काम कुछ कम कर देना चाहिये और रात का काम बढ़ा देना चाहिये। गर्मी के दिनों में सुबह साढ़े पांच से साढ़े ग्यारह तक और शाम को साढ़े तीन से साढ़े आठ तक काम लेना चाहिये। इस प्रकार काम कानून के अनुसार भी होगा और औरतें उसको सुविधापूर्वक भी कर सकेंगी। जाड़े के मौसम में समय के परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है।

जहरीली वस्तुयें बनाने वाले कारखानों में काम के समय का विभाग उचित रीति से और हर एक बात का ध्यान रखकर किया जाना चाहिये। कपड़े बनाने वाले कारखानों में गर्मी के मौसम में आराम करने का समय शाम के आठ बजे से सुबह के छः बजे तक और जाड़ों में सात बजे रात से सुबह सात बजे तक रहना चाहिये। Multile shift system को तोड़ देना चाहिये। फैक्टरी इन्सपेक्टर शिकायत करते हैं कि मिल-मालिक, मजदूरों का शोषण इस प्रकार से करते हैं कि इन्सपेक्टरों की आंखों में भी धूल झोंक देते हैं।

—(सैनिक)

उपनिवेश पार्लियामेंट में भी ब्रिटिश पारलियामेंट की तरह दो भाग होते हैं। लोअर हाउस (छोटी सभा) और अपर हाउस [बड़ी सभा]। अभी तक बड़ी सभा का वहां अच्छी तरह विकास नहीं हुआ है। कनडा के प्रान्तों में तो क्वीबक प्रान्त को छोड़ कर अन्य किसी प्रांत में दूसरी चेम्बर नहीं है। जहां संघात्मक शासन प्रणाली है, उन देशों में तथा दक्षिण अफ्रीका यूनियन और आयरलैंड में बड़ी सभा को 'सिनट' कहते हैं। कनडा में लोअर हाउस को ब्रिटिश हाउस आव कामन्स की तरह हाउस आव कामन्स का ही नाम दिया गया है। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में उसे 'हाउस आव रिप्रेजेन्टिव' [प्रतिनिधि सभा]। आयरलैंड में डेल अयरन (Dail-)eirem) या हाउस आव डेपुटीज तथा असेम्बली भी कहते हैं। प्रान्तीय सभाओं के सही नाम विशेषतः संघ पार्लियामेंट से उन्हें पृथक करने की दृष्टि से लिये जाते हैं। साधारण व्यवस्थाओं में उनके लिये पार्लियामेंट शब्द का ही प्रयोग होता है।

छोटी सभाओं का निर्माण प्रजातन्त्रीय ढंग पर हुआ है। साधारणतः सभी पुरुष और स्त्रियों को आवश्यक शर्तों के साथ मताधिकार गया है। प्रत्येक मतदाता को पार्लियामेंट के मेम्बर चुने जाने का अधिकार है। क्वीबक प्रान्त (कनडा) और यूनियन अफ्रीका में स्त्रियों को वोट और मेम्बरी के अधिकार मिलने के सम्बंध में खूब आन्दोलन हुआ है। कनडा की प्रान्तीय सभाओं में स्त्रियां मंत्री पद प्राप्त कर चुकी हैं। वहां केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा में भी स्त्रियां मेम्बर हैं। किन्तु आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड इस प्रगति में पिछड़े हुये हैं।

मताधिकार

मत पर्चियों द्वारा लिए जाते हैं, आस्ट्रेलिया के कई राज्य तथा कनडा के कई प्रान्तों में विशेष वोट का भी नियम है, जिस को न्यू साउथ वेल्स और न्यूजीलैंड ने तोड़ दिया है। तसमानिया, आयर्लैंड तथा कनडा के कुछ प्रान्तों में आनुपातिक ढंग के प्रतिनिधित्व की प्रथा भी प्रचलित है, कहीं-कहीं ऐसा भी नियम है कि अनुपस्थित व्यक्ति का भी वोट लिया जा सकता है तथा वह डाक द्वारा अपना वोट दे सकता है। कामनवेल्थ और उसकी रियासतों में प्रत्येक वोटर को अनिवार्य रूप से अपना वोट देना

उपनिवेश व्यवस्थापिका मंडल का विकास

(ले०—श्री रमेश वर्मा)

पड़ता है। यदि बिना किसी विशेष कारण के वोटर अपना मत नहीं देता तो उसे इस के लिए सजा मिलती है। मेम्बरी के लिए खड़े हुए उम्मीदवारों में से यदि वह किसी को पसन्द नहीं करता तो उसकी यह दलील जायज नहीं मानी जाती। वैसे सभी उपनिवेशों में प्रायः प्रत्येक बालिग स्त्री-पुरुष को मत देने का अधिकार है, पर 'दक्षिण अफ्रीका' यूनियन में देशी बाशिन्दे अथवा एशिया वालों को पारलियामेंट के मेम्बर होने का अधिकार नहीं था तथा निर्वाचन का अधिकार भी वहां के गोरे लोगों को ही था। केप आव गुड होप में सन १८५३ के कानून के अनुसार यह प्रथा उठ गई है। जनरल हर्टजोग के निर्णय के अनुसार वहां गोरे लोगों को ही देशी लोगों का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार है। यह भेदनीति दक्षिण अफ्रीका में अभी तक बनी हुई है। ऐसे ही न्यूजीलैंड में वहां के मूल निवासी माओरी कौम के अधिकार बहुत सकुचित रखे गये हैं। वहां की छोटी सभा में मोरी जाति के चार मेम्बर होते हैं। आस्ट्रेलिया और कनडा में भी एशिया वालों के लिए चुनाव सम्बन्धी अड़चनें हैं। पर कामनवेल्थ में भारतीयों को वोटसम्बन्धी अधिकार प्राप्त हैं। उत्तरी अमेरिका और आस्ट्रेलिया के असंस्कृत लोगों को निर्वाचन के अधिकार प्राप्त नहीं हैं।

दोनों सभाओं का परस्पर सम्बन्ध

दोनों सभाओं में परस्पर कैसा सम्बन्ध रहे यह बात किसी भी देश में अब तक निश्चित नहीं हो पाई है। कनडा की सीनट (बड़ी सभा) कभी भंग नहीं हो सकती। हां, सरकार विशेष परिस्थिति में अपने पक्ष के लिए आठ मेम्बर तक नामजद कर सकती है। सन १९१२ ई० में जिस समय सर हन्द्री लोरियर कनडा के गवर्नर जनरल थे, उस समय कनेडा पार्लियामेंट में मि० बार्डन ने साम्राज्य की सामुद्रिक रक्षा की सहायता के लिए ३५,०००,००० डालर की मांग पेश की तो सीनेट ने इसे अस्वीकार कर दिया। इस से कनडा सीनेट की लोकसत्तात्मक शक्ति का परिचय मिलता है, क्योंकि उसके मेम्बर आजन्म चुने जाने के कारण उन पर गवर्नर जनरल का अंकुश नहीं रहता। साथ ही सन १९२५ और १९२६ ई० के बीच में आर्थिक बिल के सम्बन्ध में में कनडा सीनट का छोटी सभा के साथ खूब झगड़ा रहा और छोटी सभा को उसने तरह दे दी। नोवास्काटिया के गवर्नर को अपने मंत्रि-मण्डल की सलाह से इच्छानुसार मेम्बर घटाने बढ़ाने का अधिकार है, जिससे वह अपनी नीति के अनुसार शासन कार्य चला सके, पर सन् १९२६ ई० में वहां दोनों सभाओं के बीच ऐसी उलझन खड़ी होगयी कि गवर्नर और उसका मन्त्रि-मण्डल शासन कार्य चलाने में असमर्थ होगया और वहां की व्यवस्थापिका सभा को भंग होना पड़ा। क्वीबक प्रांत की बड़ी सभा भंग नहीं हो सकती पर वह वहां की जनसभा (असेम्बली) के साथ कभी रार मोल नहीं लेती। न्यूफाउंडलैंड की सभा में मेम्बरों की वृद्धि सम्राट् की इच्छा पर निर्भर है, वहां का प्रधान शासक जब चाहे तब अपने पक्ष के मेम्बर नियुक्त करके अपनी नीति से काम ले सकता है। अब वहां भी यह बात नहीं है और दोनों सभाओं का ठीक ठीक सम्बन्ध निश्चित हो गया है। आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ और उसके राज्यों में बड़ी सभा अधिक लोकसत्तात्मक है क्योंकि वहां बड़ी सभा का चुनाव भी जनता द्वारा ही होता है, पर मन्त्रि-मण्डल बनाने और सालाना बजट पास करने के सारे अधिकार वहां की छोटी सभा को ही हैं। दूसरे साधारण कानून तथा कुछ अंशों में बड़ी सभा की आवाज भी सुनी जाती है। पर न्यूसाउथवेल्स में सन् १९२८ ई० में छोटी सभा के विरोध करने पर भी बड़ी सभा ने 'मनी बिल' पास कर दिया। न्यूजीलैंड में भी दोनों सभाओं की अधिकार मर्यादा के सम्बन्ध में कई बार उखाड़ पछाड़ हो चुके हैं और अन्त में वहां जनसभा की नीति ही स्वीकार हुई, जिसके अनुसार बड़ी सभा को छोटी सभा के कार्यों को दुहराने मात्र का अधिकार दिया गया। यूनियन सरकार (अफ्रीका) में जनरल स्मट्स के जमाने में वहां की सीनट को भी इतना ही अधिकार रहा, यद्यपि इस से पूर्व जनरल हर्टजोग के जमाने में उसकी शक्ति बहुत बढ़ा चढ़ी थी। कामनवेल्थ (आस्ट्रेलिया) में दोनों सभाओं में मतभेद हो तो दोनों की सम्मिलित बैठक में उसका निर्णय हो सकता है, जिसमें छोटी सभा का ही दखल विशेष रूप से रहता है। आयर्लैंड में तो बड़ी सभा को आर्थिक मामलों में जरा भी चूं चपड़ करने का अधिकार नहीं है और दूसरे मामलों में भी उसका नाममात्र का दखल है, इस प्रकार वहां बड़ी सभा की अनावश्यकता भी प्रगट की जा चुकी है। वहां की जन सभा (Dail) की ही शक्ति प्रधान है। सीनट का तो लोगों ने महज अपना रक्खा है। आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ तथा उसके राज्यों में बड़ी सभायें, प्रजातन्त्र की ओर बढ़े जाने वाली छोटी सभाओं के द्रुत गमन को रोकने के लिये हैं। क्वीन्सलैंड जहां बड़ी सभा नहीं है, वहां इस तरह की घटनाएं हो चुकी हैं, जिसमें छोटी सभा ने लगाम छोड़कर प्रजातन्त्रीय भावों की ओर कदम बढ़ाया। वास्तव में तो आजकल बड़ी सभाओं का केवल यही काम रह गया है कि वे द्रुतवेग में आड़ लगावें और उसे साधारण प्रवाह के साथ चलने दें। पारलियामेंट का कार्यवाही बन्द हो जाने तथा सभाओं की शक्ति को मर्यादित रखने के बहुत से नियम हैं, पर वे पूरे अमल में नहीं आते।

सम्राट प्रतिनिधि और उपनिवेश सरकार का सम्बन्ध

उपनिवेशों में सम्राट प्रतिनिधि या गवर्नर जनरल को विशेष अधिकार होते हैं अर्थात् वह समयानुसार उपनिवेश पारलियामेंट के कानूनों को रद्द कर सकता है और देश में अपनी व्यवस्था के अनुसार शासन-कार्य चला सकता है। पर असल में वह अपने मन्त्रि-मण्डल की सलाह से ही विशेष अधिकारों का प्रयोग करता है। उत्तरदायी शासनाधिकार-प्राप्त सभी उपनिवेशों में यही प्रयोग काम में लाया जा रहा है। साम्राज्य सरकार में यह नियम है कि जब एक मन्त्रि मण्डल पर अविश्वास का प्रस्ताव पास हो जाता है, तब वह लोकमत की परीक्षा के लिये सम्राट से पुनः निर्वाचन के लिये प्रार्थना

करता है। तब पारलियामेंट का नया चुनाव होता है। किन्तु उपनिवेश-सरकार में एक मन्त्रि-मण्डल पर अविश्वास पैदा हो जाने पर गवर्नर उसी व्यवस्थापिका सभा के अन्य मेंबरों के सहयोग से दूसरा मन्त्रि-मण्डल बना सकता है। विशेषकर आस्ट्रेलिया में पहिले यही प्रयोग काम में लाया गया क्योंकि वहां का पारलियामेण्ट का कार्यकाल बहुत छोटा होने के कारण प्रारम्भ में बार बार मन्त्रि-मण्डल टूटने से अधिक आर्थिक क्षति तथा शासन सम्बन्धी अड़चनें उठानी पड़ीं। पर सर आर मनरो फर्ग्युसन (सन १९१४—२१) ने इस नये प्रयोग को छोड़कर ब्रिटिश पद्धति को ही प्रचलित रक्खा। कनडा में सन १९२६ ई० में जब मि० मेकेंजी किंग का मन्त्रि-मण्डल शासन कार्य चलाने में असफल रहा तो उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड बाइंग ने मि० किंग की नये चुनाव की प्रार्थना को अस्वीकार करके वर्तमान व्यवस्थापिका सभा में से ही दूसरा मन्त्रि मण्डल बना लिया। फल यह हुआ कि मि० मैगन का यह नया मन्त्रि-मण्डल विरुद्ध पार्टी का चैलेंज सहन न कर सका और शासन-कार्य चलाने में असमर्थ रहा। इसलिये फिर नया चुनाव हुआ और उसमें मि० किंग के दल की ही विजय रही। इस तरह लार्ड बाइंग की नीति असफल साबित हुई।

इसी के फल स्वरूप सन १९२६ की साम्राज्य परिषद् में मि० किंग ने प्रस्ताव किया कि ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर सभी जातियों के समान पदों को दृष्टि में रखते हुए उपनिवेश के गवर्नर जनरल का वही पद होता है जो ब्रिटिश संयुक्त राज्य में सम्राट् का है। अतः गवर्नर जनरल सम्राट् का प्रतिनिधि है न कि साम्राज्य सरकार का एजेन्ट। उपनिवेश सरकार के कार्यों के साथ उसका वैसा ही सम्बन्ध है, जैसा सम्राट् का इंगलैंड की सरकार के साथ रहता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह मन्त्रि मण्डल के किसी कार्य का प्रस्ताव रद्द नहीं कर सकता है। अपितु एक बार व्यवस्थापिका के भंग होने पर यदि मन्त्रि मण्डल फिर उसके पुनरपि भंग करने का आग्रह करे तो अपना शासन-कार्य चलाने के लिये वह उसे अस्वीकार कर सकता है। किन्तु परिषद् में दलबन्दी के कारण पैदा हुई अड़चनों को दूर करने के लिये उसे मन्त्रि-मण्डल की सलाह ही स्वीकार लेनी पड़ती है। सन १९२४ में सम्राट ने मजदूर मन्त्रि मण्डल के प्रधान मि० रामसे मेकडानल्ड की प्रार्थना पर पारलियामेंट को भंग कर दिया और दूसरा मन्त्रि मण्डल बनाने का प्रयत्न नहीं किया।

गवर्नर जनरल की दूसरी स्थिति का अर्थ यह लगाया गया कि वह उपनिवेश सरकार और सम्राट के बीच मध्यस्थ शक्ति है, अतः उपनिवेश-सरकार की कारवाही उसके द्वारा सम्राट-सरकार तक पहुंचनी चाहिये। परन्तु यह कायदा भी आगे स्थिर नहीं रह सका। सन् १९२७ ई० में कनडा, आयरलैंड और यूनियन सरकारों ने यह नियम बना लिया कि उपनिवेश सरकार के कागजात गवर्नर जनरल द्वारा सम्राट सरकार के पास भेजे जाने की आवश्यकता नहीं है। पर उपनिवेश सरकार जो कार्य तथा नीति निर्धारित करे उसकी सूचना गवर्नर जनरल तक पहुंचनी चाहिये पर इस प्रयोग में भी अब शिथिलता आ गई है।

मन्त्रि-मण्डल का चुनाव

मन्त्रि मण्डल के पदाधिकारियों का चुनाव प्रधान मन्त्री की इच्छा पर निर्भर रहता है जो प्रायः अपने ही दल में से चुनता है। आस्ट्रेलिया मजदूर सरकार का मन्त्रि मण्डल तो वहां का मजदूर संघ (इंगलैंड के लेबर यूनियन की तरह की संस्था) ही चुन देता है। इससे प्रगट होता है कि वहां की मजदूर पार्टी का कैसा दृढ़ संगठन है और उसकी सरकार में मजदूर जनता का कैसा हाथ रहता है। आयरलैण्ड के प्रधानमन्त्री का चुनाव वहां की पारलियामेण्ट (डेल) ही करती है जो डेल की राय से अपने सहायक मन्त्री चुनता है। यदि मन्त्रि-मण्डल के विरुद्ध डेल का बहुमत हो तो वह टूट जाता है। मन्त्रि मण्डल में प्रधान मन्त्री का व्यक्तित्व ही सब कुछ होता है। उसे अपने कार्य और व्यवस्था की पाबन्दी बड़ी मुस्तैदी से करनी होती है अन्यथा इसमें थोड़ी भी शिथिलता आने पर मन्त्रि-मण्डल पर अविश्वास का प्रस्ताव आ सकता है और वह भंग हो जाता है। आवश्यकतानुसार मन्त्रि मण्डल अन्य दलों का भी सहयोग प्राप्त कर सकता है। उपनिवेश मन्त्रि-मण्डल में बाहर के व्यक्ति लिए जाने का भी कायदा है किन्तु ऐसा यदाकदा ही होता है। पिछले कई सालों में कोई उदाहरण ऐसा नहीं उपस्थित हुआ, जिसमें व्यवस्थापिका से बाहर के किसी व्यक्ति को मन्त्रि-मण्डल में लिया गया हो। केबिनट मन्त्री को अपना प्रभाव रखने के लिये यह आवश्यक होता है कि वह दोनों सभाओं में से किसी का भी मेम्बर हो, विशेषकर उस छोटी सभा का मेम्बर होना चाहिये, क्योंकि बड़ी सभा में जनता का अच्छा प्रतिनिधित्व नहीं है। मन्त्रि मण्डल की बैठकों में गवर्नर जनरल किसी विशेष समय और विशेष परिस्थितियों में ही बैठता है। प्रधान-मन्त्री द्वारा उसे सारे कार्यों की सूचना मिलती है। मन्त्रि मण्डल का सारा कार्य प्रधान मन्त्री के निरीक्षण में होता है। दक्षिण अफ्रीका, और आयर्लैण्ड में मन्त्री गण दोनों सभाओं में बोल सकते हैं, पर वोट केवल उसी सभा में दे सकते हैं, जिसके वे मेंबर होते हैं। कामनवेल्थ में मेंबरों को यात्रा सम्बन्धी सभी सुविधाओं के साथ एक हजार पौंड सालाना व्यय के लिये मिलता है। वर्ष भर में पारलियामेंट के अधिवेशनों की संख्या कानून द्वारा निश्चय की गई है। आयर्लैंड में तो इस पद को उठाने का प्रस्ताव हो रहा है।

दल-बन्दी

ब्रिटिश संयुक्त राज्य में उत्तरदायी सरकार का विकास दल-बन्दी के साथ हुआ है। कनाडा में तो यहां तक नौबत आ पहुंची है कि गवर्नर जनरल के हाथ की समस्त शक्ति वहां का व्यवस्थापिका-मण्डल ही अपने अधिकार में रखना चाहता है। यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस प्रणाली में एक पार्टी का दूसरी पार्टी के साथ भारी विरोध रहता है, जिस में सिद्धान्त के मुकाबिले व्यक्तित्व को ही प्रधानता दी जाती है। परन्तु ब्रिटिश पारलियामेंट में मजदूर दल के संगठन के साथ यह बात अब लुप्त होती जाती है, क्योंकि मजदूर दल अब अपने सिद्धान्तों के बल पर लड़ता है। कनाडा में लिबरल और कन्जरवेटिव दो दल हैं। महासभा के बाद वहां किसान पार्टी का बड़ा दौर दौरा हुआ, जिस का प्रभाव अब भी पश्चिमी प्रान्तों में है। अन्य प्रान्तों में उक्त दोनों दलों का प्रधानत्व है। क्वीबक में लिबरल दल और अन्य प्रान्तों में कन्जरवेटिव-दल का बोलबाला है। न्यू फाउण्डलेंड में किसी दल के स्थान में व्यक्तित्व का गौरव ही प्रधान है। पर जिस समय न्यूफाउंडलैंड को कनाडा के शासन में सम्मिलित करके उसको कनाडा का ही एक प्रान्त बनाने का आयोजन हो रहा था, उस समय वहां के लोकमत ने प्रबल विरोध करके अपने देश के स्वतन्त्रता सिद्धान्त का पालन किया। आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ के तीन दलों में सन १९२३ ई० तक मजदूर पार्टी का जोर रहा। यूरोपीय युद्धकाल में आस्ट्रेलिया में इसी दल की सरकार कायम थी। इसके बाद वहां किसान हितों के पक्ष वालों का जोर बढ़ा, जिन्होंने व्यापार और शिल्पकला के पक्ष वाले दल का मुकाबिला करके किसान हितों को प्रधानता दी। न्यूजीलैंड में पहिले उदार दल की तूती बोलती रही पर पीछे वहां रिफार्म पारटी के नाम से एक दल बना जिसने जोरों से उदार दल का मुकाबिला किया। सन १९२२ के बाद वहां सर जे० वार्ड ने उदार और अनुदार दोनों दलों को मिला कर अपनी प्रधानता करली। दक्षिणी अफरीका यूनियन में जनरल बोथा और जनरल स्मटस के प्रधानत्व में दक्षिण अफरीकन पारटी की खूब प्रबलता रही, जिसने डच लोगों की प्रतिनिधि नेशनलिस्ट पार्टी का मुकाबला किया। एक छोटी मजदूर पारटी भी थी, जो स्वतन्त्र प्रथा के गोरे लोगों तथा खानों में काम करने वाले अंगरेज, डच और यूनियन वालों का प्रतिनिधित्व करती थी। सन् १९२० ई० में जनरल हर्ट जोग के प्रधानत्व में प्रजातन्त्र दल का अभ्युदय हुआ, जिसमें यूनियनिस्ट भी मिल गये। इस प्रकार दक्षिण अफरीका पार्टी बनी जिसने प्रवासी लोगों की भरती का समर्थन किया। सन १९२४ में जनरल स्मटस का पराभव हुआ और जनरल हर्ट जोग की शक्ति बढ़ गई। १९२९ के चुनाव में फिर हर्ट जोग की विजय हुई। मजदूर पार्टी, जिसने अब तक सरकार का साथ दिया था, बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट हो गई, यद्यपि स्थानीय संस्थाओं में जनरल स्मटस का प्रभाव बना रहा। नेटाल के बारे में लोगों ने राष्ट्रीय दल के लिये ही अपना मत दिया। इस प्रकार बहुत दिन तक दक्षिण अफरीका के देशी लोग और यूरोपियनों के अधिकारों में संघर्ष होता रहा। आयरलैंड के शासन विधान में शपथ लेने की प्रथा के विरोध में झगड़ा रहा। डेल (पार्लियामेंट) के एक दल ने तो कौन्सिल में भी जब सन १९२७ में प्रवेश किया तो अडंगा-नीति द्वारा अपने विरोधी दल का मुकाबिला करने के लिये। अब वहां की डेल में मि० कासग्रेव और डी वेलरा की पारटियां का मुख्य विरोध है, पर डी वेलरा की शक्ति ही प्रधान है, उसने शपथ प्रथा को आयरलैंड के शासन-विधान में से उखाड़ कर फेंक दिया है।

पारटियों का संगठन भी ब्रिटिश पद्धति का ही अनुकरण है। बड़ी से बड़ी पारटी को भी बड़ी सावधानी,

(शेष पृष्ठ २७ पर)

सफाई और गांधी जी

प्लेगाक्रांत गांवों में गांधी जी के भाषण

अभी सरदार वल्लभभाई पटेल म० गांधी को बोरसद के प्लेगाक्रांत गांवों में ले गये थे। वहां उन्होंने जो भाषण दिये, उसके कुछ अंश निम्न लिखित हैं—

सफाई

'यह समझ कर कि प्लेगरूपी शत्रु अब हट गया है, आप लोग सो न जाना, बल्कि इसका स्थायी प्रयत्न करना कि वह फिर कभी सिर न उठावे।" एक दो सभाओं में उन्होंने कहा 'चूहे और पिस्सू छूत फैलाते हैं, इस लिये डाक्टरों का कहना है कि चूहों और पिस्सुओं को नष्ट कर देना चाहिये पर चूहे और पिस्सू तो ईश्वर के सन्देशवाहक हैं। इनके द्वारा ईश्वर हमें चेतावनी देता है। मैं प्रत्यक्ष अपनी आंखों से देखता हूं कि जिन गांवों में आपको प्रकृति ने अच्छे से अच्छा जलवायु और स्वास्थ्यकर जमीन प्रदान की है वहां आप प्रकृति के नियमों को ऐसा भंग करते हैं कि यह मालूम होने लगता है कि वहां महामारी ने हमेशा के लिये अपना डेरा जमा रखा है। आप चूहों और पिस्सुओं को तो नष्ट कर देंगे, पर यदि अपने अपने घरों और आंगनों को इतना साफ न रखा कि चूहे और पिस्सू पैदा ही न हों तो वे तो वहां बराबर पैदा होंगे ही। उन्हें मारने से होगा ही क्या? मेरे जैसा अहिंसावृत्ती मनुष्य तो यही कहेगा कि चूहों और पिस्सुओं को भी जीने का उतना ही अधिकार है जितना कि मुझे है और इस लिये उन्हें नष्ट करने के बजाय मुझे खुद ही नष्ट हो जाना चाहिये। पर मैं इस जन्म में अहिंसा की इस कोटि तक नहीं पहुंच सकता, शायद अनेक जन्मों में भी न पहुंच सकूं, और आप लोग भी शायद न पहुंच सकें, लेकिन आप ऐसी स्थिति तो पैदा कर सकते हैं, जिससे चूहे और पिस्सू कभी घर बना ही न सकें। मैं चाहता हूं कि आप ऐसी स्थिति पैदा करें। मैं चाहता हूं कि स्वयं सेवकों ने सफाई का जो काम किया है, उसे आप स्थायी रूप दें। घरों के फर्श उखाड़ डालें चूहों के बिल खोद डालें और फिर फर्श ऐसे बनायें कि जिसमें चूहे बिल बना ही न सकें।

खुद भंगी बनो

बोरसद में गांधी जी ने लोगों को नागरिक धर्म विस्तार के साथ समझाते हुए कहा, 'यह शर्म की बात है जो यहां प्लेग चार साल रहा। खास बोरसद की सिर्फ तेरह हजार की आबादी है और तालुका की आबादी १४४००० की है। खास बोरसद और बोरसद तालुका में प्लेग को नेस्तनाबूद कर देना कोई ऐसी बात नहीं, जो अशक्य हो। पर सारे तालुके के लिये सिर्फ छः भंगी रखने से यह काम पूरा होने का नहीं। आप सब लोग खुद भंगी न बनेंगे, खुद सफाई का काम न करेंगे, तो सरदार और उनके स्वयंसेवकों के प्रयत्न करने पर भी यह बात नहीं कि प्लेग यहां न आवे। सच बात तो यह है कि स्वयंसेवकों ने जो काम पूरा किया है उससे आपकी जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है। आपने सफाई का यह काम चालू न रखा तो सारा परिश्रम व्यर्थ ही जायगा।

स्वराज्य कौन ले सकता है?

पिछले दिनों आप लोगों ने सविनय अवज्ञा के युद्ध में जो वीरता दिखाई थी और जो कष्ट सहन किये थे तथा त्याग किया था उस सब के लिये मैं आप को बधाई देने आया था। लेकिन आज मैं आप से यह कहने आया हूं कि जो लोग सरकार के खिलाफ लड़ सकते हैं, वे नहीं, किन्तु इस प्लेग जैसे विकट संकट से जो मोर्चा ले सकते हैं वही स्वराज्य भोग सकेंगे। मैं आपसे यह कहूंगा कि जब से मैंने 'स्वराज्य' शब्द सीखा तभी से मैं इस किस्म के काम में रस लेता आया हूं। सन १८९३ में ही जब मेरे सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ हुआ मेरा मुख्य रुचि इस प्रकार के रचनात्मक कामों में रही है। सरकार के साथ लड़ने का मौका तो मेरे जीवन में बहुत देर से आया। पर यह कहा जा सकता है कि वह अनेक वर्षों के ठोस रचनात्मक कार्य की पुख्ता नींव पर खड़ी की हुई इमारत है। मैंने म्युनिसिपलिटी के हर कायदा-कानून का यथाशक्ति पालन किया है और जिस सरकार ने मुझे अनेक बार जेल की सजा दी है वह भी मेरी नियम-पालन की योग्यता को जानती है। मैंने पहले पहल दक्षिणी अफरीका में जब भंगी का काम सीखा, तब से मैं यह जोर देकर कहता चला आ रहा हूं कि इस किस्म के काम से ही हम स्वराज्य भोगने योग्य बनेंगे। आप यह तो कहेंगे ही नहीं कि स्वराज्य प्राप्त हो जाने के बाद आप सो जायंगे और इस की परवा नहीं करेंगे। स्वराज्य का अर्थ अराजकता नहीं। आप को स्वराज्य मिलने के बाद भी इन सब प्रश्नों का हल करना ही पड़ेगा। याद रखिये कि जिस मनुष्य ने सविनय अवज्ञा के लिये आवाज उठाई थी वही मनुष्य इस प्रकार के आवश्यक काम के लिये आपको आज आमन्त्रण दे रहा है। जब तक आपने अपने शरीर और अपने घर को नीरोगी नहीं बना लिया तब तक आप खादी की उत्पत्ति का तथा ग्राम उद्योगों को पुनरुज्जीवित करने का रचनात्मक कार्य भी नहीं कर सकते, और इसी से यह सफाई का काम तमाम रचनात्मक कार्यों का मूलाधार है।'

शारीरिक शक्ति प्राप्त करो

गांधी जी आठ दिन बोरसद में रहे। इस बीच में उन्होंने डा० भास्कर पटेल से इस आशय के अनेक पर्चे प्रकाशित करवाये कि मकान चूहों से और मनुष्य का शरीर किस प्रकार रोगों से सुरक्षित हो सकता है। एक भाषण में गांधी जी ने कहा कि 'प्लेग पीड़ित चूहे या पिस्सू से प्लेग पीड़ित मनुष्य कहीं ज्यादा खराब है। आप तब तक इन संक्रामक रोगों को नष्ट नहीं कर सकते जब तक कि आप अपने शरीर को इस प्रकार का नहीं बना लेते कि उसे रोग को छूत लगे ही नहीं। प्रकृति ने तो हमें रोगों के साथ लड़ने की काफी शक्ति दी है पर हमने उसके नियमों की उपेक्षा करके उस शक्ति को गंवा दिया है। आहार विहार के नियमों का समुचित पालन करके हमें उस गंवाई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करना चाहिये।

सरकार ने भी इस प्रदेश में संक्रामक प्लेग को काबू में लाने के लिये जरूरी कार्रवाई करने का वचन दिया है। पर अगर लोग जागृत न हुए और सफ़ाई के काम को उन्होंने स्थायी रूप से चालू न रखा तो प्रयत्न भी निष्फल हो जायगा। लोगों को यह काम चालू रखने के लिये समझाना ही गांधी जी का बोरसद आने का एकमात्र हेतु था।

(हरिजन सेवक से)

धारावाही उपन्यास

अपराधी कौन ?

(ले०—श्री देव)

उम्मेद का अतीत जीवन बहुत बड़ा नहीं है। उसकी वृद्ध माता ने ही उसे पाला था। शिक्षा न पाकर गली के कुछ शरारती लड़कों की संगत में शरारतें करना सीख गया था। एक दिन फेरी वाले की मारपीट और लूटने के कारण पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसे जेल में भी तीन मास रहना पड़ा। वहीं बेतों का कठोर दंड भी मिला। जब जेल से वह रिहा हुआ, उसकी माँ मर गयी थी। अपने एक दोस्त बशीर के बाप की मदद से वह मिल में भरती होगया, जहां अपनी लगन और परिश्रम से वह लाइन जाबर होगया। एक दफा जेल के साथी मानसिंह ने उसे डाके के लिये उकसाया भी, परन्तु वह इस पाप के लिये सहमत न हुआ।

—सम्पादक)

(गतांक से आगे)

मिल के परिश्रमी जीवन के कारण उसके बालपन की स्मृतियां दब सी गई थीं। धुंधले से प्रकाश में कभी २ माँ की मूर्ति अस्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। स्मृति भटक कर कभी २ जेल और मानसिंह की ओर घूम जाती थी, परन्तु मिल के मजदूर का वर्तमान इतना कोलाहलपूर्ण होता है कि भूत या भविष्य की हल्की आवाज उसमें सुनाई नहीं देती। उम्मेद केवल वर्तमान जीवन व्यतीत कर रहा था। उसका पुराना दोस्त बशीर उसी कारखाने के इंजिन विभाग में काम करता था। वह भी उम्मेद की तरह मिलमय जीवन व्यतीत कर रहा था। दोनों मित्र कारखाने की दिनचर्या की किश्ती पर बैठ कर जीवन नदी के प्रवाह में बहे जा रहे थे।

हड़ताल

(१)

कल इतवार की छुट्टी है, इस कारण आज की रात मजदूरों के लिये प्रमोद और विनाश की रात है। सुबह जल्दी उठकर कारखाने जाने की चिन्ता नहीं, और न दिन भर खड़ा रहना पड़ेगा। इसलिये रात भर जागकर मन बहलाया जा सकता है, यह सोच कर मजदूर लोग अपनी लाइन में स्थान २ पर एकत्र होगये हैं, और जुआ व शराब की सहायता से अपने सुख और थकान वाले मजदूर जीवन में से जीवन का रस निचोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। सातवें दिन कुछ विश्राम मिलता है। सुनसान मन में कमी करने के लिये हृदय मनोरंजन का दरवाजा तलाश करता है। हाथ में गाढ़े पसीने की कमाई के कुछ पैसे आ गये हैं। परिवार साथ नहीं कि दिल बहलाने का कुछ उपाय हो। यदि कुछ आदमियों का परिवार साथ है भी तो संगदोष बड़ा बलवान है। इच्छा न रहे भी साथियों का साथ देना ही पड़ता है। शनीचर की रात को अधिकांश मजदूर अपनी सप्ताह भर की बचत पी जाते हैं और बहुत से तो कर्ज के नीचे दब जाते हैं। मिलों के मालिक मजदूरों के मनोरंजन और भलाई का दावा भरते हैं। मजदूरों की कमाई का कुछ हिस्सा मजदूर हित के नाम पर इकट्ठा किया जाता है और उसका कुछ भाग सिनेमा फुटबाल जादू आदि के खेल तमाशों में खर्च भी किया जाता है, पर वह कारखाने के हजारों मजदूरों के सर्व हिस्से को भी नहीं छूता। कुछ मजदूरों का कुछ समय के लिये मनोरंजन हो जाता है, परन्तु योरोप के मजदूरों को जो विनोद और सुख की सामग्री प्राप्त हो जाती है, भारतीय मजदूर उसका शतांश भी नहीं पाते। फिर विलायत के मजदूर जब गिर हुए मनोरंजन से नहीं बच सकते, तो भारतीय मजदूर कैसे बच सकेंगे।

हां, तो उस रात स्थान स्थान पर जुए के जमाव हो रहे थे। जिस लाइन में उम्मेद की कोठरी थी, वहां भी एक चौकड़ी जमी हुई थी। उस चौकड़ी के उस्ताद या गुरुघण्टाल वह हमारे पूर्व परिचित तिवारी जी थे, तिवारी जी कनौजिया ब्राह्मण थे, शुक्ला के अवतार थे और धर्म का अक्षरश: पालन करने वाले थे। जब रसोई बनाने बैठते, तब एक अंगोछा कमर पर लपेट लेते, बाकी सब कपड़े उतार कर खूंटी पर टांग देते थे। वह अंगोछा रसोई बनाने और खाने के लिये रिजर्व था। जब से खरीदा गया, तब से धोने की नौबत नहीं आई। मैल से बिल्कुल हो गया था, परन्तु था बिलकुल शुद्ध, क्योंकि तिवारी जी उसे केवल भोजन के समय पहिनते थे और उस अंगोछे में केवल तिवारी जी के शरीर की मल थी, और तिवारी जैसे उच्च ब्राह्मण के शरीर का मैल अशुद्ध कैसे हो सकता है। रसोई बनाते बनाते यदि पसीना आ जाता तो उसी कपड़े से पोंछ देते। जब खाना बना कर खा चुकते, तब उसे खूंटी पर टांग देते और दूसरे कपड़े पहिन लेते। इतने समय तक कोई दूसरा आदमी उन्हें छू नहीं सकता था। इन कारणों से वह मजदूरों के धर्मगुरु माने जाते थे। वह प्राय: कहा करते थे कि 'भय्या, हमने सब कुछ कर लिया। जुआ खेला शराब पी, जवानी उम्र में दूसरों की औरतों तक को न छोड़ा, पर अपना धर्म नहीं छोड़ा। आज तक कभी दूसरे का छुआ खाना नहीं खाया और कभी चौके से बाहिर जल ग्रहण नहीं किया'। श्रोता लोग धर्म की इस व्याख्या को सुनकर मुग्ध हो जाते और तिवारी जी को वशिष्ठ मुनि का कलियुगी अवतार मानते थे।

जुए का दौर चल रहा था। चार आदमी खेल रहे थे, बाकी देख रहे थे। थे तो वह दर्शक, पर उन में खिलाड़ियों से भी अधिक जोश पैदा हो रहा था। उस समय बशीर खिलाड़ियों में था और उम्मेद दर्शकों में। तिवारी जी पूरे जोश पर थे। हाथ पर हाथ मार रहे थे। दर्शक लोग अधेड़ तिवारी जी के शरीर की फुर्ती और जोश को देखकर आश्चर्यान्वित हो रहे थे। उनका प्रतिद्वन्द्वी इंजिन खाने का छोटा अफसर हाजी नसार अली था। वह मिल में हाजी जी के नाम से मशहूर था। बड़ी दाढ़ी रखता था। दो बार हज कर आया था। माथे पर काला दाग लग रहा था कि पांच बार की नमाज में कभी कमी नहीं आती। दाढ़ी का सब से लम्बा बाल नाभि को छूता था। तसबीह जेब में रहती थी। हाजी जी को उन के जानने वाले अपना मजहबी लीडर मानते थे। उधर तिवारी जी, इधर हाजी जी—बड़े जोर की भिड़न्त थी। तिवारी जी का साथी बशीर था, और हाजी जी का साथी रामनारायण।

जुआ फिसाद की जड़ होती है ही। बात ही बात में तिवारी और हाजी में कहा सुनी होने लगी। बशीर तिवारी जी की ओर से बोलने लगा और रामनारायण हाजी जी की ओर से। दर्शकों में भी दो दल हो गये। दो चार ने तिवारी की पीठ ठोकी, तो दो-चार ने हाजी की। गरमागरम बातें होने लगीं और वाक्यरूपी तीर छूटने लगे। शीघ्र ही पारा बहुत ऊंचा चढ़ गया और एक दूसरे की रिश्तेदार औरतों के सम्बन्ध में भयानक धमकियां दी जाने लगीं। सभी जोश में थे, बीच-बचाव कौन करे? मामला यहां तक बढ़ गया कि आस्तीनें चढ़ने लगीं। मुसलमानों के खून में गरमी अधिक होती है। अन्य सब की अपेक्षा हाजी और बशीर की तकरार अधिक गरम हो गयी। हाजी अफसर था और बशीर उनके अधीन कर्मचारी। पर जुए के जोश में दोनों बेहोश थे। झगड़े में दोनों बराबरी पर उतर आये। हाजी ने अपनी आयु और ओहदे के जोश में आकर बशीर के मुंह पर एक तमाचा जमा दिया। बशीर तमतमा उठा। वह अपने आप को भूल गया और उसने भी हाजी साहिब के दाढ़ी सुशोभित मुंह पर एक घूंसा जमा दिया, हाजी साहिब को ऐसे ठोस जवाब की आशा न थी। उन्होंने सोचा था, अफसर का तमाचा है, पच जायगा।

(क्रमशः)

स्वास्थ्य—सुधार

योषापस्मार या हिस्टीरिया

(श्रीमती राजकुमारी मिश्रा 'रमा')

आज कल बहुत-से लोग हिस्टीरिया के शिकार पाये जाते हैं। अधिकतर इस व्याधि से पीड़ित स्त्रियां ही पाई जाती हैं। प्रायः इस का दौरा युवावस्था के प्रारम्भ काल से ही होता है। फिर भी कभी २ प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था तक देखने में आता है, यद्यपि बारह वर्ष से कम उम्र वाले को यह रोग नहीं होता फिर भी कभी कभी ५-७ वर्ष के बालक या बालिका में भी पाया जाता है। मुख्यतः मानसिक व्याधियों से ग्रस्त रहने वाले परिवारों में यह व्याधि अधिक पाई जाती है। अधिक लाड़ प्यार, ईर्षा क्रोध आदि की अधिकता से ही इस व्याधि की उत्पत्ति होती है। शारीरिक रोग इस व्याधि का कारण बनता ही नहीं, यदि कभी बना भी है तो या तो अधिक बीमारी भोग कर अच्छे होने के बाद या यदि गर्भाशय में कुछ रोग हो, तभी यह बीमारी पैदा होती है। गर्भाशय से सम्बन्ध रखने के कारण ही इस का हिस्टीरिया नाम रखा गया है। इस विषय में मतभेद भी बहुत है लेकिन Ovary और गर्भाशय के रोग दूर करने से ही यह व्याधि जड़मूल से नष्ट हो सकती है।

यह व्याधि आजकल बहुत प्रचलित है, शायद ही कोई इससे अपरिचित हो। इस लिये हम यहां पर खास लक्षणों का ही वर्णन करेंगी। अधिकतर मानसिक चिन्ताओं के कारण ही इस की उत्पत्ति होती है। इसका जब वेग शुरू होता है तब ये लक्षण होते हैं। एकाएक हंसना या रोना, गला रुंध जाना, हाथ पैर ऐंठन लगना आदि। कभी कभी हाथ पैर ऐंठन के पहले छाती या पेट में पीड़ा मालूम होती है। धीरे धीरे वेग बढ़ता जाता है और साथ ही साथ गला भी अधिक रुंधता जाता है। श्वास लेने में भी कष्ट होता है। रोगी गिर पड़ता है और हाथ-पैर अधिक ऐंठने लगते हैं। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखिये तो मालूम होगा कि रोगी अकस्मात् बेहोश होकर नहीं गिरता। वह बड़ी सावधानी से जहां तक होसके, बिछौने पर ही गिरता है फिर भी रोगी बिल्कुल बेहोश सा ही मालूम होता है। शरीर का ऐंठना बड़ा ही अनियमित होता है। हाथ की मुट्ठी बंध जाती है, और मुट्ठी के अन्दर अंगूठा प्रायः दबा हुआ होता है। मुख बन्द होजाता है रोगी दांत किटकिटाया करता है। कुछ देर में वेग कम हो जाता है। कभी कभी पेट भी फूल जाता है और जब होश आजाता है तब बहुत पसीना छूटता है, और खूब पेशाब भी होता है। हिस्टीरिया का वेग कम से कम ५ मिनट और अधिक से अधिक एक या दो घंटे तक रहता है।

इस रोग का निदान करना भी कठिन है; क्योंकि अपस्मार और हिस्टीरिया के लक्षण प्रायः एक से ही होते हैं। कभी कभी निदान करना कठिन हो जाता है। फिर भी जहां तक मेरा अनुमान है वहां तक तो हिस्टीरिया के लक्षणों से अपस्मार के लक्षण विपरीत होते हैं।

जिस कारण से हिस्टीरिया हुआ है, वह कारण जब तक नहीं जान लिया जाता तब तक प्रायः कोई औषधि लाभ नहीं करती है। फिर भी उपचार किया जाता है आयुर्वेदिक शास्त्रानुसार तो ऋतु शोधक औषधियां तथा वायुदोषनाशक औषधियों का ही प्रयोग किया जाता है। किन्तु खास करके मानसिक स्थिति सुधारने की ही कोशिश करना चाहिये। रोगी को मानसिक कष्ट क्या है, यह जानने का भी प्रयत्न करना चाहिये और जहां तक हो सके उस कष्ट को निवारण करने का प्रयत्न भी करना चाहिये। रोगी को बहुत हलका भोजन देना चाहिये, और कब्ज न रहने पाये यह भी ध्यान रहे। रोगी को शुद्ध वायु सेवन कराना चाहिये, तथा प्रसन्न मन रखना चाहिये।

इतिहास का पाठ (१)

ब्राह्मण का आत्मोत्सर्ग

राष्ट्रीय आपत्ति का निवारण

मेवाड़ के एक जंगल में दो घुड़सवार परस्पर लड़ने की तैयारी कर रहे थे। एक के हाथ में तीक्ष्ण भाला था और दूसरे के हाथ में तेज बरछा। दोनों के चेहरों पर वीरता व दृढ़ता टपक रही थी। दोनों की आंखें क्रोध से लाल हो रही थीं। वे एक दूसरे की जान लेने पर तुले हुए थे।

ये दोनों थे मेवाड़ के महाराणा प्रतापसिंह और उसके भाई शक्तसिंह। दोनों में चिरकाल से द्वेषाग्नि धधक रही थी। आज वे दोनों आपसी झगड़े का सदा के लिये अन्त कर देना चाहते थे और एक दूसरे का प्राणान्त करने के लिये जंगल में आये थे।

×

'हमारे छोटे से देश पर संसार के सब से अधिक शक्ति-सम्पन्न मुगल साम्राज्य की क्रूर दृष्टि है। चित्तौड़ पहले ही छिन चुका है। रहा सहा राज्य छीनने के लिये भी अकबर अपने साम्राज्य का सम्पूर्ण जन, धन व बुद्धिबल लगा रहा है। ऐसी विषम स्थिति में दो भाइयों का पारस्परिक कलह तो देश को रसातल में पहुंचा देगा—हमारी स्वतन्त्रता नष्ट हो जायगी। कई बार दोनों भाइयों को समझाया। वे नहीं माने। आज, सुना है वे एक दूसरे को मार डालने के लिये जंगल में गये हैं। इस भ्रातृ विद्वेष का—राष्ट्र की इस आपत्ति का कैसे निवारण करूं। ठीक है, ठीक है, आत्म बलिदान ही इस आपत्ति का निवारण कर सकेगा। मेवाड़ के राजपुरोहित के हृदय सागर में इस प्रकार की विचारधारा बह रही थी।

*   *   *   *

दोनों सहोदरों ने अपने तीव्र हथियार एक दूसरे पर छोड़ दिये थे। दोनों ही सोच रहे थे कि उनके शत्रु का अन्त हो गया है, लेकिन एक क्षण में वे दोनों देखते हैं कि एक शांत तेजस्वी मूर्ति ने—उनके कुल पुरोहित ने वे घातक वार—दोनों घोड़ों के बीच में आकर—अपने शरीर पर ले लिये हैं। कुल पुरोहित भ्रातृ विद्वेष—राष्ट्रीय आपत्ति का निवारण करने के लिये अपना बलि देगया है। दोनों भाइयों के सिर ग्लानि से झुक गये। शक्तसिंह राज्य के लिये फिर भाई से नहीं लड़ा और राज्य छोड़ कर चला गया।

राष्ट्र की रक्षा के लिये मेवाड़ के इस सच्चे ब्राह्मण का यह अपूर्व बलिदान अमर रहेगा।

सूर्योदय के नियम

सूर्योदय के समय सूर्य की ओर आंखें बन्द कर के कुछ समय तक देखने से भी नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। इसका अनुभव बहुतों ने किया है। कई बार तो एक ही बैठक में ही नेत्र ज्योति सुधर गई है। जिस समय सूर्य की किरण इलकी गिरती हो उसी समय उसकी ओर देखना चाहिये। देखने का तरीका यह है। सूर्य के सामने खड़े हो जाओ हथेली से आंखें मूंद लो। और देखो! खड़े खड़े शरीर को इतस्ततः हिलाओ जिससे सूर्य प्रकाश आंखों के चारों ओर गिर सके। दस पन्द्रह मिनिट तक इस अभ्यास को जारी रखो। फिर छायादार स्थान में जाकर हथेली अलग कर पलकें खोल लीजिये। सूर्य की ओर खुली आंखों से हर्गिज मत देखिये। आंखों को हथेलियों से ढांप लेना भी आंखों को अच्छी विश्रांति देता है। शून्य वस्तुओं की कल्पना, हरियाले स्थलों का निरीक्षण भी आंखों की ज्योति बढ़ाता है। यदि प्राकृतिक उपायों से नेत्र चिकित्सा की जाय तो आंखों के आपरेशन नहीं से हो जाय और मानव जाति का अपार उपकार हो।

साहित्य-समालोचन

समालोचनार्थ सब पुस्तकों की दो-दो प्रति आनी चाहिये। एक पुस्तक आने पर समालोचना न हो सकेगी।

जीवन बीमा पथ-प्रदर्शक—संग्रहकर्ता शम्भूदत्त भारद्वाज। प्रकाशक-मेसर्स भारद्वाज एण्ड कंपनी। हमीर निवास, पालबीछला अजमेर। मूल्य २)।

बीमा-व्यवसाय भारत में दिन-प्रति बढ़ता आ रहा है, रोज नयी २ कम्पनियां खुल रही हैं, हजारों एजन्ट इसी कार्य पर अपना गुजारा कर रहे हैं। प्रतिस्पर्धा खूब बढ़ रही है। ऐसी हालतों में बीमे के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त कर लेना प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिये। इस विषय की अंग्रेजी में कई पुस्तकें हैं। हिन्दी में उक्त पुस्तक ही हमने पहली पुस्तक देखी है। लेखक ने बीमासम्बन्धी सब आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का उल्लेख विस्तार से कर दिया है। बीमासम्बन्धी परिभाषायें तथा नियम, कम्पनी चुनाव की शर्तें, एजेन्टों के लिये आवश्यक हिदायतें, प्रार्थनापत्र, हुकनामा, दावों का निपटारा आदि करने के नियमों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। १०५ पृष्ठों में भारत की प्रत्येक बीमा कम्पनी के विभिन्न पालसियों के प्रीमियम, शर्तों आदि की विस्तृत तालिकाएं दी हैं। इस से बीमा कराने वाला एक ही पुस्तक में सब कम्पनियों के प्रीमियम दर व साधारण शर्तों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। तीसरे खण्ड में भारतीय जीवन बीमा कम्पनियों के गत तीन सालों के आमद खर्च, वेल्युएशन, बैलैंसशीट और वार्षिक वृत्तों का रिपोर्ट दी हैं। इससे पाठक प्रत्येक बीमा कम्पनी की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है। इस तरह यह पुस्तक उन बीमेदारों के लिये बहुत उपयोगी हो गई है, जो पालिसी लेने से पहले कम्पनियों की तुलना कर लेना आवश्यक समझते हैं। इनके अतिरिक्त एजेन्टों, प्रबन्धकर्ताओं और संगठनकर्ताओं के लिये भी पुस्तक उपयोगी है।

उन कम्पनियों का परिचय नहीं दिया, जिन के हैड आफिस विदेशों में हैं, परन्तु इसके साथ २ यदि लेखक विदेशी कम्पनियों पर भारतीय सरकार के कानूनों की पाबन्दी की शिथिलता आदि की अनेक त्रुटियां देकर भारतीय बीमादारों को सचेत कर देते, तो अधिक अच्छा होता। हमने एक ऐसा ट्रैक्ट देखा है, जिस में भारतीय कम्पनियों की त्रुटियों का खूब निदर्शन कर विदेशी कम्पनियों की उपयोगिता सिद्ध किया गया है। विदेशी कम्पनियों के ऐसे आंदोलन का जवाब भी यदि दे दिया जाता, तो अच्छा होता। अन्त में हमें आशा है कि बीमा से सम्बद्ध हिन्दी संसार इसका आदर करेगा।

—कृष्ण

एशिया की महिला-क्रांति—लेखक—श्री जगदीशप्रसाद माथुर दीपक, प्रकाशक—हिन्दी-साहित्य मन्डल बाजार सीताराम देहली। मूल्य १); साइज—१८×२२ १६ पेजी; पृष्ठ संख्या १३६' कागज व छपाई सुन्दर।

प्रस्तुत पुस्तक में रूस, चीन जापान, बर्मा, फारस, भारत आदि देशों की महिलाओं के स्वतन्त्र संग्राम व जागरण का संक्षिप्त इतिहास है। यद्यपि लेखक ने दरिया को कूजे में भरने का असफल प्रयत्न किया है, मगर फिर भी मेरी राय में इस से भारत के हिन्दी भाषा-भाषियों की कुछ जानकारी अवश्य बढ़ेगी। इस युग में स्त्रियों का प्रश्न पृथ्वी भर के मनुष्यों के लिये सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। प्राचीनकाल से स्त्रियों को पुरुषों ने अपना गुलाम बना रखा है। कहीं २ तो धर्म और सभ्यता के नाम पर यह गुलामी एक गर्व की वस्तु बन गयी थी। अब स्त्रियों ने गुलामी से ऊब कर स्वतन्त्रता की ओर कदम बढ़ाया है और पुरुषों की भांति अपने अधिकारों को मांगने की कोशिश की है। योरोप, अमरीका, चीन, जापान आदि देशों की महिलाओं ने तो बहुत हद तक स्वतन्त्रता प्राप्त भी कर ली है और भारत प्रभृति देशों की महिलाएं इस पथ पर अग्रसर होती जा रही हैं। इस पुस्तक में उक्त प्रकार की बातों का ही समावेश है। मूल्य १) अधिक जचता है। आशा है लेखक महाशय भविष्यमें इसी विषय की कोई पूर्ण कृति हिन्दी संसार के सम्मुख पेश करके साहित्य की अधिक सेवा कर सकेंगे।

—जगन्नाथ

मालती—ले०-श्री सुरेन्द्रशर्मा, प्रकाशक—चांद प्रेस लिमिटेड चन्द्रलोक, इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या ३२४, मूल्य सजिल्द ३)।

मालती एक शिक्षाप्रद उपन्यास है, जिसमें एक सुशील, कर्तव्यपरायण, परोपकाररत हिन्दू-नारी का चित्र खींचा गया है। वह एक साधारण गृहस्थ की पत्नी है, परन्तु अपने परिश्रम, लगन, सेवाभाव और कर्तव्यनिष्ठा से जनता के हृदय में कैसे स्थान ग्रहण कर लेती है, इसका चित्रण अत्यन्त योग्यता से इस उपन्यास में किया है।

यद्यपि कथानक में विशेष रोचकता, या चमत्कार नहीं है, मालती का जीवन अनेक रहस्यमयी घटनाओं से ओतप्रोत नहीं है, परन्तु फिर भी उपन्यास पढ़ने में आनन्द आता है। मालती शनैः शनैः आत्मिक, सामाजिक उन्नति करती जाती है, समाज की विभिन्न समस्याओं—स्त्री-शिक्षा, और गरीबों की चिकित्सा के अभाव को वह अनुभव करती है और मार्ग में आने वाली अनेक बाधाओं को पार करती हुई लोक सेवा में अपने जीवन का उत्सर्ग कर देती है।

उपन्यास-कार ने मालती को एक आदर्श देवी के रूप में उपस्थित किया है, साधारण नारी के रूप में नहीं। उसके हृदय में कभी भी दुर्बलता ने स्थान ग्रहण नहीं किया। वह सदा ऊंची ही चढ़ती रही है। भावों के घात प्रतिघात का चित्रण इस लिये अच्छी तरह नहीं किया जा सका। उपन्यास की स्वाभाविकता भी इस लिये कुछ कम होगई है। पाठक साधारण मनुष्य का चित्रण चाहता है। एक देवता का जीवन आकर्षक तो होता है, लेकिन वह पाठक के जीवन से बहुत दूर की चीज—केवल पूजा करने की चीज बन जाता है, उसका अनुकरण करने की उत्सुकता पैदा नहीं होती।

मालती का पति रामदीन एक साधारण व्यक्ति है, लेकिन वह भी मालती की आदर्श लगन से प्रसन्न होकर उसके मार्ग में बाधक न बन कर सहायक हो गया है। समाज की अनेक समस्याओं पर लेखक ने सुन्दरता से प्रकाश डाला है। उपन्यास पढ़ने योग्य है।

—कृष्ण

प्राप्ति-स्वीकार

साहित्य का सपूत—लेखक—श्री जी० पी० श्रीवास्तव। प्रकाशक—चांद प्रेस, चन्द्रलोक, इलाहाबाद। मू० १॥)

वीरांगना पन्ना—ले०—डा० धनीराम 'प्रेम'। प्रकाशक वही। मू० ॥)

कायापलट—ले०—श्री शीतलासहाय बी० ए०। प्रकाशक वही। मू० १॥)

देवी जोन—ले०—श्री डा० धनीराम 'प्रेम'। प्रकाशक वही। मू० १॥)

शरीर और व्यायाम—ले०—श्री गणेशदत्त शर्मा गौड़। प्रकाशक—वही। मू० २)

साधक सहचरी (गुजराती)—ले०—मुनीश्वर सौभाग्यचन्द्र। प्रकाशक—महावीर साहित्य प्रकाशन मन्दिर, साबरमती। मू० ।)

दशवैकालिक सूत्र— लेखक और प्रकाशक वही मूल्य ।)।

बीमा-शिक्षक १९३५—ले०—श्री रा० म० चन्दोला। प्रकाशक—चन्दोला ब्रादर्स, मालीवाड़ा दिल्ली। मू० २)

ऋग्वेद संहिता (चतुर्थ अष्टक) टीकाकार—प० रामगोविन्द त्रिवेदी, प्रकाशक—वैदिक पुस्तक माला, सुलतानगंज, (ई० आई० आर०) मू० २)

असूल सुरागरसानी (उर्दू)—ले०—मि० आर० राइ। प्रकाशक—मि० डब्ल्यू० एम० हनफी, मेरठ। मू० २॥)

हरफन उस्ताद— ले० एस० एल० सी एल० इटावा। प्रकाशक—बोहरा चुन्नीलाल पैंशनर गवर्नमेंट आफ इंडिया, अलीगढ़। मू० २)

महिला समाज — ले० श्री ओंकारनाथ दिनकर। प्रकाशक—परिवर्तन प्रकाशक विभाग, अजमेर। मू० ।)

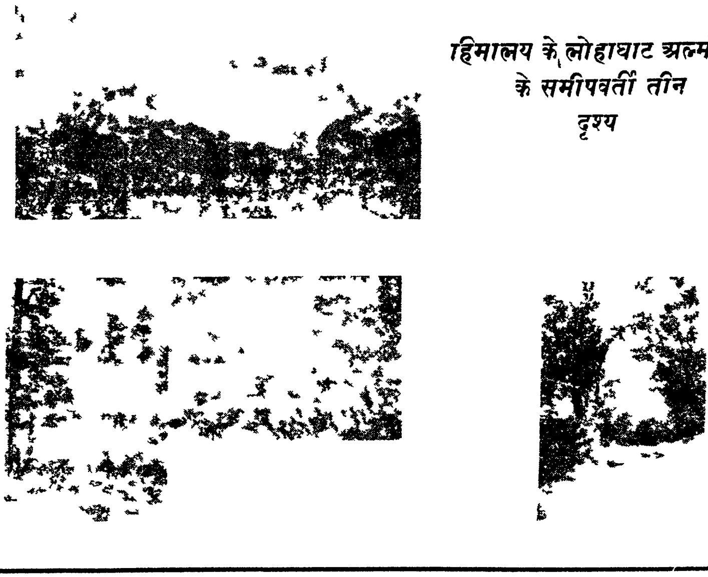
सूर सागर (संख्या ४)—सम्पादक श्री ज० पु० रत्नाकर। प्रकाशक नागरी प्रचारिणी सभा काशी। मू० १)

जिस पुस्तक की दो प्रतियां आई हैं, उनकी समालोचना आगामी अंकों में होगी।

उत्तरी ध्रुव (साइबीरिया) का एक हिम-दृश्य



हिमालय के लोहाघाट अल्मोडा के समीपवर्ती तीन दृश्य



सिनेमा की दुनिया

अमेरिका में नयी फिल्म

म० गांधी को बदनाम करने का कुत्सित प्रयत्न

हमारा कर्त्तव्य

(लेखक—श्री लक्ष्मणप्रसाद उदीवाल)

फिल्म जगत में अब मेयोवाद का प्रचार बढ़ता जा रहा है। कुछ दिन हुए कि अमेरिका वालों ने न जाने किसके इशारे पर 'इण्डिया स्पीक्स, 'बंगाली' और 'दी लाइफ ऑफ ए बंगाली लांसर' नामक चित्र बनाकर अपनी क्षुद्रता और भारत विद्वेष का परिचय दिया था।

सहयोगी 'वैराइटीज' के हालीवुड-स्थित संवाददाता ने विशेष सूचना दी है कि वहाँ एक 'विशेष चित्र' बना है। उस चित्र में संसार की सर्व-श्रेष्ठ विभूति महात्मा गांधी को पश्चिमीय युवती के साथ आलिंगन, चुम्बन, चाटन तथा प्रेमाचार करते दिखलाया गया है। इस चित्र को समस्त संसार में दिखलाने की योजना पर विचार हो रहा है। साथ ही यह भी पता लगा है कि महात्मा गांधी के उपर्युक्त चित्र को काटछांट कर भारत में भी दिखाया जायगा।

यह है अमेरिकन चित्र-निर्माताओं की नीचता की पराकाष्ठा। उपरोक्त चित्र द्वारा विदेशों में गुप्त रूप से महात्मा गांधी को व्यभिचारी सिद्ध कर यह दिखाना चाहते हैं कि भारत का महापुरुष जब इतना कामी है, तो साधारण जनता का कुछ कहना नहीं।

अमरिका वाले तो जो करना था, सो कर चुके। पर हमारा इस समय परम कर्त्तव्य है कि इस नीचता का जी जान से विरोध किया जाय। मेरे मन में तो निम्न उपाय काम में लाये जायें, तो हमारा उद्देश्य पूर्ण होगा।

प्रत्येक भारतवासी यह प्रण कर ले कि जब तक अमरिका के फिल्म निर्माता अपने कुकर्म का पश्चात्ताप न करें तथा ऐसे फिल्म बनाना बन्द न करें, तब तक हम अमरिका का कोई चित्र न देखेंगे। मुझे विश्वास है कि ऐसा करने से अमरिकन फिल्म निर्माता अपनी जेब पर प्रहार होते देख, अवश्य झुकेंगे।

भारत को कलंकित करने वाले चित्रों का खूब विरोध किया जाय। प्रत्येक सिनेमा-प्रधान नगर में 'मोशन पिक्चर्स सोसाइटी' के अधीन समिति स्थापित की जावें। उन लोगों का ऐसे चित्रों के विरुद्ध प्रदर्शन करना, हैंडबिल छपवाकर जनता में वितरण कराना मुख्य कर्म होना चाहिये।

भारत-सरकार व ब्रिटिश सरकार का कर्त्तव्य स्पष्ट है। ऐसी फिल्मों का निर्माण आगे से न हो सके और इन फिल्मों का प्रदर्शन बन्द हो जाय, इसके लिये उसे अपनी ओर से कुछ न उठा रखना चाहिये। म० गांधी भारत के हृदय-सम्राट् ही नहीं, सम्पूर्ण संसार की भी सर्व-श्रेष्ठ विभूति हैं। उन्हें आज का ईसा कहा जाता है। उनके विरुद्ध झूठा प्रचार अत्यन्त निन्दनीय और शरारतभरा है। सम्भव है ब्रिटिश सरकार या भारत सरकार उस फिल्म को रोकने में अपनी असमर्थता प्रकट करे। लेकिन इससे भारतीयों को विश्वास नहीं होगा। यदि ब्रिटेन के किसी राष्ट्रीय नेता के सम्बन्ध में ऐसी फिल्म बनती, तो ब्रिटिश सरकार जो कुछ करती, उसे वह अब करना चाहिये। यदि ब्रिटिश सरकार ऐसी फिल्मों का जबर्दस्त विरोध करे तो यह असम्भव है कि ऐसी फिल्में चल सकें। यदि वह पूर्ण प्रयत्न करे, तो भारतीयों के हृदय में भी एक अच्छा स्थान ग्रहण कर सकेगी, लेकिन क्या वह ऐसा करेगी?

ऐसे फिल्म किस लिए?

यह अवश्य रोका जाना चाहिये

एक जरूरी काम से दूसरे शहर जाना पड़ा। कार्य समाप्त करके शाम का समय काटने की समस्या आ खड़ी हुई। आखिर तय पाया कि सिनेमा चला जाय। पता लगाते २ 'कैपिटल' पहुंचा। वहाँ इश्तिहार पढ़कर मालूम हुआ कि आजकल 'मुफलिस आशिक' चल रहा है। फौरन उल्टे पैर वापिस हुआ। यहाँ अपने पाठकों से यह कह देना चाहता हूं कि उन में से जो जरा भी परिमार्जित रुचि के हों वे इस फिल्म को हरगिज न देखें प्रत्येक दृष्टि से निहायत रद्दी फिल्म है। अस्तु, पूछते पूछते दूसरे सिनेमा में—'इम्पीरियल' पहुंचा। दूसरी घण्टी बज चुकी थी इसलिये टिकट कटा कर खेल का विज्ञापन बिना देखे ही—चौअन्नी वालों में दाखिल हुआ (कोई कोई पाठक शायद नाक भौं सिकोड़ें, लेकिन हैं हम में से अधिकांश चौअन्नी वाले ही, यह मैं खूब जानता हूं! खैर), खेल शुरू हुआ। यहां पर मैं एक छोटी सी अप्रासंगिक बात बहुत संक्षेप में कह देना चाहता हूं, वह यह कि मेरे बड़े भाई साहब हिन्दुस्तानी बोलती फिल्में देखने के सख्त खिलाफ हैं। इसलिये नहीं कि वे यूरोपियन स्टाइल के आदमी हैं। हैं पूरे भारतीय—शिक्षा दीक्षा, रहन, सहन, आचार विचार सभी से लेकिन हिन्दुस्तानी फिल्मों से वे निराश हो चुके हैं। मैं उनकी यह बात नहीं मानता। मेरी राय में अनेक भारतीय फिल्म ऐसे बन चुके हैं, जो परिष्कृत रुचि के दर्शकों को सभी दृष्टियों से आनन्दित कर सकते हैं। लेकिन इधर पिछले कुछ दिनों से मैं जैसे फिल्म देख रहा हूं, और खास कर आज जो फिल्म देखा—उससे मैं इतना अवश्य मान गया हूं कि बड़े भाई साहब की राय एकदम गलत नहीं है। हिन्दुस्तानी फिल्म बहुत जांच पड़ताल के बाद देखने चाहिये। इश्तिहारबाजी और साथ ही अखबारों की आलोचना तक से बड़ा धोखा हो जाता है। अस्तु, खेल जो कुछ मैंने देखा उसका विस्तार कर के मैं अपने पाठकों का धैर्य छुड़ाना नहीं चाहता। संक्षेप में यही देखा कि ४०, ४५ साल के खूसट नायक' महाशय इस्लाम का झण्डा लिये मैदानों, पहाड़ों और जंगलों में पैदल भागे चले जा रहे हैं। उनके ५०—६० पिछलग्गुये भी इसी दशा में दिखाई दिये। नायक महाशय की प्रेमिका एक हजरत 'काफिरों' के सरदार के यहां महल में पहुंचाई जा चुकी थी। नायक महाशय पहिले तो इन काफिरों के हाथ पड़ गये, लेकिन वहीं उस दुश्मन की लड़की, इन पर आशिक हो गई और उसकी सहायता से अपनी प्रेमिका के पास रात को महल में जा पहुंचे। वहां चांदनी में बैठ कर प्रेमी और प्रेमिका दोनों ने 'थियेट्रिकल' तर्ज में खूब गजलें गाईं!—हैरानी की बात यह है कि दुश्मन के घर में इतना गला फाड़ने पर भी किसी के कान में जूं नहीं रेंगी!—नायक महाशय ने अन्त में कुछ झगड़ा झंझट के बाद अपनी प्रेमिका को पा ही लिया—साथ ही दुश्मन की लड़की—इस नई माशूका को भी हथिया लिया—मुसलमान बना कर!—यह है संक्षेप में कहानी। इस सारे खेल में २-३ बातों पर बड़ा जोर दिया गया है। एक तो इस पर कि इस्लाम ऐसा पक्का और पूरा मजहब है कि उसके मानने वाले को दूसरे मजहब वाले युक्तियों से भी कभी 'कनवर्ट' नहीं कर सकते। दूसरी बात यह है कि जब एक व्यक्ति एक मुख से कई रोटियां खा सकता है—एक आंख से कई रूप देख सकता है, तब एक दिल से कई औरतों से मुहब्बत क्यों नहीं कर सकता?—परिणामतः नायक महाशय दो दो प्रेमिकाओं पर हाथ साफ करते हैं!! अन्त में यह भी प्रभाव डालने की कोशिश की गई है कि इस्लाम के बन्दे 'काफिरों' पर हमेशा फतह हासिल करते हैं और काफिरों का तो इस दुनिया में नामो-निशान भी बाकी न बचना चाहिये"—यह है खेल का सारांश। इस कथा से ही पाठक यह अनुमान लगा लेंगे कि फिल्म के दृश्य-नाटकीय सज्जा अभिनय-संगीत आदि किस कोटि के होंगे। सैटिंग्स का यह हाल है कि कहानी तो चल रही है, शायद १७ वीं सदी की, और महल दिखाये जा रहे हैं, 'अप-टू-डेट' बीसवीं सदी के! अभिनय किसी पात्र का असाधारण रूप से अच्छा तो कहा ही नहीं जा सकता, बल्कि कई स्थल पर ऐसा स्पष्ट जान पड़ता है, मानो अभिनय का अच्छा खासा मजाक किया जा रहा है। दर्जनों दुश्मन तलवारें लिये खड़े हैं और सिर्फ एक 'इस्लाम का बन्दा' बारी बारी से सब को धराशायी करता जा रहा है! किसी दुश्मन को हारने और गिर पड़ने में जरा भी उज्र नहीं!! संगीत 'चलता' हुआ है। 'अशरफजी' की २-१ गजलें सुन ली जा सकती हैं। सारे खेल में 'सुलताना' ही एक पात्री है, जिसे चाहे देख लिया जाय, चाहे सुन लिया जाय। उसी के नाम पर खेल की इश्तिहारबाजी भी की गई है। फोटोग्राफी और ध्वनि आलेखन अलबत्ता, ठीक कहे जा सकते हैं। खेल का नाम 'औहर तकदीर' रखा गया है।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

दस्तकार

(एक सच्ची कहानी)

(ले०—श्री बलदेवमित्र बिजली नैपाल)

मैं नैपाल से एक शादी में शामिल होने के लिये देहली आया। यहां मुझे सीदीपुरा में ऐस पाल इनैमल ऐण्ड पाटरी वर्क्स देखने का अवसर मिला जो हाल में ही जारी हुआ है। निम्नलिखित करुण कहानी वहीं के एक कार्यकर्त्ता ने मुझे सुनाई—

मुझे बी० ए० पास करने के पश्चात ऐसा ज्ञात होने लगा कि मैं न केवल देश और जाति के लिये ही बोझ हूं बल्कि स्वयं अपने लिये भी भार हो रहा हूं। इससे पहले मेरा जीवन दुःख से कोसों दूर था। ७०—८० रुपए मासिक पिता का भेजा हुआ मनीआर्डर ईश्वरीय बरकत से कम न था। मैं विद्यार्थी जीवन में खूब गुलछर्रे उड़ाया करता था।

अब आनन्द जीवन को लम्बा समय गुजर चुका। उन दिनों मुझे चिन्ता भी नहीं थी मां बाप रिश्तेदार तथा अड़ौस पड़ौस सब मुझे आदर की दृष्टि से देखा करते थे। मैं बाबू था पूरी ठाठ से रहा करता था सूट बूट तथा हैट मेरे शरीर की सजावट थे, मेरा हुकम ईश्वरीय हुकम था। मेरे पिता अपने मित्रों से मेरी बड़ाइयों के पुल बांधा करते थे। वे कहते मेरा लड़का बी० ए० पास करने के पश्चात यह होगा और वह होगा। लेकिन मैं क्या हुआ यह मुझे एक वर्ष के अन्दर ही अन्दर अच्छी तरह ज्ञात होगया। मेरी करुण कहानी का किस्सा एक प्रार्थना पत्र से आरम्भ हुआ जो मैंने बी० ए० पास होने के बाद एक नहर के दफ्तर में क्लर्की के लिए दिया था। उसके पश्चात् आज तक मैंने कितने ही प्रार्थना पत्र दिये जिनकी गणना तक मुझे याद नहीं

हां इतना कह सकता हूं कि मैं लिखता लिखता तंग आगया। अब मेरे निकट सम्बन्धी मुझ से और खासकर मेरी बेकारी से तंग आगये। अब मैं उनके लिये बोझ था देश के लिये बोझ था जाति के लिये बोझ था और खुद अपने लिये बोझ था लोग मुझसे पूछने—कहो कहीं लगे हो मैं सिर फेर लेता। बाप कहता—आवारा कहीं का, दिन रात बेकार खाते खाते तो कूप भी खतम होजाते हैं कब तक बहुया बनकर बाप की कमाई खावोगे पढ़ाया लिखाया यहां तक कि शादी भी करदी अब गले का हार बन बैठ हो जाओ कहीं बाहर जाकर अपना काम सम्भालो। मुझसे नहीं पाला जाता।' मां कहती—नवाब कहीं का तुम्हारे लिये कहीं नौकरी नहीं। देखो नरेन्द्र का लड़का ओवरसीयर हो गया। फलां की दुकान पर १००) रुपये रोज की बिक्री होती है। मैं बुत बना रहता और दिल ही दिल में कहता—बी० ए० क्या हुआ जान का बवाल हुआ। परेशान रहने लगा। मेरा स्वास्थ्य गिर गया। खाना पीना जाता रहा। प्रार्थनापत्र लिखता बड़े उत्साह से लिफाफे बन्द करके भेजता मगर मेरी किस्मत तो बेकारी का पट्टा लिखवाकर आई थी इसलिये मैं बेकार था।

* * *

चन्दन मेरा पड़ोसी तथा बचपन का क्लासफैलो था। वह मैट्रिक पास करने के बाद टैकनिकल कालेज में चला गया था जहां उसने तीन साल के अन्दर रोगनी बर्त्तन दस्ती तस्वीरें और चीनी के खिलौने बनाने का कार्य सीख लिया था और अब अपने ही मकान में इण्डियन काटेज इण्डस्ट्रीज के नाम से काम कर रहा था। वह सूट नहीं पहनता था उसके कपड़े सादे और ढीले ढाले होते थे। उसकी स्त्री के पास क्रीम पाउडर साड़ी वगैरह नहीं थे। उसके यहां नौकर नहीं था बेचारे दोनों दिनभर परिश्रम करते शाम को चन्दन बाजार जाकर अपने दिनभर की कमाई की मेहनत पाता और खुशी खुशी घर चला आता था मैं उसे पहले घृणा की दृष्टि से देखा करता था उस की सादगी पर मुझे हंसी आती थी। तथा मैं उस से मिलना जुलना एक पढ़े लिखे जन्टिलमैन के लिये बुरा समझता था लेकिन अब वह मेरी शान्ति और सुख का सागर था मैं प्रायः उसके यहां चला जाता और अपने मन को लगाने के लिये उसके खिलौनों की मट्टी गूंदता रहता। मैं उसकी सादी जिन्दगी पर खुश होता और उसे भाग्यशाली समझता। वह सुखी था वह न कभी अर्जी लिखता था और न कहीं भेजता था उसे नौकरी की इच्छा न थी वह बाबू शब्द से घबराता था वह परिश्रमी था मजदूर और दस्तकार था।

मैं बेकारी से तंग आगया जीवन हौवा सा दीखने लगा यहां तक कि मैं अपनी परछाईं से भी डरने लगा। मुझे इस दुःख से छुटकारा प्राप्त करने के लिये मौत की गोद भली मालूम होने लगी। माता पिता स्त्री बच्चे रिश्तेदार और सम्बन्धी सब स्वार्थी प्रतीत होने लगे घर में मौनता थी आस्मान पर तारों की टिमटिमाती हुई रोशनी अपनी आंख मिचोनी से मेरे दुःखमय जीवन पर हंस रही थी। मैं उठा धीरे से दरवाजा खोला और चल दिया। गली से निकलते ही कुत्तों को भौं भौं ने मुझे 'आ जा' कहा। मैं समझा कि इन भी मैं बोझ महसूस हो रहा हूं। इस विचार में डूबा हुआ चलता गया यहां तक कि नदी का किनारा आ गया। नदी से उठती हुई लहरें मेरे स्वागत के लिए किनारे की तरफ आईं मैं बढ़ा—बढ़ा और बढ़ा। मैं चाहता था कि सूर्य निकलने से पहले मेरे जीवन का अन्त हो जाय कि इतने में मुझे मेरे पीछे पानी में किसी के चलने की आवाज सुनाई दी। मैंने मुड़ कर देखा यह चन्दन था जो घर से मेरे पीछे हो लिया था उसने मुझे पकड़ लिया और किनारे पर ले आया उसने मुझे सांत्वना दी और उसके उपदेश की ध्वनि मेरे कानों में हर समय गूंजती रहती है। वर्तमान शिक्षाप्रणाली बेकारी पैदा करने की एक कल है। वर्तमान सभ्यता भी बेकारी को बढ़ाती ही जाती है। दस्तकारी कारीगरी और शिल्प विद्या लोप नष्ट हो रही है यदि आज देश में शिल्प विद्याओं का नाश न होता तो भारत के हजारों सपूत हर साल रेल गाड़ी के नीचे सिर देकर आत्महत्या का पाप न करते। आओ बहुत हो चुका! बी० ए० बन बाबू बने। बेकार हो कर दर दर की ठोकरें खाईं अब मजदूर बनो! पुरुषार्थी और कार्यशील बनो! शिल्पकार और दस्तकार बनो! स्वयं कमाओ खाओ और परिवार को रोटी दो। सुबह मेरे साथ काम करो खिलौनों का गारा गूंदो, मिट्टी उठाओ चीनी कूटो और बाकायदा बन कर अपने दुःखमय जीवन को सुख और शान्तिमय बनाओ तुम मनुष्य हो ईश्वर ने तुम्हें दिल दिया है दिमाग दिया है और उसमें विचारने की प्रबल शक्ति दी है संसार कायरों का है कर्म्म का हथौड़ा तुम्हारे हाथ में है उठाओ और खूब चोट लगाओ निशाना बांधो कामयाबी तुम्हारी बांदी बनेगी। ये शब्द थे जो चन्दन के मुख से निकले और मेरे रोम रोम में समा गये मुझे अपने अन्दर एक नया जीवन प्रतीत होने लगा। मैंने सुना कि वायु की सरसराहट भी यही आलाप रही है। अब मजदूर बनो उद्यमी और क्रियाशील बनो। नदी की उठती हुई तरंगें भी अपना सिर किनारे से टकरा कर यही राग अलाप रही थीं कारीगर और शिल्पकार बनो स्वयं कमाओ खाओ और परिवार का पोषण करो। मैं उठा और चन्दन के पीछे हो लिया। सूर्य देवता आकाश में पूरे ठाठ से अपने रथ पर सवार थे। मुझ में एक जान थी हिम्मत थी बरकत थी और बर्कत के साथ ही एक हर्कत थी जिसके बल-बूते पर मैं संसार में इज्जत का जीवन व्यतीत करना चाहता था

* * *

आज तीन साल हो गये हैं चन्दन और मैं दोनों साथ साथ हैं। इण्डियन काटेज इण्डस्ट्री का काम खूब जोरों पर है। लगभग ३०० आदमी प्रति दिन काम कर रहे हैं। देश के स्वदेशी प्रचार ने हमारी दस्तकारी को चार चांद लगा दिये हैं पचासों युवक यह काम सीख कर मेरठ अमरोहा अजमेर सहारनपुर लाहौर अमृतसर, जालन्धर लखनऊ आदि में अपनी जीवन नौका पार कर रहे हैं। इनैमलिंग का काम भी साथ जारी है। चीनी के खिलौनों की मांग दिन प्रति दिन बढ़ रही है। चन्दन के उस्ताद जो इस कार्य में बहुत चतुर थे अब विदेश से और ट्रेनिंग हासिल करके वापस आ गये हैं। कारखाने की एक शाखा देहली में खोल दी है जिसके वही इंचार्ज और मालिक हैं।

अब न मैं किसी दफ्तर में अर्जी देता हूं और न मुझे ... सुनना पड़ता है। मैं पहले बी० ए० था लेकिन बेकार। अब मैं मजदूर हूं उद्यमी और कार्यशील हूं मुझे अपनी और अपने परिवार की रोटी की फिक्र नहीं करनी पड़ती। मैं ... कोर हूं।

आंखो में धूल

(ले०—श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र निर्गुण)

आजकल हिन्दा ससार में सा हित्यिक सपूतों की सृष्टि बड़ो ही शीघ्र गति से हो रही है। जान पड़ ता है कि प्रयेक हिन्दो पाठी साहि त्यिक बन कर ही दम लेगा यहीं पर अगर रुक्न तो गनीमत थी लेकिन रुकें क्यों? चलिय आगे, य आयें 'कवि पु गव' पूछिय कि कितन हैं? तो सख्या ही नहीं! जो तुक मिला दे वह कवि है। कछु महा नुभाव उठ तो 'तुक की दुम ही तोड डाली। पूछा यह क्या किया? बोले —इस से बड़ी अड़चन थी भावो का सकोचन हो जाता था। अब ठीक है। भावों की अभियक्ति के लिय बेतुकी' कर दी। एक छलांग और मारी। लगे हाथों छन्दों का भी श्राद्ध कर लो। कुछ मूढ रोने लगे यह क्या कर डाला? उत्तर दिया– पन्त जी ऐसा ही लिखते हैं और 'निराला' जी की रचनाए इसी तरह को हैं। अब कहिये। लेकिन ये कविराज (?) फिर भी अच्छे हैं। केवल शैली क नक्काल हैं, पर इन्हें तो देखिये! एक पद अपना और एक पद किसी अन्य 'कवि' का, पकाई खिचड़ी और रख दी सामने, कहिये साहब कैसा स्वाद है! बड़ा अच्छा है, जीते रहो पट्ठे! तुम ही हिन्दी की नाक हो।

उस दिन देहली के 'चित्रपट' का मासिकांक मिला। रूप रंग आकार प्रकार का क्या कहना। खूब सुन्दर बड़ा पसन्द आया। उलट पलट कर देखा, लखों और रचनाओं का सक लन भी बढ़िया है। कविताए भी हैं, एक कविता है 'आंखों मे लखक हैं कोई श्री बालगोबिन्दप्रसाद 'श्री वास्तव'। 'श्री वास्तव शायद उप- नाम है। रंग विरंग कागज पर रंग बिरंगी स्याही मे कविता छपी है। पढ़ो भाई दो पद पढ़े तो बड़ा आश्चर्य हुआ य तो बन्धुवर श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' की 'आंखों में कविता पुस्तक का उद्धरण है' यह कविता कैसी? सोचा शायद 'प्रेमी' ने अपना नाम बदल दिया हो। लेकिन इस पर विश्वास न हुआ, नाम बदलने की क्या आवश्यकता आ पड़ी, भोले प्रेमी न यह छल करना कहां सीखा। और तब अपनी प्रिय पुस्तक आंखों में निकाली और इस कविता से मेल किया। देखा तो कहीं २ आपने परिवर्तन और सशोधन भी किया है। अब और भी सन्देह हुआ—प्रेमी' न हो यदि कविता प्रकाशित की है तो भला परिवर्तन क्यों किया?

अब देखिये—श्री वास्तव जी की कविता के द्वितीय, तृतीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, और अन्तिम पद तो नितान्त नकल है जो कि पुस्तक में क्रमश २, ८, ३, १२ १, २५ पृष्ठ पर हैं। अब अवशिष्ट पदों को ली जिये। पहिला पद पुस्तक में यों है—

आंखों में पिछली अतृप्ति है
  आंखों में प्रियतम का प्यार।
त्याग, वियोग, विलाप पिपासा,
  प्राणों की आकुल मनुहार।

इस में तीसर चरण को श्रीवा- स्तव जी ने ऐसे लिखा है—'त्याग, वियोग, मिलाप, पिपासा। जहां कवि अपने दु खों का वर्णन कर रहा है, वहां बीच में आपने मिलाप' आन किस दृष्टि से करा दिया?

चौथा पद है—

आंखों में है सिन्धु किनारा,
  आंखों मे है सुन्दर द्वीप।
आंखों म सागर का तल है,
  आंखों में है छूछे सीप।

इस में तीसरा और चौथा चरण यों बदला है— आंखों में है सागर तल औ आंखों में हो छूछे सीप। तीसरे को तो शायद सानुप्रास होने के लिये चोला बदलना पड़ा है, परन्तु चौथे में यह 'औ' का हौआ जाने क्यों छिपा दिया?

पांचवा पद यह है—

आंखों में है जीवन नौका।
आंखो में उसकी पतवार॥
आंखों में है चतुर खिवैया।
आंखों में है पारावार॥

इस में आपने केवल 'खिवया को गवार समझ कर 'खेवैया' बना कर नागरिक कर दिया। अजी साहब! सजा दिया लेकिन इसमें जो सोलह मात्राओं की जगह सत्रह हो गई इसका उत्तरदायित्व किस पर होगा?

नव पद को पढ़िये—

नयनों की नौकाओं में भर,
हृदय सिन्धु मे चुन मोती।
मेरी पीड़ा अपने धन पर
इतराती गर्वित होती॥

इसमें चौथे चरण का परिवर्तन यह हुआ है—

इतरा कर गर्वित होती।'

अर्थात पहिले इतरा लेती है, उसके बाद गर्व करती है क्यो कि इतराना और गर्व करना साथ साथ नहीं हो सकता यही बात है न?

दसवा पद देखिये—

आंखो में मेरी मद प्याली,
प्याली में सकुचाती चाह।
कितना मादक पी जाने पर,
प्याली ठुकराना है! आह॥

आप कहते हैं 'कितनी मदिरा पी जाने पर क्योंकि मादक तो कुछ और भी हो सकता है और आप ठहरे पूरे शराबी, सो मदिरा ही पिया किये।

ग्यारहवां पद इस प्रकार है—

आंखों में है छोटे हृदय की
जिस में है मेरी दूकान।
देकर अमर प्रेम अभिलाषा
पाना अन्तर पार महान॥

आप ने लिखा 'पाना अन्तर पीर महान्'' और क्यो? 'प्रेमी' ने महान् को महान लिख दियो था, उसे आप ने शुद्ध रूप में पेश किया और 'अन्तर' की पूंछ उखाड़ कर फैंक दी! खूब किया।

बारहवां पद भी देख लीजिये—

आंखोंमें वह मधुर मिलन की
सुन्दर मतवाली लाली।
आंखोंमें यह विरह निशा है,
मतवाली काली काली॥

लेकिन, श्री वास्तव जी लिखते हैं कि 'मतवाला काली काली' क्यों- कि 'काली' नहीं है, उसमें श्री वा स्तव जी स्वय बैठ गये हैं।

मेरा न तो श्री वास्तव जी से परिचय है और न विरोध पर किसी 'कवि की कृति का विपद्ग्रस्त देख कर भी चुप रहना कम-से-कम मेरे सिद्धांत के प्रतिकूल है। केवल इसी लिये कुछ लिख रहा हू।

सम्भव है कि श्री बालगोविन्द- प्रसाद 'श्री वास्तव हो श्री हरि कृष्ण विजय वर्गीय प्रेमी हों। ऐसी दशा में मैं क्षम्य हू क्योंकि (प्रेमी मेरे श्रद्धेय हैं) उन्हे अपनी रचना में परिवर्तन करने का पूर्ण अधिकार है और मेरा कुछ कहना अनधिकार।

———

मैंने उस कहा कि यदि इसी तरह यूनीवर्सिटियों के शेष ग्रेजुएट भी नौकरी का लात मार कर व्यवस्था की ओर लग जावें और इस काम करने में घृणा न करें, खिलौनों का ही काम शुरू कर दें जैसे कि आप बना रहे हैं तो देश की बेकारी दूर हो जाय और विदेशी खिलौने तथा अन्य सामान आने बन्द हो जावें।

उसने कहा — हां, बात तो आप की ठीक है — लेकिन, जब हम दस्त कार बनें, तब न?

———

बाल-बन्धु-परिषद्

बालकों की एक कुटेव

'हरिजन-बन्धु' में आचार्य श्री० किशोरलाल मशरूवाला लिखते हैं—

"आमतौर पर यह देखा जाता है कि डेढ़-दो वर्ष की छोटी उम्र के बालकों में भी अपनी इन्द्रियों को छूने की आदत होती है। लड़कियाँ पेन्सिल आदि लेकर उसके द्वारा गन्दे खेल खेलती हैं। लेकिन अकसर देखा गया है कि जाँघिया या 'नकर' पहनने के बाद बालक इस कुटेव को भूल जाते हैं। कभी कभी यह आदत इतनी मजबूत हो जाती है कि इसी में से बालक हस्त मैथुन का शिकार बन जाता है एक बहन ने इस विषय पर मेरा ध्यान आकर्षित करते हुये इस सम्बन्ध में कुछ सूचनायें चाही हैं।

बहुतेरे माँ बाप इस आदत की उपेक्षा करते हैं; वे देखते रहते हैं, पर बालकों को रोकते नहीं। कभी-कभी नासमझ मातायें और नौकर आदि बालकों को स्वयं ही यह गन्दी आदत सिखाते हैं। लेकिन यह उचित नहीं है। बहुधा लोग इस कुटेव को छुड़ाने के लिये बच्चों से बुरा-भला कहते हैं, या इन्हें धमकाते हैं। यह भी ठीक नहीं। इस सम्बन्ध में आवश्यक तो केवल यही है कि धीमे से बालक का हाथ वहाँ से हटा दिया जाय या उसे हटाने को कहा जाय। जाँघिया पहनाये रखना भी एक उपाय है।

लेकिन इस सम्बन्ध में एक दूसरा महत्व की बात तो उस स्थान की स्वच्छता है। बालक तभी अपनी इन्द्रिय को छूता है जब गन्दगी के कारण वह खुजलाने लगता है। बहुत कम लोग ऐसे हैं जो छोटे बच्चों की इन्द्रिय को पेशाब के बाद भली भाँति धोते हों। जब बालक बैठे बैठे पेशाब करता है, तो उसका नीचे का भाग भी गन्दा हो जाता है। उस जगह पर धूल लगने या मिट्टी का क्षार जमने से खुजली चलने लगती है और बालक उसे खुजलाने को विवश हो जाता है। इसलिए आवश्यकता यह है कि शरीर के दूसरे भागों की तरह ही ये भाग भी स्वच्छ रक्खे जाँय।

धोये हुये भागों को सूखे गमछे से न पोंछकर यों ही हवा में सुखाने से भी खुजली पैदा हो सकती है। इसलिये पेशाब-पाखाने से निपटने के बाद बालक के भागों को भली-भाँति धोकर उन्हें पोंछ देना चाहिये।

इतने पर भी यदि यह मालूम हो कि खुजली बन्द नहीं हो रही है तो कोई खुजलीनाशक वस्तु लगानी चाहिये। इससे बालक इस कुटेव में फँसने से बचेगा और खुजलाने की उसे आवश्यकता भी न रहेगी। मैदे जैसा कोई भी महीन आरारोट पाउडर की तरह लगाने से खुजली मिट जाती है।

मेरी नैया

मेरी नैया मेरी नैया।
कागज की है मेरी नैया॥

आओ शीला, सीता सुषमा,
आओ मेरे मोहन भैया।
जमुना जी के जल पर अपनी,
तरावें कागज की नैया॥

मेरी नैया मेरी नैया।
कागज की है मेरी नैया॥

रंग बिरंगी, नन्हीं, हलकी
प्यारी प्यारी है यह नैया।
लाल पीले का जामा पहिन,
बैठा उस में नाव खिवैया॥

मेरी नैया, मेरी नैया।
कागज की है मेरी नैया॥

लो, बैठाती हूँ मैं उस में
भलुआ * बबुआ कृष्ण कन्हैया।
देखो, पाल उड़ाती फर-फर
वह जाती कागज की नैया॥

मेरी नैया, मेरी नैया।
कागज की है मेरी नैया॥

—रेवतीलाल

* भालू

अलोप

यदि चाहते हो तुम सब को देखो तुम्हें कोई न देखे फिर गायब धन पुरुष, भूत, वर्तमान, भविष्य के दुःख सुख की सब बात, रोग और उसके दूर करने तथा लोक परलोक का ज्ञान ईश्वर और मृत आत्माओं के दर्शन आकाश, पाताल पृथ्वी वहु और वाणी प्रश्नोत्तर, देवता आधीन सिद्ध बन जाओ, ऋण उद्धार धन, सन्तान जायदाद खरीद बिक्री, उच्च पद, राज सम्मान, इच्छित नौकरी, रोजगार लाभ, सब मुल्कों का सैर, प्रेमी या प्रेमिका को दूसरे को आधीनता से छुड़ा अपने गले का हार बनाना, परीक्षा में पास, मुकद्दमे, बैरी नाश हर काम में विजय और जो चाहो करना। यह अद्भुत चमत्कार ३) की वी० पी० से आदेश सहित मंगालो। नाजायज काम न करने की प्रतिज्ञा पत्र भरना होगा। उत्तर के लिये टिकट व जवाबी कार्ड आवश्यक है। श्री १०८ स्वामी पृथ्वी निवास, मुरादाबाद, यू० पी०।

क्वेटा भूकम्प के तीन चित्र



बाबू मुहल्ला
शहर का सबसे घना आबाद हिस्सा था।



मस्तुंग के सरकारी क्वार्टर



ब्रूस रोड, क्वेटा

भूकम्प के भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के ... खाँ बहादुर श्री ... की कृपा से

पिछली पहेली

अभी तक बहुत कम बालकों ने पिछली पहेली का उत्तर भेजा है। सब पिछला अंक देखकर पहेली के उत्तर भेजें।

—सम्पादक 'अर्जुन'।

कूपन

श्री भाई जी

मुझे बाल-बन्धु परिषद का सदस्य बनना स्वीकार है प्रत्येक देश के प्रत्येक धर्म जाति और रंग के बालक बालिकाओं को अपना भाई बहन मानूँगा और संसार में प्रेम और एकता स्थापित करने के लिये 'विश्व-बन्धुत्व' का पालन करूँगा।

नाम
मुहल्ला आदि
स्थान का पूरा पता

व्यापार-डायरेक्टरी

आवश्यक वस्तुयें निम्न पते से खरीदिये—

५) प्रतिवार

२।) प्रतिवार

२।) प्रतिवार

१।) प्रतिवार

३) प्रतिवार

२।) प्रतिवार

२।) प्रतिवार

व्यापार संसार

बम्बई का व्यापार

मई मास की रिपोर्ट

स्टेटिस्टिकल ब्रांच न्यू कस्टम्स हाउस, बम्बई ने गत मास में बम्बई से होने वाले विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में निम्नलिखित आंकड़े प्रकाशित किये हैं.—

	मई १६३४ रुपये	मई १६३५ रुपये
व्यापारिक पदार्थों का आयात	४,११,२३,४६४	५,१०,६४,६५१
भारतीय पैदावार का निर्यात	३,२१,५८,१८७	३ ५६०० २३६
विदेशी वस्तुओं का निर्यात	१३ ५१,७२४	१६,६१ ८६०
सोने का आयात	३,४३,८८९	१४,३० ४७६
चांदी का आयात	११,७१,०३६	५७८००७
करेंसी नोटों का आयात	७४,४८५	६२०४५
सोने का निर्यात	५ १८,६७,७०६	१ ६१,०४ २४३
चांदी का निर्यात	१०,८३०००	६ ४०,०००
करेंसी नोटों का निर्यात	×	×

स्वदेशी बीमा कम्पनी

१६३४ की रिपोर्ट

१६३४ का स्वदेशी बीमा कम्पनी की रिपोर्ट हमारे सामने है। यह वर्ष इस कम्पनी के लिए सफल कहा जा सकता है। जहां गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष ७३५ पालिसियां अधिक गयीं। प्रीमियम की आमदनी ६२८६(॥=) से बढ़कर २०२१६५)रु० हो गई। जीवन-कोश ११५५०) रु० से बढ़कर ६७६८५) रु० हो गया। इस रिपोर्ट से यह भी ज्ञात होता है कि कम्पनी ने यू० पी० के बाहर भी अपना क्षेत्र बढ़ाया है। आशा है, इस के अधिकारी आगामी वर्ष और भी अधिक उन्नति करेंगे।

रैलवे की आय में दो लाख की कमी

समस्त सरकारी रेलों की आय ११ मई १६३५ से २० मई १६३५ तक (१० दिन) २ करोड़ ६१ लाख रुपये हुई। परन्तु पहली मई सन १६३५ से १० मई सन १६३५ तक (१० दिन) उक्त रेलों की आय २ करोड़ ६३ लाख हुई थी। इस प्रकार सरकार को अन्तिम १० दिन की आय में पहले १० दिन की अपेक्षा २ लाख रुपये का नुकसान हुआ।

फसल को हानि

मैमनसिंह जिले में नदी के एकाएक बढ़ जाने से चावल और जूट की फसलों को नुकसान पहुंचा है।

पंजाब की फसल और मौसम

रोहतक में फसल को हानि

लाहौर १९ जून—१७ जून को जो सप्ताह समाप्त हुआ है—उसमें पंजाब के अधिकांश जिलों में हलकी सी वर्षा हुई, इससे खड़ी फसलों को लाभ पहुंचा। खड़ी फसल की हालत आमतौर पर औसत दर्जे की है। रोहतक में ईख और कपास को कीड़ा लगा हुआ है, उस मारने की चेष्टा की जा रही है। तहसील भलवाल (शाहपुर) और राजनपुर तहसील (डेरागाजीखां) में तम्बाकू की फसल को ओले से हानि हुई। बसन्त की अतिरिक्त फसल कट रही है चारों ओर पानी और चारे का भी प्रबन्ध है।

गेहूं की पंजाब में हालत

१६ जून तक समाप्त होने वाले सप्ताह में पंजाब में गेहूं का चालान अच्छा रहा और अब यह अनुमान किया जाता है कि करांची का स्टाक लगभग ५०००० टन का है। बाजारों का टोन लगभग स्थिर सा रहा है। युक्तप्रान्त की हालत अधिक अच्छी नहीं है क्योंकि अभी स्टाक हर जगह पिछले वर्षों से कम है और पैदावार को भी काफी नुकसान हुआ है।

गेहूं

करांची, अमृतसर और हापुड़ में गेहूं का भाव गतसप्ताह निम्नलिखित रहा।

तारीख	करांची (प्रतिखण्डी)	अमृतसर (प्रतिमन)	हापुड़ (प्रतिमन)
१७	२२।=)	२।-)	२॥=)
१८	२२।)	२-)	२॥-)॥
१६	२२॥	२।॥	२॥-)८
२०	२२)	२।॥।	२॥-)
२१	२२)	२)॥	२॥-)।

फिर सोना चला

१६ जून को समाप्त होने वाले सप्ताह में बम्बई से ३६६७६२३) रु० का सोना विदेशों में भेजा गया।

सोना-चांदी

गत सप्ताह सोने चांदी का उतार चढ़ाव इस तरह होता रहा—

सोना

ता०	पाटला	नेशनल	गिन्नी
१७	३४॥=)	३४॥=)	२२॥-)
१८	३४॥।=)	३५॥।)	२२॥)
१६	३४॥।=)	३५॥)	२२॥-)
२०	३४॥।=)	३५॥=)	२२॥-)॥
२१	३४॥।=)	३५॥=)	२२॥-)
२२			

चांदी

ता०	विलायती	नजाबी	देसी
१७	७८।)	७६।)	७४)
१८	७८॥।)	७५।॥)	७४)
१६	७६॥=)	७५)	७०॥
२०	७६॥=)	७४॥।)	७२॥)
२१	७६-)	७३।)	७०)
२२	७६=)	७४॥।)	७२)

मौसम

मानसून शुरू

भारत के अनेक भागों में वर्षा का जोर होने लगा है। बम्बई और अहमदाबाद में इस सप्ताह अच्छी वर्षा हुई। २१ ता० की रिपोर्ट के अनुसार बरमा आसाम और दक्षिणी बंगाल में मानसून जोरों पर है। दिल्ली में थोड़ा सा ठण्डा मौसम हो कर फिर गर्मी शुरू होगई है। पंजाब, पश्चिमोत्तर प्रान्त व काश्मीर में आंधियों का जोर रहा। यू० पी० में अभी तक तापमान साधारण से कुछ अधिक है। दक्षिणी बर्मा, आसाम, उड़ीसा, कोंकण उत्तरी हैदराबाद मलाबार उत्तरी मद्रास आदि में साधारण वर्षा हो रही है। उत्तरी बरमा छोटा नागपुर, पूर्वी बिहार, मध्यप्रान्त राजपूताना (पूर्वी) बम्बई, दक्षिण हैदराबाद, दक्षिणी मद्रास की ओर वर्षा कम है।

भविष्य वाणी

बरमा, आसाम में वर्षा का जोर होगा। मालाबार, कोंकण तथा खाड़ी बंगाल के चारों ओर बढ़कर मौनसून के बिहार तक पहुंचने की संभावना है। पंजाब और उसके आसपास आंधी तूफान की संभावना है।

गत १ जून से निम्नलिखित स्थानों पर इतनी वर्षा हो चुकी है—

अहमदनगर	३.८
अहमदाबाद	२.८
अमरावती	५ ३
बम्बई	१२.६
बंगलौर	६.५
चटगांव	१४.२
कटक	५ ०
कालीकट	१३ ०
कोलम्बो	१ ०
दारजीलिंग	११ ४
करवर	१४ ३
मैसूर	३ ५
महाबलेश्वर	१३ ४
मरमागोआ	१ ३
पूना	५
रंगून	८ ०
रत्नागिरि	१८ ५
शोलापुर	३ ३

शीशे को संरक्षण नहीं मिलेगा

टैरिफ बोर्ड ने अपनी रिपोर्ट में शीशे के व्यवसाय को १० साल तक संरक्षण देने की सिफारिश की थी। लेकिन भारत सरकार ने अब तक संरक्षण देने से इन्कार कर दिया है जब तक भारतवर्ष में सोडा एश काफी मात्रा में मिलने न लगे। सरकार का कहना है कि शीशे के लिये कच्चा माल जब तक पैदा नहीं होने लगता भारतीय व्यवसाय पनप नहीं सकता। शीशे के लिये प्रयुक्त होने वाले विदेशी सोडा एश पर तटकर सम्बन्धी सुविधायें करने की घोषणा भी हुई है।

नागरी लिपि के सुधार की योजना

(पृष्ठ २६ का शेष

डा० निरजनप्रसाद चक्रवर्ती कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी के प्रधान अध्यापक श्री ललिताप्रसाद शुक्ल, लाहौर के चर्टिम शकर रामचन्द्रदत्त बम्बई हाईकोर्ट के एडवोकेट श्री कन्हैयालाल मुंशी बम्बई के पुस्तक-प्रकाशक श्री किशोरीलाल अग्रवाल और दक्षिणी तथा गुजराती लिपियों के अधिकारी श्री हरिजी गोविन्द

इन्दौर में यह स्थिर हुआ था कि श्री पं० ललिताप्रसाद शुक्ल श्री बाबू सुनीति चटर्जी और श्री हरिजी गोविन्द की एक उप समिति बने और वह समिति इस विषय की योजना तैयार करे। डा० सुनीति चटर्जी के यूरोप जाने के पहले कलकत्ता में इस उप समिति की बैठक हुई। योजना बन गया है। श्री गोविन्द ने वर्तमान अक्षरों के आकार में कुछ परिवर्तन करने का प्रस्ताव किया है। वे ऐसे हर परिवर्तन के विरोधी हैं जो भारत के छापेखानों और शिक्षा प्रणाली की वर्तमान अवस्था में सम्भव नहीं है।

श्री गोविन्द द्वारा प्रस्तावित नये अक्षर एक मास के अन्दर ही जनता में प्रदर्शित किये जायेंगे।

नागरी लिपि के सुधार की योजना

काका कालेलकर की विज्ञप्ति

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित लिपि सम्मेलन के संयोजक तथा चेयरमैन काका कालेलकर ने निम्न वक्तव्य प्रकाशित कराया है—

लिपि परिषद् की बैठक हाल में इन्दौर में हुई थी और उनकी सिफारिश पर प्रयाग के हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने एक कमेटी इस उद्देश्य से स्थापित की कि वह नागरी लिपि में उन्नति करने के लिये आवश्यक सिफारिशें करे नागरी लिपि को अधिक सहज अधिक वैज्ञानिक और उसे लिखने (छापने) के लायक अधिक उपयोगी बनाने की ओर कितने ही सार्वजनिक उत्साही पुरुषों का ध्यान गया है। अब वह समय आ गया है कि कोई केन्द्रीय संस्था इस काम को अपने हाथों में ले और समस्या हल करने के लिये कोई ऐसी स्कीम बनाये जो नागरी लिपि का व्यवहार करने वाली आम जनता को मंजूर हो।

हिन्दी मराठी और गुजराती में नागरी लिपि का ही व्यवहार एक या दूसरे रूप में होता है। बंगाली आसामी, उड़िया, गुरमुखी और शारदा लिपि भी किसी न किसी रूप में नागरी लिपि में ही लिखी जाती है। इन सब लिपियों का व्यवहार करने वाले लोग नागरी लिपि की उन्नति में दिलचस्पी रखते हैं। तामिल, तलगू, कनाड़ी और मलयालम लिपियों की बुनियाद भी संस्कृत वर्णमाला पर है। नागरी लिपि उन्नति होने से उस का असर दक्षिण की लिपियों पर भी अवश्य पड़ेगा।

प्राचीन काल में संस्कृत भाषा का अन्तः प्रान्तीय प्रचार और वर्तमान काल में हिन्दी का राष्ट्रीयभाषा के तौर पर प्रचार होने से, नागरी लिपि को अखिल भारतीय प्रश्न की बुनियाद पर उन्नतिशील बनाने की समस्या सामने उपस्थित हो गई है। इस लिये जो लोग नागरी का सर्वव्यापी व्यवहार चाहते हैं उनसे मैं अपील करता हूं कि वे हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की लिपिकमेटी से सहयोग करें।

म० गांधी इस वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष हैं और वे स्वयं इस विषय में बड़ी दिलचस्पी ले रहे हैं। आशा है कि यदि लोकमत उचित सहयोग के साथ इस विषय पर प्रकाश डालेगा तो कुछ समय के भीतर काम चलाने लायक यह समस्या हल हो जायगी। जो सज्जन और संस्थायें इस राष्ट्रीय समस्या में दिलचस्पी रखते हों, उन से प्रार्थना है कि वे अपनी सम्मति और स्कीम जरूरी प्लेटों और हिदायतों के साथ शीघ्र ही भेज। इन सब पर कमेटी में बहस होगी और कुछ समय के बाद उन्हें जनता के सामने पेश किया जायगा। आशा की जाती है कि हम नागरी लिपि का वास्तविक भाव रखते हुए उसमें ऐसी अच्छी उन्नति कर सकेंगे जो वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये हमारे अनुकूल हों।

सब चिट्ठी पत्री निम्नलिखित पते से भेजनी चाहियें.—

लिपि समिति कार्यालय मगनवाड़ी,
वर्धा (मध्य प्रदेश)

लिपि समिति के नीचे लिखे सदस्य आगामी २५ जून को वर्धा में निमन्त्रित किये गये हैं—

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष म० गांधी अजमेर के राजपूताना अजायब घर के रायबहादुर प० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, पंजाब विश्व विद्यालय के वायस चांसलर डा० ए० सी० वुलनर, कलकत्ता विश्वविद्यालय के भाषा और उच्चारण विशेषज्ञ प्रो० सुनीतिकुमार चटर्जी लिपि परिषद् के सभापति और उद्योगकर्ता काका कालेलकर अन्नमलाई विश्वविद्यालय के डा० क० आर० पिसरोटे मद्रास सरकार के प्राचीन लिपि पाठोद्धारकारी

(शेष पृष्ठ २५ पर)

ऐसे फ़िल्म किस लिए

(पृष्ठ २२ का शेष)

इस श्रेणी की आलोचना लिखने का मेरा एक उद्देश्य है। जिस समय पहले-पहल भारत में बोलपट बनने प्रारम्भ हुए थे उसके कुछ समय बाद फिल्म निर्माताओं का ध्यान ऐसे बोलपट बनाने की ओर गया था जिनमें उच्च आदर्श, उपयोगिता और निर्माण कौशल यह सभी यथोचित मात्रा में विद्यमान हों। यही कारण था कि उस समय 'चण्डीदास', 'राजरानी मीरा', 'मायामच्छीन्द्र', 'अयोध्या का राजा', 'यहूदी की लड़की', 'शकुन्तला', 'मीरा', 'मिस १९३३' आदि अच्छे बोलपट बनाये गये। परन्तु अब मैं कुछ समय से देख रहा हूँ कि फ़िल्म निर्माताओं की प्रवृत्ति दूसरी ओर दिशा में बदल गई है। जहाँ पहले के कुछ फिल्म अज्ञान और अनुभव की कमी के कारण गन्दे बन जाते थे वहाँ आजकल जान बूझ कर निम्न श्रेणी के लोगों को आकर्षित करने के उद्देश्य से फिल्मों में गन्दगी भरी जा रही है। आजकल के फिल्म निर्माताओं का एक सम्प्रदाय विशेष को प्रसन्न करने की चेष्टा में प्रयत्नशील है। विशुद्ध आर्य संस्कृति और वैदिक आदर्शों के समान ही शुद्ध इस्लामिक कल्चर और इस्लाम के आदर्शों का प्रसार करना मैं निन्दनीय नहीं समझता परन्तु ऐयाशी और बहु विवाह की उत्तेजना देना, असभ्यता का प्रसार करना और काफ़िरों का रक्तपान करने की प्रवृत्ति को बढ़ाना अत्यन्त घातक प्रयत्न है। एक समाज विशेष की दिलचस्पी के लिये ऐसी गर्हित बातों से भरी हुई और मज़हबी दीवानेपन को उकसाने वाली फिल्म तय्यार करना और इस प्रकार अपनी चाँदी बनाना एक निन्दनीय व्यापार है। यह अवश्य रोका जाना चाहिए जिससे फ़िल्मों के द्वारा इस बात का प्रचार न हो कि दुनिया भर में इस्लाम का भण्डा फहराया जाय—ग़ैर मुस्लिम सब काफ़िर होते हैं—काफ़िरों ने मुसलमानों पर हमेशा ज़ुल्म किये हैं अतः काफ़िरों को नस्तनाबूद कर दिया जाय। उनमें अपढ़ और कम समझ जनता में मज़हबी दीवानापन फैलाने के बजाय क्या किसी अच्छी बात की आशा की जा सकती है? मैं स्वयं देखा है कि एक ऐसी ही फ़िल्म देखने के उपरान्त थियेटर हाल के दरवाज़े—वाले धक्के में से निकले हुए कुछ लौंडे दर्शकों को दिखा दिखा कर कह रहे थे— यह देखो साले सब काफ़िर

उपनिवेश व्यवस्थापिका मण्डल का विकास

(पृष्ठ १४ से आगे)

तत्परता और शक्ति सञ्चय के साथ अपना कार्य करना पड़ता है। पिछले दिनों सभी देशों में मज़दूर पार्टी का बड़ा विनाश हुआ है इस दल के मेम्बरों को मज़दूर संघ की नीति के अनुसार चलना होता है उनकी स्वतन्त्र राय नहीं होती। जो कुछ मज़दूर कानफ़रेन्स तय कर देती है उसी नीति को मेम्बर लोग पार्लियामेन्ट में काम में लाते हैं। इसमें कभी कभी बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती है क्योंकि पार्लियामेन्ट में बहुत से मामले जो विरोधी दलों के साथ न्याय पूर्वक समझौते से तय हो जाने चाहियें उनको मज़दूर सरकार स्वीकार नहीं कर सकती क्योंकि पार्लियामेण्ट से बाहर की उनकी मज़दूर कानफ़रेन्स उसे अस्वीकार कर चुकी है। इससे मज़दूर दल का व्यापक प्रभाव नहीं रहा क्योंकि मज़दूरों के अलावा जो अन्य लोग उन्हें वोट देते हैं उनका अब उन पर विश्वास नहीं रहा क्योंकि मज़दूर दल का मेम्बर अपनी मज़दूर कानफ़रेन्स की नीति के इधर उधर विचार भी कुछ नहीं कर सकता इस लिये दूसरे लोग उनसे क्या उम्मेद रखें। इंगलैण्ड की मज़दूर सरकार के पतन का यही कारण था। मि० मैकडानल्ड और उनके मन्त्रिमण्डल के अन्य सदस्यों में इसी नीति पर मतभेद पैदा हो गया जिसका परिणाम इंगलैण्ड पार्लियामेन्ट में मज़दूर दल की शक्ति का ह्रास हुआ।

जा रहे हैं वे न यह उतना कुछ महत्वपूर्ण नहीं पर ऐसी बातों का बुरा असर पड़ सकता है इतना निर्विवाद है। जो दर्शक— जजमेन्ट आफ़ अल्लाह, सितमगर, अमर ज्योति आदि फ़िल्म देख चुके हैं वे मेरे इस मत से सहमत होंगे इसमें सन्देह नहीं।

— सव्यसाची

देशबन्धु चित्तरंजनदास

(पृष्ठ ७ का शेष)

लिये त्याग की दौड़ में देशबन्धु के नेतृत्व में, बंगाल अन्य प्रान्तों से आगे बढ़ कर दौड़ रहा था।

देशबन्धुदास का शरीर समाप्त हो गया परन्तु उनको बतलाया हुआ मार्ग राजमार्ग की तरह सामने बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। जो उज्ज्वल देश भक्ति असाधारण त्याग अद्भुत कार्यशक्ति और अनुपम वीरता का आदर्श देशबन्धु ने देश के सन्मुख स्थापित किया था वह आज भी उसी प्रकार देदीप्यमान है। भारत वासियों के हृदय में उस बांके देशभक्त की मूर्ति अमिट रेखाओं में अङ्कित हो चुकी है—घाट पर जो मूर्ति स्थापित की गई है वह तो उस हृदयस्थ मूर्ति का एक छोटा सा प्रति रूप है।

दिमाग

की ताज़गी के वास्ते बादाम गिरी अति लाभकारी है जूस मशीन में हर प्रकार के रोगन और फलों का रस आसानी से तैयार हो सकता है मूल्य १२) पीतल की १०) ११) लोहे की ८)-९) तथा निकल कराई ४) अधिक। कृष्णा अंगीठी रजिस्टर्ड हाथी मार्का लकड़ी साफ्टकोक और कोयला सब के वास्ते मुफ़ीद सुन्दर तथा मज़बूत मू० २॥) कपींग प्रेस अब तक विलायती आता था अब देसी भी। मू० १५)। दिलखुश मशीन रजिस्टर्ड हाथी मार्का गन्ने का रस एक आदमी आसानी से निकाल सकता है। गर्मियों की ख़ास सौगात। मूल्य ६)—७)—७॥)। आर्डर के साथ चौथाई रक़म आना आवश्यक है।

रामनाथ गुप्ता कारख़ाना हलवाई
हौज़क़ाज़ी देहली

विषय-सूची

विषय	लेखक	पृष्ठ-संख्या
१ सप्ताह के प्रसिद्ध व्यक्ति		मुखपृष्ठ
२ सप्ताह की डायरी		३
३ सप्ताह की हलचल		
४ सम्पादकीय		५
५ सुदूर पूर्व या प्रशान्त सागर की समस्याय	श्री महावीर विद्यालंकार	७
६ बन्दी जीवन में राखी की याद (कविता)	श्री भगवद्दत्त गोविन्द	८
७ राखी	श्री करुणेश	८
८ राखी	श्री रमेशचन्द्र आर्य	८
९ हमारी चित्रावली (?)		९
१० स्त्री० स पर्व और विशाल भारत	श्री फूलचन्द्र विशारद	१०
११ महिला जगत		
राखी का प्रकरण	श्री मुकुन्दबिहारी वर्मा	११
नारी की उत्पत्ति	श्री एफ० डबल्यू० बन	११
क्या स्त्रियाँ प्रजनन कार्य के लिये ही हैं ?	श्री धर्मानन्द	१२
१२ राष्ट्र वाणी	श्री गोपालसिंह नेपाली	१३
१३ विद्यार्थियों की फैशनपरस्ती	श्री आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय	१५
१४ अपराधी कौन (गल्प)	श्री देव	१६
१५ वर्षा ऋतु के नियम	श्री वासुदेव महतो	१७
१६ हिन्दुनवर्ग	श्री शंकरदेव	१६
१७ राखी की स्मृति (कहानी)	श्री जीवनलाल	२१
१८ रक्षा बन्धन	श्री कल्याणकुमार शशि	२३
१९ सप्ताह का राशिफल	श्री लक्ष्मण व्यास	२२
२० व्यापारिक-संसार		२५
२१ हँसी-दिल्लगी		२७

साप्ताहिक डायरी

३ अगस्त

—रावी नदी में पानी की बाढ़ के कारण 'सैयदवाला' कस्बे का आधा भाग जल मग्न होगया है। बहुत से मकान, झोंपड़ गिर पड़े हैं। लोग भाग रहे हैं।

—पेशावर की खबर है कि वहां खुम्मारियों के दो दलों में भयङ्कर लड़ाई होगई। इसमें दो आदमी मर और तीन की दशा चिन्ताजनक है।

—हाजिरी और बोनस के जिस नये नियम पर कोलार की सोने की खानों में हड़ताल हुई थी, उसे मैसूर माइनिंग कम्पनी के अधिकारियों ने रद्द कर दिया है। हड़ताली मजदूर काम पर जा रहे हैं।

—इलाहाबाद में गरम अफवाह है कि पं० जवाहरलाल नहरू अक्तूबर मास में रिहा होजायेंगे, क्योंकि इस मामूल कैद-अवधि खत्म होने से पहिले उन्हें ४ मास की रियायत मिलेगी।

४ अगस्त

—बरली के सेशन्स जज ने एक सुनार को मार देने के अभियोग में ४ व्यक्तियों को फांसी और २ को तीन-तीन वर्ष की कड़ी कैद की सजा दी है।

—एक हिन्दू धर्मशाला पर अधिकार जमाने के लिये सिक्खों के जत्थे अभी तक स्कापर (काश्मीर) जा रहे हैं। इस सिलसिले में ३० सिक्खों को सजा हो चुकी है और उनपर कुल मिला कर ४०००) जुर्माना हो चुका है।

—बड़ौदा में जगदीश मिल के हड़ताली मजदूरों व पुलिस में मुठभेड़ हो गई। पुलिस ने गोली चलाई, जिस से कई मजदूर घायल हुए।

—मथुरा जिले में खेतों में मवेशी चराने के मामले पर दो-तीन गांवों के लगभग २०० आदमी परस्पर लाठी-काठियों से खूब लड़े, जिस से १२ व्यक्ति सख्त घायल हो गये।

—डा० खान साहब एम० एल० ए० ने एक वक्तव्य में कहा है कि "खुदाई खिदमतगारों पर लगाये गये प्रतिबन्ध अन्याय-पूर्ण हैं, सरकार सिद्ध करे कि सीमा प्रांत के स्वयंसेवक पठान हिंसक हैं।'

—अहमदाबाद के पास के एक जंगल में सशस्त्र पुलिस वालों और डाकुओं में ३ घण्टे तक लड़ाई हुई। एक डाकू घायल हो कर गिर पड़ा और शेष भाग गये।

—लाहौर शहीदगंज मस्जिद के सम्बन्ध में भाषण देने के कारण ३ मुसलमानों को फिर गिरफ्तार कर लिया गया है।

—'सरपंच' के सम्पादक पंडित केशव मिश्र ने इलाहाबाद के सिटी-मजिस्ट्रेट की अदालत में पायोनियर, प्रताप, वर्तमान, हकीकत, प्रयागपंच और मिल्लत के सम्पादकों पर मानहानि का दावा दायर कर दिया है।

५ अगस्त

—अफगानिस्तान में बाढ़ आने से खूनारकाल के पास देवगुल दर्रे में जन-धन की भारी हानि हुई है। २२ आदमी डूब चुके हैं।

—बम्बई में डौक-वर्क्स यूनियन के वार्षिक चुनाव में झगड़ा हो गया। पुलिस ने बीच में पड़ कर लाठी-चार्ज किया और ३ व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया।

—अजमेर के असेम्बली चुनाव केस में वादी श्री मुकुटबिहारीलाल ने अपनी दरख्वास्त वापिस ले ली।

—लाहौर की खबर है कि पंजाब में एक दिन में दुर्घटनाओं से १२ व्यक्ति मर गये।

—बंगाल और बिहार में पुलिस ने बहुत से मकानों की तलाशी लेकर बम, बारूद, कारतूस व डायनामाइट बरामद किया है।

—गाजियाबाद में पुलिस ने आधीरात को एक मकान पर छापा मारा और ढाई डाम कोकीन बरामद की।

—क्रीट (यूनान) में ६००० हड़तालियों ने सरकारी दफ्तरों पर हमला कर दिया। फलतः पुलिस-वालों व हड़तालियों में मुठभेड़ हुई, जिस से ३० आदमी घायल हो गये।

६ अगस्त

—जोधपुर में एक कसाई ने एक हिन्दू साध्वी को लठ और पत्थरों से नृशंसता-पूर्वक मार डाला।

—हापुड़ में शाम को ६ बजे भूकम्प का धक्का आया, जो कई सेकिण्ड तक रहा। जमीन में गड़-गड़ का शब्द भी हुआ था।

—पटना की खबर है कि प्रातः काल ४ बजे प्रसिद्ध आर्य-सन्यासी स्वामी मुनीश्वरानन्द जी का देहान्त हो गया।

—लाहौर की सरकारी विज्ञप्ति से ज्ञात हुआ है कि ७ अगस्त से लाहौर के पत्रों पर से सेन्सर उठा लिया जायगा।

—मुरारियां वाला (कादरपुर) के पास सिक्खों के दो दलों में भीषण लड़ाई हो गई। फलतः ३ सिक्ख मर गये।

—बर्मा कौंसिल में मिनिस्टरों में अविश्वास का प्रस्ताव, प्रस्ताव के समर्थकों की कमी के कारण, पेश न हो सका।

—मुरादाबाद के आसपास एक अज्ञात खूंखार जानवर ने आतंक फैला रक्खा है। वह रात में आक्रमण करके कई लड़कियों को मार चुका है।

—रूस में हाल में 'परोस्टेड' नामक एक नई मशीन बनाई गई है, जिसमें बैलून व पैराशूट (उतरने की छत्री) दोनों शामिल हैं। इस मशीन का परीक्षण किया जा रहा है।

—लाहौर शहीदगंज मसजिद के मामले में ८ अभियुक्त माफी मांगकर छूट गये। शेष पर मुकदमा प्रारम्भ हो गया। १२३ अभियुक्तों ने सफाई के लिए लगभग १००० गवाहों का नाम लिखाया है।

७ अगस्त

—लाहौर किनारी बाजार में एक कुएं पर जिसे हिन्दुओं का मिलकियत बताया जाता है, मुसल्मानों द्वारा छत बनाने से हिन्दुओं और मुसलमानों में मन मुटाव-सा हो गया है। हिन्दुओं ने उच्च-अधिकारियों के नाम दरख्वास्तें भेजी हैं।

—काने ग्राम (वजीरिस्तान) में गत शुक्रवार को प्रलयकारी हवाई-तूफान आया, जिस से बहुत से मकान उड़ गये और वृक्ष गिर पड़े।

—कलकत्ता हाईकोर्ट के जजों ने आसाम सरकार की एक अपील खारिज करते हुये कहा है कि 'आसाम क्रिमिनल ला अमेन्डमेंट एक्ट का प्रान्त के बाहर कोई महत्व नहीं है'।

—रावलपिण्डी के एक ग्राम ने अपने अधीनस्थ एक मन्दिर को मिस्मार करने का निश्चय किया है जिससे वहां के हिन्दुओं में सनसनी फैल गयी है। हिन्दुओं ने सरकार से प्रार्थना की है कि मंदिर उन्हें दिला दिया जाय।

८ अगस्त

—कलकत्ते का समाचार है कि मटियाबुर्ज के पास गंगानदी में एक नाव पर २० बंगाली नवयुवकों ने डाका डाला और ३ व्यक्तियों को छुरा भोंककर बहुत सा माल लूट लिया। अभी कोई गिरफ्तारी नहीं हुई।

—जमशेदपुर के पास खोरकाई नदी में नाव दुर्घटना के कारण १२ आदमी डूब गये।

—अमरिका के मशहूर उड़ाके विलीपोस्ट सनफ्रांसिस्को से रूस जाते हुये अलास्का से आगे बढ़ गये।

—सहारनपुर जाते हुए लोक सेवक संघ के सदस्य श्री छबीलदास लारी दुर्घटना में सख्त घायल होगये।

—मेरठ षड़यंत्र केस के भू० पू० अभियुक्त श्री मिरजकर गिरफ्तार हो गये।

—सेठ जमनालाल बजाज गांधी जी की एक लाख की थैली के सिलसिले में इन्दौर गये हैं।

—श्रीमती जफरअली उर्फ सावित्रीदेवी जेल से ५ सोल की कैद भुगतकर रिहा होगईं। उन के पति ने उनको तार द्वारा तलाक की सूचना भेज दी है।

९ अगस्त

—जोधपुर में आबकारी विभाग वालों और रींवा ग्राम के जागीरदार के आदमियों में गोली चल गयी। जमींदार मारा गया। कई दासियां और आदमी भी घायल हो गये।

—लाहौर म्युनिसिपैलिटी में अव्यवस्था होने के कारण बहुत सम्भवतः वह तोड़ दी जायगी और अंग्रेज अफसर रखा जायगा।

—लन्दन के 'डेली एक्सप्रेस' के कथनानुसार बहुत सम्भवतः सिंध के पहले गवरनर मि० जिन्ना बनाये जायेंगे।

—वैस्टर्न इंडिया मैच फैक्टरी बम्बई के १००० मजदूरों ने हड़ताल कर दी।

—जी० आई० पी० रेलवे के वाडी बन्दर के मजदूरों ने हड़ताल कर दी है।

—ढाका में जिला मजिस्ट्रेट ने १२ से ३० साल तक के उम्र वालों पर बहुत से सार्वजनिक स्थानों पर जाने की पाबन्दी एक साल के लिये और बढ़ा दी है।

—दिल्ली के भू० पू० चीफ कमिश्नर थाम्पसन का आपरेशन के बाद देहान्त हो गया है।

—नये आर्थिक कानूनों के कारण फ्रांस के डाकवालों में अत्यन्त असन्तोष फैल गया है और हड़ताल ने भीषण रूप धारण कर लिया है।

—बंगाल सरकार पब्लिक सैक्योरिटी ऐक्ट की अवधि ५ साल के लिये और बढ़ाने की सोच रही है।

—डेनजिग और पोलैंड में एक व्यापारिक समझौता हो गया है।

—श्री केलकर और अणे ने नेशनलिस्ट पार्टी की स्थापना कर दी है और मालवीय जी से अन्तिम स्वीकृति शीघ्र ली जायगी।

सप्ताह की हलचल

अबीसीनिया पर विषैली गैसों से हमला होगा ?

इटली को आर्थिक सहायता नही मिली

जापान और जर्मनी अबीसीनिया को सहायता देंगे

—— :——

यद्यपि इटली और अबीसीनिया के मामले पर राष्ट्र-संघ में समझौते की चर्चा जारी है तथापि दोनों देशों की युद्ध की तैयारियों में कोई अन्तर नहीं आया।

इटली में लगभग सवा बाईस लाख सैनिक और कम से कम १५ हजार विशेषज्ञ युद्ध के लिये तैयार हैं परन्तु बजाय स्थल के इटली हवाई जहाजों से गैसों के सहारे अबीसीनिया को कुचल देने की स्कीम बना रही है। मालूम हुआ है कि लड़ाई की शुरुआत में वह ४०० हवाई जहाजों द्वारा अबीसीनिया में रुलाने वाली गैस फैला देने का इरादा कर रहा है जिस से अबीसीनियन अन्धे से बन जाय और उनकी आँखों से आँसू ही आँसू बहने लगें। इससे भी सफलता न मिली तो फिर जहरीली गैस का प्रयोग किया जायगा परन्तु विश्वव्यापी लोकमत और मनुष्यता के ख़याल से अपने बस भर इससे बचने की चेष्टा की जायगी—साथ ही ऐसा करके वह उन लोगों को अपना बिलकुल विरोधी भी नहीं बना लेना चाहता, जहाँ कि वह बस्ती बसाना चाहता है।

उक्त गैसों से स्वरक्षा के लिये इटली के सैनिकों को ऐसी नकाबें दी जा रही हैं जो इसी काम के लिये ख़ास तौर पर बनाई गई हैं। लिमिली में रोज़ रात भर के ५०० बम अथवा रुलाने वाली या घातक गैस को ले जाने वाले द्रुतगामी वायुयानों के उपयोग की तौर से शिक्षा दी जा रही है। फायट के कारख़ाने में ५० द्रुतगामी वायुयान बन चुके हैं और अब उन पर अभ्यास किया जा रहा है। २०६ नये वायुयानों का आर्डर दिया गया है। प्रत्येक वायुयान में, दो एञ्जिन होंगे और ३०० मील प्रति घण्टा उनकी रफ्तार होगी।

उधर अबीसीनिया भी जर्मनी व जापान से गैस से बचाने वाली नकाबें और नये किस्म के हथियार मंगा रहा है।

इटली को फ्रांस से भी बहुत कुछ सहूलियत मिलने की सम्भावना है। अफ्रीका की फ्रेंच सीमा से इटैलियन सेना गुजर सकेगी। यह भी खबर है कि ब्रिटेन के बहुत से अफसरों, सैनिकों, डाक्टरों और नर्सों ने इटली को सहयोग देने का वचन दिया है। इसके लिये इटली-सरकार 'फोरन लीजन' भी कायम कर रही है जो विदेशी नागरिकों को सेना में भर्ती करेगा।

इटली के मार्ग में एक बहुत बड़ी कठिनता आ गई है। उसने इंग्लैंड फ्रांस और अमेरिका से रुई तथा अन्य युद्धोपयोगी सामान उधार लेना चाहा, लेकिन किसी ने भी आर्थिक सहायता देनी स्वीकार नहीं की।

वस्तुतः इटली की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है कि वह अन्य राष्ट्रों से सहायता लिए बिना कोई बड़ा युद्ध छेड़ सके और अन्य देशों को यह विश्वास नहीं कि वह रुपया वापस दे सके।

———

५ मरे : ७ घायल

चम्पारन में दंगा

सरकारी वक्तव्य

चम्पारन ज़िले के फेनहारा ग्राम में कई महीनों से हिन्दुओं व मुसलिमों के बीच संघर्ष चला आ रहा था। बकरईद के मौके पर कुछ शरारती लोगों ने फेनहरा ग्राम के एक मन्दिर में एक जिबह किए हुए बछड़े का सिर फेंक दिया था। इस घटना से दोनों सम्प्रदायों में मनमुटाव बढ़ गया।

२ अगस्त की शाम को महावीर झण्डे के जलूस का रास्ता नियत कर दिया गया और हिन्दुओं ने उसे स्वीकार कर लिया। पहले दिन अर्थात् ३ अगस्त को कोई झगड़ा नहीं हुआ परन्तु ४ अगस्त को तीसरे पहर हिन्दू जलूसियों ने समझौते की अवहेलना की और नियत किये गये मार्ग को छोड़ दिया। हिन्दुओं की भीड़ अधिकाधिक उग्र होती गई और जब वह ईदगाह पर हमला करने लगी तब पुलिस को गोली चलानी पड़ी। जिस से ५ हिंदू मरे और ७ घायल हुए।

कांग्रेस और समाजवादी दल में संघर्ष नहीं होगा

मन्त्री साम्यवादी दल का वक्तव्य

कांग्रेस और उसके अन्तर्गत साम्यवादी दल में कुछ समय से संघर्ष बढ़ रहा था। परन्तु अब मालूम पड़ता है कि दोनों संस्थायें अपनी २ भूल समझ गई हैं। कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने जहाँ श्री शंकर की बात मान कर मजदूर सम्बन्धी समस्याओं पर गम्भीरता से विचार करने का निश्चय किया है, वहाँ कांग्रेसवादी दल ने भी अपना रुख बदला है। काशी में इस दल की कार्यकारिणी समिति में इस प्रश्न पर विचार हुआ है। उसके बाद साम्यवादी दल के प्रधान मन्त्री श्री जयप्रकाशनारायण ने निम्न लिखित आशय का वक्तव्य दिया है—

कांग्रेस समाजवादी दल कांग्रेस को पूर्ण समाजवादी सिद्धांतों को स्वीकार करने के लिये परिवर्तित करने का यत्न करना छोड़ दे। अर्थात् समाजवादी दल कांग्रेस पर कब्जा करने का यत्न न करेगा प्रत्युत सब से मिलकर देश के मजूर किसान तथा मध्यवर्गीय जनसमूह के लिए जिनका आज हर तरह से शोषण हो रहा है, पूर्ण राजनीतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने का यत्न करेगा।

मतलब यह कि जहाँ पहले केवल मजूर वर्ग की आकांक्षाओं पर ही जोर दिया जाता था, वहाँ अब सब शोषित वर्गों की आकांक्षाओं का ख़याल किया जायगा।

कांग्रेस समाजवादी दल की कार्यसमिति यह स्पष्ट कर देना उचित समझती है कि हमारी नीति यह कभी नहीं थी कि कांग्रेस पर आक्रमण किया जाय या उसकी शक्ति घटाई जाय। कांग्रेस एक आदर्श है और एक संस्था है और इन दोनों की रक्षा करना तथा बढ़ाना ही वस्तुतः हमारा लक्ष्य रहा है।

———

श्री सक्सेना ने नाम वापिस ले लिया

स्वागत-समिति के प्रधान पद की उम्मेदवारी से

श्रीयुत मोहनलाल सक्सेना एम० एल० ए० ने आगामी कांग्रेस की स्वागत समिति के सभापति पद की उम्मेदवारी से अपना नाम वापिस ले लिया है।

संयुक्त प्रां० कांग्रेस कमेटी की कार्य-समिति ने निश्चय किया था कि यदि लखनऊ के कांग्रेस कार्यकर्ताओं में दो सप्ताह के अन्दर अन्दर कोई समझौता नहीं हुआ तो समिति कांग्रेस अधिवेशन का स्थान बदलने के संबंध में विचार करेगी।

———

अमरीका में धनवानों पर टैक्स

श्री रूजवेल्ट का बिल

५ अगस्त को धनवानों पर टैक्स लगाने सम्बन्धी बिल संयुक्त अमरीका के हाउस आफ रिप्रेजेन्टेटिव (प्रतिनिधि-सभा) में पास होगया। इस बिल के अनुसार उन व्यक्तियों पर, जिनकी आमदनी ५० हजार डालर से अधिक है, टैक्स बढ़ा दिया जायगा। अब यह बिल सीनेट में पेश होगा।

—

बंगाल के बेताज बादशाह



श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

आप की पुण्यतिथि इस सप्ताह मनाई गई।

चित्र-परिचय

श्री जमनालाल बजाज

आपने एक वक्तव्य प्रकाशित किया है कि आप कांग्रेस का सभापतित्व स्वीकार नहीं करेंगे।

श्री भूलाभाई देसाई

आपने राष्ट्रपति को एक पत्र लिखा है कि देशी प्रजा के संबंध में वे कांग्रेस की नीति से पूर्ण सहमत हैं।

लार्ड जटलैंड

आप भारत के नये मंत्री हैं और नये शासन विधान को कार्यान्वित करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

श्री रासतफारी

आपने कहा है कि अबीसीनिया इटली के सामने कभी नहीं झुकेगा।

अर्जुन

सोमवार ता० १२ अगस्त १९३५ ई०

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

निर्वाचन क्षेत्रों की तैयारी

नया शासन-विधान अब कानून का रूप धारण कर चुका है, इसलिए राजनीतिक क्षेत्रों में एक विशेष हलचल पैदा हो गई है। देश का प्रत्येक राजनीतिक दल नये शासन-विधान में अपने अस्तित्व को कायम रखने और उसे अधिक स्थिर, अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये अभी से प्रयत्न कर रहा है। मद्रास की जस्टिस-पार्टी अभी पिछले असेम्बली-चुनाव के धक्के से ही नहीं संभल पायी है। महाराष्ट्र की डैमोक्रेटिक-पार्टी अपने नये सिरे से संगठन के लिये विशेष चिन्ता करने लग गयी है। संयुक्त प्रान्त में लिबरल दल भी सोचने लगा है कि भावी शासन-विधान में उसकी स्थिति क्या होनी चाहिये, उसे किस दल से सहयोग करना चाहिये। इधर कांग्रेस के 'पार्लमेण्टरी-नेता' भी अत्यन्त गम्भीरता से भावी विधान में कांग्रेसी-दल की नीति पर विचार करने लगे हैं। यह भी विचार किया जाने लगा है कि क्या किन्हीं शर्तों पर अन्य राजनीतिक-दलों से भी चुनाव के सम्बन्ध में सहयोग किया जा सकता है या नहीं? ये सब दल अपने-अपने कार्य को प्रारम्भ करने वाले हैं, लेकिन संयुक्त प्रान्त के जमींदार दल ने तो ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी पार्टी को संगठित करना प्रारम्भ भी कर दिया है। पिछले गतांक में नवाब छतारी के इस दल का संगठन करने पर लिखा जा चुका है। जमींदार-दल के दूसरे प्रमुख सदस्य और संयुक्त प्रान्तीय सरकार के स्थानीय संस्थाओं के मन्त्री नवाब सर मुहम्मद यूसुफ ने अपने पद की हैसियत से प्रान्त के भ्रमण करते हुए जमींदार-दल का बड़े जोरों से प्रचार शुरु कर दिया है। नगीना में म्युनिसिपल बोर्ड के अभिनन्दन-पत्र के उत्तर में उन्होंने जो भाषण दिया है, वह उन के अपने दल के संगठन के प्रचार का एक अच्छा उदाहरण है। नये शासन-विधान के मातहत आने वाले चुनावों की चर्चा करते हुए वे कहते हैं—"जब तक तुम अपने को संगठित नहीं करते, जब तक तुम सम्पूर्ण समस्या पर गंभीरता से विचार नहीं करते, जबतक अपनी सब कठिनताओं को अपने सामने नहीं रख लेते, **जब तक तुम उन विध्वंसकारी कार्यक्रमों का जो जनता को गुमराह करने वाले सिद्ध होंगे, मुकाबला करने के लिए, अपने को सन्नद्ध नहीं कर लेते, जबतक तुम उनकी परीक्षा करने, विश्लेषण करने और उनका प्रतिवाद करने की स्थिति में नहीं पहुंच जाते,** (यह मोटा टाइप हमारा है) तबतक शक्ति प्राप्त करने में तुम्हें बहुत कठिनाइयां होंगी।' मोटे टाइप में दिये गये शब्द स्पष्टरूपेण किसी दल का विरोध करने के लिये कहे गये हैं। और वह दल कौनसा है, यह कुछ आगे स्पष्ट हो जायगा। अपने भाषण में वे आगे कहते हैं कि तुम से जो प्रतिज्ञाएं करते हैं कि तुम्हारे करों में कमी हो जायगी, उन प्रतिज्ञाओं को वे कहां तक पूरा कर सकेंगे, यह भी तुम्हें अभी से सोच लेना चाहिये। करों को हटाने से म्युनिसिपैलिटियां वा जिला बोर्ड अपना काम कैसे करेंगे। इस वाक्य में स्पष्टतः यू० पी० के कांग्रेसी दल की ओर संकेत किया गया है। कुछ दिन पूर्व संयुक्त प्रांत की कांग्रेस कमेटी ने स्थानीय संस्थाओं पर अधिकार करके कर कम करवाने का कार्यक्रम रखा था। उस प्रांत में साम्यवादी समाज का जोर भी अधिक है, कांग्रेस में साम्यवादियों की संख्या ज्यादा है। इस ओर इशारा करते हुए नवाब साहब ने कहा है—"हमें फासिज्म, नाजिज्म और बोलशेविज्म आदि की फिलासफियों से प्रभावित नहीं होना चाहिये। ये आदर्श देश के जमींदारों और किसानों व पूंजीपतियों और मजदूरों में संघर्ष उत्पन्न कर देंगे।" स्पष्टतः ये शब्द कांग्रेस के विरोध में कहे गये हैं। किसानों के हित की आवाज केवल कांग्रेस की ओर से उठ रही है। वस्तुतः नवाब साहब को विश्वास है कि नये चुनाव में कांग्रेस का जोर अधिक रहेगा, लिबरल आदि अन्य कोई दल जोर न पकड़ सकेगा, इसलिए उसी के विरुद्ध अभी से बाकायदा आंदोलन जारी कर दिया गया है।

कांग्रेसी कार्यकर्ता इस ओर से उदासीन नहीं रहेंगे, यह हमारा विश्वास है। लेकिन हम उनकी सेवा में यह निवेदन कर देना आवश्यक समझते हैं कि विरोधी दल इस बार अपनी सम्पूर्ण शक्ति लेकर चुनाव के अखाड़े में उतरना चाहता है। जमींदार के पास इस युद्ध के लिए पैसा बहुत है और गांव की निरीह भोली किसान जनता पर उसका दबदबा भी कम नहीं है। इन दोनों का प्रयोग वह आगामी चुनाव में पूरे जोर से करेगा। उसे वस्तुतः भय है कि कांग्रेसी सदस्यों के बहुमत के आगे जमींदारों के अनुचित हितों की रक्षा न हो सकेगी और उनका आज का वैभव, जो किसानों के पसीने की कमाई से बना है, कायम न रह सकेगा। इसीलिये वह पूरा जोर लगा कर अपने वैभव की रक्षा करना चाहता है।

इसीलिये कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का भी कर्तव्य है कि वे आज के समय को व्यर्थ की बातों में न खो कर अभी से निर्वाचन क्षेत्रों को तैयार करने में लगा दें। उनके संगठन कार्य का श्रीगणेश अभी जल्दी से शुरु हो जाना चाहिये। विरोधी छोटा भी क्यों न हो, उसकी उपेक्षा न करनी चाहिये। फिर जमींदारों के पास तो सत्ता और धन दोनों पर्याप्त संख्या में है, जिनका प्रभाव चुनाव पर कम नहीं पड़ता। इसलिये कांग्रेसी नेताओं का कर्तव्य स्पष्ट है कि वे भी निर्वाचन क्षेत्र को अभी से तैयार करना शुरु कर दें, ताकि समय पर कठिनता न हो।

नया वायसराय

आखिर नये वायसराय का नाम घोषित कर ही दिया गया। लार्ड लिनलिथगो का नाम पहले से ही लिया जा रहा था, इसलिये इस घोषणा से हमें कोई आश्चर्य नहीं हुआ। बहुत संभवतः वे इस पद पर इस कारण नियुक्त किए गये हैं कि ज्वाइंट पार्लमेंटरी सिलेक्ट कमेटी के उनके अध्यक्ष रहने के कारण भारतीय स्थिति और नये शासन-विधान से वे भलीभांति परिचित हैं इसलिये वे नये शासन-विधान को और सज्जनों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह चला सकेंगे, इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये। ज्वायट पार्लमेंटरी सिलैक्ट कमेटी की लम्बी बैठकों में नये शासनविधान की प्रत्येक धारा और उपधारा पर खूब विस्तार से विचार हुआ है। लार्ड लिनलिथगो प्रत्येक प्रश्न पर ब्रिटेन के राजनैतिक दलों—और खासकर अनुदार और प्रतिगामी दलों के—दृष्टिकोण से खूब अच्छी तरह परिचित होगये हैं। नये शासन-विधान से परिचित होने के कारण वे जहां उसे भली भांति चला सकेंगे, वहां हम भारतीयों को यह भी समझ लेना चाहिए कि वे उन्नति विरोधी अंगों का प्रभावशाली रूप से प्रयोग करने में संकोच न करेंगे। अखबार के नियमित पाठकों से यह अविदित नहीं है कि ज्वायट सिलैक्ट कमेटी की सिफारिशें व्हाइट पेपर की सिफारिशों से कहीं उन्नतिविरोधी थीं। १९१९ की प्रस्तावना पर आग्रह, औपनिवेशिक स्वराज्य का नाम तक उड़ा देना, संघीय असेम्बली और कौंसिलों का अप्रत्यक्ष चुनाव तथा गवर्नर जनरल के भेद भाव-विरोधी विशेषाधिकारों में वृद्धि आदि उस सिलैक्ट कमेटी की रिपोर्ट के विशेष अंग हैं, जिसके लार्ड लिनलिथगो प्रधान थे। तब उनसे यह आशा

नहीं की जा सकती कि वे उन्नति विरोधी अंशो की उपेक्षा करेंगे। यदि हम यह कहें कि ब्रिटन के प्रतिगामी दल और अनुदार दल के दृष्टिकाणो का समन्वय उनकी शासन नीति होगी तो हम ऐसी कोई बात न कहेंगे, जिसकी सम्भावना ही न हो। यह निश्चित है कि वे मि० लैंसबरी के संशोधनों और सिलैक्ट कमेटी के सामने पेश की गई भारतीय दल की मांगों के विरोधी हैं। इसी से उनकी भावी नीति का कुछ अन्दाजा लगाया जा सकता है।

सम्पादकीय विचार

मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्रों से भी

सिंध के प्रमुख कांग्रेसी कार्यकर्ता श्री सिधवा ने ठीक समय पर देश को और विशेषकर कांग्रेस को एक चेतावनी देकर बहुत उचित किया है। उनका कहना है कि भावी शासन-विधान में कांग्रेस की ओर से कौंसिलों और असेम्बली का चुनाव लड़ा जायगा, यह निश्चित ही होगया है। कांग्रेस के कार्यकर्ता अभी से चुनाव की सफलता के लिए तैयारियां जोरों से शुरू कर देंगे और विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में कुछ ही समय बाद चुनाव का आंदोलन जोरों से शुरू होजायगा। श्रीयुत सिधवा कहते हैं कि कांग्रेस को केवल हिंदू निर्वाचन क्षेत्रों में ही चुनाव का बिगुल नहीं बजाना चाहिये। किन्तु मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्रों में योग्य और राष्ट्रीय विचार के प्रभावशाली मुसलमानों को भी खड़ा करना चाहिए। वस्तुत उनकी सूचना बहुत महत्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से यह सच है कि भारतीय मुस्लिम जनता पर सांप्रदायिक नेताओं का अधिक प्रभाव है। वे भारतीय बन कर देश की राजनैतिक समस्याओं पर विचार नहीं करते। असेम्बली के गत चुनाव में भी मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र में केवल एक मुसलमान खड़ा किया गया था। अन्य स्थानों में कांग्रेसी मुसलमान उम्मीदवार क्यों नहीं खड़े किये गये, इसका बहुत सम्भवतः यही कारण था कि कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को उन क्षेत्रों में विजय की आशा होती न थी या वे मुसलमान जनता को नाराज नहीं करना चाहते थे। जब तक कांग्रेस मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्रों पर अधिकार नहीं करती, तब तक वह कौंसिलों में कांग्रेस अपना अभीष्ट पूर्ण नहीं कर सकती। सिंध पंजाब, सीमाप्रांत और बंगाल में तो मुसलमान सदस्यों का बहुमत होगा ही, अन्य प्रांतों में भी मुस्लिम सदस्यों की सहायता के बिना कुछ नहीं हो सकता। मुसलमानों के स्वतंत्र दल पर कांग्रेस को निर्भर नहीं रहना चाहिए। भावी शासन विधान की कौंसिलों में सरकार अपनी पूरी शक्ति सहित तैयार रहेगी, इसलिए उसका मुकाबला भी पूरी तैयारी के साथ होना चाहिए। वहां ऐसे ही सदस्य जाने चाहिये, जो पार्टी के नियन्त्रण में बंधे हुए हो। इसलिए कांग्रेस को इस बार अपना विशेष ध्यान इधर देना चाहिए। अपने को राष्ट्रीय कांग्रेसी कहने वाले मुसलिम नेताओं का कर्तव्य भी स्पष्ट है। उन्हें चाहिए कि वे एक बार सांप्रदायिकता में डूबी हुई मुसलिम जनता के समुद्र में कूद पड़ें और उसे सहसपूर्वक सांप्रदायिक वातावरण से ऊपर ले आवें। इस कार्य में आने वाली कठिनाइयों से उन्हें डरना न चाहिए। यदि इस समय उन्होंने अपना कर्तव्य पालन न किया, तो उनका यह देश विद्रोह ही होगा।

२० मिनट में १५ करोड़

५ अगस्त से १५ अगस्त तक सरकार ने १५ करोड़ रुपया लेने के दिन नियत किये थे। ५ अगस्त को १० बजे बैंक खुले और २० मिनट बाद सरकार को तार द्वारा सब स्थानों पर सूचना दे देनी पड़ी कि कर्ज की रकम पूरी हो चुकी है और अब कर्ज नहीं लिया जायगा। यह कर्ज कोई ज्यादा सूद पर नहीं दिया गया था, केवल तीन फीसदी सूद पर २० मिनट में सरकार को १५ करोड़ रुपया मिल गया। जहां यह भारत-सरकार की साख की उन्नति की सूचना देता है वहां यह इस बात का भी प्रबल प्रमाण है कि आज देश की व्यावसायिक व व्यापारिक दशा कितनी खराब है। विदेशों से सैकड़ों प्रकार की छोटी बड़ी चीजों से भारतीय बाजार छाया हुआ है। यहां कितनी अधिक व्यावसायिक उन्नति की आवश्यकता है, यह सभी जानते हैं, लेकिन बाजार इतना खराब है कि पूंजीपति अत्यन्त आवश्यक व्यवसायों व व्यापार में पैसा लगाने से डरते हैं। क्या सरकार व्यावसायिक उन्नति की ओर विशेष रूप से ध्यान देगी?

सब के दिल की बात

'मैं जानता हूं कि भारत वासी क्या चाहते हैं। वे वैसी ही सरकार चाहते हैं, जैसी श्री जेम्स के देश (इंग्लैंड) में है।" मद्रास के यूरोपियन एसोसियेशन की ओर से बुलाई गई सभा में श्री सत्यमूर्ति ने श्री जेम्स के एक सवाल का जवाब देते हुए उपर्युक्त शब्द कहे थे। इस एक वक्तव्य में श्री सत्यमूर्ति ने प्रत्येक भारत वासी के दिल की बात कह दी है। ब्रिटिश अधिकारी बार बार पूछते हैं कि आखिर बताओ तो सही कि तुम क्या चाहते हो। इसका जवाब श्री सत्यमूर्ति ने बहुत स्पष्ट शब्दों में दे दिया है। जो ब्रिटिश जनता अपने देश में अधिकार चाहती है, वही हम भी चाहते हैं। इसी में हमारी सब मांगें आ गई हैं।

मजदूर-नेताओं से

हर्ष की बात है कि भारतीय मजदूर-नेताओं के दोनों दल बम्बई में मिल गये हैं। अ० भा० ट्रेड-यूनियन और नेशनल ट्रेड-यूनियन के कार्य-कर्ताओं ने मिल कर 'अखिल भारतीय ज्वायण्ट लेबर बोर्ड' बनाया है। यह बोर्ड नागपुर के अधिवेशन के समय पृथक हुए दो दलों को एक करके भारतवर्ष के शिथिल मजदूर आन्दोलन को फिर से संगठित करने का प्रयत्न करेगा। हम इस प्रयत्न का स्वागत करते हैं। आज भारतीय मजदूरों की जो दुर्दशा है, उस का प्रधान कारण मजदूर-नेताओं की आपस में फूट है। बम्बई की पिछली हड़ताल का दुःखजनक अन्त इसी कारण हुआ था। अब दोनों दल मिल गये हैं और हमें आशा है कि अब मजदूर आन्दोलन उन्नति करेगा, इस अवसर पर एक निवेदन हम मजदूर नेताओं से अवश्य करेंगे। वह यह कि वे जहां मजदूरों की आर्थिक कठिनाइयों के लिये मिल मालिकों के अत्याचारों से उनकी रक्षा करें वहां वे मजदूरों की सामाजिक कुरीतियों से भी रक्षा करने की ओर कम ध्यान न दें। हमारा यह अपने अनुभव के आधार पर दृढ़ विश्वास है कि मजदूरों की आर्थिक दुरवस्था का प्रधान कारण उनकी सामाजिक कुरीतियां तथा जुआ और शराब हैं। यदि हम मजदूरों का वास्तविक हित चाहते हैं, तो इस की ओर उपेक्षा रत्ती भर भी न करनी चाहिये।

प्रेस एक्ट की अवधि

प्रेस आर्डिनेंस की अवधि आगामी दिसम्बर में समाप्त हो जायगी, इसलिए सरकार असेम्बली के आगामी अधिवेशन में अवधि बढ़ाने के लिये जोर देने की तय्यारी कर रही है आर्डिनेंस अखबारों पर एक ऐसी नंगी तलवार है, जो उन्हें ईमानदारी से कुछ भी लिखने से रोकती है। इस आर्डिनेंस की वजह से सम्पादक न जनता के दुःखों को प्रकाश में ला सकता है और न देशहित की प्रतिकूल नीति की ही ठीक तौर से आलोचना कर सकता है श्रीयुत एण्ड्रूज ने ठीक ही कहा है—"इंगलैंड या फ्रांस जैसे स्वतंत्र देश में ऐसा प्रेस एक्ट एक भी मिनट बरदाश्त नहीं किया जा सकता।' कलकत्ता के पत्रकार सम्मेलन में इस बिल पर विचार किया जायगा। हमें आशा है कि वहां उपस्थित प्रतिनिधि इस के विरुद्ध प्रबल और प्रभावशाली आंदोलन की योजना अवश्य निश्चित करेंगे जिससे सरकार को बाधित किया जा सके कि वह आर्डिनेंस की अवधि और न बढ़ा सके।

श्री मोहन लाल का त्याग

लखनऊ के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं में स्वागत समिति के सम्बंध में मतभेद उग्र हो चुका था, यह पाठकों से अविदित नहीं है। अब श्री मोहनलाल सक्सेना एम० एल० ए० ने स्वागत समिति के अध्यक्षपद की उम्मीदवारी से अपना नाम वापिस ले लिया है इससे हमें आशा करनी चाहिये कि स्थिति जरूर सुलझ जायगी। हम श्री मोहनलाल का इस त्याग के लिए अभिनन्दन करते हैं। वस्तुतः जिस संस्था के गौरव की रक्षा हमारा उद्देश्य हो उसी के पदों के लिए परस्पर लड़कर उसकी अप्रतिष्ठा करने से बढ़ कर कोई अदूरदर्शिता नहीं हो सकती। श्री मोहनलाल ने कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के सामने एक आदर्श रखा है। इस के लिए उन्हें प्रत्येक कांग्रेसी बधाई देगा।

सुदूर पूर्व या प्रशान्त सागर की समस्याएं

(ले०—श्री महाव्रत विद्यालंकार)

प्रशांत महासागर के पूर्वीय तट पर चीन महादेश तथा उस से उत्तर पश्चिम की ओर दो तीन दिन की जहाजी यात्रा की दूरी पर जापानी द्वीपसमूह है। इन दोनों पीत देशों के सामने ही पश्चिमीय तट पर अमेरिका महादेश है। दक्षिण में डच अधिकृत बोर्नियो, जावा इत्यादि तथा अंग्रेज अधिकृत आस्ट्रेलिया महाद्वीप-न्यूजीलैंड इत्यादि द्वीप हैं। चीन के दक्षिण में फ्रेंच अनाम भी है। चीन के उत्तर में मंचूरिया से ऊपर साइबीरिया का पूर्वीय विस्तार है, जिस पर सोवियट रूस का अधिकार है। इस प्रकार प्रशांत महासागर के पूर्वीय तट पर पीतकाय जातियां—जापान चीन अनाम स्याम है तथा दक्षिण पश्चिम तट पर गोरी जातियां—डच, अंग्रेज तथा अमेरिकन हैं। इस प्रकार स्पष्टतः प्रतीत हो सकता है कि एक ओर जहां सफेद और पीली जातियों के बीच संघर्ष की सम्भावना है वहां जापान की प्रबल सैन्यशक्ति तथा उसके द्वारा चीन महाप्रदेश पर अधिकार की प्रबल महत्वाकांक्षा के कारण पीत जातियों में भी खूब संघर्ष मचा हुआ है। यदि चीन और जापान दोनों पूर्वीय देश आर्थिक और सैनिक दृष्टि से समान सबल होते तो प्रशांत महासागर से गोरी जातियों के बल के नष्ट होने की आशा की जा सकती थी परन्तु यह सम्भावना अभी बहुत दूर है। चीन में मंचू राजवंश के पतन को २५ वर्ष हो चुके। वहां प्रजातन्त्र की स्थापना भी हो चुकी परन्तु चीन अभी तक अपनी आन्तरिक कमजोरियों से छुटकारा नहीं पा सका। इस के अनेक कारणों में से प्रधान कारण यही प्रतीत होता है कि डा० सन्यातसेन की कुओमिंगतांग (नेशनलिस्ट) पार्टी चीन की राजनीतिक और आर्थिक उन्नति के व्यावहारिक तरीकों को अख्तियार किये बिना सफल नहीं हो सकती।

जो बात चीन में डा० सन्यातसेन की पार्टी का मिशन था उनकी दुहाई सदभावनाओं के साथ लागू होती है वही अनेक अंशों में हमारे देश में महात्मा गांधी जी की पार्टी तथा उनके विचारों द्वारा दोहराई जाती है। मंचू राजवंश के पतन के बाद कुओमिंतांग का वक्तव्य था कि कृषि प्रणाली में सुधार किये जाते, व्यवहार में कोई रूकावट शनैः शनैः न हो किया जाता कृषक जनता को महाजनों के कर्जों से बचाया जाता विदेशियों को दी गई रियायतें शनैः २ घटा कर समाप्त की जातीं नवीन व्यवसाय प्रारम्भ किये जाते तथा आंतरिक और बाह्य व्यापार की तरक्की की जाती परन्तु इस दशा में कुछ नहीं हुआ। डा० सन्यातसेन के जीवनकाल में प्रजातन्त्र के प्रति प्रेम और भक्ति जादू करती रही परन्तु उनके दिवंगत हो जाने पर जैसे युआनशासन में बोगस वैध शासन द्वारा केन्द्रीय सरकार की स्थापना की गई थी वैसे ही बोगस 'रिपब्लिकन सरकार की स्थापना की गई।

चीनी प्रजातन्त्र भक्तों की आंखें अपने महान पिता की मृत्यु के शोकाश्रुओं से अभी गीली ही थीं कि भिन्न २ प्रांतों के स्थानीय शासकों ने केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध बलवा कर दिया और अपने २ प्रांतों के शासक बन बैठे। प्रांतीय शासकों की बगावत के साथ २ कुओमिंगतांग के केन्द्रीय संगठन पर भी चांगकाई शेक सदृश महत्वाकांक्षी व्यक्तियों का अधिकार हो गया। डा० सनयातसेन की मृत्यु के तीन वर्ष के अन्दर ही चीनी प्रजातन्त्र तथा उसकी नेता पार्टी अपने लक्ष्य से विमुख होगई। डा० सनयातसेन की मृत्यु के बाद ही चीन में जनसाधारण की विशाल प्रगति का जन्म हुआ—जिस पर साम्यवाद तथा व्यापार संघ की छाप थी। इस प्रगति का केन्द्र पर शांघाई तथा कैन्टन तटवर्ती व्यवसायिक नगरों की श्रेणीबद्ध दलपूर्ण समाज तथा देहातों का असंगठित सदियों का पददलित कृषकसमाज था। यदि चीन में इस प्रगति को उन्नति मिलती और १९२७ का विश्वासघात न होता (जिसमें चांगकाई शेक की मुख्य हाथ था) तो ऐसी आशा की जाती थी कि चीन से विदेशी शिकारियों का अन्त हो जाता चीन भी रूस के अनुकरण में साम्यवाद के पथ की ओर अग्रसर हो जाता और अतीत के अपमानों का प्रतिशोध कर सकता। परन्तु चीनी पूंजीपतियों और विदेशीय साम्यवादियों की साजिश से चीन को पुनः घातक-नीतियों और गृह-कलहों के कुचक्र में पड़कर अपने राजनैतिक सम्मान तथा जन धन सबकी बलि देनी पड़ी। इस समय नेशनलिस्ट पार्टी—तथा उस के कर्त्ता धर्त्ता चांगकाई शेक की अध्यक्षता में चीन अपनी विशाल जन संख्या तथा भौतिक सम्पत्ति के होते हुये भी—जो उस की सर्वतोभद्र उन्नति में बड़े सहायक होसकते हैं अत्यन्त निर्बल राष्ट्र बना हुआ है। चीन की नेशनलिस्ट पार्टी तथा उस के वर्त्तमान देशद्रोही नेता इसके एक उत्तम उदाहरण हैं कि एशियाटिक देशों को कैसी नेशनलिस्ट पार्टी नहीं चाहिए। एशिया के स्वतन्त्रताभिलाषी देशों के लिए चीन की नेशनलिस्ट पार्टी एक उत्तम पाठ है। जिस किसी देश के नेशनलिस्ट पार्टी कहलाने वाले नेता स्वदेशीय जनता के हितों की अवहेलना कर स्वार्थवश विदेशीय पूंजीपतियों साम्राज्यवादियों के हितों की अधिक चिन्ता करने लगते हैं—वहां की नेशनलिस्ट पार्टियां चीनी कुओमिंगतांग की तरह ही स्वदेश के साथ द्रोह करेंगी। स्वदेश के प्रति घातक नीति का परिणाम यह हुआ कि जापान ने चांग सोलिन की हत्या करवा कर शनैः शनैः कुओमिंगतांग के नेताओं के देखते देखते मंचूरिया को मंचूकुओ बना कर हथिया लिया और अब शनैः शनैः उत्तरीय चीन पर भी अधिकार की सम्भावना हो रही है। चीन के राजनैतिक जीवन में सम्भवतः इससे बढ़ कर अपमान का अवसर कभी नहीं आया जैसा कि जापानी सेनापतियों की नवीन मांगों में हुआ है। कुओमिंगतांग यदि सबल होती यदि उन्हें स्वदेश की रक्षा का तनिक भी ख्याल होता तो वह जापान का विरोध करती। परन्तु पिछले दिनों की घटनाओं में यह स्पष्ट है कि कुओमिन्तांग के नेता चुप कर गये और जापान के मूक आक्रमण के सामने उन्हें झुकना पड़ा।

चीन की स्वतन्त्रता के इन संकट के दिनों में यदि किसी को चीनी स्वतन्त्रता की चिंता है तो उन्हीं मजदूर किसानों के गोरिल्ला दलों को, दक्षिण की साम्यवादी फौजों को उन की पार्टी और उनके नेताओं को जिनका पीछा करता हुआ चांग काईशेक यूनान तक पहुंच गया था। इन्हीं के दमन से सम्पूर्ण विदेशीय साम्राज्यवादियों का वह इतना प्रेम भाजन बना हुआ है। इस समय निस्सन्देह जापान को चीन में सफलता मिलती दिखती है परन्तु साथ ही हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि साम्यवादी रूस के पड़ोस में रहते हुये चीन अपनी विशाल जन संख्या को भूख अकाल बाढ़ों तथा तूफानों के अतिरिक्त राजनैतिक उथल पुथलों के कारण महान क्षति को सहन करता हुआ इन संक्रामक विचारों के आक्रमण से नहीं बच सकता। चीनी किसान समाज अभी अपनी मांगों और पार्टी को संगठित नहीं कर सका है अस्तु किन्तु निकट भविष्य में वह अपने सहयोगियों को पाता जा रहा है। चीन के साम्यवाद के लिए क्षेत्र वैसा ही तैयार है जैसा रूस में था। और जैसा अन्य एशियाटिक देशों में हो सकता है। यदि चीनी साम्यवादियों को राजनैतिक संग्राम में सफलता मिल गई जो जनता की आर्थिक कठिनाइयों को राजनैतिक संगठन का रूप दे सके तो वह दिन दूर नहीं जब जापान को अपनी ज्यादतियों का फल भोगना पड़े। चीन यदि जापान को अपनी भूमि से बाहर खदेड़ने में समर्थ होजायगा तो जापान को भी अपनी आंतरिक आर्थिक अवस्था के कारणों से पथ बाधित हो उसी तरह क्रांति के पथ पर अग्रसर होना पड़ेगा जो चीन के विशाल क्षेत्र पर अधिकारहीन से रुक सकता है। जापान की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा को किसी कदर साम्राज्यवाद के ह्रास के दिनों में—जबकि सब साम्राज्यवादी देशों के बीच आंतरिक प्रतिस्पर्धा और विरोध अपनी उग्रता की चरम सीमा पर पहुंचता जा रहा है पूरा होने का अवसर मिल सकता है परन्तु उसके साथ २ उसकी विपरीत दिशा में भी अनेक उत्साहजनक चिन्ह दिखाई दे रहे हैं यदि चीन में श्रमजीवी शक्तियां अपने को सुसंगठित करने में समर्थ होगईं तो स्वाभाविक ही उनका रुख सुदूर पश्चिम की ओर होगा और यदि जापान चीनी नेशनलिस्ट पार्टी के साथ मिल कर चीन पर अधिकार करने में सफल हो गया तो पुनः किसी न किसी दिन प्रशांत महा

(शेष पृष्ठ १७ पर)

बन्दी जीवन में राखी की याद

——:✱✱:——

भय्या राखी पहनाती हूं,
बहिनी तेरा यही दुलार।
आज अचानक आंसू बन कर,
गिर गिर पड़ता है सौ बार॥

तू बन्धन राखी का दे कर,
लेती रक्षा का मधुभार।
भाई बन कर मैं भी तेरा,
हरता था नित कष्ट अपार॥

जियो ! जियो !' हे भय्या मोर-
यह कह कर हंस देना मौन।
तिलक चढ़ाना हार पिन्हाना।
बहिनी भूल सकेगा कौन॥

मधुमेवा पकवानों का मैं, देता था तुम को उपहार।
उसको लेने को भी कब तुम, बहिना होतीं थीं तय्यार॥
आज बैठा बन्धन में मैं हूं, सहचर मेरी यह प्राचीर।
रुन झुन रुन झुन बेड़ी बजतीं, बंधी कलाई पर जंजीर॥

एक आह बस उर में उठती,
बहिना तुम को लेता टेर।
फिर हो जाता मौन वहीं पर,
चिन्तायें झट लेतीं घेर॥

स्वाधीन होकर आनो बाहर,
तभी सजाना अपना वेष।
बन्धन में है मुक्ति कहां यह,
जननी का मुझ को आदेश॥

बहिना अब तुम यहीं मनाओ,
बन्दी का छूटे सब क्लेश।
पराधीनता देश वेष में,
कदापि रहे न उसके शेष॥

—नन्दलाल ज्योतिर्विद

——::✱::⊙::✱::——

राखी

——:✱✱:——

लाई हो बहिना' तुम राखी,
कैसे इसे बंधाऊं मैं।
क्योंकर इसका मान मान —;
—सच्चा भैया कहलाऊं मैं॥

नहीं करों में बल-पौरुष है,
रक्षा को नारी-कुल की।
फिर कैसे रक्षा-बन्धन के,
दृढ़ व्रत में बंध जाऊं मैं॥

ललनाओं के दारुण-दुख की;
नित नव अकथ कहानी सुन।
नहीं खौलता रक्त रगों में;
कायर सा बन जाऊं मैं॥

बिलख रहे शिशु दो दानों को,
फूटी कौड़ी पास नहीं।
तब कैसे बिन दिये दक्षिणा;
राखी बहिन बंधाऊं मैं॥

तुम ने गूंथीं तार तार में,
नेह-भरी नव आशायें।
किन्तु निराशामय जीवन में,
कैसे वे अपनाऊं मैं॥

राखी ! ओ राखी" तुम ही तो,
कह दो, क्या अधिकारी हूं।
कैसे तुम्हें बंधाने का फिर,
दुस्साहस दिखलाऊं मैं॥

किन्तु बहिन निस्वार्थ भाव से,
हित चित ले राखी लाईं।
किस मुंह से इनकार करूं अब,
कैसे विमुख फिराऊं मैं॥

हूं 'करुणेश' धर्म-संकट में,
हो कैसे उद्धार प्रभो।
ऐसे सबल करो कर जिन में,
हंस राखी बंधवाऊं मैं॥

—'करुणेश'

———:o:———

राखी

———o;o———

भारतीय सभ्यता की धाक थी जहां में जब,
भाई थे वीर, जिन स्व-प्रान सदा राखी है।
बहिनों की लाज बचे, चाहे प्राण जांय भले,
अब लों इतिहास राजपूतों का साखी है॥

उलटा जमाना, सोचा—'राखी-राखी या न राखी'
चिन्ता है स्वरक्षा की हो भैया अस भाखी है।
भली है, बुरी है - रूढ़ि-आज भी प्रचारित है,
रक्षा का बन्धन—बीरनो न सही 'राखी' है।

—'रमेश'

श्री० चार्ल्स फ्रीर एंड्रूज



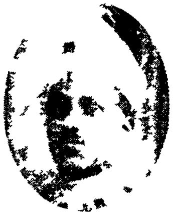
आप म० गांधी से मिलने के बाद शीघ्र ही इंग्लैंड को रवाना होने वाले हैं।

जनरल ग्रेजियानी



अफ्रीका की ओर रवाना होने वाली इटैलियन सेनाओं के आप सेनापति हैं।

नवाब बहावलपुर



आप बहुत सम्भवत अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वायस चांसलर बनेंगे।

श्री सदानन्द



फ्री प्रेस जनरल, नवशक्ति और नवभारत आदि पत्रों को पुनरुज्जीवित करने पर आप विचार कर रहे हैं।

श्री कमलादेवी चट्टोपाध्याय



बनारस यूनिवर्सिटी में आपका भाषण होने नहीं दिया गया।

सर हेरी हेग



आप यू० पी० के गवरनर हैं और आजकल यू० पी० में दौरा कर रहे हैं।

श्री सुभाषचन्द्र वसु



आपने विदेशों में भारतीय प्रचार की जो योजना रखी थी, वह अस्वीकृत करदी गई है।

श्री रफीअहमद किदवई



आपने कहा है कि पदग्रहण का प्रश्न कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में पेश होना चाहिये।

श्री मुकुटबिहारी भार्गव



आपने श्रीभागचन्द्र सोनी के विरुद्ध चुनाव की दरख्वास्त वापस ले ली है।

विशाल भारत और स्वा० सत्यदेव

(ले०—श्री कबूलचन्द्र विशारद)

उस दिन कार्यवशात मैं मसूरी चला गया। हरिद्वार की जल वायु ने मेरे पेट में गड़बड़ कर दी। मैंने सोचा कि चलो, मसूरी चल कर हवा बदल आवें। वहां 'तिलक पुस्तकालय' में मई सन १९३५ का 'विशाल भारत' मेरे देखने में आया। श्री स्वामी सत्यदेव जी के विरुद्ध उस में लेख देख कर मैं विस्मित हो उठा। फिर जब 'चाय चक्कम' में सम्पादकीय अशिष्टता की पराकाष्ठा देखी तो मुझे अत्यन्त दुःख तथा क्षोभ हुआ। स्वामी सत्यदेव जी के विरुद्ध इस प्रकार का लेख! जिस व्यक्ति ने अपनी जन्म-भूमि पंजाब प्रांत को छोड़ कर अपने जीवन का श्रेष्ठतम भाग संयुक्त-प्रान्त में बिताया और वहां हमारी भाषा को अपना कर "हिन्दी, हिन्दु, हिन्दुस्तान" का झण्डा बुलन्द किया—यह भी उस वक्त, जब 'विशालभारत' का कहीं पता भी न था और जिसने हिन्दी के सन्देश को मद्रास तक पहुंचाया—उस व्यक्ति के विरुद्ध इस प्रकार की बातें!

सयागवश एक मित्र से भेंट हो जाने पर मुझे पता लगा कि स्वामी जी भी यहीं हैं। मैं फौरन उनके पास पहुंचा। झड़ी लगी हुई थी, स्वामी जी अपने कमरे में खाट पर बैठे थे। मेरी आवाज़ सुन कर वे प्रसन्न हो गये और प्रेम से मेरा स्वागत किया। मैं तो उद्विग्न था ही। मैंने स्वामी जी से कहा—"पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने आप के विरुद्ध मई के 'विशाल भारत' में बेतरह विष उगला है। क्या आप इसका कुछ उत्तर नहीं देंगे?" स्वामी जी मुस्करा कर बोले—"अरे, कोई निन्दा करने वाला भी तो चाहिये। पण्डित बनारसीदास मेरे क्यों बखिलाफ हैं, यह तो तुम्हें भली भांति मालूम ही है, फिर अब उसका गुस्सा क्या करना।" मैं स्वामी जी के साथ ढाई वर्ष तक निरन्तर लेख लिखने का काम करता रहा हूं। मुझे मालूम है कि पण्डित बनारसीदास जी नई देहली में स्वामी जी के निवास स्थान पर आये थे और तीन रुपये पृष्ठ के हिसाब से 'विशाल भारत' के लिये लेख मांगे थे। मुझे यह भी मालूम है कि स्वामी जी ने सन १९३२ के 'विशाल भारत' में कई लेख लिखे थे और सन १९३३ के जनवरी मास में उनका आखरी लेख 'विशाल-भारत' में छपा था। ये लेख मेरे हाथ के लिखे हुए थे और मैं यह भी जानता हूं कि बार-बार तकाज़ा करने पर चतुर्वेदी जी ने स्वामी जी का पारिश्रमिक नहीं भेजा और बराबर टालते रहे। मुझे यह भी मालूम है कि 'विशाल भारत' के कहानी-अंक की समालोचना के कारण बेचारे आचार्य चतुरसेन शास्त्री को चतुर्वेदी जी का मुफ्त में कोपभाजन बनना पड़ा था और इसी द्वेष के कारण उनका 'इस्लाम का विष वृक्ष' चतुर्वेदी जी की कृपा से मिट्टी में मिल गया। कहानी अंक की वह समालोचना मेरे हाथ की लिखी हुई थी, इस कारण मुझे चतुर्वेदी जी की अशान्ति और व्यथा का पूरा हाल मालूम था। उस समालोचना से हिन्दी-संसार में काफी चहल पहल रही थी। बाद में 'भारत' के सम्पादक की वजह से जब चतुर्वेदी जी को यह मालूम हुआ कि कहानी-अंक की समालोचना में स्वामी सत्यदेव जी का हाथ है, तो उनके क्रोध का पारा १२० डिग्री तक चला गया था। वे बदला लेने का मौका ढूंढ रहे थे। परन्तु बदले का अवसर नहीं मिला क्योंकि स्वामी जी सन १९३४ में जर्मनी चले गये।

अब स्वामी जी के जर्मनी से लौटने पर चतुर्वेदी जी ने बदला लेने के लिये लंगर-लंगोटे कस लिये हैं, लेकिन स्वामी जी तो इस प्रकार की लड़ाई के पक्षपाती नहीं हैं। वे साहित्य क्षेत्र में अश्लीलता और गन्दगी फैलाने के नितान्त विरोधी हैं। जनता में 'विशाल भारत' के मई के अंक में स्वामी जी पर किये गये आक्षेपों के कारण गलतफहमी फैल सकती है, इसी कारण कर्तव्य-बद्ध हो कर मैंने यह लेख 'अर्जुन' के पाठकों के सन्मुख रखने का निश्चय किया। मैंने स्वामी जी से कहा—"आप कुछ मत लिखिए। मैं 'विशाल भारत' के उस अंक में लिखी हुई बातों के विषय में आप से प्रश्न करता जाता हूं, कृपया आप उनके उत्तर देकर मुझे अनुगृहीत करें।" स्वामी जी बोले—"बहुत अच्छा।"

मेरे पास 'विशाल भारत' में किये गये आक्षेपों के नोट मौजूद थे, सो मैंने प्रश्न किया—"चतुर्वेदी जी ने आप पर कायरता का इल्ज़ाम लगाया है। उस लेख के उस भाग के लिए, जो आप ने पिछले साल योरुप प्रस्थान करते समय लिखा था, वह भाग यह है—"भारतवर्ष में रह कर यदि मैं अपने देश-वासियों के परम-प्यारे लेकिन अत्यन्त हानि-कारक पक्षपातों के विरुद्ध बोलूंगा, तो लोग मेरे बहुत खिलाफ़ हो जायगे और दुष्ट लोग जनता को बहका कर मेरे पथ में अधिक बाधाएं उपस्थित कर देंगे। अपने देश-वासियों से दूर रह कर जब मैं इनके मिथ्या विश्वासों और लचर प्रमाद-वाद की धज्जियां उड़ाऊंगा, तो इनकी आंखों पर पड़ा हुआ पर्दा जल्द उठ सकेगा। निरोग और ताजा विचारों के अभाव के कारण यह पुरानी आर्य-जाति विनाश के गड्ढे में गिरी जा रही है। इसे बचाना हमारा कर्तव्य है।'

यूरोप में रह कर काम करने का दूसरा बड़ा लोभ यह भी होगा कि कम्यूनिज़्म का जो विष भारत के अबोध नवयुवकों में स्वार्थी और जल्दबाज़ लीडर फैला रहे हैं, उस की बुराइयां यूरोप में बैठ कर अच्छी तरह से दिखाई जा सकेंगी। इसके सम्बन्ध में आप क्या कहते हैं?

स्वामी जी गम्भीर होकर बोले—"यदि मेरे देशवासी नवयुवक मेरे इतना लिखने पर ही 'मेरी पिछली सारी सेवाओं को भूल कर मुझे कायर समझने लग जायंगे, तो ऐसी जनता को मैं किसी प्रकार से बहादुरी नहीं सिखला सकता हूं। चूंकि मैं पांच वर्ष के लिये जर्मनी जा रहा था, इस कारण मैंने यह सोचा कि जनता के रूढ़िवाद के विरुद्ध तो मुझे लिखना ही है और अच्छी तरह से लिखना है। दूर रहने से जनता को शायद अधिक मौका मेरी बातों पर गम्भीरता से विचार करने का मिले। क्योंकि मैंने प्रायः देखा है कि विदेश में बैठे हुए प्रवासी-भाइयों के लेखों को उनके देशवासी बड़े गौर से पढ़ते हैं और उनके लेखों की अधिक कदर करते हैं। बस, इसी विचार से मैंने ये वाक्य लिखे थे। चतुर्वेदी जी को कायरता और बहादुरी का फैसला करने का मौका तो मैंने दिया ही नहीं, क्यों कि मैं तो अब जनता के बीच में बैठ कर उन के मिथ्या विश्वासों की धज्जियां एक ऐसे प्रान्त में बैठ कर उड़ाने लगा हूं कि जहां ज़रा सी बात में छुरियां चल जाती हैं। लाहौर में बैठ कर बुद्धिवाद का प्रचार करना, इस्लाम के विरुद्ध व्याख्यान देना और पीर-पैगम्बरों के मिथ्या विश्वासों की जड़ हिलाना खालाजी का घर नहीं है। चतुर्वेदी जी लाहौर में आकर आर्यसमाजी अथवा मुसलमान जनता के विरुद्ध ज़रा मुंह खोल कर दिखलावें तो सही, तब उन्हें फौरन आटा-दाल का भाव मालूम हो जाय। अन्ध विश्वासों से ओत-प्रोत जोशीले प्रांत में मैंने बुद्धिवाद का पौधा लगाने का निश्चय किया है। मेरी कायरता अथवा बहादुरी का फैसला भावी सन्तान करेगी।"

मैंने स्वामी जी से फिर पूछा—"चूंकि आप साम्यवाद के विरुद्ध लिख रहे हैं, इस लिए चतुर्वेदी जी तथा उनके विचार के लोगों को यह टिप्पणी करने का अवसर मिला है कि स्वामी जी शायद पूंजीपतियों के हत्थे न चढ़ गये हों। आप इस विषय में क्या कहते हैं?"

इस पर स्वामीजी खूब हंसे और कहने लगे—"चतुर्वेदी जी ने अभी तक मेरे स्वभाव को नहीं पहचाना। मैं सत्य, केवल सत्य के लिये जीता हूं। रुपये से मुझे खरीदने वाला आदमी अभी तक मेरी नज़रों से नहीं गुजरा। मैं अपनी लेखनी के बल से अपना सारा कार्य कर रहा हूं। चूंकि मैंने योरुप में ५ वर्ष रहना था और मुझे मालूम नहीं था कि मेरी आंखों के इलाज में कितना रुपया खर्च होगा, मुझे जर्मनी की परिवर्तित अवस्था का ज्ञान भी नहीं था, इस कारण मैंने प्रभु से सहायता के लिये प्रार्थना की थी। अब चूंकि मुझे स्वदेश लौट आने के कारण रुपये की मार नहीं है, इस लिए मैं निश्चिन्त हो कर अपना कार्य कर सकूंगा। किसी भी पूंजीपति ने आज तक मेरे विदेशगमन, आंखों के इलाज अथवा और किसी काम के लिये मुझे पांच सौ या हज़ार रुपया नहीं दिया। केवल बुद्ध-गया मन्दिर के सम्बन्ध में प्रोपेगेण्डा करने के लिये सन १९२२ में स्वामी विश्वानन्दजी ने मुझे आर्थिक सहायता दी थी, जिस के फलस्वरूप गया। कांग्रेस के मौके पर 'हमारी गुलामी के कारण' पुस्तिका

(शेष पृष्ठ २० पर)

महिला-जगत

राखी की प्रेरणा

प्रतिस्पर्धा नहीं, आदान प्रदान

सूखा ग्रीष्म गया। तपन अब भी है, किन्तु उसके साथ वर्षा की सुनहली आशा लगी हुई है। चित्ताकर्षक हरियाली चहुओर छा रही है। मोर बोल रहे हैं और कोयल कुहुक रही है। ऐसे रम्य और सुखद वातावरण में राखी का सुन्दर त्यौहार हमारे सामने उपस्थित है।

बहन भाई का सुन्दर पर्व दिन, कितनी पुरानी स्मृतियों को जागृत कर रहा है!

एक बहन है और एक भाई। बहन नवनीत-सी स्निग्ध, कमल-सी कोमल, छुईमुई-सी विनम्र और सूरजमुखी-सी उत्फुल्ल है। इसके विरुद्ध भाई कर्कश, कठोर, उद्दाम और गम्भीर है। बहन अपने कोमल करों से सूत का पतला रक्षा बंधन भाई की बलिष्ठ भुजा में बांध रही है और भाई कृतज्ञ भाव से उसे ग्रहण करता हुआ, उसके बदले में अपने भारी कर्तव्य-पालन का दृढ़ निश्चय कर रहा है। दोनों ही सुखी हैं। दोनों के मनों में एक विचित्र आनन्द का आभास हो रहा है। मन की सारी कलुषतायें और दुर्भावनायें मिटाकर, सशक्त अशक्त की भावना को विस्मृत कर, दबाव और दासता के भावों से ऊंचे उठ कर, निश्छल और पवित्र नूतन भावनाओं में व एक-रस हो रहे हैं। उनको देखकर, कौन कह सकता है कि स्त्री पुरुष की दासी है और पुरुष स्त्री का स्वामी?

बहन भाई का यह स्नेह, एक-दूसरे के भावों का कैसा सुन्दर आदान प्रदान है! राखी या रक्षा बन्धन तो उन भावों का आवश्यकता का बाह्य निदर्शन मात्र है, वस्तुतः तो स्त्री अपनी शुभ कामनाओं के साथ पुरुष को अपनी शक्ति प्रदान करती है और पुरुष उस शक्ति से सशक्त बन कर रक्षा बन्धन को ग्रहण करने के रूप में इस बात का निश्चय करता है कि वह उच्छृङ्खलता से बचता रहेगा और स्त्रियों के भी उसी प्रकार मुक्त जीवन व्यतीत करने में बाधक नहीं बनेगा, जैसा कि वह स्वयं अपना व्यतीत करना चाहता है। मतलब यह है कि स्त्रियों पर अत्याचार करने या उन्हें कुदृष्टि से देखने का वह कभी साहस न करेगा, स्त्रियों के प्रति बहन का-सा निश्छल और सरल स्नेह भाव रक्खेगा, यही नहीं, बल्कि जिस प्रकार अपनी बहन पर किसी के द्वारा कुदृष्टि पड़ना या अत्याचार होना वह नहीं सह सकता उसी प्रकार बहन की जाति अर्थात स्त्रियों का भी ख्याल रक्खेगा और यह सब इसलिये नहीं कि स्त्री बलहीन है और पुरुष बलवान बल्कि इसलिए कि पुरुष का जो बल है वह स्त्री के ही त्याग और कष्ट सहन का फल रूप है। माता के त्याग से वह बना है बहन की शुभ कामनाओं ने उसे सशक्त बनाया है और पत्नी की आत्म विस्मृति एवं सेवा ने उसे ऊंचा उठाया है, तब वह भी भला क्यों न त्याग, स्फूर्ति एवं सेवा की मूर्त्त-रूप स्त्रियों के प्रति सद्भावनाओं और कृतज्ञता से उत्पन्न कर्तव्य-भाव से प्रेरित हो? इसी कर्तव्य भाव से प्रेरित हो, स्त्रियों को अमन चैन से रहने का आश्वासन दे, वह उनका रक्षक बना है। हम कहीं यह भूल न जाय, इसलिये मानो हर साल 'रक्षा-बन्धन' का महोत्सव मनाया जाता है।

इस प्रकार रक्षा-बन्धन' और कुछ नहीं, भावों के आदान-प्रदान का एक सुन्दर और सुसंस्कृत बाह्य रूप है। सृष्टि के अभिन्न अंग स्त्री पुरुष में यह सुन्दर सुखद, पवित्र भावों का सञ्चार करता हुआ हर साल इस बात की स्मृति कराने आता है कि स्त्री-पुरुष में कोई छोटा बड़ा नहीं है, बहन भाई की तरह दोनों एक ही नियन्ता की सृष्टि है, अलबत्ता परस्पर के आदान प्रदान से उन्होंने अपना कार्य विभाजन कर रक्खा है।

यही वह भावना है, जिसको यदि हम भलीभांति हृदयङ्गम कर लें तो स्त्री पुरुषों में आज जो होड़ और दबाव की बाजी लग रही है उसका बड़ी खूबी के साथ अन्त हो सकता है।

यही राखी की सर्वोच्च प्रेरणा है।

पुरुषों से प्रतिस्पर्धा के मार्ग पर आरूढ़ बहन, राखी के इस पवित्र पर्व दिन, क्या इस प्रेरणा पर कान देंगी?

—मुकुटविहारी वर्मा

नारी की उत्पत्ति

(ले०—श्री० एफ० डबल्यू० बन)

हिन्दुओं के ब्रह्मा जब नारी की रचना करने बैठे, तब उन्होंने देखा कि उनका सारा मसाला पुरुष की रचना में ही समाप्त हो गया है कोई भी ऐसा ठोस पदार्थ बाकी नहीं बचा। अब तो ब्रह्मा जी बड़े चक्कर में पड़े कि क्या करें। अन्त में बहुत सोच विचार कर उन्होंने चन्द्रमा की गोलाई ली, लताओं की वक्रता ली, नन्हीं टहनियों से चिमटना लिया, दूर्वादल का कम्पन लिया, नरकुल की क्षीणता ली, पुष्पों का खिलना लिया, पत्तियों की ताजगी ली, हाथी की सूंड का आकार लिया, हरिणियों की दृष्टि ली, मधुमक्खियों की पंक्तियों का चिपकना लिया, सूर्य रश्मियों की प्रसन्नता भरी क्रीड़ा ली, मेघों का रुदन लिया, वायु की चंचलता ली, शशक की भयातुरता ली, मयूर का घमण्ड लिया, कमल की कोमलता ली, वज्र की कठोरता ली, शहद की मधुरता ली, बाघ की क्रूरता ली, अग्नि का ताप लिया, बर्फ की ठंडक ली, तोते की अनवरत टें-टें ली, कोयल की मधु कूक ली, कौए की मक्कारी ली और सारस की वफादारी ली। इन सब मसालों को खरल में डाल कूट पीस कर एक दिल किया। और उसी से नारी की रचना करके ब्रह्मा ने उसे मनुष्य को दे दिया।

एक सप्ताह बाद मनुष्य लौट कर ब्रह्मा के पास आया, और बोला— भगवन्, आपने जो जन्तु दिया है उसने तो मेरी जिन्दगी बवाल में डाल रक्खी है। वह दिन भर लगातार बात करती रहती है मुझे इतना परेशान किया करती है कि सहन करना मुश्किल है कभी अकेला नहीं छोड़ती। उस पर हर घड़ी ध्यान देना पड़ता है, वह मेरा सारा समय ले लेती है वह बिना बात की बात पर रोती है बिना बात की बात पर मुस्कराती है और हर वक्त बेकार रहती है। मैं उसके साथ नहीं रह सकता। आप ही ने उसे दिया है, आप ही उसे वापस ले लीजिये।

ब्रह्मा ने कहा, 'अच्छा' और उसे ले लिया।

एक सप्ताह बीत जाने पर फिर मनुष्य ब्रह्मा के पास पहुंचा और कहने लगा—'भगवन! जब से मैंने उस जन्तु को लौटाया है तब से मुझे जीवन बहुत एकाकी नीरस जान पड़ता है। रह रह कर याद आती है क्योंकि वह मेरे लिये कैसी प्रसन्न होकर नाचती थी, कैसी मस्त होकर गाती थी, कनखियों से कैसे प्यार से ताकती थी। वह मेरे साथ चलती थी मुझसे चिपट जाती थी। उसकी हंसी में सङ्गीत था, दर्शन में सौंदर्य था, स्पर्श में कोमलता थी। भगवन! उसे फिर मुझे लौटा दीजिये।

ब्रह्मा ने कहा अच्छा, और नारी को फिर मनुष्य को लौटा दिया।

केवल तीन ही दिन बीते कि मनुष्य फिर ब्रह्मा के पास आया, और बोला—भगवन मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि क्या होता है फिर भी आखिरकार इसी नतीजे पर पहुंचा हूं कि स्त्री मेरे लिये आनन्द की अपेक्षा दुख की वस्तु है। अतः आप उसे फिर वापस ले लीजिये।

किंतु ब्रह्मा ने बिगड़ कर कहा—निकल यहां से जाओ भागो। जैसे तुम से बने वैसे इसे सम्हालो। मैं अब ज्यादा तुम्हारी बात नहीं सुनूंगा।

इसपर मनुष्य बोला—किंतु मैं स्त्री के साथ नहीं रह सकता।

ब्रह्मा ने उत्तर दिया—लेकिन तुम उसके बिना भी तो नहीं रह सकते।

ब्रह्मा ने यह कह कर मनुष्य को निकाल बाहर किया और अपने काम में लग गये। मनुष्य कहने लगा, मैं न तो स्त्री के साथ ही रह सकता हूं और न उसके बिना ही फिर क्या करूं?

(विशाल भारत से)

—क्या स्त्रियां प्रजनन के लिये ही बनाई गई हैं ?

'तीन एम० ए० पास स्त्रियां' का उत्तर

(ले०—श्री धर्मानन्द आयुर्वेदालंकार, देहरादून)

'अर्जुन' के विगत साप्ताहिक संस्करण में मेरे स्नेही बन्धु भिषग रत्न श्री अत्रिदेव गुप्त का—देहरादून की 'तीन एम० ए० पास स्त्रियां' के सम्बन्ध में—उन्हें उद्बोधन करते हुये*—एक अद्भुत लेख छपा है। उसमें उच्चशिक्षा को स्वास्थ्य-ह्रास का कारण बताया गया है।

परन्तु इस बात को देहरादून का कौन सामाजिकव्यक्ति नहीं जानता कि लक्षित बहिनों के माता पिताओं का शारीरिक स्वास्थ्य उन बहिनों की अपेक्षा भी कहीं अधिक गिरा हुआ है। मुझे उन तीन बहिनों के पिताओं के चिकित्सक होने का अवसर हासिल है।

परन्तु ये तीनों पिता किसी युनिवर्सिटी के एम० ए० नहीं हैं। बहुत ही मामूली शिक्षा इन्होंने प्राप्त किया है। जिस युग में इन्होंने बचपन और नौजवानी बिताई, वह युग सस्ता, सरल और संघर्ष-रहित था। फिर भी तीनों की ऐसी कमजोर शारीरिक अवस्था क्यों ? यहां कदाचित् मेरे बन्धु का सिद्धांत कुछ अस्पष्ट या गर्त्त में रह गया हो। तीनों पिताओं के दुर्बल छोटे पिंजर" पर आज देहर में कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में इन की अथक सेवाओं का प्रशंसक न हो। बड़े २ बलिष्ठ नौजवान कार्यक्षमता में इनकी पहुंच को नहीं पा सके हैं।

यदि ये तीनों बहिन अपने माता-पिताओं से उपरोक्त गुण या दुर्गुण विरासत में हासिल करती हैं तो कोई कारण समझ में नहीं आता कि भिषग्रत्नजी—'आपका दिल छोटा है, दिमाग भी छोटा है, आप पीछे रहें तो ठीक। एम० ए० बनने का चाव छोड़ दीजिये' प्रभृति उपालम्भों से उनका सत्कार करें। इतना तो प्रसंगवश हुआ। अब आइये, उनके शेष लेख पर विचार करें।

भिषग्रत्नजी के लेख में दो बातें नजर आती हैं। आप यह सिद्ध करना चाह रहे हैं कि "पुस्तकों की शिक्षा विशेषकर अंगरेजी शिक्षा" में स्त्रियों को न उतरना चाहिये, यद्यपि इस सिद्धि को आपने अपने लेख में अत्यन्त गौण रूप दे दिया है। इस सम्बन्ध में जहां तक और जैसा आपका विचार है, उससे मैं सोलहों आने सहमत हूं, परन्तु इतना और बढ़ा देना चाहता हूं कि यह शिक्षा-प्रणाली पुरुषों के लिये भी उतनी ही विघातक है, जितनी कि स्त्रियों के लिये है। और पुरुषों के लिए भी आप ही के शब्दों में जरा सा परिवर्तन कर "इसका स्पष्ट नतीजा आंखों पर चश्मा देखिये, सिर दर्द, थोड़े परिश्रम से भी थकान हो जाता है साथ ही 'वीर्य-सम्बन्धी' बीमारी अस्सी प्रतिशत को मिलती है।" बड़ी आसानी से दोहराया जासकता है। इस प्रकार आप केवल स्त्रियों को ही "भगवान की रचना के विरुद्ध धार के उलटे न चलिये" का उपदेश क्यों दे रहे हैं, जबकि हमारे नवयुवक भी भगवान् की रचना के विरुद्ध "धार के उलटे" चल रहे हैं। आप ही के शब्दों में—क्या अंगरेजी शिक्षा के 'इस संघर्ष में सम्भवतः'—नवयुवकों के—'माथे में'—भी—'खून'—न—"निकलेगा" ? स्मरण रखिये कि विष सर्वदा पुरुष और स्त्री दोनों के लिये एकसा विघातक है, इस में प्रकृति ने कोई विशेष भेद नहीं रखा।

आप के लेख के दूसरे आशय को, आपकी निम्न स्थापनाएं बड़े जोर के साथ प्रकट कर रही हैं। आपकी स्थापनाएं हैं:—

१—"स्त्री का मस्तिष्क और हृदय दोनों पुरुषों से वजन में कम होते हैं।" "उनको भारी दिमाग की जरूरत नहीं।"

२—"स्त्रियों को तो प्रकृति ने प्रजनन कार्य के लिए 'ही' बनाया है।"

३—"पढ़ कर आप सिवाय नौकरी के कुछ भी नहीं कर सकतीं।"

४—"फिर आप विवाह न करने की धुन में आ जायें, जहां यह धुन आप को चढ़ी, वहां आपके शरीर में घुन भी लग जायगी—यह सत्य है।"

अब हम क्रमशः, आप की स्थापनाओं को एक एक कर तुला पर तोलते हैं:—

१—स्त्री का मस्तिष्क और हृदय दोनों पुरुषों से वजन में कम होते हैं, आपकी यह स्थापना साधारण स्थापना है।

यद्यपि स्वर्गीया श्रीमती एनी बेसेण्ट और देवी सरोजिनी आप और हम से बड़ा मस्तिष्क तथा बड़े हृदय रखती हैं, फिर भी मैं बहुत अंशों में आपके कहे हुए इस तथ्य को स्वीकार कर लेता हूं। लेकिन आपका इस तथ्य से आगे बढ़कर यह कहना, क्योंकि महिलाओं का मस्तिष्क प्रकृति ने कम वजनदार या छोटा बनाया है, इसलिये आप पुरुषों से आगे बढ़ने का यत्न न कीजिए" उतना ही ठीक है, जितना बड़े सिर और बड़े दिल वाले मेरे परिचित (सुक्खू) हरिजन से—मुझे या आप को, इस दुनिया की दौड़ में पीछे रहने की सलाह देना है।

मुझे प्रतीत होता है—मेरे मित्र भूल रहे हैं, वे आज से ५—६ दशक पूर्व प्रचलित मस्तिष्क को वजन-सम्बन्धी 'थ्यूरी' को बहुत अधिक महत्त्व दे रहे हैं, यद्यपि आज के जीवन-शास्त्रियों के लिए वह थ्यूरी गई बीती थ्यूरी है। यदि मेरे मित्र, पाव लोव वानशेफर, पर्ल, और जिना लोम्ब्रोसो प्रभृति जीवन-शास्त्रियों तथा एलबर्ट माल प्रभृति मस्तिष्क-विदों के आधुनिक अन्वेषणों से परिचित होते तो संभव है, वे ऐसा लिखने का साहस न करते। और तो और इस वजन-सम्बन्धी थ्यूरी को मस्तिष्क-शास्त्र के आदि आचार्य (गाल) ने भी इतनी प्रधानता नहीं दी, जिन मायनों में मेरे बन्धु दे रहे हैं। आश्चर्य की बात है इस विचार-स्वातन्त्र्य के युग में अट्ठानवे फीसदी जनता के वोट प्राप्त करने वाले जर्मनी के सर्वेसर्वा हर हिटलर भी स्त्रियों को घर का मार्ग दिखाने के लिये जिस युक्ति को ग्रहण करने में संकोच कर गये, उस युक्ति का आश्रय लेकर मेरे मित्र स्त्रियों के विरुद्ध वखोफ आर्डिनेन्स जारी करना चाहते हैं। हिटलर ने क्यों स्त्रियों के लिए दूसरा कार्यक्षेत्र चुना, इस सम्बन्ध में मुझे यहां कुछ नहीं कहना है। हरेक जानता है कि जर्मनी की बेकार समस्या कितनी प्रबल थी, कार्य-विभाजन द्वारा उसका सामयिक हल करना कितना आवश्यक था, जिसे हिटलर ने किया है।

मैं अपने बन्धु से पूछता हूं क्या आप नहीं जानते कि औसतन श्वेत पुरुष का मस्तिष्क और हृदय औसतन रंगीन पुरुष के मस्तिष्क और हृदय से बड़ा वजनदार होता है। यह एक भली भांति परिगणित सचाई है। उस अवस्था में क्या आप भी भारतीयों को यह सलाह देंगे कि आपका मस्तिष्क और हृदय छोटा है, अतः आप श्वेतों के पीछे ही रहिये, आगे बढ़ने का नाम न लीजिये।

एक और बात। मैंने विश्व-विभूति महात्मा गांधी के भाल का कई बार सूक्ष्म निरीक्षण किया है। हृदय की शारीरिक परीक्षा का तो अवसर नहीं मिला, परन्तु मैं बहुत कुछ उस के परिमाण के सम्बन्ध में कल्पना कर सकता हूं। इधर मेरे बुद्धू धोबी के सिर का घेरा अवश्य महात्माजी से सवाया-ड्योढ़ा होगा, यद्यपि उसे कोई 'हाइड्रोकेफेलस' प्रभृति रोग नहीं है। इसी प्रकार हृदय का परिमाण तथा वजन भी अवश्य उन से बड़े हैं। परन्तु मुझ में इतना सामर्थ्य नहीं कि किसी पत्र में 'महात्माजी' को बुद्धू धोबी के पीछे ही रहने के लिए कहूं, क्योंकि उनका मस्तिष्क और हृदय उससे छोटा है।

वास्तविक बात यह है कि मस्तिष्क की उत्तमता उसके भिन्न २ शक्ति-केन्द्रों के स्वाभाविक अथवा अभ्यासजनित विकास पर निर्भर करती है, न कि उसके परिमाण और वजन पर ही सब कुछ अवलम्बित है। चाहे पुरुष हो या स्त्री हो, दोनों के मस्तिष्कों में साहित्य या विज्ञान स्वाभाविक प्रतिभा के रूप में अथवा सतत अभ्यास द्वारा विकसित हो सकते हैं। इस विकास के लिए मस्तिष्क के घटने बढ़ने की विशेष आवश्यकता नहीं और न इसमें स्त्री या पुरुष का लेना-देना है।

नोबल-पुरस्कार-विजेताओं की सूची में, स्त्रियों को अपनी उन्नति के लिए प्राप्त अवसर के अनुसार, दलिहा प्रभृति कितनी ही देवियों का नाम देख लीजिये। उधर रेडियम-आविष्कर्त्री मादम क्यूरी की वैज्ञानिकता का भी माप ले लीजिए।

(आगामी अंक में समाप्त)

*प्रथम लेख के सम्बन्ध में कुछ मिथ्या धारणा फैल गई है। वह लेख किन्हीं विशेष महिलाओं को लक्ष्य में रखकर नहीं लिखा गया था और न उससे किन्हीं व्यक्तियों को अपमानित करने की इच्छा लेखक की थी। उसमें तो एक बात उठाकर अपने विवादास्पद विषय पर ही विचार किया है। फिर भी यदि उससे किसी को दुःख हुआ हो, तो हम क्षमा-याचना करते हैं। —सं०

हमारी राष्ट्रवाणी

——::*::——

यह एक ज़माना था कि हिन्दी दिल्ली और आगरे के बाज़ारों में सर पर टोकरी लिये घूमती थी। बचपन था, गरीबी थी, दुनियाँ निकट नहीं आती थी। सोने के हौदे चमकते थे, हीरे मोतियों से लदा हुआ हाथी झूमता था, पर इस दुखिया के अचल में मुश्किल से ही अन्न के दाने पड़ते थे। भूख प्यास की मारी हिन्दी या तो पेट के लिये कंकड़ चुनती थी या घोंसले के लिये सूखे तिनके! चिकनी इमारतों की भिन्न भिन्न खिड़कियाँ रह रह कर इस भिखारिणी पर चबाया पान उगलती थीं। हिन्दी चौंकती चीखती यमुना के कगारों में आकर बसती थी। आसमान नीला था, सूरज में चमक थी और तारे जगमगाते थे पर वीणा की सोई आवाज़ सी यह क्या है यही उस समय इसका आमचिन्तन था।

कुछ दिनों के बाद दुनिया ने यह देखा कि इसे राजपूताने में आश्रय मिला है। वहाँ के भाट और चारण बड़े प्यार से इसका लालन पालन करते थे। यह कमलों का रंग देखती थी, मोरों की कथायें याद करती थी और अपने स्वामी के इशारे पर राजा महाराजाओं के दरबारों में नूपुर लगा कर झनक उठती थी। आँखों में नाचती प्यालों में झलकती कानों में गूँजती यह सदा अपने स्वामियों के सामने हाथ बाँधे खड़ी रहती थी। युद्ध की तैयारी में रणवाद्य बन कर गरजती थी। पशुओं के शिकार में राह दिखलाती थी। शयन कक्ष में फूलों की पंखड़ियाँ बिखरती थी। इस तरह दिन में तारे दिखला कर आधीरात में यह अपने स्वामी भाट के लिये मान चावी के कुछ टुकड़े घर लाती थी।

वह थे महात्मा कबीर जो इसे रास्ते में मिले थे। उस समय सन्ध्या का अवसर रहा होगा, विलासिनी एक जलाशय में ताजे तोड़े हुए फूलों पर पानी डाल रही थी। कबीर प्रथम दृष्टि में ही सब कुछ समझ गये। उन्होंने इसके पैर के घुंघरू उतार डाले, काजलवाली आँखें धो दीं और बल खा खाकर बंधे हुए बालों को एक हलके झटके से खोल दिया। उनके साथ रह रह कर विलासिनी कुछ ही दिनों में तपस्विनी बनी और कातर वाणी की तुतलाहट टूट गई। जिस समय उस महात्मा 'सुनो भाई साधो' के कण्ठ से लग कर यह हिन्दी प्रेम का ढाई अक्षर बनी। उस समय मन्दिर और मसजिद में सवेरा हुआ। 'सर पर कफ़न लपेट कातिल को ढूंढने वाली' भक्ति का उन्माद कुछ ऐसा रहा कि कम्बलों की वर्षा से 'पानी भीगन लागा'। तुलसी के राम अयोध्या वापिस लौट आये और 'सूर' के हरि लकड़ियों में बोल उठे। नानक की दूब हरी हुई। एक रस उमड़ा, एक तार झनका और एक आग सुलगी। फिर मीरा के हाथ के जहर पर जो यह जादू की चर्नी सी फिरी तो उस कालकूट के मधुर अमृत बनने में देर न लगी।

(२)

कई युगों के बाद इस चाँदनी का अचल बड़ २ कंगूरों में उलझ गया था। कोयल कूक चुकी थी पपीहे टेर चुके थे और जनपथ में अँधेरा ही अँधेरा था। इसी दौर में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जग की अन्धेर नगरी की राह पर थे। कौशीक इस उन्मुक्त प्राणी ने गंगा की लहरों पर चढ़ के पहले पहल राष्ट्रभारती के मन्दिर में दीप जलाया। वे यार कृष्ण के सखा थे राधारानी के गुलाम थे पर सब से पहले वे स्वदेश की एक मुट्ठी धूल थे जो आदमी की तरह बोलती थी और दीवाल की तरह सुनती थी।

इतने में १९वीं शताब्दी समाप्त हुई और आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के बलिष्ठ कन्धों पर चढ़ कर हिन्दी ने सवेरा झाँका। व्रज और वृन्दावन का घेरा फैल कर हिमालय सिन्ध कन्याकुमारी और बर्मा तक आ पहुंचा और इस घेरे में करोड़ कण्ठ एक स्वर से गा उठे। वेष बदला भूषा बदला भाषा बदली। हमारा श्रृंगारिक प्रेम विश्व प्रेम बना। हमारी 'आह' और 'वाह' झाड़ फानूस के महलों से बाहर निकली। हिन्दी अब किसी नगर या जिले की बोली नहीं थी, अखिल देश की वाणी थी। हमारा अगर दिल था तो दर्द की भाषा वही हिन्दी। हमारे शरीर में प्राण बन कर यही कूकती थी। हिमालय में वह उठती थी, कन्याकुमारी में वह लहराती थी, सिन्ध में वह चौंकती थी तो बर्मा में वह नाचती थी। मन्दिर को प्रणाम करती, मस्जिद को सलाम करती, गिरजों में घुटनों के बल बैठ जाती थी। इसकी उत्तप्त ज्वाला में अब रासलीलायें भस्म हो चुकी थीं। कामिनियों की गाथा सुनाने वाली बाँसुरी अब खंड खंड हो चुकी थी। यह सवेरा हमारे यहाँ संसार की गोद में झूमता हुआ आया और इसमें हमारे इतिहास के पन्ने पन्ने झलक उठे। व्रजभाषा अपने धवल आश्रम में बैठी संन्यास ले रही थी और जाग्रतों की बोली राष्ट्रजीवन के प्रवेश द्वार पर मंगल माल बनी हुई खड़ी थी। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, भगवान वाल्मीकि और भगवान वेदव्यास फिर एक बार इस भाषा में बोल उठे। मन्सूर सूली पर कैसे चढ़ा था, हसन को प्यास कब लगी थी और हमारे यहाँ सिकन्दर कब आया था— ये बातें हमारी हिन्दी हमें बतला रही थी। चीन की मुहब्बत, जापान की तड़प और इंगलैंड का परिवर्तनशीलता हमारे कानों में कुछ कह रही थी। इसी अवसर पर तुलसी सूर और कबीर की याद हमारे दिल में फिर ताज़ा हो आई और मीरा के चित्र घर घर में टंगे। वह दिल्ली और आगरे के बाज़ारों में भटकने वाली हिन्दी अब हमारी राष्ट्रवाणी थी। भारतवर्ष से प्रेम करने वाले इसे हिन्दी कहते थे और हिन्दुस्तान से मुहब्बत रखने वाले इसे उर्दू के नाम से पुकारते थे।

(३)

आज हमें यह स्मरण करते हुये बड़ी खुशी होती है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा होने जा रही है। इसमें बंगाली का वैभव है, गुजराती का सजीवन है, मराठी की चुहल है, कनाडी की मधुरता है और संस्कृत का अजस्र स्रोत है। प्राकृत ने इसका श्रृंगार किया है और उर्दू ने इसके हाथ में मेंहदी लगाई है। यह आर्यों के स्वर में गाती है और अनार्यों की ताल में नाचती है। हिन्दी अब राष्ट्रभाषा है। केवल हिन्दुओं की ही भाषा नहीं है। यह राष्ट्रों के उत्थान और पतन को समझती है। जाति जाति और फ़िरके फ़िरके के अन्दर प्रेम संचार करने की भावना इसे मस्त बना रही है। प्रकृति की ठोकर से यह खड़ी हुई है और साधना के आलिंगन से इसे स्फूर्ति मिली है। आप संसार के किसी कोने में रहिये आप का दर्द इस भाषा में छिपा नहीं रहेगा। आपकी उंगली में लगी अंगूठी इस महान वाणी को छू चुकी है। इसमें अब आर्य अनार्य, आत्मा परमात्मा का भेद नहीं है। भेद केवल यह है कि अब यह वसुन्धरा के पत्थर तक को चूमने लगी है।

बौद्धों की शान्ति श्रृंखला को हम भूले नहीं हैं, हमारा साहित्य जाग्रत है। जैनियों की दिव्य आत्मा राष्ट्रभाषा के शरीर में वर्तमान है। पारसियों की संकोचशीलता हमारी निधि है। मुगलों की आन पर हम मरते हैं। पठानों की शान पर हिन्दी फ़िदा है। राष्ट्रभाषा हिन्दी ने दर्द देखा है, काल समझा है और पात्र को प्यार किया है। रात बीतने ही नींद टूटी है, सवेरे ही यह जगी है। यह आपकी प्रेममयी वाणी है और हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा है।

आज के इस नवीनयुग के सुनहले आँगन में हिन्दी की खिड़कियाँ चारों ओर खुली हैं। फूल में भौंरा और भौंरा में फूल को देखने का आदत अब ज़रा छिन सी गई है। अब फूल खिलते हैं किसी की तलवार पर। मौर गुंजार करते हैं किसी के प्रेममय स्वर में। तालाबों के कीच में खेलने वाले हमारे कवि आज समुद्र की लहरों को शान्त देखकर उन्हें मुंह में फूंकते हैं। सफ़ेद और लाल कमलों की गुणावलि को छोड़ कर उन्हीं कमलों को बेच कर रोटी कमाने वाले मल्लाहों का रोना ही आज हमारे कवियों की कविता है। कहानियाँ लिखने वाले भी अब चौंक उठे हैं। किसी की स्याही खून की है। कोई आँसू में कलम डुबो रहा है। किसी की आँखों में दोज़ख़ की आग है और कोई दिल्ली का दलाल है। ये कहानियाँ आज हमें बतलाती हैं कि दुनियाँ वह नवासदन है जहाँ सदा पाप से घृणा और पापियों से प्रेम होना चाहिये। जीवन मरण की इस रंगभूमि में मानवों की आत्मा वह ललकार है जो धूप, वर्षा और शीत में कभी न मिटे। वे मेंहदी में खेलने वाली उंगलियाँ अब सूत के तारों में उलझती हैं। अब के गायक उत्थान के गीत गाते हैं। उनके गीतों में एक आत्मा के बदले विश्वात्मा की तड़प होती है। वे रोते हैं दूसरों के लिये और हंसते हैं तीसरों के लिये। अब हिन्दी के पास अपनी महान भाषा है, अपना गौरवपूर्ण साहित्य है और यह सर्वथा भाव की भूखी है।

इसके पास जो शब्दों की कमी है वह अधिक दिन टिक न सकेगी। आपके स्नेहार्द्र कण्ठ के फूटते ही इसके चरणों में शब्द पुष्प की वर्षा होगी। इसका व्याकरण आप को छोड़ कर अन्यत्र जा नहीं सकता। किसी ने मरा मरा कह के राम कहा था, पर म० गां० ने के कहके हल्का न इसकी लिपि सीधी कर दी है। आज बीसवीं सदी का सवेरा है और

राष्ट्र भाषा हिन्दी गरीबों के लिये दया, धनियों के लिए सद्‌भावना राजा महाराजों के लिए सलाह और मनुष्य मात्र के लिए प्रेम का संदेश लेकर आप के पास आई है। आप का घर हो इस का घर है और यह सब से पहले अपने घर में उजाला कर दुनिया की मस्जिदों में दीपक जलायगी। किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि हमारे सामने खाइयां नहीं हैं। हमें अभी कांटों पर सरपट दौड़ना है और ठोकरें खानी हैं। पश्चिम की भोग लिप्सा और पूर्व की अहम्मन्यता से हमें बचना है, हमें अग्नि परीक्षा देनी है। इस लिए राष्ट्र भाषा अपनी राह पर अन्धी न रहे। यद्यपि दक्षिण में मद्रास के आस-पास हमारी प्रेम-मयी वाणी गूंज उठी है, तथापि बंगला और उर्दू में कुछ भाई ऐसे हैं, जो हमारी नीयत पर अभी संदेह करते हैं। इस लिए हमारे प्रेम की पुचकार कुछ ऐसी मधुर होनी चाहिये कि वन भर के मोर थिरक उठें। यह आज का रहा-सहा विभेद कल न रहेगा और परसों हमारी फुलवा-रियों में विश्व की मंगल कामनाएं हंस उठेंगी।

(४)

हिन्दी का जीवन 'राष्ट्र-भाषा' की उपाधि ग्रहण करने तक ही सीमित नहीं है। हमें अभी थोड़े दिनों में बहुत कुछ करना है। भाषा एक प्रेमसूत्र है, संगठन की आधारशिला है। इसी प्रेम-सूत्र में हमें विश्व को नहीं, तो उसके एक बड़े टुकड़े को बांधना है।

कहते हैं हिन्दुस्तान गांवों में रहता है। यदि यह सत्य है तो फिर हिन्दी शहरों की धर्मशालाओं में कब तक रहेगी? इसे सारे देश का भ्रमण करना चाहिये। इसका भार हमारे ही सबल निर्बल कन्धों पर है, हिन्दी गांव गांव घूमे, बन बन फिरे और घर घर बसे। यह गांव के किसानों को बोने काटने का समय बतलाये, काले काले मेघों की सूचना दे और जब उनकी आंखों के सामने हरी-भरी फसलें खड़ी हों तो उनकी हर्ष-वाणी बन कर गूंज उठे। उनकी जातीय-पंचायत, सामाजिक विवाद और धार्मिक चर्चा—इसी भाषा में हो। यह उनके पसीने की बूंद हो और हर्षित नयनों की जल धारा हो। इलाहाबाद हिन्दी पढ़ले और कलकत्ता हिन्दी बोल ले तो कोई बड़ी रियासत खड़ी नहीं हो जाती। जरूरत है, इस की कि पैंतीस कोटि कण्ठ एक स्वर में गाएं, एक स्वर में रोएं। हिन्दी के खजाने में 'कैलाश' का गौरव, 'ताजमहल' की सिसकी और 'चित्तौड़' की याद होनी चाहिये। यहां 'गंगा' की रेती चमके, 'यमुना' की छबि लहराए और 'नर्मदा' अपने आंसू से पत्थरों को धोती रहे। बर्मा के मन्दिर कितने ऊंचे हैं, अजन्ता की गुफा-ओं की रेखाओं में किस की आत्मा खड़ी है और बुद्ध गया के 'बोधिसत्व' की शाखायें कहां कहां फैली हैं—इन सारी चीजों को हम अपनी राष्ट्र भाषा से जान सकें। आगरे की मोती मस्जिद, अमृतसर के स्वर्णमन्दिर और नेपाल के पशुपतिनाथ को राष्ट्रभाषा अभी भी याद करेगी तो कोई बहुत देर नहीं हुई है। निष्ठुर काल जिस समय हमारी महान संस्कृति को अपहरण कर ले जा रहा था उस समय उस का एक छोटा सा टुकड़ा आज का हंसता हुआ 'नेपाल' है। उसके उन्मुक्त संगीत से अब हमारी हिंदी अलग नहीं रह सकती। गंगा और बागमती में कोई बहुत अन्तर नहीं है। प्रेम ही ईश्वर है, ईश्वर ही प्रेम है और राष्ट्रभाषा हिन्दी इसी पुण्य प्रेम की परिभाषा है।

*यह भाषण किगत १५ जून को हिमाचल-हिन्दी-भवन दार्जिलिंग के चतुर्थ वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री गोपालसिंह नेपाली ने दिया था।

धारावाही उपन्यास

अपराधी कौन ?

(ले०—श्री देव)

उम्मेद का अतीत जीवन बहुत बड़ा नहीं है। उसकी वृद्ध माता ने ही उसे पाला था। शिक्षा न पाकर गली के कुछ शरारती लड़कों की संगत में शरारतें करना सीख गया था। एक दिन फेरी वाले को मारगिर्या लूटने के कारण पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसे जेल में भी तीन मास रहना पड़ा। वहीं बेंतों का कठोर दंड भी मिला। जब जेल से वह रिहा हुआ, उसकी माँ मर गयी थी। अपने एक दोस्त बशीर के बाप की मदद से वह मिल में भरती होगया, जहां अपनी लगन और परिश्रम से वह लाइन जाबर होगया।

कुछ मजदूर युवती श्यामा से कुछ गुण्डे शरारत करने लगे। लेकिन उम्मेद के बीच में पड़ने से वे भाग गये। उम्मेद उसकी घायल माँ को उसके घर पहुंचा गया। श्यामा पर आसक्त मिल का खजांची मि० भरूचा भी सहानुभूति दिखाने के लिये घर पहुंचा और उसकी माँ को १०) रु० देने लगा।

—सम्पादक

(अंक ३४ से आगे)

फिर श्यामा की ओर देखकर कहा 'श्यामा, देखो, तुम्हारी माँ इस बात को नहीं समझती, कारखाने वाले अपने मजदूरों की तकलीफ में मदद दिया करते हैं, उस लेने में कोई हर्ज नहीं''

श्यामा ने समझा कि माँ सचमुच बूढ़ी होगई। इतना भी नहीं समझती कि मजदूरों की मदद कारखाने वाले किया ही करते हैं। उसे भरूचा ने मां से अधिक अक्लमन्द समझा, यह बात भी उसे अच्छी लगी। उसने भरूचा की बात का कोई उत्तर न देते हुये माँ से कहा 'माँ, कारखाने की ओर से मदद लेने में कोई हर्ज नहीं। यह तो हमारी मेहनत का ही इनाम है।'

माँ चुप होगई। वह श्यामा को अपने से समझदार समझती थी। बुढ़ापे में भोली मातायें अपने बच्चों की समझदारी पर प्रायः अत्यधिक विश्वास करने लगती हैं। सुखदेई भी भोली माता थी। भरूचा ने आगे बढ़ कर १०) का नोट श्यामा के हाथ में दे दिया।

श्यामा ने कृतज्ञता भरे नेत्रों से उसकी ओर देखा, और फिर देगची में कड़छी चलाने लगी।

भरूचा फिर हालचाल दर्याफ्त करने की सूचना देकर, उन्मत्त सी आँखों से श्यामा की ओर देखता हुआ वहां से चला गया।

(५)

सुबह मिल में काम हो चुकने पर उम्मेद सीधा सुखदेई के घर पहुंचा। सुखदेई के शरीर में कई स्थानों पर पीड़ा विद्यमान थी। श्यामा घर को झाड़ बुहार कर चूल्हे में आग सुलगाने का यत्न कर रही थी। उम्मेद ने बाहिर से दरवाजा खटखटाया, तो श्यामा ने पूछा "कौन है ? उम्मेद ने जवाब दिया "मैं हूं उम्मेदसिंह'। श्यामा उम्मेद को तो पहिचान गई थी, परन्तु नाम से अपरिचित थी। बोली "कौन उम्मेदसिंह। उम्मेद ने कहा वही जो कल तुम लोगों को घर पहुंचा गया था।

जब से उम्मेद वहां से गया, श्यामा के दिल में तब से बराबर उसका एक अस्पष्ट सा चित्र बना रह था। रह रह कर उसका स्मरण आता था। कारखाने के द्वार पर का सारा दृश्य, बदमाशों की शरारत, उम्मेद का बीच में कूदना, और माँ बेटी की रक्षा करना, फिर घर तक पहुंचाना, और वहां सहानुभूति पूर्ण स्निग्ध दृष्टि से श्यामा को देखना—यह सब बातें चल चित्रों की तरह श्यामा के हृदय पट पर घूम जाती थीं और वह उन्मत्त सी और विह्वल सी होकर दरवाजे की ओर देखती, और लम्बा सांस लेकर रह जाती। ऐसा अनुभव उसने अपने जीवन में पहली ही बार किया था। दो साल तक गृहस्थी रही और पति का प्रेम भी पाया, परन्तु वह प्राप्त धन का उपभोग था। अप्राप्त और शायद अप्राप्य परन्तु मनचाही वस्तु के लिये जो एक घोर तृष्णा पैदा होती है, वह तीव्रता और घनता में अपना साथी नहीं रखती। श्यामा भी अपने हृदय में एक तीव्र और घनी अधीरता का अनुभव कर रही थी।

परन्तु उम्मेद का शब्द सुन कर श्यामा स्तब्ध सी रह गई। कुछ न बोल सकी। माँ जाग रही थी। उसने क्षीण स्वर में श्यामा से कहा 'अरी सुनती नहीं है क्या' दरवाजे पर कल वाला बाबू खड़ा है। दरवाजा क्यों नहीं खोलती ?' इस ने श्यामा का संकोच तोड़ दिया। वह झटपट उठी और दरवाजे का पल्ला खोलती हुई बोली सांकल तो बन्द नहीं था आप आ क्यों नहीं गये ?'

उम्मेद अन्दर आ गया। उसके दुख की दशा भी श्यामा जैसे ही थी। वह भी अपने हृदय को श्यामा से शून्य नहीं पा सका था। उठते बैठते और काम करते, सभी समय उस धूलि-धूसरित सांवले गोल चेहरे की छाई उम्मेद की आँखों के आगे घूमती रही थी। दोनों के भावों में भेद इतना ही था कि जहां श्यामा के चिन्तन में उत्सुकता के साथ भय या संकोच मिला हुआ था, वहां उम्मेद का चिन्तन दृढ़ उत्सुकता से मिश्रित था।

उम्मेद की दृष्टि अन्दर आते ही श्यामा के चेहरे पर पड़ी। आज उसे वह चेहरा कल से भी अधिक सुन्दर और आकर्षक प्रतीत हुआ। कल चेहरे पर गर्द थी बाल बिखरे हुए थे और कपड़े अस्त-व्यस्त थे। आज सावधान दशा में श्यामा बहुत ही भली मालूम होती थी। श्यामा ने भी उम्मेद को देखा। उसके दिल को क्या हो रहा था, उसे वह स्वयं नहीं जानती थी। उसे केवल इतना ही अनुभव हो रहा था कि वह उम्मेद की ओर निरन्तर देखना चाहती है, पर देख नहीं सकती। नीचे आँखें किये ही उसने कहा—

"आइये, बैठिये ' माँ आप को बहुत याद करती थीं।"

उम्मेद ने सुखदेई की खाट के सिरहाने पड़े हुये एक लकड़ी के सन्दूक पर बैठते हुए कहा।

"मैं भी तो माँ को कल से याद कर रहा हूं। एक मिनट भर के लिये भी आप लोगों का ध्यान दिल से नहीं हट सका। हां—तो माँ, तुम्हारा दर्द कैसा है ?"

"अभी तो वैसा ही है, बेटा ! बूढ़ा शरीर ठहरा पुरानी हड्डियों में जान ही कितनी है ? भला हो तेरा, जो तूने हमारी सुध तो ली नहीं तो हम लोगों का और कौन है ?

"ऐसा न कहो माँ, तुम शीघ्र ही ठीक हो जाओगी। आज मैं मालिश के लिए एक दवा भी लेता आया हूं। इसके मलने से दर्द जाता रहेगा, यह कहते हुए उम्मेद ने कोट की जेब से एक शीशी निकालकर श्यामा के हाथ में दे दी। श्यामा ने ले ली। इस लेन देन में स्पर्श से श्यामा के शरीर में बिजली सी क्यों दौड़ गई, इसे वह भी समझ न सकी।

थोड़ी देर तक उम्मेद सुखदेई से बातें करता रहा। श्यामा देखने में तो घर के कामकाज में लग गई, परन्तु उसका ध्यान उम्मेद की ओर ही लगा था।

वह न देखती हुई भी देख रही थी, न सुनती हुई भी सुन रही थी। उम्मेद सुखदेई से कह रहा था—

'देखो मां, मुझ से कोई बात छुपा न रखो। क्या मुझे मालूम नहीं कि तुम लोग किस गरीबी से गुजारा कर रही हो। तुम्हारा काम कैसे चलेगा। तुम्हें खर्च के लिये मुझ से लेने में ऐतराज न करना चाहिये। मुझे तुम अपना ही बेटा समझो।"

सुखदेई ने उत्तर दिया।

"बेटा, ईश्वर तेरा भला करे। तूने मुझे माँ कहकर मेरे दिल को ढारस दिया। मैं गरीब हूं। मेरी बेटी जन्म की दुखिया है। बेचारी ने दो दिन की चाँदनी देखी थी, फिर अन्धेरी रात होगई। जब से श्यामा के चचा परलोक गये, तब से मुझे कोई हितू न मिला। तेरे प्रेम ने एक ही दिन में मेरा दिल मोह लिया है। बेटा, मैं तुझसे संकोच क्यों करूंगी ? कल मैंने रुपया लेने से इन्कार कर दिया था, क्योंकि इस गरीबी में भी मैंने किसी दूसरे के सामने हाथ नहीं पसारा पर अब तो मैं तुझे दूसरा नहीं समझती। तूने मुझे माँ कहा है तो मैं भी बेटा जानती हूं।'

'तब तो तुम्हें खर्च के लिये कुछ लेने में ऐतराज न होगा ?'

'पर बेटा, कल शाम, वह जो मिल का पारसी बाबू है, वह आया था, और १०) का नोट दे गया था। वह मेरे पास वैसा के वैसा धरा है। वह कहता था कि १०) मालिक ने भेजे हैं। अरी श्यामा दिखाना वह नोट '

पारसी बाबू के नाम पर उम्मेद के माथे पर त्योरी चढ़ गई।

(क्रमशः)

विद्यार्थियों की फैशनपरस्ती

—:*:—

(ले०—आचार्य प्र० च० राय)

—:*:—

"हमारे अधिकारियों के दिमाग के सामने कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड होते हैं और वे इस देश में उसको स्थापित करना चाहते हैं। विद्यार्थियों के पास टैनिस खेलने के लिये ब्लेजर्स और सुथने होने चाहिये और क्रिकेट के लिये फ्लालेन का सूट चाहिये ही। उनकी शृंगार-सामग्री में बहुत अधिक खर्च हो जाते हैं। ऐसे वातावरण में पलकर प्रत्येक विद्यार्थी 'विदेशी लुटेरों का प्रचारक' बन जाता है।

तरुण विद्यार्थी और उनके

भारत में कालेज के विद्यार्थी को औसतन चालीस-पचास रुपये मासिक खर्च के लिये दिये जाते हैं। पठित होने के कारण उसे एक विशिष्ट व्यक्ति समझकर उसके साथ वैसा ही बर्ताव किया जाता है। उसके माता-पिता अपने को जीवन की अनावश्यक वस्तुओं से भी वंचित रखकर या अपने घर द्वार या जमीन को गिरवी रखकर भी उसे खर्च के लिए प्रति मास रुपये भेजते रहते और स्वयं घर के छोटे से छोटे काम करते रहते हैं। जब छुट्टियों के दिन होते हैं, माता पिता को आशा इन युवकों को तथाकथित मानसिक कार्य करने को तो कुछ रहता नहीं इसलिये ये गप्प उड़ाने, ताश खेलने और कोई नाटक खेलने की व्यवस्था करने में ही अपना मूल्यवान् समय नष्ट कर देते हैं या दोपहर के बाद खूब सोने में दिन बिता दिया करते हैं। परन्तु प्राचीन काल में भारत के विद्यार्थियों को आश्रम में गुरु से शिक्षा प्राप्त करने के समय गौ की सेवा करनी पड़ती, ईंधन एकत्र करना पड़ता और खेती के कामों की देखभाल करनी पड़ती थी—थोड़े में यों समझिये कि उस समय विद्यार्थी को शिक्षा प्राप्त करने के लिये उपार्जन करना पड़ता था।

विद्यार्थियों का अन्धाधुन्ध खर्च

होस्टल और खासकर वे होस्टल जो गवर्नमेण्ट के प्रबन्ध में हैं, स्वदेश विरोधी भाव के प्रसार के खास स्थान बनने लगे हैं। वह बुरी घड़ी थी, जब लार्ड हार्डिञ्ज ने कलकत्ते के प्राइवेट कालेजों को करीब पन्द्रह लाख रुपये ऐसे शाही होस्टल बनवाने के लिए दिये थे जिन में आधुनिक सभ्य जीवन के सभी सुभीतों की व्यवस्था हो यद्यपि उन्होंने निस्सन्देह अत्यन्त उत्तम विचार से ही वैसा किया था। इन होस्टलों में रहने वाले विद्यार्थी का पैंतालीस रुपये महीने से कम में काम ही नहीं चल सकता। अधिकांश विद्यार्थी तो इससे भी कहीं अधिक खर्च किया करते हैं। कलकत्ते में रहने वाले मेरे कतिपय मित्र मुझे यह विश्वास दिलाते हैं कि पंजाब में और लाहौर शहर में उन्हें अपने लड़कों को पढ़ाने में सौ रुपये महीने तक बल्कि इससे भी अधिक खर्च करना पड़ता है और वे विद्यार्थी अपने माता-पिता की खाल नोचते हैं। मैं स्वयं कई बार वहां गया हूं और उनके कथन को सत्य बता सकता हूं। हमारे अधिकारियों के दिमाग के सामने कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड होते हैं और वे इस देश में उसको स्थापित करना चाहते हैं। विद्यार्थियों के पास टैनिस खेलने के लिए ब्लेजर्स और सुथने होने चाहिये और क्रिकेट के लिए फ्लालेन का सूट चाहिये ही। उनकी शृंगार सामग्री में बहुत अधिक खर्च हो जाते हैं। सच पूछिये तो ऐसे नाशक वातावरण में पलकर प्रत्येक विद्यार्थी विदेशी लुटेरों का प्रचारक बन जाता है।

युनिवर्सिटी से हानि

पांच वर्ष पहले जब मैं पेरिस में था, जांच करने पर मालूम हुआ कि वहां पोलैंड तथा निकट के अन्य देशों के हजारों विद्यार्थी हैं जो इतने थोड़े खर्च में पढ़ते और रहते हैं, जिसे जानकर आश्चर्य होगा। आज भी यूरप की एक सब से पुरानी प्रेग की युनिवर्सिटी में, जहां सर्वोत्तम वैज्ञानिक एवं साहित्यिक शिक्षा प्रदान की जाती है, विद्यार्थियों को बहुत ही थोड़े खर्च में काम चलाना पड़ता है। सौ में चालीस विद्यार्थियों को प्रति मास तीन पौंड अर्थात् ४२) में काम चलाना पड़ता है, और अड़तीस प्रति सैकड़ा विद्यार्थियों की गरीबी के कारण फीस माफ है। विद्यार्थी को वहां लगभग दो पौंड ४ शिलिंग अर्थात् तीस रुपये मासिक में खान, कपड़े और रहने का प्रबन्ध करना पड़ता है। तब यदि बर्नार्डशा आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज को 'सभ्यताभिमानी गवार तैयार करने के स्थान' कहते और उनका वश चले तो वे इन दोनों युनिवर्सिटियों को भूमिसात् कर दें, तो इसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है। मि० रैम्जे मैकडानल्ड यदि साधिकार यह कहते हैं कि "मेरा विश्वास है कि युनिवर्सिटी का जीवन अधिकांश आदमियों को लाभ की अपेक्षा हानि अधिक पहुंचाता है', तो इस में भी आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

कमाऊ पूतों की आमदनी क्या है?

अब यह देखिये कि एक ग्रेजुएट में औसतन कितना पैदा करने की क्षमता है। उस दिन मैंने एक बड़े भारी अनुभवी प्रोफेसर के० टी० शाह से पूछा था कि बम्बई में ग्रेजुएटों की आमदनी का औसत क्या है? उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि वह पचीस रुपये मासिक से अधिक नहीं हो सकती। मद्रास और कलकत्ते के ग्रेजुएटों की भी आमदनी मुझे अंदाज में इतनी ही मालूम पड़ती है। जान पड़ता है कि पंजाब प्रांत में दूध और घी की नदियां बहती हैं, नहीं तो वहां ऐसी अवस्था कदापि न होती।

ऐसी शिक्षा को धिक्कार है

ऐसी शिक्षा और संस्कृति को धिक्कार है जो आपको विदेशी मिलों के पतले कपड़ों के कारण स्वदेश के बने कपड़ों का तिरस्कार करना सिखाती है! उस शिक्षा और संस्कृति को धिक्कार है, जो आपको यह समझना सिखाती है कि हुक्का और फर्शी बर्बरता के चिन्ह हैं! अगर आप सिगरेट पीने की जिद करते हैं, तो देशी सिगरेट बीड़ी क्यों नहीं पीते? परन्तु आप पियेंगे कैसे, क्योंकि बीड़ी में तम्बाकू का जो चूरा है वह तो असली स्वदेशी है और स्वदेशी पत्ते के भीतर लपेटा हुआ है, जब कि सिगरेट के भीतर विदेशी नशा है, उसका रंग सुनहला है तथा वह पतले विदेशी कागज में लपेटा हुआ है। इस तरह आप केवल विदेशी सिगरेट को पीकर ही देश का दो करोड़ रुपया प्रति वर्ष विदेशों को फेंक दिया करते हैं। मैं गोंदिया और उस के पास-पड़ोस के बीड़ी के कुछ कारखाने देखने गया था। हमें वहां बताया गया कि मध्य प्रदेश के इस ऊसर और शुष्क भाग में लगभग पचास हजार पुरुष, स्त्रियां और बालक प्रतिदिन एक आने से दो आने तक पैदा कर लिया करते हैं। इस तरह यह विशुद्ध घरेलू व्यवसाय आध लाख भूखे आदमियों के मुंह में रोटी का टुकड़ा डालने का साधन बन रहा है। परन्तु इन बीड़ियों को खरीदने वाले कौन हैं? उच्च पदाधिकारी और सफल वकील इन्हें नहीं खरीदते और न संस्कृति की शेखी बघारने वाले कालेज में शिक्षित नौजवान ही इन्हें लेते हैं इन बीड़ियों के खरीदार तो कुली गाड़ीवान तथा इन्हीं की श्रेणी के गरीब लोग ही हैं। तथाकथित शिक्षित लोग तो ऐसे मुफ्तखोर हैं, जो जन-साधारण के गाढ़े पसीने की कमाई के मत्थे मोटे होते हैं और देश का धन विदेशों को ढोये जाने के साधन बन रहे हैं।

विद्यार्थियों की फजूलखर्ची

विद्यार्थी जब किसी गांव से शहर में पहुंचता है, वह अपने साथियों की नकल करता है और बहुत खर्चीला स्वभाव बना लेता है। अब तो उसके कपड़े साधारण धोबी से नहीं बल्कि डाइंग एण्ड क्लीनिंग कम्पनियों से धुलने चाहिये, उसके बाल साधारण नाई द्वारा नहीं बल्कि तड़क-भड़क वाले हेयर कटिंग सैलून—बाल काटने वाली दुकानों में कटने चाहिये। फिर तीसरे पहर वह 'रस्टोरेण्ट' नाम के उन होटलों में जलपान करने जाता है, जो शहर के भारतीय विभागों में अधिकाधिक संख्या में खुलते जा रहे हैं। शाम को वह सप्ताह में कम से कम दो बार सिनेमा (बायस्कोप) देखने जाता है। वह सहज ही भूल जाता है कि इन सब खर्चों को जुटाने के लिये उसके माता पिता को अपने आप कितना कष्ट सहना पड़ता है। जो विद्यार्थी इस तरह अपने माता-पिता से खर्च के लिये रुपये ऐंठता और वे रुपये इन कामों में खर्च करता है, उसकी स्वार्थपरता तो नीचता की हद तक पहुंचती है। अवश्य विद्यार्थी का अपने अभिभावकों से अपने खर्च के लिये रुपये लेना उचित हो सकता है, किन्तु वह खर्च इतना कम होना चाहिये, जिस से और कम किया ही न जा सके।

दानवीर कार्नेगी

जो विद्यार्थी अपने अभिभावकों को निचोड़ने में कुछ भी हानि नहीं समझते, उन्हें ऐंड्रू कार्नेगी का यह

(शेष पृष्ठ १८ पर)

स्वास्थ्य-सुधार

वर्षा ऋतु के नियम

(लेखक—आयुर्वेदाचार्य पं० वासुदेव मेहता शास्त्री, उज्जैन)

———:———



लेखक

भारतीय आरोग्यशास्त्र ने छः ऋतुओं के पृथक् २ आहार विहार के नियम बनाये हैं। इनके अनुसार वर्तन रखने से ऋतु-परिवर्तन रोग नहीं होने हैं। आजकल हरेक मौसम में हैजा, ज्वर आदि मोसमी रोगों का प्रादुर्भाव होने लगा है। अतः स्वास्थ्य संरक्षण के लिये ऋतुओं के पृथक् २ नियमों का पालन ऋतु विकारों से बचाता है प्रस्तुत लेख में वर्षा ऋतु के आहार विहारों के नियम का प्रतिपादन किया गया है।

वर्षा ऋतु आषाढ़ एवं श्रावण मास में आती है। वस्तुतः आषाढ़ से आश्विन तक वर्षा ऋतु का ही आहार विहार रहता है। इसी को चातुर्मास्य कहा है। इस ऋतु में विशेष मौसम बदलता है, नवीन जल वायु शरीर में प्रवेश होकर विकार उत्पन्न करते है, इस ऋतु में वायु का प्रकोप अधिक रहता है। इस प्रकार इस ऋतु मे ग्रीष्म ऋतु में अधिक ठंडे शरबत आदि का अधिक उपयोग होने से इस ऋतु मे वायु-पित्त, कफ इन तीनो दोषों का परस्पर में युद्ध हुआ करता है। इस लिये इस ऋतु में खास तौर पर शुद्ध आहार विहार करना चाहिये।

पालनीय नियम

१—इस ऋतु में वायु के प्रकोप होने से तथा वर्षा के संक्लेद से सामान्यतः अग्निमंद होकर मलावरोध आदि होजाता है। अतः इस ऋतु में विशेष कर अग्निवर्धक, पाचक, वायुनाशक पदार्थों का भक्षण करना चाहिये।

२—यदि हो सके तो इस ऋतु में प्रारम्भ में ही एक हल्का सा जुलाब ले लेना चाहिये, खाने में पुराने अन्न का व्यवहार करना चाहिये।

३—इस ऋतु में आहार में दाल, पतली रोटी, दलिया, खिचड़ी क्षारयुक्त पदार्थ भक्षण करने चाहिये। जिनको कब्ज किंवा अग्निमंद हो, चावल का उपयोग न करना चाहिये।

४—मूंग की दाल के पानी में मठा मिलाकर नित्य पीना बड़ा लाभदायक है। इस ऋतु में दही अधिक अनुकूल होता है परन्तु उसमें नमक मिला कर उपयोग करना चाहिए, सामान्यतः लोगों का ख्याल है कि दही ग्रीष्म ऋतु में फायदा करता है। और वर्षा में हानि करता है। परन्तु यह भ्रम है दही खाने मे शीतल, परन्तु पाचन होने ही पित्त उत्पन्न करके वायु को शांत करता है इसी में शक्कर आदि मिलाने से इसको गर्मी का गुण परिवर्तित होजाता है। इस ऋतु में दही वायु को शांत करता है।

५—इस ऋतु में कुवे, तालाब, नदी आदि में नवीन जल आजाता है और वह जल पाचन में भारी होता है, अतः जल को गरम करके छान करके इस ऋतु में जल पीने से हैजा, अतिसार कब्ज आदि विकार नहीं होते हैं। इस ऋतु में जल थोड़ा ही पीना चाहिये।

६—इस ऋतु में आम नीबू आदि खट्टे पदार्थों का अचार मुरब्बा अन्य ऋतुओं की अपेक्षा में अधिक अनुकूल पड़ता है इसलिये प्रकृति तथा स्वरुचि अनुसार अचार खाना चाहिए, विशेषकर जिस दिन वर्षा का अधिक जोर हो, आकाश मेघाच्छन्न हो, उस दिन विशेष कर हल्के, पाचक आहार-क्षार अम्ल पदार्थ खाना चाहिये।

७—वर्षा ऋतु में क्षार से बने हुये पदार्थ यथा—पापड, कचरी, मुरब्बे तथा घृत तैल के बने हुए पदार्थ खाना चाहिये। इस ऋतु में तक्र का सेवन सेंधानमक, कालीमिर्च हींग आदि मिला कर करना चाहिए, इससे अग्नि दीपन होती है। वायु शांत होती है, पाचन होता है।

८—इस ऋतु में पान का उपयोग करना चाहिए। पान पाचक रस की उत्पत्तिकर्ता, अग्निदीपक, वायुशामक तथा कृमिनाशक होता है।

अपालनीय नियम

९—इस ऋतु में वायुकारक, रूक्ष, अत्यन्त शीत, भारी, दुष्पाच्य आहार न करना चाहिये। क्योंकि इस ऋतु में स्वभावतः अग्निमंद हो जाती है। अग्निमंद होने से भूख न लगना, पाचन न होना, मलावरोध, भारीपन सुस्ती आदि होजाते हैं।

१०—शीतल वायु से बचना चाहिए, छाती को ढकी हुई रखना चाहिए, नदी कुए, तालाब आदि का जल न पीना चाहिये, गरम करके पीना चाहिये, बरसात की कीचड़ वाली गीली जमीन पर नंगे पैर कभी नहीं फिरना चाहिए, भीगे कपड़े न पहनना चाहिए, अधिक वर्षा में न फिरना चाहिए, सामने की बौछार से बचना चाहिए। घर के सामने गन्दगी मैलापन न होने देना चाहिए बासी अन्न, बासी जल न पीना चाहिये।

११—दिन में सोना, अधिक व्यायाम करना, मलीन वस्त्र पहरना, धूप सेवन, स्त्री-सहवास (१५ दिन के अन्तर से) जागरण करना अधिक भोजन करना, खुले में सोना, मिठाई, भुट्टे, ककड़ी, चरपर, तीक्ष्ण पदार्थ न खाना चाहिये, क्योंकि यह सब कारण हैजा, अजीर्ण, पेट के विकार तथा कृमि उत्पन्न करने वाले हैं। साधारणतः गरम ताजा, स्वच्छ, हलका भोजन करना चाहिए, भूख रख कर भोजन करना चाहिए। सप्ताह में एक दिन लंघन कर लेना चाहिए। अदरख पोदीना, नीबू, कालीमिर्च, जीरा सेंधानमकयुक्त चटनी भोजन मे रखने से सामान्य स्वास्थ्य रक्षित रहता है और ऋतु-जन्य विकार नहीं होते हैं।

इस ऋतु के अनुकूल कुछ प्रयोग

१. इस ऋतु में अदरख, सेंधानमक का भुना हुआ चूर्ण भोजन के प्रथम तथा मध्य में लेने से वायु शांत होता है, अग्नि दीप्त होती है, भूख खूब लगती है, कार्य बढ़ाती है।

२. प्रसिद्ध हिंग्वष्टक चूर्ण—सौंठ, कालीमिर्च, पीपल, जीरा सफेद, जीरा स्याह, अजवायन सेंधानमक एक २ तोला लेकर चूर्ण कर उसमें घृत में भुनी हुई हींग २ माशा मिला

पाचक, चूर्ण भोजन के साथ थोड़ा २ चाटने से वायु का जोर पेट शूल हैजा, अजीर्ण, अपाचन, भारीपन आदि दूर करता है। इस चूर्ण का इस ऋतु में नित्य भोजन के साथ उपयोग करने से हैजा होने का भय नहीं रहता है।

३. प्रसिद्ध पाचक स्वादिष्ट चूर्ण—सोंठ, कालीमिर्च, सौंफ, जीरा सफेद जीरा स्याह, काला नमक, सेंधानमक पीपल यह सब समान भाग लेकर तथा मिश्री दूनी मिला कर उसमें ६ माशा नीबू का सत्व, पीपरमेंट २ माशा मिला कर शीशी में भर लेना चाहिये। यह अत्यन्त स्वादिष्ट रुचिकर सरल सस्ता चूर्ण है यह चूर्ण अग्नि दीपक, आहार पाचक रोचक, मल शोधक, वायु को जोर दूर करके वायु को पेट में एकत्रित न होने देकर बाहर फेंकता है।

४. प्रसिद्ध गन्धक वटी—घृत में तथा दूध में शोधित आमलासार गंधक ५ तोला, सोंठ ५ तोला, सेंधानमक ३ तोला, इनको पीस कर नीबू के रस की भावना देकर चने के प्रमाण गोली बना लेना चाहिए, यह गोलियां वर्षा ऋतु में अग्निदीपक पाचक शोधक एवं रुचिकर हैं और वायु और शूल को दूर करती हैं।

५. इस ऋतु के अनुकूल प्रसिद्ध शास्त्रोक्त औषधियां अग्निकुमार रस संजीवनी वटी, अजीर्णकंटक रस, कुमार्यासव, द्राक्षासव, शंखद्राव लवण भास्कर चूर्ण, हिंग्वाष्टक चूर्ण, शंख, कपर्दिका भस्म आदि लेने चाहिए।

ऋतु रोगों का उपचार

१. अजीर्ण—अधिक जल पान से, असमय भोजन करने, अधिक भोजन करने से, मल मूत्र वेग रोकने से, जागरण से, कच्चा बासा, रूखा, ठंडा अस्वच्छ भोजन करने से अजीर्ण होजाता है। इसके लक्षण ये होते हैं—पेट में दर्द, पेट फूलना, खट्टी डकार आती, बेचैनी अनेक प्रकार की वायु की पीड़ा, वमन आदि मुख्य लक्षण हैं।

उपचार—हिंग्वाष्टक चूर्ण गरम जल से २ माशा लेना। एक नीबू को चीर कर उसकी दोनों फांकों में सांभर नमक, सोंठ और थोड़ी सी हींग भरकर अंगार पर गर्म करना। जब गरम होजावे, तब कुछ ठंडा होने पर चूसने पर अजीर्ण दूर होता है।

२. हैजा—इसके भी वही कारण होते हैं जो अजीर्ण के हैं। बेहोशी दस्त सफेद रंग के बिलकुल पतले, पेट में सुई चुभने की सी पीड़ा,

बेचैनी पैरों में वायु के पठन होना, सिर दर्द यह हैजे के मुख्य लक्षण हैं। हैजे के उपद्रव—नींद का नाश मूत्र का बन्द होना प्यास, बेहोशी, यह उपद्रव हैं।

उपचार—सुधांशु—पीपरमैंग २ माशा, अजवायन सत कपूर, २ २ माशा एकत्र एक शीशी में भर दे, द्रव रूप हो जायगा। २ ४ बूंद २-२ घन्टे में जल में देता जावे उपद्रव सहित हैजा शांत होता है। लशुन को अर्क १ तोला २-२ घंटे से पिलाना चाहिये। लौंग ६ माशा, इलायची ६ माशा, जायफल अफीम आधा आधा माशा इन सब का चूर्ण ६ माशा अन्दाज में गरम जल से देने से दस्त वमन बन्द होता है। जब रोग बिलकुल न हो, रोगी को अन्न न देना चाहिये।

३ गुल्म—वर्षा ऋतु में स्त्रियों व पुरुषों को गुल्म (वायगोला) का जोर होता है पेट में वायु की गांठ फिरती है दर्द होना है डकारें आती हैं, दस्त बन्द हो जाता है आंतो में वायु बोलता है अन्न पर अरुचि, वमन आदि लक्षण होते हैं।

उपचार—सजीवना वटी २ गो० उष्ण जल से देने में गोला शांत हो जाता है। हिंगाष्टक चूर्ण जल में देने से शांत होता है, छोटी पीपल का चूर्ण १ तोला यव क्षार ३ माशा, अदरख का रस २ तोला मिला कर आधा आधा सुबह शाम लेने मे गोला शांत होकर आराम होता है।

४ शीत ज्वर—(मलेरिया) शीत से इस ऋतु में एक दम ठन्ड लगकर बुखार आता है। मिथ्याहार—विहार में यही शीतज्वर तिजारी चौथिया हो जाते हैं।

उपचार—करंज के बीज का चूर्ण १ माशा गरम जल में लेने से शीत में आया हुआ ज्वर, तिजारी, चौथिया तत्काल शांत करता है, कुनैन के समान लाभ करता है।

५ कब्ज—इस ऋतु में शीत के क्लेद और वायु की वृद्धि में बहुधा कब्ज हो जाता है पेट भारी हो जाता है ग्लानि रहती है। नीचे लिखा चूर्ण लेने मे एक दस्त हो जाता है।

उपचार—सकारपचक चूर्ण—सोंठ, सौंफ, सेंधानमक सनाय, हरडे समान लेकर—चूर्ण कर ४ माशा शाम को गरम जल में लेने से १ दस्त साफ हो जाता है

———

विकार पैदा होजाता है। अत्याशा की ओर जो ध्यान जाता है, वह तो सच में आपत्तिजनक बात है।

———

विद्यार्थियों की फैशनपरस्ती

(पृष्ठ १६ का शेष)

वाक्य पढ़ कर लाभ उठाना चाहिये—'वह बड़ा कठिन समय था, जाड़े में मुझे पिताजी को अन्धेरे में उठना और कलेऊ करना उजाला होने के पहले हो कारखाने में पहुंच जाना और बीच में थोड़ा देर के लिये जलपान की छुट्टी के सिवा अन्धेरा हो जाने तक काम में जुटे रहना पड़ता था। वे दिन्ट मुझे भार मालूम पड़ते थे और काम में मुझे कुछ खुशी नहीं मालूम पड़ती थी। लेकिन जब मैं यह समझने लगा कि मैं अपने संसार—अपने घर के लिए कुछ कर रहा हूं, तब इसमें कुछ-कुछ प्रसन्नता मालूम पड़ने लगी। उस समय से अब तक मैं करोड़ो पैदा कर चुका हूं, किन्तु उन करोड़ों से मुझे वैसी प्रसन्नता नहीं प्राप्त हुई, जैसी प्रथम सप्ताह की कमाई में मालूम हुई थी। अब मैं अपने घर का सहायक था, रोटी कमाता था और अपने माता-पिता के ऊपर भार नहीं था।' अपने उद्योग से करोड़ों की कमाई करने वाले इस महापुरुष ने परोपकार के कामों में पतीस करोड़ डालर अर्थात एकसौ करोड़ रुपये दान दे डाले थे।

जिस समय मैं लन्दन में रहता था लगभग उसी समय एच० जी० वेल्स भी वहां रहते थे। उन्हें साउथ कनिंगसिंगटन के साइन्स के नार्मल स्कूल में मुफ्त शिक्षा प्राप्त करने का सुभीता प्राप्त था और निर्वाह के लिए सप्ताह में एक गिनी मिलती थी। पढ़िनबर्ग में (१८८७-८८) मैं काफी आराम के साथ एक सौ पौंड वार्षिक में अपना निर्वाह कर सकता था और कभी कभी घर में भी कुछ पहुंच जाता था। लंदन में वहां जीवन निर्वाह का खर्च बहुत ही कम था।

सिनेमा देखने वालों को उसका नशा सा हो जाता है। ऐसे लड़के भी देखने जाते हैं, जो जलपान न करके सिनेमा के लिये पैसे बचाया करते हैं। कालेज के कितने ही विद्यार्थी ठीक से खाना न मिलने के कारण कष्ट पाते हैं, पर उन्हें सिनेमा देखने को मिलना ही चाहिये। सिनेमा के तमाशे विद्यार्थियों के पैसे खर्च करा उन्हें दुखी तो बनाते ही हैं, साथ ही उनके नैतिक और शारीरिक स्वास्थ को भी हानि पहुंचाते हैं। उन्हे आदमियों से भरे हुये हाल में घंटों बन्द रहना पड़ता है और नजर पर जोर पड़ने से उसमें भी

जर्मन व्योमयान-हिंडनबर्ग

(ले०—श्री शंकरदेव विद्यालंकार)

[अमेरिका, इंगलैंड और फ्रांस जलयानों को बनाने वाले राष्ट्रों में सब से आगे हैं। हवा में उड़ने वाले जहाजों को बनाने के परीक्षणों में ये देश निष्फल रहे हैं। इन देशों में बने हुए सभी हवाई जहाज नाश को प्राप्त हो चुके हैं]।

* * * *

[हवाई जहाजों की सफलता का विचार सब से पहिले एक जर्मन विद्वान के मस्तिष्क में आया था। काउन्ट जेपलिन का यह स्वप्न महायुद्ध में थोड़ा बहुत मूर्त हुआ था। सन् १९२७ में वह पूर्णरूप से मूर्त हुआ। इसी वर्ष वह विश्व-विख्यात जर्मन हवाई जहाज ग्राफ जैपलिन तैयार हुआ]।

छः छः वर्षों तक बिना टूटे फूटे तथा बिना किसी आकस्मिक घटना का सामना करके अनेक प्रकार की हवाई यात्राओं के उपरान्त उसी जाति का, पर उससे भी बढ़िया एक और जैपलिन तैयार हो रहा है। उसका निर्माणकार्य लगभग समाप्ति पर है।

इस में सन्देह नहीं कि जर्मनी ने हवाई-जहाजों के निर्माण में असाधारण उन्नति की है। भिन्न २ हवाई-जहाजों को अनेक प्रकार के आकस्मिक आघातों से जूझना पड़ा है—यह बात समय समय पर अखबारों में पढ़ने में आती रहती है। परन्तु जर्मनी का विश्वविश्रुत व्योमयान 'जैपलिन' छः वर्षों से सैकड़ों यात्राएं कर चुका है और हजारों मन की डाक को उठाता रहा है।

ग्राफ जैपलिन ने एक बार भी आकस्मिक आघात नहीं खाया है। छः वर्ष के समय के अन्दर इसके सब प्रकार के मरम्मत के कार्य में दो सौ रुपयों से अधिक व्यय नहीं हुआ!! इस "ग्राफ जेपलिन" से भी अधिक और बढ़िया और वायुयान जर्मनी में बन कर तैयार हुआ है, उसकी संज्ञा है—"एल० जेड० १२९"। इसे जर्मनी के स्वर्गीय राष्ट्रपति "हिण्डनबर्ग" का नाम दिया गया है।

"आर १०१" के विनाश के बाद से इंगलिस्तान ने तथा 'आकरान' और "मकौन' के सर्वनाश के बाद से अमरिका ने वायुयान बनाने का कार्य छोड़ा हुआ है। परन्तु जर्मनी तो इस विषय में अभी प्रगतिशील ही है। जर्मनी आज वायुयानों के निर्माण के कार्य को अपनी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा मान रहा है। वस्तुतः इस कार्य में वह अद्वितीय है।

सन १९२७ में "ग्राफ जैपलिन", बनाया, उसके बाद एक नये वायुयान बनाने का कार्य शुरू किया गया है। जर्मनी के हवाई-सेनापति मि० गोरिंग की अध्यक्षता में एक 'ग्राफ जैपलिन' कम्पनी स्थापित की गई है। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त ग्राफ जैपलिन का प्रधान कप्तान डाक्टर एकनर इस कम्पनी की व्यवस्थापक समिति का सभापति है। इस कम्पनी के पास अड़तीस लाख पौंड की पूंजी है। यह कम्पनी नवीन विशालकाय जैपलिन बना रही है। इस को अग्नि से किसी प्रकार की हानि न पहुंच सके, इस की व्यवस्था विशेष रूप से की गई है। बहुत लम्बी यात्रा के समय इसके अन्दर प्रभूत मात्रा में सामान रखा जा सके, इसकी भी व्यवस्था की गई है। यात्रियों को सामुद्रिक जहाजों में जितना सुख और अनुकूलता प्राप्त होती है उतनी ही सुविधा इस में भी रखी जायगी। भोजनगृह और खास केबिनों का आयोजन भी किया गया है।

पचासों यात्री तथा सर्व प्रकार का सरसामान और मरम्मत का सामान मिला कर पचास टन (लगभग एक हजार मन) जितना भार यह जहाज आसानी से उठा सकेगा।

यह व्योमयान बर्लिन से न्यूयार्क, न्यूयार्क से टोकियो तक टोकियो से अगोरा तक और अगोरा से बर्लिन तक बीच में कहीं भी बिना रुके हुए सोडसिक यात्रा कर सकेगा!! यह जहाज सबेरे बर्लिन से न्यूयार्क जाकर अगले दिन सायंकाल को पुनः बर्लिन में आ जाने की पूरी आशा रखता है। ऐसा विराट्काय व्योमयान अभी तक कहीं नहीं बना है। जर्मन एञ्जिनियरों और वैज्ञानिकों ने उसको सिद्ध स्वरूप दिया है। इस में विशेष प्रकार से बनी हुई दूसरी धातु का प्रयोग किया गया है। खास रासायनिक रीति से बना हुआ लोहा और काष्ठ प्रयुक्त किया गया है।

यह व्योमयान बहुत आसानी के साथ और सरलता के साथ सीधा पानी पर उतरता है और चढ़ता है। इसको उतारने और चढ़ाने के लिये लम्बी जगह की आवश्यकता नहीं पड़ती!

यह जैपलिन बीसवीं सदी की सर्वश्रेष्ठ आश्चर्यमयी वस्तु कही जा सकती है।

—

विशाल-भारत और स्वामी सत्यदेव

(पृष्ठ १० का शेष)

प्रकाशित करवा कर वहाँ पर बाँटी गई थी और दूसरे नोटिस मन्दिर के सम्बन्ध में बाँटे गये थे। बस मेरे सार्वजनिक जीवन में केवल यही एक आर्थिक सहायता है, जो बिना माँगे स्वामी विश्वानन्द जी ने आप-ही-आप पाँच सौ रुपयो मुझे एक मारवाड़ी से लेकर दे दिया था। निस्सन्देह मेरे ऐसे स्नेही अवश्य हैं, जो मेरे कहने पर मुझे सहायता दे सकते हैं, परन्तु मेरी पुस्तकें सदा मेरा खर्च निकालती रही हैं।'

इतना कह कर स्वामी जी चुप हो गये। तब मैंने फिर प्रश्न किया—'चतुर्वेदी जी आप से यह पूछते हैं कि क्या वाम मार्ग कम्यूनिज़म का विषैला फल है?

स्वामी जी बोले— चतुर्वेदीजी के हृदय में इस समय मेरे प्रति विद्वेष है, इसी कारण वे इतनी स्पष्ट बातों को भी समझने की चेष्टा नहीं करते। अब मैं साफ़ यह कह रहा हूँ कि उन मादरज़ाद नंगी क्लबों में कम्युनिस्टों की भरमार थी कम्यूनिज़्म इन्द्रिय संयम की खिल्ली उड़ाता है वह विवाह के आदर्श को नहीं मानता तो इस से बढ़कर चतुर्वेदी जी को और क्या प्रमाण चाहिये। कम्म्युनिज़्म फ्री लव (Free love) के सिद्धांत को मानता है और स्वच्छन्दता से पति पत्नी के विच्छेद को करना सिखाता है तो ऐसी अवस्था में वाम मार्ग का आना स्वाभाविक है और मैंने तो उन क्लबों के बीच में रहकर कम्युनिज़्म के वाम मार्ग को देखा है। चतुर्वेदी जी इसे न मानें तो न सही लेकिन उन्हें मेरे व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर लिखी हुई बातों को गप कहने का अधिकार नहीं है।'

मैं अपने नोट देखने लगा। मैंने स्वामी जी से कहा कि चतुर्वेदीजी के इस लेख के अन्तिम आक्षेप का भी उत्तर कृपाकर दे दीजियेगा और वह आक्षेप यह है— क्या आपके नकद धर्म की सिद्धि साम्यवाद की निन्दा और हिटलर तथा उसके अर्धमित्रों की प्रशंसा से ही हो सकती है?

स्वामीजी मुसकराकर बोले—'जब सन् १९३४ के फर्वरी मास में मैंने हिटलर के विषय में वह लेख 'सरस्वती में लिखा था, तब उस समय मैं हिटलर के चमत्कारों से भली प्रकार परिचित नहीं था। अब तो मैं जर्मनी जाकर जर्मन जनता से मिलकर, वहाँ के गरीब अमीरों से बातें कर हिटलर के गुण दोषों को भली प्रकार पहचान गया हूँ। मैं हिटलर का प्रशंसक इसलिए हूँ कि उसने अपने देश के माथे पर लगी हुई अपमान जनक सन्धि के चिथड़े उड़ा दिये हैं और जर्मन राष्ट्र को संगठित कर उसे अपने पाँवों के बल खड़ा कर दिया है। जिस जर्मनी को दूसरी जातियाँ ठुकराती थीं, जो दूसरों की दया का भाजन था वह जर्मनी आज हिटलर के कारण योरोप की महाशक्तियों के साथ एक कतार में खड़ा हो गया है। व्यक्तिगत रूप से हिटलर ने मेरा जर्मनी में रहना कठिन कर दिया मेरी आमदनी के दरवाजे बन्द कर दिए, परन्तु मैं तो हिटलर को उसके अधिकांश देशवासियों के दृष्टिकोण से देखता हूँ, स्वार्थ की कसौटी से नहीं। मैं कम्युनिज़्म का विरोध असूली तौर पर करता हूँ, क्योंकि मैंने बर्लिन में हिन्दुस्तानी और जर्मन कम्युनिस्टों को देखा है जो महात्मा गाँधी जी और कांग्रेस को सौ सौ गालियाँ देते थे और राष्ट्र धर्म की खिल्लियाँ उड़ाते थे। जहाँ कम्युनिज़्म है वहाँ राष्ट्र धर्म नहीं पनप सकता। कम्युनिज़्म, साशलिज़्म और बलशेविज़्म, इन तीनों में से किसी का अनुवाद भी साम्यवाद नहीं है। यह किसी हिंदी लेखक ने भूल से शब्द घड़ा है। कम्युनिज़्म वर्गवाद है और साशलिज़्म समाजवाद। मैं साशलिज़्म के सिद्धान्तों को आज से नहीं पिछले चौबीस वर्षों से मानता हूँ, लेकिन कम्युनिज़्म का मैं अवश्य विरोधी हूँ।

तब मैंने पाँच चार मिनट के लिए चुप्पी साध ली और स्वामी जी भी उठकर टहलने लगे। कुछ मिनटों के बाद वे आकर बैठ गये तब मैंने फिर पूछा— स्वामी जी, मैं तो आप से चतुर्वेदी जी के 'चायचक्रम के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता था। उसमें सम्पादकीय अशिष्टता की पराकाष्ठा हो गई है। क्या मैं उस में लिखी गई कुछ बातों के सम्बन्ध में भी आप से पूछताछ कर सकता हूँ? स्वामी जी ने कहा कि— चायचक्रम् के विषय में आगे चर्चा करेंगे। आज तो व्याख्यान के कारण थका हुआ हूँ।

लेकिन दूसरे दिन प्रातःकाल ही मुझे वहाँ से अकस्मात् चले आना पड़ा और मैं स्वामीजी से चायचक्रम् के बारे में बात न कर सका। मैंने 'चायचक्रम्' को फिर पढ़ा और सोचा कि स्वामी जी की श्री प्रेमचन्द जी पर नाराज़गी जिस पर चायचक्रम् का आधार है, उचित थी या अनुचित? यों तो एक पत्र के सम्पादक को यह अधिकार ही है कि वह कोई सूचना दे काट छाँट कर दे या न भी दे। लेकिन एक बात है। स्वामीजी का श्री प्रेमचन्द्र जी से जो सम्बन्ध था, उसे देखते हुए उनका यह कर्तव्य था ही कि वे उनकी सूचनाओं को अच्छे रूप में अपने पत्रों में स्थान देते। मुझे याद है कि श्री प्रेमचन्द जी जब दिल्ली प्रांतीय साहित्य सम्मेलन के सभापति की हैसियत से दिल्ली आये थे तो स्वामीजी ने उन्हें बड़े प्रेम से अपने यहाँ बुलाया था। उस समय उन्होंने हंस व 'जागरण के लिए स्वामीजी से लेख लिखने की प्रार्थना की। पीछे उनका अनुरोधपूर्ण पत्र भी पहुँचा। उन दिनों प्रायः मैं उनके लेख लिखता था। उन्होंने सरस्वती के लिये लिखे गये लेख प्रेमचन्दजी का पत्र पाते ही बड़े उत्साह के साथ उनके पास भेज दिये। कई लेख हंस और जागरण में छपे। स्वामीजी ने अपने लेखों का पुरस्कार नहीं माँगा! केवल एक बार श्री प्रेमचन्द जी ने बड़ी अनुनय विनय के साथ १०) रु० भेज कर स्वामीजी से क्षमायाचना की थी। स्वामीजी को तो इस बात की कोई परवाह नहीं। अनेक पत्रों में वे बिना पुरस्कार माँगे लेख भेजते हैं। तब श्री प्रेमचन्दजी का इतना तो कर्तव्य था ही कि वे उनकी सूचनाओं को अच्छी तरह देते। और जब कि स्वामीजी की पाठशाला पैसा कमाने के लिये नहीं खोली जा रही थी। वह तो एक सार्वजनिक संस्था थी। राष्ट्रीय पत्रों के सम्पादकों को तो उसमें सहयोग करना ही चाहिये थो। उन्हें यदि सहयोग न मिला, और उन्होंने अप्रसन्न होकर कुछ शब्द भी लिख दिये तो यह अनुचित नहीं कहा जा सकता।

इसी 'चायचक्रम में 'विशाल-भारत' के सम्पादक ने कैसी भद्दी, ऊटपटांग, अशिष्टतापूर्ण और अश्लील बातें लिखी हैं। ये हैं घासलेटी साहित्य के विरुद्ध गोली बारूद चलाने वाले! गोसाईं तुलसीदासजी ने सच कहा है—

'पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
जे आचरहिं ते नर न घनेरे।

सन १९३० के 'विशाल-भारत' में शायद 'कोलोन का कार्नवाल' शीर्षक कविता स्वामीजी की छपी थी। उस समय तो चतुर्वेदी जी को वह कविता बड़ी अच्छी लगी, स्वामीजी भी बड़े सत्यवादी लेखक मालूम हुए। आज पाँच वर्ष के बाद जब चतुर्वेदी के हृदय में स्वामी जी के विरुद्ध विद्वेष की अग्नि धधकने लगी है, तो आप उसी कविता की खिल्ली उड़ाने लगे हैं। इस सम्पादकीय असभ्यता को तो देखिये! सच है मनुष्य का दृष्टिकोण ही तो है। जब वह किसी के विरुद्ध हो जाता है तो अपने विवेक को खो देता है और ऐसी बातें करने लगता है, जिनके कारण उसे पीछे पछताना पड़ता है। स्वामीजी ने स्वयं 'कोलोन का कार्नवाल लिखा है। इस घटना का अक्षरशः सत्य सत्य वर्णन किया है। आज हिंदी वाले स्वामी जी की कीमत नहीं जानते लेकिन जब पक्षपातपूर्ण द्वेष का वातावरण दूर हो जायगा तो उस समय स्वामीजी की लेखनशक्ति का मूल्य मालूम होगा।

———

कहानी

राखी की स्मृति

(ले०—श्री जीवनलाल श्रीवास्तव्य)

वे दिन, आज की अपेक्षा भिन्न प्रकार के थे। दरिद्रता का एकाधिपत्य, तब न था। भारतीयों के शरीरो पर पीतवर्ण आभा उन दिनों न थी। तब सोनपुरी का सौभाग्य-सिंदूर उषा-कालीन लालिमा से होड लगा रहा था। वाणिज्य-व्यापार के गालों पर गुलाबीपन था। धर्म और सदाचार-मन्दिर के कलश आकाश चूम रहे थे। तोभी अनेक गरीब-परिवार, नक्षत्रो के प्रकाश में ही अपने जीवन के कृष्णपक्ष की रातें बिताया करते थे। दीवे के लिए तैल का अभाव रहता था।

माहिष्मती की ओर जाने वाले मार्ग के पार्श्व में, एक छोटी सी कुटिया थी। सौभाग्य की श्री लुटा कर रमियाँ की माता, अपने वैधव्य के दुर्दिन उसी की छाया में बिता रही थी। कभी वह 'फूलों की सेज' पर सोती थी; परन्तु आज उस के शरीर में मिट्टी के ढेले चुभते न थे। एक दिन वह रानी के समान रह चुकी थी, परन्तु आज आटा पीसकर, अपने और रमियाँ के पेट में दो रोटियाँ डालती थी। आदि से अन्त तक उसका जीवन एकदम बदल चुका था। तब रमियाँ आठ वर्ष की थी।

प्रकृति के नियमानुसार ग्रीष्म ऋतु आती और चला जाती। दल-बल सहित वर्षा का प्रवेश होता। आषाढ़ जाता और श्रावण आ धमकता। न जाने कहाँ से राखी की पूर्णिमा भी आ ही जाती।

सोनपुरा मे घर घर कढ़ाइयाँ चढ़तीं। पूरी कचौड़ियाँ, गुझियाँ और पपड़ियाँ तैयार होतीं। उन्हें खा-खाकर बालक बालिकाएं न जाने कितना आनन्द लूटते। पर बेचारी रमियाँ, चने की रूखी रोटी पर ही सन्तुष्ट रहती। उसने अपने घर मे कढ़ाई-जैसी आकृति ही न देखी थी। वह कभी पकवानों के लिए मचलती न थी। तो भी पड़ोसिन स्त्रियाँ उसे खाने के लिए सब कुछ भेज देती थीं।

राखी के दिन, सोनपुरी में घर घर उत्सव सा मनाया जाता। मंगल गीत गाये जाते। बहिन अपने भाइयों को राखी बांधतीं। उनके भाई तलवार छूकर बहिन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करते। रमिया के नेत्र भी इन दृश्यों को देख चुके थे। इन दृश्यों का अदृश्य प्रभाव उसके बाल हृदय पर पड़ चुका था। वह इसे एक सुन्दर खेल समझती थी और उसका हृदय एक बार ऐसा खेल खेलना चाहता था।

परन्तु बात सरल न थी। रमियाँ की माता ने, उस के लिए 'भाई' नामक कोई मानव-शरीर उत्पन्न ही न किया था। किन्तु रमियाँ इसे क्या जाने?

सदा की भाँति उस वर्ष फिर राखी-पूर्णिमा आई। घर-घर राखियाँ बाँधी जाने लगीं। न जाने कितने आनन्द को हृदय में भरकर, नन्हीं सी रमियाँ, एक सूत का धागा लिए अपनी माता के निकट पहुंची। आज उसका मुखकमल खिल रहा था। नेत्रों में एक प्रकाश ज्योति निकल रही थी। आनन्दातिरेक में उसके साँवले कपोल भी लाल-लाल हो रहे थे।

वह भली भाँति यह न जानती थी कि राखी किसे बाँधी जाती है और न उसने इसे जानने का कभी प्रयत्न किया। अपनी एक साध पूर्ण करने की भावना लिए हुए, उसने माता के कन्धे पर प्यार का हाथ रख दिया। गद्‌गद् होती हुई, बाल-सुलभ लज्जा के सरोवर मे डूबती हुई रमियाँ ने साहस करके कहा:—

"माँ! मैं राखी बाँध दूं?"

आशा पूर्ति के विश्वास के सहारे रमियाँ ने राखी का धागा माँ के हाथों की ओर बढ़ाया। क्षण भर में ही रमियाँ के हृदय की सारी हलचल, माता ने परख ली। असहाय और दुखिया माता रो उठी। आँसुओं के प्रवाह ने उसका अंचल भिगो दिया। बीते हुए सुनहले प्रभात के दृश्य, उसे दिखाई से देने लगे। स्मृतियाँ जाग उठीं। किस प्रकार उसकी यौवन लता वसन्त से प्रथम ही तुषार पात द्वारा, बिना एक 'लाल'—पुष्प खिलाये ही मुरझा गई, किस प्रकार उस का साम्राज्य क्षण भर में धूल में मिल गया, आदि बीती हुई करुण-कहानियाँ उसे याद हो आईं।

बेचारी रमियाँ कुछ न समझी—कुछ समझ भी न सकी। किन्तु माँ की रोती हुई आँखों से, उसके नेत्रों से भी दो-चार बूंद आँसू खींच ही लिए। कुछ देर पश्चात् माँ ने अपने नेत्र पोंछे और एक गहरी साँस खींचते हुए रमियाँ से कहा:—'बेटी! भाई के हाथ पर राखी बाँधी जाती है, माता के हाथ पर नहीं। तुम इतनी भाग्यवती कहाँ, जो तुम्हारे कोई 'भाई' होता!

रमियाँ की माता का गला भर आया और आगे वह कुछ न कह सकी।

रमियाँ उदास मुख हो चौराहे पर चली गई और पेड़ के नीचे बैठ कर बालकों का झूलना देखने लगी। उसने यह भी देखा कि बूढ़े-बूढ़े ब्राह्मण, आने-जाने वाले पुरुषों व बालकों को राखियाँ बाँध रहे हैं। लोग उनको पैसे देते हैं और चरण छूकर चले जाते हैं। इस दृश्य ने रमियाँ की उदासी दूर कर दी। उस की विचार धारा बदल गई। उसने समझ लिया कि भाई-बहिन के अतिरिक्त भी कोई राखी बाँध सकता है।

बादल घिरे हुए थे, नन्हीं नन्हीं बूंदों की फुहार झर रही थी, परन्तु रमियाँ अपने विचारों में तल्लीन हुई वहीं बैठी थी। उसके काले काले बालों पर फुहार की बूंदें, मोती सी चमक रही थीं। सहसा पानी की झड़ी लग गई। बच्चे अपने २ घरों में छुप गये, रमियाँ उसी पेड़ तले सिमटकर चबूतरे पर बैठ गई। दो ही मिनट बाद, एक यात्री युवक वहाँ आया। उसने अपना घोड़ा पेड़ के नीचे खड़ा किया और आप चबूतरे पर खड़ा हो, वर्षा के बंद होने की प्रतीक्षा करने लगा।

रमियाँ ने उसे सिर से पैर तक देखा और देखा उस के हाथों की ओर। युवक की कलाई, राखी से खाली थी। रमियाँ ने आज के दिन बिना राखीवाला हाथ न देखा था। उसे कुछ आश्चर्य-सा हुआ। सरलता पूर्वक उसने पूछा:—

"तुम्हारे हाथ में राखी नहीं है?"

रमियाँ का प्रश्न सुनकर युवक ने एक साँस ली और कहा—

'नहीं है, और इसलिए नहीं है कि ईश्वर ने मुझे कोई बहिन नहीं दी।"

युवक की आँखों से दो बूंद टपक पड़े। उसके हृदय की पीड़ा का अनुभव बेचारी बालिका कैसे कर सकती थी। तो भी उसके आँसुओं का एक करुण प्रभाव, रमियाँ पर पड़ ही गया था। वह डरते-डरते, किन्तु कुछ प्रसन्न होती हुई बोली:—

'क्या मैं तुम्हें राखी बाँध दूं?'

युवक का हृदय भर आया। आज से पहिले, एक बालिका के मुख से, उसने इतने प्रिय शब्द न सुने थे। एक बार उसने रमियाँ की ओर देखा। मैले-कुचैले और फटे वस्त्रों से छनकर रमियाँ के दुर्बल शरीर का प्रकाश फैल रहा था। रमियाँ की भावुकता ने युवक को विस्मित कर दिया। उल्लास और स्नेहभरे हृदय से युवक ने अपनी भुजा रमियाँ की ओर बढ़ा दी। प्रसन्न हो रमियाँ ने अपनी 'धागे का राखी' युवक की बाँह पर बाँध दी। रमियाँ की प्रसन्नता का क्या ठिकाना था? युवक ने अपने नेत्रों को सजल करते हुए पूछा:—

'तुम्हारा क्या नाम है—बहिन?"

"मेरा नाम'—रमियाँ।"

'तुम किस की बेटी हो?'

'पिसनहारी की।"

"कहाँ रहती हो?"

इसी गाँव में नीम के पेड़ के पास एक झोपड़ी में।"

बेचारा युवक कुछ समझ न सका। और न रमियाँ ही इस से अधिक कुछ बता सकी।

पानी बरसना बन्द होगया। युवक जाने के लिये तयार होने लगा। उसे जाते हुए देख रमियाँ ने पूछा:—

"अब तुम कहाँ जाओगे?"

'माहिष्मती जा रहा हूं, बहिन!"

"तुम कौन हो?"

युवक ने घोड़े पर चढ़ते हुए अपना नाम बताया। रमियाँ भी उस का नाम सुनती हुई वहाँ से भाग गई। युवक का हृदय आज इस गर्व से फूल रहा था कि वह एक गरीब बहिन का भाई है।

* * * *

निमाड़ प्रदेश के जंगलों की सघनता प्रसिद्ध है। विशाल वृक्षों की वहाँ बाढ़ सी लगी है। इतनी सघन कि चिड़िया भी उस ओर न जा सके। बाघ और चीतों की दहाड़ों से वहाँ भूकम्प से आते हैं। साँपों की शूं शूं बड़े २ साहसी मनुष्यों के हृदय कंपा देती है।

ऐसे विकराल और भयंकर वनों में भी मनुष्य रहते हैं, इसे वे ही जाने। तपस्वी साधु, संसार के कष्टों से थके मांदे त्यागी, डाकू और चोर एवं राजदंड की भीति से डरे

हुय अपराधी ऐसे ही बनों का आश्रय लेत हैं। अभय और सुख की नींद उनको ऐसे ही जगलों में मिलती है। पर कौन जानता है कि उन दिनों निमाड के जगलों में रहने वाले डाकू थ या साधु अपराधी थे या साम्य वादी।

नर्मदा के पार्श्व प्रांत में, शूल पाणि की झाडी के किनारे २ एक मार्ग जाता था। नगर और ग्राम निवासी इसी मार्ग से आत-जात थे। माल से लदी हुई गाडियां यहीं से गुजरती थीं। दूसरे तीसरे दिन रक्त पात, मार-पीट लूट खसोट हो ही जाता था। जो इनसे बचता, उसपर शेर और तेंदुए अपनी आंखें गडाये रहते। तो भी साहस की सजीव प्रतिमा— मनुष्य यहां से निकलता ही था।

सावन की चतुर्दशी थी। रात्रि के चार बजे थे। घननन घननन करती हुई बैलगाडियों की एक कतार, गोली खाए हुए हिरन की भांति उसी मार्ग पर सरपट दौड रही थी। कोकिल-से स्वरों में ग्रामीण रमणियां भगवती नर्मदा के गुण गान कर रही थीं। पुरुषों की गाडियों पर 'पूत बुलाखी के अटके' की कहानियां कही जा रही थीं। दूसरे ही दिन राखी की पूनो (पूर्णिमा) थी। पूर्णिमा का स्नान करने ग्रामीणों की टोली नर्मदा की ओर बढ़ी आ रही थी।

अचानक— धाय धाय धाय — तीन बार गोली छूटने का शब्द हुआ। "आह' भरता हुआ आगे वाली गाडी का हांकने वाला 'धम से जमीन पर ढेर होगया। गीत और कहानियां समाप्त होगयीं। यात्रियों के हृदय कांप उठे। स्तब्धता छागई। गाडियां रुक गईं। सिरों पर मृत्यु की परछाईं दिखाई देने लगी। स्त्रियां और बालक गाडियों के नीचे छुपने लगे। असहाय यात्री अपनी अपनी लाठियां ले गाडियों से उतर पडे।

उन्होंने देखा —लगभग १०० डाकू चारों ओर से गाडियों को घेरे खडे हैं। यात्री भी गाडियों के निकट खडे होगए। क्षण भर तक दोनों ओर शांति छाई रही। किसी ने आक्रमण न किया। अन्त में निस्तब्धता भंग हुई और भील सरदार की जय' से शस्त्रपाणि की झाडी गूंज उठी। इस जयकार के नाद को सुनते ही यात्रियों के हृदय से जीवन की आशा चली गई। हाथों से लाठियां गिर पड़ीं। सिंह के समान साहसपूर्ण कदम बढ़ाता हुआ 'भील-सरदार' आगे आया और बोलाः—

"तुम लोग कौन हो?'

"गरीब किसान हैं, मालिक!"

"गरीब किसान!'—भील सरदार ने कहा— 'गरीब किसानों के पास ऐसे शाही साज-बाज कहां? चीथड़ों में लिपट कर धूप, मेह और शीत में रात्रि दिन बिताने वाला वह तपस्वी, अपने जीवन में 'स्वर्ण'" की सूरत भी नहीं देख पाता। सच बोलो तुम कौन हो?

'पीपरिया गांव के ठाकुर'—एक व्यक्ति ने कहा।

'कहां जा रहे हो?'

"नर्मदा स्नान करने के लिये।'

"तुम्हारे साथ कितनी मातायें और बहनें हैं?'

"केवल आठ।"

"अच्छा उनको एक ओर बैठाल दो। उनसे कह दो वे अपने को सुरक्षित समझें। भील संतान, मां-बहिन पर हाथ नहीं उठाता। बालकों को भी सुरक्षित समझो।"

'और हम लोग?' —एक हांकने वाले ने पूछा।

'तुम लोग, अपने पास का धन जेवर और हथियार यहां रख दो—सुना!'

कांपते हुए हाथों से सबने अपने २ जेवर रुपये पैसे ला लाकर रख दिये और सरदार की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। सरदार ने पूछा —"और भी कुछ है या सब कुछ आ चुका?"

केवल स्त्रियों के शरीरों पर के आभूषण शेष हैं।'

भील सरदार माताओं के आभूषण नहीं चाहता। अब तुम सब इस तलवार की ओर देखो और अपने रक्त की धारा इसे पिलाने के लिए तैयार हो जाओ। और ठाकुर साहब! यदि तुम युद्ध करना चाहते हो तो भील सरदार उसे स्वीकार करता है। कहो?"—सरदार ने कड़क कर कहा।

किस में शक्ति थी जो काल से युद्ध करे। लाठियों और शस्त्रों में परस्पर युद्ध कैसा? असहाय, निःशस्त्र यात्रियों ने सरदार की तलवार के आगे, मौन हो, सिर झुका दिये।' 'भील सरदार की जय, तांतिया भील की जय' का जय घोष फिर हुआ। सरदार का खड्ग आकाश में उठा। किसी की गर्दन पर उसकी तेज धार गिरना ही चाहती थी कि— "ठहरो'—यह शब्द सुन पड़ा। सरदार का ऊंचा उठा हुआ हाथ उठा ही रह गया। सरदार ने देखा, गाड़ी में से एक युवती उसके सामने खड़ी होगई।

मातृजाति की एक साक्षात् प्रतिमा सामने खड़ी हुई देख कर तांतिया ने अपनी तलवार झुका ली और बोला—

'क्या चाहती हो देवी?"

ठीक उसी समय उषा का सुनहला प्रकाश छिटक गया। आकाश पर लाली छा गई। कुहू कुहू करती हुई कोयल सरदार के ऊपर से उड़ गई। प्रकाश में भील सरदार की मुखाकृति स्पष्ट दिखाई देने लगी। युवती ने एक बार सरदार की ओर ध्यान से देखा और वह बोली—

'यदि भूलती नहीं हूं तो आज से बारह वर्ष पहिले मैंने तुम्हारे ही हाथ में राखी बांधी थी। क्या तुम वही 'तांतिया' हो?"

तांतिया ने अपने मस्तक पर हाथ रख लिया। आंखें बंद कर लीं। अपनी मुंदी हुई आंखों से उसने देखा—'पानी बरस रहा है आम के पेड़ तले उसका घोडा खडा है और चबूतरे पर बैठी हुई एक गरीब कन्या उससे कह रही है— 'क्या मैं तुम्हें राखी बांध दूं?'

तांतिया की स्मृति जाग उठी। अपनी तलवार फेंक कर उसने कहा —'हां, मैं वही तांतिया हूं, और क्या तुम वही मेरी निर्धन बहिन रमिया हो?'

युवती ने स्त्री सुलभ लज्जा से अपनी आंखें नीची करते हुए कहा— हां'

भील सरदार, रमिया के चरणों पर गिर पडा। यात्रियों के शरीर मानो फिर जी उठे। क्षण भर में कुछ से कुछ होगया।

राखी-पूर्णिमा का प्रभात खिल उठा। आगे २ भील सरदार तांतिया का अरबी घोडा नाचता-झूमता चल रहा था। घन घन करती हुई ठाकुर साहब की गाडियां उसके पीछे धीरे धीरे चल रही थीं। उनके पीछे सौ भीलों की सेना मार्च कर रही थी। आने जाने वाले पथिक इस 'असंभव' को संभव देख कर चकित थे। स्त्रियों की गाडी में से, रमिया का विजयी हृदय—'एक झूला डाला मैंने भैया के राज में भैया के राज में'—मल्हार की सुरीली तान उड़ रहा था। कैसा सुहावना, कितना प्रेम मय और कितना अद्भुत था वह दृश्य।

तट पर पहुंच कर नर्मदा के देखते २ रमिया ने आज फिर तांतिया की भुजों पर राखी बांध दी। रमिया के हृदय में स्नेह था, शांति थी और था एक विजयोल्लास, परन्तु अभिमानरहित। तांतिया के मुख पर आनन्द था, प्रकाश था परन्तु हृदय क्षमायाचना के लिये मचल रहा था। राखी के सूत्र की कितनी बड़ी महिमा थी!

———

रक्षा-बन्धन !

—:०:—

(भाई के प्रति)

धर्म बहिन हूं आगे आओ
धर्म-भ्रात हो मत सकुचाओ
लाओ कलाई हस्त बढ़ाओ
लो पवित्र बन्धन !

'राखी है' इस को अपनाना
यदपि तुच्छ यह कच्चा ताना
पर तुम इसमे सुदृढ़ बनाना
शुद्ध-प्रेम बन्धन !

शुभ चिन्तक भगिनी के, हे धन,
नित्य तुम्हारा हो अभिनन्दन !
फूंके यह तुम में नवजीवन,
नित रक्षा-बन्धन !

भ्रात बहिन की लाज निभाना
इसे हृदय से भूल न जाना
याद रहे वह मेरा आना
चिर-प्रतीत बन्धन !

(बहिन के प्रति)

यह तो 'विजय-सूत्र' है लाओ
पगली ! तुच्छ इसे न बनाओ
लो, हां ! ध्रुव कर में पहिनाओ
रक्षा बन्धन अजर !

हृदय हो हृदयप्रेम निधाना
मैंने आज तुम्हें पहिचाना
कहो, क्या कहा ? भूल न जाना
छिः हम हुए अमर !

तुम तो मेरा विमल हृदय हो
मेरी वीणा की सुर लय हो
मेरा स्वर्ण भविष्योदय हो
अनुपम प्रभा-प्रखर !

यह ध्रुव प्रण नित याद रहेगा
स्वेद-बिन्दु पर रक्त रहेगा
बहिन ! कहा है, बहिन कहेगा
तुम को जीवन भर !

—कल्याणकुमार 'शशि'

—*:*—

भूल सुधार

साप्ताहिक के 'अर्जुन' के पिछले किसी अंक में 'पत्नी की चाह' शीर्षक कविता के लेखक का नाम गलत छप गया है। वास्तविक नाम 'प्रयागशंकर गुप्त' शंकर, है।

—

(कालम ४ का शेष)

घाटे उतरेंगे। राजकार्यों में सफल होंगे, भागीदार को दगा देकर खुद पैसा खा जायेंगे, छोटे दर्जे के लोगों से अपनी बेइज्जती करायेंगे।

*　*　*

वायदे के बाजार में तेजी रहेगी, ता० १४ से बाजार कड़क रहेगा, चांदी को रोज नरम रहेगा, गल्ले पर साधारण तेजी रहेगी। ता० १४ १५-१७-१८ को वृष्टि बहुत होगी।

—

सप्ताह का फल
राशि क्रम से

ता० १२ अगस्त से १८ अगस्त तक

(ले०—श्री सकर्षण व्यास, उज्जैन)

मेष

व्यसन की ओर झुकाव, स्त्रियों की बीमारी मे तगी, इस राशि की स्त्रियों में गर्भपात की समावना, बहुत सी शस्त्रचिकित्सा मे प्रसव करेंगी, नौकरी की तलाश में निराशा, मालिक की तरफ से भय, राजकार्यों में सफलता।

वृष

कर्जदारी से चिन्ता, रिश्तेदार का सताना, शारीरिक स्थिति साधारण रहेगी, शत्रुवर्ग की प्रबलता, बने हुये व्यापार का बिगड़ना, वात रोग के रोगी को कष्ट, राजकार्यों से भी भय, बाहर घूमना अच्छा नहीं।

मिथुन

आर्थिक स्थिति अच्छी, आय के नवीन अर्थ, इष्ट मित्रों की सहायता, घर के और निजी लोगों के व्यवहार से असन्तोष, मानसिक चिन्ताएं, राजकार्यों में सफलता होने का अविश्वास, भागीदारी रखना जरूरी, बाहर घूमने से लाभ की आशा कम।

कर्क

श्वास कास के बीमारों को परहेज की जरूरत, मकान जायदाद की झंझट, अनुचित भागीदार रखकर व्यापार करने में घाटे की सभावना, शत्रुवर्ग पर विजय, राजकार्यों में निराशा, सप्ताह के आखिर में जुकाम की शिकायत, बहुत से व्यादी बुखार के शिकार होंगे।

सिंह

स्वास्थ्य रहेगा, परन्तु स्त्रियों की तरफ से सुख नहीं, डाक्टर, वैद्य, हकीमों पर पैसे का खर्च, आमद से खर्च विशेष बाल बच्चो की चिन्ता, नौकरी पेशे वाले सुखी।

कन्या

भाई बन्धु और रिश्तेदार तथा औरत ये सब घर में आराम से बैठकर खाने नहीं देंगे, हरदम कुछ न कुछ झंझट, स्त्रियों में खर्च, आमद के जरिये।

धन

चलते व्यापार [illegible] सामने आता हुआ द्रव्य हाथ से निकलेगा, अपने ही द्रव्य के लिये दूसरों की खुशामद, मित्रों की और भागीदारों की सहायता, चर्म रोग के बीमार विशेष कष्ट भोगेंगे, वाहन (सवारी) से भय रहेगा।

मकर

आमद अच्छी, तन्दुरुस्ती अच्छी परन्तु स्त्रीवर्ग की तरफ से असन्तोष, व्यापार व्यवसाय से लाभ होने की आशा फजूल-खर्ची, दलाली करने वाले से समझ कर चलना चाहिये राजकार्यों में निराशा, भागीदार से कलह के कारण।

कुम्भ

स्थिर धन्धे वाले सुखी, नौकरी पेशे वाले आराम से, व्यापारी के लिये सप्ताह कष्टप्रद, राजकार्यों से चिन्ता, बहुत श्रम का अल्प फल, शत्रु वर्ग पर सफलता, प्रमेह और बहुमूत्र के रोगी को परहेज से चलना चाहिये, कारखानदारों को अपने नौकरों से बचकर रहना चाहिये, वकील-बैरिस्टर और जज-मजिस्ट्रेट, (इस राशि,के अकारण कष्ट भोगेंगे, दूसरों में फंसा हुआ पैसा निकलना असंभव, राजकार्यों में असफलता, रिश्तेदार का विरोध, मालिक की तरफ से प्रायः भय, व्यापार में फायदा, सप्ताह में ६ रोज अच्छे निकलेंगे।

तुला

मानसिक परिस्थिति एक दम खराब, कामकाज में मन कम लगेगा, राजकार्यों में अनुकूलता, व्यापार से लाभ, परन्तु बेकार धन्धों मे समय मिलना कम सभव रहेगा, नौकरी की तलाश में घूमने का व्यर्थ श्रम, घर के लोगो के वाग्वज्र काम पर प्रायः गू आ करेंगे, भाई भाई में विरोध होसकता है।

वृश्चिक

काम करने से आमद हो सकती है, घर की चिन्ता, शरीर में हरदम आलस्य, अनायास कहीं से पैसा मिल जाय परिश्रम न करना पड़े यह वृत्ति प्रायः रहेगी आमद से खर्च विशेष होगा, राजकार्यों में सफलता सप्ताह अच्छा है, निकट रिश्तेदार और भाई बन्धु पर विशेष विश्वास रखकर नहीं चलना चाहिये।

मीन

बाहर घूमने में पैसा बर्बाद करेंगे, नौकरी पेशे वाले फुटकर धन्धों मे पैसा जोड़ेंगे एक दिन में दो २ चार २ घर काम करके पेट भर अन्न पायेंगे, व्यापारी वर्ग के लोग घाटे में रहेंगे, पेचिश और अर्श वाले मौत के

(शेष कालम दो के नीचे)

व्यापार-डायरेक्टरी

आवश्यक वस्तुयें निम्न पते से खरीदिये—

हैजा का अचूक इलाज

विश्वसुधा

है

मूल्य १) प्रति शीशा

विश्वसुधा कार्यालय, नया बाजार, देहली।

आग बुझाने का

पम्प

यह पम्प तुरन्त की लगी हुई आग को तुरन्त ही बुझा देता है

मूल्य ४०)

बाली कम्पनी

चांदनी चौक, देहली।

२।)

प्रतिवार

डाका

आजकल डाके की बड़ी खबर आ रही हैं। यदि आप अपने कीमती माल जेवर को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो उनको सेंट्रल बैंक चांदनीचौक देहली के सेफ डिपोजिट वाल्टों में रखिये और चैन की नींद सोइये।

सी० पी० और बरार में आपका व्यापार किस तरह बढ़ेगा?

आपको अपने कारखाने का विज्ञापन हर जगह पहुंचाना पड़ेगा। हम आपको इस काम में सहयोग दे सकते हैं। पोस्टर्स और हैंडबिल हर एक बड़े शहर और गांव में चिपका देंगे और बांट देंगे। विशेष जानकारी के लिये लिखिये:—

विदर्भ उद्योग मंदिर पाढुरणा। I N Ry

१।)

प्रतिवार

३) प्रतिवार

५) प्रति वार

दांतों के सर्व रोगों के लिये

दन्त सुधा मंजन

प्रयोग में लाइये

विश्वसुधा कार्यालय नया बाजार, देहली।

भृगु संहिता

(योगसागर फलित खंड भाषा टीका)

सम्वत् १६२० से २००० तक संसार भर की जन्म कुण्डलियों का भूत, भविष्य, वर्तमान तीन जन्म का हाल ज्ञात होगा। फल सुनकर लोग कहते हैं कर्णपिशाचिनी सिद्ध है। चार मास के लिये रियायती मूल्य ३), पो० ।।) फिर सौ रुपये को भी न मिलेगी, पुस्तकें थोड़ी ही हैं।

भृगु संहिता कुन्डली खण्ड

(भाषा टीका उदाहरण सहित)

सम्वत् १६०० से २००० तक की पृथ्वी भर के मनुष्यों की कुंडली मिलेंगी। नष्ट जन्मपत्री बना लो कई उपयोगी सारिणी हैं। मूल्य २) पो० ।।) चार मास तक। फिर सौ रुपये को भी न मिलेगी।

पता—

ज्योतिषरत्न, प० अयोध्याप्रसाद मिश्र

JHANSI झांसी नं० २१

गर्भ हरण

जो स्त्रियां बीमारी अथवा कमजोरी के कारण अधिक सन्तान पैदा नहीं करना चाहतीं वे इस के सेवन से थोड़े ही समय में इस कष्ट से मुक्त होंगी। परीक्षित है। पूरी खुराक का मूल्य ३) पो० ।।)।

गर्भ रक्षक

इसे गर्भकाल में सेवन करने से स्त्री के गर्भ की रक्षा होकर समय पर हृष्ट-पुष्ट दीर्घायु पुत्र पैदा होगा। मू० पूरी खुराक ५) पो० ।।)। पत्र गुप्त रखे जाते हैं।

पता—डा० आर० जे० मिश्रा, फूलबाग सीपरी बाजार, झांसी नं० ६।

२।)

प्रतिवार

व्यापार संसार

दिल्ली का बाजार

साप्ताहिक रिपोर्ट

(इण्डस्ट्री सुपरिन्टेन्डेन्ट दिल्ली द्वारा)

९ अगस्त

सोने का बाजार इस सप्ताह बहुत नाजुक रहा, क्योंकि सट्टे बाजों ने बहुत खरीदा। कीमत किसी तरह स्थिर रहीं। पहले की कीमत पिछले सप्ताह ३४॥=) था। आज भी वही है।

सप्ताह के पहले भाग में चांदी की कीमत विदेशी सलाहों के कारण स्थिर रहीं। सप्ताह के पिछले भाग में कीमत गिरीं। आज ६८।=) भाव है, जबकि पिछले सप्ताह ७०।-) था।

कपड़े—स्थानीय मिलों को बहुत कम आर्डर मिले। स्थिति को उत्साहजनक नहीं कहा जा सकता। कपड़े का बाजार भी बहुत मन्दा रहा। मांचेस्टर और जापानी माल की पूछताछ भी बहुत अनियमित हुई।

अनाज—अनाज का बाजार स्थिर रहा। गेहूं साधारण रहा जब कि दालों ने कुछ ऊंचा रुख दिखाया।

आज के भाव—

गेहूं (शरबती)	२॥।- ॥।
सफेद	२॥= ॥
चावल (१)	६६)
(२)	१३)
दाल उर्द	५॥)
मूंग	३॥=)
अरहर	६॥)

गेहूं की आमद टनों में

७ जुलाई को समाप्त हुए सप्ताह में

	१९३५	१९३४
कलकत्ता	४७०५	८५२१
बम्बई	४१८	४८३०
करांची	५१७८	१३५९९

चालान विदेशों को टनों में

बम्बई	४	२५
करांची	१०	—

१ अप्रैल से २७ जुलाई तक की आमद टनों में

कलकत्ता	५८०००	६०६११
बम्बई	६१४८	७४४६८
करांची	१५६३४१	२१३७४०

चालान

कलकत्ता	४	३
बम्बई	३८१	३१४
करांची	१२६	१०२

वर्षा की रिपोर्ट

फसलों की क्या हालत है?

(निज व्यापारिक सम्वाददाता द्वारा)

बंगाल—पिछले सप्ताह में कुछ हल्की बारिश हुई। खड़ी फसलों और उत्तरी पश्चिमी बंगाल में धान की पौद को लगाने के वास्ते बारिश की आवश्यकता है। खरीफ (ओटम) फसल की कटाई हो रही है।

आसाम—मौसम साधारणतया अच्छा है। कुछ जिलों में बारिश की आवश्यकता है। आम तौर पर खड़ी फसलों की हालत अच्छी है।

बिहार उड़ीसा—भागलपुर जिले के सिवाय सब जगह बारिश हुई। पुरी सम्बलपुर और कटक के हिस्सों में भारी बारिश हुई है। बाकी जगह हल्की और मध्यम दर्जे की बारिश हुई है। खड़ी फसल की हालत अच्छी है। अगली फसल के लिये जमीन की तयारी अभी तक जारी है। धान और भादों की फसल की बुआई जारी है। बिहार, छोटा नागपुर, शाहाबाद, चम्पारन, पुरनिया और संथाल के परगनों में और अगहन धान के लिये बारिश की आवश्यकता है। कटक, पुरी, बालासोर और अंगुल में धान की पौद लगाई जा रही है। बम्बई कर्नाटक दक्षिणी दक्कन अहाते के कुछ भागों और पश्चिमी खानदेश के सिवाय यहाँ बारिश कम हुई है। बाकी जगह अच्छी बारिश हुई। दक्कन के पूर्वी भागों और कर्नाटक में बारिश की आवश्यकता है। गुजरात में बारिश ठहरनी चाहिए। गुजरात और कोंकन में फसलों की हालत अच्छी है और धान की पौद लगाई जा रही है। दक्कन के नहरी इलाकों में कपास को कीड़े लगने का समाचार आया है।

सिंध—सिन्ध में बारिश नहीं हुई। कपास की बुआई की जा रही है। धान की पौद लगाई जा रही है।

मध्यप्रांत—वर्षा प्रायः सारे प्रान्त में हो गई है। आकाश में बादल रहे। रायपुर बालाघाट और बिलासपुर के भागों में बारिश की अत्यन्त आवश्यकता है। कपास की बुआई खतम हो चुकी है। धान और दूसरी खरीफ की फसलों की बुआई अभी तक जारी है। कपास के इलाके में नलाई वगैरा के लिये बारिश की ठहरने की आवश्यकता है।

मद्रास—सिरकार के हिस्सों और पश्चिमी किनारे पर भारी बारिश हुई है। सिरकार और दक्षिणी पश्चिमी किनारे के इलाके में धान और दक्कन के हिस्सों में खुश्क फसलों की बुआई जारी है। साधारणतया खड़ी फसलों की हालत अच्छी है।

पंजाब—प्रांत के सब हिस्सों में बारिश हुई है और खड़ी फसलों के लिए लाभदायक सिद्ध हुई है। खड़ी फसलों की हालत औसत और अच्छी के दर्मियान है।

संयुक्तप्रांत—प्रांत के सब भागों में बारिश हुई है। खड़ी फसलों के वास्ते लाभदायक सिद्ध हुई है। लेकिन बारिश की और आवश्यकता है। फसल खरीफ की बुआई और जमीन की तयारी प्रारम्भ है, कुछ भागों में फसल रबी के लिए जमीन की तयारी प्रारम्भ हो गई है। खड़ी फसलों की हालत अच्छी है।

देशों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विवरण

(निज व्यापारिक सम्वाददाता द्वारा)

अन्तर्राष्ट्रीय कृषि विभाग रोम में जून मास के आखीर तक जो समाचार मिले हैं उनसे यह रिपोर्ट तयार की गई है।

गेहूं

समाचारों से ज्ञात होता है कि मई और जून मास में मौसम गेहूं की फसल के लिये कुछ खराब रहा। अधिक सर्दी पड़ने की वजह से एक या दो सप्ताह की देरी गेहूं की बढ़ोतरी में होगई। यूरोपीय देशों में जून मास की औसतन गेहूं की फसल की हालत खराब थी बनिस्बत पहले महीने के और कहीं २ पर तो काफी नुकसान भी मालूम होता है परन्तु बहुत सी जगहों में हालत जून १९३४ से अच्छी भी है। मध्य जून की हालत को देख कर यूरोपीय देशों की पैदावार के जो अनुमान किये गये हैं उनसे पता चलता है कि इस वर्ष पिछले वर्ष से ५०० लाख बुशल गेहूं अधिक पैदा होगी।

रूस में मई और जून मास का मौसम गेहूं के लिये माफिक रहा। बुआई अच्छी तरह से पहली जून से पहले ही सब समाप्त होगई थी।

चावल

जापान में कुल बुआई इस वर्ष २३०२ हजार एकड़ हुई, जबकि पिछले साल थी २३६९ हजार एकड़ और पैदावार का अन्दाजा इस वर्ष २०२९६ हजार और पिछले वर्ष का २१९१४ हजार सैंटल था। फार्मोसा का क्रमानुसार ५०९८ हजार और ४१४३ हजार एकड़ था। इटली में सर्दी अधिक पड़ने की वजह से मौसम खराब ही रहा।

कपास

मिश्र की कपास का, अन्तिम रिपोर्ट के आधार पर यह अनुमान किया जाता है कि इस वर्ष की पैदावार १५६६ हजार गांठ है जबकि पिछले वर्ष १७७७ हजार गांठ (४७८ पौंड प्रति गांठ) थी। यूगांडा में उठी हुई कपास की उत्पत्ति का अनुमान इस वर्ष २०६०००० गांठों का है। पिछले वर्ष की संख्या २२८००० था। एंग्लो इजिप्शियन सूडान की कपास की पैदावार का कुल अनुमान इस वर्ष का और पिछले वर्ष का क्रमशः २२७००० और १३५००० गांठ था।

कहीं बाढ़, कहीं सूखा

मानसून की गति

मानसून इस बार अपना विचित्र रुख दिखा रहा है। कहीं तो अनावृष्टि से दुर्भिक्ष पड़ रहा है और कहीं बाढ़ आ रही हैं। पश्चिमी बंगाल में दुर्भिक्ष पड़ रहा है। स्थिति चिन्ताजनक हो रही है। दुर्भिक्ष पीड़ितों का अन्न बांटा जाने लगा है।

संयुक्तप्रांत के बनारस, लखनऊ, कानपुर आदि जिलों में काफी वर्षा नहीं हुई। लेकिन अलाहाबाद में गत ९ अगस्त को भीषण वर्षा हुई है। मध्यप्रांत की अनेक नदियों— हगन घाट, नर्मदा और वर्धा में अति वृष्टि के कारण बाढ़ आ गई है जिससे फसलों को भारी नुकसान पहुंच रहा है। पश्चिमोत्तर प्रान्त पश्चिमोत्तर पंजाब और अफगानिस्तान में भी बाढ़ के समाचार मिल रहे हैं। सक्खर के पास सिन्ध में बाढ़ के आने के तथा लायलपुर में ओले गिरने के समाचार भी प्राप्त हुए हैं लेकिन करांची में अत्यन्त अनावृष्टि रही है।

फिलिपाइन्स द्वीप में दो नदियों में बाढ़ आने के कारण १८० आदमी मर गए तथा फसलों और इमारतों को बहुत नुकसान पहुंचा है।

मद्रास में रूसी तेल

मद्रास ५ अगस्त—गत सप्ताह रशियन आयल प्राडक्टस लि० को

(शेष पृष्ठ २६ कालम ४ के नीचे)

चप्पल कैसे बनती है ?

गांधी जी की मोचियों को शिक्षा

वर्धा में सत्याग्रहाश्रम का एक छोटा-सा चर्मालय है, जिसे कुछ पुराने आश्रमवासी चला रहे हैं। अब उसमें एक मोची का विभाग और बढ़ा दिया गया है। उस में मरे हुए ढोरों के चमड़े के चप्पल, स्लीपर और अन्य अनेक चीजें बनती हैं। हम लोग ज्यादातर वहीं से चप्पल जोड़ा मंगाते हैं। इस विभाग का जो प्रधान मोची है, उसकी वर्धा में दूकान थी। दुकान बन्द करके अब वह हमारे यहां आ गया है। इसे मोची का और काम तो अच्छा आता है, पर दुकान में उसने कभी चप्पलें नहीं बनाई थीं। और हम सब लोग तो अधिक चप्पल वाले ही ठहरे! जैसी चप्पल बनाकर वह हमें दे देता है, उससे हम अपना काम चला लेते हैं। पर गांधीजी को भला इस से सन्तोष हो सकता है? उन्होंने तो मोची विभाग के सारे कारीगरों को मगनवाड़ी में बुलाया, ताकि वे खुद ही मोचियों को उनकी त्रुटियां बता सकें। और अपने सामने उन्हें सुधार सकें। सो एक दिन दोपहर को वे सब मोची आ पहुंचे और गांधी जी की बैठक के सामने छोटी-सी जूते बनाने की दूकान उन्होंने लगादी। हम सब को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। इतने में राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, सरदार बल्लभभाई, कांग्रेस के मंत्री और कार्यकारिणी समिति के कुछ सदस्य आ पहुंचे। गांधीजी उस वक्त उन मोचियों को सुन्दर चप्पल बनाने का पदार्थ पाठ दे रहे थे। वे तो यह चप्पल शिक्षण देखकर आश्चर्यचकित हो गये। गांधीजी मोचियों को समझा रहे थे, "देखो, यह पट्टी यहां इस तरह आड़ी लगानी चाहिये। टांके इस जगह देने चाहियें। तल्ले में जहां पैर का दाब पड़ती हो, वहां चमड़े के कुछ टुकड़े आड़े डाल देने चाहिये, इत्यादि इत्यादि।" अपनी आंखों के सामने उन्होंने तमाम सीवन खुलवाई और फिर से टांके लगाने के लिए उस मोची से कहा। पर उधर कार्य कारिणी समिति के सदस्य कुछ अधीर से हो रहे थे। उन्होंने कहा—"पर जितना समय हमें मिला है उस में से बहुत कुछ तो ये मोची ही लिये लेते हैं।" गांधीजी ने हंसते हुये कहा, "अरे, आप लोग क्यों इन बेचारों पर ईर्ष्या करते हैं? ये रोज़-रोज़ तो आते नहीं आपको भी देखना हो तो देख कि अच्छा बढ़िया चप्पल कैसे बनता है।" बेचारे वे मोची तो उन बड़े-बड़े आदमियों को देखकर घबरा-से गये और तुरन्त ही वहां से उठकर बाहर बरामदे में आ बैठे। पर उनकी ठकठक की आवाज़ तो हो ही रही थी। इसलिये कार्यकारिणी वाले फिर अधीर हो उठे। एक आदमी आवाज बन्द करने के लिये उन लोगों से कहने गया। पर गांधीजी ने उसे रोका और कहा, "अरे, यह क्या करते हो, मोची अपना काम कर रहा हो तो उसके पास बैठकर भी काम करने की हमें आदत डालनी चाहिए ना! और फिर आप लोगों को इस बात का पता कैसे चलेगा कि यह ग्राम उद्योग-संघ का कार्यालय है?"

मेरा ऐसा ख्याल है कि कार्यकारिणी समिति के कुछ सदस्यों को और 'हरिजन सेवक' के अनेक पाठकों को शायद इस बात का पता न होगा कि गांधीजी ने जूता जोड़ा बनाना सब से पहले दक्षिण आफ्रिका में टालस्टाय फार्म में सीखा था और वहीं इस कला में उन्होंने कुशलता हस्तगत की थी। स्व० सोराबजी अडाजणिया उन दिनों गांधीजी के साथ करते थे। उन्होंने गांधीजी का बनाया हुआ एक चप्पल जोड़ा बंगाल के नरमदल के वयोवृद्ध नेता श्री सत्यानन्द बोस को भेंट किया था, जिसे वे बरसों से एक अनमोल उपहार के रूप में बड़ी हिफाजत के साथ रखे हुए हैं।

(हरिजन सेवक से)

षडयन्त्र के अभियुक्त छूटे

आवारा साजिश नहीं कर सकते

पटना के अडिशनल सेशन्स जज रायबहादुर एस. जी. चटरजी ने आज उस मुकदमे का फैसला सुना दिया जिसमें गंगा नामी एक मोटर ड्राइवर व ७ अन्य व्यक्तियों के विरुद्ध सम्राट के खिलाफ लड़ाई और सर गणेशदत्त सिंह मिनिस्टर के कत्ल का षडयन्त्र रचने का अभियोग था। जज महोदय ने ज्यूरी की राय से सहमत होकर सब अभियुक्तों को छोड़ दिया।

विद्वान जज ने अपने फैसले में कहा कि सबूत पक्ष की गवाहियों के अनुसार अधिकांश अभियुक्त पटना शहर के आवारा आदमी हैं, इसलिए यह षडयन्त्र रचने के उच्च उद्देश्य के अयोग्य हैं। इसके अलावा ज्यूरी के सामने जो बातें बतलाई गयीं हैं वे झूठी और व्यर्थ हैं।

भारत के नये वायसराय

लार्ड लिनलिथगो होंगे

६ अगस्त की सरकारी विज्ञप्ति है कि लार्ड विलिंग्डन की जगह, जिन का कार्य-काल आगामी अप्रैल मास में समाप्त हो जायगा, ब्रिटिश सम्राट ने लार्ड लिनलिथगो को भारत का वायसराय और गवर्नर जनरल नियुक्त किया है।

इतने पहले घोषणा क्यों हुई !

अगले वायसराय के लिये जो नाम लिये जा रहे थे, उनमें आपका नाम प्रमुखता से आ रहा था और अन्त में हुआ भी यही। आम तौर पर इतने पहले नये वायसराय का नाम घोषित नहीं किया जाता, यह इतने पहले घोषणा हुई है, उसका कारण यह बताया जाता है कि सरकार नये सुधारों को कार्यान्वित करने पर तुली हुई है और इसीलिये वायसराय भी ऐसे व्यक्ति को बनाया गया है, जिसका नये सुधारों के निर्माण में बहुत ज्यादा हाथ रहा है। यूं आप कृषि के विशेषज्ञ माने जाते हैं और ब्रिटेन के मेडिकल रिसर्च कौंसिल तथा इम्पीरियल कालेज आफ साइन्स एण्ड टेकनालाजी के भी चेयरमैन हैं।

हिन्दुस्तान में आप सर्वप्रथम १९२६ में शाही कृषि कमीशन के अध्यक्ष होकर आये थे और १९३३ में भारतीय शासन सुधारों की विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने को ज्वायंट सिलेक्ट कमेटी भी आप की ही अध्यक्षता मे बनी थी।

'मैं कांग्रेस का प्रधान पद स्वीकार नहीं कर सकता'

सेठ जमनालाल बजाज का वक्तव्य

सेठ जमनालाल बजाज ने निम्न वक्तव्य जारी किया है:—

"मुझे अफसोस है कि समाचार पत्रों में यह इत्तिला छप गई है कि कांग्रेस के आगामी इजलास के प्रधान की गद्दी को शोभा देने के लिये सम्भव उम्मीदवार के तौर पर कार्य समिति के सदस्यों में मेरे नाम की भी आपस में चर्चा हुई है। मैं देखता हूं कि मेरे कुछ मित्रों ने इस खबर को ठीक मान लिया है। पूर्व इसके कि यह शरारत आगे बढ़े, मैं बता देना चाहता हूं कि मैं इस बोझ को स्वीकार नहीं कर सकता, अगर अन्य किसी कारण से नहीं तो इस कारण से ही कि मेरा स्वास्थ्य मुझे यह बोझ लेने की आज्ञा नहीं देगा।"

---

१० मरे: अनेक घायल

भीड़ पर गोली चली

लोहारु की उग्र स्थिति

मलेरकोटला में असंतोष अभी तक दबा नहीं कि पंजाब की दूसरी रियासत लोहारु में असंतोष ने उग्र रूप धारण कर लिया है। इसकी आबादी केवल २३३३९ है।

वहां की प्रजा को लगान तथा अन्य भारी करों के विरुद्ध अरसे से शिकायत थी। प्रजा के बहुत निवेदन करने पर भी नवाब ने कोई ध्यान नहीं दिया। अब वे उसके विरुद्ध आंदोलन करने लगे। 'गांव वाले कर देने से इंकार कर रहे हैं' यह कह कर गांव वालों पर नवाब की पुलिस ने आक्रमण कर घेर लिया, हालांकि अक्तूबर में लगान वसूल होना चाहिये। यह भी सुना गया है कि बहुत से गिरफ्तार किये गये, लाठियों और संगीनों से मारे गये। पानी तक वे कुओं से पी नहीं सकते, खेतों में नहीं जा सकते। स्थिति इतनी विषम हो गई कि नवाब ने दिल्ली से फौज बुलाई। ४ अगस्त को गोली चलाई गई। वहां से लोग भाग रहे हैं और भिवानी में शरण ले रहे हैं। १० मरे हैं और बहुत से घायल हुये हैं। वायसराय व पंजाब गवर्नर को तार दिये जा रहे हैं।

(पृष्ठ २५ का शेष)

ओर से यहां ३००० टन पेट्रोल और ३५००० टन होफन आयल आया है। यहां रूसी तेल का यह पहला चालान आया है। सुना है ४०-४० हजार टन माल के आठ जहाज बम्बई आए हैं।

रूमानिया और भारत के बीच व्यापार

सब पाबन्दियां उठा दी गयीं

'हिन्दुस्तान टाइम्स' के शिमला-स्थित सम्वाददाता को ज्ञात हुआ है कि रूमानिया की सरकार ने हाल में अपने यहां भारतीय माल के आयात पर जो पाबन्दियां लगा दी थीं वे सब उठा ली गई हैं।

—सोपर (काश्मीर) की हिन्दू धर्मशाला के मामले में सरकार ने २ हिन्दू और २ सिक्खों की एक कमेटी बनादी है। अतः सिक्खों का मोरचा बन्द है।

हसी-दिल्लगी

अक्लम द आदमी अ ज पति नहीं होते।

वाह अक्लमन्द आदमी पति ही नहीं बनते

* * *

एक गरीब लडका न ईश्वर क नाम पत्र लिखा कि मरे माता पिता क लिए ५) भज दो।

पत्र लाहौर क डड लटर आफिस में पहुच गया। वहां शेरसिह नामी एक सारटर ने उस खोल कर देखा और अपने साथ ल गया। फलत शेर सिह न ३) लडकी क पास भेज दिये।

कुछ महीने बाद उस लडका न पहले का तरह ईश्वर के नाम एक पत्र फिर लिखा मगर इस बार पत्र के अ त में निम्न श द और जोड दिये—

शेरसिंह का मार्फत न भेजना पिछली बार उसने २) रख लिये थे

* * *

एक नामधारी नता को किसी सभा में भाषण दना था। वह अपने एक परम मित्र क पास गया और उसस बोला कि आप भी सभा में मौजूद रहना क्योंकि मुझे आपकी मदद की जरूरत है। वह इस तरह कि जब मी में पानी पीऊ तो आप तालियां बजा कर लोगों स वाह वाह दिलवाना और जब म अपने माथे का पसीना पूछ तभी आप खिल खिला कर हसना ताकि अन्य लोग भी हसें।

* *

दो लाल बुझक्कड दिल्ली स बम्बई के लिए पैदल ही रवाना हो गए। उन्हें यह भी पता नहीं था कि किस प्रदेश स व गुजरेंगे और मार्ग में कौन कौन स शहर आयेंगे व दूर मंजिल दूर कूच सफर करते जा रह थ कि अचानक उन दोनों म इस बात पर बहस छिड गई कि व कौन स इलाके स गुजर रह हैं। व वास्तव में यू० पी० क जंगलों म स जा रहे थ मगर उनमें एक तो यह कहता था कि हम जापान में स गुजर रहे हैं और दूसरा यह कहता था कि बगाल में स गुजर रहे हैं। कारण उन्होंने सडक क किनारे कुछ खाली बोतलें पडी देख ली थीं। उन बोतलों के लेबलों पर 'मेड इन जापान' व 'मेड इन बगाल' लिखा हुआ था। इसी वजह से वे आपस में उपरोक्त प्रकार बहस कर रहे थे।

कोमन वेल्थ एश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड पूना

यह कम्पनी अभी जीवन बीमा क ससार में बच्चा ही है और इस की उत्पत्ति का श्रेय कुछ एक प्रसिद्ध देशभक्त नेताओं का है। गत ४० वर्ष से पूना अपने एक ख्याति प्राप्त बीमा विशेषज्ञ मि० जी० एस० मराठे एम० ए० आई० ए० के लिये प्रसिद्ध था परन्तु इसकी अपनी कोई बीमा कम्पनी सन् १६२८ से पहले न थी। पूना के नेता एक ऐसी सस्था वैज्ञानिक और ठोस मार्ग पर स्थापित करना चाहते थे और इसी उद्देश्य स १ नवम्बर सन् १६२८ को श्री० एन० सी० केलकर की चेयरमैनशिप में उपरोक्त कम्पनी की रजिस्ट्री कराई गई। ससार उस समय कठिन आर्थिक जीवन म स गुजर रहा था फिर भी पहले वर्ष में ही कम्पनी ने ११५६२५० रुपये क प्रोपोजल्स प्राप्त किये तब स बावजूद व्यापारिक मदी क कम्पनी बराबर उन्नति कर रही है।

कम्पनी अपने बीमादारों को हर समय सुविधा व सहयोग देती है व इसने कई एक वैज्ञानिक व नवीन स्कीमें प्रचलित की हैं जिनमें निश्चित मुनाफे की पालिसी की शुरू प्रति ५ वें वर्ष १५ प्रतिशत कम कर दिया जाता है व बीमादारों को अन्त तीन प्रतिनिधि डायरेक्टर के रूप में भेजने का अधिकार है। कम्पनी मराठे डाइरेक्टर स्टाफ में अपने प्रसार का हष्ट स कम्पनी ने अपनी ब्रांच देहली में भी खोली है। कम्पनी गत दिसम्बर पर १२ प्रति हजार का एक बोनस की घोषणा की व आगामी बोनस अगस्त मास में सुनाया जाने वाला है। कम्पनी का प्रबन्ध अति उत्तम व इसकी पूंजी भारतवर्ष में ही बड़े आराम की सिक्योरिटीज में लगी हुई है। बीमा कराने वालों को अन्य कहीं जाने स पूर्व इस कम्पनी का विवरण पत्रिका देख लेना लाभ दायक सिद्ध होगा।

———

सुदूर पूर्व या प्रशान्त महासागर की समस्या

(पृष्ठ ७ का शेष)

सागर में साम्राज्यवाद महासग्राम की सम्भावना भी बनी ही रहती है व्यापारिक व साम्राज्यक दृष्टि से इगलैंड अमेरिका सबका ध्यान न प्रशान्त हैं पर साम्राज्य साम्राज्यवाद तथा पूर्व में जापानी साम्राज्यवादी दोनों एक दूसरे को सन्देह और प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से देख रहे हैं अत जापानियों का रूस उन्हें कभी सह्य नहीं हो सकता इस समय जापान अमेरिका तथा इंगलैंड के बीच परस्पर जो राजनैतिक पैतरे चले जा रहे हैं वे अत्यन्त विचारणीय हैं इनके परिणाम भविष्य ही प्रकट करेगा।

पं० रामगोपाल विद्यालंकार प्रिंटर और पब्लिशर के लिये अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपा।

सचित्र

अर्जुन

वर्ष १

अङ्क ४०

सोमवार २ सितम्बर सन् १९३५ ई० : Monday 2nd September 1935

अबीसीनिया के सम्राट



श्री रासतफारी

अबीसीनिया की सम्राज्ञी



श्रीमती रासतफारी

इटली के तानाशाह



सि० मुसोलिनी

यूरोप के धर्मगुरु



...यस पोप

वार्षिक मूल्य ३॥)] सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार एक अङ्क का मूल्य ≡)

विषय-सूची

———:———

विषय		लेखक	पृष्ठ-संख्या
१ सप्ताह क प्रसिद्ध व्यक्ति			मुखपृष्ठ
२ सप्ताह की डायरी			३
३ सप्ताह का हलचल			४
४ सम्पादकीय			५
५ पांडिचेरा के परमहंस		प देव शर्माजा आचार्य	७
६ उनकी स्मृति में	(कविता)	श्री जगदम्बाप्रसाद	८
साध		श्री उमेश चतुर्वेदी	८
८ किरणक प्रति	'	श्री ज न्नाथप्रसाद	८
९ कैसा दीन किसान		श्री कल्याणकुमार शशि	~
१० हमारी चित्रावलि (१)			९
११ गणेश जी के स्वरूप क सम्बन्ध में—श्री कालीप्रसाद बिरहा			१०
१२ महिला जगत			
आधुनिक स्त्री समाज और सगीत		श्री डा० पी० डी० गोड	१२
पुरुषों से दो-दो बात		श्रीमती गायत्रीदेवी	११
१२ विश्व की सर्वश्रेष्ठ विभूति			१३
१३ श्री चिन्तामणि का भाषण			१४
१४ नाबू क गुण		श्री सत्येन्द्रनाथ 'वैद्य	१६
१५ पतित कौन ? (कहानी)		जगतनारायण माता	१७
१६ भूल क भाग क दो चित्र			१९
१७ साहित्य-समालोचन			२०
१८ लाहोर का गोलीकांड		श्री जयनारायण व्यास	२१
१९ मारवाड राज्य में बेगार		श्री गणेशलाल व्यास	२२
२० इटली और अबीसीनिया क सम्बन्ध		श्री महावीर वि० अ०	२४
२१ व्यापार जगत			२५
२२ सप्ताह का राशिफल		श्री सकर्षण व्यास	२५

——— ———

साप्ताहिक डायरी

२२ अगस्त

—खबर है कि भोपाल के हिंदू कार्यकर्ता महात्मा गांधी के पास डेपुटेशन ले जाकर अपना दुखड़ा सुनायेंगे।

—मद्रास सरकार ने प्रांत भर की म्युनिसिपल्टियों पर यह नया हुक्म जारी किया है कि सरकार की स्वीकृति के बिना ब्रिटिश सम्राट और सम्राज्ञी को छोड़ कर और किसी व्यक्ति के चित्र, फोटो, मूर्ति या बस्ट पर व्यय न किया जाय।

२३ अगस्त

—चांपानेरी (अजमेर) परगने में महाराजा बड़ौदा के एक भागे हुये हाथी ने भीषण उत्पात मचा रखा है। एक आदमी के मरने की खबर है।

—बम्बई हाईकोर्ट ने श्री० सदानन्द की अपील स्वीकार करके सरकार के नाम नोटिस जारी किया है कि 'फ्री प्रेस जर्नल' की जमानत को जब्त करने सबंधी सरकारी आर्डर क्यों न रद्द किया जाय।

—लाहौर हाईकोर्ट ने एक ऐसे नर राक्षस की फांसी की सजा को बहाल रखा जिसने १५ लड़कों के साथ व्यभिचार करके उन्हें कत्ल कर दिया था।

२४ अगस्त

—मथुरा के समीपवर्ती सिक्रम लाई पहाड़ों पर भारी वर्षा के कारण कोदाई कनाल रेलवे स्टेशन तथा रेलवे लाइन बह गई।

—जोधपुर रेलवे के ट्रैवलिंग आडीटर मि० अर्जुनराज मेहता को रेल में कुछेक सिन्धियों ने बिना टिकट सफर करने पर चार्ज वसूल कर लेने के कारण कत्ल कर दिया।

—दिल्ली के श्री० आसफअली एम० एल० ए० ने असेंबली में काडे कानून की कुप्रथा को बंद कराने संबंधी एक बिल पेश करने का नोटिस दिया है।

—शिमला में यह अफवाह गर्म है कि भारत सरकार ने फौज में भर्ती शुरू करदी है।

—जोधपुर के जाली सिक्को केस से स्पेशल ट्रिब्यूनल द्वारा रिहाई प्राप्त अभियुक्त अब तक नहीं छोड़े गये। रिश्तेदारों ने महाराज आदि को तार दे दिए हैं।

—नरसिंहपुर के असि० सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस श्री नीरजकांत चौधरी को, डि० सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस की मातहती में न रहने के कारण नौकरी से मौकूफ कर दिया गया है।

२५ अगस्त

—शेखूपुरा में सिक्ख-मुस्लिम दंगे के संबंध में २५ सिक्खों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

—दमोह के एक मंदिर में १५-१६ हिन्दुओं पर भजन करते हुये जन्माष्टमी के दिन एक मुसलमान लड़के ने नंगी तलवार से आक्रमण कर दिया। लड़का खूनी कपड़े और तलवार सहित गिरफ्तार कर लिया गया।

२६ अगस्त

—फरीदपुर में एक विवाहिता बंगाली स्त्री व १३ भद्रलोक युवकों पर जो युगान्तर नामक एक आतंकवादी संघ के सदस्य बतलाये जाते हैं। चोरी, डाके व हथियार एकत्र करने के जुर्म में मुकदमा शुरू हो गया है।

—कलकत्ता-पुलिस ने वहां के जूट ऐसोसियेशन के ८०० सदस्यों को फाटका का जुआ खेलने के अभियोग में गिरफ्तार करके १००)-१००) की जमानतों पर छोड़ दिया है।

—पं० नकीराम शर्मा ने अपील की है कि ता० ८ सितम्बर को भारत-भर में लोहारू के पीड़ितों के प्रति सहानुभूति दिखाने के लिए लोहारू-दिवस मनाना चाहिये।

—टोकियो (जापान) में नींद की महामारी शुरू हो गई है। इस बीमारी से अबतक ५५ व्यक्ति मर चुके हैं।

—लाहौर के गुरुद्वारा शहीद गञ्ज झगड़े के अन्तिम केस में २ मुसलमानों को ८ मास व पांच मास कड़ी कैद की सजा हो गई। एक अभियुक्त माफी मांगने पर छोड़ दिया गया।

—अलीगढ़ मुस्लिम-यूनिवर्सिटी के निजाम हैदराबाद चान्सलर चुने गये हैं।

—चूहड़खाना (शेखूपुरा) के पास जात्रे गांव में सिख जाटों के दो दलों में झगड़ा हो गया, जिसके कारण ५ सिक्ख भालों का शिकार हो कर मर गये तथा अनेक घायल हुए।

—बी० बी० एन्ड सी० आई० रेलवे की दो बिजली की गाड़ियां ड्राइवरों की सावधानी से लड़तेलड़ते बच गईं।

२७ अगस्त

—नागपुर की खबर है कि महाकौशल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने २४ अगस्त को होशंगाबाद की बैठक में कुछ मामूली संशोधनों के साथ नये कांग्रेस विधान को स्वीकार कर लिया।

—कलकत्ता टाउनहाल में श्री० शरतचन्द्र बोस को कारपोरेशन की ओर से मान-पत्र दिया गया। मान पत्र चांदी के पत्र पर खुदा हुआ था जिस में तिरंगा कांग्रेसी झण्डा और कारपोरेशन का चिन्ह भी अंकित थे।

—अजमेर के नागरिकों ने एक सभा करके यह जोरदार मांग पेश की है कि उर्स के मेले में वेश्याओं को नर्तकियों के नाम से भी न आने दिया जाय।

—अहमदाबाद की सभा में बन्द अभियुक्त रमेश मेहता को बम्बई जाने की इजाजत मिल गई है।

—सीमा प्रान्त का मशहूर नेता चिमनाई आज सुबह मारा गया।

—रंगून की खबर है कि थेटोन जिले के प्रख्यात क्यैक्सियो मन्दिर में इस वर्ष तीसरी बार डाका पड़ा और ७५० तोले से ऊपर सोना लूट लिया गया।

२८ अगस्त

—चावड़ी बाजार दिल्ली में गुलाममुहम्मद नामक एक पठान को किसी ने रात में घायल कर दिया था अस्पताल में जाकर उस की मृत्यु हो गई।

—आगरे के पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल एम० एल० ए० के प्रांतीय कांग्रेस कमेटी पालमेंटरी बोर्ड तथा असेम्बली से स्तीफा दे देने की खबर है।

—देहली के श्री गणपतराय वकील ने मौ० शौकतअली को नोटिस द्वारा सूचित किया है कि उनकी यूरोपियन बेगम ने होटल-बिल अदा नहीं किया। दीवानी दावे की तैयारी हो रही है।

—श्रीनगर में यह अफवाह फैल रही है कि गिलगित पर ब्रिटिश सरकार का प्रभुत्व हो जाने के बाद सरकार लद्दाख को भी हथिया लेगा।

—जर्मनी में नाजी सैनिक रहस्यों का उद्घाटन करने के अपराध में ३९ जर्मनों को आज प्रातःकाल बर्लिन में फांसी दे दी गई।

—यूनान में भूखे लोगों का हाहाकार बढ़ रहा है।

—देवबन्द में अधिकारियों ने श्रीकृष्ण-लीला का जलूस रोक दिया था उसके विरोध में हिन्दू-दूकानदार ता० २३ अगस्त से हड़ताल कर रहे हैं।

२९ अगस्त

—बेलजियम के राजा रानी के साथ एक मोटर दुर्घटना हुई जिस के कारण रानी मर गयी और राजा भी सख्त घायल हुए हैं।

—सीमा प्रान्त में फौजियों पर फिर गोला चलाये जाने की खबर मिली है।

—बड़ा गांव पर आक्रमण के सिलसिले में २३ गोरों पर मुकद्दमा दायर कर दिया गया है।

३० अगस्त

—नवाब बहादुर अब्दुलसमद खां के देहान्त की खबर पाकर उनकी पत्नी भी एकाएक मर गयीं।

—देहली से चार मील दूर एक पुलिस चौकी के जलाये जाने की अप्रामाणिक खबर मिली है।

—माता स्वरूपरानी नेहरू अब शनैः शनैः स्वास्थ्य लाभ कर रही हैं।

—भारत सरकार के भू० पू० व्यापार सदस्य सर जोसफ भोर को काश्मीर का प्रधान मन्त्री बनाने की अफवाह है।

—श्री भूलाभाई देसाई ने, श्री विट्ठलभाई पटेल की वसीयत को पढ़ कर यह सलाह दी है कि अदालत में फैसले से पूर्व श्री सुभाष चन्द्र बोस को रुपया न दिया जाय।

—गोलाबीनानाथ की डकैती के सिलसिले में काशी विद्यापीठ और कांग्रेस के कार्यकर्ता भी गिरफ्तार हुए हैं।

—असेम्बली के अध्यक्ष ने श्री गिरि का अबीसीनिया-सम्बन्धी प्रस्ताव पेश किये जाने से इन्कार कर दिया।

हैदराबाद में दंगा

६७ घायल

श्रीकृष्ण जी के रथ जलूस पर हिन्दुओं व मुसलमानों में सिकन्दराबाद (दक्षिण) में उपद्रव हो गया। वह दो दिन तक रहा। मुसलमानों ने जलूस को रोक लिया और हमला कर दिया। पुलिस मौके पर पहुंची हिन्दुओं ने हड़ताल कर दी। बहुत से हिन्दू शहर छोड़ कर भाग भी गये। उपद्रवियों ने दुकानें लूट लीं। फौजों को भी तयार रहने का हुक्म दिया गया। २६ अगस्त को कुछ हिन्दू दुकानें खुलीं और दो तीन दिन तक सब दुकानें खुल गईं। इस उपद्रव में ६७ के करीब घायल हुए हैं और ८ मरे भी हैं।

तलवार, बिछुए व हाकियां कटारियां के अलावा १००० लाठियां भी उपद्रियों से मिली हैं।

सप्ताह की हलचल

इटली ब्रिटेन से झगड़ा नहीं करेगा ?

मुसोलिनी की महत्वपूर्ण घोषणा

१५ भारतीय व ब्रिटिश गिरफ्तार

अबीसीनिया के सम्राट व सम्राज्ञी का उपवास

——:**:——

अबीसीनिया और इटली के पारस्परिक युद्ध की सम्भावना बढ़ती जा रही है। इटली अपनी सेना बराबर अफ्रीका भेज रहा है। ऐसा मालूम होता है कि वह सितम्बर के अन्त तक अपनी पूरी सेना वहां भेज देना चाहता है, जिससे अक्टूबर में युद्ध प्रारम्भ किया जा सके।

अभी गत २७ तारीख को बालआर्नो में इटैलियन सेनाओं का एक बृहत् प्रदर्शन भी किया। इसी दिन इटैलियन मंत्री मण्डल की महत्वपूर्ण बैठक हुई। इसके बाद मुसोलिनी ने एक बहुत महत्वपूर्ण घोषणा की है। जिसका सारांश निम्न लिखित है—

अबीसीनिया में इटली जो कुछ करना चाहता है उसमें ब्रिटिश सरकार को दखल की कोई जरूरत नहीं है। इटली ब्रिटेन से कोई मुखालफत नहीं करना चाहता क्योंकि यूरोप की शांति के लिये ब्रिटेन के सहयोग का जो महत्व है उसे वह महसूस करता है।

४ सितम्बर की जिनेवा की बैठक में इटली की सरकार अपना वक्तव्य पेश करेगी, जिसमें अबीसीनिया सम्बन्धी अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण होगा और एक लम्बे वक्तव्य द्वारा इटली अबीसीनिया के सम्बन्धों का इतिहास बतलाया जायगा।

अन्त में रक्षा के साथ यह भी कह दिया गया है कि—

अपने व्यापक हितों की रक्षा इटली आखिर तक करना चाहता है। उसका खयाल है कि इस औपनिवेशिक बात को युरोपीय परिस्थिति पर असर नहीं पड़ना चाहिये। परन्तु यदि कोई राष्ट्र इटली को अबीसीनिया में जहां कि अत्यन्त अत्याचारपूर्ण दासता का ताण्डव है और दकियानूसी रहन सहन बहुत है, व्यवस्था स्थापित करने से रोकेगा तो वह अपने सिर ऐसे युद्ध का खतरा लेगा जो विश्वव्यापी हो जायगा।

इस प्रकार जहां उसने ब्रिटेन से बैर न बांधने का आश्वासन दिया है वहां अबीसीनियां के मामले में पीठ न फेरने की दृढ़ता भी प्रकट की है। यह भी कह सकते हैं कि युद्ध की पूरी तैयारियां वह कर चुका है और फसल भी इस साल खूब हुई है। खास कर गेहूं और चावल जिससे खाद्य पदार्थों की भी उनको कठिनाई नहीं होगी।

सैन्य प्रदर्शन के अन्तिम दिन सीन्योर मुसोलिनी दिन भर बड़े उत्साह में रहा और एक लाल मोटर में बड़ी तेजी के साथ पहाड़ों के ऊपर नीचे दौड़ता रहा, यहां तक कि पत्रकार लोग बहुत कोशिश करने पर भी उस की रफ्तार को नहीं पहुंच सके। बोलज्जानो नगर में, जो कि सैन्य प्रदर्शन का केन्द्र था रातों-रात मुसोलिनी की तसवीरें व महायुद्ध में इटली ने जो भाग लिया था उसके द्योतक पोस्टर इतनी तादाद में चिपका दिये गए कि सवेरे उठ कर लोगों ने देखा तो घरों की खिड़कियां भी नजर न आई।

यह भी खबर है कि इटली सरकार ने १५ भारतीय व ब्रिटिश व्यापारियों को मसावा (इरिट्रिया) में गिरफ्तार कर लिया है। उन पर अपराध यह लगाया गया है कि उन्होंने अदन की कुछ व्यापारिक संस्थाओं को लिखा था कि वे इटली के प्रदेश में माल न भेजें।

सब युरोपियन राष्ट्रों की आंखें ४ सितम्बर को होने वाली राष्ट्र संघ की बैठक पर लगी हैं। सभी सरकारें इसके लिये अपनी रिपोर्ट तैयार कर रही हैं। इटली भी अपने मामले को चित्रों, नकशों व अन्य कागजों द्वारा पेश करने की पूरी तैयारी कर रहा है। फ्रांस, ब्रिटेन ने भी रिपोर्ट अत्यन्त सावधानी से तैयारी की हैं। मास्को, स्वीडन, डेनमार्क और फिनलैंड की सरकारें भी सोच रही हैं कि ४ सितम्बर को क्या रुख अख्तियार किया जाय।

इधर अबीसीनिया भी युद्ध को अवश्यम्भावी देख कर तैयारियां कर रहा है। शान्ति रक्षा के लिये अबीसीनिया के सम्राट व सम्राज्ञी ने शान्ति की प्रार्थना के लिये एक मास तक का उपवास शुरू किया है। साम्राज्ञी पहले भी १६ दिन का उपवास रख चुकी है।

विदेशी लोग अबीसीनिया छोड़ रहे हैं। अबीसीनिया बैंक पर विदेशी सिक्कों की बड़ी मांग है। अतः उक्त बैंक ने विदेशी मुद्रा का देना सर्वथा बन्द कर दिया है। इटालियन-दूतावास अपने कागजात को वहां से हटा रहा है। और विदेशी लोग भी अपना सामान अपने २ दूतावास में भेज रहे हैं।

——————

बरमा, बंगाल, बिहार व सिंध में बाढ़

हजारों आदमी बे घरबार

फसल को भारी नुकसान

इस सप्ताह बाढ़ ने फिर अनेक स्थानों पर आक्रमण किया है।

ब्रह्मपुत्र नदी में बाढ़ आने से डिब्रूगढ़ नामक शहर भारी खतरे में है। सिराजगंज के सिविल कोर्ट व अन्य सरकारी इमारतें पानी से घिर गई हैं। दामोदर नदी में फिर बाढ़ आगई है। पहली बाढ़ से ही १०००० व्यक्ति बेघरबार होगये थे। अब की बाढ़ ने और खतरा पहुंचाया है। रानीनगर दुराही और दुमकार नामक स्थानों का समस्त इलाका बाढ़ के कारण पानी में डूब गया है। धान के खेतों को सख्त नुकसान हुआ है।

बिहार में देहरी रोहतास रेलवे का एक पुल भी खतम होगया है। बहुत से गांव जल निमग्न हो गये हैं।

पंजाब में सिन्धु नदी में बाढ़ आगई है। सक्खर जिले के १४ गांव पानी में डूब गये हैं।

बंगाल में पद्मा नदी ने गजब ढा रखा है। देहातों से सर्वनाश की खबरें आ रही हैं। अनुमानतः ११३ गांवों का बुरी तरह नाश हुआ है और ८९२६ घर बह गये हैं। १८६० पशुओं के मरने की भी खबर है। पद्मा नदी ने पूर्वी बंगाल के हार ग्वालन्दो में आतंक का राज्य उपस्थित कर दिया है। मंडी जलनिमग्न हो गई है। पानी की सतह १९२४ की बाढ़ से केवल ६ इंच नीचे है।

बरमा में गोदामों में जमाशुदा धान को बहुत नुकसान पहुंचा है। १६००० बोरे चावल नष्ट हो गया है। पेगू व थरावदी में भी बाढ़ आने से श्वेगू शहर का आधा हिस्सा जलनिमग्न हो गया है।

मुजफ्फरपुर के भी खतरे में होने की सम्भावना है। सीतामढ़ी में तो पानी ही पानी है।

कृपाण बनाम तलवार

पंजाब में दो आन्दोलन

पंजाब की स्थिति सुधरने के स्थान पर बिगड़ती ही जा रही है। एक तरफ सिखों ने एक से अधिक कृपाण रखने का आन्दोलन शुरू किया है। सिखों का कहना है कि वे अपने धर्म के अनुसार एक से अधिक कृपाण भी रख सकते हैं। कई सिखों पर एक से अधिक कृपाण रखने पर मुकद्दमे भी किये गये। किसी जज ने तो सजा दे दी और किसी ने रिहा कर दिया। अब यह मामला हाई-कोर्ट में पेश है। पंजाब सरकार ने यह घोषणा प्रकाशित की है कि जब तक हाई-कोर्ट का फैसला नहीं हो जाता, तब तक किसी सिख पर मुकद्दमा न चलाया जाय।

इधर मुसलमानों ने भी तलवार आन्दोलन चलाया है। जैसे सिक्खों को कृपाण रखने की छूट है वैसे ही मुसलमानों को तलवार रखने की छूट दे दी जाय।

आल इंडिया मजलिस अहरार की कार्य-समिति ने पंजाब कौंसिल के अपने प्रतिनिधियों (सदस्यों) को हिदायत दी है कि वहां वे आर्म्स एक्ट में ऐसा संशोधन कराने का प्रयत्न करें। इस के लिये पंजाब भर में ८ सितम्बर को तलवार दिवस मनाने की घोषणा की गई है।

पैसा और वक्त क्यों खो डालते हो ?

मिरक्युलस ग्लास

कैलाश पर्वत के प्राप्त दैवी-शक्ति वाली औषधियों से यह ग्लास बनाया है। उसको सुन्दर बक्स में रखा है। इस ग्लास में कोई भी मनुष्य अपना भूत, वर्तमान तथा भविष्य की हालत जान सकता है। मृत मनुष्यों के साथ बातचीत कर सकता है, गुप्त द्रव्य कहां है यह भी जान सकता है तथा प्रेम अदालती दावा, अमेरिकन फ्यूचर, नौकरी, धन्धा, परीक्षा का परिणाम वगैरह में हम विजय पा सकते हैं, जिसमें सुख तन्दुरुस्ती और वैभव मिल सकता है। इस जगत में दुखियों का वह सच्चा मित्र बना रहता है।

अगर फायदा न हो तो पैकिंग और पोस्टेज को छोड़ कर बाकी दाम वापस दिया जायगा। हरेक खरीद सके, इस लिये कीमत नाममात्र रु० ३) परदेश के लिये ५ शिलिंग और १ डालर अमेरिका से पहिले भेजना, ८ आना अलग। (१६)

मैनेजर स्पीरिचुअल ब्यूरो मधु, रोड [१०१] देवलाली।

अर्जुन

सोमवार ता० २ सितम्बर १९३५ ई०

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

रचनात्मक कार्यक्रम को न भूलो

जब पहले पहल कांग्रेस कार्य-कारिणी समिति ने पटना में अपनी असहयोग की नीति छोड़ कर कौंसिल-प्रवेश की नीति को अपनाने की योजना पर विचार प्रारम्भ किया था, तभी कौंसिल-प्रवेश विरोधियों ने इस का विरोध करते हुए कहा था कि यदि कांग्रेस असेम्बली व कौंसिलों के जाल में फस गयी, तो रचनात्मक कार्यक्रम धूल में मिल जायगा। आज डेढ़ साल बाद कांग्रेस के कार्य पर दृष्टिपात करने से खेद के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि उस समय का प्रदर्शित भय निराधार नहीं था। यद्यपि उस समय कांग्रेसी नेताओं ने इस भय का तीव्र प्रतिवाद किया था और बम्बई कांग्रेस ने भी देश के सामने एक व्यापक रचनात्मक कार्यक्रम रखा था, तथापि कार्यक्रम का वह सब उत्साह कांग्रेस की समाप्ति के बाद आने वाले चुनाव संग्राम में ही रूपान्तरित हो गया और चुनाव में सफलता के बाद सब कांग्रेसी कार्यकर्ताओं पर विजय का ऐसा मद छा गया कि वे यह भूल गये कि विशाल रचनात्मक कार्यक्रम उन के सामने पड़ा हुआ है। मानो असेम्बली चुनाव की सफलता ही उनका ध्येय हो। असेम्बलीप्रवेश तो वस्तुतः हमारे स्वतन्त्र्यसंग्राम का एक आवश्यक, परन्तु छोटासा मोरचा ही है। इस से अधिक उसे महत्व देना घातक है। लेकिन आज की स्थिति यह है कि कां० पार्लमेंटरी बोर्ड ही कांग्रेस का सर्वेसर्वा बना रहा है। आज प्रत्येक प्रश्न पर इसी बोर्ड की दृष्टि से ही विचार किया जाने लगा है। कांग्रेस का अध्यक्ष कौन हो, इस पर विचार करते हुए हमें यह सोचना पड़ता है कि वह पार्लमेंटरी बोर्ड के कार्य का संचालन अच्छी तरह कर सके। पहले यह खयाल किया जाता था कि पिछले असेम्बलीनिर्वाचन के बाद कांग्रेसी कार्यकर्ता कुछ ठोस काम करेंगे, लेकिन ग्राम प्रचार मण्डलों का एकाध बार नाम तो सुनाई पड़ा, पर वह स्थायी न रह सका। अब नये शासन-विधान और कौंसिल-प्रवेश तथा पद-ग्रहण की चर्चा इतने जोरों से उठ खड़ी हुई है कि रचनात्मक कार्य-क्रम की आवाज पहले तो कोई उठाने का साहस ही नहीं करता और यदि कोई उठावे भी, तो इसमें पूर्ण संदेह है कि वह कौंसिल-प्रवेश के महानाद में विलुप्त होजायगी। पार्लमेंटरी भावना हमारे अन्दर इतनी घर कर चुकी है कि हम सभी संस्थाओं पर अधिकार करने के लिए उत्सुक हो रहे हैं। सभी प्रांतीय और जिला कांग्रेस कमेटियां स्थानीय संस्थाओं के चुनाव की ओर शोर से तैयारियां करने लगी हैं। और कोई कार्यक्रम आज कांग्रेस के सामने नहीं है।

हम यह नहीं कहना चाहते कि कौंसिल-प्रवेश या अन्य संस्थाओं पर अधिकार करना अनुचित है और कांग्रेस को इस ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। हम स्वयं इन कालमों में कौंसिल-प्रवेश और चुनाव की तैयारी का समर्थन करते रहे हैं। कौंसिल प्रवेश आवश्यक, है और इसकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। परन्तु हमारा कहना यह है कि कौंसिल प्रवेश को हम उचित से अधिक महत्व न दे दें, उसकी जितनी आवश्यकता है, उससे अधिक आवश्यकता हम न कूतें। कौंसिल में प्रवेश कर सरकार से मोरचा लेना हमारे स्वातन्त्र्य-संग्राम का एक छोटा सा अंग है। यदि वह व्यापक होकर कांग्रेस के अन्य कार्य-क्रमों को हमारी दृष्टि से ओझल कर दे तो यह अत्यन्त हानिप्रद होगा, और आज दुख से यह स्वीकार करना पड़ता है कि पार्लमेंटरी बोर्ड ने पहाड़ सा रूप धारण कर सब कार्य-क्रमों को हमारी दृष्टिसे ओझल कर दिया है।

आज कांग्रेसियों का ध्यान न किसानों के संगठन की ओर है और न मजदूरों के। ग्रामप्रचार व संगठन के कार्य का श्रीगणेश तो हुआ, लेकिन कांग्रेसी अपना ध्यान इस आवश्यक दिशा में स्थिर न रख सके। कांग्रेस के जितने सदस्य हर एक प्रान्त को बनाने चाहिये थे, उधर भी ध्यान बहुत कम दिया गया। कांग्रेस का केवल संग्राम के समय ही राष्ट्र का नेतृत्व नहीं करना उसे तो सम्पूर्ण समय राष्ट्र को आदेश देने हैं और सारे साल के लिये एक नीति स्थिर करनी है। कांग्रेस को यह न भूलना चाहिये कि उसे नये भारतीय राष्ट्र का निर्माण करना है और वह निर्माण युद्ध के दिनों में नहीं, सन्धिकाल में हो सकता है। ग्रामीणों की सेवा, उन में स्वाभिमान के भाव भरना, उन के दुख दर्द दूर करना, मजदूरों का संगठन और पूंजीपतियों के अत्याचारों से उनका त्राण ये सब ऐसे कार्य हैं, जिनकी ओर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है। इनके अतिरिक्त सर्व साधारण जनता को राष्ट्रीयता और राजनीतिक सिद्धान्तों की शिक्षा देना भी कांग्रेस का मुख्य कर्तव्य है। अभी हमारा संगठन ही बहुत ढीला है। बम्बई कांग्रेस ने जो नया संगठन बनाया था, उसके अनुसार कितनी प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों ने अपना ऐसा सुन्दर संगठन किया है, जिस पर वे गर्व कर सकें। कांग्रेस को कुछ ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि वह सर्वसाधारण जनता के जीवन से सम्बद्ध रहे, जनता प्रत्येक प्रश्न पर कांग्रेस के दृष्टिकोण और आदेश देखने की प्रतीक्षा करे।

यह सब आवश्यक कार्य हैं, जिन की ओर कांग्रेस के नेताओं को अपना ध्यान विशेष रूप से देना चाहिये। कांग्रेस के नेताओं से हम अपनी पूर्णशक्ति के साथ अनुरोध करना चाहते हैं कि वे पार्लमेंटरी कार्य को करें, परन्तु उसे इतना अधिक महत्व न दें, जिससे कांग्रेस का समस्त रचनात्मक कार्यक्रम उपेक्षित हो जाय। असेम्बली-प्रवेश आखिर एक साधन ही है, साध्य का स्थान वह नहीं ले सकता। सत्याग्रह आज स्थगित हो गया है। इस लिये सभी प्रगतिशील कार्य स्थगित कर दिये जावें, यह वे नहीं सोचते होंगे, लेकिन आज स्थिति तो यही है। ग्रामीणों की ओर कांग्रेस ने बहुत कम ध्यान दिया है। उन की सेवा करना यद्यपि अत्यन्त कठिन है, तथापि अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कांग्रेस का भारतीय जनता के हृदय तक, झोंपड़ियों तक पहुंचने की आवश्यकता है, असेम्बली और कौंसिलों के भव्य और शानदार भवनों में भारत का हृदय नहीं है, वे तो सरकारी किले हैं, उन में उससे मोरचा लेते हुए यदि हम उन्हें ही भूल जावें, जिनके हम प्रतिनिधि होने का दावा करते हैं, जिन के लिये हम लड़ रहे हैं, तो यह दूरदर्शिता न होगी। क्या कांग्रेसी कार्यकर्त्ता इन पंक्तियों पर ध्यान देंगे?

सम्पादकीय विचार

मुसलमानों में साम्प्रदायिकता

मुसलमानों और खास कर पंजाब के मुसलमानों में बढ़ती हुई सांप्रदायिक मनोवृत्ति जो भीषण रूप धारण कर रही है, वह आज सच-मुच अत्यंत विचारणीय गंभीर हो गया है, उसकी अधिक समय तक उपेक्षा नहीं की जा सकती। अभी शहीदगंज गुरुद्वारा आन्दोलन किसी तरह शान्त ही हुआ था कि पीर कक्कूशाह के मकबरे को लेकर एक दूसरा झगड़ा खड़ा कर दिया गया है। खलीफ लतीफ गाबा एम० एल० ए० जैसे प्रमुख व्यक्ति इसमें उनका साथ दे रहे हैं। अभी यह आन्दोलन चल ही रहा है कि तलवार रखने के नाम पर एक नया आन्दोलन जारी किया गया है। सिखों को जैसे कृपाण रखने की छूट है, वैसे ही मुसलमान भी तलवार रखना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को आत्मरक्षार्थ शस्त्रास्त्र रखने का अधिकार होना चाहिये और इस

लिये मुसलमानों का इस मांग को अनुचित नहीं ठहरा सकते, लेकिन मुसलमानों के वर्तमान आन्दोलन की तह में जो मनोवृत्ति काम कर रही है, वह साम्प्रदायिक और विद्वेषपूर्ण है, सिख रखते हैं तो मुसलमान क्यों न रखें, इस प्रवृत्ति को बढ़ाया जाय तो सम्पूर्ण राष्ट्र में एक विद्वेषाग्नि फैल जायगी। फिर मुसलमानों का यह आन्दोलन अव्यवहारिक भी है। सिखों के धर्मगुरु कृपाण रखने का आदेश दे गये। अब मुसलमान भी यदि एक नया पीर बना कर नया मत बदल लें और वह शस्त्र रखने का आदेश दे, तो शायद उन की समस्या सुलझ सकती है। वर्तमान परिस्थिति में तो इस्लाम के नाम पर शस्त्रग्रहण की छूट मिल नहीं सकती। क्या मुसलमान नेता साम्प्रदायिकता की अग्नि को बुझाने का प्रयत्न करेंगे?

——::——

निष्पक्ष निपटारे की मांग

सम्पूर्ण लोकमत को ठुकरा कर ब्रिटिश सरकार ने निश्चित कर लिया है कि बरमा को भारत से पृथक् किया जाय। पृथक् करण की स्थिति में भारत और बर्मा के पारस्परिक आर्थिक सम्बन्धों का निपटारा कैसे किया जाय, यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न था। इस प्रश्न के निर्णय से भारत और बरमा के हितों का अत्यन्त सम्बन्ध है, इसमें किसी का इन्कार न होगा। लेकिन हमारे यहाँ जो हो, थोड़ा है। इन आर्थिक प्रश्नों का निपटारा करने के लिये सरकार ने जो ट्रिब्यूनल बिठाया था उसमें न तो एक भारतीय रखा गया और न कोई बरमी अर्थात् जिन दो राष्ट्रों का आपसी प्रश्न था, उन दोनों को ही अलग करके निपटारा कर दिया गया। ट्रिब्यूनल में तीनों अंग्रेज ही रखे गये। इसका स्वाभाविक परिणाम यह होना था कि उनकी रिपोर्ट अत्यंत असंतोषप्रद निकले। निकली भी असंतोषजनक। ब्रिटिश नागरिक भारतीय दृष्टि से विचार कर ही नहीं सकता। उसपर तो करों का भार बढ़ना या हल्का होना नहीं। वह उस प्रश्न के साथ एकात्मता अनुभव ही नहीं कर सकता। अब फैडरेशन आफ इण्डियन चैम्बर्स आफ कामर्स ने इस ट्रिब्यूनल में अविश्वास प्रकट कर एक निष्पक्ष ट्रिब्यूनल जिस में भारत और बरमा के लोकमत के सच्चे प्रतिनिधि हों, बिठाने की मांग की है। लेकिन क्या सरकार से इस मांग को स्वीकृत करने की आशा की जाय।

——::——

सार्वदेशिक सभा का फतवा

पंजाब के कुछ उर्दू पत्रों में पं० बुद्धदेव जी को लेकर एक खासा विवाद छिड़ गया है। ऋषि दयानन्द की मूर्ति की आर्यसमाज पूजा नहीं करता, यह बताने के लिये उन्होंने ऋषि के चित्र पर पांव रख दिया था। इसी बात का बतंगड़ बना कर कुछ व्यक्तियों ने उनकी सब सेवाओं को भुला कर उनके विरुद्ध विष उगलना शुरू कर दिया। यह स्पष्ट है कि जिस भद्दे तरीके से यह आन्दोलन चलाया गया है, वह अत्यन्त अनुचित, निन्दनीय और स्वार्थप्रेरित है। यदि यह आन्दोलन उन्हीं कुछ खास व्यक्तियों तक रहता, तो शायद हम इसकी चर्चा करना भी अनावश्यक समझते, परन्तु आर्यसमाज के दुर्भाग्य से उन्हीं लोगों ने सार्वदेशिक सभा से भी पं० बुद्धदेव जी के विरुद्ध प्रस्ताव पास करा दिया। सार्वदेशिक सभा आज इतनी शिथिल है कि उसका भारतीय समाजों पर कोई प्रभाव नहीं है, लेकिन फिर भी उसकी कानूनी स्थिति उच्च है। इस लिये उसकी चर्चा आवश्यक है। सार्वदेशिक सभा की बैठक में प्रायः वही सदस्य उपस्थित थे, जो इस आन्दोलन के प्रवर्तक हैं। अच्छा होता कि अन्य सदस्यों के अभाव में यह प्रश्न स्थगित कर दिया जाता। दूसरी मजेदार बात यह है कि पं० बुद्धदेव जी के विरुद्ध फतवा देने से पूर्व उन का वक्तव्य सुना नहीं गया। ११ ता० को सभा की बैठक थी और १२ ता० को पं० बुद्धदेव जी को सभा में उपस्थित होने का पत्र मिला। एक साधारण आदमी भी यह समझ सकता है कि प्रतिवादी की बात सुने। बिना निर्णय देना अनुचित है। सार्वदेशिक सभा ने वही कर के अपनी प्रतिष्ठा को हानि ही की है। सभा के अधिकारियों का कर्तव्य है कि वह अपने निर्णय पर पुनर्विचार करें और इस तरह जल्दबाजी कर के अपनी स्थिति को सामाजिक जगत में उपहासास्पद न बनावें।

——

स्वास्थ्य की कामना

श्रीमती कमला नेहरू के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में यूरोप से आने वाले समाचारों ने देश को एक बार चिन्तित कर दिया है। वे बहुत समय से अस्वस्थ थीं और भारत में स्वास्थ्य-लाभ होते न देख कर उन्हें यूरोप जाना पड़ा। उनके वीर पति और युवक भारत के सम्राट पंडित जवाहरलाल नेहरू सीखचों में कैद हैं। वे उनकी चिकित्सा करा नहीं सकते। नेहरू परिवार ने राष्ट्र के लिए अपने को उत्सर्ग कर दिया है। वह राष्ट्र का है और इस लिए उस परिवार की आपत्ति भारतीय राष्ट्र की आपत्ति है। हम भी 'अर्जुन' के पाठकों के साथ मंगलमय भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वे श्रीमती कमला नेहरू को स्वास्थ्य दें, ताकि राष्ट्र की आपत्ति दूर हो सके।

——

आत्म-रक्षा की सीमा

ईसाई जगत् के धर्म-गुरु पोप ने शान्ति-रक्षा के लिए वक्तव्य प्रकाशित करते हुए एक बहुत अच्छी बात कही है। आजकल जो भी राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण की तैयारी करता है, वह अपनी तैयारियों के समर्थन में एक ही युक्ति प्रायः दिया करता है कि आत्म-रक्षा के लिए ही उसे सब तैयारियाँ करनी पड़ रही हैं। भीषण से भीषण तैयारियों को आत्म-रक्षा के नाम से उचित ठहराया जाने लगा है। पोप ने इस बहाने का जवाब देते हुए ठीक ही कहा है कि "आखिर आत्म-रक्षा की कोई सीमा तो नियत करनी चाहिये।" आज तो आत्म रक्षा के नाम से सब कुछ ही किया जाने लगा है। इटली एबीसीनिया पर आक्रमण भी कर रहा है, तो अपने हितों की रक्षा के नाम पर। वस्तुतः जब तक 'आत्म-रक्षा' की सीमा नहीं नियत की जा-यगी, तब तक यह बहाना बराबर जारी रहेगा।

——

लोहारू की स्थिति

लोहारू की स्थिति अभी तक नहीं सुधरी। आज भी वहाँ से अ-सन्तोषजनक समाचार आ रहे हैं। लोहारू के अधिकारी किसान आंदोलन को, जो विशुद्ध आर्थिक प्रश्न है, जाट आंदोलन कहकर और उसे सीकर के आंदोलन से सम्बद्ध बता कर छूट नहीं सकते। अधिकारियों का यह आरोप मिथ्या है, यह पहले अनेक जाट नेता कह चुके हैं और अब श्री जमनालाल बजाज ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट शब्दों द्वारा इस आरोप का खण्डन कर दिया है। लोहारू का आंदोलन विशुद्ध आर्थिक आंदोलन है। किसानों पर करों का भार इतना अधिक है कि वे उसे बरदाश्त नहीं कर सकते। लोहारू की पंचायत में महाजन, ब्राह्मण और राजपूत व मुसलमान भी सम्मिलित हैं। पकड़े गये और आहत व्यक्तियों में गैरजाट भी हैं। किसानों की शिकायतें दूर न करके उनपर अत्याचार व दमन जारी रखने की नीति कभी अन्त में सफल नहीं हुई, यह अधिकारियों को समझ लेना चाहिये। किसी निम्न आदर्श को लेकर चलाया गया आंदोलन दबाया जा सकता है, परन्तु उच्च आदर्श को लेकर जैसा कि लोहारू का आंदोलन है—चलाया गया आंदोलन दब नहीं सकता। क्या लोहारू के अधिकारी हठ और दुराग्रह की नीति को त्याग कर उदारता से काम लेंगे?

——

पांडिचरी का परमहंस

(ले०—श्रीयुत पं० देवशर्माजी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी)

गत मई मास में आप पांडिचरी के परमहंस श्री अरविन्द घोष के यहाँ रह कर वापस आये थे। हमारे विशेष अनुरोध करने पर उन्होंने यह लेख लिखा है। आशा है, पाठक मनोयोग से पढ़ेंगे।

श्री अरविन्द घोष उन महापुरुषों में से हैं जो संसार में कभी कभी उत्पन्न होते हैं। उनकी महापुरुषता अभी संसार को मालूम नहीं है। मालूम होने को है, कम से कम मेरी ऐसी ही श्रद्धा है।

ऐसे महापुरुष के विषय में भी अपने भारतवर्ष में और विशेषतः उत्तरी भारत में लोगों को बहुत कम ज्ञान है। इसका कारण यह है कि वे इस इश्तिहारबाज़ी के युग में भी इश्तिहार (प्रोपेगन्डा) में जरा भी विश्वास नहीं रखते हैं। सत्य में—सत्य स्वरूप-परमेश्वर में—प्रतिष्ठित होने के कारण उन्हें संसार की और किसी भी वस्तु की परवाह नहीं है। इश्तिहार की तो उन्हें जरा भी परवाह नहीं है। यही कारण है कि हम लोग इनके विषय में कुछ भी नहीं जानते हैं, अधूरा जानते हैं, या भ्रम पूर्ण बातें जानते हैं।

गत वसन्त ऋतु में मुझे पांडिचरी के श्री अरविन्द आश्रम में जाकर दो मास तक रहने का सुअवसर परमेश्वर की कृपा से मिला। इस दो मास के परिचय के आधार पर ही इस लेख में मैं श्री अरविन्द के विषय में कुछ जानकारी पाठकों को देने का यत्न करूंगा।

श्री अरविन्द की सिद्धि

सरकार उनको एक घोर अनार्किस्ट करार दे चुकी है। आम जनता उनको एक महान देश-भक्त करके पूजती है। इसी भारते उनको ७-८ बार कांग्रेस के प्रधान पद के लिये निश्चित किया जा चुका है। पर वे अब इस स्थिति से ऊपर हो चुके हैं। अब से पचीस वर्ष पूर्व वे बराबर अपने तीन पागलपन बताते हुए आये थे। पर शीघ्र ही उनके दो पागलपन—अर्थात् एक अपना सर्वस्व भारत माता व जगन्माता को सौंप देने का पागलपन और दूसरा भारत माता को बंधन मुक्त करने का पागलपन—तीसरे पागलपन में अर्थात् भगवान् के साक्षात्कार के पागलपन में समा गये। पांडिचरी पहुंच कर वे पूरी तरह योग साधन में लीन हो गये। पाठकों को आश्चर्य होगा कि गत २० वर्षों से वे अपने मकान तक से बाहर नहीं निकले। वे योग के जिस ध्येय के लिए साधना कर रहे थे उस में उनको सन् १९२६ के २८ नवम्बर को सफलता प्राप्त हुई। तभी से श्री अरविन्द ने अन्यों को योग सिखाने का कार्य भी अपने ऊपर लिया। और तभी से श्री अरविन्द योग आश्रम का आरम्भ हुआ। इस से पहले कोई उनका बाकायदा आश्रम न था।

माताजी

श्री अरविन्द के योगाश्रम का वर्णन वहां की श्रीमाताजी के वर्णन के बिना नहीं हो सकता। वहां पर एक फ्रेंच महिला रहती है। जिनका नाम मीरा है। आश्रम में उन्हें सब माता, या, मदर (mother) नाम से ही जानते व पुकारते हैं। उनकी आध्यात्मिक स्थिति श्री अरविन्द की स्थिति के बराबर ही समझी जाती है। जब श्री अरविन्द केवल साधना में लगे हुए थे तब भी कई लोग उन के साथ साधना के लिए आकर रहते थे। उन्हीं दिनों ये माताजी लगभग १९१३ में पांडिचरी में आई ये जापान में भी रहे हैं और भारत में भी आयीं भारत आकर पांडेचेरी में अचानक ही आयीं। ये भी प्रारम्भ से ही आध्यात्मिक साधना में थीं। यहां श्री अरविन्द से मिलीं और आश्रम में रहने लगीं। सन १४ में योरोपीय युद्ध के कारण इन्हें फ्रांस लौट जाना पड़ा। युद्ध के बाद फिर से यहां आईं। 'आर्य' पत्र इन्हीं के आग्रह से श्री अरविन्द ने निकाला था। धीरे २ श्री अरविन्द को यह मालूम हुआ कि इन माताजी की आध्यात्मिक स्थिति विशेष उन्नत है। अब तो जैसा कि मैंने ऊपर कहा है, दोनों की स्थिति एक समझी जाती है। बल्कि यहां तक समझा जाता है कि जो बात श्री अरविन्द को कही जाय या इनको कही जाय वह बात दोनों को मालूम होजाती है। जब से आश्रम प्रारम्भ हुआ है, आश्रम की सब बाहरी व्यवस्था ये माताजी ही करती हैं। श्री अरविन्द तब से न किसी से बात करते हैं, और न मिलते हैं, माताजी ही सब काम करती हैं। मानों ये माताजी प्रकृति हैं और श्री अरविन्द पुरुष हैं।

आम लोगों में फैला हुआ है कि ये माताजी पाल रिचार्ड की धर्मपत्नी हैं। पर यह भ्रम है। वे तो अविवाहिता हैं।

श्री अरविन्द के दर्शन

जैसा मैंने अभी कहा है कि श्री अरविन्द २८ नवम्बर १९२६ से सर्वथा एकांत सेवी होगये हैं, तब से उनसे न कोई मिल सकता है, न देख सकता है, बात तो करेगा ही क्या। माताजी ही एक मात्र अपवाद हैं। पर उन्हें भी बहुत ही कम मिलने की आवश्यकता होती है। तो भी आम लोगों के लाभ के लिये यह व्यवस्था की गई है कि वर्ष में तीन दिन उनके दर्शन किये जा सकते हैं। वे तीन दिन निम्नलिखित हैं—

२१ फरवरी (माताजी का जन्म दिन)

१५ अगस्त (श्री अरविन्द का जन्म दिन)

२८ नवम्बर (श्री अरविन्द की सिद्धि का दिन)

इन तीन दिन जो कोई उनके दर्शन करना चाहें उन्हें पहिले से दर्शन की आज्ञा प्राप्त कर लेनी चाहिए। बिना आज्ञा प्राप्त किए किसी को वहां नहीं जाना चाहिए। ऐसे ही जाना व्यर्थ हो सकता है। गत २१ फरवरी के दिन मैंने उनके दर्शन का लाभ प्राप्त किया। लगभग ३०० आदमी भिन्न २ जगह से दर्शनार्थ आये थे। इस बार के दर्शनार्थी महानुभावों में श्री काका कालेलकर का नाम उल्लेखनीय है। पाठकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि इस दर्शन के समय में भी उनसे बातचीत कोई नहीं की जा सकती है। दर्शन के लिए १, १। मिनट प्रत्येक दर्शनार्थी को मिलता है। प्रथा यह है कि दर्शनार्थी फूल व माला लेकर जाते हैं उन्हें और साथ में दायें बैठी माताजी को प्रणाम करते हैं। इस पर वे दोनों सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देते हैं। एक या दो क्षण उनकी तरफ देखते हुए या देर तक प्रणाम करते हुए दर्शनार्थी अपना १॥ मिनट बिता देते हैं। दर्शन में मैंने उनको मूर्ति का फोटो में देखी मूर्ति से अधिक भव्य पाया। पाठकों को मालूम होना चाहिये कि उनकी जो भी कोई फोटो मिलती है वह कम से कम २० वर्ष की पुरानी है। इसके बाद इन्होंने अपनी कोई फोटो नहीं खिचवाई।

उनका आश्रम

लोग समझते होंगे कि उनका आश्रम किसी एक बड़े मकान में शहर के बाहर होगा। परन्तु ऐसा नहीं है। आश्रम बनाया नहीं गया है। यह बन गया है। स्वभावतः विकसित हुआ है। अतः जिस मकान में श्री अरविन्द रहते थे उस में तथा उससे कुछ दूरी पर ४० मकानों में आश्रमवासी रहते हैं। आश्रमवासियों को जोड़ने वाले श्री अरविन्द तथा माताजी हैं। कोई घिरा हुआ स्थान या किसी अन्य बाहिरी स्थिति की उन्हें जोड़ने के लिए आवश्यकता नहीं है। हां, सब साधक भोजन, प्रणाम व ध्यान के सार्वजनिक कार्य एक जगह इकट्ठा मिल कर करते हैं।

आज कल करीब १५० साधक साधिकाएं वहां रहती हैं। इन में ९०-१०० साधक और ५०-६० साधिकायें हैं। कुछ यूरोपियन भी रहते हैं। तीन चार परिवार मुसलमान भाइयों के भी हैं। प्रान्तों के दृष्टि से गुजराती सबसे अधिक हैं। दूसरे पर बंगाली और फिर मद्रासी हैं। संयुक्त प्रान्त व महाराष्ट्र का वहां कोई नहीं है। पंजाबी हाल में ही दो आदमी वहां पहुंचे हैं।

भोजन व्यवस्था

बहुतों को शायद ऐसा मालूम होगा कि वहां भोजन सम्बन्धी कोई नियम संयम नहीं है। वहां जाने से पूर्व मैंने भी सुन रक्खा था कि वहां मांस, शराब का भी परहेज नहीं है। परन्तु वहां ऐसा नहीं देखा। (यद्यपि सिद्धान्ततः उच्च आध्यात्मिकता के लिये ऐसे कोई बंधन वे अनिवार्य नहीं समझते)। आश्रम वासियों का भोजन निम्न प्रकार है—

प्रातराश—पावभर गौ का दूध, ब्राउन ब्रेड (बिना छने आटे की डबल रोटी) के चार टुकड़े और एक केला।

दोपहर—चावल, रोटी, दाल या शाक, पावभर दही, तीन केले।

सायं—पावभर दूध और रोटी, शाक या दाल श्री अरविन्द व माताजी भी फलों का रस, दूध व शाक, रोटी आदि ही बहुत थोड़ी मात्रा में सेवन करते हैं।

अन्य व्यवस्था

आश्रम वासी ही भोजन बनाते हैं। आश्रम की अपनी बिजली की चक्की तथा बेकरी हैं। इसके अतिरिक्त इंजीनियरिंग, बढ़ई, चित्रण, गोशाला

(शेष पृष्ठ २७ पर)

उनकी स्मृति में

———:*:———

(१)

तुम्हीं तो थे मेरे 'जगती',
तुम्हीं तो थे मेरे आधार ।
हृदय के किस कोन में अब,
बसाऊंगा अपना 'संसार' ।

(२)

बताओ ! किस के चरणों पर,
करूं जीवन अपना बलिदान ?
भरायेगा अब किसको कौन,
सुनाकर अपना मधुमय गान ?

(३)

गिरायेगा अब बिजली कौन,
किसी दुखिया पर हंस-हंस कर ?
वहां रहने आयेगा कौन,
बनाया जो आंखों में घर ?

(४)

अभागा 'अन्तर' करे प्रयत्न,
समझने किस की भाषा मौन ?
अरे ! पागल-पागल कह कर,
बुलायेगा मुझ को अब कौन ?

(५)

कहो ! अब किस के बल पर मैं,
करूं इस जीवन पर अभिमान ?
मिटाने आयेगा अब कौन,
हजारों औ, लाखों अरमान ?

(६)

हाय ! मेरी स्मृति पर कौन,
बहायेगा आंसू दो-चार ?
पूंछने आयेगा अब कौन,
"मुझे करते हो क्या तुम प्यार" ?

—जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव 'त्यागी'

"साध"

———:*:———

उन्नति के पथ पर सब विचरें मिल कर सेवा मार्ग गहें ।
हृदय बीच देशानुराग हो सत्य-सिन्धु के स्रोत बहें ॥
हों चाहे विपदा सहस्र पर एक बार भी उफ़ न कहें ।
दृढ़ प्रतिज्ञ हों प्राण दान भी देने को तैयार रहें ॥
रहें प्रेम में पगे जाति की जीवन ज्योति जगा दें हम ।
मिटा जाति का जंग, जगत में कीर्ति ध्वजा फहरा दें हम ॥

"उमेश" चतुर्वेदी

किरण के प्रति

———:*:*:———

द्विजों की सुनकर करुण पुकार
देख कलिका को हृदयोद्गार
पोछने ओस-अश्रु के धार
पार कर सरिता सिन्धु-अपार ।
भ्रमण कर गिर वन कांटेदार
भारती सा करके श्रृङ्गार
स्वर्ण केशों का किये प्रसार
बजाती श्रुति वीणा के तार
छोड़ती जागृति की झंकार
मुदित करती सारा संसार
खोलकर अनुपम स्वर्ग-द्वार
लुटाती रंगों का भण्डार
बनाती जग को स्वर्णागार
चलाती दुनिया का व्यापार
हटाती भूतल से तम-भार
सुनाती श्रुति यह बारम्बार
तिमिर-निस्सार, तिमिर-निस्सार
लिये नवजीवन का उपहार
क्षितिज के पर्दे के इस पार
झांकती आती हो सुकुमार
धन्य है तुमको किरण उदार
नमस्ते तुम को बारम्बार

—जगन्नाथप्रसाद बजाज

कैसा दीन किसान ?

———:*:*:———

ख़बरदार यदि दीन कहा अब;
महा अनादरमय है कलरव
नष्ट किया भारत का गौरव-
कर झूठा अभिमान !

× × ×

विश्व-प्रकृति का तत्व निरन्तर
हुआ भेद मूलक अभ्यन्तर
मानव, मानव, में यह अन्तर
आह, घोर अपमान !

× × ×

वह माली है जग उपवन का
है आधार पुंज-जीवन का
गर्भित है इस में त्रिभुवन का
रूप विराट महान !

× × ×

शक्ति जाग तू कहां सो रही ?
भारत की दुर्दशा हो रही !
सन्तति कायर बनी रो रही,
हीर हुआ पाषाण !

—कल्याणकुमार 'शशि'

सर सैमुअल होर



आप अत्यन्त गम्भीरता से इटली अबीसीनिया युद्ध की ओर ब्रिटिश नीति पर विचार कर रहे हैं।

महामना मालवीय जी



आप एक दफा फिर बनारस में अस्वस्थ हो गये हैं परन्तु शीघ्र ही स्वास्थ्य-लाभ कर रहे हैं।

सर मालकम केम्पबल



आप ३०० मील की घन्टे के हिसाब से दौड़ने का रिकार्ड स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

श्री जमनालाल बजाज



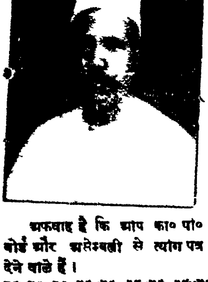
आप हिन्दी प्रचार के निमित गांधी-थैली के लिए भ्रमण कर रहे हैं।

श्रीमती कस्तूरीबाई गांधी



आप ने देहली में ९५ अगस्त को झण्डा अभिवादन का समारोह किया।

श्री कृष्णदत्त पालीवाल



अफवाह है कि आप का० पा० बोर्ड और असेम्बली से त्याग पत्र देने वाले हैं।

डा० मुंजे



आपने एक भाषण में कांग्रेस से भिन्न प्रगतीशील राजनीतिक दलों के संगठन पर जोर दिया है।

मेजर एमिल फे



आस्ट्रिया के गृह सदस्य मेजर फे मोटर दुर्घटना में घायल हो गये।

गणेश जी के स्वरूप के सम्बन्ध में —

(लेखक :— श्री कालीप्रसाद "विरही")

विश्व की दौड़ में किसी देश अथवा राष्ट्र का कौनसा स्थान है, यह जान लेनेके हमारे पास केवल दो साधन हैं। पहला उस देश का इतिहास, और दूसरा, उस देश के त्यौहार। इतिहास हमें राष्ट्र और देश में हो चुकने वाली मुख्य २ घटनाओं की सूची बतलाता है, किन्तु, हमें किसी देश के राष्ट्रीय और जातीय त्यौहार उस देश की भीतरी दशा का पूरा पूरा परिचय देते हैं। इसलिये मैं यह कहूंगा कि यदि हमें किसी देश अथवा राष्ट्र की भीतरी दशा का ज्ञान प्राप्त करना है। यदि हम यह जानना चाहते हैं कि अमुक देश अथवा राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति क्या थी तो हमें उस देश के त्यौहारों का ध्यानपूर्वक अध्ययन और मनन करना चाहिये। यह वह सत्य है, वह कसौटी है। जिस पर कसे जाने पर किसी राष्ट्र की संस्कृति के खरे खोटे होने की परख होती है।

किन्तु इसी सिद्धान्त को लेकर जब हम अपने देश की सभ्यता जानने के लिये अपने त्यौहारों को ले बैठते हैं तो हम गहन अन्धकार में भटक जाते हैं, हम हमारे त्यौहार एक पहेली और उलझन बन जाते हैं और हम उस से ऊब कर-अथवा सिर पच्ची से जी चुरा कर उन्हें 'बुढ़िया पुराण' के गपोड़ कह कर हंस देते हैं अथवा उपेक्षा में मुंह फेर लेते हैं। और अन्य मतावलम्बियों को हमारे पूर्वजों की समझ पर शंका करने का अवसर देते हैं, यह हमारा दुर्भाग्य नहीं तो क्या है।

हमारे समस्त धार्मिक कृत्यों में सर्वप्रथम पूज्य हमारे देव गणेश हैं। किन्तु बेचारे दुर्भाग्यवश सब से पेश्तर वे ही हमारी शंकाओं तथा अन्य धर्मावलम्बियों के 'मजाक' के केन्द्र बन हुए हैं। हमारी बुद्धि स्वयम् गणेश जी का ध्यान करते समय हंस देती है। इतना ही नहीं, इन पंक्तियों के लेखक का पञ्चवर्षीय भतीजा शान्तिकुमार गणेश की मूर्ति के समक्ष जाने में भी कांपता है। उस भोले को क्या खबर कि हमारे देवताओं की लम्बी सूची में इस से भी विचित्र रूप रेखा के 'जीव' हैं। और यदि मैं यह कह दूं कि आज अधिकांश हिन्दू धार्मिक जनता मेरे पञ्चवर्षीय भतीजे से अधिक कुछ नहीं समझती तो मेरा कोई अपराध नहीं।

हमारा प्राचीन साहित्य-विशेषतया पौराणिक साहित्य-अतिशयोक्ति और उत्प्रेक्षा अलंकार प्रधान साहित्य है। किन्तु, आज कल के छायावाद के नामपर की जाने वाली अमूर्तरचनाओं की तरह नहीं-जिस का कोई चित्र नहीं, जिसका कोई अर्थ नहीं, हमारे पौराणिक साहित्य का प्रत्येक, शब्द सार्थक है महत्वपूर्ण है, और सुन्दर है, हमारी पौराणिक कथाओं में 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम' का बड़ा सुन्दर सम्मिश्रण है। यह मैं अपनी श्रद्धा अथवा भक्ति के आवेग में नहीं, किन्तु वास्तविकता के आधार पर कह रहा हूं कि हमारे पौराणिक साहित्य में हमारे लिये सन्देश है-जीवन है और हमारे 'गणेश' मेरे इस कथन के पुष्ट प्रमाण हैं,

पौराणिक साहित्य में गणेश जी को शिव का पुत्र कहा गया है। 'गणेश' शब्द का अर्थ है नेता। और 'शिव' का अर्थ है, कल्याण कर। जिस का स्वभाव है त्याग ' अर्थात् जिस में कल्याण और त्याग की भावनाएं निहित हैं उसी में नेतृत्व शक्ति का जन्म है और इस में भी स्पष्ट शब्दों में यह कहना चाहिये कि कल्याण और त्याग की भावनाओं में ही नेतृत्व को जन्म देने की शक्ति है। और इसी स्वर्ण-सिद्धांत को अलंकारिक भाषा में गणेश जी शिव के पुत्र हैं कह कर व्यक्त किया गया है, और महात्मा गांधी हमारे इस सिद्धान्त की, कसौटी पर कसने पर आज ठीक उतरते हैं, वे पहिले कल्याण कर हैं, त्यागी हैं, फिर हैं गणेश,नेता ' हैं हमारे कथन के जीवित उदाहरण ! हां तो, अब तनिक गणेश जी के स्वरूप का भी अध्ययन कीजिये, और देखिये कि—हमारे प्राचीन साहित्य-कारों ने अपने सुन्दर भावों को किस, प्रकार मूर्त रूप दिया है, गणेश जी का स्वरूप और स्वभाव जो साहित्य-कारों ने वर्णन किया है वह संक्षेप में इस प्रकार है—

"गणेश जी का मस्तक हाथी का है। इसके साथ—आंख, नाक, कान और दांत भी सब हाथी के ही हैं, किंतु हाथी के दांतों की तरह उनके दो दांत नहीं, वे एक रदन हैं, वे लम्बोदर हैं, उनके चार भुजायें हैं, उनका वाहन चूहा है,। और वे खाते क्या हैं, केवल गुड़ के मोदक ! यह है उनका चित्र शरीर का ही नहीं स्वभाव का भी ! किंतु गणेश के इस चित्र में हमारे लिये जो सन्देश छिपा है, जो पाठ छिपा है, वह अमूल्य है और वही शिक्षा है जिसकी आज हममें बड़ी कमी है। गणेश जी का ऊपर कहा हुआ चित्र हमें जो पाठ पढ़ाता है वह है निर्वाचन नियम का। वह प्रत्येक वर्ष आकर पुकार २ कर कह जाता है कि जब तुम 'स्वराज्य' में अपनी व्यवस्थापिका सभा के लिये व्यवस्थापक चुनो तो देखलो जिसे तुम अपना प्रधान नेता, राष्ट्रपति बनाने जा रहे हो, उसका स्वरूप और स्वभाव गणेश जी के समान है



(श्री कालीप्रसाद 'विरही'

या नहीं, और स्पष्ट शब्दों में मुझे यह कहना चाहिये कि, जिसे तुम अपना नेता बनाने जा रहे हो उसका मस्तक हाथी के मस्तक के समान है या नहीं, अर्थात वह बुद्धिमान् है या नहीं ? उसकी आंखें हाथी की आंखों के समान छोटी हैं या नहीं, अर्थात वह सूक्ष्मदर्शी है या नहीं ? उसकी नाक, हाथी के नाक के समान लम्बी है या नहीं ? अर्थात् वह 'लम्बी नाक वाला' सम्मानयुक्त है या नहीं ? उसके कान हाथी के कानों के समान बड़े हैं अथवा नहीं ? यानी उसके कानों में राष्ट्र की पुकार सुन सकने की शक्ति भी है या नहीं ? उसके हाथी के दांतों के समान 'खाने और दिखाने के' दांत न होकर एक ही दांत है न ? अर्थात् उसके कर्म और वाणी एक ही है न ? और जिसे तुम अपना नेता चुनो उसका पेट गणेश के पेट के समान बड़ा अर्थात् गंभीर है न ? उसमें समस्त बातें समा जाने की गुंजाइश तो है ? यानी वह ओछा पात्र तो नहीं है ? और तुम्हारा नेता कार्य की अधिकता आ पड़ने पर 'मेरे चार भुजायें तो नहीं" कह कर काम से जी चुराने वाला तो नहीं, उसमें सचमुच ४ भुजाओं के समान कार्य करने की शक्ति है न ? और वह चूहे के समान अपने चंचल-मन पर काबू भी किये हुए है अथवा नहीं ? और स्पष्ट शब्दों में वह संयमी भी है या नहीं ? और जिसे तुम अपना राष्ट्रपति चुन रहे हो, वह मेवा मिष्टान्न और बहुमूल्य खाद्य पदार्थ का लोभी तो नहीं ? वह अपना उदर सस्ती से सस्ती खाद्य सामग्री से भर लेने का आदी है या नहीं ? यदि उसमें गणेश जी के स्वरूप और स्वभाव के समान गुण न हों तो तुम उसे भूलकर भी अपना नेता न बनाओ। जिसमें उपरोक्त गुण नहीं वह कभी भी तुम्हें तुम्हारे राष्ट्र को, तुम्हारे देश को विपत्तियों और विरोधी शक्तियों से नहीं बचा सकता। यह है हमारे गणेश जी का सच्चा चित्र और उसका सद्-उद्देश्य ! जिसका आज हम महत्त्व न समझ कर अंधी श्रद्धा में सुपारी पर कलावा लपेट कर भक्ति में माथा टेक कर अपनी बुद्धिहीनता का परिचय देते हैं मैं यह नहीं कहता कि श्रद्धा बुरी वस्तु है यदि 'माइल स्टोन' तुम्हें अंधी श्रद्धा से तुम्हारे मनोवांछित कार्य पूर्ण कर सके और तुम्हें पुत्र-पौत्र, धन धान्य दे सके तो कीजिये किंतु साथ ही 'माइल स्टोन' से 'माइल स्टोन' का काम लेना भी न भूलिये। आप गणेश जी को मस्तक झुकाइये, उन पर सिंदूर चढ़ाइये, उनके आगे माथा टेकिये किंतु उनके जन्म का आशय भी न भूलिये, तभी आप सुपुत्र हैं, अपने पूर्वजों के तभी आप सच्चे भारतीय हैं जब आप अपने साहित्य का उपयोग करेंगे, अन्यथा क्षमा कीजिये, वह दिन दूर नहीं जब आपके गणेश जी आपके पूर्वजों की हंसी उड़ाने के लिये लन्दन की प्रदर्शिनी में भेज दिये जावेंगे। कृपया अपने साहित्य को समझिये और उससे लाभ उठाइये। उसे 'गपोड़' कह कर उसकी खिल्ली न उड़ाइये।

महिला-जगत्

आधुनिक स्त्री समाज और संगीत

(ले०—श्री डा० पी० डी० गौड़ "व्यावरा" कुमारी स्टेट)

संगीत का प्राचीन काल क्या था —यह तो हम कह नहीं सकते क्योंकि किसी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पुस्तक में इसका विषय विवेचन नहीं मिलता। किन्तु आधुनिक काल तो अवश्य ही संगीत उन्नति का कहा जा सकता है। विशेषत जब से सवाक् (टाकी) चित्रपटों का प्रादुर्भाव हुआ है तब से तो संगीत-संसार में हल-चल सी मच गई है। इस लेख में हम को देखना है कि इस उन्नति काल में स्त्रियों का क्या स्थान है। स्त्रियों से अभिप्राय चित्रपट अभिनेत्रियों या वैश्याओं से न लिया जाय। वरन उन स्त्रियों से जो सभ्य हैं और गृहस्थी हैं। इस समय हम देखते हैं, स्त्रियों के लिए कोई मार्ग अवरुद्ध नहीं है। समानाधिकार प्राप्त कर व बी ए एम ए करके लेडी प्रोफेसर और लेडी डाक्टर बन रही हैं। सभा सोसाइटियों, कचहरियों, म्यूनिसिपलटियों, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों तथा कौंसिलों और असेम्बली तक में उनके स्थान सुरक्षित हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि वर्तमान युग में उनके लिये कोई वर्जित मार्ग नहीं है। आजकल स्त्रियां लेखिका भी हैं और चित्रकार भी हैं, तथा बैरिस्टर भी हैं और सम्पादिका भी हैं।

किन्तु हम इस संख्या में सभ्य गायिका तथा नृत्य कला के जानने वाली स्त्रियों को नहीं देखते। इसका कारण क्या है? विचार करने पर इसके मुख्यतया निम्न लिखित कारण जान पड़ते हैं।

१—स्कूल, कालिजों की स्त्रियों के लिए वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली का पाठ्य विषय।

२—पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति का भारतीय स्त्रियों पर प्रभाव। इन सब पर विचार करने से स्पष्ट हो जायगा कि आधुनिक भारतीय स्त्री समाज में संगीत का क्या स्थान है?

१ वर्तमान शिक्षा प्रणाली ने जहां पर अन्य अनेक समस्यायें उपस्थित कर दी हैं वहां पर संगीत-विद्या को भी भारी धक्का पहुंचा है। यह तो मानी हुई बात है कि प्रायः प्रत्येक बाला को गृहस्थ जीवन व्यतीत करना पड़ता है। इसलिए जो बातें उन्हें इस जीवन के लिए आवश्यक प्रतीत होती हैं उनका उन्हें अपने विद्यार्थी जीवन में ही अभ्यास कर लेना चाहिए। भोजन बनाना सिलाई करना, शिशुपालन, शिक्षा का अध्ययन करना तथा संगीत सीखना यह सब प्रत्येक योग्य कन्या के लिए जो पाठशाला में जाती हो सीख लेना आवश्यक होना चाहिए। क्योंकि इन में से एक की भी कमी रहने से उसे आगामी गृहस्थ-जीवन में दुख उठाना पड़ता है। शिक्षा का ध्येय शिक्षार्थी के भविष्य-जीवन को सुखमय बनाने के साधनों का ज्ञान कराना होना चाहिए। भारतीय स्त्रियों का गृहस्थ जीवन धार्मिक होता है जिसमें स्त्री अपने पति को ईश्वर समझ कर उसकी उपासना (इच्छा सन्तुष्टि) में अपना सर्वस्व निछावर कर देती है। अच्छे २ भोजन बना कर अपने देवता (पति देव) को खिलाना अच्छी सिलाई करना तथा मनोहर गायन और आकर्षक नृत्य आदि से अपने पति देव को प्रसन्न करने ही में वह अपना धर्म, कर्तव्य तथा सौभाग्य समझती हैं। परन्तु हमें यह जान कर खेद होता है कि हमारी माता बहनों को दी जाने वाली वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ विषयों में इनका नाम तक नहीं है।

आज कल भारतीय जनता सिनेमा देखने की बहुत प्रेमी हो गई है। विशेषत शिक्षित नवयुवकों का तो सिनेमा देखना प्रतिदिन का सा हो गया है। किसी भी आये हुए अतिथि का सत्कार सिनेमा दिखा कर ही किया जाता है। जो आनन्द उन्हें अपने घरों में नहीं मिलता उसकी तलाश में वहीं जाते हैं जहां उन की यह इच्छा पूरी होती है। नौकरी पेशा लोग अपनी आय का एक बहुत बड़ा भाग सिनेमा घरों में जा कर दो तीन घंटे बैठ कर आनन्द लेने में खर्च कर देते हैं। नवयुवतियों के मधुर गाने, आकर्षक नृत्य सुरीले स्वरों की तान तथा अर्धविकसित सौन्दर्य को देखकर वह इन सिनेमा घरों में दिल बहलाते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहिए कि उनके दिल का बहलाव अपनी स्त्री से नहीं होता नतीजा यह होता है कि वह अपनी स्त्रियों को भूल जाते हैं और कोई सुलोचना का भक्त बन जाता है। कोई माधुरी पर आशिक हो जाता है इस प्रकार गृहस्थ की गृहलक्ष्मी (स्त्री) में एक संगीत की कमी होने के कारण यह एक स्वर्ग रूप बनने की जगह कलहगृह बन जाती है। यदि इतना ही रुपया जितना कि हमारे भाई सिनेमा आदि देखने में खर्च करते हैं कहीं अपनी स्त्री को संगीत सिखाने में लगावें तो वह अपना दिल बहलाव अपने घर ही कर सकते हैं।

मेरे एक मित्र हैं जो स्वयं ए० एम० एल एल० बी० वकील हैं तथा उनकी धर्मपत्नी बी० ए० बी० टी हैं। दोनों में काफी प्रेम है परन्तु वकील साहब संगीत के बहुत प्रेमी होने के कारण सदैव अपनी स्त्री से गाना सुनने की इच्छा रखते हैं। परन्तु स्त्री जी ने अपने विद्यार्थी जीवन में इस विषय का अध्ययन नहीं किया था इसी कारण वह केवल इस अंश में अपने पति देव की इस इच्छा की सन्तुष्टि करने में बहुत दिन तक असमर्थ रहीं। उन्होंने बहुत यत्न किया कि कोई सभ्य संगीत विद्या में निपुण स्त्री मिल जाय। परन्तु कोई भी न मिल सकी। इसी कारण वह स्त्री समाज में आज तक भी इस कमी का अनुभव करती है।

२—योरोपीय सभ्यता तथा संस्कृति का भी प्रभाव भारतीय संगीत पर पड़ा है। हमारे पूर्वजों तथा संसार के विद्वानों ने भी संगीत को स्त्री का भूषण माना है।

प्राचीन रूढ़ियों के बचे खुचे गानों से यह सिद्ध होता है कि किसी काल में संगीत स्त्री समाज के लिये कितना आवश्यक तथा महत्वपूर्ण विषय था। विवाह संस्कार जन्म संस्कार, तथा सभी अन्य प्रसन्नता दिखाने वाले उत्सवों में संगीत का प्रचार कितना था यह अब भी हम वर्तमान काल के टूटे फूटे ऐसे मेड उल्टे सीधे अपने घरों में पुरानी स्त्रियों के गानों के सुनने से जान सकते हैं। परन्तु पाश्चात्य सभ्यता के कारण हमारी आज कल की शिक्षित बहनें संगीत (नाच तथा गाना) के नाम से कोसों दूर भागती हैं। चाहिए तो यह था कि अन्य उन्नतियों के साथ संगीत की भी उन्नति होती। परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ। इसका मेरी समझ में एक मात्र कारण यह है कि पुरुषों के साथ स्त्रियों ने भी पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण किया। परन्तु अनुकरण करते समय यह एक बार भी न सोचा कि हमारी संस्कृति उनकी संस्कृति से बिलकुल भिन्न है। यहां पर बहुत सी वह आजादियां भारतीय स्त्री समाज को शायद सदियों में मिलेंगी। (शायद ही मिलें) जिनका उपभोग पाश्चात्य स्त्री समाज सदियों से करता आ रहा है। परन्तु भारतीय स्त्री समाज अन्धा होकर पाश्चात्य सभ्यता के पीछे दौड़ रहा है। वह मार्ग में अपनी संस्कृति की धज्जियां उड़ाता आ रहा है। और उन फटे हुये चिथड़ों पर प्रसन्न होकर सुखी होने का दावा भरता है। परन्तु वह शीघ्र ही किसी गढ़े में जाकर गिरेगा जहां से निकलना उसका बड़ा ही कठिन कार्य हो जायगा।

सारांश यह है कि भारतीय स्त्री समाज ने भारतीय संगीत को एक अश्लील या फैशन के खिलाफ वस्तु समझ कर ठुकरा दिया है। (यहां तक कि अब तो चित्रपटों में भी भारतीय नृत्य की जगह अंग्रेजी नाच का अधिक प्रचार होता जा रहा है। इधर तो आधुनिक शिक्षित स्त्रियों ने हमारे घरों के पुराने नाच व गानों को शान के खिलाफ समझा उधर दूसरी ओर अनेक सामाजिक नियमों के कारण वे अंग्रेजी नृत्यगृहों में भी न जा सकने के कारण विलायती नाच गाना भी न सीख सकीं। फल यह हुआ न खुदा ही मिला न विसाले सनम, न इधर के रहे न उधर के रहे। उनकी नकल में अपनी असलीयत भी खो बैठे।

आजकल स्त्रियों को संगीत सीखने की केवल स्वतंत्रता ही नहीं है वरन उसकी उन्नति के अनेक ऐसे यंत्र आविष्कृत हो चुके हैं जिनको देखकर मनुष्य चकित रह जाता है। परन्तु खेद है कि इतने साधन मिलने पर भी हमारा स्त्री समाज अपने इस भूषण को अपना कर भारतीय बूढ़े संगीत की लाज नहीं रखना चाहता। यह मैं स्वीकार करता हूं कि हमारे घरों में प्रचलित नाच व गानों में कमियां बुराइयां हैं। परन्तु एक बुराई को केवल बुराई कह कर ही न छोड़ देना चाहिये वरन उसका उपाय सोचना चाहिये। वास्तव में यदि समाज सुधारकों तथा संगीत कला प्रेमियों ने इस ओर ध्यान न दिया तो उन्हें संगीत की इच्छा होने पर पाश्चात्य संगीत की ही शरण लेकर इच्छा तृप्ति करना पड़ेगी। केवल यही तक नहीं वरन समाज के शुभ अवसरों पर भी भारतीय स्त्री समाज में योग्य सभ्य गायिका न मिलने पर विलायती मेमों के ही

पुरुषों से दो-दो बातें

(ले०—श्रीमती गायत्रीदेवी लखनपाल, मोतीहारी)

मेरे लेख का एक २ शब्द मेरी और जाति की करुणाजनक अवस्था में वह आंसू हैं जिन में दुर्बलता, दरिद्रता और हीन अवस्था का रोमाञ्चकारी हाथ है। परन्तु अब इन का असर कहां! देश आज उन वीरों से खाली है जो स्त्री जाति के अपमान के बदले अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते थे। आह? वह योद्धा और बलवान अब नहीं हैं जो अबलाओं और दीन दुखियों के कारण पानी की तरह अपना रक्त बहा दिया करते थे। मैं क्या, मेरी निर्बल लेखनी भी ऐसे समय में जब कोई साहस देने वाला नहीं, कुछ कहते हुये मुख फेरती है। उस ने मेरे इसरार पर कागज को चूमते हुये आहिस्ता से कहा। ले मेरे जीवन के साथी यह दुख भरी कहानी मेरे विक्षिप्त हृदय की दबी हुई आवाज है जो मैं अपने रक्त से जिस सब्र और फिक्र ने बिलकुल स्याह कर दिया है, तुझे इस लिये बताती हूं कि तेरा मन उजला और पवित्र होने के कारण इसे उन हृदयों पर जाहिर कर दे जिन्हें मेरी इस हीन अवस्था के लिये कुछ दर्द है।

हां? तो अब मैं निर्बल स्त्री जाति की एक निर्बल अबला हूं जिस अपना प्राचीन इतिहास एक स्वप्न की न्याईं यूं स्मरण है कि मेरे देश की सभ्यता मुझे देवी के नाम से पूजती थी, मेरे धर्म की रक्षा में वह अपना मान और गौरव समझता थी और भलीभांति जानती थी कि उस की स्वतन्त्रता और प्रतिष्ठा का मूल कारण केवल मेरी ही सुख और शान्ति पर निर्भर है। परन्तु आज मेरी क्या अवस्था है। यह निम्न लिखित लेख में वर्णन करूंगी। चाहती हूं कि चण्डी का रूप धारण करके प्रचलित समाज को नष्ट भ्रष्ट कर दूं दुर्गा की वज्र खड्ग ले कर अपने अपमान करने वालों का रक्त चाट जाऊं। मगर स्त्री जाति का दयावान हृदय इस कोप में रोकता है, माता की छाती अपनी सन्तान के खिलाफ कुछ कहने और करने को मना करती है। इस में मेरी कोख से जने हुओं का अपमान और निरादर है, लक्ष्मण से यति के नाम पर कलंक है जिस ने बनवास के १३ वर्ष अकेले अपनी भावज सीता के साथ रहते हुये भी उस के चरण कमलों से ऊपर देखना पाप और महापाप समझा था। यह अब क्या करे? जुल्म की हद हो चुकी, सब्र व सन्तोष का प्याला भर गया जिन का आसरा था वह अब नहीं रहे, केवल उन की हलकी सी याद (मानस चित्र पट पर अंकित) बाकी है लेकिन इस और अत्याचार के जमाने में उस से बचाव नहीं हो सकता। जीवन बोझल मालूम पड़ता है और मन एक निश्चित निर्णय पर तुला है कि या तो प्राचीन राजपूत प्रणाली "जौहर" को स्मरण करके जलती चिताओं में कूद जावें या मनुष्य समाज के इस अत्याचार का अवलोओं में सिंहनियां बन कर मुकाबला करें जो भारतीय नारियों के अपमान का मूल कारण है। कहां है देश के नेता जिन की जबान इस के लिये बन्द है। जिन के नेत्रों में यह देखने पर भी लज्जा के मारे आंसू नहीं आते कि किस प्रकार उन देश की सतवन्ती नारियों को अपमानित किया जा रहा है.—

मुझे भली प्रकार स्मरण है कि करीब १॥ वर्ष हुये जब पंजाब प्रांतीय बटाला नामक नगर निवासिनी १ वीर रमणी ने मनुष्य समाज की इस क्रूरता के विरुद्ध आवाज उठाई थी कि उसे स्त्रियों के चित्र प्रकाशित करने का क्या अधिकार है। क्या बाजार में आने वाली सब वस्तुयें केवल नारियों के चित्र देने से ही बिक सकती हैं? क्या तिथि मास बताने वाले कैलेण्डर इन तसवीरों के बिना गलत हो जायेंगे? गदापन नहीं? बल्कि इन रंग बिरंगे चित्रों से देश और जाति की सभ्यता नष्ट होती है और आचार विचारों पर बहुत बुरा असर पड़ता है। यह उन नंगी और लज्जा रहित तसवीरों का असर है कि आज देश की तमाम पत्र पत्रिकाओं के पन्ने स्त्री अपहरण और बलात्कार के समाचारों से भर पड़े हैं। भले से भले घर की नारियां भी और तो और पवित्र व्यवहारों पर भी इस अंधेर गर्दी से अपने मान की रक्षा नहीं कर सकती। सिनेमा वालों ने तो रही सही कसर को भी पूरा कर दिया। रोशनी के रूपमें अंधेरे की ओर ले जाने वाले मज़हब डाकू अपनी पापभरी मनोकामना को पूर्ण करने के लिये जो जो उपद्रव कर रहे हैं उन के खिलाफ (विरुद्ध) भारी आन्दोलन करना होगा। नहीं तो क्या होगा, इस के वर्णन करने से मेरा दिल कांपता है। मेरी इस खामोशी में अपने देश की शिक्षित बहिनों से प्रार्थना है कि वह जो पर्दा विरोधी और स्त्री सुधार आंदोलन का प्रयत्न कर रही हैं वहां मनुष्य समाज के सुधार की ओर भी अपना ध्यान देवें। सन्तान के शुद्ध और अशुद्ध माता की बदनामी और नेकनामी के कारण होते हैं। इसलिये गम्भीरता और दृढ़ता से सत्यता के तेज का दीपक हाथ में लेकर इस घनघोर काली रात में भटकी हुई जाति को रास्ता दिखाने वाली सच्ची देवियां साबित हों जिस से देश का नाम बढ़े और इस मान मर्यादा में स्त्री जाति का बोलबाला हो!!

———

गान तथा नाच कराने पड़ेंगे। हमारे स्त्री समाज में संगीत बिलकुल उठ जायेगा।

इस लिये अन्त में मेरी भारतीय कन्याओं के उन माता पिताओं से प्रार्थना है जो संगीत कला में तनिक भी प्रेम रखते हैं कि वह अपनी कन्याओं का गृहस्थ जीवन सुखी बनाने के लिए अन्य शिक्षाओं के साथ भारतीय संगीत (नाच व गान) का भी थोड़ा बहुत अवश्य ज्ञान करा दिया करें ऐसा करके वह उनका गृहस्थ-जीवन स्वर्गमय बनाने में सहायक होंगे।

———

विश्व की सर्वश्रेष्ठ विभूति

म० गांधी की जीवन-चर्या

महात्मा गांधीजी की दिन-चर्या जानने की प्रायः सभी को इच्छा रहती है, क्योंकि देश के अधिकांश स्त्री-पुरुष उनके पास तक नहीं पहुँच पाते और न सब के लिए चौबीसों घण्टे महात्माजी के साथ रहना शक्य ही हो सकता है। इसी लिए सर्व साधारण की उत्सुकता मिटाने के उद्देश्य से उन की दिन-चर्या यहाँ दी जा रही है। लोग देख सकते हैं कि इस वृद्धावस्था में भी उनका जीवन कितना नियमित, कार्ययुक्त एवं अन्य व्यवहारों से परिचय रखते और मगनवाड़ी के भोजन विभाग तथा पशुशाला, सफाई बगीचे आदि की देख रेख का कार्य सम्पन्न करते हैं, तथा छोटी से छोटी बात का कहाँ तक ध्यान रखते हैं।

पिछली रात को प्रायः दो बजे महात्माजी की नींद खुल जाती है और वे उसी वक्त उठ कर पुस्तकावलोकन या पत्रादि लिखने के कार्य में जुट जाते हैं। दो घण्टे यह कार्य करने के बाद शौच मुखार्जन से निपट कर ४॥ से ५ तक प्रार्थना करते हैं। उस समय किसी से कुछ कहना-सुनना हो तो वह भी कह देते हैं। इसके बाद कभी टहलते या बातचीत करते हैं और कभी सो भी जाते हैं। किंतु ६ बजते ही उनका निर्धारित कार्य प्रारम्भ होजाता है। ७॥ बजे नाश्ता करते हैं। इसके बाद ताज़े समाचारपत्र पढ़ते और भोजनालय की वस्तुओं की देख रेख करके आवश्यक सूचनायें देते हैं। इसी समय में यदि कोई मिलने वाला आ जाता है तो बातचीत भी करते हैं। ठीक ९॥ बजे स्नान करते और १०॥ बजे घण्टी बजते ही सब के साथ बैठ कर भोजन करते हैं। उनके भोजन में बकरी का दूध, साधारण फल, शहद, सोडा, कच्ची साग या नीम की पत्ती की चटनी, नीबू आदि वस्तुएं रहती हैं। भोजन के बाद महात्माजी आई हुई डाक चिट्ठी पत्रियाँ पढ़ते और उत्तर लिखने के लिए अपने पौत्र कनु गांधी और कांतिलाल गांधी को नोट करा देते हैं। आवश्यक और महत्वपूर्ण पत्र-व्यवहार के लिए श्री महादेव भाई देसाई (सेक्रेटरी) को बतला देते हैं। इसके बाद १२ से २ बजे तक विश्राम करते हुए १ घण्टा सो लेते हैं। दो से चार बजे तक स्वयं भी पत्रादि लिखते और दूसरों के लिखे पत्रों को पढ़ कर उन पर हस्ताक्षर करते तथा ५ बजे तक डाक रवाना करवा देते हैं। इसी बीच में भी यदि कोई मिलने आ जाता है तो उससे बातचीत करते हुए चर्खा कातते हैं। ५॥ बजे तक शौच आदि से निवृत्त होकर भोजन करने पहुँच जाते हैं। ६ बजे तक उधर से निपटने के बाद आधा घण्टा विश्राम कर लगभग पौन घण्टा मगनवाड़ी की छत पर टहलते हैं। उस समय प्रायः आश्रम वासिनी महिलाओं या बालिकाओं के कंधे का सहारा लेकर उनसे बातचीत करने और उनकी शंकाओं या कठिनाइयों का निराकरण करते हैं। उस समय और भी लोग उनके साथ टहलते और बातचीत करते हैं। ठीक ७।१० पर प्रार्थना की घण्टी बजते ही प्रार्थना-स्थल पर आ विराजते और सब के साथ प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना समाप्त होने के बाद अपने निरीक्षण में किसी का कोई दोष जान पड़ता है या श्रीमती मीरा बहन अथवा अन्य किसी की ओर से कोई शिकायत या भूल किये जाने की बात सुनाई जाती है तो उस पर शांति और गंभीरता के साथ विचार करते हुए बड़े प्रेम, सरलता और मार्मिक भाव से उन सब बातों को समझाते हैं। कभी-कभी कुछ आवश्यक सूचनायें भी देते हैं। सारांश, दिन भर की विशेष बातों का हिसाब-किताब प्रार्थना के बाद ही होता है। इसमें कभी-कभी ८-८॥ तक बज जाते हैं, प्रार्थना से पहिले भी कुछ देर तक महात्माजी लोगों से बातचीत करते हुए तकली या चर्खा कातते रहते हैं। बाद में भी सोने तक चर्खा कातते हुए बातचीत करते रहते हैं। निश्चित परिमाण में सूत कत जाने पर ही ९ बजे रात तक महात्माजी बिस्तर पर लेटते हैं। यदि किसी दिन अन्यान्य कार्यवश, सूत का परिमाण पूरा नहीं हो पाता तो रात को देर तक जाग कर उसे पूरा करते हैं। किंतु ऐसा कभी-कभी ही होता है। अन्यथा वे प्रायः ९ बजे रात तक सो जाते हैं और फिर २ बजे पिछली रात को जाग पड़ते हैं।

इस दिन-चर्या में कारण विशेष से कभी-कभी कुछ परिवर्तन भी हो जाता है। किन्तु सामान्य रूप से उनका यही कार्यक्रम रहता है और समय पर संपन्न होता है।

जब से महात्माजी विनोबा के सत्याग्रह आश्रम से मगनवाड़ी में रहने के लिये आये हैं, तब से प्रति दूसरे दिन अर्थात मंगल, गुरु और शनिवार को प्रार्थना के लिए वे शाम के भोजन से निपटते ही—आश्रम में पैदल चल कर जाते हैं जो मगनवाड़ी से लगभग दो मील दूर है। उस समय भी महात्माजी दोनों तरफ से लड़कों या लड़कियों के कंधे पर हाथ रख कर बातें करते हुए जाते हैं, वहाँ पहुँचने के बाद प्रार्थना का समय होने तक आवश्यक विषयों पर बातचीत करते तथा वहाँ के लोगों के अभाव अभियोगों को सुनते हैं। इन दिनों श्री विनोबा एवं अन्य खादी कार्यकर्ताओं से वे खादी के विषय में कातने वालों को प्रति घण्टा एक आना के हिसाब से मजदूरी देने के विषय में बड़ी गहराई से बातचीत एवं विचार-विनिमय करते रहते हैं। और सुना जाता है अब वे आठ आना प्रति दिन से तीन आना प्रति दिन की मजदूरी का पक्का वचन मिलने पर संतुष्ट होने तक आ गए हैं। २८ अगस्त की मीटिंग में इसका निर्णय होगा।

हाँ, तो आश्रम में प्रार्थना से निपटते ही महात्माजी बालकोबा तथा अन्य दो एक व्यक्तियों से बातचीत करके उसी तरह वापस मगनवाड़ी चल देते हैं। बालकोबा बीमार हैं कदाचित क्षय ग्रस्त हैं, अतएव उनसे महात्माजी अवश्य पाँच-सात मिनट बातें करके तसल्ली देते हैं। इस प्रकार लगभग ८॥ बजे तक वापस मगनवाड़ी आकर कातने के बाद विश्राम करते हैं। आश्रम जाते समय भी तकली और पूनी साथ जाती है और वहाँ भी बातचीत करते हुए कातते रहते हैं। अर्थात अपना एक क्षण भी वे व्यर्थ नहीं जाने देते। किंतु जिस दिन वर्षा होती रहती है या कोई अनिवार्य कारण आ उपस्थित होता है, उस दिन महात्माजी महिलाश्रम प्रार्थना करने नहीं जाते।

रविवार की शाम की प्रार्थना के बाद आवश्यक बातें कह सुन कर लगभग ८ बजे महात्माजी मौन व्रत लेते हैं जो सोमवार की रात को ८ बजे समाप्त होता है। इसी बीच में वे रात को २ बजे जागने के समय से लेकर दिनमें किसी से बातचीत न करने के कारण बचे हुए समय का उपयोग "हरिजन" के लिये लेख तैयार करने में लगाते हैं। महात्माजी देशी स्याही से हाथ के बने हुए कागज पर बरू की कलम से लिखते हैं और वह टाइप करके प्रेस को भेजा जाता है। महादेव भाई ही हरिजन के सम्पादक हैं, अतएव सारा मैटर यहीं होकर भेजा जाता है। महात्माजी इस प्रयत्न में हैं कि उनके अंग्रेजी लेखों का हिन्दी अनुवाद भी यहीं से करके भेजा जाया करे, जिससे वहाँ अनुवाद—विषयक भूलें न होने पावें। किन्तु अभी तक इस विषय का समुचित प्रबन्ध नहीं हो सका है।

महात्माजी के पास इतनी डाक आती है, कि लोग दंग रह जांय, किन्तु वे सब को ही संतोषकारक उत्तर देते हैं। समाचारपत्रों में वे "टाइम्स आफ इण्डिया", 'डेली न्यूज़' पढ़ते और 'बम्बई क्रानिकल' को साधारण दृष्टि से देख जाते हैं।

('स्वराज्य' से)

———

—:—

भारतीय पत्र और दमनकारी कानून

श्री चिन्तामणि का भाषण

क्यो सरकार को नजर में पत्रकार बदमाश हैं ?

'भारत सरकार वकीलो के विरुद्ध इसलिये है, कि वह कानून के भी विरुद्ध है'—लार्ड मारले।

कलकत्ते में पत्रकार सम्मेलनके अध्यक्ष श्री चिन्तामणि ने जो भाषण दिया था उसक कुछ अंश निम्नलिखित हैं—

———०———

जिस देश के पराधीन लोग स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं वहां पत्रकारों को कुछ विशष कठिनाइयों का सामना होना स्वाभाविक ही है। हां, यह सच है कि कुछ देशों की अपनी राष्ट्रीय सरकारे भी ऐसी हैं जो अपन देश के समाचार पत्रो को तनिक भी स्वतन्त्रता नहीं देतीं। उदाहरणतः कम्यूनिस्ट, फैसिस्ट तथा नाजी आदि भिन्न-भिन्न दलों क लोग अपन विरोधियों तथा आलोचकों को जबान ही नहीं खोलने देते। हमार ही देश में ऐसी बहुतेरी रियासत हैं जिनके यहां स्वतन्त्र पत्रो का पूर्णत अभाव है। सौभाग्य से ब्रिटिश सरकार न अभी तानाशाही म प्रेम करना नहीं सीखा है। ब्रिटेन में अब भी प्रतिनिधि संस्थाओं का ही बोल-बाला है और वहां पत्रों को इतनी स्वतन्त्रता है जितनी और कहीं शायद ही हो। परन्तु साथ ही यह बात भी सच है कि अंग्रेज हमार देश में अधिकारी ही बन रहना चाहत हं और इसलिए इस देश में आत ही उनक विचारों में अवांछनीय परिवर्तन हो जाता है और उन्हें स्वतन्त्र संस्थाओं को प्रोत्साहन देन क बजाय अपन अधिकारों की रक्षा की ही अधिक चिन्ता रहता ह। हमारा यह इच्छा होना स्वाभाविक हो है कि शासन शक्ति अभारतीय क हाथ म निकलकर भारतीयों क हाथ म आ जाय और नौकरशाही क शासन क बजाय उत्तरदायित्वपूर्ण राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो जाय। ऐसी अवस्था में हमे अधिकारियों की, उनक कामों की और उनकी गलतियों की नित्यप्रति आलोचना करना आवश्यक हो जाता है। हम उनकी आलोचना इसलिय नहीं करत कि हमें ऐसा करने में कोई आनन्द मिलता ह बल्कि इसलिए करते हैं कि ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। इसका स्वाभाविक परिणाम होता है, संघर्ष। और संघर्ष में जो कमजोर होता है उसी को अधिक हानि सहन करनी पड़ता है। हम कवल रो सकन हैं, इसके सिवाय और कर ही क्या सकत हैं? लेकिन नौकरशाही हम रोने भी तो नहीं देती। एक ओर हम म कहा जाता है कि कुत्ते भूंका ही करत हैं पर हाथी अपन रास्त चला जाता है, और दूसरी ओर हमें भूंकन से भी रोका जाता है और ऐसे-ऐसे कानून बना दिय गये हैं जिन्होंन हमारो अपन दिल की बात का साफ-साफ कह सकन की स्वतन्त्रता का भी अपहरण कर लिया है। किसी भी निष्पक्ष व्यक्ति या कमीशन के सामने ताजीरात हिन्द की दफा १२४ ए या १५३ ए या जाब्ता फौजदारी की दफा १०८ या सन १९१० के प्रेस ऐक्ट को पेश किया जाय तो वह निस्सन्देह यही फैसला देगा कि यह आवश्यकता से अधिक व्यापक है इनमें से १९१० का प्रस एक्ट रद्द हो चुका है फिर भी मैंने उसका जिक्र किया है। इसका कारण यह है कि इस एक्ट की बुरी से बुरी बातों को लेकर तथा उनमें और भी बुरी बात जोड़ कर सन १९३१ में एक नया एक्ट पास कर दिया गया है और अब भी वह जारी है। यह एक्ट पास करते समय यह कहा गया था कि यह कवल एक वर्ष क लिय है लेकिन बाद का उसकी मियाद बढ़ा दी गई। बंगाल क पत्रकारों क लिय पिछले साल पास होन वाला बंगाल क्रिमिनल ला एमेंडमेंट एक्ट एक और भी बला क रूप में मौजूद है। अन्य प्रांतों में विशेषाधिकार सम्बन्धी कानून जारी हैं। इस साल उनकी मियाद पूरी होन वाली है, लकिन अफवाह गरम है कि सरकार ने उनकी मियाद बढ़ान का निश्चय कर लिया है। मैंने इन सब एक्टों का काफी ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और मं यही कह सकता हूं कि वे समाचारपत्रों के विकास में तो बाधक हैं ही साथ ही स्वतन्त्र पत्रों की नीति में विश्वास प्रकट करन वाली ब्रिटिश सरकार क लिय भी शोभाजनक नहीं हैं। यहां मैं इन विभिन्न धाराओं की विस्तारपूर्वक आलोचना नहीं करूंगा। हमार समाचार पत्रों क कालमों तथा व्यवस्थापिका सभाओं में उन पर अनेक बार विचार हो चुका है। इन कानूनों का जो कड़ी आलोचनाएं हुई हैं उनका आज तक कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया गया है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्यों कि उनका संतोषजनक उत्तर दिया ही नहीं जा सकता, सच बात तो यह है कि सरकार पत्रकारों को अपना शत्रु समझती है। इसीलिये तो समाचार पत्रों की रिपोर्ट देने का काम खुफिया पुलिस क विभाग क सुपुर्द है। खुफिया पुलिस का काम बदमाशों की खबर रखना है। जब हमारी देख रेख भी उसके सुपुर्द कर दी गई है, तो इसका मतलब केवल यही हो सकता है कि सरकार की नजर में हम भी बदमाश हैं। दमनकारी कानूनों के समर्थक अकसर यह कहा करत हैं कि जो आदमी कोई अनुचित काम करना नहीं चाहता उसे उन से डरने की जरूरत नहीं है। इसी दलील का सबसे अच्छा उत्तर बर्क न बहुत पहले ही दे दिया है। बर्क न कहा था कि अगर कोई कानून बुरा है तो यह कहने मे कि उसका बहुत सोच समझ कर अत्यन्त आवश्यकता होन पर ही प्रयोग किया जायगा, वह अच्छा नहीं हो सकता। एक बुर कानून का मौजूद होना ही अधिकारियों क लिये भी और उन के शासन में रहन वालों के लिये भी बहुत बुरी बात है। एक ओर तो उसका यह परिणाम होता है कि अधिकारियों का अपन अधिकार का दुरुपयोग करन का लालच होने लगता है और दूसरी ओर अधिकार के इस दुरुपयोग स जिन लोगों का हानि पहुंच सकती है उन में कायरता और मक्कारी आन लगती है। भारत में शासन करने वालों का और साधारण जनता का दृष्टिकोण एक न होने क कारण उन क बीच नित्य ही संघर्ष रहता है। इसलिये अवांछनीय कानूनों का अस्तित्व जितना बर्क के देश (ब्रिटेन) में बुरा हो सकता था, भारत में उसकी अपेक्षा उससे कहीं अधिक हानिकारक है। यह कवल कल्पना या तर्क ही की बात नहीं है। अपने निज के अनुभव से हम अच्छी तरह जानते हैं कि वास्तव में बात ऐसी ही है।

दफा १०८

मेरे दिल में कई बार एक प्रश्न उठा है जिसका कोई संतोषजनक उत्तर न तो मैं खुद ही सोच सका हूं और न किसी दूसरे से ही पा सका हूं। वह प्रश्न यह है कि जब जाब्ता फौजदारी में दफा १०८ मौजूद ही है तो फिर दमन के लिए और कोई विशेष अधिकार वाला कानून पास करन की जरूरत ही क्या है? इस दफा की भाषा ऐसी व्यापक है कि अगर सरकार समाचार पत्रो को केवल अनुचित कार्य करने से रोकना चाहती है और उन की उचित स्वतन्त्रता का अपहरण करना नहीं चाहती, तो यह दफा सब तरह से काफी है। सन् १८९८ में भारत सरकार ने दक्षिण में होने वाली कुछ घटनाओं से घबड़ा कर ताजीरात हिंद म दफा १२४ ए को संशोधन किया था और दफा १५२-ए नई जोड़ी थी और जाब्ता फौजदारी में १०८ धारा जोड़ी थी। इन तीन धाराओं का उसी समय सारे देश में विरोध हुआ था और विरोध करने वालों में स्वर्गीय श्री उमेशचन्द्र बनर्जी तथा दरभंगा के स्वर्गीय महाराजा सर लक्ष्मेश्वर सिंह बहादुर जैसे व्यक्ति भी थे। परन्तु जैसा कि सदा ही होता रहा है, सरकार ने जनता के विरोध की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। उस समय के होम मेम्बर ने बड़े तपाक से कहा था कि मुझे इस बात की तनिक भी परवाह नहीं है कि भारतीय आलोचक क्या कहते हैं।

४ वर्ष हुए, मुझे देश के सब से बड़ अधिकारियों से यह पूछन का अवसर मिला था कि ऐसी कौन सी बात है जो आप दफा १०८ द्वारा नहीं कर सकत और किस कारण म आप को प्रस आर्डिनेन्स की आवश्यकता है? इस का उत्तर मुझे यह मिला कि दफा १०८ अनुभव से नाकाफी सिद्ध हो चुकी है। मंन कहा कि अगर आप इस बात का प्रमाण दे सकते हो तो दें, और मैं इस बात का प्रमाण दूंगा कि सिवाय एक बार के, अधिकारियों को इसके प्रयोग में सदा ही सफलता मिली है। वह एक बार वाली घटना यह है कि स्वर्गीय लोकमान्य तिलक स जब दफा १०८ में जमानत दाखिल करने को कहा गया था तो हाईकोर्ट में अपील करन पर मजिस्ट्रेट का हुकम रद्द हो गया था यह दफा कुछ कम चालीस वर्ष से जारी है, सम्भव है इस लम्बे अर्से में दो एक सम्पादक और भी इस दफा के जाल में फंसने से बच गये हों, लेकिन यह निश्चय है कि दो चार बार को छोड़ कर प्रायः सदा ही अधिकारियों को इस के द्वारा जो कुछ वे करना चाहते

वे इसे करने में सफलता मिली है। पर इतने से वे सन्तुष्ट नहीं हुए। क्यों? मेरे दिमाग में तो इस प्रश्न को एक ही उत्तर आता है और वह यह कि दफा १०८ के मुताबिक फैसला करने वाले चाहे सरकार के मातहत कर्मचारी (मजिस्ट्रेट) ही हों लेकिन अभियुक्तों को सफाई देने का तथा हाईकोर्ट में अपील करने का मौका तो मिल ही जाता है। सरकार शायद यह सहन नहीं कर सकती, क्योंकि उस कानून के राज्य की अपेक्षा अधिकारियों का राज्य ज्यादा पसन्द है। लार्ड मारले ने एक बार लार्ड मिन्टो को लिखा था कि भारत सरकार वकीलों के विरुद्ध इस लिए है क्योंकि वह कानून के भी विरुद्ध है। ये शब्द किसी भारतीय पत्रकार के नहीं बल्कि एक भारत-मन्त्री के हैं। सब बात यह मालूम होती है कि भारत-सरकार को स्वेच्छाचारिता का इतना अभ्यास पड़ गया है कि उसे अपने कामों में स्वतन्त्र न्याय-विभाग का हस्तक्षेप करना अच्छा नहीं मालूम होता।

देशी राज्य और समाचारपत्र

मैं पहिले ही इस बात का जिक्र कर चुका हूं कि हमारे देशी राज्यों में समाचारपत्र कहलाने योग्य समाचारपत्र नहीं हैं। कुछ उन्नतिशील राज्यों को अपवाद स्वरूप छोड़ कर बाकी राज्यों की बाबत मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि उनके कार्यों की स्वतन्त्र आलोचना केवल ब्रिटिश भारत के समाचारपत्रों में ही होती है। भारत सरकार का देशी राज्यों में इतना प्रभाव है कि अगर वह चाहे तो उनके नरेशों पर इस बात का दबाव डाल सकती है कि वे अपने-अपने यहां समाचार पत्रों तथा अन्य स्वतन्त्र संस्थाओं को प्रोत्साहन दें। परन्तु यह तो दूर रहा उल्टा उसने इस प्रकार के कानून बना दिये हैं कि ब्रिटिश भारत के समाचारपत्र भी उनकी स्वतन्त्रतापूर्वक आलोचना न कर सकें। देशी राज्यों की प्रजा का न तो शासन पर कोई नियंत्रण है, न उसके प्रतिनिधियों का शासन कार्य में हाथ है, न उसे भाषणों द्वारा या समाचारपत्रों द्वारा अपने शासकों की आलोचना करने की स्वतन्त्रता है और अब प्रिन्सेज प्रोटेक्शन एक्ट की बदौलत उसे ब्रिटिश इण्डिया के समाचारपत्रों से भी काफी सहायता नहीं मिल सकती। भावी शासन विधान में भी रियासतों की प्रजा को नागरिकता के अधिकार नहीं प्राप्त होंगे भारत की व्यवस्थापिका सभाओं में रियासतों की प्रजा का एक भी प्रतिनिधि न रहेगा। हां, नरेशों के प्रतिनिधि रहेंगे और उनके द्वारा वे ब्रिटिश भारत के अन्दरूनी मामलों में भी दखल दे सकेंगे। परन्तु ब्रिटिश भारत के लोग देशी राज्यों के मामलों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न कर सकेंगे। इस बात का कोई लक्षण नहीं दिखाई देता कि देशी नरेशों की शासन-प्रणाली में कोई समयानुकूल परिवर्तन होने वाला है। ब्रिटिश भारत के पत्रों को भी यह स्वतन्त्रता न होगी कि वे देशी राज्यों के मामलों की स्वतंत्रतापूर्वक खरी आलोचना करके राजा प्रजा दोनों की सेवा कर सकें।

इन दिनों वर्षाऋतु में प्रायः कुछ ऋतुजनित विकार उत्पन्न होते हैं। मन्दाग्नि, अरुचि, देह में आलोदन, वमन (उलटी), पतले दस्त, हैजा (Cholera) और ज्वर आदि रोग आज कल की मौसमी खराबी द्वारा पैदा हो रहे हैं। रोगों की उत्पत्ति से पूर्व ही उसके निवारण के लिए प्रकृति स्वयं ही उसके पूर्ण उपायों का प्रबन्ध कर देती है। इसी प्रकार आजकल के ऋतुजन्य विकारों की शान्ति के लिए भी प्रकृति ने प्रबन्ध किया हुआ है। हमको चाहिए कि हम उन विकारों की शान्ति के लिए प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का उपयोग करें। ऊपर लिखे हुए विकारों की शान्ति के लिए आजकल एकमात्र उपाय यह है कि उत्तम पके हुए नींबू के फलों का प्रयोग किया जाय। रोगी, निरोगी, दुर्बल, सबल सभी के लिए यह आवश्यक है कि प्रातः सायं और भोजन के साथ नींबू का उपयोग करें। हम इसके प्रयोग जो कि आजकल के लिए लाभप्रद हैं, पाठकों को बतलाए देते हैं। आशा है पाठकगण इनको उपयोग में लाकर रोग संकटों से बचेंगे।

स्वास्थ्य-सुधार

नींबू के गुण और प्रयोग

(लेखक—स्नातक पं० सत्येन्द्रनाथ वैद्यराज आयुर्वेदाचार्य आगरा)

——✻:✻——

नीबू के गुण

पके हुए कागज़ी नीबू का रस तीक्ष्ण, अम्ल (खट्टा), पाचक, रोचक, अग्निप्रदीपक, हलका, कृमिघ्न (कृमिनाशक), उदर विकार, शूल (Colic pain), अजीर्ण, मलबद्धता, अरुचि प्रभृति रोगों को नष्ट करता है। चर्म दोष (जैसे दाद, खाज), दूषित जल जनित विकारों की शान्ति के लिए यह उत्तम उपाय है। बिगड़े हुये पित्त को शान्त करता और अजीर्ण को मिटाता है।

नीबू के प्रयोग

(१) साधारणतया नीबू के २॥ तोले या ५ तोले रस में अन्दाज़ के अनुसार थोड़ी सी चीनी या शकर अथवा सेंधा नमक डालकर प्रातः और सायंकाल दोनों समय पीना अत्यन्त लाभदायक है। इसके पीने से जठराग्नि तेज़ होती और आहार का भली प्रकार पाचन होता है अजीर्ण के होने पर जो खट्टी डकारें आती और छाती में जलन पड़ती है, वह इस प्रयोग से मिट जाती है। जहाँ कहीं बहुत से आदमी एक जगह इकट्ठे रहते हों, यदि उनमें से किसी को खुजली का रोग हो जाय तो जो भले चंगे लोग हैं उन्हें चाहिए कि वे लोग रोज़ इसी प्रकार नीबू का रस पिया करें, क्योंकि इसके पान से यह (खुजली-खाज) बीमारी नहीं होती। सबसे अधिक लाभ इसके उपयोग से यह होता है कि, वर्षाऋतु के दूषित जल से उत्पन्न होने वाले विकार नहीं होने पाते। यदि किसी जगह पर तालाब, नदी, पोखर आदि का मलिन जल पीना ही पड़े तो उस जल में नीबू का रस निचोड़ कर पीने से कोई दोष होने का डर नहीं रहता, क्योंकि नीबू का रस अपनी तीक्ष्णता से सब दोषों को काट देता है।



लेखक

(२) साग, सब्ज़ी, दाल में नीबू डालकर खाना चाहिए, इसके सिवाय अदरक, पोदीना हरी मिर्च की चटनी में नीबू का रस मिला कर खाना बहुत लाभदायक है। नीबू के दो बड़े टुकड़े बीच में से करके उनमें सेंधानमक और काली मिर्च पीसकर भर दें और अग्नि पर गरम करके खावें। इससे अजीर्ण, उदर शूल, अग्निमांद्य, अरुचि आदि रोग दूर होते हैं।

(३) वमन (उलटी) जी मिचलाना, दस्त, प्यास और ज्वर इन विकारों की शान्ति के लिये निम्बुपानक बनाकर रोगी के लिये देना चाहिये। उसके बनाने की विधि यह है कि, उत्तम पके हुए कागज़ी नीबुओं का रस १ भाग और शर्करोदक ४ भाग मिला कर उसमें लौंग, कालीमिर्च का थोड़ा सा चूर्ण डालकर रोगी को बार बार पिलाना चाहिये। यदि मौसमी बुखार की अधिक तेजी हो और रोगी दुर्बल हो तो कुड़वे चिरायते का काढ़ा २॥ तोले और इतना ही नीबू का रस मिला कर पिलाना चाहिये। बुखार जिसमें देह ज्यादा गर्म और पसीना रहित हो, प्यास ज्यादा लगती हो ऐसे मौके पर यह उपाय करना चाहिये कि ४ ५ नीबू छीलकर उनके छिलके दूर करें और उनके निरछे पतले-पतले कतरे कर लिये जांय, फिर उन टुकड़ों (कतरों) को किसी पत्थर या चीनी के ढक्कनदार बर्तन में रखकर ऊपर से पाव डेढ़ पाव खूब उबलता हुआ पानी डाल दें। १५-२० मिनट बाद छानकर मिसरी या चीनी डालकर रोगी को पिलावें। इससे ज्वर की तेज़ी और प्यास कम होकर बीमार को आराम मिलता है।

४ मुंह की भीतर की खुजली और मसूड़ों के फूलने पर नीबू का रस एक छटांक और एक पाव पानी मिलाकर कुल्ली करना चाहिये। इस प्रकार कुल्ला करने से कंठ, मुंह और दांतों के बहुत से रोगों से छुटकारा मिलता है। इसका कारण यह है कि, नीबू के रस में कृमि समूह (Germs) को मारने की बड़ी अद्भुत शक्ति है। जो कृमि कंठ, मुंह और दांतों में पहुंच कर रोग करते हैं, वे इस प्रकार कुल्ली करने से मर जाते हैं, और रोग का नाश हो जाता है।

(५) यदि अजीर्ण (Indigestion) का अधिक जोर हो, अग्निमंद पड़ गई हो, भूख भी खुल कर न लगती हो और अपच के कारण पेट में मंद-मंद दर्द रहता हो, अथवा बदहज़मी से पतले दस्त रहते हों तो ऐसी अवस्था में "निम्बु अवलेह" (नीबू की चटनी) का प्रयोग बड़ा काम करता है। उसके बनाने का योग नुसखा यह है:—

१ नीबू का रस ॥।
२ अमलतास का गूदा ।=
३ सेंधा नमक ।=
४ देशी मिसरी.... ।-
५ दाल चीनी . ६ माशे
६ लौंग ... . . ६ „
७ काली मिर्च . ६ „
८ छोटी इलायची के दाने ६ मा.
९ छोटी पीपल . ६ माशे
१० सोंठ . ... ६ „
११ जीरा सफ़ेद भुना ६ „
१२ हींग भुनी . . ६ „

बनाने की विधिः—इसको तैयार करने के लिये प्रथम किसी मिट्टी, चीनी या कांच के चौड़े मुंह के बर्तन में नीबू का रस भर दो, फिर उसमें अमलतास का गूदा आध पाव, सेंधा नमक आध पाव और मिसरी एक छटांक इन को मिला दो, फिर बर्तन का मुंह ढककर २४ घंटे रक्खा रहने दो। अब नम्बर ५ से लेकर १२ तक की चीजों को खूब बारीक कूट-छानकर तैयार करलो। नीबू के रस को २४ घंटे बाद हाथ से खूब मथकर साफ़ बारीक कपड़े में छान लो। छानने पर जो फोक बचे उसे फेंक दो। छने हुए रस को किसी उत्तम मिट्टी की हांडी में डालकर अग्नि पर चढ़ा दो। औटते औटते जब रस गाढ़ा होजावे तब उसको चूल्हे पर से नीचे उतार कर उसमें उस कूटे हुए चूर्ण को मिलाकर चम्मच से एक जीव करदो। बस यह "नीबू की चटनी" तैयार होगई। इस चटनी को उत्तम कांच की चौड़े मुंह की शीशी में भर कर रख दो। यह चटनी रोगी, निरोगी, बच्चे, बूढ़े स्त्री-पुरुष सभी के लिए लाभदायक है। इसमें से एक दो तोले चटनी प्रातःकाल

कहानी

पतित कौन

(ले०—श्री जगतनारायण जोती)

सुकुमार विचित्र प्रकृति का मनुष्य था। वह ऐश्वर्य की गोद में पला था। लक्ष्मी उसकी चेरी थी। विलास उस का सखा था। मदिरा उसकी चिर-संगिनि थी। उसके मुख पर चञ्चलता और चाल में मस्ती थी। उस की मृदु मुस्कान में जादू और नत्रों में "अमिय" और "हलाल" दोनों थे।

वह दानवीर था। स्त्री-शिक्षा का नगर में सब से बड़ा समर्थक था। अनाथालय का मंत्री तथा विधवा आश्रम का जन्मदाता था। भिक्षुक उसके द्वार से कभी विमुख न जाता। सदा ही चार पांच विधवा कुछ न-कुछ सहायता प्रतिमास उससे पाती थीं।

वह धनाढ्य था। रहन-सहन उस का अत्यन्त साधारण था। घोड़ा गाड़ी और मोटर दोनों ही उसके पास थीं। पर वह स्वयं कभी भूले-भटके ही उनको अपने काम में लाता। विद्युत-प्रकाश और विद्युत बिजन भी उसने अपने मित्रों के अनुरोध से मकान में लगवा लिये थे। बिजली का पंखा उसके कमरे में न था, कारण, पखे को खींचने वाली साठ वर्षीय सुखिया पर उसकी विशेष कृपा थी। वह कब का ही काम करती थी।

सुकुमार के मकान से सटा हुआ एक सजातीय दरिद्र कुटुम्ब रहता था। उस कुटुम्ब में केवल दो प्राणी थे—एक सोलह वर्ष की विधवा आनन्दी और दूसरी उसकी दादी (अवस्था अस्सी वर्ष)। ढाई साल हुआ तब आनन्दी का विवाह हुआ था। विवाह में उसके पिता ने अपनी समस्त पैतृक सम्पत्ति महाजन के बन्धक रख दी थी। छः महीने हुए तब महामारी फैली थी। वह आनन्दी के सास ससुर और देवर को कवलित कर चुकी थी। उस का पति भी स्वर्ग में अपने माता पिता की सेवा करने को कुछ ही दिन पीछे अपना सम्बन्ध इस जगत् से तोड़ चुका था। माता पिता भी अपनी पुत्री की यह विपत्ति न देख सके और वह भी कहने का उसी महामारी के शिकार हुए। एक महीने के अन्दर यह सब लीला समाप्त होगई थी।

घर पर जो बर्तन-भांडे बचे थे वह सब धीरे २ दादी पोती का पेट भरने में काम आ लिये थे। अब घर में केवल दो दिन का भोजन शेष था। आनन्दी ने कहा, दादी दो दिन बाद क्या होगा?" "बेटी, परमात्मा पर भरोसा रखो। वह अवश्य हमारी सहायता करेगा।"

"दादी, विश्वास नहीं होता। परमात्मा हमारा सहायक होता तो यह दिन ही क्यों देखने पड़ते।" यह कहते-कहते उसे अपने विस्मृत दुःख की याद आगई। वह रोने लगी। उसने अपनी दादी की गोद में अपना सिर रख लिया। बुढ़िया ने उसे सान्त्वना देनी चाही, परन्तु पुत्र की स्मृति जागृत हो उठी। वह भी रो पड़ी।

यह दोनों रो रही थीं कि इतने में सुखिया आगई। सुखिया ने पुकारा—"आनन्दी! बेटी आनन्दी!" आनंदी ने कुछ उत्तर न दिया। बुढ़िया ने सुखिया को अपने पास बुला लिया आनंदी अभी रो रही थी।

सुखिया ने कहा—"चाची, मुझे तुम से एक खास बात कहनी है।" समस्त मोहल्ला आनंदी की दादी को चाची ही कह कर पुकारता था।

"सुखिया, क्या बात है?"

"बाबू चाहते हैं कि तुम्हारी कुछ सहायता कर दिया करें।"

"ना सुखिया, जब तक हमारे हाथ पैर चलेंगे, हम किसी के आश्रित न होंगे।"

"तो बाबू काम भी दे सकते हैं।"

"क्या काम?" आनन्दी ने पूछा। अब वह रो चुकी थी, और अपनी दादी की गोदी में बैठी थी।

"कुछ नहीं, केवल बाबू की रोटी पकाना।"

"यह तो मैं कर लूंगी। क्या मजूरी मिलेगी?" आनंदी ने कहा।

"चार-पांच रुपया महीना, और एक आदमी का भोजन।

मुझे स्वीकार है और तुमको दादी?"

"मुझे भी।"

सुखिया चली गई। दादी ने कहा, "आनंदी, सुकुमार बड़ा पाजी है।"

"पर उसने मुझे गोद खिलाया है।

(३)

"सुकुमार इस नई चिड़िया को फंसाने में इतना समय लग चुका। फिर भी तुम सफल नहीं हुए।"

'मित्र, अभी दाना डाला है। पक्षी ने देख लिया है, मगर मैंने जानकर जाल नहीं फैलाया है।"

"क्यों?"

"अभी सुखिया की आज्ञा नहीं है। वह समझती है, अभी पक्षी उड़ जायगा।"

तुम भी क्या उस बुढ़िया के वह काय में आगये? अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो .. "

"तो कम से कम एक दर्जन कल कलिया सलोपर से अपनी चांद की खाज [illegible] टवाते या बेलन की मार से अपनी कमर का दर्द मिटवाते?"

"तुम को विनोद की सूझ रही है!"

'और आपको काम की!"

इतने में सुखिया ने आकर कहा "बाबू भोजन तैयार है।"

"मैं आता हूं, 'यह कहते हुए सुकुमार बाबू खड़े हो गये।

(४)

सुखिया और सुकुमार बाबू आखिर अपनी चालों में सफल हुये। विवाहित जीवन का सुख—वह सुखद स्वप्न—आनन्दी अभी न भूली थी। उसकी स्मृति अभी शेष थी। वह कोई हुई वस्तु न रह गया था। सुकुमार ने धन का प्रलोभन, आभूषणों की भेंट, और उससे भी अधिक विवाहित जीवन का सुख देने का जब वचन दिया, आनन्दी ने भी कुछ-कुछ स्वीकृति दे दी। वह पुनर्विवाह करना चाहती थी। उसकी उसने स्वीकृति दी।

घर आकर उसने अपनी दादी से कहा—'दादी, सुकुमार से पुनर्विवाह करने की मैं स्वीकृति दे आई हूं।" दादी ने अपना माथा ठोका, और कहा—"आनन्दी, आनन्दी, जिसे तू स्वर्ण समझी है वह तो पीतल भी नहीं है।' यह कहते कहते वह बेहोश होगई।

पांच दिन बाद बुढ़िया चल बसी।

(५)

"आज, बात को टालते-टालते कितने दिन हो गये।"

"तो अभी जल्दी क्या है?"

"और मुझे यह तीसरा महीना है।"

"यही तो मार्ग में बाधक है।"

"क्यों, क्या यह तुम्हारा नहीं है?'

"इसे मैं कब अस्वीकार करता हूं।"

"तो फिर।"

"मैं समाज को मुंह कैसे दिखाऊंगा।"

"और मैं,"

"मैं क्या जानूं। अपने पाप का फल भोगो।"

"पापी कौन हैं?'

"तुम।"

"और आप।"

"मेरा क्या बिगड़ा है। पाप की गठरी तो तुम लादे फिर रही हो।"

'मैं और पाप की गठरी।" " " परमात्मा यदि मनुष्यों के यह पाप की गठरी लादता । तो क्या आप सरस्वती की सौगन्ध खाकर कह सकते हैं कि यह पाप है।"

"हां "

आनन्दी को क्रोध आ गया। पास ही मेज पर कलमदान रखा था, उसे उठाकर सुकुमार के सिर पर दे मारा। लाल और नीली स्याही दोनों ओर को बह गई। सुकुमार अपने को सम्हाले इतने में उसने मेज पर रखा हुआ फूलदान हाथ में उठा लिया और वह भी झट से उसके मार दिया।

(६)

फिर वह सुकुमार के घर नहीं गई। पांच महीने बाद अमावस्या की रात्रि थी। क्वार का महीना था। नौ बजे थे। चोरों की भांति कमन्द लगाकर सुकुमार उस के घर में उतर गया। एक कोने में दिया टिम-

---

और सायंकाल खानी चाहिये। यदि आपके के लिये खाना खाने के बाद कोई आय तो कुछ हर्ज नहीं है। यह परम स्वादिष्ट रोचक, पाचक, और जठराग्नि वर्द्धक चटनी है। हर गृहस्थी को इसको बनाकर घर में रखना चाहिये। बच्चे भी इसको परमप्रसन्नता से खा लेते हैं। पाठकों को चाहिये कि इसकी बनाकर इसके गुणों की परख करें। यह आजकल चीजों के सुलभता से प्राप्त होने के कारण सस्ता और अल्प मूल्य में तैयार हो सकती है।

दिया रहा था। आनन्दी पेट तक रजाई ओढ़े हुये थी। रजाई कुछ कुछ फट रही थी। कहीं-कहीं उसमें रुई चमक रही थी। वह कुछ सी रही थी।

"आनन्दी, तुमसे एक बात कहनी है।"

"क्या ?"

"तुम घर चलो।"

"एक शर्त पर चल सकती हूं।"

"कौन शर्त ?"

"वही पुरानी।"

"मेरी नई शर्त है।"

"क्या ?"

"जो सन्तान हो वह मुझे दे देना।"

"और मैं ?"

"तुम्हारे लिये मेरे घर में जगह नहीं।"

"मैं एक बात कहूं।"

"कहो ?"

"सन्तान का मूल्य क्या होगा ?"

"मूल्य कैसा ? वह तो मेरी सन्तान होगी।"

"मेरे उदर से निकली सन्तान तुम्हारी और मैं—मैं—तुम्हारी कोई नहीं !"

"ना अच्छा मैं मूल्य दूंगा !"

"बहुत अधिक होगा।"

"कहो, क्या मांगती हो ?"

"इसका मूल्य है मेरा-तुम्हारा विवाह।"

"यह नहीं हो सकता। धन मांगो, मनचाहा धन मिलेगा।"

"धन अस्थायी वस्तु है।"

"तो मुझे प्रेम चाहिये।"

"वह एक।"

वह उठकर खड़ी होगई और इस जोर से तमाचा मारा कि सुकुमार चौकड़ी भूल गया।

(७)

आनन्दी को पुत्रवती हुये आज एक मास से अधिक हुआ। तीन दिन हुये उसको खाट पर से उसके सोते हुये बालक को कोई उठाकर ले गया। तब से वह पागल की भांति गली गली में "मेरे लाल" "मेरे लाल" चिल्लाती फिरती है। उसे अपने तन-बदन की सुध नहीं है।

नगर के पूर्व में भगवती भागीरथी बहती हैं। वहां सेठ सुकुमारचन्द की नई धर्मशाला का आज शिलान्यास है। सुकुमार के द्वार पर रात भर वह रट लगाये रही—"मेरा लाल, मुझे दे दो।" दिन निकला। दर्वाजे पर आदमियों का आना-जाना लगा हुआ था। वह हरेक से यही कहती "मेरा लाल मुझे दिला दो।" किसी किसी का पल्ला पकड़ लेती सभी

उसकी ओर से उदासीन थे।

आज आठ बजे सेठजी बाहर निकले। मोटर में बैठे। वह उनके पीछे भाग सकती थी। परन्तु मोटर के पीछे नहीं।

गंगा के घाट पर आज जिले के कलक्टर ने ठीक साढ़े आठ बजे सेठ सुकुमारचन्द की धर्मशाला का शिलान्यास किया। सेठजी की परोपकारिता और उनके पुण्य की सब ही प्रशंसा कर रहे थे। इसी ओर को चौरस हुई एक पगली गंगाजी की ओर आ रही थी। वह कह रही थी, "गंगा मइया, मेरा लाल तुम्हीं मुझे दिला दो।" यही कहती हुई वह गंगा जी के जल में धीरे-धीरे प्रवेश करने लगी।

———

गांधीजी के गले में सांप

गांधीजी को स्वामी आनन्द से यह मालूम हुआ कि उनके थाणा के आश्रम में सांप बहुत कसरत से निकलते हैं। इस पर गांधीजी ने हाफकिन इन्स्टीट्यूट के कर्नल सोखे से इस संबंध में पत्र व्यवहार शुरू कर दिया। गांधीजी ने उनसे कई प्रश्न पूछे—जैसे, साधारण आदमी यह किस तरह बतला सकता है कि यह सांप जहरीला है, और यह नहीं, सांप के काटे का क्या और किस तरह इलाज किया जाय, इत्यादि २। गांधीजी के पत्र के उत्तर में कर्नल सोखे ने तुरन्त सर्प विषयक साहित्य भेज दिया। पर उससे तो गांधीजी की सर्प विद्या संबंधी जिज्ञासा और भी बढ़ गई। और एक दिन जब जमनालालजी ने उन्हें यह बताया कि मैं एक ऐसे साधु को जानता हूं जिसे इस विद्या का बड़ा अच्छा ज्ञान है, उसके पास अनेक प्रकार के सर्प हैं और वह अपना प्रयोगात्मक प्रदर्शन भी दिखा सकता है' गांधीजी ने उसको सर्प-विद्या देखने की इच्छा प्रगट की। अतः वह संपेरा साधु एक दिन मगनवाड़ी में बुलाया गया। वह अपने सब सांप तो नहीं, केवल एक सांप लाये। कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को गांधीजी की बैठक के सामने संपेरे की यह दूकान देख कर और भी अधिक आश्चर्य हुआ ! उस दिन मोची ने अपनी दूकान फैला रखी थी, आज यह सपेरा बैठा हुआ है ! मगर जब गांधीजी उस साधु से सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रश्न पूछने लगे, तब तो उनका आश्चर्य मनोरंजन में परिणत हो गया। वह साधु अपने फन में काफी कुशल मालूम हुआ, पर कर्नल सोखे ने जो बातें बतलाई थीं उससे अधिक तो वह नहीं बतला सका। सर्प-विद्या-विषयक अंग्रेजी की एक प्रामाणिक पुस्तक से अनूदित एक मराठी पुस्तक उसके पास थी। दुर्भाग्य से वह मूल पुस्तक आजकल अप्राप्य है। जो सांप उस दिन वह लाया था वह ऐसा ज्यादा जहरीला नहीं था। उसने हमें बतलाया कि इसमें जहर तो है, पर हलका जहर है। उसके लिये तो वह विषधर सर्प एक केंचुए के समान था ! और जब वह सपेरा सांप को गांधीजी के गले में लपेटने के लिये आगे बढ़ा, तब तो कार्यकारिणी के सदस्य एक दम स्तंभित और भयभीत से होगये। गांधीजी ने उसे रोका नहीं। उसने सांप उनकी गर्दन में लपेट दिया। गांधीजी के गले में वह सांप की माला देख कर सब लोग कुछ क्षणों के लिए घबरा से गये। कड़ा जी करके सबने वह दृश्य देखा। इसके बाद उस साधु ने सांप का फन खोल कर उसके विषैले दांत और विष की पोटली दिखाई। उसने कहा कि अगर कोई खुशी से सांप से कटवाना चाहे तो मैं उसका जहर फौरन निचोड़ दूंगा। गांधीजी की ज्ञान पिपासा तो कभी शांत होती नहीं, साथ ही वे ऐसे किसी भी नये प्रयोग के लिए हमेशा ही उद्यत रहते हैं, जिसकी सहायता से वे दीन-दुर्बलों की सेवा और भी अच्छी तरह से कर सकें, इस लिए वे खुद ही सर्प से डसवाने के लिये तैयार होगये। पर सबने एक स्वर से इस बात विरोध किया और इससे साधु महाराज की हिम्मत नहीं पड़ी उससे औरों ने कहा कि हम इतने लोग जो यहां खड़े हैं उनमें से किसी एक पर तुम अपनी गारुड़ विद्या आजमा सकते हो। इस पर वह राजी होगया। दो सज्जन तुरन्त तैयार होगये। मगर वह सांप भी पहले नम्बर का सत्याग्रही निकला। कितनी ही कोशिश की, पर उन सज्जनों को वह अपना घातक विषदान देना ही नहीं चाहता था।

'भूल का भोग' के दो दृश्य





राजपूताना फिल्म कम्पनी अजमेर ने पहली फिल्म 'भूल का भोग' तैयार की है। उसी के दो चित्र यहाँ दिए जाते हैं।

साहित्य-समालोचन

समालोचनार्थ सब पुस्तकों की दो दो प्रति आनी चाहियें। एक पुस्तक आने पर समालोचना न हो सकेगी।

माधुरी—(नव-वर्षांक)—सम्पादक श्री रूपनारायण पाण्डेय और श्री बांकेबिहारी भटनागर एम० ए०। प्रकाशक—नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ। वार्षिक मूल्य ६॥)।

माधुरी ने हिन्दी संसार में जन्म लेकर हिंदी की पत्रिकाओं में क्रांति कर दी थी, इस में कोई संदेह नहीं। उसने एकाएक हिन्दी पत्रिकाओं का स्टैन्डर्ड ऊंचा कर दिया। पाठकों की रुचि हिन्दी-पत्रिकाओं की ओर बढ़ने का श्रेय वस्तुतः माधुरी को दिया जाना चाहिये। कुछ सालों तक हिन्दी संसार में माधुरी की ही तूती बोलती रही।

बीच में कुछ सालों तक शिथिल रहने के बाद माधुरी के संचालकों ने इसे फिर से नये उत्साह से चलाने का प्रयत्न किया है। यह नव-वर्षांक इसी की सूचना है। लेखों का चयन अच्छा हुआ है। तुलसीदास, डा० गंगानाथ झा, तकराजुका, पुस्तकालयों का प्रचार, अंध विश्वास क्या भारतीय प्रवासी भीरु हैं? आदि अनेक लेख सुन्दर हैं। कहानियां भी एक-आध को छोड़ कर सुन्दर हैं। कविताओं के सम्बन्ध में हमें एक बात अवश्य कहनी है। कवित्व और ऊंची कल्पना ही कवि का उद्देश्य न होना चाहिये। मनुष्य को ऊंचे आदर्शों की ओर भी ले जाना उसका कर्त्तव्य है। आज-कल साक़ीवाद की एक नयी प्रवृत्ति कवि जगत् में चल पड़ी है। कवि पाठक को एक नये जगत—सुरामय जगत में ले जाते हैं, जहां शराब और मस्ती—लाल आंख और मदमस्त चेहरा आदि के सिवा कोई बात ही नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने यह समझ लिया है कि सब पाठक शराब के आनन्द को अनुभव कर चुके हैं। सुरा-पान महापातक है, यह ख़याल कवियों को हमेशा रहना चाहिये। इस लिये उन्हें सुरा के मद की प्रशंसा भी नहीं करनी चाहिये और न शराब के प्याले में दूध या अमृत पिलाने की कोशिश करनी चाहिये। साक़ीवाद की बढ़ती हुई प्रवृत्ति निंद्य और घातक है। श्री राजकिशोर राज' की 'और पिला' इसी गन्दी प्रवृत्ति की परिचायक है। एक शराबी का चित्रण ऐसी भाषा में अत्यन्त अनुचित है, जो मद्यपान को उत्तेजन दे। श्री हृदयेश भी शराब के प्याले में बहुत-कुछ पिलाना चाहते हैं। क्या उन्हें और कोई प्याला नहीं मिलता। हमारी निश्चित सम्मति है कि साक़ीवाद की यह प्रवृत्ति बन्द होनी चाहिये।

नव-वर्षांक की छपाई, गैटअप और चित्र अत्यन्त सुन्दर हैं। इसके लिये माधुरी के सम्पादक धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है, हिन्दी के साहित्यिक इसे अवश्य अपनावेंगे।

—कृष्णचन्द्र।

तेज का कृष्णांक—यथा पूर्व इस बार भी दैनिक तेज, देहली ने जन्माष्टमी के अवसर पर कृष्णांक प्रकाशित किया है। अंक का रंग रूप सुन्दर तथा गेटअप उत्तम है। दो तिरंगे मनोहर चित्र हैं। एक में भगवान कृष्ण पांचों पांडवों को निराशा छोड़ कर युद्ध के लिये तैयार होने का सन्देश दे रहे हैं। दूसरा महात्माजी का है। देश विदेश के नेताओं, साहित्यिकों तथा उपन्यासकारों के लेख तथा कहानियां हैं। कविताओं का अच्छा संग्रह है, लेख भगवान के जीवन पर प्रकाश डालने के अतिरिक्त सामयिक समस्याओं पर भी रोशनी डालते हैं। पृष्ठ संख्या सौ से अधिक है। मूल्य ।=)

'—पाठक'

राजस्थान (बेगार-अंक)—सम्पादक—श्री हरिभाऊ उपाध्याय और ऋषिदत्त मेहता।

यह पत्र ब्यावर (राजपूताना) से प्रकाशित होता है। रियासतों में बेगार की दुष्ट प्रथा आज भी समस्त ब्रिटिश भारत से अधिक जोरों में विद्यमान है। उसे नष्ट करने के लिए ही यह अंक प्रकाशित किया गया है। इसमें बेगार का उद्भव और विभिन्न रियासतों में बेगार की स्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। श्री गणेशलाल और श्री गोपीकृष्ण के लेख सुन्दर हैं। अन्य भी अनेक लेख अच्छे और पठनीय हैं। आशा है कि रियासती राजा और ठिकानेदार बेगार की दुष्ट प्रथा को नष्ट करने का प्रयत्न करेंगे।

उद्गार—(गद्य काव्य)—ले० श्रीयुत 'कनक' अग्रवाल। प्रकाशक—भारतीय विद्वत्परिषद् कार्यालय—अजमेर। पृष्ठ संख्या ५६। मूल्य ।।)।

इस छोटी सी पुस्तक में 'कनक' जी ने अपने हृदय के 'उद्गार' खोल कर रक्खे हैं। एक युवक और उत्साही युवक की अन्तर्वेदना के दर्शन हमें इन 'उद्गारों' में हुये। सचमुच पराधीन मां को बन्धन-मुक्त करने का जिस मानव हृदय में तनिक भी सनक है, उसे यह 'उद्गार' अवश्य पढ़ने चाहिए। यद्यपि पुस्तक की भाषा में कहीं-कहीं कुछ उलझन-सी अवश्य है तथापि शैली सुरुचिपूर्ण होने में खटकनी नहीं, फिर लेखक का यह प्रथम प्रयास ही तो है। आशा है भविष्य में वे भाषा को और सुस्पष्ट और परिमार्जित बना सकेंगे। पुस्तक में प्रूफ-संशोधक की असावधानी से शाब्दिक गलतियां भी रह गई हैं।

प्राप्ति स्वीकार

यास्कयुग—ले० श्री चमूपति एम ए.। प्रकाशक—मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर। मू० ।।)

भावि विज्ञान व नवरत्न विधान प्रकाशक—जिनदत्तसूरी ग्रंथमाला देहली। मूल्य ।=)

—'रमेश'

मारवाड़ के ग्राम गीत—सम्पादक श्री जगदीशसिंह गहलोत। प्रकाशक—हिंदी साहित्य मंदिर—घंटाघर जोधपुर, मूल्य १)

रियासती दुनिया

लोहारू का हत्याकांड और उसकी कथा

(ले०—श्री जयनारायण व्यास)

—————:o:—————

लोहारू पंजाब की एक छोटी सी रियासत है। इस का रकबा २२२ वर्ग मील है और आबादी २३३३८ इस में लोहारू ही एक नगर है जिस की आबादी २१३५ है और बाकी ७० गांव। इस में ६ प्रतिशत भाग बस्ती हिन्दुओं की है। बाकी मुसलमानों की। हिन्दुओं में आधी बस्ती जाटों की है। लोहारू के उत्तर में हिसार जिला है पश्चिम दक्षिण और पूर्व में बीकानेर, जयपुर और झिंद रियासतें हैं।

लगान का प्रश्न

लोहारू रियासत में लगान वसूली के लिए कोई स्थिर नियम न होने से सन् १९०६ में रियासत का लगान स्थिर किया गया था। लगान स्थिर करने के उत्तरदायी ब्रिटिश सरकार के अफसर हैं जो सारी रियासत का लगान ४८०००) रखना चाहते थे, पर रियासत पर मंझोत नवाब को ५ लाख कर्ज और होने से लगान बढ़ा कर सालाना लगान ७३०००) रखा गया। यह भी तय किया गया कि यही लगान २४ वर्ष तक लिया जाय, पर सन १९२३ में रियासत ने लगान ७३०००) से ९४०००) कर दिया। कहते हैं कुछ लोगों ने इस वृद्धि का विरोध किया पर सुनता कौन ? रियासतों में आन्तरिक स्वतन्त्रता जो ठहरी। कहते हैं गागड़वास के हीरा नाम के जाट को इस अपराध में निर्वासित कर दिया गया। और उस की सम्पत्ति भी छीनी गई और बिसलपुर, पागू, सिरसी और गागड़ के लम्बरदारों की लम्बरदारी छीन ली गई। कुछ लोगों को इस सिलसिले में नाजायज तौर पर हिरासत में भी रखा गया बताया जाता है। कुछ भी हो इस सख्ती से किसान लोग दब गए, पर वे लगातार नवाब साहब के पास आते जाते रहे और लगान कम करने की अर्ज करते रहे। बचारों में ज्यादा लिखा पढ़ी करने की ताकत भी कहां है क्योंकि वहां शिक्षा के लिये तो कोई समुचित व्यवस्था ही नहीं है। सिर्फ एक उर्दू मिडिल स्कूल लुहारू कस्बे में है। दूसरे स्थानों में कोई स्कूल नहीं है और मालूम हुआ है कि न दूसरों को स्कूल खोलने की इजाजत दी जाती है। खैर—

जमीन की मिलकियत

सन् १९०९ में जमीन की मिल्कियत भी किसानों को दे दी गई थी और इस का जिक्र भी सरकारी गजेटियर में है पर बाद में नवाब साहब ने इस मिल्कियत पर भी अपना अधिकार जमा लिया। जमा मद्दियों में पुराने खातों के साथ एक नया खाना जोड़ दिया गया जिस में जमीन का खास मालिक नवाब साहब को बताया जाने लगा। भूमि पर अधिकार तथा भूमि कर सम्बन्धी ये कष्ट तथा ऊंट टैक्स ही लोहारू के वर्तमान आन्दोलन के मुख्य कारण हैं। तथा किसानों के और भी छोटे २ कष्ट मिटाने की प्रार्थना करते रहे हैं और अब घोषणा भी हुई है कि अन्य टैक्स नहीं लिए जावेंगे पर आर्थिक स्थिति खराब होने पर भी किसानों से लगान तो १९०६ के बन्दोबस्त के मुआफिक नहीं लिया जा रहा है, न, ऊंट टैक्स ही उठाया या कम किया जा रहा है।

ऊंट टैक्स

यहां थोड़ा जिक्र ऊंट टैक्स का भी कर देना चाहिये। पहिले कहते हैं कि किसानों के ऊंट जंगलों में चरा करते थे और चराई के उपलक्ष में उन से टैक्स लिया जाता था, पर बाद में उन में जंगलों में ऊंटों के चरने की व्यवस्था न होने पर भी टैक्स पक्का हो गया।

दूसरे आरोप

अधिक टैक्स वसूल करने के अतिरिक्त दो और भयंकर आरोप किसानों के अधिकारों के विरुद्ध हैं। एक है विधवाओं के विवाह (करवा) के उपलक्ष में मोटी २ रकमें ले लेना और दूसरा १९३४ पहाड़ी गांव पर कैम्प लगाकर कई बहानों से नाजायज तरीकों से लोगों से हजारों रुपयों का वसूल किया जाना। ये ही वर्तमान आन्दोलन के मुख्य कारण हैं।

किसानों का संगठन

जिन कष्टों का जिक्र ऊपर किया गया है उन को दूर कराने के उद्देश्य से किसानों ने संगठन शुरू किया। उन में योग्य नेताओं का तो अभाव था। बाहर के जाटों ने उन का नेतृत्व अस्वीकार कर दिया। अतः वे अपने ही ढंग से पंचायतें करने लगे इसे रियासत के अधिकारियों ने नापसंद किया और एक बार पंचायत को इकट्ठा भी न होने दिया, परन्तु संगठन मजबूत सा बनते देख कर स्टेट ने समझौते की नीति अख्तयार की। किसानों की पंचायतें बुलाई गई और उन में नवाब साहब और उन के रिश्तेदार और अफसर भी थे। पहली पंचायत चेहड़ में हुई जो इस बात पर टूट गई कि वहां किसानों ने स्कूल खुलवाने की शर्त कर दी। फिर मंडोली, बाढ़स गांव की ढाँपरी और बारवास में पंचायतें हुईं। बारवास में नवाब साहिब ने १४ लाग छोड़ दीं पर मुख्य २ मांगें मंजूर न की। वे मांगें ये हैं :—

(१) हासिल १९०६ के बन्दोबस्त के अनुसार हो।

(२) जमीन को बेचने का हक किसान को हो

(३) जिन की जमीन बेची गई है उन्हें वापिस दी जाय और रुपये वाले को रुपया दिया जाय।

(४) ऊंटों की जमानत न ली जाय।

इस पंचायत के अवसर पर नवाब साहब ने पंचायत करने के हक को स्वीकारकर लिया और स्कूल के सम्बन्ध में ऐसा कहा सुना जाता है कि स्टेट दूसरों को पाठशालायें खोलने की इजाजत नहीं दे सकती पर खुद खोल देगी और किसानों को चाहिये कि जो पैसा वे शिक्षा में खर्च करना चाहते हैं स्टेट को दे दें ताकि वह जल्दी स्कूल खोल सके। किसानों ने स्टेट की शर्तें नहीं मानी।

१५ जुलाई

अन्त में पन्द्रह जुलाई को एक दरबार हुआ जिस में ए० जी० जी० पंजाब स्टेट्स सभा थे। किसानों को प्रायः वही पुरानी शर्तें मंजूर करने को कहा गया पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया और ए०जी०जी० साहब को फैसला करने को कहा पर ए० जी० जी साहब ने इन्कार कर दिया और यह कह दिया कि "तुम्हारा फैसला नवाब ही करेंगे।"

आन्दोलन

इस प्रकार अपनी मांगों को ठुकरा दिया जाते देख कर उन्होंने पंचायत को और मजबूत बनाया। चन्दा भी इकट्ठा किया पर इस बात को मुकाबिला को सरकार बता कर और संगठन को बागियों की हरकत बना कर किसानों को मारा पीटा गया और लूटा खसोटा गया जिसके परिणामस्वरूप २२ आदमी तो मर चुके हैं और कितने ही घायल हुए हैं।

—————

मारवाड़ राज्य में बेगार

(ले०—श्री गणेशलाल व्यास 'मुग्ध')

राजपूताने के राज्यों में मारवाड़ सब से बड़ा है। एक चौथाई भाग खालसा और बाकी तीन चौथाई जागीर है। खालसा में बेगार लेना कानूनन मना है और जागीर में बेगार लेना स्वयं एक कानून है, परन्तु दोनों भागों में बेगार बराबर ली जाती है। जागीर में जागीरदार और उसके नौकर तो खालसा में हवल्दार दीन किसानों के राहु बने रहते हैं।

अट्ठारह रुपये पाने वाले खालसा हवल्दार को इस विषय में अपरिमित अधिकार प्राप्त हैं। हवल्दार के विषय में ऐसी कहावत प्रचलित है 'के हाकिम कै हवल्दार, बाकी सब काची कुम्हार।' मारवाड़ राज्य के भूतपूर्व रीजेण्ट महाराजा सर प्रताप कहा करते थे, कि 'हवल्दारी तो लाट साहब भी करना चाहेगा।'

फिर भी खालसे की प्रजा से जागीरी प्रजा की अपेक्षा कम बेगार ली जाती है। जोधपुर नरेश के दौरे पर तो अब बिल्कुल बेगार नहीं ली जाती। दौरे में जो कार्य जिस से लिया जाता है, उसकी पर्याप्त मजदूरी उसे दे दी जाती है। परन्तु जिलाधीशों और ब्रिटिश अधिकारियों के दौरों पर तो क्या जागीर और क्या खालसा दोनों भागों की जनता पर तबाही आ जाती है लाट साहब के दौरे के समय रेलवे लाइन के आस-पास खम्भों पर मसाल लेकर ग्रामीणों को रात रात भर खड़ा होना तो अब देश भर में प्रसिद्ध हो ही चुका है। अस्तु।

नीचे हम पाठकों की सेवा में जोधपुर (मारवाड़) राज्य में ली जाने वाली बेगार का संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

खालसा में

खालसा से अर्थ उस भू-भाग से है, जिस पर राज्य का अपना अधिकार होता है। खालसे में स्वर्गीय महाराजा श्री सुमेरसिंह जी साहब के समय में बेगार निषेध की आज्ञा प्रकाशित हो चुकी है। परन्तु इस आज्ञा का पालन स्वयम् जोधपुर नरेश के दौरे के अतिरिक्त कभी नहीं होता। खालसे में ली जाने वाली बेगार का ब्योरा जातिवार नीचे दिया जा रहा है। बेगार का उपयोग स्थायी तौर पर गांव का हवल्दार अथवा कणवारिया करता है, पर दौरे के समय प्रत्येक राज्य कर्मचारी करता है।

भांबी (चर्मकार)

इस जाति का एक व्यक्ति हर समय गांव के हवल्दार (पटवारी) अथवा कणवारिये (प्यादा) की सेवा में रहता है। तरकारी लाना, आसामी बुलाना, उगाई में फिरना गांव से जिस वस्तु की आवश्यकता हो उसे लाना—इस को काम है इस जाति के बाकी लोग एक गांव से दूसरे गांव बोझा पहुंचाते हैं। पशुओं के लिये जंगल खेतों अथवा बेरों पर से चारा भी लाते हैं। जिस गांव में भील न हों पत्र वाहक का काम इन्हीं से लिया जाता है, लकड़ी चीरन, सरकारी कच्चे मकानों को वर्ष में दो बार लीपन के लिये भी यही पकड़े जाते हैं। इस सारे काम के लिये इन्हें कुछ भी नहीं दिया जाता।

नाई

हजामत करना, चौका लगाना, जहां धोबी न हो वहां सब कपड़े धोना, गरम जल करना और स्नान करवाना, झाड़ू लगाना, बिस्तरे बिछाना, चिराग जलाना, मालिश करना और यदि हवल्दार साहब चाहें तो सोते समय पांव दबाना—इतना काम करना लाजिमी है। औरतें जनाने में सर गूंथने का और कहीं कहीं मसाला पीसने का कार्य करती हैं।

कुम्हार

आवश्यकतानुसार मिट्टी के बर्तन मुफ्त देना और पानी भरना इनका काम है।

माली

इन्हे आवश्यकतानुसार तरकारी मुफ्त देनी पड़ती है।

सरगरा

घोड़ों की नौकरी करना, गांव के बाहर परन्तु सीमा के भीतर से आसामी बुलाने का काम इनके जिम्मे पड़ा है।

भील

पत्र ले जाने और निकटतम कस्बे या शहर से सामान लाने का काम भील करते हैं। सरकारी रकम की और कहीं २ गांव की चौकीदारी भी यही करते हैं।

दर्जी

कपड़ों की मरम्मत बेगार में करते हैं।

महाजन

अफसरों के दौरे के समय बरतन, बिस्तर और चारपाई इन्हें देनी पड़ती हैं।

साधारण कृषक

बारी २ से सवारी के लिये गाड़ी देना, ईंधन की गाड़ियां लाना, यदा कदा दूध और दही देना और जहां महाजन न हो वहां चारपाई, बिस्तरे और बर्तन देना—यह इन पर स्थाई बेगार है। इनकी औरतों को नाज पीस कर भी बेगार में देना पड़ता है। राज्य के एक भाव में गांव में आए हुये हवलदार को बारी २ सीधा (आटा) भी इन्हीं को देना पड़ता है। अस्थायी बेगार में बड़े २ राज्य कर्मचारियों और ब्रिटिश अधिकारियों के शिकार आदि के दौरों पर इन्हें रस्ता काट कर उसे मोटरों के उपयुक्त बनाना पड़ता है और श्रीमान लाट साहब के आगमन के समय मसालें लेकर रात २ भर रेलवे लाइन के आसपास के तार के खम्भों पर भी कभी २ खड़ा होना पड़ता है।

जागीरी में

जागीरी प्रजा को बेगार की कष्ट कहानी हृदय को दहला देने वाली एक भयानक यन्त्रणा है। संक्षेप में इतना कह देना पर्याप्त है कि प्रत्येक गृहस्थी का एक व्यक्ति इस पैशाचिक प्रथा की भेंट चढ़ा हुआ है। जातिवार बेगार का ब्योरा नीचे दिया जाता है। बेगार का उपभोग, जहां जागीरदार का निवास-स्थान होता है वहां वह स्वयं और उसके वे नौकर, जो उस गांव के निवासी न हों, करते हैं और बाकी पट्टे के गांवों में कर्मचारी बेगार लेते हैं।

भांबी

इस जाति का एक व्यक्ति खालसे की तरह यहां भी स्थायी सेवा में रहता है और खालसे के अनुसार ही बेगार भी देता है। खालसे में ली जाने वाली बेगार से अधिक घास की बागर लगाना, तहखानों में पड़े हुये नाज को बाहर निकाल कर सहलाना और धूप दिखाना, ठिकाने के तमाम चमड़े के सामान (घोड़ों के साज इत्यादि) की मरम्मत करना, घोड़ों का चाम दलना, पेटिया बदार नौकरों के जूते बनाना और उनकी मरम्मत करना इत्यादि काम करने पड़ते हैं।

कुम्हार

इन का एक न एक घर हर समय ठिकाने की नौकरी में रहता है। खालसे में ली जाने वाली बेगार से अधिक इन्हें मकानों की मरम्मत के लिये ईंटे मुफ्त देनी पड़ती हैं।

दर्जी

कहीं-कहीं सप्ताह में एक दिन परन्तु साधारणतया एक पक्ष में १ दिन इन को मुफ्त काम करना पड़ता है।

धोबी

ठिकाने के और बाहर के (जो गांव के निवासी न हों) नौकरों के कपड़े धोने का काम इन पर लादा गया है।

सुथार (बढ़ई)

ठिकाने के तमाम लकड़ी के साजो-सामान की मरम्मत का काम इन से लिया जाता है।

सरगरा

इस कौम के एक व्यक्ति को छोटे ठिकानों में और बड़े २ ठिकानों में आवश्यकतानुसार व्यक्तियों को चौबीसों घण्टे तबले (stables) में साईस हो कर अथवा साईसों (जहां पर हों) की सहायता में रहना पड़ता है। संख्या और आवश्यकता को ध्यान में रख कर बारी बांध दी जाती है।

ढोली (डोम)

इन की औरतों को जनाने सरदारों की यात्रा के समय रथों इत्यादि के पीछे पैदल मीलों गाते हुए जाना पड़ता है। पुरुषों को कहीं-कहीं पत्र-वाहक का कार्य भी करना पड़ता है।

महाजन

कहीं २ इनकी औरतें कच्चे सरकारी मकानों को बेगार में लीपा करती हैं।

साधारण कृषक

खालसे में जो बेगार ली जाती है वह इनसे ली जाने वाली बेगार के आगे कुछ नहीं के बराबर है। मामूली यात्रा के लिये इनकी गाड़ियां कई दिनों तक के लिये पकड़ ली जाती हैं। चलते अरठ और हल से जोड़ियां खुलवा लेना साधारण सी बात है। बरातों में, जनानों में, मौसरों में इनकी बैल की जोड़ियां एक २ मास तक के लिये बेगार में पकड़ कर खेतियां उजाड़ दी जाती हैं। घोड़ों और जानवरों के लिये हरा घास और रिजका (Lotion) बोना और पिलाना उसको काटना तरकारी मुफ्त में देना—मौसरों पर दूध देना सब इन्हीं को करना पड़ता है। संक्षेप में जो भी कार्य अन्य बेगारियों से नहीं लिया जा सकता किसानों को करना पड़ता है।

पिंजारे

इन्हें अपने पेशे का कार्य मुफ्त करना पड़ता है।

('राजस्थान' से)

इटली अबीसीनिया की समस्या

(लेखक :— श्री महाव्रत विद्यालंकार)

१९२८ में इटली और अबीसीनिया के बीच मित्रता की एक सन्धि हुई थी। इस की घोषणा सीनियोर मुसोलिनी की फासिस्ट सरकार ने ही निम्न प्रकार की थी :—

"अब विशेषतः, सम्राट रासतिफारी की यात्रा के बाद इटली और अबीसीनिया के बीच सम्बन्ध घनिष्ट मित्रता के हो गये हैं। अन्य स्वार्थों (राष्ट्रों) के एजेंटों की कृपा से अबीसीनिया के साथ सम्बन्ध पर जो काले बादल छा गये थे, तितर बितर हो चुके हैं। मित्रता की यह सन्धि—जो अबीसिनिया की और किसी योरोपियन राष्ट्र के साथ की है, सब से प्रथम है, और अधिकांश सम्भावनाओं में यह इस नवीन मैत्रीसम्बन्ध को और भी पवित्र बना देगी"

परन्तु योरोपियन राष्ट्रों के साथ मैत्री सम्बन्ध जिस की पवित्रता (?) की इतनी दुहाई पीटी गई थी, उन के स्वार्थों के ऊपर निर्भर करता है। योरोपियन देशों में कभी मैत्री सम्बन्ध की पवित्रता को निभाया जाना ही नहीं। इतिहास प्रचुरता के साथ इस की पुष्टि में उदाहरण पेश करता है और वर्तमान इतिहास अब भी कर रहा है।

विगत महासमर के पूर्व अमेरिका के संयुक्त राष्ट्रों में जहां लाखों इटालियन (जो अधिकांश वहां डाके, चोरी, और उचक्कपन से आजीविका कमाते हैं) आया करते थे, वे अमरिका के नवीन इमिग्रेशन कानून द्वारा रुक गये। उस समय इटली के राजनीतिज्ञों को चुप होना पड़ा, क्योंकि इटली दुर्बल था। शनैः २ इटली को बढ़ती जनसंख्या के दबाव से अनुभव होने लगा कि लीबिया इत्यादि इटैलियन उपनिवेशों में चार लाख से अधिक आबादी नहीं बसाई जा सकती। अतः नये देशों की प्रदेशों की ढूंढ शुरू हुई जहां लैटिनभाषी जनसंख्या बसाई जा सके। इस आपत्ति को विश्वव्यापी संकट के काल में सब देशों की ओर से एक दूसर के व्यापार के विरुद्ध टेरिफ वाल (दीवार) खड़ी हो जाने से और उत्तेजना मिला। इटली को ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह अपनी सीमाओं में भिचा जा रहा है। अतः १९२९ में सीनियोर ग्रान्डी के विदेश-सचिवत्व में इस कष्ट का प्रकाशन निम्न शब्दों में किया गया :कि—

"यदि शनैः २ नवीन परिस्थिति और नवीन राजनैतिक आवश्यकताओं की स्वीकृति का मौका उपस्थित हो, तो हम इटैलियन उपनिवेश सम्बन्धी समस्या की उपेक्षा नहीं कर सकते।'

अभिप्राय यह कि, औपनिवेशिक वृद्धि की आवश्यकता अनुभव होने लगी। और उस के लिये निर्बल जातियों को हथियाने की चालें चली जाने लगीं। इटली को अपने आस पास अबीसीनिया ही ऐसा प्रदेश मिला, जिस पर अधिकार कायम करने से उस की जनवृद्धि व्यापार, व्यवसाय, इत्यादि समस्याओं का हल हो सकता था।

फलतः सभ्यता शिक्षा के मिशनरियों की प्रच्छन्न, स्वार्थपूर्ण परिभाषाओं और वाक्य-रचनाओं का आश्रय लिया गया—जिनका आश्रय इंगलैंड जर्मनी, फ्रांस इत्यादि साम्राज्यवादी देश करते आये थे, और जापान आज भी कर रहा है। अतः सीनियोर मुसोलिनी ने त्रैमासिक फासिस्ट अमेम्बला (१९३४) में इटली के अफ्रीका और एशिया में 'ऐतिहासिक-कर्तव्य' को बताते हुये कहा कि—

'इस, सदियों पुराने कर्तव्य के विषय में किसी प्रकार का भ्रम नहीं रहना चाहिये, जो मैं इटली की वर्तमान और भावी सन्तति को सौंप रहा हूं। सब समीप और दूरवर्ती को समझ लेना चाहिए कि इस में देश विजय का कोई प्रश्न नहीं। यह तो प्राकृतिक प्रसार का प्रश्न है जिस का परिणाम इटली और अफ्रीका के निवासियों तथा इटली और मध्य एशिया के देशों के बीच सहयोग होगा।'

यह सहयोग (?) वैसा ही होगा जैसा अंग्रेज और भारतवासियों के बीच है—अथवा गोला बारूद हवाई जहाजों की मदद से चीन और जापान के बीच अथवा अन्य किसी भी साम्राज्यवादी राष्ट्र और अधिकृत जाति के बीच है।

अपने प्रतियोगी साम्राज्यवादी देशों के विरोध की आशंका करते हुए मुसोलिनी ने आगे बढ़ कर कहा कि—

"हम किसी प्रकार का लोभ (?) या मोनोपोली नहीं मांगते। (और इटली क्या चाहता है) परन्तु उनमें जिनके पास पर्याप्त है, जो सन्तुष्ट हैं, और जो अपने अधिकृत उपनिवेशों की रक्षा करना चाहते हैं इतना ही मांगते हैं और चाहते हैं कि वे फासिस्ट इटली के आध्यात्मिक (?) राजनैतिक और आर्थिक प्रसार में चारों ओर से रोड़े अटकाने का कष्ट न करें।"

इसी आध्यात्मिक प्रसार के लिए इटली गरीब अबीसीनिया पर सवार होना चाहता है। यह मुसोलिनी की नीयत संसार के सन्मुख स्पष्ट है।

मुसोलिनी की साम्राज्यवादी वृद्धि की स्पष्टता का प्रकाशन 'इको दे पेरी' नामक पत्र ने मि० दे किरली और मुसोलिनी के बीच हुए वार्त्तालाप में निम्न प्रकार किया। मि० दे किरिली ने कहा कि—आप (अबीसीनिया के) उच्च भूमि और निर्जन प्रदेशों को चाहते हैं जहां इटालियन अपना घर बना सकें काश्त कर सकें, अपनी रोटी कमा सकें और स्वदेश का झंडा गाड़ सकें।'

मुसोलिनी ने उत्तर दिया कि—"मैं इटली के बारे में उसी प्रकार सोचता हूं जैसा कि बड़े अंग्रेज जिन्हों ने विशाल ब्रिटिश साम्राज्य का निर्माण किया है, ब्रिटिश साम्राज्य के लिए सोचते हैं, जैसा बड़े २ फ्रेंच औपनिवेशक उनके बारे में सोचते हैं। मैं समझता हूं कि मैंने आपको उत्तर दे दिया।

इससे स्पष्ट उत्तर राजनैतिक क्षेत्र में मांगना अनुचित होगा।

मुसोलिनी की यह साम्राज्यवादी वृद्धि की महत्वाकांक्षा का आवेश विध्वंसक महायुद्ध के पूर्ववर्ती कारणों की विद्यमानता में—उमड़ रहा है जब कि प्रत्येक राष्ट्र बेकारी, व्यावसायिक मन्दता तथा आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय गड़बड़ों से तंग आकर गुप्त रूप में वर्तमान नवीन से नवीन वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रों से सज्जित हो रहा है। १९१४ १९१८ के उन्मत्त रण नृत्य के बाद आज इटली योरोप के बारूदखाने में पलीता लगाने की चेष्टा पर तुला हुआ है। इसी सम्भावना को दृष्टि में रखते हुये ब्रिटिश कन्जरवेटिव पार्टी के नरम पक्ष के 'मोर्निंग पोस्ट" ने इटली को चेतावनी दी है कि—

'यदि हम शान्तिस्थापन के इतने उत्सुक हैं तो यह इस लिए नहीं कि हम इटली के न्याय-सम्मत अभिलाषाओं को रोकना चाहते हैं, परन्तु इस लिए क्योंकि हम अफ्रीका पर इस आक्रमण में अपने तथा योरोप के लिये भयंकर खतरा देख रहा है। किसी भी योरोपियन शक्ति द्वारा छेड़ा गया युद्ध चाहे वह अफ्रीका के सुदूरवर्ती कोने में क्यों न हो, अपनी आवश्यक प्रतिक्रिया बिना नहीं रह सकता। इसका अनिवार्य परिणाम एक या अनेक शक्तियों के बीच सम्बन्धों में तनाजनी होगा। योरोप में पहिले ही बहुत सा विस्फोटक मसाला विद्यमान है। सीनीयोर मुसोलिनी ऐसा खतरा उठा रहे हैं, जिस के परिणाम वे उनके अपने देश तथा योरोप की शान्ति के बारे में कोई अन्दाजा नहीं लगा सकता।

लार्ड स्नोडन की इस भविष्यवाणी में भी ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकार के प्रश्न पर गम्भीर खतरा पैदा हो जायगा इस स्थिति में भावी विश्व व्यापी युद्ध के सब कारण विद्यमान हैं काफी सचाई है।

अब तक राष्ट्र संघ की लम्बी बैठकों तथा पेरिस के वार्तालापों में 'शान्ति और समझौते का जो थोथा अभिनय हुआ है, उस में राष्ट्र संघ की प्रतिष्ठा रत्ती भर भी नहीं बढ़ी। ब्रिटेन और इटली के बीच १९२५ की गुप्त सन्धि (जिस से ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इन्कार कर रहे हैं) यह स्पष्ट है कि निर्बल-कृष्णकाय जातियों को इस से किसी प्रकार की आशा नहीं। यह गोरी शक्तियों का संघ है। यह विश्व शान्ति स्थापन में सहायक की अपेक्षा एक घातक संघ है एशिया के देशों का इन कारणों से साम्राज्यवादी गुट्ट या राष्ट्र-संघ में अविश्वास तो अत्यन्त स्वाभाविक है।

यद्यपि अबीसीनिया और उसके सम्राट ने प्रारम्भ से अन्त तक शान्ति और समझौते के लिए प्रयत्न किया है, परन्तु राष्ट्र संघ की लम्बी-लम्बी बैठकों द्वारा सिर्फ इटली को इरीट्रिया और सोमालीलैण्ड में फौज और शस्त्र भेजने का अवसर दिया जा रहा है क्यों कि सम्भवतः राष्ट्र संघ कुछ दिनों बाद इटलियन सैन्य शस्त्र और जहाजों को स्वेज नहर से रोक कर अपनी नाक बचाना चाहता है। इटली की तयारी और काली कमीजों के खून के उबाल को देख, लड़ाई अनिवार्य दिख रही है।

एक निर्बल अफ्रीकन-जाति की स्वतन्त्रता के अपहरण का यह भीषण कृत्य राष्ट्र संघ के देखते २ होने वाला है। (शेष पृष्ठ २६ पर)

व्यापार-डायरेक्टरी

आवश्यक वस्तुयें निम्न पते से खरीदिये—

व्यापार-संसार

भारत और बरमा का व्यापारिक समझौता

प्रतिबन्ध न लगेगा

भारत-सरकार की विज्ञप्ति

———:o———

बर्मा के पृथक हो जाने के बाद जो व्यापारिक समझौता भारत-सरकार और बरमा सरकार के बीच में आयद होगा वह प्रकाशित होगया।

आर्टिकल ३, ४ और १० के अनुसार कुछ खास माल पर भारत से बरमा में आन जाने पर किसी प्रकार की चुंगी नहीं लगेगी। धारा ६ के अनुसार बरमा के पृथक्करण के बाद अमल में आने वाले आयात कर के नियम दोनों देशों के आयात माल पर इस आर्टिकल की प्रथम उपधारा के अनुसार लागू होंगे। दूसरे देश से आने वाले माल पर दोनों देश परस्पर समझौता करके चुंगी घटा भी सकते हैं। दूसरी उपधारा के अनुसार इण्डियन टैरिफ ऐक्ट तथा सी कस्टम्स ऐक्ट के अधीन मिले हुये अधिकारों का प्रयोग करके भारत का गवरनर जनरल तथा बर्मा का गवर्नर बिना किसी समझौते या स्वीकृति के भी चुंगी कम कर सकते हैं। परन्तु उन विशेष अधिकारों का प्रयोग वर्तमान में वे नहीं करेंगे। जहां खास देश के आयात का प्रश्न होगा या उपधारा ३ में बताये हुये खास प्रकार के माल पर विशेष प्रयोजनवश कुछ समय के लिये रियायत करने की जरूरत पड़ जायगी, उस अवस्था में दोनों में से कोई देश भी दो मास का नोटिस दे कर दूसरे देश में न पैदा होने वाले माल पर चुंगी घटा सकेगा तथा दूसरा देश उस का अनुकरण कर सकेगा।

धारा १२ के अनुसार यदि भारतवर्ष, वर्तमान इन्डो जापानीज़ ट्रेड एग्रीमेंट, जिसके अनुसार जापान का कपड़ा भारत में निश्चित परिमाण में ही आ सकता है, की तिथि बीत जाने पर भी फिर से ब्रिटिश भारत में जापानी कपड़े के आयात को सीमित कर दे तो बरमा, जब तक उसका भारत के साथ समझौता चालू रहेगा, अपने देश में ऐसे माल के आयात का परिमाण नियत करके १९३४-३५ में आये माल से अधिक पर रोक लगा सकता है।

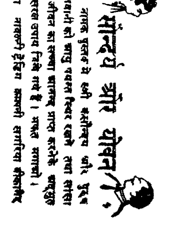
धारा ७ के अनुसार भारत में तैयार हुआ जो माल चाय, रुई और लाख बिना चुंगी के बरमा जा सकता है, उपधारा ३ के आधीन वही माल पुर्ननिर्यात पर चुंगी से नहीं बच सकता। दोनों देशों के बीच में एक दूसरे देश में जा बसने के सम्बन्ध में जो समझौता हुआ है, वह भी प्रकाशित हो गया है। उस के अनुसार बरमा का भारत में तथा भारतीयों का बरमा में प्रवेश निषिद्ध नहीं होगा। परन्तु बरमा का गवर्नर और भारत का गवर्नर जनरल अपने अधिकार से इस नियम का उल्लंघन कर सकता है।

बम्बई का सिक्यूरिटी बाजार

१३ सितम्बर के बाद वायदे के सौदे न हो सकेंगे

बम्बई के बाजारों में इटली अबीसीनिया के युद्ध की अफवाहें उड़ा २ कर कुछ लोग सनसनी पैदा कर रहे थे और कृत्रिम तौर पर कीमतों में चढ़ा-उतारी कर रहे थे अतः स्टॉक एक्सचेंज के डायरेक्टरों के बोर्ड ने सिक्यूरिटी के बाजार में १३ सितम्बर के बाद वायदे के सब सौदों को रोक दिया, उसके बाद केवल तैयार सौदे हो सकेंगे। सरकारी कागज़ के खरीदारों ने इस व्यवस्था का स्वागत किया है।

यदि शेयर बाजार में भी उक्त स्थिति हो गई तो बोर्ड उसके लिये भी ऐसी पाबन्दियां लगा देगा। चांदी के बाजार पर पाबन्दी हट जाने से चांदी की कीमत का रुख तेजी की ओर था।



पंजाब की खड़ी फसलें

कपास, तिल और ईख की हालत

(सूचना विभाग द्वारा प्राप्त)

सन् ३४-३३ से पहले ५ साल के अन्दर पंजाब के जितने भूभाग पर कपास बोई जाती थी—वह ब्रिटिश भारत के उस रकबे का ६ फी सदी था जिस पर कपास बोई जाती थी। जनवरी मास में प्रांत के प्रायः सभी भागों में हलकी से लेकर औसत दर्जे तक की वर्षा हुई। फरवरी में वर्षा आम तौर पर औसत से अधिक थी, मार्च में फिर हलकी हुई, अप्रैल में हलकी से लगा कर औसत तक मई और जून में हलके से छींटे ही पड़े—जुलाई में मौसमी हवाओं का जोर रहा और प्रांत के अधिकांश भाग में काफी वर्षा हुई। इस तरह कपास होने के लिए मौसमी हालात अनुकूल थे। नहरों में पानी काफी था। पंजाब के अंग्रेजी इलाके में २३,७६,८०० एकड़ पर कपास बोई गई। इसमें ८०० एकड़ बढ़ा कर शामिल किया गया है। यह रकबा गत साल के असल रकबे से १ प्रतिशत अधिक और गत वर्ष के पहले तखमीने से ११ प्रतिशत अधिक है। पता लगा है कि ४,३२,५०० एकड़ पर देशी और ८,४७,३०० एकड़ पर अमरिकन कपास बोई गयी है। इस साल पिछले साल की अपेक्षा अधिक कपास बोए जाने के २ कारण हैं—एक यह कि बीज डालने के समय मौसम अनुकूल था और दूसरा यह कि पिछले साल कपास का भाव अच्छा रहा विशेष वृद्धि मुलतान, हिसार, अमृतसर, शेखूपुरा, शाहपुर, जालन्धर और गुजरांवाला में हुई। जुलाई की वर्षा से खड़ी फसलों को लाभ पहुंचा। जिन २ रियासतों से समाचार आये हैं वहां ४,२७,७०० एकड़ पर कपास बोई गई है। यह रकबा पिछले साल के आखिरी तखमीने से २० प्रतिशत कम है। और पहले तखमीने से ४६ प्रतिशत अधिक है। समाचार है कि फसलों की हालत औसत से लेकर उम्दा तक है।

गन्ने की फसल

सन ३३-३४ से पहिले ५ साल में पंजाब में जिस रकबे पर ईख बोया गया वह ब्रिटिश भारत के उस रकबे का १८.३० प्रतिशत था जिस पर ईख बोया गया अनुमान है कि ४६४००० एकड़ पर ईख बोया गया। यह तखमीना पिछले साल के असल रकबे के बराबर और पिछले साल के पहले तखमीने से २ प्रतिशत कम है। करनाल में २० शेखुपुरा में १९, लायलपुर में ८ और गुजरांवाला में ४ प्रतिशत वृद्धि और गुजरात में १० अम्बाला में ७ जालन्धर में ७ और अमृतसर में ५ प्रतिशत कमी रही। जुलाई की वर्षा से खड़ी फसलों को लाभ पहुंचा। गुजरांवाला में कीड़े के कारण हानि पहुंची।

अर्जेन्टाइन में गेहूं

पंजाब के कृषि विभाग के डाइरेक्टर को रोम (इटली) के अन्तर्राष्ट्रीय कृषि संघ के महामन्त्री ने तार द्वारा सूचना दी है कि इस साल अर्जेन्टाइन में पिछले साल की अपेक्षा गेहूं कम बोई गई है। फसल की आम हालत औसत दर्जे की है

तिल की फसल

सन ३३—३४ को समाप्त हुए ५ साल में पंजाब में जितने भूभाग पर तिल बोया गया वह कुल ब्रिटिश भारत के उस भूभाग का १० फीसदी था जिस पर तिल बोये गए। कुछ जिलों में बीज डालने के समय वर्षा की कमी रही। जुलाई के आखीर तक ९९५०० एकड़ पर तिल बोया जा चुका था यह तखमीना पिछले साल के असल रकबे से ८ प्रतिशत कम और पिछले साल के पहले तखमीने से ११ प्रतिशत अधिक है। कुछ जिलों में अभी तक बीज पड़ रहा है। सम्भव है अगले तखमीने तक कुछ और वृद्धि हो फसल की हालत ९६ प्रतिशत है। तमाम बड़े बड़े जिलों में बीज अपने समय पर पड़ा।

करांची से गेहूं का निर्यात

समुद्र तट सम्बन्धी व्यापार में जहाजी कम्पनियों की प्रतिस्पर्धा के कारण १॥ लाख बोरी गेहूं करांची से कलकत्ते की ओर रवाना हुआ। यदि किराया कुछ और कम हुये तो गेहूं के और भी निर्यात की सम्भावना है।

सप्ताह का फल

राशि-क्रम से

(ले०—श्री सकर्षण व्यास)

ता० २ से ८ सितम्बर तक

मेष

प्रकृति खराब रहेगी, प्राय आम के दस्तों की शिकायत होना मभव है। आमदनी अच्छी होगी, ता० २-३ खराब हैं। भागीदार से सम्बन्ध रखना ठीक नहीं। काली तथा पीली वस्तु क व्यापार स लाभ हो सकेगो। अर्श और पथरी रोग वाला को विशेष कष्ट रहना सम्भव है। तिल्ली अलसी क व्यापारी फायदा उठायेंगे।

वृष

पत्नी और बाल बच्चों की तरफ से चिन्ता रहेगी। भाई बन्धु और भागीदार तकलीफ द गे, ता० ५ ६ अधिक चिन्ता की बीतगी। शत्रुवर्ग अधिक बढ़ेगा, राजकारणों में यश मिलन की आशा छूट आयगी, लाल, काली वस्तु के व्यापार में लाभ हो सकता है। इ जीनियर कारखानदार, मजदूरवर्ग के लोगों को मशीनरी म दूर रहना चाहिये। वकील, डाक्टर के लिए सप्ताह अच्छा है।

मिथुन

भागीदार की तरफ से असन्तोष रहेगा, आमदनी अच्छी होगी। व्यापार में बचत की शु आशा है, बाल बच्चों की तरफ से बेचैनी रहेगी। शत्रुवर्ग पर जीत होगी, राजकारणों में मय के साथ यश मिलेगा, लिखने का व्यवसाय करन वाले क्लर्क और ब्राह्मण जाति के लोग अधिक कष्ट भोगेंगे। नौकरी क यत्न में रहन से आशा बन्ध जायगी।

कर्क

आमदनी अच्छी होगी, व्यापार में मन लगेगा, कबाड़ी धन्धों में नहीं पड़ना चाहिये। भागीदारी में व्यापार करने म विशेष लाभ होगा। आपस क झगड़ा म बचना चाहिये। मकान, जायदाद बनवाने में विशेष खर्च होगा। राजकारणों में सफलता होगी, ठेकेदारी तथा थोक के व्यवसाय करने वाले पैसा जोड़ेंगे, फुटकर धन्धे वालों को नुकसान पहुंचेगा।

सिंह

पत्नी और बाल बच्चों की तरफ स चिन्ता रहेगी। आमदनी साधारण रहेगी। बहुत श्रम पर थोड़ा लाभ होगा। मजूर पेशे वाले सुखी रहेंगे, लकड़ी, कोयला क व्यापारी कुछ फायदे में रहेंगे। सट्टे में पड़ना ठीक नहीं, दूसरे के साथ हिस्सा रख कर व्यापार कर सकते हैं। जायदादी झगड़ों से नुकसान हो सकता है। राजकार्यों में सफलता की आशा रहेगी।

कन्या

प्रकृति अच्छी रहेगी, शत्रुवर्ग पर जीत होगी लोगों में विश्वास रहेगा। काम काज में मन लगेगा। कर्जदारी कुछ हलकी होगी। खर्च के धन्धे बहुत बढेंगे। डाक्टर वैद्य, हकीमो में अधिक खर्च होगा। राज-कार्यों में यश मिलेगा। सट्टे के व्यापार म लाभ हो सकेगा किन्तु तेजी में रहना चाहिये, भागीदारी में व्यापार रखना ठीक नहीं। ठेकेदारी और फुटकर धंधे तथा दलाली मे लाभ हो सकेगा।

तुला

प्रकृति अच्छी रहेगी, काम बहुत मिलेंगे परन्तु बगार के पैसे क लिये दूसरों का मुंह देखना पड़ेगा, रिश्तेदारों से झगड़े होंगे, कर्जदारी हरदम मनमें चिंता बढ़ाएगी। छोटे दर्जे के लोग सुखी रहेंगे, भागीदारी में काम करने से घाटा लग सकता है, राज कारणों में सफलता की आशा कम रहेगी। वकीलों के पंजे में फसना ठीक नहीं। फैशन का खर्च विशेष बढ़ जायगा सट्टे में कुछ आमदनी हो सकेगी।

वृश्चिक

मन में अस्थिरता रहेगी। काम काज में दिल कम लगेगा, पत्नी और बच्चों को तकलीफ रहेगी। कर्जदार सताएंगे। बहुत श्रम का अच्छा लाभ होगा, सप्ताह क पिछले तीन रोज ठीक हैं, आग, मशीन और सवारी से बचना चाहिये, सिर दर्द को शिकायत रहेगी, ठेकेदारी तथा दलाली और भागीदारी क धन्धों मे लाभ हो सकेगा, सट्टे स दूर रहना चाहिये, राज-कारणों में मान मिलेगा, सप्ताह मध्यम है।

धन

आमदनी अच्छी होगी, नवीन २ व्यापारियों से परिचय होगा, इष्ट मित्रों की सहायता मिलेगी, यह सब सौख्य होते हुए भी खर्च को औसत आमदनी से बढ़ कर रहेगी, मन में सन्तोष नहीं रहेगा राज कारणों में सफलता मिलेगी, कारखाने वालों को मजदूर-वर्ग स सचेत रहना चाहिये वकील, डाक्टर और लेखक वर्ग फायदा उठाएंगे।

मकर

व्यापार में किसी को सहायता लेना ठीक नहीं, स्वतन्त्र करने में लाभ होना सम्भव है ऊंचे स पड़ने की चोट लगना सम्भव है, सम्हल कर चलना चाहिये, अधिक सफर करना भी ठीक नहीं, घर के लोगों से झगड़ा रगड़ा कलह उत्पन्न होंगे, आलस्य छोड़कर धन्धे में मन लगाना चाहिये, स्थान प्राप्ति की कोशिश करने से मिलना सम्भव है, राज-कारणों में यश मिलेगा, सट्टे में साधारण लाभ हो सकेगा, दलाली और ठेकेदारी में भी लाभ की आशा है।

कुंभ

पत्नी की हालत से हरदम चिन्ता रहेगी, धातु-विकार की शिकायत वालों को सतर्क रहना चाहिये, व्यापार व्यवसाय मे फायदा रहेगा, राज कारणों में सफलता मिलेगी, भागीदार पर विश्वास रखके व्यापार करना चाहिये, मित्रों की सहायता रहेगी। आफीसर वर्ग के तथा वकील, डाक्टर और ठेकेदार फायदे में रहेंगे हलके धन्धे करने वाले क्लर्क, मोहरिर एवं लेखक मजदूर कष्ट भोगेंगे।

मीन

बाहर भ्रमण विशेष होगा, पत्नी की हालत से चिंता रहेगी, व्यापार स आमदनी होगी, राज-कारणों से भी सफलता की आशा है, भागीदार और कुटुम्बो पर विश्वास रखने से तकलोफ उठानी पड़ेगी। बेकार खर्चा बहुत बढ़ेगा, एकाध कार्य बिगड़ जाने से मन में पश्चात्ताप रहेगा, धार्मिक कार्यों मे चित्त में अशान्ति रहेगी, डाक्टर वैद्य, हकीम, मुख्तयार और दलाल ये धन लूटेंगे।

वायदे क बाजार में साधारण तेजी होगी, चांदी के बाजार में प्रारम्भ में १२ टक छूट कर तेजी आएगी, तीसी जूट क भाव में विशेष फेर बदल होगा, वृष्टि विशेष होगी दक्षिण पूर्व में वृष्टि स नुकसान होगा, मूंगफली और घी के भाव में साधारण तेजी रहेगी।

इटली अबीसीनिया की समस्या

(पृष्ठ २९ का शेष)

अबीसीनिया तो अपनी स्वतन्त्रता के लिये जीजान स लड़ेगा ही, परन्तु विश्व शान्ति पर इस सकट के समय एशियायी देशों का भी, विशेषत दलित भारतवासियों का कुछ कर्तव्य है। हमारा प्रथम कर्तव्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बधों के परिवर्तनों के साथ २ हम भी योरोपियन जातियों के साथ सम्बध और गठजोड़े की यथार्थता को समझें। यह एबीसीनिया या इटली का प्रश्न नही अपितु एशिया और योरोप का प्रश्न है। इस समय एशियाटिक देशों की स्वतन्त्र्य प्रगति जो अभी तक ऐकान्तिक है, उसे व्यापक रूप सामान्य सहानुभूति द्वारा ही दिया जा सकता है। अत प्रत्येक एशियाटिक जाति का यह दूसरा मुख्य कर्तव्य है कि वह एबीसीनिया क साथ सहानुभूति का प्रकाशन अवश्य करे। हमारा कर्तव्य है कि "एबीसीनिया से परे-हटो" नामक या उस के समानार्थक सभा सोसाइटियां की स्थापना की जाय जो, स्वतन्त्रता की रक्षा क लिये लड़ने वाले एक देश के प्रति सविनय सहानुभूति और सहायता के केन्द्र हों। यदि महात्मा गांधी बोर-संग्राम तथा महायुद्ध के समय ब्रिटिश साम्राज्य की मदद एम्बुलेन्स कोर्प्स, तथा स्वयमसेवकों की भर्ती द्वारा कर सकते हैं तो उससे अधिक सुयोग और युक्तिसम्मत अवसर इस वक्त भी है।

साथ ही हमें इस बात को भी दृष्टि से ओझल नहीं करना चाहिये कि एबीसीनिया में भारतवासियों की सख्या कई हजारों में है। उनके प्रति भी हमारी सहायता का प्रबन्ध आवश्यक है।

एशिया वासियों का कर्तव्य है कि वे एक अपने समान दलित जाति पर आक्रमण के चलैंज को अपने ऊपर चोट समझें और एबीसीनिया की स्वतन्त्रता रक्षा के युद्ध में हाथ बटावें। टर्की ने अपने जनरलों और अन्य युद्ध विद्याविशारदों को एबीसीनिया की सहायतार्थ भेजा है। जापान ने भी शस्त्रास्त्र द्वारा तथा अन्य प्रकार से सहायता देने में कोई कसर नहीं उठा रखी है। अरब तथा अन्य मुसल्मान देशों को भी अपनी जनता को इटली की सहायता के लिये मजदूरों से रोकना चाहिये। इसमें भारतीय मुसलमान नेता बहुत कुछ आन्दोलन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय एक हथियार का प्रयोग कर सकते हैं और करना चाहिये, वह है इटैलियन माल का बायकाट। इटली से करोड़ों रुपये का कपड़ा, बिजली का सामान इत्यादि प्रतिवर्ष भारत में आता है हमें उसे खरीदने से सर्वथा इन्कार कर देना चाहिये। भारत वासियों को अभी राजनैतिक सहानुभूति का पाठ उसकी गहराई से सीखना चाहिये। अपने स्वातन्त्र्य युद्ध में हम ससार की सहानुभूति प्रतिफल में इसी प्रकार प्राप्त कर सकते हैं।

ांडिचरी का परमहंस

(पृष्ठ ७ का शेष)

बाग्वानी आदि के विभाग Department आश्रम की तरफ से चलते हैं, जिनमें साधक लोग अपनी साधना के तौर पर कार्य करते हैं। उनका हर एक कार्य साधना के तौर पर होता है। माता जी जिस साधक को जो काम सौंपती हैं उसे वही करना होता है। और प्राय साधक उसे अपना कल्याणकारी कार्य समझ कर ही करते हैं।

खर्च

पाठक लोग जानना चाहेंगे कि डेढ़ सौ लोगों का खर्च कैसे चलता होगा। आश्रम का खर्च ४-५ हजार रुपये माहवार होगा। जब कोई भी आश्रम वासी बनता है-स्वीकार कर लिया जाता है वह अपना सब कुछ (जहां अपना अन्तरात्मा और मन, वहां अपना भौतिक धन भी) आश्रम को समर्पित कर देता है। इससे कुछ संपत्ति आश्रम को मिली है। पर आश्रमवासियों में अधिकांश तो ऐसे ही हैं जिनके पास एक कौड़ी भी नहीं थी। और प्रत्येक आश्रम वासी पर ३०-४० रुपया माहवार तो व्यय होता ही है। यह रुपया कुछ भक्त लोगों से प्राप्त होता है। श्री अरविन्द ने कभी आश्रम के लिये चन्दे की अपील नहीं की। बल्कि औरों को भी आश्रम के लिये रुपया इकट्ठा करने की उन्होंने कभी इजाजत नहीं दी। वे इस संस्था को सार्वजनिक संस्था नहीं समझते। अतः जनता से न मांगते हैं और न जनता के प्रति उत्तरदाता समझते हैं जो कुछ भक्त लोग स्वयमेव दे जाते हैं उससे काम चलाते हैं। वे मानते हैं कि परमेश्वर का यह कार्य है, परमेश्वर ही रुपया देता है और देगा। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि उन्हें कभी २ आर्थिक तंगी होती है तो भी अर्थाभाव के कारण उनका कार्य कभी रुका नहीं है।

उनका भावी कार्यक्रम

क्या वे फिर पालिटिक्स में आवेंगे ?' यह प्रश्न है जो कि प्रायः पूछा जाता है। यह प्रश्न आम लोगों के लिए स्वाभाविक भी है। पर जो मनुष्य जान गये हैं कि वे कितने अति महान कार्य में लगे हैं उनके लिये ऐसे प्रश्नों की कोई गुंजाइश नहीं रहती। यद्यपि आज भी उनके दरवाजे के सामने फ्रेंच और ब्रिटिश सी०आई०डी० का पहरा लगा रहता है। और उस मकान में घुसने वाले व्यक्ति अपने विषय में पता लगाये जाने से अपने को बचा नहीं सकता है तो भी सच यह है कि वहां शुद्ध आध्यात्मिकता के सिवाय और कुछ नहीं है। सन् १९२६ तक तो श्री अरविन्द यह कहते रहे 'अभी नहीं, अभी कुछ नहीं कह सकता', पर उसके बाद से तो वे एक महान कार्य में लग चुके हैं। वह कार्य है एक नई 'जाति' उत्पन्न करना, मनुष्य को देव बनाना। वे ऐसा मनुष्य तैयार कर रहे हैं जो विज्ञान (Supermind) तत्व को प्राप्त करेगा और उसके कारण उसका मन अज्ञान और संयम की क्रीड़ा भूमि न रहकर सत्य प्रकाश का मार्ग बन जायगा उसका प्राण बदल कर काम, क्रोध, राग, द्वेष आदि से सर्वथा शून्य होकर कार्य करेगा और उसके शरीर का भी ऐसा रूपान्तर होजायगा कि वह यूं ही मृत्यु के वश न होगा। यह बहुत भारी साधना है, इसमें शायद एक युग लग जायगा। परंतु पांडिचरी के ये परमहंस जिस कार्य के लिये उत्पन्न हुए प्रतीत होते हैं वह यही है। इसी महान कार्य का आरम्भ इन्होंने यह आश्रम खोल कर किया है। यद्यपि वे बोलते और मिलते नहीं हैं तो भी लिखकर और अपनी आन्तरिक शक्ति से आश्रम का पथ प्रदर्शन करते हैं। उनके लगभग ६ घंटे प्रतिदिन अपने हाथ से साधकों के पत्रों के उत्तर देने में बीतते हैं। दिन रात में केवल दो तीन घंटे ही विश्राम निद्रा लेते हैं। वे इस समय जितना कार्य कर रहे हैं उतना कार्य कोई साधारण पुरुष नहीं कर सकता।

देश की स्वाधीनता तो उनके इस महान कार्य में कहीं न कहीं स्वयमेव आजायगी। उसकी कुछ चिंता नहीं करनी चाहिये।

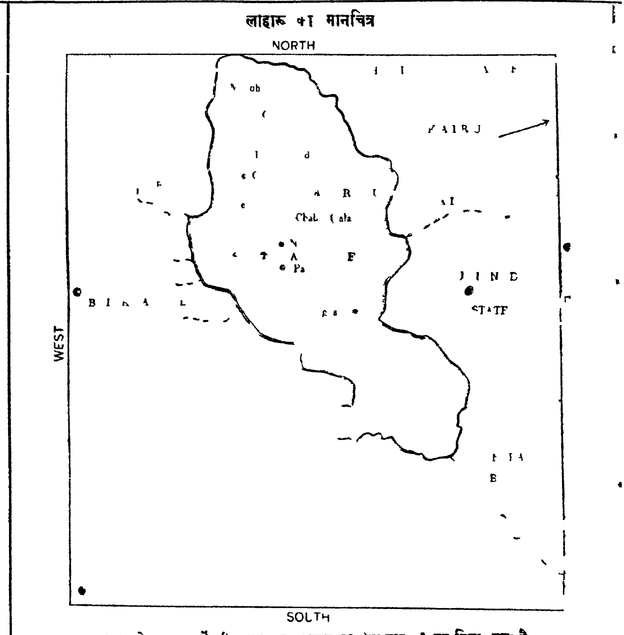
मुझ पर क्या प्रभाव पड़ा ?

आखिर लोग मुझ से यह जरूर पूछते हैं कि वहां दो मास रहने का मुझ पर क्या प्रभाव पड़ा। एक वाक्य में उसका उत्तर यह है कि—

'उनके ग्रंथ पढ़ कर मेरी उनमें बहुत श्रद्धा थी। परन्तु वहां रह कर मेरी यह श्रद्धा और भी अधिक बढ़ गई है।"

वहां खादी नहीं पहिनी जाती, माता जी तो रोज नई नई रेशमी साड़ियां पहनती हैं, वहां गुप्तता बहुत बरती जाती है, एवं और कई बातें हैं जिनका असर बहुत से लोगों पर बुरा पड़ता है और कइयों को तो यह सब ढोंग प्रतीत होता है परन्तु मेरे मन पर इनका कोई बुरा प्रभाव नहीं हुआ है क्योंकि मैं इनके दूसरे पक्ष को भी जानता हूं मेरा तो यह ख्याल है कि वहां पर एक बड़ा भारी (आध्यात्मिक) कार्य हो रहा है जिसकी महत्ता को आज हम नहीं समझ रहे हैं।

इन परमहंस (श्री अरविन्द) के विषय में सच्चे जिज्ञासुओं को और भी जो कुछ मैं जानता हूं बताने को तैयार हूं। अतः मेरा विचार है कि समय मिलने पर मैं उन बातों को भी प्रकाशित करूंगा जो कि पांडिचेरी से लौटने पर गांधी जी के कन्या आश्रम की तथा गुरुकुल कांगड़ी की इसी निमित्त हुई सभाओं में मुझ से किये गये प्रश्नों के उत्तर के रूप में प्रकट कर चुका हूं। पर अप्रकाशित ना ही।



लोहारू के सम्बन्ध में श्री जयनारायण व्यास का लेख पृष्ठ २१ पर दिया गया है।

पं० रामगोपाल विद्यालंकार प्रिंटर और पब्लिशर के लिये अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपा

संस्थापक—स्वामी श्रद्धानन्द जी

व्यवस्थापक—इन्द्र विद्यावाच

अर्जुन

का

स्वराज्यांक

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

वर्ष १२] सोमवार २८ जनवरी सन् [illegible] [सं० १६[illegible]

सच्चा सेवक

[illegible]

२२-३-३४ मो० क० गांधी

स्वराज्य ग्रामों का बना हुआ है शहरों का नहीं। इसलिये सच्चा सेवक ग्रामों में जाकर ग्रामनिवासियों की सेवा करेगा। ग्राम-सेवा के लिये सब से अधिक आवश्यकता सेवक की पवित्रता रहेगी।

२२ ३४

—मो० क० गान्धी

एकला चल रे

———:———

यदि तोर डाक सुने केउ ना आसे
तबे एकला चल रे
एकला चल, एकला चल, एकला चल रे
यदि केउ कथा ना कय—
[ओरे ओरे ओ अभागा !]
यदि सबाई थाके मुख फिराये
सबाई करे भय
तबे परान खुले
ओ तुई मुख फुटे तोर मनेर कथा
एकला बल रे
यदि सबाइ फिरे आय
[ओरे ओरे ओ अभागा !]
यदि गहन पथ जाबार काले
केउ फिरे ना चाय
तब पथेर काटा
ओ तुइ रक्त माखा चरन तले
एकला दल रे
यदि आलो ना धरे
[ओरे ओरे ओ अभागा !]
यदि झड़ बादले आधार राते
र दुयार देय घरे
तबे बज्रानले
आपन बुकेर पाजर ज्वालिये निये
एकला ज्वल रे
यदि तोर डाक सुने केउ ना आसे
तबे एकला चल रे
एकला चल, एकला चल, एकला चल रे !

———:———

अनुवाद

———:———

गद्य

यदि तेरी पुकार (आह्वान) सुन कर कोई न आवे
तो अकेला चल रे
अकेला चल, अकेला चल, अकेला चल रे
यदि कोई बात न करे
(अरे, अरे, ओ अभागे !)
यदि सभी मुख फेरे रह
सभी भय करें
तो प्राण खोल कर
तू ही मुख फोड़ कर अपने मन की बात
अकेला (ही) बोल रे
यदि सभी लौट आवें
(अरे, अरे, ओ अभागे !)
यदि गहन मार्ग में चलते समय
कोई मुड़ कर न देखे
तो मार्ग के कण्टकों को
तू ही (अपने) रक्त-रंजित पैरों के नीचे
अकेला (ही) दल रे
यदि (कोई) प्रकाश न दिखलाये
(अरे, ओ, ओ अभागे !)
यदि बादल और झड़ी की अंधेरी रात में
घर का दरवाजा बन्द कर लें
वज्रज्वाला में
तो अपनी छाती के पंजर को जला कर
तू अकेला (ही) जल रे
यदि तेरी पुकार सुनकर कोई न आवे
तो अकेला चल रे
अकेला चल, अकेला चल, अकेला चल रे !

(रवीन्द्रनाथ टागोर)

———:———

Rabindranath Tagore



कांग्रेस का समर्थन करो

कांग्रेस ही एक ऐसी सर था है जो पूर्ण स्वराज्य का प्राप्ति के लिये प्रयत्न कर रहा है अत इसके कार्यक्रम की सफलता के लिये हम सबको वर्तमान नीति और कार्य का समर्थन अवश्य करना चाहिये।

—वल्लभभाई पटेल

साम्प्रदायिक निर्णय और असेम्बली

(लेखक—राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसाद)



कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति और पण्डित मदनमोहन मालवीयजी में जो मतभेद हुआ है उसको समझ लेना जरूरी है। उस मतभेद का कारण श्री मकडानल्ड का साम्प्रदायिक निर्णय है विचार करने से पता चलता है कि मतभेद में कहीं अधिक इस विषय में भी मतैक्य है

(१) दोनों मानते हैं कि वह फैसला बुरा है देश के लिये हानिकारक है और दोनों में कोई उसे मंजूर नहीं करता।

(२) दोनों मानते हैं कि उसकी बुराई जनता को समझा देने का हर सम्भव यत्न होना चाहिये

(३) दोनों मानते हैं कि फैसले के बदले में आपस का समझौता होना आवश्यक और उत्तम है।

(४) दोनों मानते हैं कि उसको रद्द कराना चाहिये और इसके लिये प्रयत्न करना आवश्यक है।

मतभेद केवल इतना ही है कि कार्य समिति समझती है कि असेम्बली में इस विषय पर वाद विवाद करने से लाभ नहीं और कांग्रेस का समझौता करके हिन्दू मुसलमान दोनों एक साथ ही इस निर्णय को नामंजूर करें। पूज्य मालवीयजी कहते हैं कि हिन्दू अकेले मुसलमानों का विरोध रहते हुए भी उसको असेम्बली में नामंजूर करके उनके साथ समझौते का प्रयत्न करें कार्यकारिणी समझती है कि इस तरीके से समझौते का रास्ता और भी कठिन हो जायगा

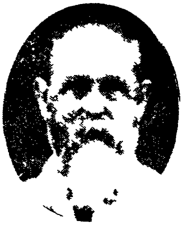
कार्य समिति समझती है कि असेम्बली में इस साम्प्रदायिक निर्णय का विरोध करने से कोई फायदा नहीं क्योंकि पहली बात तो यह है कि यह मामला हिन्दुस्तान की भिन्न जातियों के आपस में तय करने का है और इस आपस में तय हुए तरीके को मानने के लिये सरकार भी तैयार है जैसा कि पूना पैक्ट के समय हो चुका है और यदि असेम्बली में एक इसे मन्जूर कराने और दूसरा नामन्जूर कराने में ही लगा रहे तो देश में यह वातावरण पैदा होने में कठिनाई नहीं होगी जिस में आपस में समझौता होकर इस निर्णय की जगह पर दूसरा कोई तरीका निकाला जा सके। तीसरा कारण यह है कि श्वेतपत्र की तरह साम्प्रदायिक निर्णय को बदलने का अधिकार सरकार अपने हाथ में नहीं रखता इसे तो वह हमारे समझौते पर ही छोड़ती है। ऐसी अवस्था में हमारा कर्तव्य यह होता है कि हम इसके बदले में सब की राय से कोई समझौता करें न कि व्यर्थ असेम्बली में विरोध करके अपना समय बर्बाद करें।



तीव्र घृणा और उत्कट लालसा

स्वराज्य ऐसा शब्द नहीं है जिसकी व्याख्या के लिये लम्बा निबन्ध लिखने की आवश्यकता हो इसकी प्राप्ति के लिये किसी भी काल और देश में दो वस्तुयें अत्यन्त आवश्यक हैं —पराधीनता से तीव्र घृणा और स्वाधीनता की उत्कट लालसा। जब तक ये दोनों वस्तुयें हमारे अन्दर एक राष्ट्र के रूप में पर्याप्त तथा समान मात्रा में न होंगी तब तक हम अपनी वर्तमान शोचनीय दासता में पड़े रहेंगे और उन वीर राष्ट्रों की दृष्टि में उपहास तिरस्कार और तरस का विषय बने रहेंगे जो अपने साहस अध्यवसाय त्याग बलिदान और स्वातन्त्र्य की उत्कट अभिलाषा द्वारा स्थिर रूप से स्वतन्त्र हो चुके हैं

—सरोजिनी नायडू



(चि०—श्री सी० एफ० एण्डरूज)

पूर्वीय अफ्रीका और भारतीय व्यापार

भारत हितैषी सी० एफ० एण्डरूज उन अंग्रेज सज्जनों में हैं जिन्होंने अपने प्रेम द्वारा भारतीयों का हृदय जीत लिया है। उन्होंने भारत की सेवा करने में ही अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया है।

इस लेख में उन्होंने पूर्वीय अफ्रीका में भारतीय व्यापारियों के साथ होने वाले भीषण अत्याचार का परिचय देते हुए भारतीयों से अपील की है कि इस महत्वपूर्ण प्रश्न का तत्परता के साथ संगठित होकर विरोध करें।

——— * ———

आन्दोलन की आवश्यकता क्यों है?

मुझसे बहुधा यह प्रश्न बार बार किया जाता है कि जब हमारा तमाम शक्तियां भारत में ही स्वराज्य के प्राप्ति लिये लगनी आवश्यक हैं तब हम अफ्रीका के पूर्वी तट पर भारतीय अधिकारों की रक्षा के झगड़े में क्यों पड़े? इसका उत्तर यह है कि यह तट एक हजार वर्ष से अधिक समय से हिन्द महासागर पार के भारतीय व्यवसाय के विस्तार का स्वाभाविक क्षेत्र रहा है और इसके सिवाय इस व्यावसायिक विस्तार के द्वारा पश्चिमी भारत में बाहर की दुनिया को प्रभाव आने के लिये एक प्रकार का दरवाजा सा खोल रखा है जो देश अपने चारों तरफ बाड़ खड़ा करके रखता है उसमें आर्थिक प्रगति में कभी आ नहीं रह सकती इतिहास का इतिहास इस बात का उदाहरण है कि इस प्रकार बाहर के प्रभाव तथा यातायात को रोक देने का नुकसान होता है।

भारतीय विस्तार का क्षेत्र

भूतकाल में भारतीय विस्तार के दो क्षेत्र हैं आ...ना है ... स्याम ... है। ... प्रयत्न ... यम ... भारत ... पश्चिम ... में गुजरात और ... सागर तट ... भारतीय मात ... और व्यवसायियों का धन का प्राप्त ... अतिरिक्त भारतीयों में आर्थिक विकास की वृद्धि का प्रवृत्ति आदि गुणों का भी लाभ हुआ है जिनके कारण वे अन्य देशों में भी जाने लगे हैं।

अफ्रीका की नई प्रवृत्ति

इस लेख में भारत के पूर्वीय विस्तार की चर्चा नहीं करूंगा। आज तो भय का स्थान पूर्व का अपना पश्चिम ही अधिक बन रहा है और अफ्रीका में आज कल जल्दी जल्दी जो परिवर्तन हो रहे हैं उन पर हमने यदि तुरन्त ध्यान न दिया तो अफ्रीका के पूर्वी तट पर भारतीयों का चिन्ह ही न रह जायगा।

अफ्रीका में बिना कोई नया शासन तथा कानून बनाये भारतीय व्यापारियों तथा व्यवसायियों को बिल्कुल निकाल बाहर करने का नया ... हो रहा है और भारतीय ... इस नया ... की योजना को समझ नहीं रहे हैं। ऊपर ऊपर ... व्यापार अफ्रीका के ... के लिये ब्रिटिश व्यवसायियों और ब्रिटिश सरकार के हाथ में ... रहा है परन्तु वस्तुतः इस नई आर्थिक योजना से अफ्रीका को कुछ लाभ नहीं होगा। लाभ होगा बड़े बड़े व्यवसायी ... ब्रिटिश या अमे... प्रजा ... युगा... में ... ताम ... पहले ... पर ... एक युरोपियन कम्पनी का ... हो भी चुका है। यह ... सहयोग ... ... कोई भी भारतीय बिना ... के अफ्रीका ... भूमिज मेवा भी न खरीदें।

भारतीयों की बेरोजगारी

यह नयी प्रवृत्ति भूमिज मेवा का व्यापार करने वाले अनेक भारतीयों को बेरोजगार कर देगी। अब देखना यह बाकी है कि यह एकाधिकार पाने वाली युरोपियन कम्पनियां अफ्रीकनों को भारतीय व्यापारियों की अपेक्षा अच्छा दाम और अधिक सुविधायें देती हैं या नहीं।

मैंने जो कुछ देखा है उससे मेरी तो यह धारणा हुई है कि इन एकाधिकारों को पुराने ढंग के साथ साथ अफ्रीकन लोग न तो समझते हैं और न उनसे उन्हें कुछ अधिक लाभ है।

अधिकारियों की चिन्ता

मैं अफ्रीका में अनेक एसे ब्रिटिश अधिकारियों से मिला हूँ जो निर्विवाद मामलों के कामिश्नर रह चुके हैं और उन्होंने स्पष्ट शब्दों में अपना आगे के आगे होता हुई घटनाओं पर चिन्ता प्रकट की।

एक उदाहरण

मैं एक उदाहरण देता हूँ। दक्षिण होन्डिया में एक मक्का बोर्ड बना कर मक्का का व्यापार एकमात्र उसी के अधीन करने का यत्न किया जा रहा है। सम्भव है कि किसी सुशिक्षित ... में इस एकाधिकार से ... लाभ होता और दक्षिण होन्डिया में भी जो युरोपियन किसान मक्का की हजारों बोरियों का व्यापार करता है वे इस समय तो अपना लाभ करने के लिये मक्का का दाम चढ़ाने में स्वतंत्र हैं। अफ्रीकनों को आरम्भ में अपने माल का एक नियत न्यूनतम दाम मिल जाता है और बाद को कम्पनियों का सब जो भारी लाभ उठाता है उसका बटवारा सब में कर दिया जाता है। जब मैं होंडसिया में था तब मक्का की प्रति बोरी का दाम आरम्भ में ५ शिलिंग दिया जाता था और बाद को लाभ का बड़ा हिस्सा मिलता था। परन्तु जो ... अफ्रीकन चार या पांच बोरी मक्का बहुत कठिनाई से भारतीय आढ़ती के पास लाता था वह इस उधार अदायगी को नहीं समझता था।

अफ्रीकनों की कठिनाइयां

भारतीय आढ़ती उसको आरम्भ में ५ शिलिंग प्रति बोरी देकर कहता था कि बाकी दाम पीछे दूंगा। अफ्रीकन सब दाम एक साथ मांगता था। भारतीय थोक दुकानदार उत्तर देता था कि मैंने यदि ऊंची दर में माल की कीमत अदा कर तो कण्ट्रोल बोर्ड मुझे दण्ड देगा। इस पर माल बेचने वाले अफ्रीका निवासी यह समझते हैं कि थोक दुकानदार उन्हें ठग रहा है और वह इस विश्वास के साथ कि उनके साथ अन्याय किया गया है बाद में आगामी वर्ष में मक्का अपने खेत में ... ता ही नहीं।

मैंने स्वयं थोक माल के एक भारतीय दुकानदार के यहां जाकर पूछा कि उसके हिस्से पैदावार का क्या औसत रहा गया है तो उसने कुल ४०० बोरे बतलाया। परन्तु जब मैंने उसका गोदाम देखा तो उसमें एक दाना भी न था।

आर्थिक नियंत्रण का ढोंग

एक उदाहरण से कृत्रिम आर्थिक नियंत्रण की कठिनाइयां प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो जाती हैं। यही कठिनाइयां ... में सोवियट रूस में भी आई थीं।

आर्थिक समस्याओं के हल करने का उपाय

पूर्वीय अफ्रीका में उक्त आर्थिक प्रश्नों को हल करने के लिये उन अवस्थाओं पर ध्यानपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है जिनके अनुसार भारतीय व्यापारी वहां पर व्यापार कर रहे हैं। साथ ही उन्हें ... ढंग ... में लाने के लिये प्रयत्न भी करना चाहिये। भारतीयों तथा अफ्रीका निवासियों के पुराने व्यापारिक सम्बन्धों को नष्ट करने के लिये जो नवीन आर्थिक नियंत्रण का ढोंग रचा गया है इससे न केवल भारतीय व्यापारी की ही हानि होगी वरन् अफ्रीका निवासी कृषकों को भी भारी नुकसान होने की सम्भावना है।

———

युवकों से

(लेखक—श्री० एस० सत्यमूर्ति)



इस समय देश विषम, विचित्र और नाजुक परिस्थिति में से गुजर रहा है। देश के सामने अत्यन्त गम्भीर समस्यायें उपस्थित हैं, जिनका हल राष्ट्र के नेताओं व प्रतिनिधियों को करना है। कुछ लोगों का कहना है कि इतिहास अपने को दुहराया करता है और अब भी दुहरा रहा है। एक बार फिर सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित कर दिया गया है और स्व० मोतीलाल नेहरू व देशबन्धु दास के कौंसिल-प्रवेश के कार्यक्रम को स्थायी रूप से स्वीकार भी कर लिया गया है। रांची, पटना और बम्बई के अधिवेशनों में सम्पूर्ण राष्ट्र की प्रतिनिधि-सभा कांग्रेस वर्किंग कमिटी ने यह निश्चय ... लिया है कि सरकार के सुरक्षित दुर्ग, असेम्बली, पर अधिकार कर लिया जाय और वहां निम्नलिखित प्रोग्राम पास कराया जाय.—(१) नया प्रस्तावित शासन-विधान, जो 'ह्वाइटपेपर' के नाम से प्रसिद्ध है, रद्द किया जाय। (२) पिछले दो-तीन सालों में सरकार ने राष्ट्रीय भावना के दमन के लिये जितने अन्यायपूर्ण और दमनकारी कानून बनाये हैं, उन सबको वापिस लिया जाय और सब से बढ़कर (३) देश का भावी शासन-विधान निर्माण करने के लिये कन्स्टीट्यूशनल असेम्बली बुलाई जाय। तीनों मांगें महत्वपूर्ण हैं। तीसरी मांग का विशेष महत्व इसलिये है कि इसके द्वारा कांग्रेस स्वभाग्य-निर्णय — अपना शासन-विधान हम बनावें — का सिद्धांत स्वीकार कराना चाहती है।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के प्रस्तावों से किसी भी राष्ट्रीय विचार वाले भारतीय को मत-भेद नहीं है। सभी कांग्रेस की इन मांगों से सहमत हैं। परन्तु कांग्रेस के साम्प्रदायिक निर्णय सम्बन्धी निश्चय से पूज्य मदनमोहन मालवीय और उनके साथियों को मत-भेद है। इस विषय पर कांग्रेस का निर्णय स्पष्ट है। वह उसे न तो स्वीकार करती है और न अस्वीकृत करती है। राष्ट्र के सब सम्प्रदायों और जातियों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था कांग्रेस इस के सिवा कर भी क्या सकती थी। साम्प्रदायिक निर्णय की निन्दा चारों कोनों से हो रही है और वस्तुतः वह है भी इसी निन्दा के योग्य।

परन्तु कांग्रेस इस स्थिति में नहीं है कि उसे स्वीकृत या अस्वीकृत करे। यह स्पष्ट है कि अधिकतर मुसलमान उसे अस्वीकृत करने के विपक्ष में हैं, परन्तु उसके साथ यह भी स्पष्ट है कि हिन्दू उसे किसी भी हालत में स्वीकार करना पसन्द नहीं करते। इस अवस्था में दोनों की प्रतिनिधि सभा कांग्रेस यही उचित समझती है कि वह इस प्रश्न को अभी स्वीकृत या अस्वीकृत कुछ न कर आपसी समझौते के लिये ... है। कांग्रेस अभी इतनी समर्थ भी नहीं है कि वह इस प्रश्न का कोई सर्वसम्मत और संतोषजनक निर्णय कर सके, किन्तु ज्यों ही कांग्रेस इस कार्य के लिये समर्थ हो जायगी, वह पहले पहल इसी प्रश्न को लेगी।

इस प्रश्न पर कांग्रेस की उदासीनता की नीति से कुछ हिन्दुओं का यह खयाल है कि कांग्रेस साम्प्रदायिक-निर्णय को स्वीकार करती है, इसके विपरीत कुछ मुसलमानों का यह खयाल है कि कांग्रेस इसे अस्वीकृत करती है। परन्तु दोनों भ्रम में हैं। कांग्रेस अपनी स्थिति स्पष्ट कर चुकी है, वह न इसे स्वीकृत करती है और न अस्वीकृत। इस प्रश्न का निर्णय वह भविष्य में होने वाले सब सम्प्रदायों के सर्व-सम्मत समझौते पर छोड़ती है।

(शेष पृष्ठ ७ कालम ४ पर)

आशीर्वाद

—:*:—



श्रीमद् द्वैपायन व्यास ने महाभारत में श्रीकृष्ण भगवान और अर्जुन के चरित्रों का जैसा चित्रण किया है, संसार में उसकी उपमा मिलनी कठिन है। उन चरित्रों में अत्युत्कृष्ट बुद्धिमत्ता के साथ गुथी हुई अद्भुत भक्ति और स्वार्थ-त्याग की भावना दिखाई देती है।

यदि श्रीकृष्ण परलोक और इहलोक की बुद्धिमत्ता का पुंज दिखाई देता है, तो अर्जुन को हम वीरता सम्बन्धी समस्त गुणों का समुच्चय पाते हैं। परन्तु अर्जुन की वीरता योरप की मध्यम कालीन वीरता की तरह अन्धी नहीं है, वह भगवान के बनाये हुए नीतिमार्ग पर चलने वाली और अतएव अत्यन्त समझदार है। बुद्धिमत्ता और वीरता दोनों एक दूसरे की सहायता और पुष्टि करती हैं।

कौरवों ने पाण्डवों पर जितना अत्याचार किया था, उसकी उपमा मिलनी कठिन है। कौरवों ने ईर्ष्या वश उन्हें अगणित दुःख दिये थे। फिर भी आश्चर्य की बात है कि पाण्डवों की सेना ने युद्ध के जोश में भी युद्ध के नियमों की सीमा का यथाशक्ति पालन किया। अर्जुन की वीरता को एक मार्गदर्शक की, और उसके ... आवश्यकता थी। वह उसे श्रीकृष्ण के रूप में प्राप्त हो गये।

अर्जुन अपनी सेना को युद्ध-क्षेत्र में आगे बढ़ाता है, परन्तु कृष्ण हाथ में घोड़ों की लगाम थामे हुए उस पर कड़ी दृष्टि रखता है कि कहीं सेनायें सीमा का उल्लंघन तो नहीं कर रहीं, या वह उत्साहहीन तो नहीं हो रहीं। श्रीकृष्ण जिस अंश में त्रुटि देखते उसी को पूरा करने के लिये आगे बढ जाते हैं। भगवान कृष्ण ने महाभारत में जो महान कार्य किया है, उसे चित्रित करना हो तो यही सर्वोत्कृष्ट चित्र बन सकता है कि वह अर्जुन के युद्ध, रथ का सञ्चालन कर रहे हैं।

श्रीकृष्ण अर्जुन को अपना मित्र समझ कर समानता का व्यवहार करते है, परन्तु अर्जुन का विनय उसमें श्रीकृष्ण के प्रति 'शिष्य—स्तेऽहम्' यही शब्द कहलाता है। अर्जुन की सफलता का सबसे बड़ा कारण यही है कि वह युद्ध के आवेश में भी श्रीकृष्ण के नेतृत्व से बाहिर नहीं होता। इसी बुद्धिमत्ता द्वारा नियमित वीरता का प्रताप था कि ३००० वर्ष पूर्व भारत में धर्म-राज्य की स्थापना हुई थी। श्रीमद्भगवद्गीता के निम्नलिखित श्लोक का यही अभिप्राय है—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो
यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूति-
र्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।

"जहां योगेश्वर कृष्ण हैं और ... विजय, विभूति और नीति ... सभी का निश्चय से निवास रहता है।

आशीर्वाद है कि 'अर्जुन' प्रति दिन प्रातःकाल प्रकाशित होता हुआ भारत के वृद्ध और युवा निवासियों के हृदयों में ऊंचे सत्य की स्थापना करे, और उन्हें मातृ-भूमि की गौरव-रक्षा के निमित्त दृढ़-प्रतिज्ञ सैनिक बनाने में सफल हो।

हृदय में यह अभिलाषा रखता हुआ कि 'अर्जुन' शीघ्र ही भारत-माता को बन्धनमुक्त करने की ऊंची महत्वाकांक्षा को पूर्ण करे,

मैं हूं

सदा आपका

एम० एस० अणे

———:———

दरिद्रनारायण के व्रती राष्ट्रपति बा० राजेन्द्रप्रसाद

बिहार के गांधी और हमारे नव-निर्वाचित राष्ट्रपति त्यागमूर्ति बाबू राजेन्द्रप्रसाद का जन्म हमारी राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के जन्म से एक वर्ष पूर्व ३ दिसम्बर सन् १८८४ ई० को बिहार के सारन जिले के जोरादेई गांव में हुआ था। आप के पूर्वज बहुत प्राचीन काल से किसी न किसी राज्य के दीवान होते चले आये थे। आपके पिता बाबू महादेवसहाय एक योग्य हकीम थे। दरिद्रनारायण की सेवा उन का उद्देश्य था। शायद लोक-सेवा और त्यागमय जीवन बिताने का अनुपम गुण आपकी पैत्रिक सम्पत्ति है। १८९१ ई० में एक मौलवी साहब के यहां आपकी प्राथमिक शिक्षा का प्रारम्भ हुआ। १९०२ में कलकत्ता-विश्वविद्यालय की एन्ट्रेन्स परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर आप आगे पढ़ने के लिए कलकत्ते चले गये। आप की प्रतिभा, विद्वत्ता और लोकसेवा-परायणता का परिचय कलकत्ते के विद्यार्थी-जीवन में ही मिलने लगा था। सार्वजनिक क्षेत्र में आप इन्हीं दिनों प्रवेश कर चुके थे। बिहारी छात्रों की सहायता के लिए आप ने संघ बनाकर दरिद्रनारायण की सेवा का [illegible] थी, वही आज बढ़ते-बढ़ते इतना व्यापक हो चुका है। सार्वजनिक कार्यों में बहुत समय व्यतीत करते हुए भी आप की शिक्षा में कोई अन्तर नहीं पड़ा। एफ० ए० और बी० ए० में आप ने कलकत्ता विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम स्थान पाये। लोग आपकी योग्यता पर मुग्ध हो गये। आप के ज्येष्ठ भ्राता महेन्द्रप्रसाद आपको आई० सी० एस० के लिए विलायत भेजना चाहते थे। आप ने भी विलायत जाने का पूरा प्रबन्ध कर लिया था, परन्तु परमात्मा ने राजेन्द्र बाबू को हृदयरहित नौकरशाही का निर्जीव पुरजा बनाने के लिए पैदा नहीं किया था। १९०७ में पिता जी के आकस्मिक देहान्त से आप का विलायत जाना रुक गया। इस के बाद आप कई बरस तक पटना में अध्यापन का कार्य करते रहे। अध्यापन-कार्य के साथ साथ ही आप ने एम० ए० और एम० एल० की परीक्षा दी। आप ने कलकत्ता में ही वकालत प्रारम्भ कर दी।

१९१६ में पटना में हाईकोर्ट स्थापित होने पर राजेन्द्र बाबू पटना चले गये। यहां अपनी योग्यता और प्रतिभा के बल पर आप की गिनती उच्च कोटि के वकीलों में होने लगी। तत्कालीन बड़े बड़े बैरिस्टर और जज भी आप के कानूनी ज्ञान का लोहा मानते थे।

यदि परिस्थितियां साधारण रहतीं, यदि भारतवर्ष अंग्रेजों का गुलाम देश न होता और यदि महात्मा गांधी ने धर्म तथा राजनीति का मिश्रण करके देश में प्रबल क्रान्तिकारी शक्तियों का प्रवाह न बहाया होता तो बाबू राजेन्द्रप्रसाद आज पटना हाईकोर्ट के जज या सर्वोच्च वकील होते। सार्वजनिक कार्यों में पूरा समय देते हुए भी वकालत से आप को हजारों रुपये की आमदनी थी, परन्तु आप का रहन-सहन इतना सीधा सादा था कि लोग यह कल्पना भी न कर सकते थे कि यह पटना का सर्वोच्च वकील है। आप की हजारों की आय गरीब छात्रों तथा अन्य असहाय लोगों की सेवा में व्यतीत होती थी। जब आपने १९२० में वकालत छोड़ी, तब आपके बैंक एकाउन्ट में केवल १५) बाकी थे। सारी आय दूसरों की सेवा में जा चुकी थी। त्याग और सेवा राजेन्द्र बाबू के आदर्श थे।

आप का सदा से यही आदर्श रहा है—

न त्वहं कामये राज्यं
न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां
प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

बिहार-रत्न



राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद

बिहार प्रान्त की उन्नति के इतिहास में राजेन्द्रबाबू का नाम अमिट रहेगा। पटना हाईकोर्ट तथा पटना-यूनिवर्सिटी की उन्नति का बहुत कुछ श्रेय आप को ही है। बिहार का सामाजिक, राजनैतिक या शिक्षा-संबंधी, कोई आन्दोलन ऐसा न था, जिसमें आप का पूरा हाथ न हो। आपकी सत्यनिष्ठा, सरलता, निरभिमानता और निःस्वार्थ सेवा के कारण बिहार की जनता आप को आदर व श्रद्धा की दृष्टि से देखती है। आप उस के हृदय-सम्राट् हैं। यही कारण है कि जहां अन्य प्रान्तों में प्रांतीय नेताओं के विरुद्ध पार्टी-बन्दी उग्र और तीक्ष्ण रूप धारण कर लेती है, वहां बिहार में आपके विरोध में किसी पार्टी का प्रादुर्भाव नहीं हुआ। आप अजातशत्रु हैं। सभी आप पर पूर्ण विश्वास करते हैं।

यों तो राजेन्द्र बाबू का नाम भारतीय जनता पहले ही जानती थी, परन्तु चम्पारन के निलहे गोरों के अत्याचारों से दरिद्र कृषकों की रक्षा करने के प्रयत्न में म० गांधी को पूर्ण सहायता देने के कारण आप की गिनती भारतीय नेताओं में होने लगी। १९१७ ई० में महात्मा गांधी चम्पारन आते हुए आप के ही यहां ठहरे थे। [illegible]ओं की जांच करने और गोरों से बहस करने के लिए जिन वकीलों ने सहायता दी थी, उन में आप और बा० ब्रजकिशोर अन्यतम थे। दरिद्रनारायणों के प्रति म० गांधी के असीम अनुराग को देख कर आप में उन के प्रति जिस श्रद्धा व भक्ति का उद्रेक हुआ, वह फिर दिन प्रति दिन बढ़ती ही गयी। उसमें कभी कमी नहीं आई। आप केवल श्रद्धालु ही नहीं रहे, आप ने अपना जीवन और भी त्यागमय कर दिया और जब १९२० में महात्मा गांधी ने असहयोग की भेरी बजाई, आप अपनी हजारों रुपये की वकालत छोड़ कर उस संग्राम में कूद पड़े। वैसे तो अन्य भी अनेक मान्य नेताओं ने त्याग किया, परन्तु आप का त्याग सचमुच अपूर्व था। तब आप के बैंक में कुल १५) शेष थे। सारी आय दरिद्रनारायणों की सेवा में खर्च हो चुकी थी।

१९२० से आज तक का आपका जीवन म० गांधी के बिहार-संस्करण का जीवन है। १९२२ में गया के कांग्रेस-अधिवेशन में स्वर्गीय देशबन्धु दास और प० मोतीलाल नेहरू की स्वराज्य-दल की योजना को अस्वीकृत कराने में जहा श्री राजगोपालाचार्य का मुख्य हाथ था, वहा आप ने भी कम भाग नहीं लिया।

देश में राष्ट्रीय भावों का प्रचार करने के लिए असहयोग के दिनों आप न 'देश' नाम का साप्ताहिक पत्र निकाला और उस के द्वारा म० गांधी के अहिंसा तथा सत्याग्रह के सिद्धान्तों को बिहार के घर-घर पहुचाने का यत्न किया। असहयोग आन्दोलन की समाप्ति के बाद म० गांधी ने चरखा-संघ कायम करके खादी-प्रचार का बीड़ा उठाया तो राजेन्द्र बाबू ने बिहार में उसे भी आगे बढ़ाया। जिन दिनों खादी की लोकप्रियता उतार पर थी, उन दिनों भी बिहार खादी का विशेष केन्द्र बना हुआ था। आज भी आप के ही प्रयत्न से बिहार की खादी बहुत अधिक उन्नत है।

इन्हीं दिनों कांग्रेस कमेटियों का संगठन बहुत शिथिल हो चुका था। बाबू राजेन्द्रप्रसाद ने अपने प्रांत में इस संगठन को भी व्यवस्थित किया।

सत्याग्रह आन्दोलन

सन १९२८ ई० मे कलकत्ता कांग्रेस ने प्रस्ताव पास किया था कि नेहरू कमेटी के आधार पर बने विधान की मांग को यदि एक साल के अन्दर सरकार स्वीकार न करे, तो कांग्रेस अगले अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास करेगी और सरकारी कर देना बन्द करने की सलाह देकर अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन जारी करने की व्यवस्था करेगी। अगले वर्ष लाहोर में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास हुआ परन्तु उस से पहले ही मुंगेर में होने वाले प्रान्तीय सम्मेलन में राजेन्द्रबाबू के सभापतित्व में बिहार ने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास किया। १९३० ई० में जब सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ हुआ उस समय बिहार में भी आंदोलन जारी हुआ। इस आन्दोलन के सिलसिले में राजेन्द्र बाबू को गया स्टेशन पर एक सारजेन्ट ने धक्का दिया, पटना में नमक सत्याग्रह के अवसर पर आप को सारजेन्ट के घोड़े की ठोकर खानी पड़ी और भागलपुर जिलान्तर्गत बिहपुर नामक स्थान के सत्याग्रह में आप को पुलिस की लाठियों से सख्त चोट लगी। इस आंदोलन में आप दो बार जेल गये। जेल में आप का स्वास्थ्य बहुत गिर गया था। स्थिति यहा तक गम्भीर हो गई कि देश में आप के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चिन्ता प्रकट की जाने लगी। लेकिन सरकार ने कुछ नहीं सुना। इलाज तक की सुविधायें आप को नहीं दी गईं। आप को रिहा करने का आन्दोलन किया गया लेकिन आप अवधि से पूर्व रिहा न किये गये।

आप तीन बार कांग्रेस के डिक्टेटर भी रह चुके हैं। जिस समय गांधी-इरविन समझौता हुआ था उस समय आप ही कांग्रेस के डिक्टेटर थे। १९३२ ई० में पुरी में होने वाली कांग्रेस के आप ही अध्यक्ष मनोनीत हुए थे, परन्तु महात्मा जी के लन्दन से लौटने के बाद ही फिर सत्याग्रह संग्राम छिड़ जाने के कारण वह अधिवेशन नहीं हो सका। आप फिर सत्याग्रह संग्राम में जेल चले गये। आप बाहर रह ही नहीं सकते थे। आप का स्वास्थ्य फिर गिर गया। देश में फिर आन्दोलन हुआ इस बार सरकार ने जनवरी के प्रथम सप्ताह में रिहा कर दिया। शायद यह रिहाई ईश्वरीय प्रेरणा थी, क्योंकि उस से कुछ ही दिन पूर्व बिहार में जो प्रलयकर भूकम्प हुआ, उस में आप के समान कोई सेवा-कार्य न कर सकता था। आप का स्वास्थ्य बहुत गिरा हुआ था, परन्तु दरिद्रनारायण की सेवा का व्रती इस समय अपनी चिन्ता छोड़कर ... मे जी जान से जुट पड़ा जिन पर प्रकृति का भीषण प्रकोप हुआ था। बा० राजेन्द्र... बिहार के भूकम्प में ... अद्भुत अथक सेवा की, वह सेवा की चरमसीमा थी। उनके इस कार्य ने देश में उनके प्रति एक अपूर्व भक्ति उत्पन्न कर दी। राजेन्द्र बाबू की योग्यता, तत्परता सामर्थ्य और लोकप्रियता पर सब को—शत्रु मित्र दोनों को विश्वास है। उन्हें अपना शत्रु मानने वाली सरकार ने भी उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त किया। सच तो यह है कि उनकी सहायता के बिना सरकार बिहार की सहायता का महत्वपूर्ण कार्य कुछ भी न कर सकती थी।

हिन्दी और साहित्य सेवा में भी आप को पूरी रुचि है। आप के 'देश' ने राष्ट्रीयता के साथ हिन्दी का भी प्रचार किया था।

१९१२ ई० में कलकत्ते में जब 'प्रेमघन' जी के सभापतित्व में जब अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था, तब आप स्वागत समिति के मन्त्री थे। १९२० ई० में पटने में होने वाले सम्मेलन की स्वागत-समिति के मन्त्री थे। बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन तथा कोकनाडा में होने वाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष पद को आप सुशोभित कर चुके हैं।

राजेन्द्रबाबू को देखकर अनजान आदमी उनके अमूल्य गुणों का परिचय सुगमता से नहीं प्राप्त कर सकता। उनका वेश और मुख-मुद्रा इतने सीधे और सरल हैं कि केवल उन्हें देखकर यह कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि इस साधारण से शरीर और वेश के पीछे इतना महान् आत्मा छिपा है। ऊपर से देखने में वह सीधे सादे कुपढ़ ग्रामीण प्रतीत होते हैं, किन्तु उनका थोड़े ही समय का संसर्ग देखने वाले को विस्मय तथा आश्चर्य में डाल देता है। उन से मिलकर और बातचीत करने के बाद उनकी सरलता और हृदय की शुद्धता से प्रभावित हुए बिना रह जाना असम्भव है। किसी भी विषय पर उनका भाषण सुनने के पश्चात् हृदय में उनके प्रति श्रद्धा अवश्य उत्पन्न हो जाती है। बिहार प्रांत की जनता को संगठित करने, उसे उसके अधिकार समझाने और उन्नत बनाने के लिये उन्होंने जो कुछ किया है, जो त्याग और तप किया है, उसकी कथा सुनने के पश्चात् श्रोता उनका भक्त हो जाता है।

आज देश ने दरिद्रनारायण के इस सच्चे सेवक को राष्ट्रपति ... कर सब से बड़ा सम्मान दिया है। राष्ट्र उनके हाथ में सुरक्षित है। परमात्मा उन्हें आयुष्य और स्वास्थ्य दे, ताकि भारत उनकी सेवाओं से अधिकाधिक लाभ उठा सके।

उनके सीधे सादे और सरल स्वभाव में सच्ची साधुता निवास करती है। एक जगह इतनी सरलता, सौम्यता, त्याग, तपस्या साधुता और महान् आत्मा का अपूर्व संचय बहुत कम मनुष्यों में दीख पड़ता है।

मुसलमानों को पैगम्बर सा० के उदाहरण से अहिंसा की शिक्षा लेनी चाहिये। उन पर इतने पत्थर मारे गये कि खून बह निकला, खून जूतों पर ऐसा जम गया कि उनका पैरों से निकालना मुश्किल हो गया। परन्तु पैगम्बर सा० फिर भी ज्यों के त्यों खड़े रहे और उस आदमी के लिये क्षमा-याचना की जिसने उन्हें पत्थरों से मारा था।

—खान अब्दुलगफ्फार खां

* * *

'हमारा उद्योग यह होना चाहिये कि (हमारे सौभाग्य से) देश में भिन्न-भिन्न धर्मों और जातियों में जो भेद उपस्थित हैं उन्हें हम पूर्णरूप से बनाये रखें। उनको मिलाने का प्रयत्न न करें। 'फूट उत्पन्न करके राज्य करना' ही भारत-सरकार का सिद्धान्त होना चाहिये। —कर्नल जान कोक

(पृष्ठ ५ कालम २ का शेष)

अन्त में मैं राष्ट्र के नवयुवकों से दो शब्द कहना चाहता हूं। प्रत्येक देश के स्वातन्त्र्य आन्दोलन का आधार नवयुवक ही रहे हैं। कांग्रेस का बल भी नवयुवक ही हैं। उनकी गण्यता विशुद्ध होती है। मुझे पूरी आशा है कि कांग्रेस जो भी कार्यक्रम स्वीकार करेगी ... स्वदेशी विदेशी बहिष्कार या कौंसिल-प्रवेश हो, उसमें नवयुवक अपनी इस प्रिय संस्था के भक्त रहेंगे और इस अग्नि-परीक्षा के समय राष्ट्र का पूरा साथ देंगे।

अपना संसार

कैसा हो अपना संसार ?
जैसा एक बड़ा परिवार ॥

न तो देव हो और न दानव,
रक्खे मनुष्यत्व हो मानव,
सब मे समता का व्यवहार ।
ऐसा हो अपना संसार ॥

न तो देवियां हो न चेटिया,
हो पत्नो, मा, बहिन, बेटिया,
मन मे ममता का संचार ।
ऐसा हो अपना संसार ।

बैर-विरोध और ये घातें—
बनें अतीत काल को बातें,
रक्खे वाद विनोद-विचार ।
ऐसा हो अपना संसार ॥

सुख के लिये दुःख भी आवे—
क्षणिक विरह मे वह बढ़ जावे,
रुचि-रञ्जक उसके उद्गार !
ऐसा हो अपना संसार ॥

फल हो जिसकी आशाओ मे—
एक भाव सौ भाषाओ मे,
राग भिन्न हो छिन्न न तार ।
ऐसा हो अपना संसार ॥

करें कल्पनायें कवि मर्मा,
सच्ची कर दिखलावें कर्मा,
हो स्वप्नो के भी तिथि-वार ।
ऐसा हो अपना संसार ॥

धन कहते हैं जिसे, न हो वह,
फिर भी सब द्रव्यो का मंत्र—
कर अभावो का परिहार ।
ऐसा हो अपना संसार ॥

प्रगति मिले जिससे जीवन मे,
एक मनोरथ हो जन जन मे—
वह अपना ही आविष्कार ।
ऐसा हो अपना संसार ॥

आवें, विपत्तियां भी आवें,
जिनसे हम नूतन बल पावें,
और तुम्हें प्रभु दें न विसार ।
ऐसा हो अपना संसार ॥

—मैथिलीशरण गुप्त

विजया से

(१)

विजये, विजय मिले, यह वर दे !
आज परीक्षा की हैं भीरें;
उधर राजसुख की जागीरें;
इधर जेल की हैं जंजीरें;
कठिन कसौटी पर कंचन है—
कस कर कालिख हर दे ।
विजये, विजय मिले, यह वर दे ॥

(२)

विजये, विजय मिले, यह वर दे !
कर पर पुलकित प्राण संभाले;
पीकर देश-प्रेम के प्याले;
बरसो से अनेक मतवाले;
भटक रहे स्वभाग्य निर्णय को—
ध्येय ध्यान में धर दे ।
विजये, विजय मिले, यह वर दे ॥

(३)

विजये, विजय मिले, यह वर दे !
जनता में जीवन उमड़ा है;
स्वतन्त्रता का पर्व पड़ा है;
बलिवेदी पर देश खड़ा है;
भीख मांगता है स्वराज्य की—
अब तो झोली भर दे ।
विजये, विजय मिले, यह वर दे ॥

(४)

विजये, विजय मिले, यह वर दे !
प्यारा है गत जीवन सारा;
दुर्गा ने दानव संहारा;
राम-लखण ने रावण मारा;
इस कलियुग मे गांधी को भी—
सफल मनोरथ कर दे !
विजये, विजय मिले, यह वर दे ॥

—केशवबिहारीलाल 'कण्टक'

हमारा स्वराज्य कैसा होना चाहिये ?

——:*:——

(ले०—श्री० इन्द्र विद्यावाचस्पति)



श्री० पं० इन्द्र

विद्वान् लेखक ने संसार में प्रचलित वर्तमान शासन-प्रणालियों का परिचय देते हुए यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि भारत की भावी शासन-प्रणाली न एकतन्त्र होगी और न पूंजीवाद के आधार पर संगठित प्रतिनिधि-शासन की पद्धति, जैसी कि अमरीका मे है; इग्लैण्ड की नियमित राजतन्त्र सत्ता भी यहां सम्भव नहीं है। गरीब और परिश्रमी प्रजा की एकत्व-भावना की शक्ति के आधार पर ही भारत का भावी राज्य-भवन खड़ा हो सकता है।

आ[illegible] [illegible]वासी स्वराज्य [illegible]ते हैं और स्व[illegible]य का अभिप्राय है, पूर्ण स्वाधीन राज्य। पू[illegible] स्वाधीन राज्य कई प्रकार के होता है, पृथ्वीपर जो देश स्वाधीनता का पूर्ण अधिकार रखते हैं, उन सबकी व्यवस्था एक ही सी नहीं है। उनकी कई श्रेणियाँ हैं, जिनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं:—

(१) कई देश, जिनकी संख्या प्रतिदिन घट रही है, एकसत्तात्मक शासन-प्रणाली के अधीन हैं। सभ्य राष्ट्रों में उनकी संख्या नहीं के बराबर है, परन्तु अर्द्ध-सभ्य देशों में अब भी उनकी सत्ता विद्यमान है। अफगानिस्तान, फारिस आदि देश इसी श्रेणी मे हैं। इन देशों में नाम को प्रजा का प्रतिनिधित्व प्रचलित भी है, तो वह सर्वथा शक्तिहीन होने के कारण नगण्य है। असली शक्ति एक शासक की है।

(२) दूसरी श्रेणी में वह देश हैं, जिनमें सीमाबद्ध राजसत्ता की प्रधानता है। उनमें प्रधान शासक तो एक ही होता है और वह भी वंश-परम्परा के कारण अधिकार को प्राप्त करता है, परन्तु उसके शासनाधिकार प्रतिनिधि-सत्तात्मक संस्थाओं के कारण इतने सीमित होते हैं, कि शासक का नाम तो नाममात्र को ही शेष रह जाता है। इंग्लैण्ड, जापान आदि देशों की शासन-प्रणाली इसी प्रकार की है। उनमे राजा तो है, परन्तु वह शासक नहीं है, वह प्रजा की प्रतिनिधि-सभा के निश्चयों पर मुहर लगाने वाला ही समझा जाता है। प्रजा का बहुमत कानून है और शासक के [illegible] पूर्ण [illegible] होता है।

(३) तीसरे प्रकारके देश वह है, जिनमें पूरी प्रजा-सत्तात्मक शासन-प्रणाली प्रचलित है। अमरीका, फ्रांस आदि के प्रजातन्त्र इसके दृष्टान्त है। उनमें राजा नहीं हैं, राजा के स्थान पर चुने हुए राष्ट्रपति हैं, जो कुछ समय के लिये चुने गये हैं। उनमें प्रजा के बहुमत की ही प्रधानता रहती है।

(४) यूरोप के महायुद्ध के पीछे सभ्य-देशों में एक और तरह की शासन-प्रणाली भी प्रचलित हो गई है, जिसे हम प्रजा-सत्तात्मक प्रणाली के पर्दे में छुपी हुई एक-सत्तात्मक शासन-प्रणाली के नाम से पुकार सकते हैं। ऐसे देशोंमें टर्की, जर्मनी, और इटली प्रधान हैं। इन देशों में नाम को प्रजा-सत्तात्मक शासन-प्रणाली है, परन्तु वस्तुतः शक्तिशाली व्यक्तियों का सत्तात्मक अधिकार ही मुख्य है। इसे प्रजातन्त्र के चोले में नादिरशाही शासन कहा जा सकता है।

(५) रूस को हम अन्य सब देशों से पृथक् रखते हैं, क्योंकि श्रमी समुदाय की प्रधानता का वह अलग ही नमूना है। इससे पूर्व प्रचलित राजनीति में शासन-प्रणालीके श्रेणि-विभाग को जिस [illegible]र पर स्था[illegible] किया जाता था [illegible] में उसे सर्वथा पृथक् आधार [illegible] कल्पना की गई है। पुरानी प्रचलित राजनीति में यह देखकर शासन-प्रणाली का श्रेणि-विभाग किया जाता था कि शासन-शक्ति का केन्द्र एक व्यक्ति में, थोड़े से व्यक्ति-समूह में, या प्रजा के बहु-संख्यक व्यक्ति-समूह में है। रूस में शक्ति का केन्द्र संख्या की नहीं अपेक्षा करता। वहां शक्ति का केन्द्र प्रजा के उस भाग में है, जो श्रम करता है। उस प्रणाली में वंश-परंपरा, सम्पत्ति, या प्राचीन अधिकारों की कोई पूछ नहीं है।

संक्षेप से मैंने वर्तमान शासन-प्रणालियों की विशेषताओं का दिग्दर्शन करा दिया है। इसे दिग्दर्शन ही समझना चाहिये, क्योंकि शास्त्रीय दृष्टि से यह बहुत अधूरा है, परन्तु मेरे इस लेख का जो उद्देश्य है, उसके लिये अधूरा दिग्दर्शन भी पर्याप्त है। भारत की भावी शासन-व्यवस्था कैसी होनी चाहिये, इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये उपर्युक्त श्रेणि-विभाग का निर्देश ही काफ़ी है।

राजतंत्र ?

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सब से पहली बात, जिसे हम भावी शासन-विधान का केन्द्र-भूत विचार कहेंगे, यह है कि भावी भारत में वंशपरम्परागत एक राजा की सत्ता की कल्पना भी असम्भव है। [illegible] कई कारण हैं। सब से प्रथम कारण तो यह है कि पराधीन भारत की भूमि को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि उसमें सैकड़ों, शायद हजारों महा-पुरुष ऐसे पड़े है, जो महाराजाधिराज, महाराज, राजा, नवाब, आदि उपाधियों से विभूषित होने के कारण भारत के भावी सम्राट होने के दावेदार हैं। उन में से न कोई छोटा बनना चाहेगा और न सामन्त बनना पसन्द करेगा। यह तो सम्भव है कि निज़ाम हैदराबाद और महाराज बड़ोदा एक विदेशी सम्राट् के सामन्त बन कर साथ साथ की कुर्सियों पर बैठ जायें, परन्तु उनमे से एक सम्राट् हो कर और दूसरा सामन्त होकर रहे, यह असम्भव बात है।

दूसरा कारण भी प्रथम कारण से ही सम्बद्ध है। भारत का दुर्भाग्य है कि इस मे कई धर्म है—और उसमे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है कि यहां धर्म को जीवन का प्रधान प्रेरक कारण समझा जाता है। यदि स्वाधीन भारत में वंशपरम्परागत शासन-प्रणाली प्रचलित हो, तो सब से बड़ी कठिनाई तो यही रहेगी कि वह एक शासक हिन्दू हो या मुसल्मान, सिख हो या पारसी ? एकसत्तात्मक शासन प्रणाली में सब से बड़ी आशंका तो यही है कि स्वाधीन भारत मे एक को छोड़ शेष सब धर्मों के मानने वाले लोग सदा शासन के विरोधी ही रहेंगे।

यह दो कठिनाइयें ही वंशपरम्परागत शासन-प्रणाली को असम्भव बनाने के लिये पर्याप्त है, जब उनके साथ एक तीसरा कारण शामिल हो जायतो उस प्रणाली पर विचार करना भी उपहास्य और व्यर्थ सा प्रतीत होने लगता है। वंशपरम्परागत शासन प्रणाली के दिन पूरे हो चुके। उसने अपने सुदीर्घ जीवन मे मनुष्य जाति की उन्नति को रोकने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उसे सीमाबद्ध करके सुधारने का यत्न किया गया, परन्तु वह भी सफल नहीं हुआ, क्योंकि समय और अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य जाति के राजनीतिक कष्टों का मूल कारण साम्राज्यवाद है और साम्राज्यवाद के भवन की नींव एकसत्तात्मक शासन-प्रणाली पर कायम है। यदि मनुष्य जाति को राजनीतिक अशान्ति से बचाना हो तो साम्राज्यवाद और उसकी बहिन वंशपरम्परागत शासन-प्रणाली को विषैला कूड़ा करकट समझ कर सदा के लिये भस्मसात् कर देना होगा। इस प्रकार पहली दूसरी श्रेणी, की शासन-प्रणालियें भारत के लिये सर्वथा असंगत और असम्भव हैं।

डिक्टेटरशिप ?

तीसरी श्रेणी को पीछे के लिये छोड़ कर हम पहले चौथी श्रेणी के सम्बन्ध मे विचार करेंगे। चौथी श्रेणी में हमने उन देशों को रखा है, जिन मे प्रजातन्त्र शासन प्रणाली के पर्दे मे छिपी हुई एकसत्तात्मक प्रणाली प्रचलित है। टर्की मे कोई वंशपरम्परागत शासन नहीं है। वंशपरम्परा खलीफा के साथ समाप्त हो गई। वर्तमान शासक मुस्तफा कमालपाशा को प्रजा ने निर्वाचित किया है। इस प्रकार टर्की की शासन-प्रणाली को हम प्रजा-सत्तात्मक कह सकते हैं, परन्तु साथ ही हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि कमालपाशा की शासन-शक्ति ब्रिटिश सम्राट् किंग जार्ज की शासन शक्ति से सैकड़ों गुना अधिक प्रबल है। यही दशा जर्मनी की है, जर्मनी का राष्ट्रपति हिटलर नंगी स्वेच्छाचारिता का जीता जागता नमूना है। जापान का सम्राट् कभी स्वप्न मे भी उस स्वेच्छाचारिता के प्रयोग की

कल्पना नहीं कर सकता, जो हिन्लर क लिए बाऐ हाथ का खल है। कमालपाशा या हिन्लर जैम शासक असाधारण दशाओं क परिणाम होत हैं। उन्हे स्थायी रूप में किसी देश की शासन-पद्धति का भाग नहीं बनाया जा सकता । सम्भव है कि भारतवर्ष को भी सुयवस्थित रूप मे आन म पूर्व हिन्लरशाही मे म गुजरना पडे क्योकि परिवर्तनकाल मे प्राय असाधारण वस्तुय पैदा हो जानी है, परन्तु अन्त मे या तो खोल ही रहेगा या असली वस्तु। पूजातन्त्र पद्धति और हिन्लरशाही चिरकाल तक इकटठी नहीं रह सकतीं।

प्रजासत्तात्मक शामन पद्धति

अब दो श्रेणियें शेप रह जाता हैं। एक तो वह श्रेणी जिस में अमरीका फ्रास आदि मुख्य है और दूसरी वह श्रेणी रूस को जिस का सब म उत्कृष्ट नमूना समझा जा सकता है । इन दोनों श्रेणियों में समानतायें तो यह हैं कि दानो ही वशपरम्परागत राजनीतिक अधिकारो की सर्वथा उपेक्षा करती है और प्रजा के अधिकारा का सर्वोपरि मानती हैं। परन्तु दोनों मे विपमताय भी कम नहीं हैं और मालिक हैं। अमरीका की शासनप्रणाली का आधार पू जीवाद है और रूस की शासन-प्रणाली का आधार साम्यवाद। पुरान योरुप में गत १८ शताब्दियों म राजा और प्रजा के अधिकारों का जो सघर्ष हो रहा था अमरीका का प्रजातन्त्र उस का अन्तिम रूप है। रूस के प्रजातन्त्र का आधार ही दूसरा है। यदि अमरीका की रिपब्लिक को हम पुरानी दुनिया के राजनातिक इतिहास का अन्तिम अध्याय कह सकते हैं तो रूस की रिपब्लिक नवीन दुनिया के राजनीतिक इतिहास का पहला अध्याय है।

पू जीवाद ?

यह तो हम देख चुके हैं कि भारत की भावी राज्यप्रणाला में वशपरपरागत राजसत्ता को किसी रूप म भी स्थान नहीं मिल सकता। विशुद्ध प्रजासत्तात्मक राजप्रणाली हा उस क लिय सम्भव हा सकता है। अगह म यह देखना ह कि प्रजासत्तात्मक प्रणाला के दो प्रकारों मे स कोन सा प्रकार भारत क लिए उपयोगी हो सकता है। हरक देश की राज्यप्रणाला में अपना अपनी स्थिति के अनुसार गोण भद रहा करत हे। इस कारण अमराका या रूस की राज्यप्रणाला अपन उसा रूप में भारत म प्रचलित हा सके यह असम्भव हे। उन में परिस्थिति क अनुसार ता परिवर्तन करना हा पडगा परन्तु कई कारणो म प्रतात हाता हे कि भावा भारत क लिए वह प्रजातन्त्र पद्धति जो अमराका में प्रचलित है अधिक उपयोगा नहीं हो सकता । सब म मुख्य कारण तो यह है कि उस का आधार पू जीवाद है और पू जावाद ससार के लिए एक अभिशाप सिद्ध हो चुका है। मनुष्य जाति न साम्राज्यवाद और पू जीवाद के बहुत मजे ले लिय हैं। इन दोनों वादों का फल यह हुआ है कि थोडे लोग सुखी रहे हैं और अधिक दु खी। मनुष्य जाति के बडे हिस्से को इन दोनों वादों के व्यावहारिक रूपों न अपाहज और दीन बना दिया है। मनुष्य जाति इन से उकता गई है। जिम बला मे दुनिया छूटने का यत्न कर रही है यत्नपूर्वक भारत उमे गले में धारण कर यह कितनी भद्दी कल्पना है।

बन्धन का अभाव

अमरीका की सी प्रजातन्त्र-पद्धति भारत के लिए उपयोगी नहीं बन सकती। इस का एक यह भी कारण है कि कोई भी राष्ट्र तब तक एक राज्य के सूत्र में पिरोया नहीं जा सकता जब तक कि उस के मिलाने वाला एक मजबूत बन्धन न हो। भारत मे वह मजबूत बन्धन कोन सा है? एक शासक का व्यक्तित्व वह बन्धन नहीं है क्योंकि सारा भारत किसी एक वशपरम्परागत देसी शासक को स्वीकार नहीं कर सकता। धार्मिक बन्धन भी नहीं है क्योंकि दुर्भाग्य मे भारत में अनक धर्म प्रचलित हैं। यहां भाषा भाव और सस्कारों के भद भी उग्र रूप में विद्यमान हैं। ऐसा दशा में भारत के लिय वह शासन-प्रणाली, जो एग्लो-सैक्सन जाति के लिए उपयोगी हो सकती है कभी अनुकूल सिद्ध नहीं हो सकती।

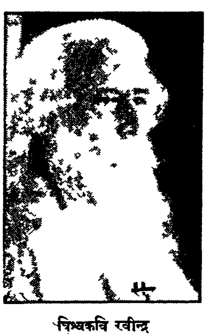
ता फिर क्या ?

हमें भारत का भावी शासन सर्वथा नय आधारों पर स्थापित करना पडेगा। भारत के अधिकांश-निवासी कृषि करते हैं। जो कृषि नहीं करते वह मेहनत मजदूरी करते हैं। एक बहुत थोडा हिस्सा है जो उपर्युक्त पेशों म बचा हुआ है। भारत का भावी स्वराज्य उस थोडे से हिस्से का स्वराज्य नहीं हो सकता। उसे न एक भाषा की शक्ति मिल सकती है, और न एक धर्म को। जिस शक्ति पर वह जीवित रह सकेगा वह शक्ति कोई दूसरी ही होनी चाहिये। गरीब और परिश्रमी प्रजा की एकत्व भावना ही वह शक्ति है जिसके आधार पर भावी भारत का राज्यभवन खड़ा किया जा सकता है। इस कारण भारत का भावी स्वराज्य ऐसी प्रजातन्त्र शासन-पद्धति पर अवलम्बित होना चाहिय, जिसका आधार पू जीवाद न हो। भारत की शायद ९९ फी सदी जनता श्रम से जीवित है। कोई भूमि पर श्रम करता है तो कोई कारखानों में। ९९ फी सदी भारतवासियों की एक अभिन्न भावना ही ऐसी प्रबल डोरी है जिसम भावी भारत के सगठन को मजबूत किया जा सकता है, इस प्रकार हमारा स्वराज्य श्रम की समता के अधिकारों पर अवलम्बित प्रजातंत्र प्रणाली के अनुसार होना चाहिये, यह अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है।

——.o:——

विश्व की दो विभूतियां

भारत क साहित्यकार



विश्वकवि रवीन्द्र

भारत क जन-नायक



विश्व वद्य

कुछ मास पूर्व अमरिका क न्यूयार्क नगर में अन्तर्राष्ट्रीय भवन की एक भोज-सभा में यह विवाद उत्पन्न हुआ था कि इस समय ससार मे ऐसे कौन दो व्यक्ति है जो सबसे अधिक यशस्वी एव माननीय हैं। इस भोज-सभा क सभापति थे कालम्बिया यूनिवर्सिटी क एक प्रोफेसर। उन्होंने कहा— ऐसे दो व्यक्ति है सही किन्तु क्या वे अमरिकानिवासी है? श्रोताओं में स हा कहन वालों क सकेत को देखन पर उनका सख्या अधिक नहीं थी।

अत. उन्होंने पूछा— तब क्या वे अग्रज हैं? इस बार भी स्वीकृति-सूचक सकेत अधिक नहीं देख गये।

उन्होंन फिर पूछा— क्या वे फ्रासीसी जर्मन अथवा यूरोप क अन्य किसी देश क निवासी हैं? कई व्यक्तियों न इस विषय में भी सन्देह प्रकाशित कि

तब सभापति न खडे होकर पूछा—तब क्या उनमें क एक व्यक्ति भारत क महान् जन-नायक म० गाधी एव दूसर भारत क ख्यातनामा विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर हैं?

चारों दिशाओं म उसी समय एक स्वर स हा-हां' ध्वनि गूंज उठी।

भारत का रंगमंच

भारतवर्ष का इतिहास संसार के सब देशों से प्राचीन है। जब अन्य देशवासी अभी कपड़ा पहनना सीख रहे थे भारतवर्ष में कला और शिल्प का पूर्ण विकास हो चुका था। प्रजातन्त्र राजतन्त्र आदि राजनैतिक संस्थाओं की भी उन्नति चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी। भारतीय रंगमञ्च पर अत्यन्त प्राचीन काल से हजारों अभिनेताओं ने अभिनय किया। सैकड़ों वंश उठे और कुछ-कुछ समयतक अपनी चमक दिखा कर काल के प्रवाह में बह गये। सुदूर पश्चिम से यूनानी विजेता के रूप में आये परन्तु वे भी भारतीय ही बन गये। यूची हूण आदि कितनी विदेशी जातियोंने भारतीय रंगमञ्च पर अपने जौहर दिखाये परन्तु आर्यों की विचक्षण राजनैतिक प्रतिभा के कारण वे भी भारतीयों में ऐसे मिल गये जैसे कि उनका कोई पृथक अस्तित्व ही न हो। इस के बहुत समय बाद भारतके सीमाप्रान्त से उत्साही वीर धर्मान्ध और अदम्य मुसलमान आये तथा भारतीय रंगमञ्च पर ६०० वर्ष तक प्रधान पात्र बने रहे। कुछ भाग को छोड़ कर सम्पूर्ण भारत पर मुसलमानों का अधिकार हो गया।

परन्तु संसरणशील संसार में मुसलमान भी अपने गौरव व आधिपत्य को स्थिर न रख सके। औरंगजेब के समय से फिर स्वतन्त्रता की लहर सारे देश में फैल गई। मरहठों सिखों और जाटों ने विदेशी और विधर्मी मुसलिम शासन के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया।

अंग्रेज प्रधान पात्र के रूप में

सम्भव था कि भारत-भूमिमें मुसलमानों के स्थान पर शिवाजी और गुरुगोविन्दसिंह के द्वारा लगाया गया स्वतन्त्रता का वृक्ष लहलहा उठता। लेकिन इसी समय अकस्मात् ही मध्यनिशीथ के अन्धकार में अंग्रेजों ने — जो यहाँ मुगल बादशाहों की मिन्नत-खुशामद कर व्यापार करने आये थे — अपनी तराजुओं को तलवार के रूप में बदल दिया। हिन्दू राज्य की कल्पना बहुत समय के लिए विलुप्त हो गई। अंग्रेजों ने जिन षड्यन्त्रों कूटनीतियों व उपायों से भारत पर अधिकार किया उनके उल्लेख का न यहाँ स्थान है और न आवश्यकता ही। इतना कहना पर्याप्त है कि लार्ड डलहौजी के समय तक सम्पूर्ण भारतवर्ष के मानचित्र पर लाल रंग फिर गया।

कांग्रेस से पूर्व का राष्ट्रीय आन्दोलन

(ले०—श्री० के० सी० चौधरी)

कांग्रेस से पहले भारत में वर्तमान राष्ट्रीयता का उद्गम कैसे हुआ, ब्रिटिश-शासन के प्रति असन्तोष कैसे पैदा हुआ, हिन्दूसमाज के सुधारकों व अंग्रेजी शिक्षा और तत्कालीन राजनैतिक नेताओं ने भारत की राष्ट्रीय उन्नति में क्या भाग लिया, राष्ट्रीय साहित्य का उसमें कितना स्थान था, राष्ट्रीयता विकास कैसे हुआ और अन्त में एक अ० भा० राजनैतिक संस्था बनाने के विचार का कैसे प्रादुर्भाव हुआ आदि प्रश्नों का उत्तर विद्वान् लेखक ने इस लेख में मनोरंजक शैली में दिया है।

एक बार ऐसा मालूम हुआ कि भारत की स्वातन्त्र्य-भावना लुप्त हो गई है। सारे भारत में न केवल राजनैतिक पराधीनता ने अपना अधिकार कर लिया परन्तु मानसिक और आर्थिक दृष्टि से भी भारत पराधीनता के पाश में बुरी तरह जकड़ा गया। भारतीयों में स्वदेश और अपनी संस्कृति के प्रति न कोई अनुराग रहा न कोई उत्साह। लगातार पड़ने वाले दुर्भिक्षों आर्थिक शोषण व राजनैतिक परतन्त्रता ने भारत का सर्वस्व नष्ट कर दिया। भारतीय रंगमञ्च पर अंग्रेज अभिनेता ही मुख्य पात्र थे भारतीयों का यदि कोई भाग था भी तो वह केवल नौकर-चाकरों का। वे अपमानित किये जाते थे उनका सर्वस्व छीना जाता था और वे परवश कातर होकर अपने स्वामी की आज्ञा पालन करते थे।



राजा राममोहन राय

राष्ट्रीयता का उद्गम

परन्तु इस सार्वदेशिक पराधीनता का एक लाभ भी हुआ। नपोलियन के इटली व जर्मनी पर के आक्रमणों ने उन दोनों राष्ट्रों को एक और सुसंगठित राष्ट्र बना दिया था। सदी से विच्छिन्न जर्मन राष्ट्र एक होगया। इटली की भी वही दशा हुई। सम्पूर्ण भारत—विभिन्न प्रान्तों के विविध जातियों और धर्मों वाले निवासियों की छाती पर अंग्रेज अपनी दाल दल रहे थे। इसलिए एकदम दुःख के दुःखी भी एक हो गये। सारे भारत में राष्ट्रीयता की लहर अन्दर ही अन्दर बहने लगी। अंग्रेजों के विरुद्ध असन्तोष फैलना शुरू हुआ और अंग्रेजों ने आश्चर्य के साथ देखा कि सन् १८५७ में प्रायः सारे भारत में एकसाथ उनके शासन के विरुद्ध असन्तोष उग्ररूपेण प्रकट होगया। एक बार फिर ब्रिटिश शासन के अस्तित्व में सन्देह पैदा होगया। विद्रोह दावानल की भाँति फैल गया। वर्तमान राष्ट्रीयता—अंग्रेजी शासन से मुक्त होने की इच्छा—का पहला प्रदर्शन भारतीय रंगमञ्च पर इसी विद्रोह के रूप में हुआ।

यह विद्रोह सफल न हुआ परन्तु इससे ब्रिटिश सरकार के कान अवश्य खड़े हो गये। ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से शासन लेकर अपने हाथ में लिया और तत्कालीन महारानी विक्टोरिया ने प्रसिद्ध घोषणा की कि भारतीय शासन में बिना किसी जाति व धर्म के खयाल के लोगों को लिया जायगा।

बहुत से लोगों ने इस घोषणा-पत्र को भारत का 'मेग्नाचार्टा' समझा और बहुतों ने इसे रद्दी कागज का एक टुकड़ा। पर फिर भी जिन भारतीय राजनीतिज्ञों ने राष्ट्रीय आन्दोलन किया, वह इसी को आधार मान कर।

नवयुग का आविर्भाव

यद्यपि लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा की योजना केवल काले अंग्रेज जो सरकार व जनता के बीच में शृंखला का कार्य कर सकें पैदा करने के उद्देश्य से ही तैयार की थी तथापि यूरोपीय स्वातन्त्र्य-युद्धों, अधिकार प्राप्ति के लिए किये गये प्रजा के प्रयत्नों और यूरोपीय शासन के इतिहास का अध्ययन करने से अंग्रेजी-शिक्षितों में भी एक ऐसा दल पैदा हो गया जो भारत में भी ब्रिटिश विधान के अनुसार प्रतिनिधि-शासन का इच्छुक था। इस दल की अपनी महत्वाकांक्षायें थीं। शासन में यह भी समानरूपेण भाग लेना चाहता था। अंग्रेज प्रजा को जो अधिकार प्राप्त थे, उन्हें यह भी चाहने लगा। अपनी जाति के सामाजिक पतन को देख कर यह दुःखी था। विचार-स्वातन्त्र्य की भावना ने इसके मस्तिष्क में घर कर लिया था। इस परिस्थिति में राजा राममोहनराय ने ब्रह्मसमाज को जन्म दिया। इसने जहाँ सामाजिक सुधारों की आवाज उठाई वहाँ राजनैतिक महत्वाकांक्षा भी लोगों के हृदय में जागृत कर दी। इस समाज ने बंगाल में नवजीवन, नवस्फूर्ति और नवीन सन्देश का सञ्चार कर दिया। केशवचन्द्र सेन ने एक जगह लिखा था "विजेता और विजित जाति में भ्रातृभाव कहाँ है? जब योरोपियन भारतीय को एक चालाक लोमड़ी समझ कर उससे घृणा करता है, तब एक देशी भी उसे भयंकर भेड़िया समझ कर उससे डरता है।"

पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के विधवा-विवाह-आन्दोलन और श्री प्यारीचरण सरकार के मद्य-निषेध-आन्दोलन ने भी बंगाल की प्रसुप्त जनता में जागृति उत्पन्न करने में कम सहायता नहीं दी। जब इस आन्दोलन में श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और आनन्दमोहन बसु भी सम्मिलित हो गये तब इस आन्दोलन को बड़ा बल मिला।

उत्तरीय भारत में नवयुग के आचार्य ऋषि दयानन्द ने जहाँ सामाजिक सुधार की जोरदार आवाज उठाई, पौराणिक कुरीतियों व कुप्रथाओं के विरुद्ध जहाद बोला वहाँ उन्होंने भारतीयों में स्वदेश के प्रति अनुराग प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम और स्वतन्त्रता के लिये उत्सुकता भी पैदा की। उन्होंने लोगों को खुल्लमखुल्ला बताया कि "विदेशी राज्य से

चाहे वो कितना ही अच्छा क्यों न हो स्वन्शी राज्य चाहे उसमे कितनी ही त्रुटिया क्यों न हो, अच्छा होता है। यह सब स पहली आवाज था जिसम स्वतन्त्र होन की महत्वाकाक्षा इतन स्पष्ट शब्दों म प्रगट की गई थी। आर्यसमाज क आन्दोलन न उत्तरीय भारत मे सामाजिक जागृति क साथ-साथ राजनैतिक जागृति भी उत्पन्न कर दी।



महर्षि दयानन्द

जो कार्य ब्राह्मसमाज न बगाल में और आर्यसमाज न पजाब मे किया, वही काम दक्षिण मे थियासाफिकल सोसायटी न किया। मडम ब्लवेटस्की और करनल आलकाट न भारतीयों को उनकी प्राचीन सभ्यता की श्रेष्ठता बताते हुए उनमें महत्वाकाक्षा उत्पन्न कर दी। 'हम दास हैं, नि'शक्त हैं स्वतन्त्र होन के योग्य नहीं हैं' इस भावना का ——, —श हुआ वहा स्वत— होन की अभिलाषा जागृत हो गई। इसम हिन्दू समाज को नवीन आशा, नवीन शक्ति और नवीन स्फूर्ति मिली।

ब्राह्मसमाजियों आर्यसमाजियों व थियोसाफिस्टों —भारतवर्ष की उन्नति – सवा। उन्नति का जो अभिलाषा —न्न हुई थी उस म अग्रेज़ीसिन बहुत बाधक था। इस— राजनैतिक भावना भी खूब जोरों — साथ पदा हुई। सामाजिक जागृति हमेशा अपन साथ राजनैतिक जागृति लाती है। वही अब भी हिन्दू समाज क सुधार क साथ हुआ।

साहित्य की क्रान्ति

विद्रोह क १५-२० साल बाद क साहित्य न भी लोगों में राजनैतिक रुचि पैदा कर दी। वहाबियों क नता अमीरखां को सरकार न राज-विद्रोह क अपराध में गिरफ्तार कर लिया था। उस की ओर स मि० एन्स्ट न जो सफाई दी उसन युवक बगाल को बहुत आकृष्ट किया। उन दिनो प्रत्येक युवक क घर में उस क भाषण की एक एक प्रति अवश्य दिखाई देती थी। बगाल क निलहे गोरो क अत्याचारों क विरुद्ध भी जो आन्दोलन हुआ उसन भी राजनैतिक जागृति पैदा करन में कम भाग नहीं लिया।

राजा राममोहन राय की सवाद-पत्रिका' कवि ईश्वरचन्द्र क प्रभाकर कृस्टोदासपाल क हिन्दू पट्रियट न जहां थोडी-बहुत जागृति पदा की वहां श्री शिशिरकुमार घोष की अमृतबाजार-पत्रिका न हलचल ही मचा दी। रास्त-गुफ्तार बम्बई-समाचार जाम-जमशेद इन्दुप्रकाश और मरहट्टा न गुजरात और महाराष्ट्र मे राजनतिक भावना उत्पन्न करन मे बहुत भाग लिया। १८७८ म श्री० आनन्द चार्लू प्रभृति न मद्रास म प्रसिद्ध हिन्दू का प्रकाशन शुरू किया। पजाब मे सरदार दयालसिह आदि न ट्रिब्यून चलाया। १८७५ ई० मे ४७८ पत्र-पत्रिकायें निकलता थी जिनमें मे अधिकाश देशी भाषाओ मे थीं। इसी समय अनक प्रतिभाशाली विद्वान् लेखकों न इतिहास उपन्यास नाटक काव्य आदि लिखकर भी राष्ट्रीयता और स्वतन्त्रता का दिव्य सन्देश दिया। श्री रमेशचन्द्र दत्त क इतिहासों और विशेष कर ब्रिटिश भारत के आर्थिक इतिहास न लोगों को यह भली भांति —ता दिया कि ब्रिटिश —सन में भारत का आर्थिक —षण कैसे हुआ। भारत माता' और नीलदर्पण' (गोर निलहों क अत्याचारों का प्रदर्शक) नाटको न जहां राष्ट्रीय आदर्श और जातीय अभिमान पैदा किया वहां बकिम क आनन्दमठ और हेमचन्द्र क भारत-सगीत' नेउ स और भी बढा दिया। महर्षि —वेन्द्रनाथ ठाकुर अरविन्द घोष आदि अनक लेखकों न भी राष्ट्रीय साहित्य पैदा कर बगाल में राजनैतिक चतनता को मूर्तरूप दे दिया।

राजनैतिक सस्थायें

राष्ट्रीय साहित्य न जहां लोगो मे महत्वाकाक्षा पैदा कर दी थी उस पूरा करन क उद्देश्य स कांग्रेस स पूर्व भी अनेक राजनैतिक सस्थाय भी खुलन लग गई थीं। कलकत्ता और बम्बई मे १८५१ में ही दो एसोसियेशन स्थापित किय जा चुक थ। बम्बई क सघ म पितामह दादाभाई नोरोजी का हाथ था। हिन्दू के प्रवर्तकों न मद्रास में महाजन-सभा स्थापित की। महाराष्ट्र भी पीछ नहीं रहा था। महाराष्ट्रीय विद्वन्मण्डल क नक्षत्र महादेव गोविन्द रानाडे क नतृत्व में पूना मे भी सार्वजनिक सभा स्थापित हो चुकी थी।

इन्हीं दिनो भारत क राजनैतिक क्षेत्र मे एक बडे तजस्वी प्रभावशाली नता न पर रखा और वह था बगाल का शेर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी। कलकत्ते का ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन क्वल जमींदारों का हित देखता था। अमृत बाजार पत्रिका क सम्पादक शिशिरकुमार घोष द्वारा स्थापित इण्डियन लीग भी लोगों को आकृष्ट न कर सकी तब सुरेन्द्रनाथ बनर्जी



श्री सुरेन्द्रनाथ बनरजी

न श्री आनन्दमोहन बसु का सहयोग प्राप्त कर १८७६ मे इण्डियन एसोसियेशन की स्थापना की। इस का उद्देश्य बगाल मे राजनैतिक आन्दोलन करना और शनै शनै सम्पूर्ण भारत तक अपन आन्दोलन का क्षेत्र बढ़ाना था। इन सस्थाओं ने उस समय कितनी राजनैतिक जागृति पैदा कर दी थी इसका प्रमाण घटना से मिलता है जब कि ला— नार्थब्रुक की विदाई क अवसर पर उस का स्मारक बनान क सम्बन्ध में बगाल गवर्नर क सभापतित्व में सभा हो रही थी और १० युवकों न वहा पहुच कर स्मारक बनान का विरोध किया। यह इस प्रकार की पहली घटना थी जब गवर्नर जैसे उच्चाधिकारी क सामन भारतीयों न अपनी इच्छा खुले और स्पष्ट शब्दों में रक्खी।

श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी न जिस उत्साह लगन व परिश्रम स कार्य करना प्रारम्भ किया वह भारतीयों क लिय अनुपम था। उनकी प्रकाण्ड योग्यता अद्भुत कार्यकुशलता उत्कट —शभक्ति और सबस अधिक उन की ओजस्विनी वक्तृत्वकला न जनता मे एक अपूर्व भावना व स्फूर्ति का सञ्चार कर दिया। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को इण्डियन सिविल सर्विस की परीक्षा पास कर लेन पर भी नोकरी नहीं दी गई और न बैरिस्टरी करन की ही आज्ञा मिली। भारत के भाग्य अच्छे थे, सुरेन्द्र बनर्जी अफसर न बनकर राष्ट्रीय भारत के पिता बन गय।

औरगजेब क अत्याचारों न हिन्दुओं की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता भावना को उद्बुद्ध करन में जो स्थान लिया था लार्ड लिटन क शासन न भी वही स्थान भारत की राष्ट्रीय भावना को उत्साहित करन मे लिया। उसन उच्च-शिक्षा पर रोक लगा दी इण्डियन सिविल सर्विस की परीक्षा की शर्तें कुछ कठोर करदीं (जिस स भारतीय कम बैठ सकें) भारत क व्यय पर सीमाप्रान्त मे एक भीषण युद्ध छेड दिया भयकर देश-व्यापी दुर्भिक्ष होते हुय भी बडे ठाठबाठ स करोडों रुपया व्यय कर एक दरबार किया देशी अखबारो पर नियन्त्रण और भी कठोर कर दिया और शस्त्रास्त्र रखन का अधिकार भी छीन लिया। इन सब अत्याचारो से भारत की शिक्षित जनता क्षुब्ध हो उठी। बगाल के शेर न १८७७–७८ में सम्पूर्ण भारत का दौरा किया और विभिन्न प्रान्तों क सार्वजनिक नताओं को एक सूत्र में ग्रथित किया। यह पहला अवसर था जब सम्पूर्ण भारत क सार्वजनिक कार्यकर्ताओंने किसी प्रश्नपर एकमत होकर आन्दोलन किया हो। एक डेपुटेशन भी इस सस्था की ओर स इगलैण्ड भेजा गया। दिल्ली दरबार में भारत क कोने कोने स देशी राजा व अन्य अमीर उमरा एकत्र हुय थ। सुरेन्द्रनाथ आदि के दिलमे यह विचार उत्पन्न हुआ कि जब वायसराय के निमन्त्रण पर सारा भारत एक हो सकता है तब भारतमाता क नाम पर वह क्यों नहीं एक हो सकता? इसी समय वस्तुतः अखिल भारतीय सस्था क विचार का जन्म हुआ। दरबार क अवसर पर भीसब प्रान्तों के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में विचार-विनिमय हुआ। १८८३ में कलकत्ते में नेशनल कान्फ्रेन्स की गई जिसमें सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने अखिल भारतीय सगठन बनान का प्रस्ताव रखा। १८८४ ई० में इसी उद्देश्य स उन्होंने सार भारत का दौरा किया। १८८५ में जिन दिनों नेशनल कान्फ्रेन्स का दूसरा अधिवेशन हो रहा था और उसे अखिल भारतीय सस्था बनान का विचार हो रहा था, उन्हीं दिनों बम्बई में आल इडिया नेशनल कांग्रेस की स्थापना का समाचार कलकत्ता पहुच गया।

पहेली

वस्तुतः यह विचित्र पहेली है कि उन्हीं दिनों जब कि अखिल भारतीय संस्था बनाने का निश्चय सुरेन्द्रनाथ

भारतीय राष्ट्र के दो युग-प्रवर्तक



लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है



महात्मा मोहनदास करमचन्द गांधी

असत्य और हिंसा से यदि स्वराज्य मिलता भी हो तो मैं उसे स्वीकार नहीं करूंगा

गांधीवाद

सत्य

अहिंसा

(ले०—श्री हरिभाऊ उपाध्याय)



इस लेख के लेखक श्री० हरिभाऊ उपाध्याय न केवल राजस्थान के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं अपितु आपने गांधी जी के सम्पर्क में रहकर उनकी विचारधारा को हृदयंगम करते हुए सात्विकता को अपने जीवन में परिणत करने का भी प्रयत्न किया है। इसलिये इस विषय पर उनके विचार पाठकों के लिये मननीय और उपयोगी होंगे।

सत्य क्या है अहिंसा क्या है सत्य और भौतिक बल में कौन प्रधान है?—आदि प्रश्नों का दार्शनिक विवेचन बहुत उत्तमता से लेखक ने इस लेख में किया है।

गांधी-वाद पर अधिकार-पूर्वक लिखना कठिन है। एक तो इसका अभी पूरा विकास नहीं हुआ है इतनी पूर्णता को अभी नहीं पहुंचा है कि उसका सम्पूर्ण और निश्चित स्वरूप लोगों के सामने रक्खा जा सके दूसरे जब तक महात्मा जी मौजूद हैं तब तक इस विषय पर लिखने का अधिकार एकमात्र उन्हीं को है। जो जिस वस्तु का प्रणेता है वही उसे अधिकारपूर्वक और वास्तविक रूप में अच्छी तरह रख सकता है। मुझ जैसे लोग जिन्होंने गांधीवाद को थोड़ा बहुत हृदयंगम करने का अधकचरा प्रयत्न किया है वे तो बहुत हुआ तो उस की रूपरेखा मात्र दे सकते हैं इधर उधर से कुछ रोशनी ही डाल सकते हैं।

महात्मा जी जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं जिस के आधार पर उन्होंने अपना जीवन बनाया है जिस के बल पर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका और भारतवर्ष में अपूर्व सफलतायें प्राप्त की हैं एक से एक बढ़ कर चमत्कार दिखाये हैं उसे उन्होंने सत्याग्रह नाम दिया है। एक अध्यापक महोदय ने सत्याग्रह का स्वतन्त्र अर्थ करने का प्रयत्न किया है, परन्तु मैं समझता हूं कि जिस व्यक्ति ने जिस शब्द को जन्म दिया है उसको उसी अर्थ में दूसरों को ग्रहण करना चाहिये जिस अर्थ में वह — उसका जन्मदाता — उस का प्रयोग करता है। कम से कम न्याय औचित्य और सत्य प्रेम का यही तकाजा है।

सत्याग्रह

अब हमें यह जान लेना चाहिये कि सत्याग्रह से महात्मा जी का अभिप्राय क्या है? सत्य+आग्रह इन दो शब्दों को मिला कर सत्याग्रह बनाया गया है। इस में मूल और असली शब्द तो सत्य ही है। सत्य पर डटे रहने का नाम है सत्याग्रह। अब प्रश्न यह है कि सत्य क्या है? इसका निश्चयात्मक उत्तर वही दे सकता है जिस ने सत्य को पा लिया हो जिसका जीवन सत्यमय हो गया हो जो स्वयं ही सत्य हो गया हो। हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों और दर्शनकारों ने इसे समझाने का यत्न किया है पर वे इसकी महिमा का बखान करके या कुछ झलक दिखाकर ही रह गये हैं। मैं समझता हूं—इस से अधिक मनुष्य के बस में है भी नहीं। सत्य की पूर्णता व्यापकता और घनता न तो बुद्धिग्राह्य ही है और न वर्णन-साध्य ही है। उसकी व्यापकता पर विचार करने लगते हैं तो यह ब्रह्माण्ड भी छोटा मालूम होता है जनता के तरफ बढ़ते हैं तो कल्पित या मनोगत बिन्दु भी बड़ा दिखाई देता है। वह सूक्ष्म से सूक्ष्म और विराट से भी विराट है। इस से अधिक वर्णन उसका नहीं हो सकता।

समझें कैसे?

तब मनुष्य उसे समझे कैसे? प्रत्येक मनुष्य अपनी बुद्धि और शक्ति के ही अनुसार उसे समझ या ग्रहण कर सकता है। तो प्रत्येक मनुष्य के लिए सत्य वही हुआ जो उसे जंच गया। तो क्या प्रत्येक जंचने वाली बात को सत्य ही मान लेना चाहिये? नहीं निर्मल अन्तःकरण में जो स्फुरित हो सात्विक बुद्धि में जो प्रवेश कर जाय वही सत्य शब्द से परिचित कराया जा सकता है। वह वास्तविक सत्य चाहे न हो किन्तु उस व्यक्ति के लिए तब तक तो वही सत्य रहेगा जब तक उसे आगे सत्य का और या भिन्न प्रकार से दर्शन न हो। इस को सापेक्ष्य या अर्ध या आंशिक सत्य ही समझना चाहिये। यह उस मनुष्य की असमर्थता अपूर्णता अवश्य है किन्तु अपने विकास की वर्तमान अवस्था में इस से अधिक सत्य का दर्शन उसे हो ही नहीं रहा है तो वह क्या करेगा? वह उसी आंशिक सत्य पर दृढ़ रहेगा और आगे सत्य दर्शन की राह देखेगा एवं इसके लिए यत्न करेगा। सत्य शोधन का सत्य को पाने का यही मार्ग है। किन्तु इस में यह बात न भूलना चाहिये कि सत्य शोधन में प्रगति करने के लिए अन्तःकरण की निर्मलता और बुद्धि की सात्विकता को दिन दिन बढ़ाना अनिवार्य है। ऐसा न करेंगे तो आपकी गति रुक जायगी आप उसी अपने माने हुए अर्ध या आंशिक सत्य पर ही जो असत्य भी हो सकता है चिपके रह जायेंगे और सम्भव है कि उस से आपकी अधोगति भी हो जाय।

अहिंसा

अब इन आंशिक सत्यों में झगड़ा शुरू हो तो क्या किया जाय? आप एक बात को सत्य मान हुए हैं मैं दूसरी बात को। और वे दोनों परस्पर विरुद्ध हैं तो आपका मेरा परस्पर व्यवहार और संघर्ष कैसा होना चाहिये? सहिष्णुता का या जोर जुल्म का? यदि जोर-जुल्म का तो फिर आप मुझ से मेरे सत्य पर डटे रहने का अधिकार छीनते हैं। यह तो सत्य की आराधना नहीं हुई। आप को अपना ही सत्य प्रिय है इसी की आप को चिन्ता है मेरे सत्य की आप बिल्कुल ही उपेक्षा करते हैं तो आप जुल्मी स्वार्थी एकांगी पक्षपाती क्या नहीं हुए? यदि आप की वृत्ति ऐसी है तो फिर क्या आप स्वयं भी अपने सत्यशोधन का रास्ता नहीं रोक रहे हैं? इस दशा में तो आप अपने और मेरे दोनों के सत्य के बाधक हो गये। दूसरे शब्दों में आप सत्य के द्रोही बन गये। पर यदि आप सहिष्णुता का व्यवहार रखते हैं तो अपने और मेरे दोनों के लिए सत्य शोधन का मार्ग विस्तृत कर देते हैं। दोनों में विग्रह और द्वेष की जगह प्रेम और मिठास का भाव एवं सम्बन्ध बढ़ाते हैं। इसी वृत्ति का नाम अहिंसा है।

सत्य के शोधन में अहिंसा के बिना काम चल ही नहीं सकता। आप एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। यही नहीं बल्कि अन्तःकरण की निर्मलता बुद्धि की सात्विकता जिनके बिना आपका अन्तःकरण सत्य स्फुरित होने के योग्य ही नहीं बन सकता वास्तव में देखा जाय तो इस अहिंसा-वृत्ति के ही फल हो सकते हैं। अन्तःकरण को निर्मल और बुद्धि को सात्विक आप तभी बना सकते हैं जब आप अपने को राग द्वेष से ऊपर उठाते रहेंगे। राग द्वेष से ऊपर रहना अहिंसा का ही दूसरा नाम है।

इस तरह सत्य के साथ अहिंसा अपने आप जुड़ी हुई है। दोनों एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते। दोनों को एक दूसरे से पृथक या भिन्न कल्पना करना अपने को सत्य से दूर हटाना है फिर भी यह तो कहना ही पड़ेगा कि सत्य साध्य है और अहिंसा साधन। अहिंसा के बिना आप सत्य को पा नहीं सकते इस लिए इस का महत्व सत्य के ही बराबर है किन्तु उसका दर्जा सत्य के बराबर नहीं हो सकता।

सत्य बनाम भौतिक बल

सत्य यदि वास्तव में सत्य है सारा ब्रह्माण्ड यदि एक सत्य है है या सत्य नियम पर ही इस का आधार और अस्तित्व है और यदि वही

न कर लिया था बम्बई में दूसरी अ० भा० संस्था क्यों खोली गई? कुछ ऐतिहासिकों का कहना है कि अदम्य सुरेन्द्रनाथ के प्रभाव से सरकार डरती थी। मि० ह्यूम जो स्वयं थियोसोफिस्ट थे सरकार को अधिक अप्रसन्न न करना चाहते थे और इसीलिये सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रमुख स्थान न देने के उद्देश्य से उन्होंने उनकी अनुपस्थिति में कांग्रेस की स्थापना कर डाली। लेकिन उनका यह विचार कितना असफल सिद्ध हुआ यह सभी जानते हैं।

कांग्रेस के जन्म के पूर्व सुधारकों कवियों लेखकों व नेताओं ने जिस राष्ट्रीयता को जन्म दिया उसी को आगे बढ़ाने का कार्य कांग्रेस ने अपने जिम्मे ले लिया। यदि वे ऐसी वातावरण तैयार न कर जाते तो कांग्रेस को इतनी सफलता मिलनी कठिन थी जितनी हम आज देख रहे हैं।

—०—

सत्य हम मे ओत-प्रोत है तो फिर हमें अपनी छोटी-सी तलवार पिस्तौल या मशीनगन अथवा अन्य भीषण भीमकाय शस्त्रास्त्रों से उसकी रक्षा करने की आवश्यकता ही क्या है? क्या हमारे ये भयानक और मारक साधन उसकी रक्षा भी कर सकेंगे? यदि हम मानते हैं कि हां तो फिर ये सत्य से बढ़ कर साबित हुए। तो फिर सत्य की अपेक्षा इन्हीं की पूजा क्यों न होनी चाहिये? 'सत्य एव परो धर्म' की जगह 'शस्त्रमेव परो धर्मः' का प्रचार होना ही उचित है। 'सत्यमेव जयते नाऽनृतम्' की जगह 'शस्त्रमेव जयते' की घोषणा होनी चाहिये। तो फिर अब तक जगत् में किसी ने शस्त्र को सत्य से बढ़ कर क्यों नहीं बताया? इसीलिए कि सत्य और शस्त्र की कोई तुलना नहीं। शस्त्र यदि किसी बात का प्रतीक हो सकता है तो वह असत्य का। सत्य तो स्वयं रक्षित है। सूर्य की कोई क्या रक्षा करेगा? सत्य के तेज के मुकाबले में हजारों सूर्य कुछ भी नहीं हैं। चूंकि हम में सत्य कम होता है इसीलिये हमें शासन की सहायता की आवश्यकता प्रतीत होती है; क्योंकि असत्य हम में अधिक होता है और वह अपने मित्र साथी या प्रतीक की ही सहायता प्राप्त करने के लिए हमें प्रेरित करता है। अतएव सत्य का हिंसा या शस्त्र से कोई नाता नहीं। यह बात सूर्य के प्रकाश की तरह हमारे सामने स्पष्ट रहनी और हो जानी चाहिये।

शक्ति और प्रकाश

सत्य की शोध और सत्य पर डटे रहने की प्रवृत्ति में ही वह प्रतिकार-बल उत्पन्न होता है जो सत्याग्रही का वास्तविक बल है। सत्य को शोधने का बुद्धि उसे नित्य नया प्रकाश देती है और जो सत्य स्फुरित हुआ है उस पर डटे रहने में उसमें दृढ़ता बल और असत्य से लड़ने की स्फूर्ति आती है। इस प्रकार सत्याग्रह में ज्ञान और बल दोनों का समावेश अपने आप होता रहता है। जहां ये दोनों हैं वहां पराजय असफलता अशान्ति दुःख और चिन्ता कैसे टिक सकते हैं? सत्य के इसी अनन्त और नित्य-नवीन ज्ञान एवं अमोघ बल के आधार पर महात्मा जी कहा करते हैं कि शुद्ध सत्याग्रही एक भी हो तो वह सारी दुनिया को हिला सकता है। कौन कह सकता है कि उन का यह दावा बुद्धिगम्य नहीं है? सत्य के त्रुटियुक्त अपूर्ण और छोटे प्रयोगों में भी जब हमने जबर्दस्त शक्ति उत्पन्न होती हुई देखी है तो इस में क्या शक हो सकता है कि सत्याग्रही जितना ही अधिक शुद्धता और पूर्णता के निकट पहुंचेगा उतनी ही उस की गति तेज बल अपरिमित और दुर्दमनीय होंगे।

साराश यह कि एक ओर सत्य का अमित तेज बल पराक्रम पौरुष साहस और दूसरा ओर अहिंसा की परम आर्द्रता मृदुता मधुरता विनयशीलता स्निग्धता सुजनता इन दोनों के सम्मेलन का नाम है सत्याग्रह और इसी को गांधीवाद कह सकते हैं।

—:०:—

कांस्टिट्यूएंट असेम्बली की समस्या

(ले०—श्री अमरनाथ विद्यालंकार सदस्य सर्वेंटस आफ दी पीपल सोसायटी', अमृतसर)

कांग्रेस की कांस्टिटयूएण्ट असेम्बली की मांग की आज देश में चर्चा है। इसी मांग को पेश करने के लिये ही कांग्रेस असेम्बली के चुनाव में भाग ले रही है। परन्तु यह है क्या बला इसका ज्ञान अभी कम लोगों को है। विद्वान् लेखक ने कांस्टिटयूएण्ट असेम्बली क्या है उसका विकास कैसे हुआ किन-किन देशों में इसका निर्माण हुआ—आदि प्रश्नों पर अत्यन्त योग्यता से विचार करते हुए बताया है कि इस असेम्बली के निर्माण का अर्थ यह प्रकट करना है कि भारतीय शासन की शासन-सत्ता भारतीय जनता के पास है न कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट के पास। बस इसीलिये कांग्रेस इस प्रश्न पर इतना आग्रह कर रही है।

महत्वपूर्ण घोषणा

अपने १७ जून १९३४ के बम्बई वाले अधिवेशन में श्वेतपत्र और ब्रिटिश साम्राज्य की साम्प्रदायिक व्यवस्था के सम्बन्ध में अपना मत देते हुए कांग्रेस-कार्यसमिति ने जो प्रस्ताव स्वीकृत किया है उसमें शासन-विधान (Constitution) की दृष्टि से एक बहुत ही महत्वपूर्ण घोषणा की है। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि—

> भारत के भावी शासन-विधान का सन्तोषजनक निर्णय करने का एक ही तरीका है कि शीघ्र से शीघ्र एक कांस्टीटयूएण्ट असेम्बली बुलाई जावे जिसका चुनाव सार्वजनिक मताधिकार (Universal adult Franchise) के द्वारा हो। यह असेम्बली ही भारत के भावी शासनविधान का मसौदा तैयार कर और विभिन्न सम्प्रदायों के परस्पर सतुलन के प्रश्न का भी निर्णय करे।

कांग्रेस-कार्यसमिति की यह घोषणा राजनीतिक और कानूनी दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है और इस के द्वारा कांग्रेस ने अपने राजनीतिक ध्येय की ओर एक कदम आगे उठाया है। वस्तुतः कांस्टीटयूएन्ट असेम्बली की मांग पूर्ण-स्वाधीनता के प्रस्ताव का एक आवश्यक अंग होना चाहिये थी। परन्तु जिन दिनों कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव स्वीकृत किया था उन दिनों तक कांग्रेस के नेताओं को यह विश्वास था कि वे ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के साथ किसी समझौते पर पहुंचने में सफल हो सकेंगे। उस समय कांग्रेस केवल एक गोलमेज कानफरन्स की मांग पेश कर रही थी जिस कानफरन्स में भारतीय और ब्रिटिश राजनीतिज्ञ मिल कर बैठ जायं और एक दूसरे के साथ खूब विचार-विनिमय के पश्चात् किसी निर्णय पर पहुंच जावें। असेम्बली में भी कांग्रेस की तरफ से स्वराज्य-पार्टी ने यही मांग पेश की और जब साइमन-कमीशन की असफलता से हताश होकर तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन ने म० गान्धी और पण्डित मोतीलाल नेहरू को मशवरे के लिये बुलाया, तब भी इन नेताओं ने गोलमेज-कानफरन्स की ही मांग पेश की। परन्तु इंग्लैण्ड की अनुदार दल की सरकार सदा इस मांग को ठुकराती रही।

गोलमेज कानफरेन्स की असफलता

शासन-शक्ति मजदूर-दल के हाथ में आने के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने एक गोलमेज कानफरेन्स बुलाने का ही निश्चय कर लिया। परन्तु ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों ने कहने को तो गोलमेज कानफरेन्स की मांग पूरी कर दी परन्तु उस स्पिरिट में काम नहीं किया जिस स्पिरिट में हमारे राष्ट्रीय नेता चाहते थे। कानफरन्स में बजाय देश के प्रगतिशील जनता के प्रतिनिधि नेताओं को बुलाने के सरकार ने अधिकांश ऐसे व्यक्ति भर लिये जो जनता के प्रतिनिधि नहीं थे। इनकी सहायता से सरकार ने उक्त कानफरन्स में भारत के साम्प्रदायिक वैमनस्य और फूट का खूब जोर से—और खूब बढ़ा-चढ़ाकर प्रदर्शन किया। जो भारतीय अपनी एकता के बल पर साइमन-कमीशन की रिपोर्ट को टेम्स नदी के अन्दर दफनाने में कामयाब हुए थे, वही सरकार के इशारों पर नाचकर दुनिया के सम्मुख उपहासास्पद बने। गोलमेज कानफरन्स भारत की राजनीतिक और साम्प्रदायिक समस्या का हल न कर सकी। इस कानफरन्स के निश्चयों के आधार पर ब्रिटिश सरकार ने जो राजनीतिक मसौदा 'व्हाइटपेपर' के नाम से तैयार किया है, उससे अधिकांश भारतीय सन्तुष्ट नहीं हुए और साम्प्रदायिक समस्या का कानफरन्स में कोई हल न होने पर ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री ने अपनी मनमानी व्यवस्था हम पर लाद दी है।

गोलमेज कानफरेन्स असफल हुई क्योंकि यह कानफरेन्स वह कानफरन्स न थी जिस को कांग्रेस ने मांग की थी, बल्कि सरकार के कुछ पिट्ठुओं का मजमा तैयार किया गया था। एक तो इस में जनता के प्रतिनिधि ही नहीं थे, दूसरे इस कानफरेन्स को यह ज्ञात था कि उसके निर्णयों का कोई मूल्य

नहीं है। अन्तिम फैसला ब्रिटिश पार्लमेण्ट करती है—वह चाहे कानफरन्स क निर्णयो को मान, चाहे उन्हें ठुकरा दे। इसलिय कानफरन्स पर कोई जिम्मवारी न थी। जब कोई जिम्मवारो ही न थी तो यह बहुत स्वभाविक था कि उसक अन्दर गय हुए लोग अपना-अपना राग ही जोर-जोर मे अलापत। वे जानत थे कि हम अपन भाषणों मे कानफरन्स को प्रभावित नहीं करना किन्तु ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को रिझा कर अपन सकुचित स्वार्थों को पूरा करना है। इसलिय यह प्रयत्न व्यर्थ रहा।

जिन दिनों साइमन-कमीशन भारतका दौरा लगा रहा था उन दिनों भी श्रीमती एनी बोसेन्ट और कुछ दूसर नताओं न एक नशनल कन्वेंशन बुलाकर भावी शासम-विधान का मसौदा तैयार करन का प्रस्ताव सामन रखा था। परन्तु उस समय यह विचार था कि यह कन्वेन्शन जनता क बाकायदा चुन हुए प्रतिनिधियों द्वारा सगठित होगा। साथ ही उस समय काग्रेस क अन्दर और बाहर यही भाव प्रबल था कि ब्रिटिश सरकार मे कुछ ले-देकर समझोता कर लिया जाय। नेताओं का विश्वास था कि ऐसा समझोता सम्भव है और उस क परिणामस्वरूप औपनिवेशिक ढग का स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है। कलकत्ता-काग्रेस मे पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा को एक साल क लिय स्थगित करान क पीछे भी यही भाव था और लाहोर म भी काग्रेस क नताओ न पूर्ण स्वाधीनता क प्रस्ताव को मजबूर होकर स्वीकृत किया था। गाधी-इरविन-समझोन तक और महात्मा जी क इग्लैण्ड जान तक यही आशा काम कर रही थी।

नया अध्याय

जैस मैंन ऊपर कहा है वस्तुत. कास्टीटयुएण्ट असम्बली की माँग पूर्णस्वाधीनता की घोषणा की आवश्यक माग थी। और गोलमेज कानफरन्स की असफलता के पश्चात् ब्रिटिश सरकार क साथ समझोते म किसी निर्णय पर पहुचन की आशा भग होन क पश्चात् काग्रेस क पास इसक सिवाय कोई चारा न था कि यह घोषणा करतो कि भारत के भावी शासन-विधान को निर्णय करन का अधिकार भारतीय जनता का ही है और इस लिय शीघ्र जनता क चुन हुए प्रतिनिधियों की सभा बुलाई जावे। मैं ऊपर कह आया हू कि राजनीतिक और कानूनी दृष्टि म यह घोषणा बहुत ही महत्वपूर्ण है। यदि हम इस घोषणा पर दृढ रहे तो भारत क राजनीतिक इतिहास म इसम एक नये अध्याय का आरम्भ होता है। कांग्रेस की इस घोषणा क महत्व को समझन के लिय यह समझ लेना आवश्यक है कि कास्टीटयुएन्ट असेम्बली क्या वस्तु है और इस का क्या इतिहास है। आग पक्तियों मे हम सक्षेप म यही बतलान का प्रयत्न करेग।

कास्टीट्युएन्ट असेम्बली का विकास

किसी शासन-विधान की समालोचना करत हुए मन म पहला प्रश्न यह उठता है कि उस विधान के अनुसार शासन-सभा या प्रभुत्व (S v iei ntv) का केन्द्र कहा निहित है? जिस समय ससार में स्वेच्छाचारी राजतन्त्र का जोर था उस समय राजतन्त्र क समर्थकों की ओर मे कहा जाता था कि शासन-सत्ता का केन्द्र राजा है और वह यह सत्ता सीधे परमात्मा से प्राप्त करता है इसलिए राजा के विरुद्ध कुछ कहन का किसी को कोई अधिकार नहीं हैं। राजा परमात्मा का प्रतिनिधि है। इस सिद्धान्त को 'ईश्वर प्रदत्त-अधिकार' (Divn Riol t the rv) का सिद्धान्त कहा जाता था।

१८ वीं सदी मे जब राजसत्तात्मक शासन क विरुद्ध क्रान्ति की लहर उठी और जनता क विरुद्ध राजाओं क स्वेच्छाचारी शासनो क खिलाफ विद्रोह के भाव जागृत हुए तो हाब्स, रूसो वगैरा विचारकों न एक और सिद्धान्त की घोषणा की। उन्होंन कहा कि राजा का प्रभुत्व ईश्वर-प्रदत्त नहीं किन्तु यह प्रभुत्व उसे जनता म प्राप्त हुआ है। जनता न ही किसी समय अराजकता और अनियन्त्रण म बचन क लिय परस्पर सलाह करक एक अधिकारी नियुक्त किया और शासन-सूत्र उसके हाथ में सौप दिय। इसलिय राजा की शासनसत्ता और प्रभुत्व का स्रोत परमात्मा नहीं किन्तु जनता है। इस सिद्धान्त को उन्होंने 'सामाजिक समझौत का सिद्धान्त' (Soc al (ıtract) का नाम दिया और घोषणा की कि आज यदि राजा अपन कर्तव्य का पालन नहीं करता तो जनता को यह अधिकार है कि वह उसक हाथ से शासनाधिकार वापस लेकर अपने लिय नयी व्यवस्था कर। इस सिद्धान्त के अनुसार शासनसत्ता या प्रभुत्व (Sovereignty) जनता में निहित है। वह वस्तुत जनता की ही सम्पत्ति है। जनता उसे जिसक हाथों में चाहे सोप द। जनता को अपना इस सम्पत्ति को भी जिस किसी व्यक्ति या व्यक्ति-समूह क हाथ में सौंपन का हक हासिल है। उसक इस अधिकार को स्वभाग्य-निर्णय का अधिकार (Right of self-determinati n) का नाम दिया गया है।

वर्तमान जनतन्त्र-शासन का मूलाधार यही सिद्धान्त है। और आज ससार में सवत्र इसी सिद्धात को स्वीकृत किया जाता है। जब किसी नये शासन-विधान की रचना की जाती है, या किसी पुरान विधान में कोई परिवर्तन करना होता है, तो उस पर जनता का मत और स्वीकृति लेनी आवश्यक समझी जाती है, क्योंकि सम्पूर्ण शासनसत्ता और शक्ति का स्रोत जनता है। यह आधुनिक 'शासन कानून (C n tıt ıtı nal law) का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।

परन्तु जनता की स्वीकृति लेन का क्या ढग है? जनता स्वय अपना विधान किस प्रकार तैयार कर सकती है? जब भी किसी देश में क्रान्ति द्वारा या अन्य अवस्थाओं के कारण शासन की पुरानी मशीनरी टूट-फूट जाती है या निकम्मी हो जाती है तो जो लोग अस्थायी रूप म शासन की बागडोर अपन हाथ में लेत हैं, उनका यह कर्तव्य होता है कि व जनता से शीघ्र म शीघ्र शासन करन की आज्ञा प्राप्त करें — इतना ही नहीं बल्कि जनता को अवसर दें कि वह जिसे चाहे शासक नियुक्त कर ले और शासन की जो व्यवस्था चाहे प्रचलित कर दे। इसके लिये शीघ्र म शीघ्र जनता के प्रतिनिधियों की एक सभा बुलायी जाती है। अस्थायी तौर पर शासनाधिकार इसके हाथ में दे दिय जात हैं। यह सभा नय शासन-विधान का मसोदा तैयार करती है और उसे जनता मे मत लेकर स्वोकृत कराती है और स्वीकृति के पश्चात् उस विधान के अनुसार नयी शासन की मशीनरी की रचना करके सब शासन-सूत्र उसके हाथ म दे देती है। इसके बाद यह स्वय भग हो जाती है। 'शासन-विधान को तैयार करन वाली इस सस्था को ही कास्टीटयुएण्ट असम्बली कहा जाता है। कास्टीटयुएण्ट असेम्बली विधान का जो मसोदा तैयार करती है, प्राय यह आवश्यक समझा जाता है कि उस पर एक बार जनता का मत लिया जाय। और यह प्राय रिफरेंडम के जरिय किया जाता है।

कास्टीटयुएण्ट असम्बली का दर्जा व्यवस्थापिका सभा और शासन की बाकी सारी मशीनरी म ऊचा है। उसकी रचना प्राय ज्यादा विस्तृत मताधिकार पर होती है। वह जनता की सीधा प्रतिनिधि माना जाता है, और उसका काम सिर्फ नयी शासन की मशीनरी को खड़ा कर देना भर होता है। जब तक कोई शासक अपन लिय जनता म शासनाधिकार प्राप्त न कर ले और अपना शासन-विधान जनता द्वारा निर्वाचित कास्टीटयुएण्ट असम्बली द्वारा स्वीकृत न करा ले तब तक वह शासक कानूनन' शासक नहीं माना जाता और उसका शासन कानून द्वारा स्थापित' (Government established by law) नहीं कहा जा सकता।

वर्तमान इतिहास

आधुनिक युग में कास्टीट्युएण्ट असेम्बली का इतिहास अमेरिका की राज्यक्रान्ति म प्रारम्भ होता है। क्रान्ति क पश्चात् विभिन्न प्रदेशों की निर्वाचित सस्थाओं—काग्रेसों—ने शासन की बागडोर अपन हाथ मे ले ली, और नय शासन-विधान को बनान का कार्य भी अपन हाथ में लिया। कहीं-कहीं विधान बनान का अधिकार भी उन्होंन पहले जनता मे वोट लेकर प्राप्त किया, और जहा ऐसा नहीं हुआ वहा अपन विधान क मसौदे को उन्होंने सार्वजनिक मत (Ret ıenl m) द्वारा स्वोकृत करा लिया। वर्जिनिया और दक्षिण करोलिना की काग्रेसों न जब बगैर जनता की स्वीकृति प्राप्त किय नय शासन-विधानो को चालू करना चाहा तो जनता न इसका विरोध किया और अन्त म उन्हें विधान को रिफरेंडम द्वारा स्वीकृत कराना पड़ा। न्यू हैम्पशायर मे भी ऐसा ही हुआ।

अमरिका का फेडरल शासन-विधान भी इसी प्रकार की असेम्बली द्वारा तैयार कराया गया और विधान मे यह भी नियम रखा गया कि विधान मे परिवर्तन करन का अधिकार भी कास्टीटयुएण्ट असम्बली को है।

अमरिका की कुछ रियासतों मे यह नियम रखा गया है कि एक निश्चित अवधि क पश्चात् कास्टीटयुएण्ट असेम्बली का चुनाव करक उसका अधिवेशन बुलाया जाय ताकि जनता को अपन शासन-विधान में समय-समय पर रद्दो-

बदल करने और उसकी कार्यशैली का पर्यालोचन करने का अवसर आप से आप प्राप्त होता रहे। उदाहरणार्थ न्यूयार्क में हर बारहवें साल और न्यू हैम्पशायर में हर सातवें साल असेम्बली बुलाने का नियम है। परन्तु अधिकांश रियासतों के विधान में ऐसा कोई नियम नहीं। इनमें कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली बुलाने के लिये भी यह आवश्यक समझा जाता है कि पहले जनता की स्वीकृति प्राप्त की जाय। इण्डियाना के सुप्रीम कोर्ट ने १९१७ में यहां निर्णय दिया था कि असेम्बली बुलाने या न बुलाने का प्रश्न पहले आम वोटों द्वारा निश्चित करके उसके पश्चात् ही कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली का निर्वाचन किया जा सकता है।

फ्रांस के शासन विधान की रचना भी इसी प्रकार की गयी। सन् १८७० के फ्रांस-जर्मन-युद्ध के पश्चात् जब नेपोलियन तृतीय का पतन हुआ और नयी स्थापित सरकार ने बिस्मार्क से सन्धि करनी चाही, तो बिस्मार्क ने कह दिया कि वह विधि-विधान द्वारा बाकायदा स्थापित सरकार के सिवाय और किसी से सुलह की बातचीत करने के लिये तैयार नहीं। इस पर नेशनल असेम्बली का चुनाव किया गया, और उसने नया शासन-विधान जन तन्त्र शासन के सिद्धान्तों के अनुसार तैयार किया।

महायुद्ध के पश्चात् यूरोप में जिन नवीन राष्ट्रों की उत्पत्ति हुई उन सबके शासनविधानों की

यूरोप के नये राष्ट्र

रचना कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली द्वारा की गयी और असेम्बली के मसौदे को जनता से रिफरेंडम द्वारा स्वीकृत कराया गया। जब तक ऐसा नहीं किया गया अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में उन राष्ट्रों की सभा को किसी राष्ट्र ने स्वीकार नहीं किया।

पोलैण्ड का शासन-विधान पिल्सुदस्की ने १९१९ में कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली चुनकर तैयार कराया। युगोस्लाविया, जेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, एस्थोनिया और जर्मनी सर्वत्र ऐसा ही किया गया। युगोस्लाविया में जब कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली चुनी जाने लगी तो लोगों को चुनाव एक विचित्र-सी चीज प्रतीत होते थे क्योंकि बहुत से प्रदेशों के लोगों ने वहां चुनाव का नाम तक न सुना था। लोग बहुत अशिक्षित थे। परन्तु फिर भी हर बालिग को मताधिकार दिया गया, और लोगों के अशिक्षित होने के कारण कोई विशेष दिक्कत पैदा नहीं हुई।

जब हम ब्रिटिश उपनिवेशों के वर्तमान शासन-विधानों के इतिहास पर निगाह दौड़ाते हैं तो हमें

ब्रिटिश उपनिवेश

पता लगता है कि उनमें जनता के स्वभाग्य-निर्णय के अधिकार को महायुद्ध से भी पहले स्वीकृत किया गया है। इन उपनिवेशों का दावा है कि वे साम्राज्य के अन्दर रहते हुए भी खुदमुख्तार हैं और साम्राज्य के भीतर रहना या न रहना उनकी अपनी इच्छा पर निर्भर है। इस दावे का आधार यह है कि इन उपनिवेशों के विधानों को जनता द्वारा स्वीकृत कराकर इस मूलभूत सिद्धान्त को स्वीकृत किया गया है कि इन विधानों में शक्ति का मूल स्रोत जनता है न कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट।

आस्ट्रेलिया के वर्तमान फेडरल कांस्टीट्यूशन की रचना के लिये १८९१ में सिडनी में कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली बुलाई गई। इसमें तैयार किया हुआ मसौदा भिन्न-भिन्न प्रदेशों की पार्लमेण्टों के सामने रखा गया। परन्तु वह सब पार्लमेण्टों में पास न हो सका। १८९७ में फिर कनवेंशन बुलाई गया। इस बार जिन प्रदेशों की पार्लमेण्टों ने मसौदे को स्वीकृत नहीं किया वहां वह मसौदा रिफरेन्डम के जरिये जनता के सम्मुख रखा गया। वहां वह स्वीकृत हो गया। इस प्रकार जनता की स्वीकृति प्राप्त होने पर उसे १९०० में ब्रिटिश पार्लमेण्ट ने भी स्वीकृत कर लिया। जो ढंग आस्ट्रेलिया में बर्ता गया ठीक वही कैनेडा में और दक्षिण अफ्रीका में बर्ता गया।

आयरलैण्ड की फ्री स्टेट का कांस्टीट्यूशन भी इसी प्रकार वहां की निर्वाचित असेम्बली

आयरलैण्ड

डेल आयरन की स्वीकृति से प्रचलित किया गया। पहले आयरिश और ब्रिटिश नेताओं में एक समझौता हुआ और उस पर डेल आयरन की स्वीकृति ली गयी। उसके पश्चात् पार्लमेण्ट ने अपनी मुहर उस पर लगा दी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सम्पूर्ण शासन-विधानों का आधार जनता की स्वीकृति है। ब्रिटिश उपनिवेशों में भी जनता के प्रभुत्व ([illegible]) का सिद्धान्त स्वीकृत किया गया है।

हम ऊपर कह आये हैं कि कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली शासन की सारी मेशीनरी से ऊपर है। व्यवस्थापिका सभायें या एग्जीक्युटिव उसके अधिकारों में कमी नहीं कर सकते उसके कार्यक्रम में हस्तक्षेप भी नहीं कर सकते। वह भी यद्यपि शासन के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करती, परन्तु शासन-विधान में शासन के प्रत्येक विभाग के लिये शर्तें आयद कर सकती है। और ऐसी शर्तें भी लगा सकती है जिससे व्यवस्थापिका सभा किसी हानिकारक नीति को दुहरा न सके।

कहा जाता है कि कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली में प्रायः वे सब दोष रहते हैं जो निर्वाचित संस्थाओं में प्रायः आ जाते हैं। वह कई बार सामयिक विचार-प्रवाह में बह कर शासन-विधान में ऐसे दृढ़ बन्धन लगा देती है जो आगे चल कर बहुत हानिकारक सिद्ध होते हैं। परन्तु इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि जनता की इच्छा को कार्यरूप में परिणत करने का और कोई अच्छा तरीका भी नहीं। कांस्टीट्युएण्ट असेम्बली का चुनाव यदि भली भांति और न्यायानुसार किया जावे तो इस में प्रायः सब विचारों के लोग आ जाते हैं और इस के निर्णय जनता की सम्मिलित इच्छा के प्रतिनिधि होते हैं।

वास्तविक समस्या

यदि भारत की पूर्ण स्वाधीनता के प्रश्न को छोड़ कर केवल औपनिवेशिक दरजे का भी खयाल किया जाय तब भी भारतीय जनता को वह अधिकार प्राप्त होना चाहिये जो महायुद्ध से भी पहले ब्रिटिश-साम्राज्य के अन्य उपनिवेशों को प्राप्त हुआ था और जो महायुद्ध के बाद आयरलैण्ड और पश्चिया मान्डेट के रक्षित राष्ट्रों (Protectorates) को दिया गया। भारत के लिए जो भी शासन-विधान तैयार किया जाय उसपर भारतीय जनता की राय अवश्य ली जानी चाहिये और भारतीय जनता द्वारा स्वीकृत होने पर ही उसे कानूनी स्थिति प्राप्त होनी चाहिये। परन्तु ब्रिटिश सरकार ऐसा नहीं करना चाहती। झगड़ा वस्तुतः सिद्धान्त का है। जैसा मैंने आरम्भ में कहा है, किसी शासन विधान की समीक्षा करते हुए प्रश्न उत्पन्न होता है कि शासन-सत्ता कहां निहित है? ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का दावा है कि भारतीय शासन की शासन-सत्ता ([illegible]) भारतीय-जनता में निहित नहीं किन्तु उसकी स्वामिनी ब्रिटिश पार्लमेंट है। इसलिये उन का दावा है कि भारत का शासन-विधान बनाने और उस में रद्दोबदल करने का अधिकार केवल ब्रिटिश पार्लमेंट को ही है। भारत के स्वभाग्य-निर्णय के अधिकार को ब्रिटिश राजनीतिज्ञ स्वीकृत नहीं करते। उन के मत में भारतीय जनता अपने भाग्य की स्वयं स्वामिनी नहीं किन्तु उस के भाग्य की बागडोर ब्रिटिश पार्लमेंट के हाथ में है।

इस से पहले कि भारत और इंगलैंड में कोई परस्पर समझौता हो या कोई शासन-विधान तैयार किया जाय इस मूलभूत कानूनी (Constitutional) प्रश्न का निर्णय हो जाना आवश्यक है। भारत के शासन-विधान में शासन-सत्ता और प्रभुत्व (Sovereignty) कहां निहित होगी—ब्रिटिश पार्लमेंट में या भारतीय जनता में, यह महत्वपूर्ण कानूनी प्रश्न है। सुधारों, अधिकारों, हस्तान्तरित और रक्षित विषयों, साम्प्रदायिक बटवारों के सब प्रश्न गौण हैं—पहला मुख्य प्रश्न यह है। जब तक इस प्रश्न का निर्णय न हो जाय इंगलैंड और भारत का झगड़ा तय नहीं हो सकता।

कांग्रेस ने अपने नये प्रस्ताव द्वारा इस मर्म को स्पर्श किया है। भारतीय जनता के स्वभावसिद्ध अधिकार की (Constitutional Law) परिभाषा (Terms) में उसने घोषणा की है। इसलिए यह घोषणा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस घोषणा से संसार पर यह बात भी रोशन हो गई है कि भारतीय किसी भी शासन-विधान को स्वीकृत न करेंगे जब तक भारतीय जनता द्वारा उसे स्वीकृत न कराया जाय या कानून की परिभाषा में जब तक शासन-सत्ता की स्वामिनी जनता को तसलीम न किया जाय। और बातों में लेन्-देन कर समझौता हो सकता है परन्तु शासन-सत्ता (Sovereignty) का बटवारा नहीं हो सकता। भावी शासन-विधान की धारायें कुछ भी हों उस में चाहे सम्पूर्ण विषय रक्षित रखे जायं परन्तु उस की प्रस्तावना में यह घोषणा स्पष्ट शब्दों में होनी चाहिये कि भारत की शासन-सत्ता ([illegible]) भारतीय जनता में निहित है।

—:०:—

हम अपने देश की समस्याएं विदेशियों से अधिक अच्छी तरह सुलझा सकते हैं

—जवाहरलाल नेहरू

स्वप्न में पुण्य-प्रभात

कब होगा वह पुण्य-प्रभात ?
जब कि एक दिन दिनकर की उन नव किरणों के साथ
फैल जायगी सकल विश्व मे बिजली मी यह बात—
'आज से भारत है स्वाधीन, आज से भारत है स्वाधीन।'

× × × ×

कब होगा वह पुण्य-प्रभात ?
जब विकसित कुसुमों के अधरों पर होगी मुसकान,
मुग्ध उषा के बन्दी गायेंगे यह मंगल-गान—
'आज से भारत है स्वाधीन, आज से भारत है स्वाधीन।'

× × × ×

कब होगा वह पुण्य-प्रभात ?
जब नाचेंगे हर्ष-विकल हो सप्त-सिन्धु सुमहान्,
टकरा कर हिमगिरि-शिखरों से गूंजेगी यह तान—
'आज से भारत है स्वाधीन, आज से भारत है स्वाधीन।'

× × × ×

कब होगा वह पुण्य-प्रभात ?
पैतिम कोटि कण्ठ-ध्वनि से मिल वाद्य-घोष जिम काल,
स्पष्ट सूचना देगा सब को यह निर्भय उत्ताल—
'आज से भारत है स्वाधीन, आज से भारत है स्वाधीन।'

× × × ×

कब होगा वह पुण्य-प्रभात ?
जब करुणानिधि! कभी स्वप्न मे ही हे नाथ प्रवीण!
देख सकूंगा दृश्य — देश है मेरा बन्धन-हीन,
'आज से भारत है स्वाधीन, आज से भारत है स्वाधीन।'

× × × ×

कब होगा वह पुण्य-प्रभात ?
सत्य नहीं तो, होली मे ही दे कर यह संवाद
छाप भर जब अखबार चखा देंगे स्वतन्त्रता-स्वाद,
'आज से भारत है स्वाधीन, आज से भारत है स्वाधीन।'

× × × ×

कब होगा वह पुण्य-प्रभात ?
उस कल्पित स्वाधीन वायु में दम लेकर इक-आध
रह न जायगी मन मे मेरे फिर कम कोई साध।
'आज से भारत है स्वाधीन, आज से भारत है स्वाधीन।'

—वागीश्वर विद्यालंकार।

खद्दर व साम्यवाद

(लेखक—आचार्य कृपलानी)



आचार्य कृपलानी देश के उन कार्यकर्ताओं में हैं जो न केवल त्याग, तपस्या सेवा और अद्भुत कार्य-कुशलता के कारण ही प्रसिद्ध हैं परन्तु आपकी योग्यता व विचार-शक्ति भी अपूर्व है।

इस लेख में उन्होंने यह बताने का सरल प्रयत्न किया है कि खद्दर का आन्दोलन साम्यवाद के मुख्य सिद्धान्त – उत्पत्ति-साधनों के राष्ट्रीयकरण व सम्पत्ति के समानवितरण – से अन्य सब आन्दोलनों की अपेक्षा अधिक मेल खाता है। इसलिये साम्यवाद का तत्त्व समझने वाले किसी साम्यवादी को इस आन्दोलन से कोई मतभेद नहीं हो सकता।

आज कल सब तरफ साम्यवाद की चर्चा है। सभी स्थानों पर साम्यवादियों की सभा-समितियां बड़े वेग से खुल रही हैं। यह हवा केवल भारत में ही नहीं परन्तु सम्पूर्ण संसार में बह रही है। साम्यवाद आज के समय की लहर दीखती है। संसार के बहुत से प्रतिभाशाली विद्वानों को इसने अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है। साम्यवाद के विरोधी फासिज्म और नाजिज्म भी आज साम्यवाद का बाना पहन कर और उसी की भाषा में हमारे सामने उपस्थित हो रहे हैं। हमें यह देखना चाहिये कि क्या खादी को भी साम्यवाद की भाषा में उचित और न्याय्य ठहराया जा सकता है। जिन आन्दोलनों का एक ही उद्देश्य—मानव जाति की उन्नति हो उन में परस्पर कोई संघर्ष नहीं रहना चाहिये यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

साम्यवाद का तत्त्व

समस्या के दार्शनिक और वैज्ञानिक अध्ययन के लिये हमें यह बहुत अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये कि साम्यवाद का मुख्य उद्देश्य और तत्त्व क्या है? यदि हम अपने हृदय में बिना कोई पूर्व-धारणा किये निष्पक्ष दृष्टि से विचार करें तो हम यह निस्सन्देह स्वीकार करेंगे कि धर्म ब्रह्मचर्य पारिवारिक जीवन राष्ट्र व्यवसायवाद तथा अन्य ऐसे अनेक प्रश्न जिन्हें इस समय अर्ध-शिक्षित और साधारण मस्तिष्क साम्यवाद से सम्बद्ध मानता है वस्तुतः इसके मूलभूत प्रश्न नहीं हैं।

साम्यवाद का तत्त्व वस्तुतः इसके अतिरिक्त मूल्य (Surplus value) के सिद्धान्त में (ठीक हो या गलत) विद्यमान है। इसी अतिरिक्त मूल्य के द्वारा ही जनता को (पूंजीपति) लूटते हैं। यही अतिरिक्त कीमत लाभ लगान और ब्याज का रूप धारण करती है। ऐसे व्यवसाय को जिसमें अतिरिक्त मूल्य अर्थात् लाभ लगान या ब्याज की गुंजाइश नहीं है साम्यवाद के सिद्धान्तों के अनुकूल ही मानना चाहिये। कोई व्यवसाय साम्यवाद के सिद्धान्तों के अनुकूल है या नहीं इसकी परीक्षा के लिये यह जानना आवश्यक नहीं है कि उस व्यवसाय का संचालक या प्रबन्ध-कर्त्ता परमात्मा में विश्वास करने वाला है या प्रकृतिवादी स्त्री पुरुष सम्बन्धी दृष्टि से एक विचार को मानता है या दूसरे विचार को, अथवा व्यवसायवाद (Industrialization) में विश्वास करता है या नहीं। आवश्यकता तो इस बात की है कि वह साम्यवाद के तत्त्व को स्वीकार करता हो।

खादी में साम्यवाद

खादी-व्यवसाय में न अतिरिक्त कीमत की गुंजायश है न लगान ब्याज और लाभ की। सब आय काम करने वालों की ही जेब में जाती है। किसी दूसरे दल को चाहे वह वास्तविक या काल्पनिक कार्य भी करता हो कुछ नहीं दिया जाता। काम करने वालों के वेतनों में भी बहुत अन्तर नहीं होता। कुछ अंक इसे और भी स्पष्ट कर देंगे। एक बुनकर की मासिक आय औसतन १३) रु० से १५) रु० तक है। धोबी १२) से १५) रु० तक रंगसाज २५) से ३०) रु० तक और रुई २५) से ३०) रु० तक महीने में कमा लेते हैं। कतैये की आय जरूर कम है परन्तु कातना सारे दिन का पेशा नहीं है यह तो केवल खाली समय का उपयोग है। दूसरी ओर खादी के संगठनकर्ताओं का भी पारिश्रमिक २५) रु० है यद्यपि उन में से अनेक उच्च शिक्षित भी होते हैं।

राष्ट्र की सम्पत्ति

'अतिरिक्त कीमत' के सिद्धान्त के परिणामस्वरूप ही साम्यवादियों ने सम्पूर्ण उत्पत्ति-साधनों के राष्ट्रीयकरण (राष्ट्र की सम्पत्ति बनाने) का सिद्धान्त स्थिर किया है। जहां तक खादी का सम्बन्ध है चरखा और खड्डी ही उत्पत्ति के साधन हैं। इन के राष्ट्रीयकरण की आवश्यकता नहीं क्योंकि इन का व्यय इतना कम होता है कि प्रत्येक ग्राम-निवासी इन का खर्च बरदाश्त कर सकता है। जहां कोई ग्राम निवासी काम करना चाहता है परन्तु चरखा और खड्डी नहीं ले सकता वहां चरखा-संघ — जो सार्वजनिक संस्था है — उस की सहायता करता है। उत्पत्ति के ये सीधे-सादे साधन वस्तुतः राष्ट्रीय साधनों से किसी तरह कम नहीं हैं।

पूंजी भी

उत्पत्ति का दूसरा प्रधान साधन पूंजी है। यह भी चरखा-संघ के हाथ में होने के कारण राष्ट्र की ही सम्पत्ति है। यह ऐसी सार्वजनिक सम्पत्ति है जिस पर न लगान मिलता है न ब्याज या लाभ। खद्दर पैदा करने वाले जो थोड़े बहुत निजी कारोबार हैं उन्हें भी चरखा-संघ द्वारा स्थापित आदर्शों का अनुकरण करना पड़ता है। उनके हिसाब-किताब व मूल्य-निर्धारण पर चरखा-संघ का निरीक्षण और नियन्त्रण रहता है। उन्हें चरखा-संघ की प्रतिस्पर्धा का मुकाबला करना पड़ता है इसलिये उन्हें केवल उतने ही लाभ से सन्तोष करना पड़ता है जिस से वे अपने मामूली वेतन निकाल सकें। वस्तुतः खादी का सारा व्यवसाय ही साम्यवाद का एक परीक्षण और साम्यवाद की दिशा में ही एक साहस है। मुझे इस में कोई सन्देह नहीं है कि यदि आज की विदेशी सरकार के स्थान पर देशी सरकार कायम हो जाय तो किसानों के लाभ के लिए राष्ट्रीय-सरकार ही खादी के राष्ट्रीय-व्यवसाय का संगठन करेगी।

खादी आन्दोलन का आधार

साम्यवाद के तर्क का आधार प्रत्यक्ष घटनाओं का अध्ययन ही है। आज चाहे भारतीय साम्यवादी पश्चिम से बड़ी भारी मात्रा में आये हुए साम्यवाद सम्बन्धी या बोलशविक साहित्य को कितनी ही लालचभरी निगाहों से क्यों न देखें यह किसी तरह नहीं कहा जा सकता कि साम्यवाद के सभी सिद्धान्तों का आधार वस्तुतः प्रत्यक्ष व ठोस घटनाओं का अध्ययन ही है। वे यथार्थवादी हैं। सम्पूर्ण साम्यवादी दार्शनिकों का यह दावा है। परन्तु किसी प्रकार के पूर्व-निर्धारित विचारों प्राचीन अर्वाचीन ऐतिहासिक धार्मिक या वैज्ञानिक धारणाओं पर खादी के आन्दोलन का आधार नहीं है। इस का तो मुख्य आधार सात लाख गांवों में होने वाली रोजमर्रा की प्रत्यक्ष और ठोस घटनाओं पर—दरिद्र किसानों व परिश्रमियों के दुःख व दारिद्र्यमय जीवन पर है।

चरखा और क्रान्ति

साम्यवाद अन्य बातों के साथ क्रान्ति में भी विश्वास करता है। चरखा भी न केवल स्वयं घूमता रहता है परन्तु अन्य अनेक दार्शनिक क्रान्तियों का भी प्रेरक कारण है। अशिक्षित जनता हिंसात्मक उथल पुथल को ही क्रान्ति समझती है। परन्तु वास्तविक क्रान्ति विचारों के संशोधन, परिमार्जन और पुनर्गठन में—विचार-धारा या दृष्टिकोण के परिवर्तन में है। इस दृष्टि से खादी आन्दोलन ने जितनी सर्वाङ्गीण क्रान्ति की है उतनी किसी अन्य आन्दोलन ने नहीं। किसी एक क्षेत्र में ही नहीं, प्रायः सभी क्षेत्रों में इस ने क्रान्ति की है। जिसमें हम सम्मान समझते थे अब उसमें अपमान समझने लगे हैं, जिसमें पहले अपमान था, अब उसमें सम्मान दीखने लगा है। पहले का सुन्दर अब बुरा दीखने लगा है और पहले की कुरूप वस्तु में हम सौन्दर्य ढूंढने लगे हैं।

कांग्रेस का क्रमिक विकास

—:—

(लेखक— श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार)

एक रिटायर्ड सरकारी अफ़सर ने जिस कांग्रेस की स्थापना सरकार की अनुमति लेकर की थी वही कांग्रेस अब पूर्णस्वराज्य की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील है, इस आश्चर्यजनक पहेली का ही इस लेख में उत्तर दिया गया है। कांग्रेस ने सरकार की कृपा कैसे खोई, असन्तोष किस तरह उग्ररूप धारण करता गया, नरमदल का स्थान गरमदल ने कैसे लिया, जनता के साथ कांग्रेस का सम्बन्ध कैसे बढ़ता गया, और अन्त में केवल प्रस्ताव पास करने वाली कांग्रेस राष्ट्र की सबसे बड़ी क्रियाशील राजनीतिक प्रतिनिधिसभा कैसे बन गई इत्यादि का संक्षिप्त विवेचन इस लेख में किया गया है।

क्रान्तिकारी परिवर्तन

ब्रिटिश साम्राज्य से सम्बन्ध-विच्छेद कर पूर्ण स्वतन्त्रता के लिये सरकार से संग्राम करने वाली अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा (आल इण्डिया नेशनल कांग्रेस) के पिता मि० ह्यूम नामक एक अंग्रेज़ सज्जन थे, जो सिविल सरविस से रिटायर हो चुके थे। उन्होंने केवल भारतीयों की इच्छा से प्रेरित होकर ही कांग्रेस की स्थापना नहीं की थी, परन्तु तत्कालीन वायसराय लार्ड डफ़रिन से पूर्ण परामर्श करने व अनुमति लेने और इङ्गलैंड में पैंशनयाफ्ता एंग्लो-इण्डियनों से भी आशीर्वाद लेने के बाद इस कार्य का सूत्रपात किया था। लार्ड डफरिन केवल अनुमति देकर ही इस से उदासीन नहीं हो गये थे, परन्तु दूसरे अधिवेशन में एकत्रित प्रतिनिधियों को उन्होंने दावत भी दी थी। पहले अधिवेशन के सभापति-पद के लिए भी बम्बई-गवर्नर का नाम पेश किया गया था। (वायसराय के इन्कार करने पर ही श्री उमेशचन्द्र बनर्जी सभापति हुए थे)। वस्तुतः कांग्रेस की वर्तमान नीति व ध्येय को देखते हुए आश्चर्य होना स्वाभाविक है कि सरकार से पालित-पोषित संस्था में इतना क्रांतिकारी परिवर्तन कैसे? कांग्रेस में जो क्रमिक विकास हुआ है, उस का अध्ययन न केवल उपयोगी है, परन्तु मनोरंजक भी है। हम इस लेख में इसी विषय पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे।

कांग्रेस का जन्म

कांग्रेस की स्थापना से कई वर्ष पूर्व ही भारत के शिक्षित समुदाय में सरकारी नीति से कुछ असन्तोष उत्पन्न होने लग गया था। परन्तु वह केवल शासन-प्रबन्ध की कुछ त्रुटियों तक सीमित था। अंग्रेजी सरकार से स्वतन्त्र होने की इच्छा इस समय तक भारतीय नेताओं में प्रकट नहीं हुई थी। वे अंग्रेजी शासन को शायद ईश्वर की कृपा और भारत का सौभाग्य समझते थे। लेकिन फिर भी शासन में भारतीयों का पद-पद पर अपमान, शिक्षित भारतीयों को नौकर न रखने तथा प्रेस-सम्बन्धी कठोर नियमों से उच्च शिक्षितों में असन्तोष बढ़ रहा था। जनता में भी असन्तोष शनैः शनैः बढ़ रहा था। दादाभाई नौरोजी, काशीनाथ त्र्यम्बक तैलंग, सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, सर फीरोज़शाह मेहता, आनन्दमोहन बोस प्रभृति नेताओं के प्रयत्नों से जागृति उत्पन्न होने लगी थी। मि० ह्यूम को, जो सिपाही-विद्रोह का ज़माना देख चुके थे यह भय हुआ कि कहीं यह असन्तोष सिपाही-विद्रोह की पुनरावृत्ति के रूप में परिणत न हो जाय। इस बार यह भी डर था कि अंग्रेजी शिक्षित समुदाय भी कहीं उन का साथ न दे। इसीलिए उन्होंने ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता समझी, जिस से सरकार को जनता के आन्तरिक भावों का ज्ञान होता रहे और असन्तोष विद्रोह का रूप धारण न कर वैध-आन्दोलन में ही परिणत हो जाय। लार्ड डफरिन तथा अन्य अंग्रेज अधिकारियों ने भी इस विचार में बहुत रुचि दिखाई। तत्कालीन राजनैतिक नेताओं--श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, आनन्दमोहन बोस, दादाभाई नौरोजी तथा अन्य ६६ प्रतिनिधियों--को निमन्त्रण देकर १८८५ ई० में अखिल भारतीय कांग्रेस को जन्म दिया गया।

बाधक नीति का प्रारम्भ

पहले दो तीन अधिवेशनों में सरकार ने उस के साथ पूर्ण सहयोग किया, परन्तु शीघ्र ही उसे मालूम हो गया कि उच्च-शिक्षित भारतीयों को, जिन की महत्वाकांक्षा व अभिलाषा उससे बहुत अधिक मांगने की है जो सरकार उन्हें देना चाहती है और जो जनता में सरकार के प्रति उत्पन्न असन्तोष को दबाने के बजाय उस की ही नीति की निन्दा कर उसे और भी उभारते हैं एकत्र होने दे कर एक शक्ति बनाने देना सरकार के लिए किसी भी प्रकार लाभप्रद नहीं है। तत्कालीन यू० पी० गवर्नर आकलैंड ने तो कांग्रेस से सहयोग को 'आग से खेलने' की उपमा दी। इसलिए कांग्रेस के चौथे अधिवेशन में ही सरकार की नीति बदली। इलाहाबाद में सरकारी अधिकारियों ने केवल स्थान-सम्बन्धी असुविधा ही उत्पन्न नहीं की, किन्तु यह भी कोशिश की कि मुसलमान कांग्रेस में सम्मिलित न हों। सर सय्यद अहमदखां ने जो सिविल-सरविस आंदोलन में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का साथ दे चुके थे, कांग्रेस से मुसलमानों को अलग करने का प्रयत्न किया। तब से आज तक मुसलमानों को कांग्रेस के साथ मिलाने के कितने ही प्रयत्न किये गये, अनेक बार थोड़ी बहुत सफलता भी हुई लेकिन अब तक भी अधिकांश मुसलमान सरकार व साम्प्रदायिक नेताओं के चंगुल से नहीं निकल सके।

असन्तोष का बीज

कांग्रेसी-नेताओं ने भी पहले सरकारी सहायता पाकर समझा कि वह उनकी महत्वाकांक्षाओं का साथ देगी, परन्तु तीन-चार अधिवेशनों में उन्होंने जो जो मांगें पेश कीं उन में से किसी को भी स्वीकृत न होता देख कर उनके विश्वास को ठेस पहुंची। सेना-व्यय कम करने, नमक-कर घटाने, भारत में भी सिविल-सरविस की परीक्षा प्रारम्भ करने, जनता के प्रतिनिधियों को शासन में अधिकाधिक स्थान देने, आर्थिक स्थिति की जांच करने और इण्डिया कौंसिल तोड़ने आदि के प्रस्ताव ही प्रायः प्रत्येक अधिवेशन में पास किये जाते थे। लेकिन सुनवाई एक की भी न होती थी। अब सरकार कांग्रेस के अधिवेशनों में भी बाधा डालने लगी थी। कांग्रेसी-क्षेत्रों में धीरे-धीरे सरकार से असन्तोष बढ़ने

कांग्रेस के दो सभापति



दादाभाई नौरोजी



सर फीरोजशाह मेहता

सुन्दरता, कला, आवश्यकता और स्वास्थ्य सभी खादी के कारण बदल गई है। चरखे ने केवल साधारण जनता के ही नहीं, परन्तु श्रेणियों के भी अर्थशास्त्र-सम्बन्धी विचारों में परिवर्तन कर दिया है। खद्दर एक विशेष प्रकार की मनोवृत्ति और एक विशेष प्रकार की विचारधारा का प्रतिनिधि है। चाहे हम उस विचारधारा से सहमत हों या न हों, परन्तु खद्दर या चरखे ने एक भीषण और व्यापक क्रान्ति अवश्य कर दी है, जिस की कोई निष्पक्ष व्यक्ति उपेक्षा नहीं कर सकता। जो व्यक्ति साम्यवादी, वैज्ञानिक और यथार्थवाद की मनोवृत्ति का है, वह कभी खद्दर की उपेक्षा कर ही नहीं सकता, उस के महत्व को कम कर ही नहीं सकता। ये दोनों बातें एक साथ रह ही नहीं सकतीं।

—:—

लगा और नताओं को सरकार की नीति व उद्देश्य में भी सन्देह होने लगा।

भारत-सरकार म निराश हो कर कांग्रेस न ब्रिटेन मे प्रचार करन का निश्चय किया। लएडन मे काग्रेस की शाखा खोली गई। दादाभाई नोरोजो पार्लमेंट के सदस्य बन और 'इण्डिया' नाम का पत्र भी निकाला गया।

कुछ सालों तक काग्रेस के इतिहास मे कोई विशेष घटना नहीं हुई। प्रति वर्ष अधिवेशन होता और कुछ प्रस्ताव पास हो जाते। काग्रेस न सर्व साधारण जनता के साथ कोई सम्बन्ध स्थापित करन का प्रयत्न नहीं किया।

परन्तु जनता में असतोष बढ़ रहा था। उधर सुरन्द्रनाथ, वाचा और गोखले लएडन मे वैल्बी कमीशन के सामन गवाही दे रहे थे, इधर पूना मे फैली हुई प्लेग को रोकन के लिय सरकार न जो कठोरता धारण की, उसमें तीव्र असंतोष उत्पन्न हो गया। दो अंग्रेज अफसर मार गय। बम्बई में विक्टोरिया की मूर्ति तोड़ दी गई। सरकार न दमन शुरु कर दिया। जनता के हृदय-सम्राट् लोकमान्य तिलक को कैद कर लिया। दो सम्पादकों को देश-निर्वासन की सजा दी गई। इस समय युवक भारत मे एक अपूर्व उत्साह फैल रहा था। जो नता तीखे और स्पष्ट शब्दों में सरकार की आलोचना करता, युवक-दल उसकी खूब प्रशंसा करता। इन्हीं दिनों दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की समस्या भी काग्रेस में उपस्थित हुई और गांधी जी न हां आन्दोलन शुरू किया।

असन्तोष का जन्म

ऐसी अवस्था थी, जब लार्ड कर्जन भारत मे वायसराय बन कर आय। काग्रेस न १८६८ के अधिवेशन मे उन का स्वागत करके उन म बड़ी बड़ी आशायें प्रकट कीं, किन्तु कुछ ही समय बाद उमे मालूम हो गया कि लार्ड कर्जन दमन-नीति का हथियार लेकर भारत की राजनैतिक जागृति को कुचलन के लिय ही शायद कटिबद्ध हो कर आये है। लार्ड कर्जन न एक भाषण मे कांग्रेस के प्रस्तावों को 'सोडावाटर के उबाल' कह कर उन की हंसी उड़ाई। पर फिर भी इन दिनों काग्रेस की नीति में कठोरता व दृढ़ता नहीं आई थी। प्रायः प्रत्येक प्रस्ताव में ब्रिटिश सरकार की न्याय-प्रियता में विश्वास प्रकट करते हुये उसकी न्याय-बुद्धि को जागृत किया जाता था। प्रायः प्रत्येक अधिवेशन मे एक प्रकार के प्रस्ताव पास किये जात थे। बहुत मे प्रस्ताव हर साल दुहराये जात थे। पाठकों की जानकारी के लिये १८६६ के प्रस्तावों के विषय नीचे दिये जात हैं:—

१—शासन और न्याय-विभाग का पृथक्करण, २—पंजाब के लगान का कानून, ३—ब्रिटिश सिपाहियों का खर्च, ४—विनिमय और मुद्रा, ५—सिविल मेडिकल सर्विस, ६—समाचार सम्बन्धी कानून ७—स्थानीय स्वराज्य-सम्बन्धी सरकारी नीति, ८—शिक्षकों को राजनैतिक आन्दोलन मे भाग न लेन की आज्ञा, ६—आबकारी, १०—कांग्रेस का संगठन, ११—ब्रिटिश कांग्रेस कमेटी, १२—मद्रास और बम्बई का शासन १३—अकाल, १४—शस्त्र कानून १५—सैनिक कालेज, १६—यूरोपियन नोकरों के भत्ते की पाबन्दी, १७—शिक्षा विभाग का पुनः सगठन १८—नमक कर की वृद्धि, १६—आसाम के मजदूर, २०—जूरी सिस्टम (जूरी का भारतीयकरण), २१—आय कर, २२—सिविल सर्विस की भारत मे परीक्षा २३—देशी रियासतों के छापेखाने, २४—कला कोशल सम्बन्धी शिक्षा, २५—पंजाब कौंसिल, २६—प्लेग का व्यय, २७—दादाभाई नौरोजी पर विश्वास आदि। इसी प्रकार के प्रस्ताव प्रायः प्रति वर्ष पास होते थे। यद्यपि अब इन की भाषा में कठोरता आन लगी थी, तथापि जनता पर इसका प्रभाव कम पड़ता था। काग्रेस केवल अंग्रेजी शिक्षितों की ही सभा थी। दिसम्बर की छुट्टियों में वे अपने काम-धन्धों से छुट्टी पाकर आते थे, गरमागरम भाषण सुन कर और प्रस्ताव पास कर के चले जाते थे। कांग्रेस ने जनता के साथ सम्बन्ध जोड़ने का कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया। इसलिये कांग्रेस में बड़े बड़े प्रभावशाली व योग्य वक्ताओं के होते हुये भी वह सर्वसाधारण की चीज़ नहीं बन सकी थी।

असन्तोष की ज्वाला

लेकिन लार्ड कर्जन की दमन-नीति और विशेष कर बंग-भंग ने उस का भी अवसर शीघ्र उपस्थित कर दिया। सब के बहुत विरोध करन पर भी उसन कलकत्ता व बम्बई की म्यूनिसिपेलिटियों के अधिकार छीन लिये। अंग्रेजी शिक्षितों के बढ़ते हुये प्रभाव को देख कर यूनिवर्सिटियों पर भी कुठाराघात किया गया। 'यूनिवर्सिटीज़ एक्ट' से गरीबों के लिये उच्च शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया। यूनीवर्सिटियों पर सरकारी नियन्त्रण कर देन मे भारतीयों का प्रभाव बहुत कम हो गया। उस का बहुत विरोध हुआ। शिक्षित लोगों मे असन्तोष फैल गया। उन्होंन समझा कि सरकार शिक्षा का विस्तार भी नहीं चाहती। १६०३ की कांग्रेस के भाषणों में यह असन्तोष प्रकट हुआ। सभापति श्री लालमोहन घोष ने अपन ज़ोरदार भाषण में यूनिवर्सिटी बिल की निन्दा करत हुये दिल्ली दरबार को 'एक फ़जूल तमाशा' बताया। सुरन्द्रनाथ बनर्जी न यूनिवर्सिटी कमीशन के सम्बन्ध में कहा—"वे छिप कर बैठ, छिप कर ही फैसला किया, और मेरा खयाल है कि छिपे-छिपे ही अलग भी हो गये।" १६०४ के अधिवेशन में वक्ताओं के भाषणों में और भी तेजी आगई। लार्ड कर्जन न कई भारतीयों की आलोचना कर दी थी। श्री सुरन्द्रनाथ ने उसका बहुत कठोर शब्दों में जवाब दिया। "इससे पहले सम्राट क प्रतिनिधि ने भारतीय जनता की निन्दा कभी नहीं की; यह हमारा घोर अपमान है। क्या एशियावासी यूरोपियनों से छोटे हैं? जापान से इसका उत्तर पूछो। क्या भारतीय यूरोपियनों से गिरे हुए हैं? लार्ड जार्ज हैमिल्टन इसका उत्तर देंगे। सभ्यो, क्या हम, जिनके पूर्वज जब वर्तमान यूरोपियन जातियां अज्ञान और भ्रम में पड़ी थीं सभ्यता के शिखर पर पहुंचे थे, नीच जातियों के हैं? क्या हम छोटी जाति के है, जिसके पुत्रों न संसार के एक सिर से दूसरे सिर तक घूम कर दो तिहाई विश्व को नैतिक पवित्रता का पाठ पढ़ाया था?" मि० वाडिया न वायसराय के मिशन को 'शरारत भरा' कहा।

अग्नि मे घृताहुति—बंगभंग

बंगभग ने असंतोष की इस अग्नि में घृताहुति का काम किया। लार्ड कर्जन न इसके द्वारा जनता को खुला चैलेंज दे दिया। बंगभग का उद्देश्य जहां सरकारी भाषणों में 'शासन की सुविधा' बताया जाता था, वहां वास्तविक कारण यह थी कि सरकार बंगाल मे बढ़ती हुई राजनीतिक जागृति को नष्ट करना चाहती थी। पूर्वीय बंगाल को, जिसमे मुसलमानों की आबादी अधिक है, अलग करके मुसलमानों को हिन्दुओं से पृथक करने का उद्देश्य स्पष्ट ही रहा था। लार्ड कर्जन ने पूर्वीय बंगाल में घूम कर मुसलमानों को यह बताने का प्रयत्न भी किया कि यह सब तुम्हारे हितों के लिये किया गया है। बहुत मे भोले मुसलमान इस बहकावे में आ भी गये। पीछे मे जब बंगाल को फिर एक कर भी दिया गया, तब भी इस समय पैदा किया हुआ साम्प्रदायिक विद्वेष नष्ट न हो सका।

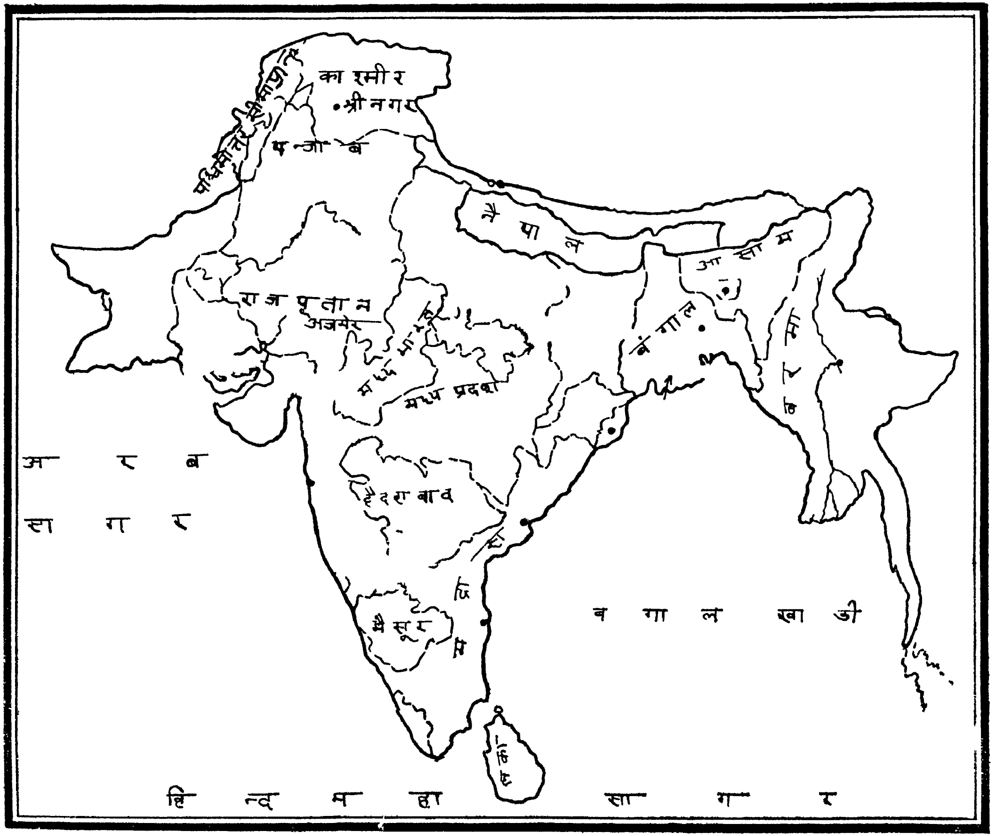
चैलेंज स्वीकार

बंगाल ने सरकार के इस चैलेंज को स्वीकार किया। सारे बंगाल में जागृति की एक लहर फैल गई। बच्चा-बच्चा सरकार की निन्दा करने लगा। दिसम्बर १६०३ मे अक्तूबर १६०५ तक हिन्दुओं और मुसलमानों की २००० सार्वजनिक सभाओं में बंगभंग का विरोध किया गया। पर सरकार के कानों पर जूं नहीं रेंगी। तब ७ अगस्त १६०५ को कलकत्ते की एक विराट सभा में बंगभंग के विरोध में ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी व्रत का प्रस्ताव पास कर देश ने न केवल अपने असंतोष का विराट प्रदर्शन किया, किन्तु राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास मे एक नये क्रांतिकारी अध्याय का श्रीगणेश भी किया। बंगभंग के दिन १६ अक्तूबर को सार बंगाल में हड़ताल की गई। जनता ने उस दिन व्रत रखा, स्वदेशी गीत गाये और एक दूसरे की कलाई में राखी बांधी। 'वन्देमातरम' गीत सब का मन्त्र हो गया। राष्ट्रीय शिक्षा का भी सूत्रपात किया गया। कई राष्ट्रीय शिक्षालय खोले गये।



लोकमान्य तिलक

बंगाल की यह लहर केवल उसी तक सीमित न रही। लोकमान्य तिलक और शेरे पंजाब ला० लाजपतराय के प्रयत्नों मे महाराष्ट्र और पंजाब में भी राष्ट्रीयता के एक नये युग का प्रादुर्भाव हो गया। स्वदेशी का व्रत लाखों लोगों ने



काश्मीर
श्रीनगर
पंजाब
राजपूताना
अजमेर
मध्य प्रदेश
नैपाल
आसाम
बंगाल
बरमा
हैदराबाद
मैसूर
लंका
अरब सागर
बंगाल खाड़ी
हिन्द महासागर

ग्रहण कर बगाल के साथ सहानुभूति प्रकट की। जापान की रूस-विजय युवक तुर्कों के आन्दोलन चीनियों के विद्रोह आदि अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलनों न भी भारत की राष्ट्रीय जागृति पर पर्याप्त प्रभाव डाला। लो० तिलक न गणपति-उत्सव का संगठन कर उसे राष्ट्रीय पर्व का रूप दे दिया। बगाल में जो जागृति फैल रही थी उसे कवीन्द्र रवीन्द्र और विवेकानन्द के लेखों व भाषणों ने बहुत उत्साहित किया। विदेशी सभ्यता और शासन की पोल खोल कर जहा रवीन्द्र ने स्वदेशी समाज और संस्कृति को अपनाने पर जोर दिया वहा स्वा० विवेकानन्द न नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः' का दिव्य सदेश देकर नवीन शक्ति प्राप्त करने का उपदेश दिया। यह समय था, जब भारत के राजनैतिक गगन में बाल पाल और लाल (बालगगाधर तिलक विपिनचन्द्र पाल और लाला लाजपतराय) की नक्षत्रत्रयी जाज्वल्यमान हो कर चमक रही थी। इन तीनों के ओजस्वी भाषणों न सारे भारत में धूम मचा दी थी। अरविन्द घोष न भी राजनैतिक क्षेत्र मे जोरो के साथ इन दिनों प्रवेश किया।

इसी समय काग्रेस क नताओं में दो दलों की सृष्टि हुई। जो नता इतनी उग्रता नहीं चाहत थे वे नमदली क नाम से प्रसिद्ध हुए और दूसरे गर्मदली। इन दोनों का विरोध शुरू हो गया। लो० तिलक के नतृत्व मे गर्मदल न स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' की घोषणा की। १९०६ म दादाभाई नोरोजी क सभापतित्व मे कांग्रेस का ध्येय स्वराज्य-प्राप्ति मान लिया गया। यह गर्म दल की विजय थी। इस नर्मदल सहन न कर सका। इस क परिणामस्वरूप

सूरत काग्रेस म

दोनो दलों म झगडा हो गया। गरम दल और नरम दल मे खूब धुक्कमफजीता हुआ। गरम दल काग्रेस मे न रह सका। नरम दल ने काग्रेस पर कब्जा कर लिया।

दमन और सुधार

इस समय यद्यपि लार्ड कर्जन जा चुक थे तथापि सरकारी नीति में परिवर्तन नहीं हुआ था। दमनचक्र जोरों से चल पड़ा था। गर्मदल पर सरकार की कोपदृष्टि थी। लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह को देश-निर्वासन की सजा मिल गई थी। लो०तिलक को छः साल के कारावास का दण्ड दे दिया गया। बगाल के नौ प्रसिद्ध नता भी निर्वासित कर दिय गये। १९१० में प्रेस एक्ट' पास कर दिया गया। दमन के लिए अन्य कानून भी बनाय गये। इस का कारण था बहिष्कार और स्वराज्य का आन्दोलन। श्री विपिनचन्द्र पाल न बहिष्कार की व्याख्या करत हुए स्पष्ट कहा था कि हम इस बात का प्रयत्न करगे कि लोग धीर-धीरे सरकार से सहयोग करना छोड दें।

यद्यपि सरकार दमन पर तुली हुई थी तथापि लाड मिण्टो यह समझ चुक थ कि शासन-सुधार आवश्यक हैं। मिण्टो-मार्ले योजना क अनुसार कुछ नये सुधार दिय गय। इस योजना मे पहले-पहल सरकार न पृथक और साम्प्रदायिक चुनाव की पेशबन्दी की जो आज भी राष्ट्रीय प्रगति मे सब से बडी बाधा हो रही है। काग्रेस मे नरम



मि० गोखले

दल ने इन सुधारो का स्वागत करते हुए बहुत हर्ष प्रकट किया। अब काग्रेस क अधिवेशनो मे न उत्साह रहा था न कोई प्रगति। बहुत से प्रस्ताव दुहराय जाते थे। म० गाधी क सत्याग्रह-आन्दोलन और गोखले की चर्चा स दक्षिण अफ्रीका का प्रश्न लोगो का ध्यान जरूर खीच रहा था। काग्रेस क २६ व अधिवेशन स पूर्व जार्ज पञ्चम न दिल्ली दरबार मे स्वय बगभग को रद्द कर बगाल के सग्राम की विजय को स्वीकार किया। उधर दक्षिणी अफ्रीका मे म० गाधी का निष्क्रिय प्रतिरोध फल ला रहा था। काग्रेस की लोक-प्रियता अब भी घटती जा रही थी। उपस्थिति भी प्रति वर्ष कम हो रही थी। लाहौर म यदि २४३ प्रतिनिधि थ तो बाकीपुर मे सिर्फ २०० रह गय थ।

१९१४ मे यूरोप मे महासमर छिड गया। काग्रेस न सरकार के आश्वासनों पर विश्वास कर ब्रिटेन को सहायता दी। काग्रेस न लोगों से भी प्रार्थना की कि ऐसे आडे समय ब्रिटेन को खूब सहायता दो। इसी समय श्रीमती बीसेन्ट न राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश किया। १९१५ में सर सत्येन्द्रप्रसन्न सिंहा न स्वराज्य की व्याख्या करते हुए जनता क लिये जनता द्वारा जनता पर शासन' मागा। इस के अतिरिक्त और कोई विशेष घटना नहीं हुई।

फिर उत्साह और एकता

१९१६ म काग्रेस मे फिर नया युग प्रारम्भ होता है। श्रीमती एनी बीसेण्ट क प्रयत्न मे नरम और गरम दल मिल गये थे। लोकमान्य तिलक और गोखले एक मञ्च पर साथ-साथ खडे हुए। काग्रेस मे उत्साह था, स्फूर्ति थी और दीखता था नवीन जीवन। म० गाधी 'दक्षिण अफ्रीका क सफल-विजेता क



मिसेज बीसेण्ट

रूप में विद्यमान थे। इस काग्रेस न पहली बार हिन्दू-मुस्लिम एकता क लिये रचनात्मक कार्य किया जो लखनऊ-समझौता क नाम स प्रसिद्ध है। मिण्टो-मार्ले सुधारों से असन्तोष बहुत था इसलिये नये सुधारो की माग की गई।

सरकार न १९१७ मे शीघ्र ही नये सुधार जारी करने की घोषणा की। इसी वर्ष मिसेज बीसेण्ट न होमरूल-आन्दोलन चलाया जिसक परिणामस्वरूप सरकार न उन्हें कैद कर लिया। देश ने इसका जवाब देन के लिये उन्हीं को काग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया। सरकार न अधिवेशन स कुछ दिन पूर्व उन्हे छोडने में ही बुद्धिमत्ता समझी। १९१८ में होमरूल-आन्दोलन खूब चला। राजनैतिक विषयो पर खूब साहित्य भी पैदा हुआ। इसी अवसर पर देशबन्धु चित्तरञ्जन-दास न क्रियात्मक रूप म राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश किया। होमरूल लीग क ३ ४०,००० सदस्य हो गये। लो० तिलक केलकर श्री दास आदि प्राय: सभी प्रधान नेता इसके साथ थे।

दो रिपोर्टें

८ जुलाई १९१८ को माण्टगू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट प्रकाशित हुई। भारत को ब्रिटिश साम्राज्य क अन्तर्गत क्रमश दायित्वपूर्ण



स्वामी श्रद्धानन्द

शासन देन की घोषणा क अनुसार एक विधान बनाया गया जो आज-कल भी प्रचलित है। माण्टगू रिपोर्ट क बाद १९ जुलाई को रौलट कमिटी की रिपोर्ट प्रकाशित हुई।

नरम दल अलग

कांग्रेस मे इस समय फिर दो दल हो गये। नरम दल न सुधारो को स्वीकार करन पर जोर दिया और गरम दल न काग्रस मे अपने प्रभाव म सुधारो को असन्तोषजनक और निराशाजनक कहा।



प्रिन्स ऑफ वेल्स

बम्बई क विशेषाधिवेशन म इन्हें बिलकुल रद्द करने योग्य करार

[illegible]

साइमन-कमीशन की बलि



पंजाब केसरी पर लाठी-प्रहार के चिन्ह

दिया गया। इससे नरम दल कांग्रेस से अलग हो गया और आज तक नहीं मिला।

महात्मा गांधी का नेतृत्व

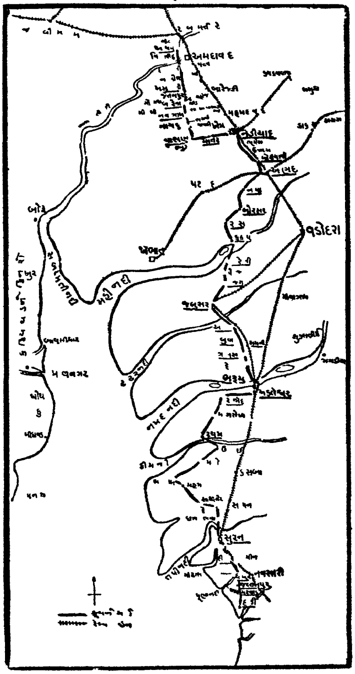
यद्यपि म० गांधी इस समय तक चम्पारन व खेड़ा में अपने अहिंसात्मक सत्याग्रह द्वारा दो विजय प्राप्त कर चुके थे और प्रति वर्ष कांग्रेस के अधिवेशन में भी सम्मिलित होते थे परन्तु उन्होंने सम्पूर्ण देश का नेतृत्व १९१९ में ही अपने हाथों में लिया। सारे देश के विरोध करने पर भी सरकार ने १८ मार्च १९१९ को रौलेट बिल पास कर दिया था। म० गांधी ने इसके विरोध में सत्याग्रह की घोषणा की। सारे देश में अपूर्व उत्साह का संचार हो गया। १९०५ में केवल बंगाल में जो जागृति हुई थी वह अब सारे देश में दिखने लगी। सर्वसाधारण का नेताओं के साथ ऐसा सम्बन्ध था एक नेता के नेतृत्व में इतनी जागृति अभूतपूर्व थी। ६ अप्रैल को हड़ताल दिवस मनाने की घोषणा की गई। परन्तु दिल्ली में ३० मार्च को ही हड़ताल हो गई। उत्तेजित जनता पर पुलिस ने गोलियां चलाई। सम्भव था कि उपद्रव हो जाता, पर स्वामी श्रद्धानन्द की प्रत्युत्पन्नमतिता के कारण उपद्रव न हुआ। उस समय दिल्ली में जो विराट प्रदर्शन हुआ वह भारत के इतिहास में अपूर्व दृश्य था। हिन्दू और मुसलमानों की एकता का स्वर्णीय दृश्य भी दिल्ली ने देखा। पंजाब में भी यही हो रहा था। पंजाब-सरकार इस जागृति को सहन न कर सकी। पंजाब में मार्शल ला जारी कर दिया गया। इस प्रसंग में जलियावाला बाग की दर्दनाक घटना हुई जिसने सारे भारत के हृदय को दहला दिया। सम्पूर्ण भारत में असन्तोष की तीव्र अग्नि प्रज्वलित हो उठी। विश्व-कवि रवीन्द्र ने इसके विरोध-स्वरूप सर की पदवी लौटा दी।

पंजाब छिन्न-भिन्न हो चुका था। ऐसे समय स्वा० श्रद्धानन्द और प० मोतीलाल नेहरू ने जाकर पंजाबियों को सारे राष्ट्र की ओर से सान्त्वना दी। स्वा० श्रद्धानन्द के प्रयत्न से ही अमृतसर में कांग्रेस भी हो सकी। इसमें म० गांधी के प्रयत्न से माटेगू रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया गया। उससे चार-पांच दिन पूर्व ब्रिटिश-सरकार ने जलियावालाबाग-जांच कमेटी बिठाई थी और राजनैतिक कैदियों को छोड़ने का हुक्म दिया था। इसी कांग्रेस में म० गांधी ने खिलाफत के प्रश्न पर मुसलमानों का साथ दिया।

अमृतसर कांग्रेस की एक विशेषता और भी थी। स्वागताध्यक्ष स्वा० श्रद्धानन्द ने राष्ट्रभाषा हिन्दी में भाषण दिया और सामाजिक-सुधार व अस्पृश्यता-निवारण आदि पर कांग्रेस के प्लेटफार्म से जोर दिया। म० गांधी ने बाद में यही सामाजिक कार्यक्रम अपना लिया।

फिर आग — असहयोग

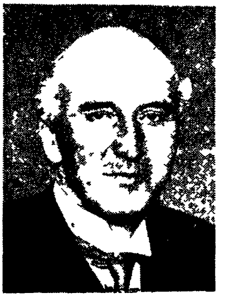
स्थिति शांत हो चली थी। सुधार स्वीकार कर लिए गए थे। केवल खिलाफत का प्रश्न जरूर जोरों पर था। परन्तु इसी समय हंटर कमिटी की रिपोर्ट प्रकाशित हुई। उसने डायर का समर्थन किया था। देश में फिर आग लग गई। अंग्रेजों की न्यायप्रियता में सदा से विश्वास रखने वाले महात्मा गांधी ने सरकार को 'शैतानी हकूमत' कहा। उनका सरकार पर से विश्वास उठ गया और वह अब तक नहीं बैठा। म० गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में असहयोग की घोषणा कर दी। लोग धड़ाधड़ सरकारी पदवियां छोड़ने लगे, स्कूल व कालेज विद्यार्थियों से खाली होने लगे, अदालतों में उल्लू बोलने लगे, कौंसिलों और विदेशी माल का भी बहिष्कार किया गया। कांग्रेस की शक्ति बढ़ती गई। सरकार व्याकुल और चिंतित हो उठी। 'प्रिंस आफ वेल्स' के भारत आने पर उनका जो सफल बॉयकाट हुआ उसे देख कर वह आपे से बाहर हो गई। कांग्रेस का स्वयं-सेवक दल गैरकानूनी करार दिया गया। कांग्रेस ने इसी प्रश्न पर सत्याग्रह शुरू कर दिया। अली-बन्धुओं के नेतृत्व में मुसलमान भी पूरे तौर से इस आन्दोलन के साथ थे। नागपुर की कांग्रेस ने सत्याग्रह का समर्थन किया और अहिंसात्मक उपायों से स्वराज्य-प्राप्ति को अपना ध्येय बना लिया।



डांडी यात्रा का मार्ग

इस समय सरकार के विरुद्ध इतना व्यापक असन्तोष था कि सम्भव था, जनता उत्तेजित हो जाती, परन्तु महात्मा गांधी के अहिंसा-प्रचार ने देश को रक्तपात से बचा लिया। देशबन्धु चितरंजनदास और त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल नेहरू अपनी लाखों की वकालत छोड़ कर इस संग्राम में आ कूदे। आन्दोलन बढ़ता गया।

सरकार ने दमन-चक्र उठाया। खिलाफत के नेता गिरफ्तार किये गये। २०,००० सत्याग्रही स्वयंसेवक भी जेल में भेज दिये गये। देशबन्धु-दास भी गिरफ्तार कर लिये गये।



सर जोन साइमन

साइमन कमीशन के अध्यक्ष



पं० मोतीलाल नेहरू

साइमन कमीशन को रिपोर्ट का जवाब देने वाले



देशबन्धु चित्तरञ्जन दास

स्वराज्य पार्टी के नायक

अहमदाबाद कांग्रेस ने और जोरों से आन्दोलन चलाने का निश्चय कर म० गांधी को डिक्टेटर बना दिया। कांग्रेस अब वाग्वीरों की सभा न रही थी, इसमें कर्मशूरों की प्रधानता थी। म० गांधी पहली बार देश के निरंकुश सम्राट् मान लिये गये। महात्मा जी ने बारदोली में लगानबन्दी के सार्वजनिक सत्याग्रह का निश्चय करके ४ फरवरी १९२२ को सरकार को भी सूचना दे दी। लेकिन इसी समय चौरी-चौरा का हत्याकाण्ड हो गया। म० गांधी ने देश को 'ठहरो' का हुक्म दे दिया। सेनापति ने कहा कि देश अभी अहिंसात्मक सत्याग्रह के लिये तैयार नहीं है। देश में कुछ निराशा फैल गई, पर क्या करता, सेनापति की आज्ञा थी।

स्वराज्य-पार्टी का जन्म

सरकार ने मौका पाकर गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया। उन के जेल जाते ही सत्याग्रह ढीला पड़ गया। लोगों में उत्साह शिथिल हो चुका था। महाराष्ट्रीय नेताओं ने कौंसिल-प्रवेश का कार्यक्रम अपनाने की सलाह दी। देशबन्धु-दास व मोतीलाल नेहरू ने स्वराज्य पार्टी कायम कर ली। इस के बाद का इतिहास बहुत ताजा है। अभी लोग उसे न भूले होंगे। किस तरह अपरिवर्तनवादियों और स्वराज्य पार्टी में झगड़ा हुआ, किस तरह महात्मा जी बीमार हो कर जेल से छूटे, किस तरह उन्होंने सारी बागडोर स्वराज्य-पार्टी के हाथ में सौंप दी, स्वराज्य पार्टी ने असेम्बली और कौंसिलों पर कैसे कब्ज़ा किया, यह आज भी सब को याद है। देश की राजनैतिक दशा खराब हो चली थी। हिन्दू मुसलिम विद्वेष चरम सीमा पर पहुँच गया था। एक मदान्ध मुसलमान ने स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर स्थिति को और भी विषम कर दिया। कांग्रेस ने हिन्दू-मुसलिम समस्या के हल के अनेक यत्न किये, किन्तु उसे सफलता न हुई। कांग्रेस का प्रभाव एक बार फिर देश पर न रहा।

साइमन-कमीशन

लेकिन इसी समय सरकार ने साइमन-कमीशन नियुक्त किया, जिसमें एक भी भारतीय नहीं रखा गया। सारे देश में इस के विरुद्ध तीव्र आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। गरम, नरम सभी दल मिल गये, हिन्दू मुसलमानों का विद्वेष भी बहुत कुछ कम होगया। साइमन-कमीशन का देशव्यापी बहिष्कार हुआ। इसी बहिष्कार के सिलसिले में एक जलूस का नेतृत्व करते हुए पंजाब-केसरी ला० लाजपतराय पर लाठी-प्रहार हुआ। जिसका धक्का डाक्टरों के कथनानुसार उन के देहान्त का प्रधान कारण हुआ। साइमन-कमीशन के मुकाबले में सब राजनैतिक दलों ने मिल कर पण्डित मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में शासन-विधान की एक योजना तैयार की, जो नेहरू-रिपोर्ट के नाम से प्रसिद्ध है। कलकत्ता-कांग्रेस ने सरकार को एक वर्ष की मोहलत दी कि वह औपनिवेशिक स्वराज्य दे दे, अन्यथा कांग्रेस पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग करेगी। इस समय तक पं० जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस में युवक-दल की प्रधानता हो चुकी थी। सरकार ने कांग्रेस की मांग पर ध्यान न दिया। इसका फल यह हुआ कि लाहोर में मि० ह्यूम द्वारा स्थापित और वायसराय द्वारा आशीर्वाद-प्राप्त कांग्रेस ने युवक-नेता जवा-



लार्ड अर्विन

हरलाल के सभापतित्व में ब्रिटिश साम्राज्य से सबंध-विच्छेद कर पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी।

सत्याग्रह

इस के बाद १९३०-३१ में डांडी-यात्रा से श्रीगणेश करके सत्याग्रह संग्राम हुआ। वह क्या था कैसे लड़ा गया, इस पर कुछ लिखना पाठकों की स्मृति-शक्ति का अपमान करना है। गांधी-अर्विन समझौते के रूप में कांग्रेस ने अपनी विजय मनाई। फिर गांधी जी ने गोलमेज कानफरेन्स में कांग्रेस की ओर से क्या मांगें पेश कीं, उन के भारत से लौटने से पूर्व ही सरकार ने किस तरह दमन-नीति का प्रयोग खुले हाथों शुरू कर दिया, किस तरह वायसराय ने गांधी जी से मिलने से भी इन्कार कर दिया और कांग्रेस को विवश हो कर सत्याग्रह करना पड़ा, पूने में कैसे सामूहिक सत्याग्रह वैयक्तिक सत्याग्रह के रूप में बदला गया और अब पटना में कांग्रेस कमेटी ने सत्याग्रह वापस ले कर कौंसिल-प्रवेश का कार्यक्रम कैसे स्वीकार किया गया, यह सब किसी से अविदित नहीं है।

इस लेख में संक्षेप में हमने कांग्रेस का क्रमिक विकास बताने का यत्न किया है। कांग्रेस किस तरह उच्च-शिक्षितों की वाद्-विवाद-सभा से देश की ओर से सब अधिकार ले कर स्वातन्त्र्य-संग्राम करने वाली युद्ध-सभा बन गई, इस का संक्षिप्त परिचय इस लेख से मालूम होगा। परमात्मा करे कि यह कांग्रेस अधिकाधिक शक्तिशालिनी होकर अपने उद्देश्य में सफल हो।

--:०:--

प्रजातन्त्र का क्षेत्र

(लेखक—श्री आसफअली बार-एट-ला)



मि० आसफअली बार-एट-ला उन सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में हैं जिनकी लोकप्रियता और प्रसिद्धि सार्वदेशिक हो रही है। कांग्रेस पार्लमेण्टरी बोर्ड के आप मुख्य कर्णधारों में से हैं।

इस लेख में आपने बताया है कि प्रजातन्त्र क्या है और उसका मनुष्य की व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतन्त्रता के साथ क्या सम्बन्ध है। इस समय जब देश राजनीति और स्वराज्य की चर्चा कर रहा है यह लेख पाठकों के लिये उपयोगी और मननीय होगा।

प्रजातन्त्र का अभिप्राय ऐसे शासन से है जिस की नींव लोकमत पर स्थापित हो। मगर कोई राष्ट्र तबतक न राष्ट्र बन सकता है और नाहीं कोई उन्नति कर सकता है जब तक कि उस के साधारण लोगों की अवस्था ठीक न हो — अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति करने व स्वतन्त्रता-पूर्वक जीवन व्यतीत करने का पूर्ण सुविधा प्राप्त न हो।

आदि-काल में मनुष्य पशुओं की भांति जंगलों में जीवन व्यतीत करता था। सभ्यता के युग में वह विभिन्न समयों में विभिन्न दर्जों पर रहा। उस ने आपस में मिल-जुल कर रहना सीखा और भूमि की उपज व प्राकृतिक शक्तियों से सहायता लेकर अपने मानसिक व शारीरिक परिश्रम से एक नयी सभ्यता की बुनियाद डाली। इसी समय उस ने व्यवस्था जिसे हम सभ्यता का प्रथम व अन्तिम कदम कह सकते हैं — पैदा की। इस व्यवस्था में यह नियम था कि सर्व प्रथम उन लोगों का अधिकार हो जो शारीरिक व मानसिक शक्तियों से सुसज्जित थे। फलस्वरूप परिवार, कबीले और उन के सरदार पैदा हुए। तदनन्तर परिवारों तथा कबीलों में एकता स्थापित हुई और राष्ट्र बने। इसके बाद राष्ट्रों के राजा बने और राजाओं के मेल से सम्राट व साम्राज्यवाद का जन्म हुआ।

इस युग में पहले पहल कुछेक बुद्धिमान लोगों ने शासन व्यवस्था तैयार की और सैनिक प्रबन्ध के बल पर शासन किया। शनैः शनैः जब शिक्षित व विद्वान लोगों का दायरा विस्तृत हुआ तो कुछ दिमागों की जगह ज्यादा दिमागों ने ले ली, और होते-होते अब जिस युग से हम गुजर रहे हैं। उसमें प्रजातन्त्र पूर्णरूपेण पल्लवित व फलित हो गया है। प्रायः सब राज्यों की नींव लोकमत पर रखी जा चुकी है। यद्यपि यूरोप में प्राचीन एशिया की भांति आज भी तानाशाह (डिक्टेटर) दृष्टिगोचर होते हैं मगर यह सब लोकमत की रजामन्दी से एकतन्त्रीय शासन करते हैं।

आखिर यह प्रजातन्त्र क्या है? यूं तो इतिहास और कहानी लम्बी है मगर सिद्धान्ततः प्रजातन्त्र की असली बुनियाद जैसा कि ऊपर कहा गया है हरेक मनुष्य के निम्न लिखित जन्मसिद्ध अधिकार पर अवलम्बित है—

(१) इसे अपनी मानसिक व शारीरिक शक्तियों को उन्नत करने का उतना ही अधिकार है जितना किसी दूसरे मनुष्य को — चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, काला हो या गोरा, एक धर्म का हो या दूसरे धर्म का

(२) शासन-व्यवस्था सर्वसाधारण की राय से और उनकी भलाई व उन्नति के लिये होना चाहिये,

(३) इसलिये प्रत्येक ऐसे राज्य को जो इन नियमों पर कायम न हो उसे बदलने का सर्वसाधारण का हक है।

इसके उपरान्त यह प्रश्न पैदा होता है कि वास्तव में स्वतन्त्रता के अर्थ क्या हैं। स्वतन्त्रता जहां एक जन्मसिद्ध अधिकार है वहीं प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता दूसरे आदमियों के आधीन भी है क्योंकि सब को एकसी स्वतन्त्रता का अधिकार है। अर्थात् स्वतन्त्रता का यह तात्पर्य नहीं कि एक आदमी जो चाहे करे ख्वाह इससे दूसरे के स्वतन्त्रता के अधिकार का अपहरण हो क्यों न हो जाय। इसलिए उन देशों में जहां स्वतन्त्रता का दौर-दौरा है बजाय इस के कि लोग जो चाहें करें वे केवल वही कर सकते हैं जिसमें दूसरों का हक न मारा जाय। उदाहरणतः प्रत्येक व्यक्ति को हक प्राप्त है कि वह दिन भर के परिश्रम के बाद रात को आराम से सोये। इस के यह अर्थ हैं कि हरेक मनुष्य को कम से कम ८ घण्टे आराम से सोने का पूरा अवसर है। अतएव प्रत्येक पड़ोसी का कर्तव्य है कि वह १० या ११ बजे के बाद गुल-गपाड़ा, ग्रामोफोन, हारमोनियम आदि का बजाना रात को बन्द कर दे ताकि पड़ोसी आराम से सो सकें। इसी तरह प्रत्येक आदमी को अधिकार है कि वह टिकट लेकर थियेटर जाय और जो पहले जाय उसे हक है कि वह टिकटघर के पास खड़ा हो। दूसरों को जो बाद में जायें यह अधिकार नहीं कि पहले से जो टिकटघर के पास खड़े हैं उनको पीछे हटा कर स्वयं आगे बढ़ जायें इत्यादि। या यह कि यदि एक आदमी से किसी दूसरे की तकरार हो और नौबत हाथापाई तक पहुंचे तो केवल उन्हीं दो व्यक्तियों को लड़ कर फैसला कर लेने दिया जाय और दूसरे कौवों की भांति कांय कांय करके एक या दूसरे का साथ न दें।

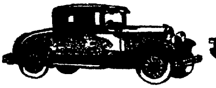
इस प्रकार स्वतन्त्रता जहां एक उम्दा वस्तु है वहां इसकी पाबन्दियां भी सख्त हैं। मगर यही वह हालत है जिसे कवि ने स्वर्ग से उपमा दी है —

बहिश्त आं जा कि आज़ारे न बाशद,
कसेरा बा कसे कारे न बाशद।

इस स्वतन्त्रता के साथ ही लोकमत का इतना असर होता है कि मनुष्य प्रत्येक कार्य लोकमत के मातहत करता है। अर्थात् यदि बहुमत यह चाहता है कि काली टोपियां विशेष तर्ज की पहनो तो आजाद मनुष्य बावजूद इसके कि जो चाहे पहने सर्वसाधारण की राय से प्रभावित होकर विशेष प्रकार की काली टोपी ही पहनता है और अपनी ढपली व अपने राग की कहावत चरितार्थ नहीं करता। मतलब यह कि लिबास आदि मामलों में भी बड़ी हद तक राष्ट्रीय समानता होती है।

प्रजातन्त्र का पहला तकाजा यह है कि शासन-व्यवस्था सर्वसाधारण की राय से कायम हो। अब इस सम्बन्ध में भी लोकमत अपना हस्तक्षेप करता है कि किन लोगों को बहुमत मिलता है? फिर यह भी खयाल आवश्यक ही होता है कि दुनिया केवल राय से नहीं चलती बल्कि व्यावहारिकता का भी खयाल रखना पड़ता है। उदाहरणार्थ चाहे बहुमत का एक विशेष विचार हो — मगर विरोधियों की संख्या यदि इतनी बड़ी है कि उसके विरोध का ध्यान न रखने से दंगों व मुसीबतों की सम्भावना हो तो बहुमत वाले परिस्थितियों के अनुसार कार्य करते हैं। अर्थात् यदि १०० आदमियों में ५१ एक ओर हों तो यद्यपि ४९ विरोधी पक्ष में होंगे — मगर उनकी राय का बोझ इतना काफी होगा कि ५१ आसानी से उनके खिलाफ न जायंगे। थोड़े में यह सब व्यावहारिक जीवन के मातहत होते हैं और यद्यपि मूर्ख लोग रोटी पर यूं लड़े और टुकड़े पर यूं करने को तैयार रहते हैं — मगर राष्ट्र गम्भीर होते हैं और वे सोच-समझ कर फैसला करते हैं।

व्यक्तिगत एवं सामूहिक या राष्ट्रीय अधिकार प्राप्त करने और प्रजातन्त्र स्थापित करने के अनेक तरीके हैं—मगर यह सब तरीके सर्वसाधारण की राय से व्यवहार में लाये जाते हैं। यह अधिकार सब के लिये समान है। किसी को किसी पर तरजीह नहीं सिवाय इस के कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शारीरिक व मानसिक शक्ति तथा योग्यता दिखाने का पूरा अवसर मिलना चाहिये। यदि ऐसा कानून न हो तो हरेक आदमी बिना शारीरिक व मानसिक परिश्रम के दूसरों



मोटर के छींटे

पैदल चलने वालों के कपड़े खराब करते हुए सरपट मोटर दौड़ाने वालों को हमारे हजारों पाठकों ने कभी न कभी दिल में अवश्य गालियां दी होंगी। परन्तु इस कथा के द्वारा उपन्यास सम्राट प्रेमचन्दजी ने ऐसे नवाब के नातियों का जो इलाज बताया है उसे यद्यपि हमारे पाठक बहुत पसन्द करेंगे तथापि हम उन्हें यह इलाज करने से पूर्व खूब सोच-समझ लेने की सलाह अवश्य देंगे।

क्या नाम कि कल प्रातःकाल स्नान-पूजा से निबट, तिलक लगा पीताम्बर पहन खड़ाऊं पांव में डाल, बगल में पत्रा दबा हाथ में मोटा सा शत्रु-मस्तक-भंजन ले एक जजमान के घर चला। विवाह की साइत विचारनी थी। कम से कम एक कलदार का डौल था। जलपान ऊपर से। और मेरा जलपान मामूली जलपान नहीं है। बाबुओं को तो मुझे निमन्त्रित करने की हिम्मत ही नहीं पड़ती। उनका महीने भर का नाश्ता मेरा एक दिन का जलपान है। इस विषय में तो हम अपने सेठों साहूकारों के कायल हैं। ऐसा खिलाते हैं, ऐसा खिलाते हैं, और इतने खुले मन से कि चोला आनन्दित हो उठता है। जजमान का दिल देख कर ही मैं उसका निमन्त्रण स्वीकार करता हूं। खिलाते समय किसी ने रोनी सूरत बनाई और मेरी क्षुधा गायब हुई। रोकर किसी ने खिलाया तो क्या? ऐसा भोजन कम से कम मुझे नहीं पचता। जजमान ऐसा चाहिये कि ललकारता जाय — लो शास्त्री जी एक बालूसाही और, और मैं कहता जाऊं — नहीं जजमान, अब नहीं।

रात को खूब वर्षा हुई थी। सड़क पर जगह जगह पानी जमा था। मैं अपने विचारों में मगन चला जाता था कि एक मोटर छप-छप करती हुई निकल गई। मुंह पर छींटे पड़े। जो देखता हूं, तो धोती पर मानो किसी ने कीचड़ घोल कर डाल दिया हो। कपड़े भ्रष्ट हुए वह अलग, देह भ्रष्ट हुई वह अलग, आर्थिक क्षति जो हुई वह अलग। अगर मोटर वालों को पकड़ पाता तो ऐसी मरम्मत करता कि वह भी याद करते। मन मसोस कर रह गया। इस वेष में जजमान के घर तो जा नहीं सकता था, अपना घर भी मील भर से कम न था। फिर आने-जाने वाले सब मेरी ओर देख-देख कर तालियां बजा रहे थे। ऐसी दुर्गति मेरी कभी न हुई थी। अब क्या करोगे मन? घर जाओगे तो पण्डिताइन क्या कहेंगी?



(ले०—प्रेमचन्द जी)

मैंने चटपट अपने कर्तव्य का निश्चय कर लिया। इधर-उधर से दस-बारह पत्थर के टुकड़े बटोर लिए और दूसरे मोटर की राह देखने लगा। ब्रह्मतेज सिर पर चढ़ बैठा। अभी दस मिनट भी न गुजरे होंगे कि एक मोटर आती हुई दिखाई दी। ओहो! वही मोटर थी। शायद स्वामी को स्टेशन से लेकर लौट रही थी। ज्योंही समीप आई मैंने एक पत्थर चलाया भरपूर जोर लगा कर चलाया। साहब की टोपी उड़ कर सड़क के उस बाजू पर गिरी। मोटर की चाल धीमी हुई। मैंने दूसरा फैर किया। खिड़की के शीशे चूर चूर हो गये और एक टुकड़ा साहब बहादुर के गाल में भी लगा। खून बहने लगा। मोटर रुकी और साहब उतर कर मेरी तरफ आये और घूंसा तान कर बोले — सुअर हम तुम को पुलिस में देगा। इतना सुनना था कि मैंने पोथी-पत्रा जमीन पर फेंका और पकड़ कर साहब की कमर अड़ंगी लगाई तो कीचड़ में भद्द से गिरे। मैंने चट सवारी गांठी और गरदन पर एक पचीस रद्दे ताबड़तोड़ जमाये कि चौंधिया गये। इतने में उनकी पत्नी जी उतर आईं। ऊंची एड़ी का जूता रेशमी साड़ी गालों पर पाउडर ओठों पर रंग भौंवों पर स्याही मुझे छाते से गोदने लगीं। मैंने साहब को छोड़ दिया और डंडा सम्भालता हुआ बोला — देवी जी आप मरदों के बीच में न पड़ें कहीं चोट चपेट आ जाय तो मुझे दुख होगा।

साहब ने अवसर पाया तो सम्भल कर उठे और अपने बूटदार पैरों से मुझे एक ठोकर जमाई। मेरे घुटने में बड़ी चोट लगी। मैंने बौखला कर डंडा उठा लिया और साहब के पांव में जमा दिया। कटे पेड़ की तरह गिरे। मेम साहब छतरी तान कर दौड़ीं। मैंने धीरे से उनकी छतरी छीन कर फेंक दी। ड्राइवर अभी तक बैठा था अब वह भी उतरा और छड़ी लेकर मुझ पर पिल पड़ा। मैंने एक डंडा उस के भी जमाया लोट गया। पचासों आदमी तमाशा देखने जमा हो गये। साहब भूमि पर पड़े पड़े बोले — रैस्कल हम तुम को पुलिस में देगा।

मैंने फिर डंडा सम्भाला और चाहता था कि खोपड़ी पर जमाऊं कि साहब ने हाथ जोड़ कर कहा— नहीं नहीं बाबा हम पुलिस में नहीं जायगा। माफी दो।

मैंने कहा—हां पुलिस का नाम न लेना नहीं यहीं खोपड़ी रंग दूंगा। बहुत होगा छ: महीने की सजा हो जायगी मगर तुम्हारी आदत छुड़ा दूंगा। मोटर चलाते हो तो छींटे उड़ाते चलते हो मानो घमण्ड से अन्धे हो जाते हो। सामने या बगल में कौन जा रहा है इसका ध्यान भी नहीं रखते।

एक दर्शक ने आलोचना की— अरे महाराज मोटर वाले जान-बूझ कर छींटे उड़ाते हैं और जब आदमी लथपथ हो जाता है तो सब उसका तमाशा देखते हैं और खूब हंसते हैं। आपने बड़ा अच्छा किया कि एक को ठीक कर दिया।

मैंने साहब को ललकार कर कहा — सुनता है कुछ जनता क्या कहता है। साहब ने उस आदमी की ओर लाल-लाल आंखों से देख कर कहा — तुम झूठ बोलता है, बिलकुल झूठ बोलता है।

मैंने डांटा — अभी तुम्हारी हेकड़ी कम नहीं हुई, आऊं फिर और दूं एक सोटा कस के?

साहब ने घिघिया कर कहा— अरे नहीं बाबा सच बोलता है सच बोलता है। अब तो खुश हुआ।

दूसरा दर्शक बोला—अभी जो चाहे कह दें लेकिन ज्योंही गाड़ी पर बैठे फिर वही हरकत शुरू कर देंगे। गाड़ी पर बैठते ही सब अपने को नवाब का नाती समझने लगते हैं।

तीसरे महाशय बोले — इस से कहिए थूक कर चाटे।

चौथे सज्जन ने कहा — नहीं कान पकड़ कर उठाइए बैठाइए।

पांचवां बोला — और ड्राइवर को भी। यह सब और बदमाश होते हैं। मालदार आदमी घमण्ड करें तो एक बात है तुम किस बात पर अकड़ते हो। चक्कर

के परिश्रम का फल खाने को तैयार रहेगा और हजारों सालों में बना हुआ सभ्यता का भवन गिर जायगा मनुष्य पशुओं के जीवन व लूटमार पर कमर बांध लेगा। बिना मानसिक व शारीरिक परिश्रम किये किसी व्यक्ति को जीवन की सुविधायें प्राप्त करने का कोई हक नहीं है और जो आदमी दूसरों की मेहनत को अपने आराम का जरिया बनाते हैं उन्हें आकाशबेल से उपमा दी जा सकती है जो हरे-भरे वृक्षों को खा-खाकर सुखा देती है। ऐसी 'आकाश बेल' को मनुष्य की सभ्यता के बाग में कोई स्थान नहीं मिल सकता।

अन्त में यह प्रश्न उठता है कि मानसिक व शारीरिक परिश्रम का फल क्या होता है? दुनिया ने इस का जवाब अनेक प्रकार से दिया है। साधारणतः मानसिक परिश्रम को शारीरिक परिश्रम से अच्छा माना जाता है चाहे वह किसी शक्ल में हो। अतः आज रूस में भी, जहां हरेक आदमी को पूरी बराबरी का दावा है और जहां प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मानसिक व शारीरिक उन्नति करने की सब सुविधायें प्राप्त हैं शासन-सूत्र का प्रधान स्टालिन है जिस की दिमागी मेहनत को दूसरों की दिमागी मेहनत के मुकाबले में उत्तम ख्याल किया जाता है।

इन सीमाओं के अन्तर्गत प्रजा को पूर्ण अधिकार है कि वह शासन-व्यवस्था को लोकमत व लोक-हित की नींव पर कायम करे।

—०—

हाथ में लिया और आंखों पर परदा पड़ा।

मैंने यह प्रस्ताव स्वीकार किया। ड्राइवर और मालिक दोनों ही को कान पकड़ कर उठाना-बैठाना चाहिए। और मेम साहब गिनें। सुना मेम साहब तुम को गिनना होगा। पूरी सौ बैठकें। एक भी कम नहीं, ज्यादा जितनी चाहें हो जांय।

दो आदमियों ने साहब का हाथ पकड़ कर उठाया, दो ने ड्राइवर महोदय का। ड्राइवर बेचारे की टांग में चोट थी, फिर भी वह बैठकें लगाने लगा। साहब की अकड़ अभी काफी थी। आप लेट गये और ऊल-जलूल बकने लगे। मैं उस समय रुद्र बना हुआ था। दिल में ठान लिया कि इस से बिना सौ बैठकें लगवाए न छोड़ूंगा। चार आदमियों को हुक्म दिया कि गाड़ी को ढकेल कर सड़क के नीचे गिरा दो।

हुक्म की देर थी। चार की जगह पचास आदमी लिपट गये और गाड़ी को ढकेलने लगे। वहां सड़क बहुत ऊंची थी। दोनों तरफ को ज़मीन नीची। गाड़ी नीचे गिरी और टूट-टाट कर ढेर हो जायगी। गाड़ी सड़क के किनारे तक पहुंच चुकी थी कि साहब कांख कर उठ खड़े हुए और बोले — बाबा, गाड़ी को मत तोड़ो, हम उठे-बैठेगा।

मैंने आदमियों को अलग हट जाने का हुक्म दिया। मगर सभों को एक दिल्लगी मिल गई थी। किसी ने मेरी ओर ध्यान न दिया। लेकिन जब मैं डंडा ले कर उन की ओर दौड़ा तब सब गाड़ी छोड़ कर भागे। और साहब ने आंखें बन्द करके बैठकें लगाना शुरु कीं।

मैंने दस बैठकों के बाद मेम साहब से पूछा — कितनी बैठकें हुईं।

मेम साहब ने रोष से जवाब दिया — हम नहीं गिनता।

"तो इस तरह साहब दिन भर कांखते रहेंगे और मैं न छोड़ूंगा। अगर उन को कुशल से घर ले जाना चाहती हो तो बैठकें गिन दो। मैं उन को रिहा कर दूंगा।"

साहब ने देखा कि बिना दण्ड भोगे जान न बचेगी, तो बैठकें लगाने लगे। एक, दो, तीन, चार, पांच।

सहसा एक दूसरी मोटर आती दिखाई दी। साहब ने देखा और नाक रगड़ कर बोले — पंडित जी आप मेरा बाप है। मुझ पर दया करो, अब हम कभी मोटर पर न बैठेंगे। मुझे भी दया आ गई। बोला — नहीं, मोटर पर बैठने से मैं नहीं रोकता, इतना ही कहता हूं कि मोटर पर बैठ कर भी आदमियों को आदमी समझो।

दूसरी गाड़ी तेज़ चली आती थी। मैंने इशारा किया। सब आदमियों ने दो-दो पत्थर उठा लिए। उस गाड़ी का मालिक स्वयं ड्राइव कर रहा था। गाड़ी धीमी करके धीरे से सरक जाना चाहता था कि मैंने बढ़ कर उस के दोनों कान पकड़े और खूब ज़ोर से हिला कर और दोनों गालों पर एक-एक पड़ाका देकर बोला — गाड़ी से छींटा न उड़ाया करो, समझे। चुपके से चले जाओ।

यह महोदय बक-झक तो करते रहे, मगर एक सौ आदमियों को पत्थर लिये खड़ा देखा, तो बिना कान पूंछ डुलाये चलते हुए।

उन के जाने के एक ही मिनट बाद दूसरी गाड़ी आई। मैंने ५० आदमियों को राह रोक लेने का हुक्म दिया। गाड़ी रुक गई। मैंने उन्हें भी ठोकने दिया और चार पड़ाके देकर बिदा किया। मगर, यह बेचारे भले आदमी थे। मजे से चोटें खाकर चलते हुए।

सहसा एक आदमी ने कहा, पुलिस आ रही है।

और सब के सब दूर हो गये। मैं भी सड़क के नीचे उतर गया और एक गली में घुस कर गायब हो गया।

—————:o:—————

साम्प्रदायिक निर्णय की परीक्षा

(ले०—प्रो० राधाकुमुद मुकर्जी, लखनऊ यूनिवर्सिटी)

प्रो० राधाकुमुद मुकर्जी की गिनती भारत के उच्चकोटि के विद्वानों में होती है। साम्प्रदायिक-निर्णय और अल्पसंख्यकों की समस्या के तो आप विशेषज्ञ माने जाते हैं।

इस लेख में आपने अत्यन्त योग्यतापूर्वक बताया है कि साम्प्रदायिक निर्णय केवल हिन्दुओं के साथ अन्याय ही नहीं है परन्तु राष्ट्रीयता का गला घोंट कर भारत को सदा के लिये 'स्वराज्य' के अयोग्य कर देगा। इसका मुख्य उद्देश्य यूरोपियनों को अनुचित महत्त्व देकर ब्रिटिशसत्ता को स्थायी रखना है।

लोगों को यह आशा थी कि प्रधानमन्त्री के साम्प्रदायिक निर्णय से दोनों सम्प्रदायों—हिन्दुओं और मुसलमानों—में न्याय और शान्ति स्थापित हो जायगी। परन्तु इसने शान्ति व न्याय दोनों का गला घोंट दिया है। यह केवल साम्प्रदायिकता की अग्नि को बढ़ाने वाला ही नहीं अपितु राष्ट्रीयता और प्रजातन्त्र का घातक भी सिद्ध हो रहा है। इस मामले में ब्रिटिश सरकार ने अपनी प्रतिज्ञा का भंग किया है। सरकार ने भारत में 'उत्तरदायी शासन' या औपनिवेशिक स्वराज्य स्थापित करने की प्रतिज्ञा की थी। यदि सरकार अपने वचन का कोई मूल्य समझती है तो उसे मताधिकार की ऐसी बुरी प्रणाली जारी नहीं करनी चाहिये थी जो न केवल पारस्परिक विद्वेष बढ़ाने वाली है परन्तु उसकी अब तक की प्रतिज्ञाओं के साथ बिलकुल मेल भी नहीं खाती। यदि हमने आपस में कोई समझौता न कर सकने की वजह से उसने कोई फैसला कर देने के लिये कहा था, तो इसका यह मतलब कभी नहीं था कि हमने सरकार को कोरा कागज पकड़ा दिया था। हमें यह पूरी आशा थी कि विभिन्न सम्प्रदायों के परस्पर-विरोधी दावों और हितों के साथ अधिकतम न्याय किया जायगा। परन्तु प्रधानमन्त्री का निर्णय बिलकुल एकतरफा है उसमें अल्प-संख्यक जातियों के साथ व्यवहार के लिये भी कोई एक सा सिद्धान्त निर्धारित नहीं किया गया। उसका तो एक ही उद्देश्य दीखता है एक खास सम्प्रदाय की रक्षा। इसका खयाल नहीं किया गया कि वह अल्प-संख्यक है या बहुसंख्यक। अल्प-संख्यकों की रक्षा का सिद्धान्त हिन्दुओं के लिये नहीं है क्योंकि शायद वे इसे चाहते ही नहीं। वर्तमान शासन-विधान में हिन्दुओं को गैर-मुस्लिम कहा गया है और नये प्रस्तावित शासन-विधान में उनका कोई नाम ही नहीं रखा जायगा। उनकी स्थिति साधारण मतदाता कहकर बहुत कम कर दी गई है। और फिर यह चुनाव सम्मिलित चुनाव नहीं है किन्तु पृथक चुनाव है जिसमें हिन्दुओं को उनकी इच्छा के विरुद्ध जबर्दस्ती भाग लेना पड़ेगा।

नया राजनैतिक गणित

साम्प्रदायिक चुनाव और विशेष प्रतिनिधित्व की एक और भी बड़ी विशेषता है। हिन्दुओं का विशेष प्रतिनिधित्व आबादी के अनुपात से भी नहीं रखा गया। बंगाल और पंजाब के अल्पसंख्यक हिन्दुओं को अपनी संख्या से भी कम प्रतिनिधित्व दिया गया है। लेकिन अन्य स्थानों पर अल्पसंख्यक मुसलमानों को उनकी संख्या के अनुपात से भी अधिक सीटें दे दी गई हैं। बंगाल के ४३ फीसदी हिन्दुओं को अब ३९ फीसदी गिना जायगा और पंजाब के २६ फीसदी हिन्दुओं को २५ फीसदी लेकिन यू० पी० के १४ फीसदी मुसलमानों को इस नये राजनैतिक गणित के द्वारा ३० फीसदी गिना जायगा। केवल एक स्थान पर — सीमाप्रान्त के अल्पसंख्यक हिन्दुओं को इस नये गणित से लाभ पहुंचा है और इस कृपा के लिये भारत के सब प्रान्तों में हिन्दुओं को अपनी संख्या के अनुपात से कम प्रतिनिधित्व की सजा मिली है।

वास्तविक उद्देश्य

इस कल्पनातीत साम्प्रदायिक निर्णय का वास्तविक उद्देश्य क्या है? वस्तुतः प्रजातन्त्र की राष्ट्रीय भावनाओं को कुचलना इसका उद्देश्य प्रतीत होता है। यह एक ऐसी व्यवस्थापिका सभा का निर्माण करेगा जो नागरिकता या सब सम्प्रदायों के समान हितों को दृष्टि में रखकर नहीं, परन्तु विभिन्न समूहों के व्यक्तिगत और स्वार्थपूर्ण हितों को दृष्टि में रखकर काम करेगी। इस निर्णय की तह में एक दूसरा उद्देश्य यूरोपियन मत को सन्तुलन-शक्ति देकर नये सिरे से ब्रिटिश सत्ता का प्रभाव कायम रखना है। यूरोपियनों को उनकी संख्या से बहुत अधिक अनुपात में प्रतिनिधित्व दिया गया है।

यह पृथक चुनाव हमें कहां ले जायगा? साधारणतया सभी समुदाय यह मांग पेश करते रहे हैं कि जनसंख्या के अनुपात से उनकी शक्ति अधिक गिनी जाय। परन्तु इस निर्णय में महत्वपूर्ण गैर-मुस्लिम सम्प्रदायों का तो जनसंख्या का आनुपातिक बल भी नहीं माना गया। सिखों का यह दावा है कि यद्यपि संख्या की दृष्टि से वे १३ फीसदी हैं तथापि करदाता की दृष्टि से वे ४० फीसदी हैं (पंजाब-सरकार को प्राप्त होने वाली आय का ४० फीसदी सिखों से मिलता है)। बंगाल के हिन्दू भी संख्या के अनुपात पर बने हुए शासन-विधान को स्वीकार करने से इन्कार करते हैं। वे संख्या में ४३ फीसदी ही हों परन्तु सरकारी रिपोर्टों के अनुसार प्रान्तीय आय का अधिकांश वही देते हैं। संस्कृति आर्थिक प्रगति देशभक्ति और मातृभूमि के लिये किये गये त्याग में उनका जो भाग रहा है, उसकी गणना तो रुपयों में की भी नहीं जा सकती। बाढ़ अकाल में अन्न की सहायता व प्रधान-मुस्लिम क्षेत्रों में शिक्षा की जो अमित सहायता उन्होंने दी है वह अलग है।

आज से बहुत समय पहले इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ एडमण्ड बर्क ने विना प्रतिनिधित्व के कर न दो के सिद्धान्त का बड़े जोरों से समर्थन किया था। परन्तु आज भारत में इसका विपरीत अर्थ लगाया जा रहा है। टैक्स ज्यादा लिया जाता है प्रतिनिधित्व कम दिया जाता है। इसीलिये सिखों व हिन्दुओं की यह मांग है कि जहां वे अल्पसंख्या में भी हैं वहां उनके कर संस्कृति आदि का खयाल करते हुए उन्हें प्रतिनिधित्व देना चाहिये।

ब्रिटिश-सरकार के हाथ में भारत को साम्प्रदायिकता के गड्ढे से निकालने का शुभ अवसर आया था परन्तु उसने उसे खो दिया। गैरमुस्लिम सभी अल्पसंख्यक जातियों ने जिनमें भारतीय ईसाई भी सम्मिलित थे प्रजातन्त्र में अपना अटूट विश्वास रखते हुए और बिना कोई खास प्रतिनिधित्व मांगे सम्मिलित चुनाव की मांग की थी। यह सब मिलकर भारत की तीन चौथाई संख्या होती है। लेकिन एक चौथाई की आवाज सरकार को भारी प्रतीत हुई। इसके कारण वही जानती है।

अन्तर्राष्ट्रीय हल

इन सब गैरमुस्लिम सम्प्रदायों ने अनेक बार साम्प्रदायिक समस्या के अन्तर्राष्ट्रीय हल के लिये प्रार्थना की। वह हल प्रसिद्ध अल्पसंख्यक-रक्षा-सन्धि में स्पष्ट है। मजेदार बात तो यह है कि इस सन्धि के निर्माण में ब्रिटिश-सरकार ने स्वयं बहुत भाग लिया था। इस सन्धि का अधिक उत्तर-दायित्व उसके प्रतिष्ठित प्रतिनिधि सर आस्टिन चैम्बरलेन पर है जिसने भारत को उत्तरदायित्वपूर्ण शासन देने की ब्रिटिश-नीति की भी घोषणा की थी। तीन-चौथाई भारत की 'अन्तर्राष्ट्रीय साम्प्रदायिक हल' की मांग पेश करने के मार्ग में ब्रिटिश-सरकार के सामने कौन सी बड़ी बाधा आ गई थी जब कि भारत भी राष्ट्रसंघ का स्थायी सदस्य है और उसने भी ब्रिटिश-सरकार के प्रतिनिधि के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय अल्प-संख्यक-रक्षा-सन्धि पर हस्ताक्षर किये थे? मि० हैंडरसन के शब्दों में यह अन्तर्राष्ट्रीय समझौता 'संसार व यूरोप के सार्वजनिक नियम का एक भाग' है। राष्ट्रसंघ की असेम्बली के तीसरे अधिवेशन में प्रो० गिलबर्ट मरे का यह प्रस्ताव पास हुआ था कि राष्ट्रसंघ के सब सदस्यों को इस सन्धि का पालन करना पड़ेगा और इसी के अनुसार अपनी घरेलू साम्प्रदायिक समस्याओं का हल करना पड़ेगा। यह भी एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौता है कि अल्पसंख्यक-सम्बन्धी कोई झगड़ा किसी राष्ट्र का घरेलू प्रश्न नहीं माना जायगा और उसे राष्ट्र-संघ में पेश करना ही पड़ेगा।

अपना आप खण्डन

लेकिन शायद मि० रैम्जे मैकडानल्ड के साम्प्रदायिक निर्णय पर सब से अच्छी टीका गोलमेज कान्फरेन्स पर हाउस आफ कामन्स में दिया गया उन्हीं का भाषण है:—

"यदि प्रत्येक निर्वाचन-क्षेत्र को अलग-अलग सम्प्रदाय या पृथक् २ हित रखने वाला मान लिया जाय, तो विशुद्ध राजनैतिक संगठन के, जो सब सम्प्रदायों, सब धर्मों और सब श्रेणियों को परस्पर मिला देता है, विकास के लिये कोई स्थान ही नहीं रहेगा। यह एक समस्या है, जिसका हमे हल करना है, क्योंकि यदि भारत मे हमे राजनैतिक जीवन का विकास करना है तो ऐसी राजनैतिक पार्टियों के विकास की गुञ्जायश हमें जरूर रखनी होगी, जिनका लक्ष्य सम्पूर्ण भारत का हित हो, न कि सम्पूर्ण भारत मे छोटे किसी समूह का हित।

"कुछ परिवर्तन के साथ इस समस्या के हल के लिये एक प्रस्ताव रखा गया है। न साम्प्रदायिक रजिस्टर हो और न साम्प्रदायिक निर्वाचन-क्षेत्र हों, सब निर्वाचन-क्षेत्रों का एक रजिस्टर हो, परन्तु कुछ सम्प्रदायों को विशेष प्रतिशतक प्रतिनिधित्व की गारण्टी जरूर दी जाय। यह (साम्प्रदायिक चुनाव) पहला प्रस्ताव है, जो कुछ अधिक आकर्षक और प्रजातन्त्रीय रूप मे है। परन्तु वस्तुतः यह उतना वांछनीय नहीं है।

'मुझे इन प्यारे लोगों (सम्प्रदायों) को यह समझाना बहुत कठिन हो रहा है कि यदि एक सम्प्रदाय को विशेष प्रतिनिधित्व देते हो, तो तुम 'शून्य' में से प्रतिनिधित्व उत्पन्न नहीं कर सकते, किसी और का अधिकार ही छीनना पड़ेगा। तब उन्हें मालूम होता है कि वे गड़बड़झाले में पड़ गये है और उनके सामने एक पत्थर की दीवार है, जिसमे से वे निकल नहीं सकते।"

लेकिन मज़ा यह है कि जिन असूलों व प्रस्तावों की प्रधानमन्त्री अपने भाषण में निन्दा करते हैं, उन्हीं को वे सरकारी साम्प्रदायिक निर्णय मे आधार मानते हैं। प्रधान मन्त्री के अपने कथनानुसार यह (साम्प्रदायिक निर्णय) 'विशुद्ध राजनीतिक संगठन' या 'एक दृढ़ राजनीतिक जीवन' या 'राष्ट्रीय राजनैतिक दलों' के स्वतन्त्र विकास में बाधक होगा। हम किस रैम्जे मैकडानल्ड से अपील करें, हाउस आफ कामन्स में भाषण देने वाले रैम्जे मैकडानल्ड से या साम्प्रदायिक निर्णय की घोषणा करने वाले रैम्जे मैकडानल्ड से?

कोई भी सन्तुष्ट नहीं

सभी सम्प्रदाय इसमे असन्तुष्ट दीखते हैं। हिन्दुओं को तो यह बिलकुल भी स्वीकार्य नहीं है, जिनके साथ इसमे सब से अधिक अन्याय किया गया है। उन्हें यह अल्पसंख्यक भी नहीं मानता, और ऐसा भी कोई प्रतिनिधित्व देने से इन्कार करता है, जो और सम्प्रदायों को बहुत उदारता से दिया गया है। सीमाप्रांत के सिवा कहीं संख्या के अनुपात से भी प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया। साम्प्रदायिक निर्णय के आधारभूत दो सिद्धान्त है और दोनों एक दूसरे को काटते है। एक विशेष सम्प्रदाय के लिये संख्या का सिद्धान्त और दूसरे सम्प्रदाय के लिये योग्यता का सिद्धान्त। हिन्दुओं को दोनों सिद्धान्तों—संख्या और योग्यता—में घाटा है। यूरोपियनों की तो योग्यता देखी गयी है और मुसलमानों की संख्या। हिन्दुओं को दोनों में से एक का भी लाभ नहीं मिलेगा। पता नहीं किस तरीके से, जिसे हम नहीं समझ सकते, हिन्दुओं की योग्यता यूरोपियनों की योग्यता से भी कम मानी गयी है। देश की संस्कृति मे उनकी क्या देन है? वे तो शासन का भार अवश्य उठा रहे हैं।



रमजे मेकडानल्ड

दूसरा एक भी उदाहरण नहीं

अन्त में यह निर्णय अल्पसंख्यकों की रक्षा का एक विचित्र और नया उदाहरण सामने रखता है, जिसका वर्तमान इतिहास व राजनीतिक में एक भी उदाहरण नहीं मिलता, क्योंकि यह उन बंधनों को ही ढीला कर देता है, जिनसे राष्ट्र एक सूत्र में ग्रथित रहता है। इस निर्णय मे सम्प्रदायों को ऐसा समझा गया है, जैसे वे परस्पर लड़ने वाली विदेशी जातियां हों। उन्हें व्यवस्थापिका सभाओं व शासन-प्रबन्ध में टुकड़े-टुकड़े करके बांट दिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि एक राष्ट्रीय शरीर बनने की अपेक्षा राष्ट्र अनेक विभागों में सदा के लिए विभक्त हो गया है। सरकार यह अच्छी तरह जानती है कि पृथक् राजनीतिक प्रतिनिधित्व देकर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने का परिणाम निश्चय ही यह होगा कि व्यवस्थापिका सभा कई स्वतन्त्र टुकड़ों मे विभक्त हो जायगी। अंतर्राष्ट्रीय नियम और प्रथा के यह विरुद्ध है। पोलैण्ड या जैकोस्लोवेकिया मे जर्मन अल्पसंख्यकों को ऐसा कोई पृथक् प्रतिनिधित्व नहीं मिला। ग्रीस में अल्पसंख्यक तुर्कों या टर्की में अल्पसंख्यक यूनानियों को भी ऐसा कोई विशेष अधिकार नहीं मिला। कोई प्रजातन्त्र इसकी इजाजत नहीं देता। इसका कारण यह है कि अल्पसंख्यक जातियां व्यवस्थापिका सभाओं में कभी भी एक देश की दृष्टि से विचार नहीं करेंगी। धार्मिक, भाषा सम्बन्धी, सामाजिक और सांस्कृतिक हितों में अन्तर अवश्य होता है; परन्तु अल्पसंख्यकों के इन हितों की रक्षा स्थिर संरक्षणों द्वारा होती है। अन्तर्राष्ट्रीय कानून केवल तीन प्रकार की अल्पसंख्यक जातियों को स्वीकार करता है—धार्मिक, भाषा-सम्बन्धी और जाति सम्बन्धी। इस के सिवा अन्य सब अल्पसंख्यक जातियों की सत्ता से भी वह इन्कार करता है, जिन्हें यहां साम्प्रदायिक निर्णय ने जन्म दिया है।

राष्ट्रीय स्वायत्त शासन का अभाव

परन्तु भारतीय साम्प्रदायिक निर्णय के प्रतिष्ठित लेखकों ने जानबूझ कर अन्तर्राष्ट्रीय साम्प्रदायिक निर्णय को स्वीकार नहीं किया है। उन्होंने प्रजातन्त्र की स्थिति की कल्पना ही भारत में नहीं की और इसीलिये शायद बिलकुल नये राजनैतिक गणित का आविष्कार किया गया है।

इस समय ब्रिटिश सरकार की स्थिति यह है कि शासन-विधान से पूर्व साम्प्रदायिक निर्णय जारी कर शासन-विधान की रूप-रेखा खींच दी जाय। शासन-विधान को इस तरह से तोड़ा-मरोड़ा जायगा कि वह साम्प्रदायिक निर्णय के अनुकूल हो जाय, निर्णय को शासन-विधान के अनुकूल नहीं बनाया जायगा। यह निर्णय हमें आने वाले शासन-विधान की रूप-रेखा बता रहा है, जिसमें राष्ट्रीय स्वायत्त शासन का, जो देश की संयुक्त मांग है, बिलकुल अभाव रहेगा। साम्प्रदायिक निर्णय के आधार पर बना हुआ शासन-विधान एक ऐसे अनेक सिर वाले राक्षस की तरह होगा, जिसकी न एक सम्मिलित आवाज होगी और न एक सम्मिलित कार्य-शक्ति। इस निर्णय को स्वीकार करने का अर्थ यह होगा कि भारत स्वराज्य या प्रजातंत्र का दावा सदा के लिये छोड़ कर अपने को उसके अयोग्य घोषित कर दे। साम्प्रदायिक निर्णय सुधार के नाम पर और भी पीछे ले जाने वाला है। लखनऊ में कांग्रेस ने जो समझौता किया था और जिसे साइमन-कमीशन ने भी स्वीकार कर लिया था, उसे भी यह रद्द कर देता है। अब ब्रिटिश सरकार ने यह फैसला किया है कि भारत को वह शासन-विधान भी न दिया जाय, जिसकी साइमन कमीशन ने सिफ़ारिश की थी, किन्तु उससे भी अधिक खराब, कम राष्ट्रीय और प्रजातंत्रीय और उससे भी अधिक साम्प्रदायिक शासन-विधान दिया जाय।

आशा की किरण

लेकिन अभी तक इस अन्धकार में एक आशा की किरण है। यह निर्णय भारतीय राष्ट्रीयता को खुला चैलेंज है। प्रधान मंत्री स्वयं कहते है कि ज्योंही सब दल परस्पर

युवक भारत के सम्राट



पं० जवाहरलाल नेहरू

"[illegible] पं० जवाहरलाल में एक वीर योद्धा के [illegible] और [illegible] है [illegible] एक राजनीतिज्ञ का विवेक भी है [illegible] स्फटिक मणि की [illegible] पवित्र है। उनकी सत्यशीलता [illegible] से परे है। [illegible] और आनन्दमय योद्धा है। [illegible] के हाथ में सुरक्षित है।"

—म० गांधी

देशी-राज्य और कांग्रेस

——:०:——

(ले०—श्री० जयनारायण व्यास)

——:०:——

श्री० जयनारायण व्यास रियासतों के प्रसिद्ध कार्यकर्ता और रियासती समस्या के विशेषज्ञ हैं। इस लेख में उन्होंने देशी-राज्यों के सम्बन्ध में कांग्रेस की नीति का संक्षिप्त परिचय देते हुए यह बताने का प्रयत्न किया है कि कांग्रेस की हस्तक्षेप न करने की नीति अनुचित है और कांग्रेस को अपनी नीति और भी स्पष्ट तथा निश्चित करनी चाहिये।



कांग्रेस का जन्म सन् १८८५ में हुआ था। इसके जन्मदाताओं ने पहले-पहल 'दी इण्डियन नेशनल यूनियन' की कान्फ़रेन्स पूना में करने का निश्चय किया था। उसी कान्फ़रेन्स का रूपान्तर हमारी कांग्रेस है। उस कान्फ़रेन्स में बंगाल, बम्बई और मद्रास प्रान्तों के अंग्रेज़ी भाषा मे भली भांति परिचित लोगों को निमन्त्रित किया गया था। पहले-पहले जो अधिवेशन हुए, उन में सरकारी नौकरियों और ब्रिटिश भारतीय शासन-संस्थाओं के विषय में ही ज्यादा चर्चाएं थीं। अतः इस बात का अनुमान लगाने में कोई कठिनाई प्रतीत नहीं होती कि कांग्रेस का जन्म ब्रिटिश भारत और ब्रिटिश-भारतीय अंग्रेज़ी-शिक्षित समाज के हित के लिये ही हुआ था।

पहली चर्चा

देशी राज्यों के सम्बन्ध मे कांग्रेस के दसवें अधिवेशन मे पहली चर्चा सन् १८९४ मे हुई थी, जब सिकन्दराबाद के श्री० रामचन्द्र पिलाई ने निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया था :—

"इस कांग्रेस की राय है कि ब्रिटिश शासन के भीतर देशी-राज्यों के प्रेसों पर दबाव डालने वाली भारत-सरकार के विदेशी-विभाग की २५ जून १८९१ की विज्ञप्ति अनुचित, स्वच्छन्दतापूर्ण और हानिकारक है और राजनीति तथा लोगों की स्वतन्त्रता के विरुद्ध है। यह कांग्रेस इस विज्ञप्ति का नम्रतापूर्वक प्रबल विरोध करती है तथा अनुरोध करती है कि वह बिना विलम्ब रद्द कर दी जाय।"

सन् १८९५ की ग्यारहवीं कांग्रेस में, जो पूना में हुई थी, फिर उक्त विज्ञप्ति का विरोध किया गया। इस बार प्रस्तावक श्री० सैम्यु के थे, जिन्होंने कहा कि हैदराबाद रियासत में — जो ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैण्ड के संयुक्त राज्य मे भी बड़ी है — उक्त विज्ञप्ति के कारण कई छापेखाने बरबाद हो गये हैं और अंग्रेज़ी पत्र का एक चिथड़ा भी प्रकाशित नहीं होता है।

श्री० रामचन्द्र पिलाई ने अनुमोदन किया। श्री० बी० बी० मोदक तथा ए० एल० देसाई ने मैसूर और काठियावाड़ में जो बीत रही थी, उसका दिग्दर्शन कराया। इससे मालूम होता है कि देशी-राज्यों की राजनीति और राजनीतिज्ञों को १८९४-९५ में ही कांग्रेस में प्रवेश तो मिल चुका था।

जिस विज्ञप्ति का ज़िक्र ऊपर किया गया है, उसका आशय यह था कि बिना पोलिटिकल एजेण्ट की आज्ञा के १ अगस्त १८९१ से कोई अख़बार, पत्रिका आदि किसी रियासत मे प्रकाशित न हो और यदि कोई ऐसा करेगा, तो उसे सप्ताह भर के अन्दर-अन्दर स्थान छोड़कर चले जाने तथा बिना आज्ञा वापिस न आने की आज्ञा दी जावेगी और न मानने की अवस्था मे ज़बरदस्ती निकाल दिया जावेगा।

सन १८९४ ही में कांग्रेस के अवसर पर मैसूर महाराजा की मृत्यु होगई। कांग्रेस ने इस संबंध में शोक का प्रस्ताव पास किया था। इस से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्नीसवीं शताब्दि के अन्त तक भारतीय लोकमत नरेशों के विरुद्ध नहीं था। न राजा लोग देशी राज्यों की जनता की स्वतन्त्रता का अपहरण करने के पक्ष में थे। ये पोलिटिकल एजेन्ट ही थे, जो उक्त विज्ञप्ति के कारण अपने भाव प्रगट करने की जनता की स्वतन्त्रता में बाधक हुए और जिसका असर राजाओं पर इतना पड़ता था कि लार्ड मेकाले जैसे राजनीतिज्ञ ने एक बार लिखा था:—

'These Politicals in the name of advice pass orders on Indian princes which are never refuted"

"ये राजनैतिक अफ़सर सलाह के नाम पर देशी राजाओं पर ऐसी आज्ञायें छोड़ देते हैं, जो कभी टाली नहीं जातीं।"

सन् २७ से

सन् १८९५ के बाद एक आध बार छापेखानों पर प्रतिबन्ध लगाए जाने का विरोध करने वाला प्रस्ताव दोहराया अवश्य जाता है, पर उस के बाद लम्बे अर्से तक देशी राज्यों के सम्बन्ध मे कोई चर्चा ही नहीं होती। बेशक, कांग्रेस मे देशी राज्यों के प्रतिनिधि जाते अवश्य हैं, पर वे भी ब्रिटिश इण्डिया की जटिल समस्याओं में ऐसे उलझ जाते हैं कि उन्हें अपने जन-स्थल याद ही नहीं रहते। बंग-भंग तथा स्वदेशी-आन्दोलन, फिर रौलेट एक्ट और सत्याग्रह, इन सब हलचलों में लोग इतने मशगूल होते रहे कि उन्हें यह ख़याल ही नहीं रहा कि देशी राज्यों के अन्दर भी दुख-दर्द हैं। परन्तु देशी राज्यों से सम्बन्ध रखने वाले कांग्रेस-वादियों मे कुछ विचार कानपुर कांग्रेस के अवसर पर पैदा होते हैं। उसी समय से कांग्रेस के साथ २ देशी-राज्य-प्रजा-परिषद् के अधिवेशन भी शुरू हो जाते हैं। इन्हीं दिनों काठियावाड़ और राजपूताने की अनेक रियासतों मे जागृति उत्पन्न हो रही थी और अनेक कार्य-कर्त्ताओं ने अपने २ संगठन कर आन्दोलन भी शुरू कर दिये थे। अन्त मे सन् १९२७ मे प्रायः सब रियासती सार्वजनिक कार्य-कर्त्ताओं ने इस बात की आवश्यकता अनुभव की कि देशी-राज्यों मे विशेष निश्चित प्रणाली और उत्साह से संगठित हो कर कार्य करना चाहिए। इसी विचार के परिणाम-स्वरूप १९२८ में बम्बई देशी-राज्य-प्रजा-परिषद् का स्वतंत्र संस्था के तौर पर जन्म हुआ। इस ने पहला कार्य यह किया कि कांग्रेस के पास एक डेपूटेशन भेज कर रियासती-प्रजा की स्थिति उसे समझाई।

इस वर्ष कांग्रेस का अधिवेशन मद्रास में हुआ था। यहीं से देशी-राज्यों का प्रश्न कांग्रेस में अधिक ज़ोरों से आने लगता है। मद्रास-कांग्रेस मे डेपूटेशन की हलचलों के कारण निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुआ:—

'इस कांग्रेस की ज़ोरदार राय है कि देशी-रियासतों की प्रजा और उन के शासकों दोनों के हित की दृष्टि से उन्हें अपनी रियासतों मे बहुत शीघ्र उत्तरदायित्वपूर्ण शासन स्थापित कर लेना चाहिये।

इसके बाद सन् १९२८ मे कलकत्ता कांग्रेस मे एक प्रस्ताव पास होता है, जो देशी-राज्यों से सम्बन्ध रखने वाले दूसरे सभी प्रस्तावों से अधिक महत्वपूर्ण है। वह यह है:—

समझौता कर लेंगे, वे इस निर्णय को फाड़ देंगे। वे स्वयं इस पर खेद प्रकट करते हैं कि वह ऊपर से लादी गई चीज़ है, आपसी समझौते से उत्पन्न नहीं।

क्या मैं नम्रता-पूर्वक यह कह सकता हूं कि सभी सज्जन भारतीय समस्या के अन्तर्राष्ट्रीय समझौते पर सहमत हैं, जो संसार के सर्वोच्च मस्तिष्कों और राजनीतिज्ञों का निर्णय है। यूरोप के २० देशों में, जहां साम्प्रदायिक समस्या बहुत उग्र व तीव्र है, यही अन्तर्राष्ट्रीय समझौता चालू है। टर्की में भी यही समझौता जारी है। क्या भारतीय मुसलमान मुस्लिम राष्ट्र टर्की के आदर्श का अनुकरण न करेंगे?

——:——

'यह कांग्रेस खुदमुख्त्यार देशी-राज्यों से आग्रह के साथ कहती है कि वे अपने राज्यों में प्रतिनिध्यात्मक संस्थाओं के आधार पर उत्तरदायित्व-पूर्ण विधान चलावें और फौरन ऐसी घोषणाएं निकालें या ऐसे कानून पास करें, जिन में सभा समिति बनाने, भाषण करने और लिखने की स्वतंत्रता तथा जान-माल की हिफाजत तथा इसी तरह के दूसरे मूल नागरिकता के अधिकारों को सुरक्षित रखने की बात हो।"

"यह कांग्रेस रियासती जनता को विश्वास दिलाती है कि वहां उत्तरदायित्वपूर्ण शासन स्थापित कराने के उनके आन्दोलन के साथ कांग्रेस की पूरी सहानुभूति है और वह उस का समर्थन करती है।"

सन् १९२९ में लाहौर कांग्रेस में एक प्रस्ताव द्वारा रियासती शासकों को प्रजा को उत्तरदायित्व-पूर्ण शासन और नागरिकता के मौलिक अधिकार देने के लिये कहा गया।

इन घटनाओं से यह मालूम हो सकता है कि कांग्रेस की देशी-राज्यों के सम्बन्ध में कितनी सहानुभूति है और वह उस के आन्तरिक शासन का क्या स्वरूप उचित समझती है

हस्तक्षेप न करने की नीति

परन्तु कांग्रेस देशी रियासतों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की नीति के बिल्कुल विरुद्ध मालूम होती है। इस सम्बन्ध में कई नेताओं के वक्तव्य भी निकले हैं। इसका असर अत्यन्त भयंकर हुआ है। देशी राज्यों को राज्यों के भीतर सार्वजनिक कार्य, विशेष कर कांग्रेस-कार्य की प्रगति को रोकने के लिए हानिकारक आज्ञायें निकालने की सुविधा हुई है। यही कारण है कि देशी राज्यों की प्रजा में असन्तोष फैल रहा है और कांग्रेस में वे अपना असन्तोष प्रगट करने के लिए उतावले हो रहे हैं।

देशी राज्यों में कांग्रेस-कमेटियां

देशी राज्यों में कांग्रेस का काम होना चाहिये, यह तो सब स्वीकार करते हैं, पर कांग्रेस की तरफ से होना चाहिये या नहीं, यह विषय अभी स्पष्ट नहीं हुआ है। कांग्रेस का वर्तमान विधान देशी राज्यों में कांग्रेस की जिला-कमेटियां बनाने की मनाई सी कर रहा है। उसके "और प्रांत के अन्दर आई हुई रियासतें भिन्न-भिन्न जिलों को सौंप दी जायं" यही शब्द सिद्ध करते हैं कि जिले या जिला कांग्रेस कमेटिया ब्रिटिश भारत ही में हैं।

दूसरी तरफ हम यह भी देखते हैं कि देशी राज्यों में जिला कांग्रेस कमेटियां बहुत पहले से मौजूद हैं। अभी हाल में महात्मा गांधी के कुछ वक्तव्य निकले थे, जिनसे प्रतीत होता था कि देशी राज्यों में कांग्रेस का कोई संगठन ही नहीं बन सकता। इस पर महाकौशल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के सभापति सेठ गोविन्ददास जी ने महात्मा जी को पत्र लिखा और उत्तर में महात्मा जी ने स्पष्ट कर दिया कि देशी राज्यों में कांग्रेस कमेटियां बनाई जा सकती हैं। बघेलखण्ड में कई जिला कांग्रेस कमेटियां पहले से मौजूद हैं, उन्हें रहना चाहिये और उन के द्वारा काम भी होना चाहिये।

देशी राज्यों में कांग्रेस कमेटियां बनने न बनने के सम्बन्ध में 'विधान' तथा 'रिवाज' अलग-अलग हैं। अतः आगामी कांग्रेस को यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिये और यह निश्चय कर लेना चाहिये कि कांग्रेस समस्त राष्ट्र की है और देशी राज्य भी उसके वैसे ही अंग हैं, जैसे ब्रिटिश भारत के प्रांत, जिला और तहसीलें।

—:o:—

तरुण तपस्वी

कपिलवस्तु के सिंहासन के सुख की ममता त्याग—
किस गौतम के यौवन में यह जाग उठा वैराग?
बोधि-वृक्ष है नहीं, हिमाचल की छाया के नीचे,
कौन मनस्वी तप करता है करुण लोचन मीचे?

बोल उठीं गंगा की लहरें—
"यह है वह नर-नाहर,
जिसकी जग में अमर कीर्ति
माता का लाल, "जवाहर"।

नगर-नगर में ग्राम-ग्राम में, गृह गृह में जा-जा कर,
आज़ादी की अलख जगाता, तन में भस्म रमा कर;
यह त्यागी है कोटि कोटि तरुणों के उर का स्वामी,
सारा भारतवर्ष आज है इसका ही अनुगामी।

× × × ×

ओ भारत के तरुण तपस्वी,
तुम प्रतिपल, जन-जन में,
स्वतन्त्रता की ज्वाला बन कर
धधक उठो मन-मन में।

—सोहनलाल द्विवेदी, बी० ए०

नवयुवकों के सरताज



पं० जवाहरलाल नेहरू



(ले०—श्री पट्टाभि सीतारामैया)

श्री पट्टाभि सीतारामैया महात्मा गांधी के अनन्य-भक्त और सच्चे सहयोगी ही नहीं, एक अच्छे विचारक भी हैं। सत्याग्रह और गांधी जी की फिलासफी को उस आन्दोलन में क्रियात्मक भाग लेने के कारण आप खूब समझ सके हैं।

इस लेख में आपने सत्याग्रह का दार्शनिक विवेचन करते हुये यह बताया है कि भारत में पाश्चात्य आदर्श सफल नहीं होगा यहां तो भारतीय आदर्श ही सफल होगा। सत्य, अहिंसा, प्रेम का आदर्श जहां वांछनीय है, वहा क्रियात्मक भी है। इस के द्वारा भारत ने अनेक विजय प्राप्त किये हैं और आगे भी इस के द्वारा सफलता प्राप्त करेगा।

सत्याग्रह का जीवन और राजनीति के प्रति सन्देश

जो आंदोलन अभी पूर्णता तक नहीं पहुंचा, जिसने अभी अपनी कुमारावस्था मे ही बाहिर कदम नहीं रखा, उसका अध्ययन करना और फिर उस पर अपने विचारों को लेखबद्ध करना बहुत कठिन और जिम्मेवारी का काम है। खास कर के उस व्यक्ति के लिये, जो उस आन्दोलन का पक्का हिमायती हो और उसकी महती शक्तिमत्ता में हार्दिक विश्वास रखता हो। ऐसे व्यक्तियों पर प्रतिद्वन्द्वी लोग हंसते हैं। शत्रु उनसे घृणा और द्वेष करते हैं। प्रत्येक आन्दोलन को इस विषम अवस्थाओं में से गुजरना पड़ता है। पहले उसे केवल एक उपहास का विषय समझा जाता है और तत्सदृश किसी नकली आन्दोलन से उसकी तुलना की जाती है या फिर उसके किसी ऐसे भद्दे और अविकसित रूप को पकड़ लिया जाता है, जिसमे से उसे अपनी प्रारम्भावस्था में गुजरना पड़ा हो।

'सत्याग्रह' और 'निष्क्रिय प्रतिरोध' में भेद

हम 'सत्याग्रह' और 'निष्क्रिय प्रतिरोध' को लेते हैं। इनका पारस्परिक सम्बन्ध हीरे और कोयले की मिसाल से स्पष्ट हो जायगा। हीरा और कोयला एक ही मौलिक तत्त्व के दो भिन्न-भिन्न रासायनिक रूप हैं। 'सत्याग्रह' और 'निष्क्रिय प्रतिरोध' तभी एक समझे जा सकते हैं, यदि हीरे और कोयले को आवश्यक रूप से एक समझा जाये। जिस प्रकार हीरा और कोयला दो भिन्न-भिन्न पदार्थ हैं, उसी प्रकार 'सत्याग्रह' और 'निष्क्रिय प्रतिरोध' भी दो भिन्न-भिन्न आन्दोलन हैं। इतना ही नहीं, इन दोनों में परस्पर महान् विरोध

(भ्रात् महात्मा)

ओं को यह
होना चाहिये
महात्मा गाधी के आगमन से कुछ समय पूर्व 'सत्याग्रह' का प्रारम्भिक प्रकाश निष्क्रिय प्रतिरोध' के रूप में ही हुआ था और सर्वसाधारण जनता इसे इसी रूप में समझती थी। सर्व प्रथम १९१७ में श्रीमती एनी बीसेण्ट के नजरबन्द किये जाने पर कांग्रेस ने 'निष्क्रिय प्रतिरोध' की धमकी दी थी, लेकिन उनकी रिहाई के साथ ही यह विचार समाप्त हो गया। इसके बाद महात्मा गांधी भारतवर्ष के राजनीतिक मंच पर कदम रखते हैं। आपने पहले कांग्रेस के बाहिर से रौलट-एक्ट के विरुद्ध और फिर कांग्रेस के अन्दर से खिलाफत को नष्ट करने तथा पंजाब के हत्याकाड के विरुद्ध सत्याग्रह-संग्राम प्रारम्भ किया। इसमें जनता के काफी बड़े भाग ने हिस्सा लिया, लेकिन वह इसे उसी आन्दोलन का पुनरुद्धार समझता था, जिसकी धमकी दी गई थी।

'सत्याग्रह' के विविध रूप

वर्तमान राजनीतिक घटना-चक्र ने एक ऐसे आन्दोलन को जन्म दिया है, जिसके भिन्न-भिन्न अंगों का विकास भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न-भिन्न नामों से हुआ है। इसका एक अंग 'निष्क्रिय प्रतिरोध' भी रहा। उसमें अभिमान, कटुता घृणा और हिंसा के लिये स्थान था। अपने 'असहयोग' के रूप में इसे उन दग्ध-हृदय और दुःखी लोगों का आश्रय मिला, जो अपने शासकों से अत्यन्त असन्तुष्ट थे और उन्हें चोट तो पहुंचाना चाहते थे, लेकिन बिना प्रहार किये। जब इसने 'भद्र-अवज्ञा' आन्दोलन का रूप धारण किया, तो इसे इस बात में कुछ समय लगा कि इसके अनुयायी अपने व्यवहार में 'भद्रता' पर भी उतना ही बल दें, जितना कि वे

ध
न भाप
क थे। इस में
हृ। द्वेष भय कातरता क्रोध व प्रतीकार की भावना का स्थान प्रेम साहस, धैर्य सहिष्णुता और आत्म पवित्रता न ले लिया। धन को सेवा व त्याग के सामने घुटने टेकने पड़ने है। शत्रु पर बल प्रयोग से विजय प्राप्त न करके उस के हृदय पर विजय प्राप्त का जाती है। इस नव युग का उद्वेजित सन्त्रस्त और भय विह्वल मानवीयता के प्रति संदेश है कि सम्पूर्ण भय हमे भुरा बना कर हमारे इर्द गिर्द चक्कर लगा रहे हैं। जिस दिन हम इस भय और स्वार्थ की भावना का परित्याग कर दो उस दिन हम मृत्यु का भी निर्भय हो कर सामना कर सकें। प्रत्येक सत्याग्रही को सत्य की शोध में घूमना पड़ता है। उस इस की सिद्धि के लिये मनुष्य सरकार, समाज निर्धनता और मृत्यु आदि सब का भय छोड़ना होगा। इस उद्देश्य की प्राप्ति में असहयोग'

हृदय
उस के
करना तो
हम पशु नह
जनक जैसे उ
विजय प्राप्त करन
ग्रह नहीं है।

कहीं कहीं से निराशा के साथ ध्वनि उठती है कि पाशविक बल पर आश्रित अंग्रेजों के शासन पर हम सत्याग्रह से कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं? मैं पूछता हूं कि यदि हमारा दुश्मन पशु न होता तो सत्याग्रह की आवश्यकता ही क्यों पड़ता? जीवन सम्बन्धी जो विचार हमें इस निराशा के गढ़े की ओर धकेलता है वह अब पुराना पड़ गया है। हमारे मानस-पटल पर उक्त निराशा व भय के भाव को अंकित करने वाला पाश्चात्य विचारकों का जिस की लाठी उस की भैंस (r l ftle fit) वाला सिद्धान्त भारतीय समाज का आधार नहीं बन सकता। उस ने हमारी हीन भावनाओं को उद्दीप्त करके अभिमान और उस के अनि-

गी हिंसा और कातरता क
को उद्बोधित कर दिया है।
समाज तो सत्याग्रह के
आधार पर खड़ा है जो
भागने का उपदेश न दे
रिग्रह का उपदेश देता है।
र हम सत्याग्रही होकर
पाशविक भावनाओं को
और अपने स्व को पवित्र
ो सेवा भाव और नम्रता
मारे जीवन का अंग बन

ह का आधान कैसे कर सकते है?

न यह कैसे? हम उन गुणों
धर्मों का अपने में आधान
र सकते हैं जिनका सम्मि
नाम सत्याग्रह है? इस
ही मार्ग है— तपस्या।
'अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्या
यमा" 'शौच सन्तोष
ध्यायेश्वरप्रणिधानानि नि
पर आचरण करना।
क सुखों में रमने का अर्थ
को पाशविक भावनाओं को
देना है जो मिथ्याभिमान
ोध की लहर में हमें हिंसा
बदले के मार्ग पर ले जाती
वार्थ के भाव को उत्तेजन
ा है और मनुष्य पागल हो
मृग मरीचिका की भांति पैसे
सज धज के पीछे भागता
ा है। इस में साधनों का
नहीं रहता। अच्छे-बुरे
ढंगों से अपना उल्लू सीधा किया जाता है। आवश्यकता है आत्म सन्तोष की। यह मतलब नहीं कि संसार छोड़ कर मनुष्य सन्यास ले ले अपितु तपस्या पर आचरण करके अपने को आवश्यकताओं की अति के बोझ से मुक्त कर ले और अन्दर के पशु को दबाये। इस नवीन शिक्षा से एक ऐसी नव नैतिक शक्ति पैदा होगी कि सम्पूर्ण भारतवर्ष जो व्यर्थ के दार्शनिक वितण्डावादों से बिछा पड़ा है एक बार फिर संसार के समक्ष उन्नत भाल करके विश्व-विमोहक रूप में खड़ा होगा। इस शिक्षा के अनुसार हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने दुश्मन के साथ भी सम्बन्ध स्थापित करने का उपाय ढूंढे लेकिन कुछ शर्तों पर उसके साथ सहयोग करने से इन्कार कर दे ताकि अपनापन और आत्म-सम्मान की रक्षा हो सके। प्रत्येक व्यक्ति को उचित है कि वह नित्य नियम-पूर्वक अपने हिस्से के श्रम को करे और गरीबों को अपना रोटी-कपड़ा कमाने में मदद करे। इन साधनों की साधना के लिये मन का शरीर पर और आत्मा का मन तथा शरीर पर नियन्त्रण होना आवश्यक है, ताकि शरीर कोई काम मन की आज्ञा के प्रतिकूल न करे तथा मन आत्मा की आज्ञा के प्रतिकूल। इस अवस्था की प्राप्ति के लिये संयम और अपरिग्रह से बढ़ कर क्या साधन हो सकते हैं। भोजन और जिह्वा-स्वाद के सम्बन्ध में संयम का रूप उपवास है। विचार और भाषण के सम्बन्ध में मौन तथा मानसिक और शारीरिक वृत्तियों के सम्बन्ध में ब्रह्मचर्य।

भारत के सार्वजनिक जीवन में सत्याग्रह का चमत्कार

जब साधारण लोग उपवास को केवल शारीरिक यातना मौन को मक्कारी और ब्रह्मचर्य को असम्भव समझ कर इनके व्रतियों पर हंसते हैं तो वे उस उपहासाश्रित आलोचना का आश्रय लेते हैं जिसकी अनिवार्य परीक्षा में से प्रत्येक प्रगतिशील आन्दोलन को अपने प्रारम्भिक दिनों में गुजरना पड़ता है। परन्तु सब प्रगतिशील आन्दोलन ऐसी आलोचना पर विजय पाने में सफल हो जाते हैं और भावी सन्तति की नसों में नवजीवन का संचार करने के साधन बनते हैं। इसी प्रकार पिछले दस वर्षों में भारतवर्ष का सार्वजनिक जीवन भी शुद्ध पवित्र हो गया है। उसमें आत्मिकता की चमक दृष्टिगोचर होता है।

राजनीति में अहिंसा की सफलता

इतना कुछ लिख चुकने के बाद भी कई लोग राजनीतिक मामलों में अहिंसा की सफलता में अवश्य सन्देह करेंगे। ऐसे लोगों के विरुद्ध यह दलील तो है ही कि जिस प्रकार अहिंसा जीवन का एक अकाट्य सिद्धान्त है उसी प्रकार कम से कम हमारी वर्तमान परिस्थिति में राजनीतिक दृष्टि से भी यह एक सन्देहातीत हथियार है। भारतवर्ष जैसे विशाल पराधीन देश में अहिंसा का नीति-रूप से भी आश्रय लिये बिना जागृति पैदा करना असम्भव कार्य है। निःसन्देह ऐसे लोग कम नहीं हैं जो अहिंसा और असहयोग की असफलता के राग अलापते फिरते हैं लेकिन एक ही झलक में किसे सफलता मिलती है? — खासकर के उस देश में जो नवीन आन्दोलन को पकड़ने में अत्यन्त सुस्त हो। फिर, सफलता

और असफलता तो दो सापेक्ष परिभाषायें हैं। कोई असफलता सम्भव है सफलता की सीढ़ी का ही एक डण्डा हो। सफलता अपने आप भी तो असफलताओं की शृङ्खला-परम्परा में अन्तिम शृङ्खला का नाम है।

इसके अतिरिक्त 'अहिंसा' ही एक ऐसा नित्य सिद्धान्त है जो दो विरोधी दलों में सार्वभौम, सार्वकालिक और सार्वजनिक शान्ति व प्रेम उत्पन्न कर सकता है। यदि न्याय व निर्णय की गद्दी पर एक बार हिंसा को बैठा दिया तो दोनों ओर की पारस्परिक दुर्भावनाओं का कभी अन्त न होगा। विजयी और पराजित दोनों इसका समान रूप से सदा प्रयोग कर सकते हैं और करेंगे। आयर्लैण्ड में माइकल कोलिन्स और डि वेलरा के दलों ने रूस में टोटस्की और स्टेलिन के दलों ने तथा जर्मनी में हिटलर और उसके पूर्ववर्ती शासकों ने एक दूसरे के विरुद्ध यही किया। भौतिक विजय कभी स्थिर नहीं होती। शत्रु के हृदय का परिवर्तन ही शाश्वतिक हो सकता है। अहिंसावाद के पक्ष में यह एक बड़ी भारी दलील है। कम से कम उन लोगों को तो इसकी शक्तिशालिता में सन्देह नहीं करना चाहिये जिन्होंने सन् १९३१ में इसके चामत्कारिक प्रभाव का अनुभव किया है। १९३४ में इसमें अवश्य कुछ ढील आ गई है लेकिन निकट-भविष्य में ही इसकी अभूतपूर्व सफलता का कोई नवीन प्रमाण हमारी आंखों के सामने आने वाला है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हमारा बलिदान शुद्ध पवित्र हो और हम विनयशीलता तथा साहस का कभी परित्याग न करें।

सत्याग्रह का श्रीगणेश

अब हम थोड़ी देर इस बात पर विचार करना चाहिये कि वे अलौकिक ज्ञान रखने वाले सिद्धान्त किस प्रकार हमारे रोजमर्रा के लौकिक और राजनीतिक व्यवहार में काम आते हैं। पहले हम इस सिद्धान्त को १९१९ में अमृतसर-कांग्रेस के अवसर पर रंगमञ्च पर आता देखते हैं जब म० गान्धी ने इस बात पर जोर दिया था कि लोगों द्वारा चार अंग्रेजों का वध किये जाने की तथा नेशनल बैंक को आग लगाने की निन्दा की जाये। घमासान विचार-संघर्ष के बाद आधी रात को कांग्रेस की विषय-समिति ने उक्त प्रस्ताव को रद्द कर दिया। इस पर महात्माजी ने कांग्रेस छोड़ने की धमकी दी। वास्तव में तो वह धमकी न थी केवल उस लक्ष्य का संकेत था, जो महात्माजी के सिद्धान्त-प्रेम का अनिवार्य परिणाम होता। अगले दिन बहुतेरी नाक-भौं सिकोड़न के बाद महात्माजी का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। उस दिन से महात्मा गान्धी ने धीरे-धीरे कांग्रेस के कानों में अहिंसा का वास्तविक अर्थ पढ़ाना प्रारम्भ किया। जो कांग्रेस यह समझने लगी थी कि स्वराज्य का मतलब अंग्रेजों को भारतवर्ष से बाहर मार निकालने में है उसे यह सबक सिखाया गया कि अंग्रेज भी भारतीयों के साथ नागरिक की हैसियत से रह सकते हैं और यहां रहने वाले एक भी विदेशी का बाल तक बांका नहीं किया जाना चाहिये।

चौरीचौरा-काण्ड

लेकिन हम देखते हैं कि राष्ट्र उस अग्नि-परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सका और ६ फरवरी १९२२ के दिन चौरीचौरा में एक थाने में २१ सिपाही जिन्दा जला दिये जाते हैं। परिणामस्वरूप १२ फरवरी १९२२ को कांग्रेस की कार्य-समिति ने असहयोग आन्दोलन बन्द कर दिया जो सविनय अवज्ञा का रूप धारण किये हुए था। कार्य-समिति के निर्णय का समर्थन करने के लिए जब २४ फरवरी १९२२ को दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक हुई उस समय पं० मोतीलाल नेहरू और लाला लाजपतराय ने विरोध में लम्बे लम्बे पत्र लिखे। हजारों भारतीय जेलों में बन्द पड़े थे। लेकिन महात्मा गान्धी पर्वत की तरह अचल थे। सत्याग्रही न केवल शत्रु का अपितु मित्रों और सहकारियों तक का भी भय नहीं मानता। उसे केवल सत्य से भय लगता है।

गांधी जी पृथक् होगये

यह सर्व विदित है कि किस प्रकार महात्मा गान्धी जी ने अप्रैल १९२४ में रिहा होने के बाद आंदोलन को पुनः प्रसारित करने का प्रयत्न किया, लेकिन कामयाबी नहीं हुई। आपने कौंसिल-प्रवेश के कार्यक्रम के लिए मैदान खाली कर दिया। १९२५ के सितम्बर मास में आपने खद्दर के संगठन को पृथक् रूप से प्रारम्भ किया और इसी रचनात्मक कार्य में सन्तोष किये रक्खा। एक प्रकार से आप राजनीतिक क्षेत्र से पृथक् ही हो गये।

पुनः रंगमंच पर

लेकिन १९२८ के दिसम्बर मास में पं० मोतीलाल नेहरू ने कलकत्ता से वर्धा को तार पर तार खड़काये और फिर एक बार महात्मा जी को राजनीतिक क्षेत्र की घुमरघेरी में खींच लिया। उसके बाद से महात्मा जी के सब कार्य इसी एक धुरी पर घूमते नजर आते हैं। लाहोर-कांग्रेस डांडी-यात्रा १९३० का सत्याग्रह-आन्दोलन गांधी-अरविन समझौता सरकार की ओर से इसका भंग गोलमेज कान्फरन्स में महात्मा जी का भाग आन्दोलन का पुनः प्रारम्भ प्रधानमन्त्री का साम्प्रदायिक निर्णय गांधी जी का आमरण अनशन-व्रत पूना-पैक्ट द्वारा साम्प्रदायिक निर्णय में संशोधन गांधी जी के अनेक उपवास और रिहाई महात्मा जी का देशव्यापी दौरा उड़ीसा की पैदल-यात्रा फिर २१ दिन का उपवास और अन्तिम ७ दिन का उपवास।

सदियों का काम सालों में

ये सब एक कल्पित भूतकाल की घटनायें मालूम पड़ती हैं। फिल्म की तरह अनेक दृश्य जल्दी-जल्दी आंखों के सामने से गुजर जाते हैं। लेकिन ये कल्पना-जगत् की बातें नहीं हैं। सत्याग्रह के उच्च आदर्शों को सम्पूर्ण जीवन-दृष्टि से व्यावहारिक रूप दे कर दिखाया गया है। सत्याग्रही जीवन को अविभाजनीय 'एक' समझता है न कि जुदा-जुदा विभागों में बंटा हुआ। राजनीति नाम की जीवन की स्वतन्त्रता का है। इसी के आर्थिक सामाजिक और नैतिक नाम से अनेक पहलू हैं। ये सब एक ही हीरे के अनेक पार्श्व हैं। उन को एक दूसरे से अलहदा नहीं किया जा सकता। खद्दर अस्पृश्यता-निवारण और मद्य-निषेध का क्रमशः आर्थिक सामाजिक और नैतिक पहलुओं से सम्बन्ध है। प्रत्येक को एक के बाद एक करके लिया गया और एक सदी का काम दस वर्षों व एक ही वर्ष में होगया। लंकाशायर ने १८०३ में ३ लाख रुपये मूल्य के कपड़े के साथ भारतवर्ष को अपना गुलाम बनाना प्रारम्भ किया था। यह प्रक्रिया १९२९ में अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई जब ७२ करोड़ रुपये का वस्त्र और सूत आता था। लेकिन हमने केवल १० साल के संक्षिप्त काल में इस गुलामी के फन्दे को अपने गले से उतार फेंका है। सदियों के पाप—अस्पृश्यता को हमने बारह मास के अन्दर अनुभव भी किया और धो भी डाला। कोई भी सुधार पूर्ण रूप से तो कभी भी नहीं होता। सुधार की परीक्षा यह नहीं है कि बुराई का एकदम अन्त हो जाय। हमारे अन्दर उसके विरुद्ध नैतिक अनुभूति जागृत हो जानी चाहिये। बस, इतना पर्याप्त है।

सत्याग्रह का भविष्य उज्ज्वल है

'सत्याग्रह ने हमारे सामने ही इतने चमत्कार करके दिखा दिये हैं। भविष्य में अभी यह और अनेक चमत्कार करके दिखायेगा बशर्ते कि महात्मा जी पर अनुयायियों का अनुचित बोझ न पड़ जाय। वे संख्या-वृद्धि से बहुत घबराते हैं। महात्मा जी गुण के भूखे हैं, गिनती के नहीं। एक पवित्र आत्मा जो सत्याग्रह जितनी सफलता प्राप्त कर लेगा उतनी सफलता साधारण आत्मा लाखों होने पर भी नहीं पा सकते।

सत्याग्रह की महानता

सचमुच देश के उद्धार में सत्याग्रह आन्दोलन का बहुत बड़ा भाग है। महानता की यह एक और विशेषता है कि जो चीज महान होती है वह जीवन में महत्तर की ओर प्रगति करता चला जाता है और अन्त में महत् से महायान् के साथ अपने को एक कर देती है।

—०—

> मेरा मजहब हकपरस्ती (सत्य की पूजा) है।
> मेरी मिल्लत (धर्म) कौमपरस्ती है।
> मेरी इबादत (ईश्वर आराधना) मुल्कपरस्ती है।
> मेरी अदालत मेरा अन्तःकरण है।
> मेरी जायदाद मेरी कलम है।
> मेरा मन्दिर मेरा दिल है।
> मेरी उमंगें सदा जवान हैं।
>
> —स्व० लाला लाजपतराय।

आर्यसमाज
और
स्वराज्य-आन्दोलन

———:———

सुप्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी सत्यदेव जी उन व्यक्तियों में हैं जिन्होंने देश और समाज की सेवा का व्रत ले रखा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी के यशस्वी लेखक भी आप हैं। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के राजनीतिक स्वरूप का ऐतिहासिक दृष्टि से आपने अच्छा अनुशीलन किया है। उसी विषय पर आप की लिखी 'दयानन्द दर्शन' पुस्तक की भूमिका में स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा था कि "मैं चाहता हूं कि इस ग्रन्थ को भारतवर्ष के राजनैतिक नेता तथा आर्यसामाजिक पुरुष मनन करने के उद्देश्य से पढ़ें।" अर्जुन के पाठकों को इस लेख में भी अध्ययन के लिये उचित सामग्री मिलेगी।

———:———



(ले०—श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार)

साम नीति से पराजय

"क्या हवा का रुख यह नहीं बता रहा है कि वास्तव में भारतवर्ष का वर्तमान इतिहास बनाने वाला आर्यसमाज ही है; फिर यदि सरकारी कर्मचारी व्याकुल होकर आर्यसमाज पर झूठ दोषारोपण करें तो आश्चर्य ही क्या है?'—ये शब्द हैं जो महात्मा मुन्शीराम जी ने आर्यसमाज पर सरकारी कोप के कारणों की मीमांसा करते हुए सन् १९०८ में लिखे थे। सन् १९०१ से १९१०-११ तक का समय आर्यसमाज के लिये राजनीतिक संघर्ष का समय था। वैसे तो आर्यसमाज का सब जीवन ही संघर्षमय है किन्तु यह संघर्ष इसलिये महत्वपूर्ण है कि इस समय के दिनों में आर्यसमाज को कुचलने की चेष्टा सरकार की ओर से की गई थी। वैसे भी यह चेष्टा बहुत पहले से शुरू थी। स्वनामधन्य पञ्जाबकेसरी लाला लाजपतराय ने अपनी जीवनी में आर्यसमाज के इस गृहकलह के सम्बन्ध में जिससे आर्यसमाज सदा के लिये दो दलों में विभक्त हो गया, लिखा है कि "राय मूलराजजी को महात्मा दल के और राय पैडाराम को कालेज दल के लोग सरकार का भेदिया अथवा दूत समझते और कहते भी थे। लोगों का विचार था कि ये दोनों सज्जन सरकार के संकेत पर समाज में फूट डालकर उसकी शक्ति को बिगाड़ रहे हैं। यदि यह विचार ठीक है जिसको कि ठीक न मानने का कोई कारण नहीं है तो यह कहना होगा कि आर्यसमाज की शक्ति को पहले फूट डालकर कम करने या बिगाड़ने की कोशिश की गई किन्तु उससे आर्यसमाज के अन्दर एक ऐसी नयी शक्ति पैदा होगई जिससे सरकारी कर्मचारी और भी अधिक घबरा उठे। तब सरकार ने आर्यसमाज के विरुद्ध दण्ड का प्रयोग किया और कानून तथा दमन की सब शक्ति लगाकर आर्यसमाज को मिटाने की कोशिश की गई। इस कोशिश में भी सरकार को यथेष्ट सफलता प्राप्त न हुई। तब सरकार ने साम-नीति से काम लिया। आर्यसमाजियों को सरकारी महकमों में ऊंची-ऊंची नौकरियां और रायसाहब तथा रायबहादुर आदि के खिताब खुले हाथों दिये जाने लगे। जिन आर्यसमाजियों पर सरकारी अधिकारी कभी भूलकर भी विश्वास नहीं करते थे उनपर इतना अधिक विश्वास किया जाने लगा कि कुछ ही समय में सरकारी नौकरियों में आर्यसमाजियों का अच्छा प्रवेश हो गया। आर्यसमाज के जिन कार्यों को सदा ही सन्देह की दृष्टि से देखा जाता था सरकारी अधिकारियों द्वारा उनकी प्रशंसा के पुल बांधे जाने लगे। हरिद्वार के परले पार गंगा के उस किनारे पर एकान्त पहाड़ी जंगलों में गुरुकुल का स्थापित किया जाना सरकार के लिये आर्यसमाज का सबसे अधिक सन्देहास्पद और भयानक कार्य था। उस समय सरकारी कागजों में यह लिखा गया था कि—

> 'आर्यसमाज के संगठन में अभी अभी जो महत्वपूर्ण विकास हुआ है वह वास्तव में सरकार के लिये बहुत बड़े संकट का स्रोत है।"

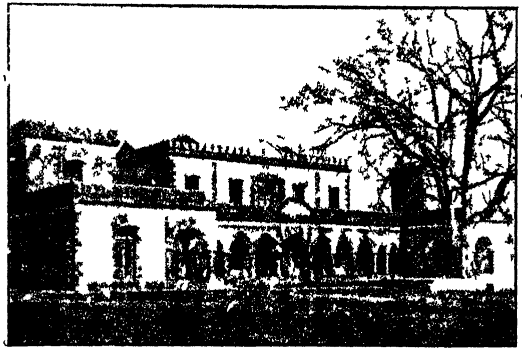
गुरुकुल के सम्बन्ध में ये शब्द तब लिखे गये थे जब आर्यसमाज के प्रतिकूल सरकार दमन-नीति से काम ले रही थी। बाद में जब साम-नीति से काम लिया गया तब उसी गुरुकुल के सम्बन्ध में संयुक्त-प्रान्त के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर (इस समय के लार्ड) मेस्टन ने गुरुकुल में आकर यह कहा था कि "एक आदर्श विश्वविद्यालय के लिये मेरा आदर्श गुरुकुल है। निस्सन्देह इस साम-नीति से सरकार ने आर्यसमाज की शक्ति को कुण्ठित कर दिया। आर्यसमाज की जिस तेज धार से अधिकारी थर-थर कांपा करते थे उस पर गहरा जंग जम गया। आपस की गृह-कलह, जबरदस्त फूट और दस बारह वर्ष का निरन्तर दमन, जिस शक्ति के तेज को कम नहीं कर सका वह कुछ ही दिनों में बिलकुल निकम्मी कर दी गई। आज आर्यसमाज के प्रति सरकार को न कुछ सन्देह है न उससे कुछ भय है और न उसका उसपर कुछ दबाव ही है। निर्वीर्य क्षत्रिय के समान आर्यसमाज का अस्तित्व प्रायः निस्तेज हो गया है।

राष्ट्र-विघातिनी नीति

सरकार ने आर्यसमाजकी बढ़ती हुई शक्ति को कुचलने की इस प्रकार चेष्टा क्यों की? महात्मा मुन्शीराम जी के शब्दों में इस प्रश्न का उत्तर यह दिया जा सकता है कि चूंकि आर्यसमाज भारतवर्ष का वर्तमान इतिहास बनाने वाला था। इतिहास वस्तुतः राष्ट्र की अमिट सम्पत्ति है। विजेताओं ने पराजितों के इतिहास को और जिस सामग्री से इतिहास को बनाया जाता है उस सब को न केवल बिगाड़ने किन्तु मिटाने तक की चेष्टा की है। ऐसा यत्न किया है कि पराजित अपनी प्राचीन सभ्यता, प्राचीन इतिहास, प्राचीन गौरव और प्राचीन परम्परा को एकदम से भूल जाय। भारतवर्ष की अपनी सभ्यता अपना इतिहास, अपना गौरव और अपनी परम्परा इतनी ऊंची, महान्, विशाल और प्राचीन थी कि विजेताओं के लिये यह सम्भव नहीं था कि भारतीयों के सामने से उस सब के आदर्श को दूर किये बिना वे यहां अपने साम्राज्य की जड़ों को मजबूत कर सकते। लार्ड क्लाइव ने कूटनीति के जोर पर गोरों के जिस शासन को भारत में कायम किया हुआ था, लार्ड मैकाले ने उस को अपनी कलम के जोर से स्थिर किया। लगभग १८३५ में लार्ड मैकाले ने भारत की शिक्षा के सम्बन्ध में जो लेख लिखा था वह विजेताओं के उन यत्नों का जीता-जागता उदाहरण है जिनके द्वारा वे पराजितों को अपने आदर्श से दूर ले जाने का यत्न किया करते हैं। लार्ड मैकाले ने उस लेख में भारतीय इतिहास भूगोल विज्ञान, साहित्य, आयुर्वेद और धर्म इत्यादि सभी विषयों का मजाक किया है और उनको एकदम हेय या तुच्छ बताते हुये लिखा था कि "हमें अपने सब यत्न हिन्दुस्थान में एक ऐसी जमात पैदा कर देने में लगा देने चाहियें, जो हमारे और उन करोड़ों के बीच में मध्यस्थ का काम करे, जिनपर हम शासन करेंगे। यह जमात भले ही हाड़-मांस तथा रुधिर में भारतीय रहे, पर आचार-विचार, रहन-सहन और भाषा-व्यवहार में पूरी अंग्रेज हो जानी चाहिये।" अंगरेजी विश्व-विद्यालयों से निकलने वाले युवकों को ऐसा बना लेने में अंगरेज राजनीतिज्ञों को जो सफलता प्राप्त हुई है, वह इतनी स्पष्ट है कि उसके सम्बन्ध में कुछ भी लिखने की आवश्यकता नहीं।

स्वर्गीय महापुरुषों के स्मृति-चिन्ह

विश्वविद्यालय (प्राचीन) गुरुकुल कांगड़ी



राष्ट्रीय शिक्षा के प्रथम आचार्य हुतात्मा श्रद्धानन्द ने आज से [illegible] साल पूर्व शिक्षा [illegible] सरकार से असहयोग की नीति का अवलम्बन कर गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।

गुलाबदेवी हस्पताल



पंजाब केसरी ला० लाजपतराय ने अपने जीवन में तो देश की अनुपम सेवा की ही थी देहान्त के बाद भी देश सेवा होती रहे इस उद्देश्य से गुलाबदेवी हस्पताल की स्थापना की [illegible] लाहौर [illegible] किया [illegible] लाभ हो रहा है

सत्याग्रहाश्रम



म० गांधी के [illegible] सत्याग्रह [illegible] यहीं से होता था [illegible] साल पूर्व महात्यागी महात्माजी ने इसका भी त्याग कर दिया इस समय यहां हरिजन आश्रम है

स्वराज्य-भवन



त्यागमूर्ति प० मोतीलाल नेहरू ने यह आनन्द भवन भारत की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा को दान देकर अपने उत्कृष्ट त्याग का परिचय दिया था अब इसका नाम स्वराज्य भवन है और इसमें कांग्रेस का स्थायी कार्यालय है

लार्ड मैकाले ने कुछ ही दिनों में इस सफलता को पूरी तरह भांप लिया था और अपने पिता को १८३६ में ही एक पत्र लिखा था—

जो भी हिन्दू अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण कर लेता है वह अपने धर्म में सच्ची श्रद्धा खो बैठता है। कुछ लोग केवल दिखावे के लिये उसको मानते हैं। परन्तु अधिकतर ईसाई हो जाते हैं। यह मेरा पक्का विश्वास है कि यदि शिक्षा की हमारी योजना का पूरी तरह अनुसरण किया गया तो अब से ३० बरस बाद बंगाल के प्रतिष्ठित एवं उन्नत घरानों में एक भी हिन्दू अपने धर्म में श्रद्धा रखने वाला नहीं रहेगा। यह भी दिन के प्रकाश के समान स्पष्ट है कि लार्ड मैकाले का यह दृढ़ विश्वास कितना सत्य सिद्ध हुआ है।

भयानक षड्यन्त्र

अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली द्वारा जिस प्रकार उन्नत तथा प्रतिष्ठित घराने के नवयुवकों की अपने धर्म पर से श्रद्धा दूर की जा रही थी उसी प्रकार सर्वसाधारण में यह कार्य ईसाई-मिशनरियों द्वारा किया जा रहा था। ईसाई-मिशनरियों में अपने धर्म में श्रद्धा थी और वे उस श्रद्धा से ही प्रेरित हो कर भारत में ईसाई-धर्म का प्रचार कर रहे थे—इस को मानने के लिये लेखक तय्यार नहीं है और न वह यह ही मानने को तय्यार है कि उपकार की किसी पवित्र व ऊंची भावना से प्रेरित हो कर ईसाई पादरी इस देश में आये थे। उस का यह दृढ़ विश्वास है कि लार्ड मैकाले जैसे राजनीतिज्ञों और ईसाई पादरियों में समूचे भारत को ईसाई बना देने का एक बड़ा गहरा व्यापक और भयानक षड्यन्त्र था। ईसाइयों का पहला गिरोह जो मद्रास आया उस की यह स्पष्ट और निश्चित योजना थी कि एक चौथाई शताब्दी में समूचे भारत को ईसाई बना दिया जायगा। हिन्दू-समाज की उस समय की अस्त-व्यस्त सामाजिक-अवस्था और धर्म-जीवी लोगों की धर्म के नाम पर दी जाने वाली मनमानी व्यवस्थाओं से ईसाई पादरियों ने पूरा पूरा लाभ उठाया। मकान के किवाड़ खोल और दिया बुझा कर बेखबर सोने वाले मालिक के मकान को जैसे चोर सहज ही में लूट लेते हैं लहलहाती हुई खेती की रखवाली करने की चिन्ता से बेसुध होकर मस्त पड़े रहने वाले के खेतों को जैसे पशु अनायास ही चर जाते हैं और जैसे शस्त्रास्त्र से सुसज्जित रहने पर भी अनियन्त्रित और अव्यवस्थित सेना पर दुश्मन सुगमता से विजय प्राप्त कर लेते हैं, ठीक वैसे ही ईसाई पादरियों ने भारतवर्ष में ईसाईपन का प्रचार करने में सफलता प्राप्त करनी शुरू की। परिवार के परिवार और गांव के गांव ईसाइयत की दीक्षा में दीक्षित होने लग गये। पश्चिम की यह लहर आंधी से भी अधिक तेजी के साथ सारे देश में फैल गई। किसी लेखक ने यह बिलकुल ठीक लिखा है कि 'पश्चिम के विजयी लोगों ने शराब गोली और बाइबिल के जोर पर ही विदेशों में अपना शासन कायम किया है।' भारत के सम्बन्ध में उस लेखक का यह कथन सोलह आना सत्य है। यहां गोली से भी उतना काम नहीं लिया गया जितना शराब और बाइबल से लिया गया है।

आर्यसमाज कार्यक्षेत्र में

देश के आदर्श देश की नैतिकता और देश की राष्ट्रीयता को मिट्टी में मिला देने वाली इस लहर का मुकाबला करने के लिये छोटे-बड़े कई यत्न किये गये। पर वे सब इस लहर में विलीन होते चले गये।। बंगाल में ब्राह्म-समाज और बम्बई से प्रार्थना-समाज के रूप में प्रारम्भ किये गये यत्नों को यह लहर वैसे ही अपने में समा गई जैसे पानी की छोटी धारायें किसी नदी में जा मिलती हैं। काशी के पण्डितों के हाथ में धर्म के नियन्त्रण की बागडोर देने के बाद सब देश-वासी बिलकुल निश्चिन्त हुये पड़े थे। पर, शास्त्री नीलकण्ठ सरीखों ने भी जब ईसाइयत के सामने सिर झुका दिया और श्री केशवचन्द्र सेन सरीखों ने यह उद्घोषित कर दिया कि हिन्दू धर्म किसी काम का नहीं है तब ईसाइयत की इस वेगवती धारा से टक्कर लेने वाला कौन था? कौन उसके प्रवाह को रोक सकता था? यह समय वस्तुत बहुत नाजुक था। देश का भाग्य जीवन-मृत्यु के बीच में लटक रहा था। पराजित पद दलित, साधन-हीन और असहाय देश को सदा के लिये पराधीन बनाये रखने का षड्यन्त्र पूरी सफलता प्राप्त कर रहा था। यह समय था जब महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्थापित आर्य-समाज कार्यक्षेत्र में आता है और जीवन-मृत्यु की सन्दिग्ध अवस्था में से देश का उद्धार कर उस के सामने प्राचीन आदर्शों को उपस्थित करता है।

गुरुकुल या 'स्पष्ट राजद्रोह'

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों और व्याख्यानों में राष्ट्रीयता का जिस प्रकार प्रतिपादन किया है उस का परिचय देने से पहले आर्यसमाज के कार्य पर दृष्टिपात कर लेना चाहिये। महर्षि दयानन्द की मृत्यु के बाद उन का स्मारक बनाने की चर्चा होती है। कई प्रस्ताव सामने आते हैं। लाहौर में आर्यसमाज का विशेष जोर था। वहां स्कूल तथा कालेज खोलने का प्रस्ताव हुआ और वह कार्य में भी परिणत हो गया। लाहौर में स्कूल और कालेज का १८८६ में खुलना एक असाधारण घटना थी। वह कालेज केवल आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द का ही स्मारक न था, किन्तु शिक्षा-क्षेत्र में ईसाई-पादरियों और सरकारी अधिकारियों द्वारा किये जाने वाले प्रयत्नों का एक जबरदस्त मुकाबला भी था। आगे चल कर कालेज की पढ़ाई के सम्बन्ध में मतभेद होने पर हरिद्वार के पास कांगड़ी गांव में गुरुकुल की स्थापना हुई। कालेज को सरकारी अधिकारियों ने अपने चंगुल में फंसा लिया। पंजाब विश्व-विद्यालय के साथ उस का सम्बन्ध हो गया। सरकारी कालेजों और आर्यसमाजी कालेज में नाममात्र का ही भेद रह गया। कालेज के संचालकों की इस असफलता पर आर्यसमाज में भारी विक्षोभ की एक भयानक लहर उठ खड़ी हुई और गुरुकुल के रूप में उस ने मूर्तरूप धारण किया। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल बिलकुल नया और अद्भुत परीक्षण था। इंग्लैण्ड के इस समय के प्रधान-मन्त्री मि० रैम्जे मैकडानल्ड ने १९१४ में गुरुकुल आने के बाद जो लेख लिखा था उसमें गुरुकुल के वास्तविक रूप उसके आदर्श और ध्येय का पूरी तरह उल्लेख किया था। उन्होंने लिखा था कि—

सरकारी लोगों के लिए गुरुकुल एक पहेली है। अध्यापकों में एक भी अंग्रेज नहीं है। अंग्रेज़ी साहित्य की पढ़ाई और ऊंची शिक्षा के लिए पंजाब युनिवर्सिटी द्वारा नियुक्त पुस्तकें भी यहां काम में नहीं लाई जातीं सरकारी विश्वविद्यालय की परीक्षा के लिये यहां से एक भी विद्यार्थी को नहीं भेजा जाता विद्यार्थियों को गुरुकुल से अपनी ही उपाधियां दी जाती हैं। सचमुच यह सरकार की अवज्ञा है। घबराये हुये सरकारी अधिकारी के मुख से पहली बात यही निकलेगी कि यह स्पष्ट राजद्रोह है। सन् १८३५ के प्रसिद्ध लेख (जिस की ओर ऊपर संकेत किया गया है) में भारत की शिक्षा के सम्बन्ध में मेकाले के सम्मति प्रगट करने के बाद भारत के शिक्षा के क्षेत्र में यह पहला ही प्रशस्त यत्न किया गया है। उस लेख के परिणामों से प्रायः सभी भारतीय असन्तुष्ट थे, किन्तु जहां तक मुझ को मालूम है गुरुकुल के संस्थापकों के सिवा किसी और ने उस असन्तोष को कार्य में परिणत करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में नया परीक्षण नहीं किया है।

गुरुकुल के सम्बन्ध में महात्मा गान्धी का मत यह है कि 'आर्यसमाज के कार्य का सर्वोत्तम परिणाम गुरुकुल की स्थापना है। यह सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय संस्था है, जिसका शासन और संचालन सब स्वतन्त्र है। ऐसे और भी उद्धरण दिये जा सकते हैं। इन सब उद्धरणों का सारांश यह है कि आर्यसमाज द्वारा गुरुकुल का स्थापित किया जाना वास्तव में देश के स्वराज्य-आन्दोलन की दृष्टि से बहुत बड़ा कार्य है। भले ही आर्यसमाज का लक्ष्य वेदों के विद्वान अथवा आर्य-समाज के उपदेशक पैदा करना ही क्यों न रहा हो किन्तु सरकारी लोगों के लिए वह स्पष्ट ही राजद्रोह-पूर्ण कार्य था। जिस कार्य द्वारा बहुत सोच-विचार के बाद अपने शासन को स्थिर तथा दृढ़ करने की सरकार की नीति का विरोध होता हो और सरकार की सत्ता की इतनी स्पष्ट तथा पूर्ण अवज्ञा होती हो वह यदि राजद्रोह नहीं था तो और क्या था? आर्यसमाज गुरुकुल द्वारा जिन उपदेशकों के पैदा होने की आशा रखता था उन के सम्बन्ध में सरकार का अनुमान यह था कि—

इस (गुरुकुल) प्रणाली में चाहे कितने ही दोष क्यों न हों किन्तु भक्तिभाव और बलिदान की उच्च भावना से प्रेरित जोशीले धर्मपरायण व्यक्तियों का दल तैयार करने का यह सब से सुगम और उपयुक्त साधन है। इस पद्धति से जो युवक तैयार होंगे वे सरकार के लिए अत्यन्त भयानक होंगे। उन में वह बुद्धि

होगी, जो इस समय के आर्यसमाजी उपदेशकों में नहीं है। उन का उद्देश्य सारे भारत मे एक ऐसे जाति-धर्म की स्थापना करना होगा जिस से सारे हिन्दू भ्रातृभाव की एक शृङ्खला मे बध जायेंगे। वे सब दयानन्द के 'सत्यार्थप्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास की इस आज्ञा का पालन करेंगे कि श्रद्धा और प्रेम से अपने तन मन धन—सर्वस्व को देश हित के लिये अर्पण कर दो।" एक लम्बे गुप्त सरकारी लेख की ये कुछ पंक्तियां हैं। भले ही आर्यसमाजी आर्यसमाज को धार्मिक, सार्वभौम, ब्राह्मण या उपदेशक बताकर गुरुकुल को भी वैसा ही बताने की कोशिश क्यों न करें, पर इस सचाई से कौन इन्कार कर सकता है कि गुरुकुल के सौ में सौ स्नातक राष्ट्रीय वृत्ति के हैं, एक भी सरकारी नौकरी मे नहीं है, आर्यसमाज मे उपदेशक का कार्य करने वालों की अपेक्षा कांग्रेस का काम करने वालों की संख्या कहीं अधिक है और कांग्रेस के असहयोग तथा सत्याग्रह-संग्राम में जिस निर्भीकता सचाई, त्याग, बलिदान और तत्परता का परिचय उन्होंने दिया है, वैसा कहीं और मिलना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। गुरुकुल की स्थापना देश के स्वराज्य-आन्दोलन के लिये आर्यसमाज का इतना महान् कार्य है जितना कि किसी भी और संस्था ने अब तक भी नहीं किया है। महात्मा गांधी के असहयोग-आन्दोलन से समूहरूप में देश का ध्यान १९२०-२१ में जिस राष्ट्रीय शिक्षा की ओर आकर्षित हुआ, आर्यसमाज ने उस का श्रीगणेश १९०१ में ही गुरुकुल के रूप में कर दिया था और राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र मे उस समय तक एक सफल परीक्षण भी करके दिखा दिया था। भारत की प्राचीन सभ्यता प्राचीन इतिहास तथा प्राचीन साहित्य के जिस उच्च आदर्श को लार्ड मैकाले और उसके साथी मटियामेट करने पर तुले हुए थे, उसी की रक्षा के लिये आर्यसमाज ने गुरुकुल की स्थापना की थी और इस प्रकार उनके यत्नों की सफलता को खटाई में डाल दिया था।

षड्यन्त्र का भण्डाफोड़

गुरुकुल की स्थापना के समान ही आर्यसमाज के प्रचार पर भी थोड़ा विचार करना चाहिये। पश्चिम से आंधी के समान उठी हुई ईसाइयत की लहर के लिये आर्यसमाज चीन की दीवार साबित हुआ। ज्यों ही आर्यसमाज की चट्टान के साथ ईसाइयत की लहर टकराती है, ईसाइयों के सुख-स्वप्न टूट जाते हैं और सरकारी अधिकारियों को भी मालूम हो जाता है कि ईसाई पादरियों के सहारे अपने राज्य को यहां स्थिर अथवा दृढ़ करना उतना सुगम नहीं है। आर्यसमाज के प्रचार-कार्य ने उन हिन्दुओं के कान खड़े कर दिये जिनको

ऋषि दयानन्द की राष्ट्रीयता के मूर्तरूप



स्वामी श्रद्धानन्द

भेड़-बकरियों की तरह ईसाई पादरी बिना रोक-टोक के मूंड रहे थे। हजारों के बीच मे खड़ा हुआ आर्यसमाजी युवक भी बूढ़े पादरी का मुंह बन्द कर देता था। हिन्दुओं के पुराने रीति-रिवाज, अन्धविश्वास, छूत-छात सरीखी प्रथा और खान-पान के भेद-भाव से ईसाई बहुत लाभ उठा रहे थे, आर्यसमाज ने उस सब पर ऐसा कुठाराघात किया कि उनकी जड़ों को ही हिला दिया। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के खण्डनात्मक कार्य पर इसी दृष्टि से विचार किया जाना चाहिये। ईसाई-पादरियों और सरकारी अधिकारियों के षड्यन्त्र का आर्यसमाज ने जो भण्डा फोड़ कर दिया उससे आर्यसमाज पर सरकार की इतनी टेढ़ी दृष्टि रही कि उसको नामशेष करने मे सरकार ने कुछ भी उठा नहीं रखा। आर्यसमाज के हर एक कार्य और ऋषि दयानन्द के हर एक लेख मे से सरकार को राजद्रोह की गंध आने लगी। वैलेण्टाइन शिरोल ने स्वामीजी की गोकरुणानिधि तक को राजद्रोही ग्रन्थ बताया है और उनके गोवध बन्द कराने के यत्नों को भी ब्रिटिश-विरोधी-भावना मे भरा हुआ कहा है। उसने यहां तक लिखा है कि "जहां-जहां आर्यसमाज का जोर है, वहां-वहां राजद्रोह प्रबल है। आर्यसमाज का विकास हठात् सिख-सम्प्रदाय की याद दिलाता है जो सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में नानक द्वारा प्रारम्भ किये जाने पर धार्मिक एवं नैतिक सुधार का आन्दोलन था और पचास ही वर्षों मे हरगोविन्द की अधीनता में वह एक शक्तिशाली राजनीतिक और सैनिक संगठन बन गया।

आर्यसमाज का दमन

आर्यसमाज को कुचलने के लिये किये गये सरकारी दमन की सब कहानी यहां देने की आवश्यकता नहीं। संकेत मात्र के लिये इतना ही लिखना बस होगा कि सेनाओं की राजभक्ति के लिये आर्यसमाजियों को सब से अधिक भयानक समझा जाता था। छावनियों मे आर्यसमाजियों का जाना निषिद्ध था। सेना विभाग की नौकरियों में कइयों को आर्यसमाजी होने से ही अलग किया गया था। स्वाभिमानी अथवा देशभक्त सिख अथवा मुसलमान को भी आर्यसमाजी कहा जाता था। सरदार अजातसिंह का आर्यसमाज के साथ परोक्ष में भी कोई सम्बन्ध नहीं था पर उन को आर्यसमाजी कहा गया। कोमागाता मारू के वीर नेता बाबा गुरुदत्तसिंह भी आर्यसमाजी ठहरा दिये गये थे। पटियाला का मुकद्दमा आर्यसमाज को कुचलने के लिये किये गये यत्नों में सब से अधिक कमीनी हरकत है। सत्यार्थप्रकाश के प्रतिकूल भी मुकद्दमे चलाये गये थे। पुलिस की दस नम्बर की लिस्ट आर्यसमाज के रजिस्टरों पर से तय्यार की जाती थी। साप्ताहिक अधिवेशनों पर भी निगरानी रखी जाती थी। महात्मा मुन्शीराम जी के शब्दों में आर्यसमाजी आउटला थे, राजदण्ड का सब विधान उन के लिये ही था और कोई भी उन पर निशाना साध सकता था। पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय और भाई परमानन्द जी पर इतनी टेढ़ी दृष्टि का कारण उन का आर्यसमाजी होना भी था।

सन्देह निराधार न था

सरकार का यह सब सन्देह और दमन बिलकुल निराधार ही न था। आर्यसमाज का कार्य जहां सरकार के प्रतिकूल था वहां उसके प्रवर्तक ऋषि दयानन्द का जीवन और उन के आदेश उपदेश भी स्वातन्त्र्य-भावना—राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत थे। देशप्रिय तथा

देशभक्ति की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। सन १८५७ के पराजय के बाद देशवासियों में स्वदेशी स्वराज्य चक्रवर्ती साम्राज्य आदि की भावना उद्दीप्त करने वाले पहले व्यक्ति ऋषि दयानन्द थे। उनके सत्यार्थप्रकाश में केवल खण्डन-मण्डन समाज-सुधार और धर्म-प्रचार की ही बातें नहीं हैं, अपितु उस में देश-प्रेम, देश-भक्ति, स्वदेशी स्वराज्य और चक्रवर्ती-साम्राज्य के आदेश उपदेश, तथा आदर्श का भी जहां-तहां प्रतिपादन किया गया है। छठे समुल्लास में राजनीतिक चर्चा के सिवा और कुछ भी नहीं है। ऋषि दयानन्द के स्वराज्य का आदर्श कितना ऊंचा था? उन्होंने लिखा है कि:—

'कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह-रहित अपने और पराये का पक्षपात-शून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय, और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" ऐसे उद्धरणों का संग्रह कर के एक स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखा जा सकता है। वेदों की राष्ट्रीय दृष्टि से व्याख्या करके उन में स्वराज्य तथा स्वदेशी आदि के उपदेश की ओर निर्देश करने वाले भी पहले महापुरुष दयानन्द ही हैं। 'आर्याभिविनय' में ईश्वर की राजा महाराजा, महाराजाधिराज, सम्राट आदि शब्दों से प्रार्थना की गई है। उसी में 'क्षत्राय पिन्वस्व' का महर्षि ने यह अर्थ किया है कि.—

'हे महाराजाधिराज परब्रह्मन्' 'क्षत्राय' अखण्ड—चक्रवर्ती राजा के लिये शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, पराक्रम और बलादि उत्तम गुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत पुष्ट कर। अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों। यजुर्वेद-भाष्य अध्याय १ मन्त्र में महर्षि ने स्पष्ट आदेश दिया है कि.—

"मनुष्यैर्द्विभ्यां प्रयोजनाभ्यां प्रवर्तितव्यम्। प्रथमम्—अत्यन्तपुरुषार्थशरीरारोगाभ्यां चक्रवर्तीराज्यश्रीप्राप्तिकरणम्। द्वितीयम्—सर्वां विद्याः पठित्वा तासां सर्वत्र प्रचारीकरणम्।" अर्थात—"मनुष्यों को अत्यन्त पुरुषार्थ करके शरीरारोग्य द्वारा चक्रवर्ती राज्य की प्राप्ति करनी चाहिये और सब विद्यायें पढ़ कर उन का प्रचार करना चाहिये।' इसी दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने ब्राह्मसमाज और प्रार्थना-समाज में स्वदेश-भक्ति की बहुत न्यूनता बताने के बाद लिखा है कि:—

आर्यसमाज के साथ मिलकर उस के उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति अपने तन-मन-धन से सब जन मिल कर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्य-समाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।" ऋषि दयानन्द के इस उपदेश और आदेश को सामने रख कर यदि उनके जीवन-कार्य पर विचार किया जाय तो सहज में समझ में आ सकता है कि महर्षि देश-प्रेम की किस भावना से प्रेरित होकर किस आशा से राजपूताने के देशी राज्यों में घूमते फिरते थे? उन्होंने बारी बारी से जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, शाहपुर आदि राज्यों को परखा किन्तु उनकी आशा किसी से भी पूरी न हुई।

स्वर्गीय श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, जिन्होंने कुछ वर्ष इङ्गलैंड में बिताने के बाद अपना शेष जीवन पेरिस में पूरा किया और वहां 'इण्डिया होम' की भी स्थापना की, ऋषि दयानन्द के अन्यतम शिष्य थे। इससे कौन इन्कार कर सकता है कि उनके हृदय में देशभक्ति और देशप्रेम का अंकुर पैदा करने वाले ऋषि दयानन्द ही थे। ऋषि दयानन्द के राष्ट्रीय रूप की प्रतिमूर्ति गुरुकुल के संस्थापक दिवंगत स्वामी श्रद्धानन्द जी थे, जिन के जीवन की कई घटनायें भारत के राजनैतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति के संग्राम में सदा ही अभिमान के साथ याद की जाती रहेंगी। उत्तरीय भारत विशेषत. पंजाब और संयुक्तप्रांत की साधारण जागृति में आर्यसमाज का बहुत बड़ा हाथ है। इन प्रान्तों के नेताओं और कार्यकर्ताओं में बड़ी संख्या आर्यसमाजियों की है। शिक्षा, समाज-सुधार, धार्मिक जागृति आदि के क्षेत्र में भी उस ने उल्लेखनीय कार्य किया है। उस के इस सब कार्य से देश के स्वराज्य-आन्दोलन में निश्चय ही विशेष शक्ति और बल प्राप्त हुआ है। इस प्रकार स्वराज्य-आन्दोलन में आर्यसमाज का जो हिस्सा है, उस पर यथेष्ट अभिमान किया जा सकता है।

नैतिक पतन

पर, यह भी कुछ कम दुःख का विषय नहीं है कि इतने गौरव और अभिमान का कार्य करने वाली इतनी महान संस्था इतनी जल्दी अपने राजनीतिक स्वरूप को बिल्कुल भूल ही गई। आज उस के लिये अपने संस्थापक के आदेश तथा उपदेश, जीवन तथा बलिदान और त्याग तथा निष्ठा का कुछ भी अर्थ नहीं है। तभी तो आर्यसमाज देश की आजादी की लड़ाई से बिल्कुल किनारा काटे हुए है। उस के सामयिक नेताओं ने यहां तक घोषणा कर दी है कि आर्यसमाज धार्मिक संस्था है, राजनीति से उस का कोई प्रयोजन नहीं। राजनीतिक दृष्टि से भी ऊंचे से ऊंचे आदर्श को सामने रख कर स्थापित किये गये आर्यसमाज का यह सहज नैतिक पतन एक स्वतन्त्र अथवा पृथक् लेख का विषय है।

—:०:—

अकालों की करुण-कथा

यद्यपि अठारहवीं शताब्दी में भारत की दशा बहुत खराब हो गई थी, तथापि उन सौ सालों में चार बार से अधिक अकाल नहीं पड़ा था। लेकिन १९वीं सदी में अंग्रेजी राज्य फैलते ही हमारी सुजला सुफला शस्यश्यामला भारत-भूमि में देशव्यापी और भीषण दुर्भिक्ष ने अपना घर बना लिया। सन् १८०१ से १८२५ तक भारत में अकाल से १० लाख आदमी मरे। क्रमशः बढ़ते बढ़ते १९वीं सदी के उत्तरार्ध के १८ दुर्भिक्षों में प्रायः २ करोड़ ६० लाख आदमी मरे। इनमें से केवल १० वर्ष के अन्दर १ करोड़ ९० लाख भारत के लाल हा अन्न! हा अन्न!! करते हुये क्षुधा की भीषण यन्त्रणा में छटपटा कर मर गये। इस हृदय-विदारक दुर्घटना पर हतभाग्यों को सम्बोधन कर मि० डिग्बी ने लिखा था— You have died, you have died uselessly"

१७९३ से १९०० तक पृथ्वी भर में ५० लाख से अधिक आदमी नहीं मरे। पर इसी समय भारत में सवा दो करोड़ आदमी भूख से मर गये।

—:—

भूमि-समस्या

(ले०—चौ० मुख्त्यारसिंह भू० पू० एम० एल० ए०)

किसानों की भूमि-समस्या आजकल की महत्वपूर्ण समस्याओं में से एक है। चौ० मुख्त्यारसिंह भू० पू० एम० एल० ए० इस विषय पर अधिकार-पूर्ण लिख सकते हैं। उन की लिखी Rural India' अत्यन्त प्रामाणिक पुस्तक है।

इस लेख में उन्होंने सरकार को परामर्श दिया है कि यही समय है जब सरकार को बहुत कम सूद पर रुपया मिल सकता है। उसे सब जमींदारों से जमीन खरीद कर किसानों को बेच देनी चाहिये और ५०-६० साल की किश्त बांध देनी चाहिये। इस तरह कुछ ही समय में किसान भूमि के मालिक बन सकते हैं।

भगवान ने मनुष्य को जीविका उपार्जन करने के लिए भूमि उपहार में दी है और उस का घटाना या बढ़ाना मनुष्य के अधिकार से बाहर है। यह सम्भव है कि किसी भूमि को जहां पानी खड़ा रहा है अथवा किसी और प्रकार से उसकी उर्वरा-शक्ति नष्ट हो गई हो, मनुष्य ठीक करके भूमि के रकबे में कुछ वृद्धि कर सके। इसी प्रकार भूमि को अनेक कामों में लाकर रकबे में न्यूनता भी की जा सकती है। परन्तु यह वृद्धि और न्यूनता इतनी थोड़ी है कि मनुष्य भूमि के घटाने या बढ़ाने में कोई विशेष महत्व नहीं रखता। यह मनुष्य के अधिकार में है कि वह अपने ज्ञान वा जानकारी से किसी खेत से एक मन फी बीघा अथवा १० मन फी बीघा गेहूं पैदा कर सके। जब भूमि भगवान का दिया हुआ उपहार है और उसकी उपज का न्यून या अधिक होना मनुष्य के परिश्रम पर निर्भर है तो प्रत्येक जाति और देश का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह ऐसे नियम बनाये, जिस से पृथ्वी से अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सके। साधारणतया कोई भी देश ऐसा नहीं है, जिस ने इस समस्या का हल करने का प्रयत्न न किया हो। प्रत्येक देश ने अपने इतिहास और जनता के विचारों के अनुसार भूमि-समस्या का हल किया है। इस छोटे से लेख में भूमि-समस्या सम्बन्धी सभी पहलुओं पर विचार करना असम्भव है, परन्तु एक शब्द में यह कह सकते हैं कि प्रत्येक जाति व देश को वे सब उपाय काम में लाने उचित हैं, जिन से खेत की उपज अधिक से अधिक की जा सके। यदि ऐसा करने में किसी व्यक्ति को हानि भी पहुंचे, तो उसकी परवाह नहीं करनी चाहिये।

भारतवर्ष में

भारतवर्ष में जो नियम भूमि के बांट और उस के स्वत्व के विषय में पाये जाते हैं, वे किसी प्रकार भी आदर्श नियम नहीं कहे जा सकते। जो मनुष्य भूमि से खाद्य पदार्थ उत्पन्न करता है, उसका भूमि पर कोई स्वत्व नहीं है। आज वह इस खेत को जोतता है, कल उसे दूसरे खेत की देख-रेख करनी पड़ती है। जिस देश में यह स्थिति हो, उस में यह असम्भव है कि किसान मन लगा कर खेती कर सकें। जहां किसान को भूमि में कोई अधिकार प्राप्त है वहां उसे जमींदार को कर देना पड़ता है, जो प्रायः इतना अधिक होता है कि उस के देने के बाद किसान के पास कुछ भी नहीं बचता। ऐसे देश में, जिसे कृषि-प्रधान कहा जाता है, खेती करने वालों की दशा अत्यन्त शोचनीय है।

यह सिद्धान्त भली-भांति प्रत्येक देश में माना जा चुका है कि भूमि की उपज बढ़ाने का एकमात्र उपाय यह है कि खेती करने वाले किसानों का भूमि पर सब प्रकार से पूर्ण अधिकार हो जिस से किसान भूमि को अपनी सम्पत्ति समझ कर अपने बच्चों का पालन-पोषण कर सकें। जमींदारी अथवा भूमि में अन्य प्रकार के अधिकार रखने वाले मनुष्यों की संख्या प्रत्येक देश में रहती आई है परन्तु प्रत्येक देश के निवासियों ने इस समस्या को हल करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने जमींदारों को हटा कर किसान को भूमि का स्वामी बनाना अपना ध्येय समझा है। रूस जैसे देश में तो जमींदारों को कुछ दिये बिना ही उन की भूमि छीन कर किसान को स्वामी बना दिया गया है। बहुत से देशों में समाज में घोर परिवर्तन करना उचित नहीं समझा गया और सरकार की तरफ से जमींदारों को जमीन खरीद कर किसानों को खरीदने की सुविधा पैदा करके भूमि के अधिकार खेती करने वालों को दे दिये गये हैं।

किसानों का भूमि पर स्वामित्व

हमारे देश में कौन तरीका काम में लाना चाहिये इस बात का विचार हमें करना है। हमें यह कहने में तनिक भी आपत्ति नहीं कि आज कल की अवस्था कदापि सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती। जो किसान खाने के लिए अन्न, वस्त्र के लिए कपास पैदा करता है वह भूखा और नंगा रहता है। दूसरे मनुष्य जो उससे ५० वां भाग भी काम नहीं करते वे अधिक खा-खाकर अजीर्ण दूर करने के लिए औषधि-सेवन करते हैं, उत्तम से उत्तम वस्त्र पहन कर न केवल वर्षा गर्मी और जाड़े से अपने शरीर को बचाते हैं, प्रत्युत वस्त्र पहनना शरीर की शोभा के लिए आवश्यक समझते हैं। भूमि पर किसान का स्वत्व पैदा करने के लिए एक तरीका यह हो सकता है कि ऐसा कानून पास कर दिया जाय कि जो मनुष्य जिस भूमि को जोतता है, वही उसका मालिक हो और यदि उस की आय इतनी हो कि वह खान-पीने से कुछ बचा सके तो सरकार को कर दिया करे। यह तरीका बहुत से लोगों को अच्छा प्रतीत होगा परन्तु इस में भी एक आपत्ति है। उन लोगों को, जिन्होंने बहुत सा धन दे कर भूमि के स्वामित्व को खरीदा है बिना कुछ दिये राजा से रंक बना देना कहां तक न्याय्य और उचित है? यह ठीक है कि प्राचीन काल में राजा तक भी भूमि का राजा न समझा जाता था परन्तु आज दशा बदल गई है और प्राचीन नियमों को आदर्श समझना ठीक नहीं है।

दूसरा तरीका, जो हमारे विचार में न्यायपूर्ण और सम्भव प्रतीत होता है यह है कि साधारण जमींदारों की जमींदारियां सरकार खरीद ले और उन्हें किसानों को लम्बे ऋण पर बेच दे। उस ऋण का सूद न्यून से न्यून होना चाहिये और उसकी अवधि ५० या ६० वर्ष की हो। जितना कि किसान आज लगान देता है वह उतना या उससे न्यूनाधिक उस समय तक देता रहे, जब तक वह भूमि का पूरा मूल्य अदा न कर दे। इस प्रकार कुछ दिनों में किसान अपनी भूमि के मालिक बन जावेंगे और यह समस्या बहुत दूर तक हल हो जायगी। जर्मनी व इंग्लिस्तान आदि देशों में इस प्रकार के कानून बनाये जा चुके हैं और उनपर कार्य भी किया गया है। डेनमार्क जो आज सारी दुनिया में कृषि की वस्तुएं दूध, मक्खन आदि पैदा करने में अग्रणी है, स्वयं आज से ४० वर्ष पूर्व बड़ी हीन अवस्था में था। आज उसकी अवस्था के उन्नत होने का सबसे बड़ा कारण यही है कि वहां १०० पीछे ९९ किसान ऐसे हैं, जो भूमि के स्वयं स्वामी हैं। यह दशा स्वयं पैदा नहीं हुई परन्तु सरकारी नियमों के अनुसार धीरे-धीरे किसानों के लिये भूमि खरीद कर उनको स्वामी बनाया गया है और आज यह देश संसार में इस बात के लिये अग्रसर है कि वहां प्रत्येक किसान भूमि का स्वामी है।

आज सौभाग्य से देश में यह स्थिति आ पहुंची है कि सरकार बहुत थोड़े सूद पर सुगमता से रुपया उधार ले सकती है। जमींदारों की जमींदारियां आज से १० साल की अपेक्षा आधे और चौथाई दामों पर मिल सकती हैं। वस्तुतः यह कहना सर्वथा सत्य है कि भूमि खरीदने के लिये यह उत्तम से उत्तम समय है और जाति की उन्नति के लिये सस्ते दर पर रुपया ऋण लेने के लिये भी आदर्श समय है। यदि सरकार कर्ज लेकर जमींदारों की भूमि खरीदकर किसानों को भूमि का मालिक बना देवे और वह कर्ज किसान को उसी मद पर देकर धीरे-धीरे वसूल कर लेवे तो सुगमता से किसान अपने खेत का स्वामी बनाया जा सकता है।

यह ठीक है कि ऐसा करने में कर लगान के अपने नियमों में सरकार को परिवर्तन करना होगा और यह भी सम्भव है कि उस कमी को पूरा करने के लिये जो मालगुजारी हटाने से होगी नये कर लगाने पड़ें, परन्तु भूमि पर किसानों का स्वामित्व अत्यन्त आवश्यक है इसीलिये उसके मार्ग में आने वाली बाधाओं को किसी तरह दूर करना ही होगा।

—०—



फासिज्म और समाजवाद

(ले०—श्री सम्पूर्णानन्द बनारस)

ससार की अन्तर्राष्ट्रीय प्रगति को समझने के लिये फासिज्म और समाजवाद के सघर्ष को समझना जरूरी है। लेखक की सम्मति मे भारतीय काग्रेस म भी फासिज्म जोर पकड रहा है। यह फासिज्म क्या है समाजवाद क्या है और इनका पू जीवाद से क्या सम्बन्ध है, इन सब विषयो की चर्चा विद्वान् लेखक ने इस लेख मे भलीभाति करत हुए बताया है कि पू जीवाद के सशक्त, सन्नद्धरूप का नाम ही फासिज्म है। अभी एक बार इसका फिर बोलबाला होगा परन्तु रात के बाद दिन की तरह इसकी भी प्रतिक्रिया होगी और उग्र पू जीवाद के स्थान पर उग्र समाजवाद स्थान लेगा।

समाजवाद और फासिज्म

इधर कुछ दिनो म यूरोप मे समाजवाद (साम्यवाद या ` - ali)क साथ ही फासिज्म का प्रचार बढ रहा है। समाजवादी राज्य तो एक रूस ही है, पर फासिज्म के सिद्धान्त क अनुसार—यद्यपि सिद्धान्त क स्थान पर पद्धति कहना अधिक उचित होगा क्योंकि फासिज्म का कोई सिद्धान्त, कोई दार्शनिक आधार नहीं है—चालित होन वाले इटली और जर्मनी दो राज्य वर्तमान हैं। आस्ट्रिया का शासन भी उसी ढग का है और ब्रिटेन में नेशनलिस्ट सरकार तथा अमरीका मे रूजवल्ट भी देश पात्र के अनुसार उसी ओर झुक रहे हैं। इस का अर्थ यह हुआ कि फासिज्म इस समय अधिक जोर पकड रहा है। यह स्वाभाविक भी है। वस्तुत समाजवाद न ही फासिज्म को जन्म दिया है। समाजवाद क आचार्य कार्ल मार्क्स न जर्मन दार्शनिक हीगेल क डायलेक्टिकल मेथड' को मान लिया ह। हीगल की अन्य बातों को न मानन हुये भी उन्होंन यह स्वीकार कर लिया है कि इस जगत् का विकास 'डायलेक्टिकल विधि म होता है। यह सिद्धान्त यों समझ में आ सकता है। साधारण तर्कशास्त्र के अनुसार तो दो विरोधी वस्तुयें एक साथ नहीं रह सकतीं। प्रकाश और अप्रकाश का कोई मेल नहीं है। पर जगत् मे—जीवित विकासमान जगत् में—दूसरी ही बात है। जो वस्तु किसी क्षण-विशेष में होती है, वह अपनी विरोधी वस्तु को जन्म देती है या व्यक्त करती है। दूसरे क्षण मे यह विरोधी वस्तु प्रधान हो जाती है और पहली वस्तु तिरोहित हो जाती है। और तीसर क्षण मे इन दोनों विरोधियो के सयोग मे एक तीसरी ही वस्तु बन जाती है जिस में इन दोनों का अन्तर्भाव हो जाता है। अब फिर वही क्रिया चलती है। फिर इस का विरोधी व्यक्त होता है, फिर दोनो क सयोग से नयी वस्तु बनती है। हमने वस्तु शब्द का प्रयोग किया है पर इस में अवस्था का भी अन्तर्भाव है। यदि पहली वस्तु को 'वाद कहें तो दूसर को प्रतिवाद और तीसरी को 'युक्तवाद कह सकते हे। हीगेल और उस क बाद मार्क्स न इन्हें थीसिस, ऐन्टिथीसिस और सिनथिसिस कहा है। यदि जगत् क आदि मे शुद्ध चेतन अहम् की सत्ता थी तो उस ने स्वय प्रतिक्रिया-स्वरूप अचेतन अनहम्' सत्ता को व्यक्त किया और फिर इन दोनों क मेल मे अहमनहम् चेतन-अचतन सत्ता उत्पन्न हुई। इसी प्रकार सीढी-सीढी उतरत उतरत जगत् का वर्तमान रूप बना है। यह नियम अध्यात्म की ही भाति राजनीति धर्म और अर्थशास्त्र क क्षेत्र में भी लागू है। क्रिया मे प्रतिक्रिया अवश्य उत्पन्न होती है पर बाद में क्रिया-प्रतिक्रिया म मिल कर कोई तीसरी ही चीज उत्पन्न होती है। कुछ काल में यह तीसरी चीज अपनी प्रतिक्रिया पैदा करती है। यों ही चक्र चलता है। पुरान इतिहास मे बहुत दूर तक जान की आवश्यकता नहीं है पर उस युग पर ध्यान दीजिये जब वह पद्धति, जिसे पू जीवाद कहत हैं, सर्वत्र स्थापित हो गई थी। वह युग अब भी चला नहीं गया है पर जा जरूर रहा है। धर्माचार्यों, राजपुरुषो पत्रकारों विद्वानो सब न ही इसकी प्रशसा की थी और और उस स्वार्थ और प्रतियोगिता-बुद्धि को जो इस की तह मे है उन्नति का मूलमन्त्र ठहराया था। जिस स्वार्थ म प्रेरित होकर पू जीपति स्वय कमान म प्रवृत्त होता है वह परार्थ का साधक माना गया और जिस लोभ के वशीभूत होकर मनुष्य दूसरो को दबा कर स्वय आग बढना चाहता है वह सभी मनुष्यो म व्यापक होन मे उन्नति का ईश्वरनिर्मित सोपान (सीढी) माना गया। परन्तु पू जीवाद बहुत दिनो तक अकेला टिक नहीं सकता था। वह इस बात पर निर्भर था कि पू जीपतियों म अनियन्त्रित प्रतियोगिता हो और श्रमिक मजदूरी लेकर मालिकों क लिये चुपचाप काम करत जाय। यह बात चिरस्थायी नहीं रह सकती थी। इस वाद का प्रतिवाद भी व्यक्त होना ही था। पू जीवाद न स्वय समाजवाद को जन्म दिया। इस बात को सभी समाजवादी मानत हैं कि यदि पहले पू जीवाद न आता तो समाजवाद क लिये कोई स्थान न था। समाजवाद प्रत्यक समाज क लिये प्रत्यक अवस्था क लिये उपयुक्त और आवश्यक नहीं है पर समाजवाद भी डाइलेक्टिक नियम के भीतर है। समाजवाद का प्रचार होगा पर बाद म सम्भवत. किसी ऐसे युक्तवाद' का प्रचार होगा जिसमे पू जीवाद और समाजवाद दोनों का अन्तर्भाव हो जायगा। कुछ लोगों की धारणा है कि फासिज्म ही यह अपेक्षित युक्तवाद है, वह पू जीवाद और समाजवाद का समन्वय करान आया है। पर यह धारणा गलत है। अभी समाजवाद का काफी प्रचार नहीं हुआ, उसने पू जीवाद को पूर्णतया परास्त ही नहीं किया है। अत अभी किसी युक्तवाद या किसी प्रकार के समन्वय का समय ही नहीं आया है। फासिज्म समाजवाद क विरुद्ध अवश्य है पर उस प्रकार नहीं जिस प्रकार कि प्रतिवाद वाद के विरुद्ध होता है। वस्तुतः फासिज्म पू जीवाद का ही एक रूप है। पू जीवाद न ही समाजवाद का मुकाबिला करन के लिये फासिज्म का रूप धारण कर लिया है। थोडा सा विचार करने से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है।

नाजी अपने को फासिस्ट नहीं कहना चाहते। ऐसा कहने से हिटलर को मुसोलिनी का शिष्य मानना पडेगा। पर दोनो विचारधाराओं के ही फलस्वरूप 'कार्पोरेट स्टेट' स्थापित हुई है। दोनो की शासन-विधि मे बहुत अन्तर है पर एक बात जो स्पष्ट और निर्विवाद है वह यह है कि दोनों न निजी सम्पत्ति की रक्षा का बीडा उठाया है। समाजवादियों क विभिन्न सम्प्रदायो मे इस विषय मे मतभद हो सकता है कि व्यक्तियो के पास घर मकान, रुपया-पैसा आदि थोडी बहुत निजी सम्पत्ति रहने पाय या न रहने पाय पर इस बात में तो सभी का एक मत है कि उत्पादन, विनिमय और वितरण के मुख्य साधन — कल-कारखान जमींदारिया खान रेल, जहाज बैक — यह सब समाज की सम्पत्ति हो जाय। इसी स्थल पर फासिज्म क सब सम्प्रदायों का मतैक्य देख पडता है। क्या इटली मे और क्या जर्मनी में, यह बात साफ कर दी गई है कि इस प्रकार की सम्पत्ति पूर्ववत् व्यक्तियो और कम्पनियों के ही हाथ मे रहेगी। समाज की या राष्ट्र की सम्पत्ति न बनाई जायेगी। इस का तात्पर्य यह है कि इन देशों क पू जीपतियों को एक दूसर के साथ प्रतियोगिता करन और एक दूसरे को तबाह करन, अपने देश क और दूसरे देशों क गरीबों को तबाह करने दुर्बल देशों को गुलाम बनान और समय समय पर पृथ्वी को रक्तरजित करान का अवसर मिलता जायगा और इन के लिए धन कमाने वाले श्रमिक मजदूर क मजदूर रह जायेंगे। रूस तक में जहा श्रमिकों का राज है, हडताल करन का अधिकार है, पर जर्मनी और इटली में नहीं है, उल्टे

कांग्रेस पार्लमेन्टरी बोर्ड के सूत्रधार

कां० पा० बोर्ड के अध्यक्ष



डा० एम० ए० अन्सारी

मद्रास कां० पा० बोर्ड के संयोजक



श्री० एस० सत्यमूर्ति

बोर्ड के परम सहायक



श्री राजगोपालाचार्य

कां० पा० बोर्ड के स्थानापन्न अध्यक्ष



मौ० अबुलकलाम आजाद

बिहार में बोर्ड के मुख्य सहायक



बा० राजेन्द्रप्रसाद

कां० पा० बोर्ड के मुख्य कर्णधार



महात्मा गांधी

बम्बई बोर्ड के संयोजक



श्री भूलाभाई देसाई

पंजाब व यू० पी० बोर्ड के संयोजक



बैरिस्टर आसफअली

बम्बई में बोर्ड के मुख्य सहायक



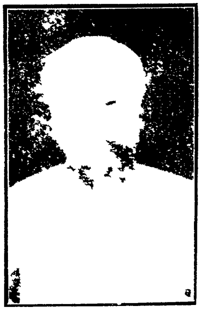
सरदार वल्लभभाई पटेल

बंगाल बोर्ड के संयोजक



डा० विधानचन्द्र राय

बोर्ड में सिखों के प्रतिनिधि



सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर

श्रमिकों की सभी संस्थायें तोड़ दी गई हैं। समाजवाद पूर्णरूपेण लोकतंत्रात्मक है और समाज को वर्गहीन बनाना चाहता है। यह दूसरी बात है कि उसे कुछ दिनों के लिए अहलकारी शासन कायम करना पड़ा है। इस के विरुद्ध इन देशों में वर्ग-विशेष का आधिपत्य कायम रक्खा गया है और अधिनायक-तन्त्र (Dictatorship) इस का शुद्ध रूप है।

फासिस्ट सरकारें पूंजीपतियों पर भी कुछ न कुछ नियन्त्रण करती हैं। मजदूर हड़ताल नहीं कर सकते, पर उन से काम लेने के लिए कुछ नियम बनाये जाते हैं। माल कितना पैदा किया जाय, किस प्रकार बचा जाय, इन बातों पर भी ध्यान दिया जाता है। यह सब पूंजीवाद के ही हित की बात है। पूंजीपतियों ने यह देख लिया है कि अनियन्त्रित प्रतियोगिता उन के लिए घातक है। यदि बिना सोचे-समझे सब लोग माल तैयार करते चले जाय तो आपस में लड़ कर एक दूसरे को ही नष्ट कर देंगे और पूंजीवाद (पूंजीपति राज्य) का ही अन्त हो जायगा। मजदूरों को तो बोलने का अधिकार नहीं है, पर उन को आराम से रखना तो जरूरी है ही। लोग अपने घोड़ों, बैलों को कोई विशेष अधिकार नहीं देते, पर जब उन से काम लेना है, तो कुछ शारीरिक आराम तो देने ही हैं। सरकारें भी पशुओं के साथ निर्दयता को दण्ड समझती हैं। इसी दृष्टि से इन देशों में श्रमिकों के लिए भी कुछ विधान है और बन रहे हैं। इस प्रकार इन देशों में जो नियन्त्रण पूंजीपतियों की गति-विधि पर हो रहा है वह पूंजीवाद की रक्षा के लिए ही है। एक देश के पूंजीपति कुछ लोभ-संवरण करके ही दूसरे देश के पूंजीपतियों से लड़ने में समर्थ हो सकते हैं। इस प्रकार की लड़ाई अवश्यम्भावी है। समाजवाद का दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय है। राष्ट्रीय समाजवाद अधूरा है। समाजवाद की सफलता इसी में है कि सब देश आपस में सहयोग करें परन्तु पूंजीवाद की आत्मा प्रतिस्पर्धा है। यह प्रत्यक्ष है कि रूस का लक्ष्य अन्तर्राष्ट्रीय है पर इटली और जर्मनी जैसे देश राष्ट्रवादी हैं। उन के यहां बच्चे बच्चे को यह शिक्षा दी जाती है कि राष्ट्र ही सब कुछ है, अपने राष्ट्र को अन्य सब राष्ट्रों से ऊपर उठाओ, अन्य राष्ट्रों के हित को अपने राष्ट्र के हित का साधन बनाओ।

इन बातों से स्पष्ट है कि फासिज्म समाजवाद के विरुद्ध है। यदि उसे प्रतिक्रिया कहे, तो वह ऐसी प्रतिक्रिया या प्रतिवाद नहीं है जिससे आगे चल कर कोई उपयोगी युक्तवाद, कोई सच्चा समन्वय, निकल सकता है। वह उस पूंजीवाद का ही उग्र रूप है जिस के विरुद्ध प्रतिक्रिया-स्वरूप समाजवाद का जन्म हुआ है। रूस में पूंजीवाद का पूर्णरूपेण विकास नहीं हुआ था, इसीलिए वह समाजवाद का खुल कर विरोध न कर सका पर जिन देशों में पूंजीवाद विकसित रूप में है, उन में वह अपने को तयार कर रहा है। उस के इस सशस्त्र सन्नद्ध रूप का ही नाम फासिज्म है।

१९१७ में पूंजीपति तैयार न थे पर अब उन को अवसर मिल गया है। एक बार फासिज्म का बोलबाला होगा। भारत में भी वह सिर उठा रहा है। नाम को तो समाजवादी संस्थायें खुल रही हैं, पर स्वयं कांग्रेस के भीतर फासिज्म जोर पकड़ रहा है। परन्तु जिस प्रकार रात के बाद दिन आता है, उसी प्रकार उसकी प्रतिक्रिया होगी। उग्र पूंजीवाद का प्रतिवाद उग्र समाजवाद ही हो सकता है।

——:——

भारत-विजय की ख़ूबी

अंग्रेजों की भारत-विजय करने की ख़ूबी इस बात में है कि इस विजय में आदि से लेकर अन्त तक ब्रिटेन को अपने पास से एक भी पैसा खर्च नहीं करना पड़ा। अंग्रेजों ने भारत को इसी के रुपये और इसी के रक्त से जीता है। इस के पश्चात् एशिया में ब्रिटेन ने देश जीतने व्यापार बढ़ाने, अन्वेषण करने आदि में जो भी धन व्यय किया वह सब भारत के कोष से चुकाया गया। जो लाभ हुआ वह सब का सब अंग्रेजों की जेब में गया और जो हानि हुई वह सब की सब भारत के मत्थे मढ़ी गई।'

—लाजपतराय।

—:०:—

कांग्रेस और असेम्बली

श्री आर० एस० पण्डित स्व० प० मोतीलाल नेहरू के दामाद् हैं। आप इलाहाबाद के प्रमुख कांग्रेसी कार्यकर्ता, विद्वान् और अच्छे लेखक हैं। इस लेख मे आपन सरकार के सुधारों का रहस्योद्घाटन करते हुये वताया है कि असेम्बली, अन्य सरकारी मंस्थाओं तथा सुधारों का उद्देश्य राजनीतिक संग्राम से नेताओं का ध्यान हटा कर अपने मायाजाल में फंमाना है। इसलिये काग्रेस को असेम्बली-निर्वाचन की भूल नहीं करनी चाहिये।

कांग्रेस भारतवर्ष का सब मे बड़ा राजनीतिक संगठन है। और इसी में आज कल सब मे अधिक मतभेद उठ खड़े हुए हैं। जो साथी एक समय कन्धे से कन्धा भिड़ा कर एक ही उद्देश्य की सिद्धि के लिये जूझ रहे थे, उन्ही में आज राजनीतिक मतभेद न कड़आपन उत्पन्न कर दिया है। इतिहास हमे बतलाता है कि स्वतन्त्रता के सग्राम मे ऐसी घटनाये अन्य देशों में भी हुई हे। इस कारण वर्तमान परिस्थिति पर शान्तिपूर्वक विचार करना कम मनोरंजक नहीं होगा।

सन् १९२९ में काग्रेस का जो अधिवेशन लाहौर में हुआ था, उस के बाद से भारतवर्ष का ध्येय पूर्ण स्वराज्य घोषित किया जा चुका है। जबतक हमारा ध्येय तथा लक्ष्य यह है, तब तक इस की प्राप्ति के लिय जो भी उपाय बतलाये जायेंगे, उन का मूल्य इसी बात मे आंका जायगा कि वे पूर्ण-स्वराज्य की प्राप्ति में कहां तक सहायक हैं।

सुधार की वास्तविकता

आज हमारे देश पर ब्रिटिशों का अधिकार है। और वे अर्थ, सेना, व्यापार व्यवसाय, नोकरियों और वैदेशिक सम्बन्धो आदि पर अपना नियन्त्रण रख कर चाहते हैं कि अधिक से अधिक जितनी देर हो सके, उतनी देर तक यहा उन का ही राज्य बना रहे। वे खूब जानते हैं कि अब तक वे जिन उपायों से यहा राज्य करत रहे है, वे अब पुरान हो चुके हैं और यदि ब्रिटिश शासन के जहाज को निर्विघ्न तथा विना रोक-टोक चलाना हो तो इन उपायों में परिवर्तन करना पड़ेगा। इसलिये वे हम को कुछ ऐसे 'शासन-सुधार' देन को तय्यार हैं, जिन से ऊपर से तो यह मालूम पड़े कि ब्रिटिशों ने अधिकार छोड़ दिय हे और वे ऐसे बहुत से भारतीयों को भी देश के शासन में भाग लेन का अवसर दे रहे हैं, जो उन की तरफ रहेंगे, परन्तु वस्तुतः उन के द्वारा हमें मतलब की कुछ चीज नहीं मिलेगी और सारी शक्ति ब्रिटिशों के ही हाथ में रहेगी।

यह स्पष्ट है कि कोई भी शासन की शक्तियों को बिना विवशता के नहीं छोड़ता। जो एक बार घोड़े पर सवार हो जाता है, वह आप कभी नहीं उतरा करता और न काठी तथा घोड़े को ही छोड़ना चाहता है। ब्रिटिश लोगो को अभिमान है कि उन्होंन भारतीय साम्राज्य का विजय तलवार के बल से किया है और तलवार से ही वे उसे अपने कब्जे में रखेंगे। ऐसे अभिमानी लोग, उदारता की झोंक मे आकर अपनी महत्वाकाक्षाओं और लाभों को भूलन वाले नहीं हैं। वे भीख मागन वालों को स्वराज्य उपहार मे नहीं देंगे। जिन माडरेटों, लिबरलो और कान्स्टिट्यूशनलिस्टो (वैध उपाय-वादियो) आदि को इंग्लैण्ड की उदारता मे विश्वास है, उन के विषय मे



ले०—श्री० आर० एस० पण्डित

हम इतना ही कह सकत है कि वे 'शखचिल्ली की दुनिया' मे बसत हैं। लेजिस्लेटिव कांसिलों आदि मे वोट प्राप्त करन में सफल होकर भी वे ब्रिटिश सेनानियों और ब्रिटिश साम्राज्य-लोलुपो के उत्तराधिकारी नहीं बन सकत। कमाण्डर-इन-चीफ न हाल मे कोंसिल आफ स्टेट, शिमला, में जो भाषण दिया था, वह बहुत स्पष्टोक्तिपूर्ण था। उसमे सिपाही न अपन दिल की बात कह दी। साधारणतया ब्रिटिश राजनीतिज्ञ अपन मन की बात इस प्रकार खुल्लमखुल्ला नहीं कहता। हम कमाण्डर-इन-चीफ क कृतज्ञ हैं कि उन्होंन अपना इरादा स्पष्टता से प्रकट कर दिया। अब मोडरेटों और लिबरलों का भी सन्देह मिट गया होगा। हमन बेशक सीमा-प्रान्त की घाटियों में गोली की सनसनाहट नहीं सुनी, परन्तु हम में से बहुतों ने जलियावाला बाग, पेशावर और इलाहाबाद आदि की गलियों में ब्रिटिश शासकों द्वारा निहत्थे लोगों पर बरसायी गयी गोलियों की गड़गड़ाहट अवश्य सुनी है। सच तो यह है कि यदि ब्रिटिश सरकार भारत को 'शासन-सुधारों' के बजाय किसी सन्धि द्वारा पूर्ण स्वतन्त्रता दे भी दे, तो वह उस कागज के मूल्य की भी नहीं होगी, जिस पर वह लिखी जायगी।

आजकल मिश्र और ग्रेट ब्रिटेन मे एक सन्धि है, जिसके अनुसार ग्रेट ब्रिटेन न मिश्र की स्वतन्त्रता स्वीकार की हुई है। तो भी देश पर और उसके किलों आदि पर कब्जा ब्रिटिश सेना का ही है और मिश्र पार्लमेण्ट ऐसा कोई कानून पास नहीं कर सकती, जिसका मिश्र-स्थित ब्रिटिश प्रतिनिधि विरोध कर दे। इससे स्पष्ट है कि केवल वही स्वतन्त्रता ग्रहण करन योग्य है, जो अपने बल से प्राप्त की गयी हो और उसी बल से हम उसकी रक्षा भी कर सकते हैं।

भारत के साथ की हुई ब्रिटिश प्रतिज्ञाओं का वास्तविक रूप जैसा जलियावालाबाग की दुर्घटना न प्रकट किया, वैसा उससे पूर्व कभी प्रकट नहीं हुआ था। इसी के बाद से भारतीयों न ब्रिटिश साम्राज्य-लोलुपता तथा सैनिक प्रबलता का विरोध करना आरम्भ किया। इसके बाद का कांग्रेस का इतिहास उस असाधारण उन्नति की कहानी है, जो भारतीय जनता ने म० गांधी के नेतृत्व में राजनीतिक जागृति के रूप मे की है।

संगठन तथा अहिंसा

महात्मा गांधी के हम बहुत ऋणी तथा कृतज्ञ हैं कि उन्होंने राजनीतिक कार्यकर्ताओं की शक्ति को ब्रिटिश सरकार के पास निष्फल प्रार्थनापत्र भेजते रहने से हटाकर जनता को जागृत तथा संगठित करने में लगा दिया। उपायों का यह महत्वपूर्ण परिवर्तन ही वर्तमान काल के राजनीतिक इतिहास में म० गाधी का सबसे बड़ा काम है। जनता का सफल संगठन ही हममें उस बल तथा शक्ति को उत्पन्न करगा, जिससे विदेशी शासकों को भारत-निवासियो के साथ हिसाब साफ करन के लिये मजबूर किया जा सकगा। बिना जनता का संगठन किये, शस्त्र-बल तथा हिंसा के आधार पर दृढ़ता से संगठित हुए हुए लोगों का सामना करना सुगम कार्य नहीं है।

महात्मा गाधी का दूसरा महत्वपूर्ण काम हमारे राजनीतिक उपायों मे अहिंसा का समावेश है। इस का महत्व हम न अभी उतना नहीं समझा है, जितना आग आकर समझेंगे। भारत सरीखे बड़े और राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक भेदों प्रभेदों से बिखरे हुये देश में, बिना पूर्ण शान्त वातावरण के, किसी भी प्रकार की राजनीतिक उन्नति का होना अथवा विवादास्पद मामलों का सुलझाना आसान काम नहीं है। सीधी लड़ाई को सफल होना हो तो वह सगठित जनता की लड़ाई होनी चाहिये। संगठित जनता बड़ी भारी शक्ति होती है। अहिंसा के आधार पर सगठित होन से उसका बल घट नहीं जाता, यह निर्बलों का नहीं, स-बलों का शस्त्र है। यदि संगठन अहिंसा के आधार पर किया जाय तो अपना मुख्य उद्देश्य सदा सामने रहता है, हिंसा अथवा दंगा-झगड़ा हो जान से मुख्य उद्देश्य दृष्टि से ओझल हो जाता है।

सुधारों का उद्देश्य

स्वतन्त्रता का संग्राम एक बार शुरू हो कर फिर रुक नहीं सकता। भारतीय राष्ट्रीयता और ब्रिटिश साम्राज्य-लोलुपता में कोई सुलह नहीं हो सकती। जब तक स्वतन्त्रता नहीं मिल जाती, तब तक इसका संघर्ष भी जारी रहेगा। इसी भय से बचने के लिए ब्रिटिश सरकार लोगों का ध्यान ऐसे अवान्तर कामों की तरफ खींचने का यत्न

कर रही है, जिन से स्वातन्त्र्य-संग्राम निर्बल पड़ जाय। इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए ब्रिटिश सरकार का मुख्य साधन 'शासन-सुधारों' का देना है। इन शासन-सुधारों पर अमल करने में साम्राज्य-लोलुपों से कुछ न कुछ सहयोग करना ही पड़ेगा, जिससे देश में आन्दोलन का वेग मन्द पड़ जायगा और हमारा बहुत सा बल ऐसी धारा-प्रधाराओं में बह जायगा, जो हमारे विरोधियों ने विशेष इसी प्रयोजन से जारी की हैं।

सरकार की रियासती-नीति

हमारा संघर्ष अब एक ऐसी मंज़िल पर पहुँच चुका है जहाँ पहुँचने के पीछे काँग्रेस उन राजाओं ज़मींदारों और किसानों मालिकों और मजदूरों मिल-मालिकों, पूँजीपतियों और श्रमजीवियों सरीखे विविध विरोधी स्वार्थों के लोगों को श्रेणी-विशेष में नियन्त्रित करके नहीं रख सकती। यह संघर्ष अब तो भविष्य में अधिकाधिक लूटने और लुटने वालों — चाहे लुटेरे ब्रिटिश हों चाहे भारतीय — के बीच में ही चलेगा। इसी कारण ब्रिटिश लोग तमाम अधिकार-प्राप्त स्वार्थी लोगों को अपने साथ मिला लेने की आशा रखते हैं। यदि इसमें उन्हें सफलता हो गई तो वे भारतवर्ष में हिटलर से भी बढ़ कर हिटलर-शाही स्थापित कर देंगे। अधिकार-प्राप्त स्वार्थी लोगों को अपने साथ मिलाने की ब्रिटिश-नीति का उदाहरण लेना हो तो भारत के देशी राजाओं के साथ ब्रिटिश सरकार के व्यवहार को देख लीजिये। एक समय था जब देशी रियासतों के शासक ब्रिटिश सरकार के प्रबल सन्देह का लक्ष्य बने हुए थे और उन्हें सदा एक दूसरे से अलग रखने का यत्न किया जाता था। बाद को उनके पुत्रों को विशेष रूप से अंग्रेज अध्यापकों द्वारा और विशेष कालिजों में शिक्षित किया जाने लगा ताकि वे ब्रिटिश प्रभुता का आदर करना सीखें और जब उनको शासनाधिकार दिये जायँ तब वे ज़िला-अधिकारियों की तरह ब्रिटिश सरकार की हिदायतों पर ही सब काम करें। जब इतना काम हो गया, तब सरकार को राजाओं के परस्पर मिलने-जुलने में कुछ उज्र नहीं रहा बल्कि राजाओं के लिए एक नरेन्द्र-मण्डल की सृष्टि कर दी। राजाओं को उस मण्डल में आ कर अपनी राजनीतिमत्ता प्रदर्शित करने के लिए उत्साहित किया गया, ताकि ब्रिटिश साम्राज्य-लोलुपता की उद्देश्य-सिद्धि में सहायता मिल सके। परन्तु जब देश में ब्रिटिश साम्राज्यवाद से छूटने का आन्दोलन अधिक ज़ोर पकड़ गया और नरेन्द्र-मंडल निष्प्रयोजन हो गया, तब सरकार के प्रयत्न दूसरी दिशा में बदले कि केन्द्रिक शासन के अन्तर्गत एक फेडरल चेम्बर बनाकर उसमें राजाओं के मतों का लाभ उठाया जाय। भारत की बहुत सी बड़ी बड़ी रियासतों का शासन आज ब्रिटिश सरकार के 'रिटायर्ड' अफसरों अथवा 'उधार दिये हुये' अधिकारियों द्वारा हो रहा है। रियासतों के अन्दरूनी मामलों में दस्तन्दाज़ी न करने की पुरानी नीति यद्यपि अब भी जारी बतलायी जाती है, परन्तु जो कुशासन पहले परोपकार-पूर्ण ब्रिटिश शासन का विरोधी उदाहरण पेश करने के कारण बरदाश्त कर लिया जाता था, वह आज बरदाश्त नहीं किया जाता, क्योंकि सरकार को डर है कि कुशासन से रियासती प्रजाओं में भी ब्रिटिश भारत की प्रजा की तरह आन्दोलन करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। जो राजा या नरेश भारत के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन से कुछ भी सहानुभूति दिखाता है या जो अपनी रियासत के आन्दोलन को दृढ़ता से दबाने में असमर्थ रहता है उस को तुरन्त गद्दी से उतार दिया जाता है। इस प्रकार रियासतों के राजा मुहर-मात्र रह गये हैं और जब उनकी रियासतों में आन्दोलन कुछ भी बढ़ जाता है तब वे स्वयं शासनाधिकार ब्रिटिश सरकार के उधार दिये हुये अफसरों के हाथ में सौंप देने को और आप नाम-मात्र के राजा रह कर परम्परागत 'राज्याधिकार' भोगने को सदा तय्यार रहते हैं।

कौंसिल बहिष्कार ही उचित है

इसलिये देश के कई माननीय नेताओं के विरुद्ध मेरी नम्र सम्मति है कि यदि काँग्रेस अपनी शक्ति ब्रिटिशों द्वारा बनाये हुये निर्वाचकों के पास जाने और कौंसिलों तथा असेम्बली में घुसने में व्यय करेगी तो वह अपना कदम पीछे हटा लेगी; क्योंकि ये कौंसिलें बनाई ही हमें पार्टियों में फाड़ कर हमारे स्वातन्त्र्य-संघर्ष का बल घटाने के लिए गयी हैं। यदि हमारा उद्देश्य तुरन्त ही पूर्ण स्वतन्त्रता की प्राप्ति है ताकि भारतवर्ष के निवासी और भारतवर्ष का प्राकृतिक धन साम्राज्यवादियों की लूट से बच कर संसार के अन्य उन्नतिशाली राष्ट्रों के साथ सहयोग करने में स्वतन्त्र हो सके तो हम को ब्रिटिश साम्राज्यलोलुपों के साथ किसी भी प्रकार का सहयोग करने से अलग रहना चाहिये। हमारी तमाम शक्तियाँ भारत की श्रमजीवी जनता के शिक्षण तथा संगठन में लगनी चाहिये क्योंकि यही हमारे सच्चे निर्वाचक हैं और इन्हीं के हाथ में राजनीतिक तथा आर्थिक शक्ति आने के बाद सच्चा स्वराज्य होगा। हमें उन सब अधिकार-प्राप्त स्वार्थी लोगों का भी विरोध करना चाहिये जो अपने विशेषाधिकारों और विशेष सुखों को बद्ध-मूल करने के लिये ब्रिटिश साम्राज्य-लोलुपों के साथ मिल कर स्वातन्त्र्य-संग्राम का विरोध कर रहे हैं। आज महात्मा गाँधी के सन् १९२१ के प्रोग्राम का ज़माना नहीं है, शक्ति प्राप्त करने के आगामी संघर्ष में इस से काम नहीं चलेगा। इस में ऐसा परिवर्तन करने की आवश्यकता है कि इससे जनता को इस प्रकार संगठित किया जा सके कि वह स्वयं देश के तमाम लोगों का सच्चा प्रतिनिधित्व करने वाली कान्स्टिट्यूएण्ट असेम्बली बुला सके और उसके द्वारा स्वतन्त्र भारत की आवश्यकता के अनुसार अपना शासन-विधान आप बना सके।

—:o:—

'किसी न किसी रूप में हम उस दुःखी देश (भारत) से प्रति वर्ष पूरे ३,००,००,००० पौंड खींच लेते हैं और वहाँ के निवासियों की आय की औसत केवल ५ पौंड वार्षिक है या इस से भी कुछ कम।"

—ए० जे० विल्सन

'हमारे देश का सर्वनाश जान-बूझ कर किया गया है। इस लिये ब्रिटिश-शासन को छोड़ कर और कोई भी नाश का असली कारण नहीं कहा जा सकता।'

—लो० मा० तिलक



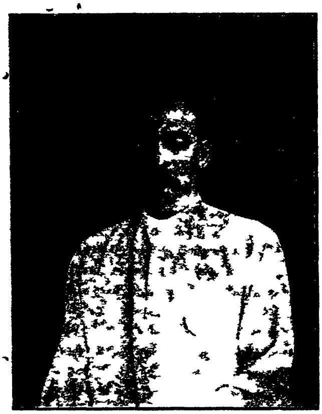
असि-धारा-पथ-गामी

ओ, असि धारा-पथ के गामी।
विकट सुभट तुम, अथक पथिक तुम, कण्टक कीर्णित मग-अनुगामी ॥
ओ, असि-धारा-पथ के गामी।
तुम विकराल मृत्यु-आसन के साधक, तुम नवजीवन दानी।
तुम विप्लव के परम प्रवर्तक, चरम शान्ति के निष्ठुर स्वामी ॥
ओ, असि धारा-पथ के गामी।



शत शत शताब्दियों के पातक पुंज हो रहे पानी पानी।
अंजलियां भर-भर जीवन शोणित देने वाले तुम निष्कामी ॥
ओ, असि धारा-पथ के गामी।
हे प्रचण्ड, उद्दण्ड, अखण्ड महाव्रत के पालक विज्ञानी।
तड़प उठा है यह जग, जरा ठहर जाओ हे मौन अनामी ॥
ओ, असि धारा-पथ के गामी।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'



सरदार वल्लभभाई पटेल

गांधीवाद की त्रिमूर्ति

—·—

वल्लभभाई, राजगोपालाचार्य व राजेन्द्रप्रसाद के शब्दचित्र

— —

(ले०—श्री रामनाथ सुमन)

— —



श्री रामनाथ सुमन

श्री रामनाथ सुमन हिन्दी के उन लेखकों में हैं जिनका भाषा और अपने विचारों पर पूर्ण अधिकार है। किसी वस्तु या किसी व्यक्तित्व का विश्लेषण करने के लिये वे तीक्ष्ण दृष्टि रखते हैं। इस लेख में इन्होंने गांधीजी के तीन प्रमुख अनुयायियों — सरदार वल्लभभाई, राजगोपालाचार्य और बाबू राजेन्द्रप्रसाद — का विश्लेषण करने का सुन्दर प्रयत्न किया है। पाठकों का इससे मनोरंजन होगा और वे अपने नेताओं के व्यक्तित्व और चरित्र को जान सकेंगे।

(१)

वल्लभभाई—'बर्फ़ से ढका ज्वालामुखी'

वल्लभभाई अपने वर्तमान रूप में भारत को गांधीवाद की देन हैं। इस व्यक्ति को देखिये, इस के कार्य को देखिये और इस के भाषण सुनिये। ऊपर से रूखा, ठण्डा ऊसर, नीचे जिन्दा दिल और दहकता हुआ। यह वह आग है जो कभी ठण्डी नहीं होती। जब सुनिए, वही तीखे, कलेजे के आर-पार हो जाने वाले शब्द वही तीव्र व्यंग्य। जैसे इस व्यक्ति का जन्म ही विष पीने और विष उगलने के लिए हुआ हो! असहयोग-काल के मौलाना शौकतअली ने ठीक ही कहा था—

'वल्लभभाई बर्फ से ढके ज्वालामुखी हैं'

भारत में केवल दो ही नेता हैं जिनकी वाणी का तेज परिस्थितियों से परे है, वर्षों के दमन ने, घोर आपदाओं ने जिनकी आवाज में करुणा या शिथिलता नहीं आने दी। एक जवाहरलाल, दूसरे वल्लभभाई। ये दीपक की वे शिखायें हैं, जो आंधी और पानी में एक-सी एक लौ से जल रही हैं।

वल्लभभाई गांधीवाद के क्षत्रिय-पक्ष हैं। यह व्यक्ति गांधी की तरह साधक नहीं है और न शिक्षक है, वह एक योद्धा है। वह चोट खाना ही नहीं जानते, चोट करना भी खूब जानते हैं। वह सच्चे सत्याग्रही की तरह अपने को शून्य में नहीं मिला सकते। उन में सत्याग्रही की अजातशत्रुता नहीं है, वीर क्षत्रिय की क्षमा है। इसीलिए वल्लभभाई युद्धकाल में अत्यन्त शक्तिमान हो उठते हैं। तर्क और सैद्धान्तिक दलीलों को कोई आदमी इतनी घृणा मिश्रित अपमानजनक दृष्टि से नहीं देखता जितना वल्लभभाई देखते हैं। वह तो साफ़-साफ़ बातों में विश्वास रखते हैं—जो कहो करके दिखा दो तुम वल्लभभाई के सिर माथे, लच्छेदार शब्दों को वह हेच समझते हैं। इन्हें समझना हो तो वल्लभभाई को तब देखो जब युद्ध का शंखनाद हो चुका हो — जब वातावरण में उत्कण्ठा आकुलता हो और जब ऐसा समय हो कि दिल जोर से धड़कता हो और नाड़ी तेज चल रही हो। छाती में एक आंधी लिए हुए फड़कती भुजायें और शरारत भरी आंखों से युद्ध की ओर एक अद्भुत विनोद के साथ देखने वाला! सिर से पांव तक पोर-पोर उमंगों के सुरूर पर चढ़ा हुआ! एक जीता जागता हँस-हँस कर खेलने वाला राजपूत — यह वल्लभभाई हैं!

यह आदमी अपने जीवन की प्रत्येक सांस के साथ खतरे को प्यार करता है। जोखम को वह इस तरह अपनाता है जैसे प्रेमी प्रेमिका को। जूझने के लिए उस का दिल सदा बल्लियों उछलता है। उस के लिए यही सान्त्वना है। जीवन में और कोई लगाव नहीं, कोई बन्धन नहीं कोई राग नहीं। जूझना ही जूझना है। बारडोली-युद्ध की दावानल जब धधक रही थी तब उस ने कहा था — 'मेरे साथ कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता। मैं किसी ऐसे काम में नहीं पड़ता जिसमें कोई खतरा या जोखम न हो। जो लोग आपत्तियों को निमन्त्रण दें, उनकी सहायता के लिये मैं सदा तैयार हूं। इसीलिये उन समष्टिवादियों (सोशलिस्टों) की कोरी लम्बी चौड़ी बातें तुच्छ प्रतीत होती हैं। वह शुद्ध कर्म का प्राणी है। जो कहो उसे मर्द की तरह करके दिखा दो!'

इस क्षत्रिय ने गांधीवाद को अपनाया तो दिल से है पर उसका स्वभाव लोकमान्य-जैसा है। वह कोमल की अपेक्षा तेजस्वी, विवेकवान की अपेक्षा वीर, साधक की अपेक्षा योद्धा अधिक है। हां, यह है कि स्वभाव के इस लोकमान्यत्व पर गांधी के निष्कपट-सरलपन ने मिश्री की कोटिंग कर दी है। गांधी के शठ प्रति सत्य को वह अपनाना तो चाहता है — बहुत कुछ अपना भी लिया है और उसे श्रेष्ठतर भी समझता है पर इन के जीवन तत्वों में वह बिलकुल फिट नहीं होता, मिलकर बिलकुल ही एक नहीं हो जाता कुछ अलग-अलग सा रहता है। परिस्थिति बुद्धि विवेक और दिल में वह गांधीजी की तरफ़ झुका हुआ है और प्रकृति स्वभाव और प्रवृत्ति में लोकमान्य की तरफ़। वह दोनों का मिश्रण है — और इतने पर भी उसमें दोनों की कुछ बातें हैं कुछ नहीं हैं।

उस में वह लगन वह अथक परिश्रम की प्रवृत्ति है जो लोकमान्य की विशेषता थी। लोकमान्य की भांति वह सेवा में आत्मविस्मृत होकर चलता है। लोकमान्य के सदृश ही वह अपने महत्त्व का स्मरण नहीं रखता अपने विषय में बहुत कम लिखता या बोलता है। फिर भी लोकमान्य की भांति वह कूटनीतिज्ञ नहीं वह योद्धा है। इस विषय में दोनों में तात्विक अन्तर है। राजनीतिज्ञ के लिये उसकी जबान एक अस्त्र है। उस के शब्द स्पष्ट प्रायः दोअर्थी होते हैं। वह अपने मन में अनुभव कुछ करता है पर उस पर पर्दा डालने के लिए कई बार उस से उलटा कहता है। वह अवसर का उपयोग करता है। और योद्धा जिसे हम उपयोगिता कहते हैं उसे

लेकर नहीं चलता, भावना को, स्पिरिट' को लकर चलता है। भौतिक सुविधायें प्राप्त कर लेना उस का उतना उद्देश्य नहीं जितना नैतिक विजय लक्ष्य है। वह स्तर को प्यार करता है। वीरता उसकी देवी है, साहस अनुचर। जब आसमान पर उगाय छा रही हों तब जहा राजनातिज्ञ क ललाट पर विचार की रखायें होता है और आखों में चिन्ता की छाया, वहा योद्धा का दिल उमगा म भरा हुआ अब उमडा अब उमडा ऐसा होता रहता है। इस विषय म लोकमान्य और वल्लभभाई म अन्तर है'

गाधी और वल्लभ भाई को सामन रखकर देखत है तो उधर भी जहा समानताए हैं वहा असमानताए भी कुछ कम नहीं हैं। मैं मात्राओं क अन्तर का बात नहीं कह रहा हू, मरा मतलब प्रवृत्तियों के अन्तर स है। गाधी साधक है। सत्य, आत्म-साक्षात्कार उस का लक्ष्य है। इसलिय स्वभावत उस का जीवन अनावृत—खुला हुआ—है। उसका पथ एक निर्मोही आध्यात्मिक साधक का पथ है पर वल्लभभाई एक सच्च आम त्यागी की भाति अपन जावन क प्रति मान हैं। गाधी विरोधा क साथ लडता है, पर युद्ध क समय भी विरोधी के सच्च कल्याण का ध्यान उम रहता है। यह साधक का अन्तःकरण क पोर पोर मे भिना हुई उदारता है जिसकी ऊचाई पर वस्तुत कोई शत्रु नहीं रह जाता। वल्लभभाई की उदारता वीर योद्धा की उदारता है जो छिपकर वार करना नहीं जानती पर सामन का लडाई मे शत्रु को आगनय नत्रों स देखता है और उस मलियामट कर देना चाहती है, जो शत्रु की पराजय म उल्लसित है। जब गाधी विरोधा को अपन कार्यक्रम की सूचना पहल कर देता है तब वल्लभभाई क मुह म शत्रु या मित्र कोई क्रिया म आन क पहल उनका कार्यक्रम नहीं जान सकता।

कर्मवीर सम्पादक श्री माखनलालजी न ठीक लिखा था— महात्मा जी छोट मे छोट आदमी के कुतूहलों तक का जवाब दत हैं (तब) वल्लभभाई म सवाल पूछन का साहस ही बहुत कम को हो पाता है। उनक विषय मे तो कवल यही कहा जा सकता है कि वह जवाब सदैव अपन विरोधी को ही देते हैं। महात्माजी जीवन की आत्म-कथा लिख सकते हैं किन्तु वल्लभभाई आत्म-चर्चा कभी करते ही नहीं।

महात्माजी का संयम और उनका तप महान् प्रयत्नों की सिद्धि है। वीर वल्लभभाई का सन्यास एक दिन प्रातःकाल उठकर किया हुआ किन्तु सदैव निकलने वाला सिपाही का प्रण है। महात्माजी साधक सुधारक और शिक्षक हैं। वल्लभभाई न सुधारक है, न साधक हैं न शिक्षक हैं। वह योद्धा हैं, सेनानी हैं, सिपहसालार हैं।

महात्माजी बालक, मूर्ख और शत्रु से भी गुण सीखने के लिये प्रस्तुत हैं, किन्तु वल्लभभाई उक्त तीनों का मूल्य विश्व के बाजार-दर से अधिक नहीं कूतते। महात्माजी की महान् क्षमा में आत्म-निरीक्षण और आत्म-चिन्तन होना ही चाहिये। वल्लभभाई की क्षमा वीरोचित क्षमा है, उसमें अपने योद्धा की सौ भूलें माफ है—यदि वे बहादुरी के पक्ष में न की गई हों।

वल्लभभाई वस्तुतः उन उपकरणों से बने हैं जिन से शहीद का सृजन होता है। वह एक योद्धा हैं। बुद्धि, विवेक, परिस्थिति मानावलम्बन और संगठन शक्ति ने इस योद्धा को योद्धा के ऊपर उठाया है और सेनापति के आसन पर ला खड़ा किया है। वल्लभभाई में वह कूट रहस्यमयता नहीं जो राजनीतिज्ञ की खास चीज है पर उन में वह गम्भीरता और वह प्राणोन्मादकारी भावावेश दोनों उपयुक्त मात्रा में हैं जो एक सफल सरदार—सेनापति—के निर्माण के लिये आवश्यक हैं। युद्ध में वह इस तरह स्वतन्त्रतापूर्वक खेलते हैं जैसे पानी में मछली तैरती है। उस समय कोई कठिनाई उनका दम नहीं तोड़ सकती। परन्तु राजनीतिज्ञता की बातों समझौते की चर्चाओं में उनका वह भावावेश शिथिल पड़ जाता है। वह स्वयं कहते हैं— मुझे लड़ते लड़ते जो संकट और उलझन आ पड़े उन्हें मैं तड़ाक से सुलझा लूंगा। ऐसी उलझन सुलझाने की सूझ मुझे कहां मिलती है मैं नहीं जानता। परन्तु समझौते की ढीली चर्चाओं में मेरा जी नहीं लगता। ऐसी अकर्मण्य चर्चाओं में कितनी ही बार तो मैं गड़बड़ में पड़ जाता हूं।"

ऊपर मैंने लिखा है कि जब युद्ध चल रहा हो तब वल्लभभाई को देखिये। जैसे भयंकर डाइनामाइट से गोले और तोप से बारूद निकलती है, उसी तरह इस व्यक्ति के मुंह से आग-से जलते और भुजंग-से फुफकारते शब्द निकलते हैं। नमूना देखिये.—"मारने-मरने की तालीम सिपाहियों को देने में सरकार को छः महीने लगते हैं। हमें तो सिर्फ मरना ही सीखना है, उस में तीन महीने भी क्यों लगने चाहियें?

विद्वान की परिभाषा सुनिये —

विद्वान्, वह जो सारी भाषा को अटपटी और कुढंगी बना दे।'

विद्यार्थियों के सामने बोलते हुए —

'अरे, क्या सांप को अपनी कांचली उतार फेंकने में बहुत दुःख होता है? या कोई मेहनत पड़ती है? इसी तरह हम भी एक दिन परकीय शासन की कांचली उतार देंगे। उस में श्रम और कष्ट काहे का?" इसी प्रकार यदि राजसत्ता अत्याचारी हो तो किसान का सीधा उत्तर है—

जा, जा तेरे ऐसे कितने ही राज मैंने मिट्टी में मिलते देखे हैं।

बालोड़ के भाषण में — सरकार जेल के मेहमान चाहती है। आप उसे मुंह मांगा मेहमान देंगे।

यह तो युद्ध के समय का बोलना है। पर वैसे वल्लभभाई में बोलने की ताकत बहुत कम है। वह बोलते कम हैं करते अधिक हैं। बात-शूर उन्हें लुभा नहीं सकता। यह गरजने वाला मेघ नहीं बरसने वाला धुआंधार है। यह वह योद्धा है जो ठोस का पुजारी है, पोल के शब्द उसे आकर्षित नहीं कर सकते।

× × ×

ऐसा बहुत कम देखा जाता है कि दो भाई आपस में दिल्लगी करते और एक-दूसरे को बनाते हों। वल्लभभाई और स्व० विट्ठलभाई बड़ी बेतकल्लुफी के साथ एक दूसरे पर व्यंग्य करते थे। व्यंग्य की कला में वल्लभभाई ऐसे निपुण हैं कि वह गम्भीरता से कुछ कर रहे हैं या हंसी मजाक कर रहे हैं इसका पता नहीं लगता और अक्सर लोग बेवकूफ बन जाते हैं। गांधी-वादियों में केवल वही ऐसे आदमी हैं जो गांधी के समक्ष भी व्यंग्य और मजाक कर सकते हैं और गांधी को भी नहीं छोड़ते। श्री० पट्टाभि सीतारामय्या ने ठीक ही लिखा था —

वल्लभभाई के [illegible] शरारती आत्मा है

(२)

राजगोपालाचार्य : 'सी० आर०'

यदि बारीकी से देखें तो काले फ्रेम का चश्मा और लम्बी नाक की आकृति में पेटेंट राजगोपालाचार्य वल्लभभाई के ठीक उलटे हैं। वल्लभभाई को मौन पसन्द है; वह चुपचाप काम करते हैं, तो राजगोपालाचार्य, जिन्होंने गांधी जी के 'एम० के० जी०' की स्टाइल पर चल कर सी० आर० के नाम से अपने को मशहूर कर लिया है, बहुत बोलते और बहुत लिखते हैं। भारत में दूसरे किसी नेता को मैं नहीं जानता, जो वक्तव्य (स्टेटमेंट) निकालने में इतना द्रुत और इतना पटु हो। दक्षिण के सीधे-सादे और सरल इस ब्राह्मण में चाणक्य की विचक्षणता है। यदि गांधीवाद में भी कोई कूटनीति-पक्ष सम्भव है तो श्री राजगोपालाचार्य उस के सर्वोत्तम प्रतिनिधि हैं।

सच पूछें तो गांधी जी के निकट अनुयायी हो कर भी गांधीवाद की 'स्पिरिट' — आत्मा — राजा जी में बहुत कम है। गांधीवाद तो आत्मा का अनावृत रूप लेकर चलता है, इस में डिप्लोमेसी नहीं है नीति है शतरंज की चालें नहीं, कर्तव्य का आमन्त्रण है। यह विरोधी के दुःख में दुखी है। पर



श्री० राजगोपालाचार्य

राजा जी पं० मोतीलाल जी के कैंड के आदमी हैं। वह एक महान् 'स्ट्रेटेजिस्ट' और 'टैक्नीशियन' (हिन्दी में चाल-बाज इसका ठीक अनुवाद है पर यह शब्द आजकल कुछ भद्दे अर्थ में प्रयुक्त होता है इसलिए मैंने अंग्रेजी ही शब्द रहने दिया है) हैं। स्व० मोतीलाल जी और देशबन्धु के दांत खट्टे करने वाले इस व्यक्ति की विचक्षणता गया-कांग्रेस के समय हमने देखी थी। तब से देखता ही रहा हूं। और सब-कुछ देख-सुनकर भी मेरा मत है कि शुद्ध गांधीवाद में राजा जी अपने को ओत प्रोत नहीं कर सके हैं। गांधीवाद तो कर्तव्य-पथ में बड़ा ही निर्मोही अलिप्सित और अनासक्त होकर चलता है— प्रेम को हृदय में दबाये हुए। कर्तव्य की आग में प्रेम सदा जलता रह कर सोने की तरह चमकता है। राजा जी में अपनों के लिये बड़ा मोह है और अपनी सन्तति को सूक्ष्म विलासिता के — आरामतलबी के — वातावरण में रखने में वह प्रसन्न-से हैं।

सच बात तो यह है कि राजा जी एक बौद्धिक (इन्टलैक्चुअल) प्राणी हैं। उन में वह विशेषतायें हैं जो एक प्रतिभाशाली बौद्धिक व्यक्ति में होती हैं और वह दुर्बलतायें भी हैं जो प्रतिभा और बुद्धि के साथ चलती हैं। यह योगी और साधक का साधना पक्ष नहीं है यह नैयायिक और तार्किक का तर्क और बुद्धि-पक्ष है। गांधी जी के अनुयायियों में शायद ही कोई दूसरा व्यक्ति हो, जिस में राजा जी-जैसी सूक्ष्म कल्पना-शक्ति, बुद्धि की विचक्षणता, रासायनिक की भांति किसी चीज को टुकड़े-टुकड़े, अलग-अलग करके देखने की शक्ति और विरोधी को शाब्दिक उत्तर देने की क्षमता हो। पर जहां साधारण राजनीति की दृष्टि में ये गौरवास्पद विशेषतायें हैं वहां शुद्ध साधना की दृष्टि में ये बाधक दुर्बलतायें हैं। गांधीवादी हंसता है व्यंग्य करता है पर उस के हास्य और व्यंग्य में चुभने वाली किरकिराहट विष नहीं होता, वह हास्य और व्यंग्य विरोधी को और उस से भी अधिक उसकी अपनी आत्मा को ऊंचा उठाता है यह एक 'लिफ्ट' है, जब राजा जी के व्यंग्य की काट विरोधी के कलेजे के आर-पार हो जाती है वह बैठ जाता है। यह स्पष्ट एक कूटनीतिज्ञ का प्रहार है जिस में विरोधी को चूर-चूर कर डालने की कामना है।

गांधी जी के अनुयायियों में कोई दूसरा सामान्यतः गांधी जी की लेखन शैली की इतनी सफल कापी नहीं कर सका है जैसी राजा जी ने की है। लेखक की दृष्टि से देखें तो इस दायरे में उन का स्थान बड़ा ऊंचा है। उन की कहानियां कभी कभी गाल्सवर्दी की याद दिलाती हैं।

राजा जी एक अथक परिश्रम करने वाले कार्यकर्ता हैं। दक्षिण भारत में मादक-द्रव्य-निषेध का जो कार्य उन्होंने किया है उसे दूसरा क्या करेगा? देश के लिए उन्होंने फकीरी का बाना धारण कर लिया है और वैसे वह एक बड़े ही बेतकल्लुफ (अन अस्यूमिंग) आदमी हैं। परन्तु उन में दोष यह है कि उन का दिमाग उन के दिल और शरीर से ज्यादा भारी पड़ता है।

इसीलिए कई बार जब वह गलती करते होते हैं, या गलत रास्ते पर होते हैं, तो भी तर्क और बुद्धि के सहारे अपनी गलती को ठीक सिद्ध करते जाते हैं। जब सत्याग्रह-युद्ध चल रहा था, तब भी मन्दिर-प्रवेश बिल के सम्बन्ध मे इनके ढंग कांग्रेसवादियों को अखर थे। राजा जी उस समय कांग्रेस के कार्यवाहक अध्यक्ष थे; फिर भी बिल के लिए मद्रास-गवर्नर मे मिलन, 'खिलोनों-सी' व्यवस्थापक सभाओं के सदस्यों से मिलन एवं उन मे अनुरोध करने में अपना अधिकाश समय व्यतीत करते थे। यह एक बिल्कुल ही परस्पर-विरोधी पक्ष था और इस बात को लेकर कांग्रेसवादी, विशेषतः यू० पी० वाले, इतन नाराज थे कि अन्त मे राजा जी को उक्त पद मे इस्तोफा दे देना पड़ा। पर वे दिन भी गनीमत थे; आज तो जब मैं देखता हूं कि इन कौंसिलों के कट्टर-विरोधी, १९२२-२३ के 'परिवर्तन महात्मा' और अपरिवर्तनवादी, देशबन्धु और मोतीलाल के सामन तन कर खड़ा होने वाले, तथा देश मे एक प्रथम श्रेणी की समस्या खड़ी कर देन वाले राजाजी वोट-भिखारी का निर्जीव बाना धारण किये घूम रहे है, तो आत्मा कांप जाती है और देश के दुर्दिन पर रोना आता है। राजाजी की विलक्षण बुद्धि कांग्रेसी उम्मीदवारों के लिए वोट की भिक्षा मांगने में लगे, यह उसका दुरुपयोग भी है और अपमान भी है। वह इससे ऊंचे कार्य में लगनी थी। आज भी उन के भाषणों मे और तर्कों में तजस्विता है; दक्षिण भारत में कांग्रेस-पक्ष मे दिये गये निर्वाचन-सम्बन्धी भाषणों में उन के भाषण सर्वोत्तम हैं, पर सब पढ़-सुन कर भी ऐसा लगता है, जैमे कोई विचक्षण वकोल मुरदे को जिन्दा करन की चेष्टा कर रहा हो।

पर राजाजी जब किसी का पक्ष लेन है, तो तथ्य और उस की मूल शक्ति की अपेक्षा अपने बौद्धिक चमत्कार पर ज्यादा भरोसा रखने हैं। और यही उन की बड़ी भारी दुर्बलता है।

यदि वल्लभभाई गांधीवाद के क्षत्रिय या कर्तृपक्ष है, तो राजा जी उस के बुद्धि-पक्ष हैं। यह त्यागी ब्राह्मण कूटनीतिज्ञ और निस्पृह सेवक दोनों एक साथ है। और यही उस की 'ट्रेजेडी' है।

(३)

राजेन्द्रप्रसाद : 'बिहारी गांधी'

सांवला रंग, देसी गांधी टोपी, जिन को कभी नाई से काम न पड़ा हो, ऐसी लम्बी मूछें, दमा के शिकार, पर कभी न टूटने वाले उत्साह से पूर्ण, भीतर से महान् पर ऊपर मे अटपटे—राजेन्द्रबाबू को देख कर दिल भक्ति से उमड़ता है। इस व्यक्ति की 'गंवारूपन' की सीमा तक बढ़ी हुई सरलता को देख कर अच्छे-अच्छे सेवक भी



बाबू राजेन्द्रप्रसाद

दांतों तले उंगली दबाते हैं। जब तक आप इन्हें पहले-मे न जानते-पहचानते हों, आप को ऐसा मालूम होगा, मानो कोई ग्रामीण बिहारी है। दरिद्रनारायण की सेवा में इस व्यक्ति ने अपने को ऐसा ओत-प्रोत कर दिया है। इसे देख कर कौन कहेगा कि एक जमाने में यह प्रथम श्रेणी का वकील रह चुका है और हजारों रुपये की 'प्रेक्टिस' छोड़ कर सेवा के इस दुर्गम, कंटीले, मार्ग में आया है! और यह कौन कहेगा कि सारी यूनिवर्सिटी-परीक्षाओं में यह सदा प्रथम आता रहा होगा? सिवाय आचार्य सर पी० सी० राय के दूसरे किसी प्रसिद्ध जन-सेवक को मैं नहीं जानता, जिस की वेश-भूषा दरिद्र भारत के कोटि-कोटि दरिद्रनारायणों के इतने नजदीक पड़ती हो।

राजेन्द्र बाबू गांधी जी के उन दो-चार निकट के सहयोगियों में हैं, जिन्होंने उनकी 'स्पिरिट' को ग्रहण कर लिया है। छूछे राजनीतिक शास्त्रार्थों मे राजेन्द्रबाबू बहुत बचते हैं। उन का क्षेत्र ठोस सेवा का क्षेत्र है। इसीलिए वह बहस-मुबाहसों में बहुत कम पड़ते हैं और जब पड़ते हैं तो भी बड़ी वेदना और अनिच्छा के साथ। जब से यह इस क्षेत्र मे आये, बिना किसी आशा, पुरस्कार या प्रतोक्षा की भावना के चुपचाप काम कर रहे हैं। और इसका मूल्य अपन-आप ही उन्हें मिल गया है। अन्य प्रांतों मे जहां किसी नेता के नेतृत्व के विषय मे, उस के नाम के आगे प्रश्न-चिन्ह लगाया जाता है, वहा बिहार मे हर प्रकार के देश-सेवक राजेन्द्रबाबू को अपना एक-मात्र नेता मानत हैं। इसका कारण यह है कि दिल दुखान वाले व्यम्य-बाण उनकी जिव्हा से नहीं निकलते; उन मे बड़प्पन की बू नहीं है; उन में अधिकार के लिये प्रमाद और आत्म-वंचना नहीं है और न ईर्ष्या-द्वेष है। उनकी सेवा का क्षेत्र इतना महान् है कि उस मे हर प्रकार के जन-सेवक का स्वागत है।

राजेन्द्र बाबू में निरन्तर कार्य करन की असाधारण क्षमता है। फिर कर्तृत्व के साथ भगवान ने वाणी भी दी है। उनके भाषण तर्क-युक्त, बुद्धि और भावना को 'अपील' करन वाले होत हैं। इस विषय में उनका ढंग एक अध्यापक का ढंग है। उन में राजनीतिज्ञ की घुमा-फिराकर बात करन की पटुता आप को न मिलेगी। प्रश्नों और समस्याओं को राजेन्द्रबाबू आपके सामने सुलझे हुए रूप मे रख देते है। हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं पर उनका असाधारण अधिकार है। उन की मीठी मोतियों की लड़ी सी हिन्दी का श्रोता पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। हिंदी और हिन्दी-साहित्य के वह न केवल प्रेमी है, वरन् सेवक भी हैं।

राजेन्द्र बाबू में बुद्धि और भावना का बड़ा सुन्दर समन्वय हम देखने है। जहा विवेचना की शक्ति उन मे चरम सीमा तक पहुंची है, वहां हृदयोन्मादकारी भावना का भी उनमें सुन्दर विकास हुआ है। विनय-पत्रिका के पद गाते-गाते वह भक्ति-विभोर हो जाते है।

और राजेन्द्र बाबू का विश्लेषण क्या किया जाय? उनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। यहां तो सब दूध ही दूध है। इसमें मिलावट नहीं, पानी नहीं, । उनके रंग-रूप और उनकी आंतरिक महत्ता दोनों को देखकर तो ऐसा मालूम होता है, मानो मिट्टी की बदसूरत और बेडौल हांडी में भगवान ने अमृत भर दिया हो। जीवनी-लेखक ऐसे व्यक्ति का क्या चित्रण करे? बस, वह तो उसे प्रणाम करता है और ऐसे मनुष्य को राष्ट्रपति चुनने पर राष्ट्र को बधाई देता है।

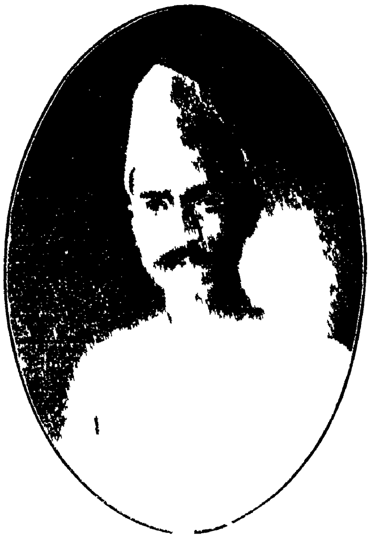
—:—

पुरान राष्ट्रपति



मरदार वल्लभभाई पटेल

नये राष्ट्रपति



बिहार-रत्न बा० राजेन्द्रप्रसाद



लोकमान्य तिलक की राजनीति

(ले०—श्री सिद्धनाथ माधव आगरकर)

भारतवर्ष के स्वातन्त्र्य-संग्राम में लोकमान्य तिलक का एक विशेष स्थान है। वे एक युग के प्रवर्त्तक थे। उनके राजनीतिक सिद्धान्त म० गांधी के सिद्धान्तों से भिन्न थे। श्री सिद्धनाथ माधव आगरकर सम्पादक 'स्वराज्य' ने इस लेख में उन की नीति का परिचय देते हुये बताया है कि वे बहिष्कार, स्वदेशी एवं राष्ट्रीय शिक्षा की त्रिगुणात्मक विचारधारा पैदा करना चाहते थे। वे ब्रिटिश शासन की अपेक्षा मुस्लिम शासन को सहन के लिये उद्यत थे, उचित अवसर का उपयोग करना जानते थे।

लगभग एक सौ वर्षों से राजनीति अथवा पालिटिक्स शब्द का जो अर्थ हम समझते आ रहे हैं उस में पराधीन नीति का ही अन्तर्भाव रहता है। राजनीति और उस के सिद्धान्तों का वास्तविक व्यवहार तभी होता है, जब देश स्वाधीन होता है, परराष्ट्रों से सन्धि-विग्रह करने की क्षमता उस में होती है, अखिल संसार के शासन-संघर्ष में वह आदर तथा भय के साथ याद किया जाता है, उस के किसी नियम अथवा उपनियम का परिणाम समीपस्थ स्वाधीन देशों पर पड़ता है अथवा समान-संस्कृति के अन्य देशों की संगठित मैत्री के बल पर, वह संसार के अन्य क्षेत्रों में अपने प्रकाश की किरणें फैला सकता है।

राजनीति का प्रथम सोपान

सन् १८१७ के नवम्बर मास की १७ वीं तारीख को 'स्वाधीन मराठा-राज्य-समूह' पर अंग्रेजी माया का जादू कारगर हुआ था। हिन्दू-पदशाही की स्थापना करने की अभिलाषा में रंगी हुई मराठों की भगवी पताका सदा के लिए नीचे झुक गई थी। उसी दिन मराठों की स्वाधीन राजनीति का अन्त हुआ। उसी दिन महाराष्ट्र में 'राजनीति' शब्द का वास्तविक अर्थ बदल कर 'पराधीन-नीति' हो गया था। और ताजी थी, जख्म हरा था, अतएव तत्कालीन महाराष्ट्रियों के मर्म और वाणी से अंग्रेजी सल्तनत के खिलाफ बगावत का जहर फूट पड़ता था। धीमे-धीमे यह बाढ़ उतरती गई और लोकमान्य तिलक के समय यह अवस्था पैदा होगई थी, जो 'नर्क के कीड़ों' की होती है — वह अपनी परिस्थिति को ही शांत सुन्दर सुखप्रद अवस्था समझने लगते हैं — उन्हें दुर्गन्ध नहीं आती। ऐसी अवस्था में सर्वप्रथम लोकमान्य तिलक ने जन-साधारण में पराधीनता के प्रति तीव्र असन्तोष पैदा करना आरम्भ किया। हिन्दुस्तान के निवासियों की राजनीति का प्रथम सोपान यही हो सकता है। स्वाधीन राष्ट्रों के होनहार युवक २०-२५ वर्ष की अवस्था में अपने देश के सेना-संचालन, अर्थ-व्यवस्था, पर-राष्ट्र विचार-विनिमय आदि में अपनी बुद्धि का कौशल दिखाते हैं, परन्तु किसी भी पराधीन राष्ट्र को सर्वप्रथम जनता के छोटे-से-छोटे भाग तक राजनैतिक असन्तोष पैदा करना पड़ता है। इस असन्तोष के पैदा करने के समय इस बात का भी विशेष ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं हमारी वाणी अथवा लेखनी से कोई ऐसी बात न निकल पड़े जिसका उपयोग हमारे विरोधी अपने हित के लिए कर सकें। लोकमान्य तिलक ने सन १८८१ ई० में केसरी पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया था। तब से लेकर लोकमान्य की मृत्यु तक (१९२०) केसरी ने राजनैतिक असन्तोष जाग्रत करने की अपनी नीति में जरा भी परिवर्तन नहीं होने दिया।

सर वेलन्टाइन शिरोल ने अपने एक ग्रन्थ में तिलक को 'भारतीय अशान्ति का जनक' कहा था। शिरोल ने यह बात चाहे किसी और उद्देश्य से कही हो, परन्तु बात थी ठीक। लोकमान्य तिलक की राजनीति का आधार अशान्ति पर ही अवलम्बित था। किसी भी बड़े उद्देश्य की साधना के लिए साधक में तीव्र अशांति का होना आवश्यक ही होता है।

कुछ विशेषतायें

लोकमान्य तिलक की राजनीति में कुछ बातें प्रमुखता से दिखाई देती हैं। पढ़े-लिखे धनिक अथवा प्रभावशाली व्यक्तियों तक ही वे अपनी राजनीति का अड्डा रखना नहीं चाहते थे। समाज के अंग प्रत्यंग में राजनैतिक जीवन पहुंचाना वे आवश्यक समझते थे। प्रस्ताव, अनुनय, विनय आदि वैध कहलाने वाले साधनों पर उन का विश्वास नहीं था। वे मनुष्य को मनुष्य ही समझते थे। मनुष्य की कमजोरियों का उन्हें ज्ञान था। उन का सिद्धान्त था कि जब तक किसी शासन को आन्दोलन की तीव्र विरोधी शक्ति द्वारा दबाया नहीं जा सकता तब तक उस से किसी लाभ का होना असम्भव है। व्यक्तिगत रूप से अंग्रेज के सद्भाव पर वे विश्वास रखते थे परन्तु अंग्रेजों के सामूहिक मन एवं अंग्रेजों की राजनैतिक प्रतिज्ञाओं पर उन्हें किंचित् भी विश्वास नहीं था। वे कहा करते थे कि जब तक लोहा गरम है, तभी तक उसे ठीक कर लेना चाहिये। परिस्थिति के बदलने पर मानवी मन की गति और विचार भी बदल जाते हैं। अपने राजनैतिक विरोधी की तथाकथित सज्जनता और उदारता पर लो० तिलक ने कभी विश्वास नहीं किया और इसीलिए उन के जीवन में ऐसे अवसर बहुत कम आये, जब कि वे शासन के किसी जाल में फंसे हों। कागजी घोड़ों के नचाने से शासनकर्ताओं पर कोई असर नहीं होता, यह बात वे पूर्णतया मानते थे। परन्तु इस के साथ-साथ वे यह भी मानते थे कि सरकारी, गैर सरकारी कागजी कार्यवाही की अवहेलना भी नहीं की जानी चाहिये। एक व्यवहार-कुशल राजनीतिज्ञ की तरह एक तरफ बहिष्कार एवं स्वदेशी का शंख फूंक कर व्यापारियों द्वारा संचालित होने वाली ब्रिटिश सरकार को दबाने का वे प्रयत्न करते थे तो दूसरी तरफ शासन-सञ्चालक यन्त्र के प्रत्येक पुर्जे पर अपने देशवासियों का अधिकार स्थापित करने के लिए भी प्रयत्नशील रहते थे। लोकमान्य को बहिष्कार में हिंसा नहीं दीखती थी। राजनीति सामूहिक स्वार्थ है। एक देश का स्वार्थ दूसरे देश की हानि हो सकता है और विशेषकर किसी पराधीन देश का स्वार्थ तो उस के शासकों के स्वार्थ के विपरीत ही होता है। जब कोई देश अपनी स्वाधीनता स्थापित करने जा रहा हो तब वह केवल अपने हित का ही खयाल रख सकता है। वसुधैव कुटुम्बकम् की वृत्ति लोकमान्य को भी पसन्द थी, परन्तु वे कहते थे, वसुधा के कुटुम्ब में बराबरी की हैसियत से बैठने की योग्यता रखने वाला देश ही इस उच्चतम मानवी भावना का पालन-पोषण कर सकता है। बहिष्कार आन्दोलन द्वारा प्रत्यक्ष-अवरोध (D ct A n) की शिक्षा देते समय लोकमान्य तिलक की राजनैतिक बुद्धि में भावना की ऊंची उड़ान का प्रवेश नहीं होता था। बहिष्कार, स्वदेशी एवं राष्ट्रीय शिक्षा की त्रिगुणात्मक विचार-धारा से लोकमान्य तिलक देश में बल पैदा करना चाहते थे। व्यावहारिक राजनीति में धर्माधर्म की शंका उनके मन में कभी प्रवेश नहीं कर पाती थी।

साम्प्रदायिक नीति

लो० तिलक साम्प्रदायिकता को राष्ट्र-कार्य में बाधक नहीं होने देना चाहते थे। वैसे तो सन् १८९३ के बम्बई प्रान्त के हिन्दू-मुसलिम दंगे और हिन्दुओं की बलहीनता को देख कर उन्होंने गणेशोत्सव और शिवाजी उत्सवों जैसे प्रचार-साधनों की सृष्टि की थी, परन्तु वह केवल आत्मबल-

वर्धन के लिये थी। बम्बई के हिन्दू-मुसलिम दंगों में उन्होंने देख लिया था कि हिन्दू-समाज, अंग्रेजों के शासन में बलहीन एव परावलम्बी बन चुका है। वह अपन घर-बार की रक्षा के लिये भी शासन सत्ता की ओर देखता रहता है। उस में आत्म-जागृति होनी चाहिये। इस को मानन हुये भी उन्होंन किसी मुसलमान का केवल इसलिये विरोध नहीं किया कि वह हिन्दू नहीं है। अली-बन्धुओं के राजनैतिक गुरु लोकमान्य तिलक ही थे। हसरत मोहानी जैसे कार्यकर्ता लोकमान्य का ही अनुकरण करन मे अपना गौरव समझते थे। लोकमान्य की राष्ट्रीयता की कसौटी सन् १९१६ का 'लखनऊ पैक्ट' था। कट्टर सनातनी पण्डित, प्रबुद्ध विचारक, गम्भीर तत्ववेत्ता तिलक की ओर सभी हिन्दुओं की दृष्टि उस समय लगी हुई थी। कई हिन्दू-नेता मुसलमानों की मांगों से देश की हानि देखते थे, परन्तु लोकमान्य तिलक कहते थे कि यदि ब्रिटिश नौकरशाही के स्थान पर, आज, भारत पर मुसलमानों का राज्य स्थापित होता हो तो, मैं पहला व्यक्ति हूं जो इस परिवर्तन का साथ दूंगा। आखिर हम सब भारतीय हैं। मुसलमानों को कौंसिलों में रक्षित जगहें दिये जान की बात का लोकमान्य न बड़े जोरों स समर्थन किया, जिस के परिणाम-स्वरूप 'लखनऊ पैक्ट' की सृष्टि हुई। व्यवहारकुशल तिलक की राष्ट्रीयता न साम्प्रदायिकता को तिलांजलि दना चाहा था, परन्तु आज साम्प्रदायिकता न जो रग बदला है उसे देख कर तो यही कहना पड़ता है कि लोकमान्य क जीवन मे यह एक गम्भीर भूल हुई थी।

कानून-सभाओं क उपयोग के विषय मे तिलक का मत स्पष्ट था। वे मानन थे कि वर्तमान धारा-सभाओं मे देश का कोई लाभ नहीं हो सकता है। परन्तु वे यह भी जानते थे कि यदि इन धारा सभाओं की कुर्सियों पर स्वार्थियों का झुण्ड जा बैठेगा तो वह देश को हानि अवश्य पहुंचाएगा। इस हानि की रोक के लिये वे कौंसिलों पर कब्जा करन के पक्ष में थे। लोकमान्य तिलक की मृत्यु के पश्चात्, 'नौकरी-पंथ' वालों ने प्रति-सहकार दल की जो छीछालेदर, लोकमान्य का नाम ले ले कर की, वह तो उस महान् राजनीतिज्ञ का अपमान था। कौंसिलों का उपयोग लोकमान्य किस प्रकार करना चाहते थे, इस का उत्तर उन के सहकारी और सहविचारी स्वर्गीय विठ्ठलभाई पटेल ने अपने असेम्बली के सभापतित्व मे दे दिया है। लोकमान्य की राजनीति में प्रति-सहकार का अर्थ यही था। परन्तु उन का आमरण विरोध करने वाले लोग भी जब 'प्रति-सहकार' में घुस पड़े तब उन्होंने उस दल को केवल 'नौकरी-सोपान ही बना डाला।

लोकमान्य की मृत्यु सन् १९२० में हुई। आज चौदह वर्षों के पश्चात् भी हम देखत हैं कि लोकमान्य की राजनीति की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी उन के जीवनकाल में थी। तिलक साधु अथवा सन्त नहीं थे। सत्य को वे परम धर्म समझते थे, परन्तु सत्य की विकृत कल्पना के वशीभूत होकर, वे अपन देश को हानि नहीं पहुंचाना चाहत थे। वे तत्वविद् थे। ससार क व्यवहार का उन्होंन अध्ययन किया था। मनुष्य स्वभाव की कमजोरियों को वे जानत थे। जीवन मे कई बार उन्हे निराश होना पड़ा था, परन्तु उन्होंन राजनीतिक क्षेत्र स पीछे हटन की कल्पना कभी भी नहीं की।

सक्षेप मे तिलक-राजनीति मे ये बाते आती है:—(१) सामूहिक जागृति एवं असन्तोष, (२) प्रत्यक्ष अवरोध स ही विरोधियों को दबाया जा सकता है, (३) उचित अवसर का पूर्ण उपयोग करना चाहिय, (४) कम स कम अधिकार देन वाले शासन-यन्त्र पर भी कब्जा कर लेना चाहिय, (५) राष्ट्र-हित क लिय साम्प्रदायिकता की बलि चढ़ा देनी चाहिय। (७) धारा-सभाओं पर राष्ट्र का अधिकार होना चाहिय।

—:o:—

"शताब्दियों मे लाखों मनुष्यो के एकत्रित किय हुए धन पर अंग्रेजों न अधिकार कर लिया और उसे वे लण्डन ले गय। ठीक इसी प्रकार, जैसे रोमन लोग यूनान और पौलस में लूट मे मिले माल को इटली ले गय थे। यह कोई नहीं कह सकता कि इस धन का मूल्य कितना था। परन्तु यह लाखों पौंड क लगभग रहा होगा। उस समय योरपवासियों के पास जितने रत्न और जवाहर रहे होंगे, यह धन उस से कहो अधिक रहा होगा।"

—ब्रुक्स एडम्स।



सो० कमलाबाई किबे

भारतीय महिलाओं की जागृति

—:—

(लेखिका—सो० कमलाबाई किबे)

—:—

'आज यदि भारत की नारी-शक्ति जागृत हो जाय तो, वह भारत की अन्य बुराइयों को दूर करने में सब से अधिक सफल हो सकती है। नवीन राष्ट्र-निर्माण के कार्य के लिये उन से बढ़कर कोई समर्थ नहीं हैं।"

आज चारों ओर दृष्टिपात करने से सब स्थानों पर सुधारों की चर्चा दीखती है। महिलायें भी कम उन्नति नहीं कर रहीं। पाठशाला महाविद्यालय, सभा-समिति, उत्सव म्यूनिसिपल कमेटी और कौंसिल सभी स्थानों में स्त्रियां प्रमुखता से भाग लेती हुई नजर आती हैं। सुधार-प्रेमी सज्जन समाज-सुधार के इस चित्र को देख कर बहुत प्रसन्न होते हैं। वे समझते हैं कि समाज आगे बढ़ रहा है। परन्तु हम वास्तविक उन्नति कर रही हैं या नहीं, इस पर गम्भीरता-पूर्वक विचार नहीं करते। अनेक सुधारक तो वर्तमान सुधारों के दूसरे पहलू को देखना भी अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझते हैं। वे इसे प्रत्येक सुधार में आने वाला अपरिहार्य विरोध समझ कर उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। किन्तु हमने वस्तुतः कितनी उन्नति की है, इस का निरीक्षण आवश्यक है।

अशिक्षा

बड़े नगरों में भी जहां शिक्षा का बहुत प्रचार है शिक्षित महिलायें परिमित संख्या में मिलती हैं। पदवी-प्राप्त महिलाओं की संख्या तो और भी कम है। भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुये महिला-समाज की साक्षरता की समस्या अत्यन्त कठिन तथा परिश्रम और व्यय-साध्य प्रतीत होने लगती है। परन्तु कठिन होने के कारण यह उपेक्षणीय नहीं है, इस तरफ राजनैतिक और सामाजिक नेताओं को जनता व सरकार का पूर्ण सहयोग लेते हुये निश्चित कार्य-पद्धति बना कर अत्यन्त प्रयत्न करना चाहिये। हमें सफलता अवश्य मिलेगी।

गांवों में

गांवों में महिला-शिक्षा की समस्या और भी अधिक विषम है। बाल-विवाह की प्रथा प्रचलित होने के कारण माता पिता लड़कियों का शीघ्र ही विवाह कर देते हैं और वे पढ़ नहीं सकतीं। फिर कन्या पाठशालाओं का भी अभाव रहता है। उनकी मनोबुद्धि का विकास नहीं होने पाता। हम लोग ग्रामों के प्रति इतने अधिक उदासीन हैं कि कुछ मीलों के अन्तर पर रहते हुये भी उन के साथ विदेशी का सा व्यवहार करते हैं। जहां शिक्षित समाज का व्यवहार इस प्रकार का है, वहां यदि स्त्रियों में भी यह दोष दिखाई दे, तो उस में कोई आश्चर्य नहीं है। आज पढ़ी लिखी स्त्रियां ग्रामों के सम्बन्ध में—जहां वास्तविक भारत निवास करता है—बिलकुल उदासीन हो चुकी हैं। प्राचीन संस्कृति प्राचीन साहित्य और स्वदेश-गौरव की भावनाओं का हमारे में अत्यन्ताभाव हो गया है। वस्तुतः हमारी कन्यायें तो अपने देश का गौरव-मय इतिहास भी नहीं पढ़ पातीं। फिर उनमें देश-प्रेम की भावना ही कैसे जागृत हो। प्राचीन पवित्र महिला पुण्यात्माओं के स्मरण-मात्र से उन की दिव्यता शुचि, त्याग और आत्मोत्सर्ग की भावनाओं का चित्र हमारे सामने खड़ा हो जाता है। परन्तु आज के चित्र में उस का कोई अंश नहीं मेल खाता। हमारी पूर्वजाओं का एक भी तो गुण हम अपने में नहीं पातीं। न स्वधर्म में हम परायण हैं, न पतिव्रत या सत्यव्रत की ओर आज की शिक्षित महिलाओं का ध्यान है। वह आदर्श ही हमारे सामने नहीं है। शिक्षित महिलाओं का कर्त्तव्य है कि वे एक स्थल पर बैठ कर गम्भीरता से इस पर विचार करें कि वर्तमान महिला-समाज का चित्र भी क्या सच्चरित्र, साधुता आदि अनमोल गुणों के कारण चमकने वाले प्राचीन भारतीय महिलाओं के चित्र के समान उज्ज्वल होगा? हम यह नहीं जानतीं कि हमारी क्या परिस्थिति है। हम पर अज्ञान का बहुत अधिक गहरा आवरण पड़ा हुआ है। भारतीय महिला-समाज का मानसिक और बाह्रिक पतन इस सीमा तक पहुंच चुका है कि एक भी ऐसी आत्मा दृष्टिगोचर नहीं होती, जो इस पतन को देख कर तड़पती हो, जो इनकी सेवा करने के लिये कटिबद्ध हो। हमारा मानसिक उत्साह अन्तःकरण की प्रसन्नता और अपने कर्त्तव्य का यथार्थज्ञान सब कुछ नष्ट हो चुका है।

समाज की उदासीनतापूर्ण वृत्ति संगठन का अभाव तथा दरिद्रता आदि महान् संकटों से भारत का स्त्री-समाज घिरा हुआ है। सात लाख छोटे छोटे गावों में फैली हुई इस दुर्दशा को हटा कर उन का कायापलट करना वस्तुतः बहुत कठिन कार्य है। परन्तु परिस्थितियों से डरने या संकटों से घबराने से काम न चलेगा। जिस दिन हमारे अनवरत परिश्रम से गावों के महिला-समाज में जागृति हो जायगी, वह दिन भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा।

सर्वाङ्गीण उन्नति

भारतीय महिलाओं की केवल सामाजिक उन्नति का ही प्रश्न नहीं है उन की भौतिक व आर्थिक उन्नति भी अत्यन्त आवश्यक है। आज तो हमें पेट भर अन्न लज्जा-रक्षण के लिये खद्दर तथा सिर छिपाने के लिये झोंपड़ी तक का मिलना कठिन हो रहा है। लक्ष्मी हमें त्याग चुकी है, दरिद्रता विकट हास्य के साथ हमारे घरों पर कब्जा किये हुये है। हमारे पास स्वस्थ और निरोग रहने के साधन भी नहीं हैं, सब प्रकार के रोगों, दरिद्रता, अशिक्षा, सामाजिक अत्याचार और शोचनीय उपेक्षा के कारण भारतीय महिला समाज मरणासन्न हो रहा है।

निःशंक शक्तिदात्री

प्राचीन शास्त्रों में नारी को शक्ति का अवतार माना है। आज वही शक्तिदायी स्वयं विपन्न और अशक्त अवस्था में है। इस का उत्तरदायी कौन है उस के अन्तःकरण की भावनायें किस ने कुचल डालीं। दानवों का संहार कर उन का दर्प-दलन करने वाली शक्ति के अवतार की यह दशा कि वह वृक्षों की परछाईं से डर जाता है। यह परिवर्तन कैसे हुआ और इस के मूल में क्या कारण हैं, इन प्रश्नों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। पढ़ी लिखी वर्तमान सुधारों के पीछे जाने वाली महिलाओं तथा समाज-सुधार-प्रेमी महानुभावों को इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। पाश्चात्य समाज का स्वैरता-पूर्ण सुधार उसकी आसुरी धन-लालसा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की सीमारहित व्याख्या आदि बातों की बाहरी चमक से मोहित कर बहुत सी बहिनें पाश्चात्य-सभ्यता के पीछे चलने लगी हैं। यदि उन्हें भारतीय-सभ्यता की शिक्षा दी भी जाय, तो वे उसे हंस कर टाल देती हैं। जो व्यक्ति अपने धर्म, और अपनी सभ्यता से प्रेम नहीं कर सकता, वस्तुतः वह अपने देश से भी प्रेम नहीं कर सकता।

राष्ट्रीय उन्नति

भारतीय महिलाओं की जागृति और सर्वांगीण उन्नति का प्रश्न केवल उन्हीं की उन्नति का प्रश्न नहीं है, यह सम्पूर्ण देश की सामाजिक और राजनैतिक उन्नति का प्रश्न है। यदि हमें अपनी मातृभूमि की उन्नति अभीष्ट है तो महिला समाज की उन्नति की ओर अनिवार्य रूप से ध्यान देना होगा। आज यदि भारत की नारी-शक्ति जागृत हो जाय तो वह भारत की अन्य बुराइयों को दूर करने में सब से अधिक सफल हो सकती है नवीन राष्ट्र-निर्माण के कार्य के लिये उन से बढ़ कर कोई समर्थ नहीं है।

शिक्षित महिलाओं का कर्त्तव्य है कि वे अपनी बहिनों का उद्धार करने में प्राणपण से लग जावें।

इस सवा में प्राप्त होने वाला सच्चा आनन्द ही उन का सर्वश्रेष्ठ फल होगा। भारतवर्ष की वास्तविक सम्पत्ति का उपयोग भी आज स्त्री जाति बहुत अच्छी तरह कर सकती है। हमारे देश में विपुल धन धान्य है विशाल भूमि है सब चीजे पैदा हो सकती है परन्तु फिर हम दरिद्र हैं। कर्त्तव्य परायण व कर्मठ स्त्रिया भारत को सुखी व सम्पत्तिशाली बना सकती हैं। आवश्यकता है केवल गीता क सर्वमान्य उच्च तत्व क अनुसार फल की अपेक्षा न करत हुए एक दम कार्य म लग जान की। यही एक सरल और सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

—— ——

भारतवर्ष के ४०० ०० ००० निवासी पेट भर भोजन कभी नहीं पात।

—हटर

*

आध मे अधिक किसान वर्ष के एक सिर से दूसर सिर तक यह भी नहीं जानत कि पेट भर भोजन करना किसे कहते हैं।

—सर चार्ल्स इलियट

*

यह अनुमान करना अनुचित न होगा कि १० ००,०० ००० भारत वासी ऐसे हैं, जिनकी वार्षिक आय ५ शिलिंग प्रति मनुष्य से अधिक नहीं होती।"

—इण्डियन विटनैस [पादरियों की पत्रिका]

*

'भारत में जिस पद्धति क अनुसार ब्रिटिश शासन चलाया जा रहा है वह इस ससार में अत्यन्त निकृष्ट और पतित — एक राष्ट्र की दूसर राष्ट्र द्वारा लूट खसोट की — पद्धति है।

—डा० वी० एच० रथवोर्ड

* * *

'भारतवर्ष की वर्तमान शासन-व्यवस्था कवल इसी लिए अब तक विद्यमान है कि यह सब प्रकार की स्वतन्त्र और बुद्धिमत्तापूर्ण आलोचनाओं म बची हुई है।

—सर लूइस मैलट

[भू० पू० उपमत्री भारत]

—:o:—

भारतवर्ष और साम्यवाद

(लेखक—श्री सत्यभक्त)

श्री सत्यभक्त हिन्दी के पुराने लेखक हैं। इस लेख में आपने भारत में साम्यवाद के प्रचार के विरोधियों का वर्गीकरण करते हुये प्रत्येक दल की युक्तियों का निराकरण किया है। साम्यवाद के सम्बन्ध में उत्पन्न भ्रमों का भी आपने भली भाति निरसन करते हुये बताया है कि साम्यवाद यह दावा कभी नहीं करता कि सब लोगों की भौतिक व मानसिक स्थिति एक हो जायगी। वह तो प्रत्येक मनुष्य को उन्नति करने तथा आगे बढ़ने के लिये समान रूप से अवसर और साधन देना चाहता है।

पिछले कई महीनों से हमारे देश में साम्यवाद के प्रश्न ने बहुत ज़ोर पकड़ लिया है।

साम्यवाद का आन्दोलन

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के शिथिल अथवा असफल होने पर यह स्वाभाविक भी था। जब तक यह आन्दोलन ज़ोर पर रहा, देश के उत्साही और कार्यक्षम युवक उसमें लगे रहे। जब यह सूत्र निर्बल पड़ कर छिन्न-भिन्न हो गया तो उनका भिन्न-भिन्न दिशाओं में बंट जाना निश्चय ही सा था। इन्हीं में से कुछ व्यक्ति साम्यवाद की तरफ़ भी चले आये और उनकी चेष्टा से इस आन्दोलन में भी कुछ दम आ गया।

कहने के लिये तो यह आन्दोलन वर्षों से जारी है। बम्बई, कलकत्ता, कानपुर आदि श्रमजीवी-प्रधान नगरों में कुछ लोग बहुत समय से इसके प्रचार की चेष्टा करते आये हैं। फिर जब बम्बई और कलकत्ता के चार साम्यवादियों पर कानपुर में बोलशेविक षड्यन्त्र केस सन् १९२० में चलाया गया और उनको लम्बी सजायें दी गईं, तो इसकी चर्चा और भी बढ़ गई। उसके बाद उसी प्रकार के विचार रखने वाले कुछ व्यक्ति इस आन्दोलन को फैलाने की चेष्टा करते रहे। उनकी चेष्टा का फल अधिक तो नहीं हुआ, पर इसकी चर्चा बढ़ती गई। कुछ समय पश्चात् पं० जवाहरलाल नेहरू ने इसका समर्थक बनकर जोरों से इसका प्रचार शुरू किया। पंडित जी सम्भवतः साम्यवाद के प्रेमी बहुत समय से थे, पर कराची कांग्रेस के समय से वे इस तरफ़ विशेष रूप से ध्यान देने लगे। वे कांग्रेस के प्रभावशाली नेता थे। फलतः कांग्रेसमैनों की एक अच्छी संख्या इस आन्दोलन की पक्षपातिनी बन गई। इस समय ये ही कांग्रेसमैन इस आन्दोलन का विशेष रूप से प्रचार कर रहे हैं और इसे भारतव्यापी बनाने की चेष्टा कर रहे हैं।

आन्दोलन का विरोध

इन कांग्रेसी साम्यवादियों को अभी तक जो कुछ सफलता प्राप्त हुई और उनके आन्दोलन का देश के विभिन्न दलों द्वारा जैसा स्वागत अथवा विरोध हुआ है, उससे यही अनुमान होता है कि अभी तक समर्थकों के बजाय इसके विरोधियों की संख्या ही अधिक है। कम से कम इतना तो निस्सन्देह कहा जा सकता है कि कांग्रेस के कर्णधार म० गांधी तथा अन्य प्रथम श्रेणी के नेता उनके पक्ष में नहीं हैं। यद्यपि कांग्रेस को जहां तक सम्भव हो फूट से बचाने की गरज से वे स्पष्टतः इनका विरोध नहीं करते, पर यदि दोनों दल सचाई के साथ अपने-अपने सिद्धान्तों पर डटे रहे तो एक दिन अवश्य ही उनको अलग-अलग प्लेटफार्मों पर चला जाना पड़ेगा।

इन नेताओं के सिवा और भी बहुसंख्यक व्यक्ति साम्यवाद के विरुद्ध विचार प्रकट करते देखे जाते हैं। इनमें से कुछ तो बड़े और छोटे जमींदार हैं, जिनका हित सर्वथा साम्यवाद का विरोधी है। कुछ बड़े-बड़े व्यवसायी हैं, जो साम्यवाद को अपनी अपार सम्पत्ति तथा जायदाद के लिये खतरनाक समझते हैं। कुछ पण्डे, पुजारी, महन्त आदि धर्म-व्यवसायी हैं, जो समानता के सिद्धान्त को अपनी चैन की आजीविका के लिये घातक समझते हैं, क्योंकि साम्यवादी शासन में किसी तन्दुरुस्त आदमी को बेकार बैठे रहकर खाने की आज्ञा नहीं मिल सकती। इन तीन श्रेणी के व्यक्तियों द्वारा साम्यवाद का विरोध किया जाना स्वाभाविक है और जब तक इनमें कुछ भी शक्ति रहेगी, तब तक ये विरोध करते रहेंगे।

पर इनके सिवा कुछ ऐसे भी व्यक्ति हैं, जिनको वर्तमान स्थिति में किसी प्रकार का विशेष अधिकार (Privilege) प्राप्त नहीं है, तो भी वे साम्यवाद का विरोध करते हैं। इनमें दो प्रकार के व्यक्ति देखे जाते हैं। एक श्रेणी का कहना है कि साम्यवाद भारतीय संस्कृति के प्रतिकूल है और दूसरी का मत है कि साम्यवाद इस देश की वर्तमान परिस्थिति में असम्भव तथा हानिकारक है। नीचे हम इन दोनों मतों पर क्रमशः विचार करेंगे।

भारतीय संस्कृति से विरोध ?

जो लोग भारतीय संस्कृति के नाम पर साम्यवाद के विरोधी हैं, उनको दो दलों में बांटा जा सकता है। एक इस प्रश्न पर धार्मिक दृष्टि से विचार करते हैं और दूसरे सामाजिक दृष्टि से। धार्मिक विचार से साम्यवाद हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म और कर्मफल सिद्धान्तों का विरोधी है। उनके मतानुसार जो लोग इस लोक में दुःखी शाप-ग्रस्त और अन्याय-पीड़ित दिखाई पड़ते हैं, वे अपने पूर्वजन्म के कर्मों का फल भोग रहे हैं। उनकी दशा को सुधारने का उपाय साम्यवाद नहीं है। उनको चाहिये कि इस जन्म में वे शुभ कर्म करें, जिनके फल से दूसरे जन्म में उनको सुख प्राप्त होगा। यद्यपि इस सिद्धान्त का आधार अन्धश्रद्धा पर है, पर इसका प्रभाव अतुलनीय है। इस सिद्धान्त ने हिन्दू समाज के अत्याचार-पीड़ित वर्ग को सैकड़ों वर्षों से सामाजिक क्रान्ति करने से रोक रखा है। इसी का परिणाम है कि एक व्यक्ति के छोटे-छोटे बच्चे आंखों के सामने भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर मर जाते हैं, पर उसके हृदय में अन्यायी समाज के प्रति विद्रोह का भाव उत्पन्न नहीं होता और वह केवल अपने भाग्य को दोष देकर सन्तोष धारण कर लेता है। इसी के कारण लोग अन्यायपूर्वक अपने स्वत्व से वंचित कर दिये जाने पर भी अत्याचारी का विरोध नहीं कर पाते और अपने दिल को समझा लेते हैं कि या तो पूर्वजन्म में हमने उसके साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया होगा अथवा अगले जन्म में उसे इसका प्रतिशोध देना पड़ेगा।

यह स्पष्ट है कि इस प्रकार के अन्ध-श्रद्धालुओं को दलीलों द्वारा समझाया जा सकना असम्भव है। पुनर्जन्म और परलोक काल्पनिक वस्तुयें हैं। पर हजारों वर्षों से मनुष्य इनका चिन्तन करता आया है और इसलिए इन वस्तुओं ने मनुष्य के दिमाग में साकार स्वरूप ग्रहण कर लिया है। इस अन्ध-विश्वास की जड़ काटने का एक-मात्र साधन विज्ञान है। पर एक तो स्वयं विज्ञान इस दृष्टि से अभी अपूर्ण अवस्था में है और दूसरे इन व्यक्तियों की उस तक पहुंच भी नहीं है।

वर्णाश्रम-पद्धति

दूसरा दल उन लोगों का है, जो भारत की प्राचीन वर्णाश्रम-पद्धति को ही समाज-संगठन की आदर्श-प्रणाली समझते हैं और साम्यवाद को समाज के लिए हानिकारक मानते हैं। इन लोगों की भ्रम-पूर्ण धारणा का कारण भी प्रधानतः उनका अज्ञान ही है। वे नहीं जानते कि जिस युग में वर्णाश्रम-धर्म का आविर्भाव हुआ था, उसमें और वर्तमान युग में कितना अधिक अन्तर है। उस काल में समाज को केवल चार ही पेशों की आवश्यकता थी, जब कि आजकल हज़ारों नये पेशों की उत्पत्ति हो गई है। यह सच है कि भारत का अधिकांश भाग, जो गावों के रूप में है, अभी तक हज़ारों वर्ष पुरानी अवस्था में ही पड़ा हुआ है, पर यह स्थिति स्वाभाविक नहीं है। जल्दी या देर में उसे संसार के अन्य देशों की श्रेणी में खड़ा होना ही पड़ेगा। उस समय वर्णाश्रम को कहां स्थान मिल सकेगा ? जब इस देश में कारखानों की बहुलता हो जायगी, तो सभी व्यक्ति मजदूर — हिन्दू धर्म की भाषा में शूद्र — बन जायेंगे। इसका उदाहरण अब भी बम्बई, कलकत्ता आदि व्यवसाय-प्रधान नगरों में देखा जा सकता है, जहां ब्राह्मण और क्षत्रिय चमार और मज़दूरों के साथ ही बैठकर खाते पीते हैं

और उन्हीं के बगल के घरों में उन के साथ मिल-जुल कर रहते हैं।

पर जो लोग भारत की वर्तमान राजनीतिक तथा सामाजिक स्थिति के आधार पर साम्यवाद का विरोध करते हैं, उनकी गणना उपर्युक्त श्रेणियों के व्यक्तियों में नहीं की जा सकती। उन के विरोध का आधार अन्धश्रद्धा अथवा अज्ञान नहीं है। इन को भी हम दो दलों में बांट सकते हैं। एक वे, जो राजनीतिक कारणों से साम्यवाद का विरोध करते हैं और दूसरे वे, जो सामाजिक कारणों से। राजनीतिक विचार वालों की मुख्य आपत्ति यह है कि साम्यवाद के आन्दोलन के कारण इस देश के विभिन्न दलों, अर्थात् किसानों और जमींदारों तथा मजदूरों और पूंजीपतियों में फूट उत्पन्न हो जायगी और हमारा स्वराज्य-संग्राम शक्तिहीन हो जायगा। ऐसी अवस्था में भारत-स्थित विदेशी सरकार की बन आयेगी और वह हमारी परतन्त्रता के जुए को और भी दृढ़ बना देगी

राजनैतिक व सामाजिक स्थिति

पर यदि विचार-पूर्वक अवस्था का निरीक्षण किया जाय तो इस दलील में बहुत कम सार मालूम होता है। प्रत्येक देश के स्वाधीनता-संग्राम में मुख्य भाग साधारण लोगों का ही रहा है। यदि बड़े लोग कभी अपने स्वार्थ पर आघात होने से प्रचलित शासन के विरुद्ध विद्रोह का झगड़ा उठाते भी हैं, तो भी उनका उत्साह अस्थायी होता है। जैसे ही उनकी शिकायत रफा हो जाती है, वे फिर अपने आनन्द में निमग्न हो जाते हैं। पर साधारण जनता पराधीनता के कष्टों को सदा भोगती रहती है, इसलिए वह सदैव उस के विरुद्ध रहती है और जब कभी उस के विरुद्ध आन्दोलन उठाती है तो अन्त समय तक अथवा जब तक उस में शक्ति शेष रहती है, उस में लगी रहती है। फिर भारत में अमीरों तथा गरीबों तथा बड़ी और छोटी जाति के लोगों के बीच इतनी गहरी खाई मौजूद है कि उन के लक्ष्य में किसी तरह एकता होना सम्भव ही नहीं जान पड़ता। और जब तक लक्ष्य में एकता नहीं होगी, तब तक वे किसी आन्दोलन में वास्तविक संयुक्तभाव का परिचय कैसे दे सकते हैं? यही कारण था कि सन १९१९ से पहले भारतीय कांग्रेस एक नाममात्र की संस्था थी, और उसके प्रस्तावों अथवा प्रतिवाद का कुछ भी महत्व नहीं समझा जाता था। पर अब म० गांधी ने देश के जन-साधारण को उसमें शामिल किया, तब उस में एक नई जान आ गई और उसने शक्तिशाली अंग्रेज़ी शासन को भी चिन्तित कर दिया। पर वह आंदोलन भी पूर्णतया साधारण जनता का न था, वरन् उस में जनता को कुछ विशेष आकर्षण दिखा कर आकर्षित किया गया था, इसलिए थोड़े ही समय में उस की कायापलट हो गई। इससे यह स्पष्ट रूप से मालूम होजाता है कि राष्ट्रीय आंदोलन अथवा देश के स्वाधीनता-आन्दोलन के लिए बड़े लोगों की विशेष आवश्यकता नहीं है, वरन् उसका मुख्य आधार साधारण श्रेणी की जनता ही है। इसमें सन्देह नहीं कि यदि ये दोनों दल मिल कर चेष्टा करें, तो सफलता शीघ्र और अधिक परिमाण में मिल सकती है, पर यह एक असम्भव सी कल्पना है, क्योंकि इन दोनों दलों का स्वार्थ एक दूसरे से भिन्न है। इसलिये यदि इन दोनों को मिलाने की चेष्टा की भी जायगी तो वह ऊपरी और अस्थायी ही होगी। इन में सच्ची एकता तभी हो सकती है जब कि बड़े कहलाने वाले लोग अथवा पूंजीपति तथा जमींदार साधारण लोगों के स्वत्व का छीनना बन्द कर दें। उस अवस्था में वे अवश्य मिल कर कार्य कर सकते हैं और उस से बहुत कुछ परिणाम निकल सकता है। पर उसका नाम फिर 'साम्यवाद होगा।

समानता का अभिप्राय

एक दल ऐसे लोगों का भी है, जो साम्यवाद का विरोध इसलिये करते हैं कि उन की दृष्टि में यह समाज के कल्याण के लिये अनिष्टकारी है। उन के मत से सब लोगों में समानता स्थापित हो ही नहीं सकती और यदि वैसा करने की चेष्टा की भी जाय तो उसका फल कभी अच्छा नहीं हो सकता। इस विचार के लोग अपनी शंकायें प्रायः समाचार-पत्रों में भी प्रकट करते रहते हैं और इसी आधार पर इसे भारतीय-समाज के लिये अनुपयुक्त बतलाया करते हैं। वे कहते हैं कि यह प्राकृतिक रूप से असम्भव है कि सब लोग समान हो सकें। इन लोगों की युक्तियां प्रायः अज्ञानमूलक होती हैं। ये समझते ही नहीं कि साम्यवाद के अनुसार समानता का वास्तविक अर्थ क्या है, इस सम्बन्ध में एक अंगरेज साम्यवादी का वचन, जो उस की एक नव-प्रकाशित पुस्तक में प्रकट हुआ है, विशेषरूप से उपयुक्त है। वह लिखता है:—

> "समानता शब्द के निःसन्देह विभिन्न अर्थ हो सकते हैं। इस से यह भी समझा जा सकता है कि सब मनुष्य योग्यता और शक्ति की दृष्टि से समान हों और एक दूसरे की समान रूप से सेवा करें। पर यह प्रत्यक्ष है कि इस प्रकार व्यक्तियों को समान योग्य बना सकना मनुष्य की शक्ति से बाहर है। इस सम्बन्ध में इतना ही सम्भव है कि वर्तमान समय में बहुसंख्यक मनुष्यों के मार्ग में जो बाधायें मौजूद हैं और जिनके कारण वे अपने भीतर छुपी हुई

राष्ट्र-गान

मां! वीरोचित गान सुना दे।
वीणा-पाणि! सप्त स्वर-मण्डित,
अनुपम भारत-भाग्य जगा दे॥

अमल कमल-दल पुलकि उठें अति,
बहे पराग लिये मंजुल गति,
लख प्रभात हो दूर सकल क्षति,
ऐसा प्रणय-पाश फैला दे।
मां! वीरोचित गान सुना दे॥

* * *

विषम दासता तज जीवन की,
सुनें तान मधुमय 'मोहन' की,
मिटे तमिस्र-भावना मन की,
वह शुभ घड़ी समय वह ला दे।
मां! वीरोचित गान सुना दे॥

* * *

वह सीमान्त 'खान' सुखदायक,
रहे सदा ही तव गुणगायक,
हों 'राजेन्द्र' राष्ट्र-अभिनायक,
वीर 'जवाहर' के गुण गा दे।
मां! वीरोचित गान सुना दे॥

* * *

हम 'वल्लभ' से कीर्तिवान हों,
दश-दिशि में स्वातन्त्र्य-गान हो,
साम्य-भाव ले सब समान हों,
ऐसा मोहन-मन्त्र सुना दे।
मां! वीरोचित गान सुनादे॥

—श्यामबिहारी 'शम्भु'

———:———

शक्तियों को विकसित नहीं कर सकते, उन बाधाओं को दूर कर दिया जाय। इस के फल से विभिन्न व्यक्तियों की योग्यता में इस समय जो जमीन आसमान का अन्तर दिखलाई पड़ रहा है, वह मिट जायगा। इसके लिये शिक्षा की ऐसी व्यवस्था करनी होगी, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिये प्राप्य हो और जिससे वह अपनी शक्ति के अनुसार लाभ उठा सके। आज कल बाल्यावस्था म ही, जब कि मनुष्य के चरित्र का निर्माण होता है, बीमारियों, पौष्टिक भोजन क अभाव तथा गन्दे घरों मे रहने के कारण गरीब बालकों के मनुष्योचित गुणों तथा शक्तियों की वृद्धि ही नहीं होन पाती। इसके लिय सर्व-साधारण के रहन सहन की व्यवस्था में ऐसी उन्नति की जानी चाहिये कि किसी को ऐसी अवांछनीय दशा में रहने को बाध्य न होना पड़े। इस का यह भी अर्थ है कि लोगों के आसपास के चारित्रिक वातावरण की उन्नति की जाय। क्योंकि अगर मनुष्य का लक्ष्य दूसरों की सेवा करना तथा अपनी शक्तियों का अधिक मे अधिक सदुपयोग करना है, तो यह आवश्यकीय है कि उनके हृदय में सेवा का आदर्श मौजूद रहे। बहुत छोटी अवस्था मे ही उन के हृदय में यह भाव उत्पन्न किया जाना चाहिय कि उन में जो कुछ शक्ति है उसका उद्देश्य अपनी समाज को अधिक लाभ पहुचाना है और इस के लिय उन को अपनी योग्यता की जहा तक सम्भव हो ज्यादा म ज्यादा वृद्धि करनी चाहिय।"

इस विवेचन म स्पष्ट है कि समानता का अर्थ मनुष्यों को एक बराबर ताकतवर एक बराबर विद्वान् अथवा एक बराबर सद्‌गुणी बनाना नहीं है। जो लोग यह दलील करते हे कि क्या साम्यवादी शासन मे सब कोई समान रूप म सुन्दर होंगे, बराबर परिमाण में खाना खायेंगे और जीवन-निर्वाह की प्रत्यक आवश्यक वस्तु समान परिमाण में बाट दी जायगी, वे या तो भ्रम में पड़े हैं अथवा जान-बूझ कर कुतर्क का सहारा लेते हैं। ऐसी निराधार कल्पना करना साम्यवाद के विरोधी तथा धर्म के ठेकेदार बनने वालों का ही काम है।

समानता का अर्थ इतना ही है कि प्रत्येक मनुष्य को उन्नति करने तथा आगे बढ़ने के लिये समानरूप से अवसर और साधन दिये जायं। इसके फल से सभी लोग समाज के एक उपयोगी अग बन सकेंगे और उनकी योग्यता तथा उनके अधिकारों में वर्तमान समय की तरह कल्पनातीत अन्तर न रहेगा। उस समय एक मनुष्य मिट्टी और दूसरा हीरा न होगा। सभी अपनी-अपनी रुचि तथा शक्ति के अनुसार समाज की सेवा करेंगे और इसलिये सभी को सामाजिक सम्पत्ति के उपयोग का अधिकार रहेगा। उस दशा में भी कुछ लोग बहुत अधिक श्रेष्ठ अथवा बहुत अधिक निकृष्ट हो सकते हैं, पर उनकी संख्या इतनो कम होगी कि समस्त समाज पर उनका कुछ भी प्रभाव न पड़ेगा और वह अपवाद की भांति उनको भी अपने में खपा सकेगी।

इस छोटे से लेख में साम्यवाद के वैज्ञानिक स्वरूप की विवेचना नहीं हो सकती। तो भी हम जो कुछ बतला सके है, उस से इतना स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि साम्यवाद में ऐसी कोई बात नहीं है जो किसी खास देश के निवासियों के लिए हितकारी हो और अन्य लोगों के लिए हानिकारक। यह सच है कि साम्यवाद मानवीय उन्नति का एक खास 'स्टेज' है, जो उस समय तक वास्तविक रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता, जब तक कि उसमे पिछले 'स्टेजों' तक न पहुंच लिया जाय। इस दृष्टि से भारतवर्ष कितने ही अंशों में 'साम्यवाद' के अनुपयुक्त ठहर सकता है। साम्यवाद पर अमल करने के पहले हमको सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में एक खास हद तक उन्नति करना जरूरी है। पर इसका अर्थ यह नहीं कि हम साम्यवाद को भारतवर्ष के लिए हानिकारक अथवा अनुपयुक्त कहें। साम्यवाद मानवीय विकास के सर्वथा अनुकूल है और आज सारी दुनिया राजी से अथवा विवश हो कर, जानकर या अनजान में उसकी तरफ बढ़ी चली जा रही है। भारतवर्ष को भी उसकी तरफ बढ़ना ही होगा चाहे इस काम में दो चार वर्ष लगें, अथवा दस बीस वर्ष।

—:०:—

"भारत की शासन-व्यवस्था इतनी जड़बुद्धि, इतनी कठोर, इतनी हठी और इतनी असामयिक है कि वह आधुनिक बातों के लिये सर्वथा अनुपयुक्त है। भारत-सरकार का समर्थन नहीं किया जा सकता।"

—मि० मांटेग्यू (भारतमन्त्री)

"भारत के सुख शान्ति के दिन गये; किसी समय जो ऐश्वर्य था, उसका एक बड़ा भार इंग्लैण्ड ने हड़प लिया है। एक कठोर कुशासन में पड़कर उस की शक्तियों का नाश हो गया है। थोड़े से व्यक्तियों के लाभ के लिए लाखों प्राणियों के सुखों का बलिदान कर दिया गया है।"

—सर जान शोर (भू० पू० गवर्नर बंगाल)

*　　*　　*

"इस बात के सत्य होन में सन्देह नहीं कि यदि भेदोत्पादक नीति से काम न लिया जाता, तो भारत में ब्रिटिश आधिपत्य न तो स्थापित हो सकता था और न सुरक्षित रह सकता था। हिन्दु-मुसलिम वैमनस्य भी इसी नीति का एक स्वरूप है। यह भी सत्य है कि इन दोनों जातियों की सामूहिक प्रतिद्वन्द्विता अंग्रेजी राज्य के समय से प्रारम्भ हुई।"

—सर जान मनडे

——:——

दिल्ली की राष्ट्रीय कार्यकर्त्री महिलायें



बाईं ओर से पहली खड़ी हुई पंक्ति—(१) रमाराणी, (२) चम्पादेवी, (३) सरस्वती देवी, (४) कशमीरीदेवी, (५) सीतादेवी, (६) गंगादेवी, (७) राधारानी, (८) निक्कोदेवी (९) रामप्यारी, (१०) अभयदेवी, (११) क्रुनियांदेवी, (१२) नानकीदेवी, (१३) आत्मादेवी।

„ दूसरी „ —(१) द्रोपदीदेवी (२) चन्दनदेवी (३) अनारोदेवी (४) रूपरानी (५) कलावती (६) जगरानी (७) स्वदेशीदेवी (८) मानकोदेवी (९) राजरानी (१०) चन्द्रावली (११) जोगमाया (१२) चम्पादेवी (१३) मग्नदेवी।

„ तीसरी कुर्सी पर बैठी हुई पंक्ति—(१) रूपकौर (२) सावित्रीदेवी (३) गालतीदेवी (४) सत्यवती (५) व्रजरानी (६) अरुणा (७) माता राजपति कौल [प० जवाहरलाल की सास] (८) मेमोबाई (९) कस्तूरीदेवी (१०) आत्मादेवी (११) चन्द्रवतीदेवी (१२) राजरानीदेवी।

„ चौथी जमीन पर बैठी हुई पंक्ति—(१) जयदेवी (२) लच्छादेवी (३) गौरीबाई (४) चन्दादेवी।

कुँवर साहब मर गये !

(लेखक—श्री भगवतीचरण वर्मा)

हिन्दी के कहानी-संसार में श्री भगवतीचरण वर्मा अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। उन की यह कहानी भी पाठकों का मनोरंजन अवश्य ही करेगी।

——.——

पिताजी की डाट, माताजी की विनय श्रीमती जी के आसू और श्रीमान् जी की अशक्तता मुझे रोक सकने मे समर्थ न हो सके। तीन दिन तक बुखार में पडे रहने के बाद चौथे दिन सुबह के समय जैसे ही छोटे भाई ने हसते हुए टेम्परेचर नारमल पर आने की खबर दी वैसे ही केशव ने मुह लटकाये हुए उसी दिन शाम के समय निकलने वाले कांग्रेस के जलूस की सूचना दी।

केशव के मुह लटकाने का कारण था। उस दिन नेताओं के दिमाग में न जाने क्यों एकाएक यह ख्याल आ गया कि जलूस जरा सिविल लाइन्स की हवा खाय, या यों कहिये कि सिविल लाइन्स जलूस की हवा खाय। वैसे तो सरकार जानती थी कि जलूस निकलता है जनता जानती थी कि जलूस निकलता है और जलूस निकालने वाले जानते थे कि जलूस निकलता है पर बात यों हुई कि सिविल लाइन्स के बगलों मे नोकरों, सवारियों और कुत्तो मे घिरे रहने वाले साहबो ने (हिन्दुस्तानी और गैर-हिन्दुस्तानी दोनों ही) कांग्रेस का जलूस न देखा था। कांग्रेस के नेता देशभक्त होने के साथ-साथ परोपकारी होने का भी दम भरते हैं, उन्हें उन साहबो पर दया आई। बडे-बडे थियेटर कानिवाल सरकस, सिनमा बाल-डास, फैन्सी ड्रेस-बाल, घुडदौड़ आदि-आदि उन लोगों ने देखे अगर कुछ नहीं देखा तो कांग्रेस का जलूस। आखिर यह तमाशा भी तो वे लोग देख ले इसी बात को ध्यान मे रखकर कांग्रेस के नेताओ ने यह ते किया कि कुआ प्याम के पास चले, यानी जलूस सिविल लाइन्स चले। इसकी सूचना मिली सरकार को, और सरकार को कुछ बुरा लगा—बुरा लगने की बात भी थी। सरकार ने सोचा कि उसके परम भक्त, कृपा-पात्र लायक, फरमाबरदार बेटों को देखना चाहिये लाट साहबो का जलूस जहा बैण्ड बजाते हुए तोपों बन्दूको, तलवारो से सजी हुई फौजे मार्च करती हैं घोडों पर मूछें ऐंठते हुए अफसर छलाग मारते हैं (घोडे छलाग मारते हैं इसलिये उन घोडों पर सवार अफसर भी) फूलों से सजी हुई मोटरो पर कीमती पोशाकें पहिने हुए रईस सोलह या आठ घोड़ों से खिंचने वाला स्टेटकोच के पीछे-पीछे रेंगते हैं और सडक पर खडे हुए खाकी वर्दी तथा लाल पगडी से सज्जित सिपाही जलूस देखने के लिये एक-त्रित जन-समूह को गरदन मे हाथ लगाकर बडे प्रेम के साथ भाषा के चुने हुए शब्दों को प्रयोग करते हुए पीछे ठेलते है, न कि ये देखे कांग्रेस का जलूस जहा नगे सिर नगे पैर, खद्दर की फटी धोती और फटा कुरता पहिने हुए असभ्य बागी आये बाये साये बकते हैं। बस जनाब कांग्रेस के नेताओ ने कहा हम सिविल लाइन्स घूमेगे और सरकार ने कहा—मियां औकात मे रहो, तुम कगले गिरों की क्या मजाल कि सिविल लाइन्स मे घूमो, कांग्रेस-नेताओ ने कहा कि हम तो जावेगे ही, सरकार ने कहा—हम तुम्हे नहीं जाने देगे, कांग्रेस-नेताओं ने कहा—हम सत्याग्रह करेगे सरकार ने कहा हम मार डण्डो के तुम्हारी खोपडी तोड देंगे। बस, इतनी सी बात और तनातनी हो गई। लेकिन इस सबका नतीजा भोगना पडेगा केशव को क्योंकि नेता थोडे ही डण्डे खायेगे डण्डे खायेगे केशव और उनके भाई-बन्द अन्य स्वयसेवक। इसलिये उसका मुह उतरा हुआ था।

हा, तो अखबारो मे पढ़ा था कि लाठी चार्ज होता है पर लाठी चार्ज होते न देखा था। मेरा भाग्य खुल गया, जिसे देखने को आखे तरस रही थीं उसे देखने का मौका आ ही गया, उसको भला मै कब चूकने वाला था। शाम के समय तागे पर लदकर मैं कांग्रेस-आफिस पहुचा।

एक अजीब समा बधा हुआ था। सैकडो स्वयसेवक हाथ में तिरगे झण्डे लिये खडे राष्ट्रीय गान गा रहे थे। मुख पर दृढता थी और हृदयों मे जोश। बीच-बीच में महात्मा गाधी की जय' 'भारत-माता की जय के नारे बुलन्द होते थे।

जलूस चला, लेकिन लोगों ने मुझे साथ ले चलने से इनकार कर दिया। मैंने लाख कहा कि मैंने कभी लाठी चार्ज नहीं देखा है भगवान् के नाम पर मुझे भी साथ ले चलो, पर किसी ने एक न मानी। एक ने कहा, 'तुम कमजोर हो।' दूसरे ने कहा 'अगर लाठी खाना चाहते हो तो चल सकते हो क्योंकि अगर लाठी चार्ज में एक आज मरा नहीं तो लुत्फ ही क्या रहा और तुम इस हालत में हो कि दो लाठियो में ही बड़ी आसानी से शहीद हो सकते हो। लेकिन मैं शहीद होने को तैयार न था इसलिये नहीं कि मैं मृत्यु से डरता हू बल्कि इसलिये कि देश को मुझ से बडी-बड़ीआशायें हैं। अन्त में यह ते हुआ कि मैं कांग्रेस-आफिस मे बैठू और पुलिस की सूचनाएं सकलित करता रहू।

(२)

मैं अकेला कांग्रेस-आफिस मे बैठा हुआ था और टेलीफोन से खबरें मिल रही थीं। घण्टी बजी और टेलीफोन पर सुनाई पड़ा, प्रोमेशन रोड पर पहुच गया है यहा पर पुलिस फोर्स रास्ता रोके खडी है उन लोगों के पास डण्डे हैं। सुपरिण्टेन्डेण्ट ने आज्ञा सुनाई कि प्रोमेशन आगे न बढे और पीछे लौट जाय। प्रोमेशन वालों ने सुपरिण्टेन्डेण्ट की आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। इसपर सुपरिण्टेन्डेण्ट पुलिस ने लाठी चार्ज की आज्ञा दे दी है। लाठी चार्ज हो रहा है जनता तितर-बितर हो गई है केवल स्वयसेवक जमीन पर बैठ गये हैं।

इसके थोडी देर बाद टेलीफोन पर फिर खबर मिली—स्वयसेवक पिट रहे हैं और नेताओं की गिरफ्तारी हो रही है। एक ताज्जुब की बात है कि कुवर कमलनारायण ने एकाएक आकर 'भारत माता की जय' बोली और वे भी गिरफ्तार कर लिये गये।"

मेरे हाथ से रिसीवर छूट पड़ा, खबर अधूरी रह गई।

कुवर कमलनारायण गिरफ्तार हो गये, हत्या करके नहीं, धर फौंद के नहीं बल्कि 'भारतमाता की जय' बोलकर, मेरे लिये यह इस युग की सबसे आश्चर्यजनक बात थी। कुवर कमलनारायण उन रईसों में एक हैं जिनका काम है चौबीसों घण्टे शराब के नशे में धुत रहना। बिना गाली बात न करना और जब मौका मिल जाय, ऐयाशी करना। उनके देशभक्त बनकर गिरफ्तार होने पर चाहे और किसी को आश्चर्य हो या न हो, पर मुझे उतना ही आश्चर्य हुआ, जितना बन्दर के अदरक खा लेने पर होता या ख्वाजा हसन निजामी के हिन्दू बन जाने मे होता।

फिर घण्टी बजी, 'सबके सब स्वयसेवक गिरफ्तार किये गये आज का प्रोग्राम ओवर' हो गया।'

मैं भी उठ, तागा मगवा कर घर पहुचा। मुझे देखते ही पिताजी ने अपना मुह फेर लिया माताजी ने एक दीर्घ निःश्वास के साथ आखों से दो आसू गिराये, श्रीमती जी ने महावीरजी पर पांच पैसे के बताशे चढाये और श्रीमान् जी पलग पर लुढ़क पडे।

आखें लगी ही थीं कि किसी ने मेरे कमरे के किवाड़ों में धक्का दिया। बडी मुश्किल से उठा। किवाड़ खोले तो देखा कि केशव खड़ा है। एक अजब हालत थी, कपडे फटे हुए, चेहरा पीला और पिन्डलियां काप रही थीं। मैंने केशव का हाथ पकड़ कर उसे अन्दर बुलाया।

केशव मेरा दूर का भाई होता है। बी० ए० पास करने के बाद जब नोकरी की तलाश में उसने अफसरों की इतनी चहलकदमी की कि उसका वजन एक मन से घटकर डेढ़ मन हो गया तब उसने कांग्रेस में नाम लिखाया। इस समय वह साधारण स्वयसेवक से बढ़कर स्वय-सेवकों का नायक बन गया था और साल भर के अन्दर ही नेता बनने की सोच रहा था।

हांफते हुए उसने कहा 'भाई एक गिलास पानी।'

मैं खुद बीमार—नहीं, बीमारी से उठा हुआ था, फिर भी मैंने केशव को पानी दिया। जिस पलग पर मैं पडा था उस पर अब केशवदेव पैर फैलाये लेटे थे। पानी देते हुए मैंने कहा "कहो क्या हाल है?'

लेटे ही लेटे पानी पीकर उसने कहा "मार डाला बदमाशों ने!"

केशव की हालत देखकर कुछ दुःख होता था, कुछ हंसी आती थी। अपनी हंसी दबाते हुए मैंने कहा "तुम तो गिरफ्तार हो गये थे, इस समय यहां कहां!"

"क्या बताऊं, अभी बारह मील का रास्ता पैदल तै किये हुए चला आ रहा हूं।"

"यह कैसे?" मैं अपनी हंसी अब अधिक न दबा सका।

केशव बिगड़कर बोला "यहां जान निकल गई और तुम्हें हंसी सूझती है। बदमाशों ने लारी पर लादकर बारह मील की दूरी पर छोड़ दिया।'

"पूरा हाल तो बतलाओ!'

"हाल क्या बतलाऊं। दो डन्डे पड़े, इसके बाद गिरफ्तार हुआ। हवालात पहुंचा। वहां से एक लारी पर लादा गया और सब लोगों के साथ छोड़ दिया गया जंगल में। लारी चल दी और हम लोगों को वापिस आना पड़ा पैदल।"

केशव का किस्सा समाप्त हुआ। एकाएक मुझे कुंवर कमलनारायण की याद आ गई। मैंने पूछा "तुम लोगों के साथ सुना है आज कुंवर कमलनारायण भी गिरफ्तार हुए थे।"

केशव उछल पड़ा, मुंह पर छाई हुई मुर्दनी गायब होगई। "अरे हां, अच्छी याद दिलाई। तो फिर कुंवर साहब का किस्सा आदि से सुनाऊं?"

"और नहीं क्या!'

केशव ने आरम्भ किया—कुंवर साहब के ड्राइवर का कहना है कि कुंवर साहब के यहां कल कुछ मेहमान आ गये थे। जितनी शराब थी, वह सब खतम हो गई। आज शाम के समय घर में एक बून्द नहीं और कुंवर साहब को उसकी बड़ी आवश्यकता, क्योंकि नशा उतर गया था।

शराब की इतनी तलब कि उन्हें मंगवा कर पीने की फुरसत न थी। कार पर बैठकर दूकान पर ही खरीदकर पीने के लिये चल दिये। इधर दूकान पर धरना बैठा हुआ था। लोगों ने लू लू बोली और कुंवर साहब ने कार सिविल लाइन्स की तरफ बढ़वा दी। रास्ते में जलूस मिला। कुंवर साहब को देखकर लोगों ने फिकरे कसे और उन्होंने गालियां दीं—रोड के चौरास्ते पर उस समय लाठी चार्ज हो रहा था। कुंवर साहब ने कार रोक दी। उतरकर वे लाठी चार्ज देखने लगे। कुछ देर तक उन्होंने यह तमाशा देखा। फिर वे एकाएक कप्तान साहब के पास पहुंचे। उन्होंने कहा "कप्तान साहब! आप इन निहत्थों को क्यों मार रहे हैं। अपने आदमियों को रोक दीजिये।"

कप्तान नया था, वह कुंवर साहेब को पहचानता न था। उस ने कहा—'चुप रहो, तुम अपना काम देखो।'

कुंवर साहब को बुरा लगा, पता नहीं उन्हें स्वयंसेवकों का पिटना अधिक बुरा लगा या कप्तान साहब का जवाब। उन्होंने आव देखा न ताव, गरज कर पुलिस वालों से कहा—इन लोगों पर लाठी चलाना बन्द करो।'

एक क्षण के लिये पुलिस वाले अवाक् रह गये। लोगों ने जब देखा कि कुंवर कमलनारायण लाठी चलाने को बन्द करा रहे हैं तब उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने नारे लगाये—'महात्मा गान्धी की जय' 'भारतमाता की जय' और कुंवर साहब ने भी दुहराया—'महात्मा गांधी की जय'।

इसी समय कप्तान साहब ने कुंवर साहब को गिरफ्तार कर लिया। लारी पर बिठला कर वे हवालात भेज दिये गये।

हम लोग भी हवालात भेजे गये। वहां कुंवर साहेब से कोतवाल साहेब की जो बातें हुईं वे हमें मालूम हुईं। वे इस प्रकार हैं—

कोतवाल साहेब ने कहा—'कुंवर साहब! आप यहां कैसे भूल पड़े?'

कुंवर साहब का मुख क्रोध से लाल था, कोतवाल साहेब ने ताड़ लिया। बोले—मालूम होता है आप को प्यास लगी है।

कुंवर साहेब ने अपना सिर हिला कर 'हां' कहा।

व्हिस्की का एक पेग बरफ और सोडा के साथ कुंवर साहब के पेश किया गया, एक घूंट में पूरा गिलास खाली करके कुंवर साहब ने गिलास लाने वाले की ओर देखा। कोतवाल साहेब के इशारे पर दूसरा गिलास आया।

कुंवर साहेब की जान में जान आई।

कोतवाल साहब ने मौका देखा। बोले—कुंवर साहब! आप कैसे भूल पड़े?

एक ठण्ढी सांस लेकर कुंवर साहब ने कहा—आज घर में शराब खतम हो गई थी और प्यास जोर की थी। शहर में दूकानों पर धरना था, इसलिये सिविल लाइन्स जा रहा था।

कोतवाल साहब ने कहा—क्या बतलाऊं कुंवर साहब, इन कांग्रेस वालों ने तो नाक में दम कर रखा है। आप जानते हैं आज सिविल लाइन्स की दूकानों पर भी धरना देने आ रहे थे। जब रोका तो माने ही नहीं। अगर पीटे न जाते तो सिविल लाइन्स की शराब की दुकानों पर भी ये लोग धरना करते।

'ऐसी बात है'—कुंवर साहब ने चौथा पेग पीते हुये आश्चर्य से पूछा।

'हां साहेब! अब बतलाइये, क्या किया जाय? और आप हम लोगों को इन बदमाशों को पीटने से रोक रहे थे।'

कुंवर साहेब ने कोतवाल का हाथ पकड़ कर कहा—'दोस्त, गलती हो गई, क्या बतलाऊं, अब क्या हो सकता है?'

'कुछ नहीं, आप कतई इस की फिक्र न करें। घर जा कर आराम करें।'

कुंवर साहब की कार बाहर खड़ी थी। उस पर लाद कर वे घर भेज दिये गये। उस समय कुंवर साहेब करीब करीब एक बोतल व्हाइट हार्स की समाप्त कर चुके थे।

केशव ने कहानी समाप्त की और मेरी अलमारी में रक्खे हुये फलों पर इस प्रकार झपटा जैसे भूखी बिल्ली चूहे पर झपटती है।

(३)

दूसरे दिन पत्रों में निकला—सुपरिटेण्डेण्ट साहब ने गलती से कुंवर कमलनारायण को सत्याग्रही समझ कर गिरफ्तार कर लिया था। उस समय कुंवर कमलनारायण कुछ नशे में भी थे, नहीं तो सुपरिटेण्डेण्ट साहब को यह गलती करने का मौका न मिलता।

इस खबर को पढ़ कर हम लोग चार आदमी कुंवर कमलनारायण का ध्यान पत्रों में निकले हुये समाचार की ओर आकर्षित करने के लिये पहुंचे। बंगले के बरामदे में कुंवर साहब बैठे हुये थे और उन के सामने पड़ी हुई मेज पर एक व्हाइट हार्स की खुली हुई बोतल, तीन चार सोडा की बोतलें तथा एक शराब से भरा गिलास रक्खा था, और कुंवर साहब की नजर बाग में काम करने वाली जवान मालिन पर थी। हम लोगों को देखते ही वे उठ खड़े हुये। उन्होंने आवाज दी—अबे ओ कलुआ, देख तो इन खद्दर-पोशों को किसने बंगले में घुस आने दिया? इन से कह दे कि कुंवर साहब मर गये।

—:o:—

"प्राचीन रोमन राज्य का सिद्धान्त था:—'शासित प्रजा में फूट उत्पन्न करके राज्य करो।' यही हमारा सिद्धान्त होना चाहिये।"

—लार्ड एलफिन्स्टन,
(बम्बई के भू० पू० गवर्नर)

—:—

स्वराज्य दल

(ले०—श्री सूर्यनाथ तकरू एम० ए० बनारस)

भारतवर्ष क स्वातन्त्र्य-सग्राम में स्वराज्य-दल का वही स्थान है, जो आयरिश स्वातन्त्र्य-युद्ध में पार्नेल क दल का था। स्वराज्य दल का जन्म कैसे हुआ, सरकार क गढ में जाकर दल क नीति-कुशल वीर योद्धाओं न सरकार के कैसे छक्के छुड़ा दिय, इसका सक्षिप्त, प्रामाणिक और रोचक वर्णन विद्वान् लेखक न इस लख मे दिया है। आज देश फिर उसी मार्ग पर चल रहा है। इस समय यह लेख बहुत उपयोगी रहेगा।

———:———

स्वराज्य दल के जन्मदाता



देशबन्धु चित्तरजन दास

स्वराज्य-दल

सन् १९२२ ई० की बात है। राष्ट्रीयता का प्रथम आन्दोलन समाप्त हो चुका था। देश स्वराज्य क पथ की एक मजिल चल चुका था। लोग विश्राम चाहत थे। किन्तु कुछ दरद दीवाने थे जो यह चाहत थ कि यह युद्ध बन्द न हो। मार्चा डटा रहे, समरभूमि में स्वाधानता क सैनिक जूझते रहें और स्वातन्त्र्य युद्ध-यज्ञ में आहुतियां पडती रहें। उन के हृदय में बलिदान था, उनके हृदय में कसक थी, उन की लगन सराहनीय थी। यहा वे एक छोटी सी बात नहीं याद रख सक। मानव-स्वभाव और मानव शरीर दोनों ही परिवर्तन क पक्षपाती हैं। सत्याग्रह आरम्भ हो या न हो, देश क सामने यह समस्या थी। अखिल भारतीय काग्रस कमेटी न, लखनऊ में जून के दूसरे सप्ताह में बहुत वाद-विवाद के बाद इस समस्या को सुलझाने के लिय एक उप-समिति का सगठन कर दिया, जो बाद मे सत्याग्रह-जाच-कमेटी' के नाम म प्रसिद्ध हुई। मसीहुलमुल्क स्व० हकीम अजमल खा उस के

स्वराज्य-दल क प्राण



त्यागमूर्ति प० मोतीलाल नहरू

अध्यक्ष थे और सदस्य थे स्व० प० मोतीलाल जी नहरू, स्व० श्री विटठलभाई पटल स्वर्गीय श्री कस्तूरी रगा आयगर, श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य और डा० अन्सारी सरीख प्रभावशाली राष्ट्र नता। इस कमेटी न सारे देश का दौरा किया। प्राय' सभी प्रसिद्ध सस्थाओं तथा राष्ट्रपुत्रों क मत जानन की चेष्टा की गइ और अन्त म ३० अक्तूबर १९२२ को इसन अपनी रिपोर्ट भी छाप दी। कमेटी क सभी सदस्य इस बात पर एकमत थे कि देश सत्याग्रह क लिये त यार नहीं है। किन्तु एक बात ऐसी थी, जिस पर कमेटी म मतभद था। तीन सदस्यों का—हकीम जी पण्डित जी और पटल जी—यह कहना था कि कान्सिलें और असेम्बली सरकारी किले हैं। उनपर अधिकार जमा लेना उचित होगा। शेष तीन सज्जन इसम असहयोग का अन्त देखत थे। वे विरोध पर कटिबद्ध हुए। देश भर का वायुमण्डल इस प्रश्न म गूज उठा। दोनों पक्ष—जो परिवर्तनवादी' और 'अपरिवर्तनवादी' क नाम मे विख्यात हुए—पूरी चेष्टा करन लगे कि लोकमत उनकी ओर हो जाय। गया में देशबन्धु चित्तरजन दास क सभापतित्व में राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन हुआ। दोनों दलों ने अपनी-अपनी शक्ति आजमाई। किन्तु अपरिवर्तनवादियों मे 'बिहार' में परिवर्तनवादियों को हारना पड़ा। 'परिवर्तनवादियों को आठ सौ मे कुछ अधिक वोट मिले और उनके विरुद्ध 'अपरिवर्तनवादियों' न सत्रह सौ स भी अधिक वोट पाय। इस करारी हार के बाद भी कौंसिल-वादी चुप नहीं रहे। न श्रीहत नहीं हुए। देशबन्धु दास त्यागमूर्ति नहरू जी और वीरवर पटल कोई मामूली आदमी तो थे नहीं जो हार कर चुप हो रहते। वे थे अपनी धुन के पक्के, कर्मठ, वीर। तुरन्त ही उन्होंन 'अखिल भारतीय काग्रेस-खिलाफत स्वराज्य-पार्टी'' को जन्म दिया। देशबन्धु दास न काग्रेस क सभापतित्व मे और प० मोतीलाल जी न प्रधान-मन्त्रित्व से त्यागपत्र दे दिया।

सारे देश में घूम-घूम कर उन्होंन परिवर्तन की आवश्यकता लोगों को समझाई। उन्होंने बताया कि कवल चर्खे के बल पर ही सार्वजनिक जीवन नहीं चल सकता। सत्याग्रह के अभाव में और अन्य किसी जीवित आदोलन की अनुपस्थिति में यह तो निर्विवाद है कि दास-नहरू का कार्यक्रम अधिकाधिक बल प्राप्त करता गया। महाराष्ट्र के नताओं से परिवर्तनवादियों को पर्याप्त सहायता मिली

भारत के दो दिवंगत प्रकाण्ड राजनीतिज्ञ



त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल नेहरू

"मै रोग से लड़ूगा, मृत्यु से लड़ूंगा और सब के ऊपर दासता-रूपी राक्षस से लड़ूगा।"

-मोतीलाल नेहरू।

My Country is my Religion
Delhi 23 4 30 Vithalbhai

"मेरा देश ही मेरा धर्म है।"

देहली, -वी० जे० पटेल।



श्री विट्ठलभाई पटेल (असेम्बली के अध्यक्ष

असेम्बली का गौरव



श्री विट्ठलभाई झवेरभाई पटेल

और कांग्रेस के लोग भी इस गृह-कलह से थक गये। सितम्बर मास सन् १९२३ में दिल्ली में कांग्रेस का एक विशेषाधिवेशन मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद के सभापतित्व में हुआ। तब तक मौ० मुहम्मदअली भी जेल से छूट आये थे और उन्होंने भी परिवर्तनवादीदल की खूब मदद की। उनके इस कथन से कि 'महात्मा जी ने उनके पास आध्यात्मिक सन्देश भेजा है कि कांग्रेसवालों को व्यवस्थापिका सभाओं में जाने दो' अनेक गान्धी-भक्त निरुत्तर हो गये। खैर, किसी तरह उस 'बुतकदे' में जाने की इजाजत तो मिली।

चुनाव-युद्ध का संगठन हुआ। स्वराज्यदल की सहायता करने के लिये कलकत्ते मे 'फारवर्ड' का जन्म हुआ। देशबन्धुदास, प० जवाहर-लाल नेहरू आदि नेताओं ने धूम मचा दी। स्वराज्यदल के पास ध- -नी कमी तो थी, पर उसके नेता रणकुशल वीर थे, जो अपनी धुनके पीछे सर्वस्व स्वाहा करने की हिम्मत रखते थे और लगन समर की सब से बड़ी चीज भी तो है। थोड़े ही अर्से में स्वराज्यदल ने अभूतपूर्व विजय प्राप्त की। श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, श्री सतीशरंजन-दास, श्री शेषगिरि ऐयर, श्री चिन्तामणि, श्री कामन्त, श्री हृदय-नाथ कुंजरू सरीखे कीर्तिवान नेता भी स्वराजी प्रतिद्वन्द्वियों द्वारा परास्त हुये। श्री सुरेन्द्रनाथ के पराजय ने तो विदेशों तक में सन-सनी कर दी। बगाल का वह बेताज का बादशाह, बंगाली-हृदय-सम्राट्, भारतीय राष्ट्रीयता का जनक, एक साधारण स्वराजी सिपाही द्वारा हरा दिया गया। लोगों को यह मानना पड़ा कि कांग्रेस स्वराजी-दल का भी जनता पर कुछ अधिकार है और उसके नेता केवल वाग्वीर ही नहीं हैं। यह तो हुआ, पर मध्यप्रान्त को छोड़कर कहीं भी स्वराज्य-दल का बहुमत न हो पाया। हमारी धारा-सभाओं का सगठन ही ऐसा है कि जब तक ७०-७५ फीसदी निर्वाचित जगहों पर विजय प्राप्त न हो तब तक बहुमत होना सम्भव नहीं होता। अस्तु।

सरकार की चिन्ता

स्वराज्य-दल का कार्यक्रम था 'सरकार का सतत विरोध' और सरकारी पदों को स्वीकार न करना उन्होंने तय कर लिया था। बहुमत न होने के कारण स्वराजी ऐसा न कर सके। अब उनके सामने यह समस्या थी कि वे क्या करें और कैसे करें। बड़ी व्यवस्थापिका सभा में स्वराजियों की संख्या केवल ४३ थी। ३ बर्मन और ६ अन्य मतवादियों के मिल जाने से उन की सख्या ५२ हो गई थी। उन्होंने अपना नेता प० मोतीलाल जी को चुना। पडित जी के पूर्ण गौरव और उनकी पूरी योग्यता एवं क्षमता का परिचय देश को असेम्बली द्वारा ही मिला। उप-दलपति हुये श्री विट्ठलभाई पटेल और दल-मन्त्री बने श्री रंगा-स्वामी आयंगर। स्वराजियों के आगमन से सरकार भी सशंक हो गई थी। ३१ जनवरी १९२४ को लार्ड रीडिंग ने दूसरी भारतीय धारा-सभा का उद्घाटन करते हुये अपनी इस दुश्चिन्ता का जिक्र किया था। उन्होंने कहा था—'मैं भवि-ष्यवाणी नहीं कर सकता हूं। मैं नहीं जानता कि भविष्य के गर्भ में क्या है। परन्तु मैं इस बात को छिपाने में असमर्थ हूं कि भारत की राज-नीतिक परिस्थिति और उस की व्यवस्थापक समस्यायें कुछ ऐसी हो गई हैं कि जिनके कारण मैं सु-धारों के भविष्य के सम्बन्ध में चि-न्ताशील हो गया हूं।"

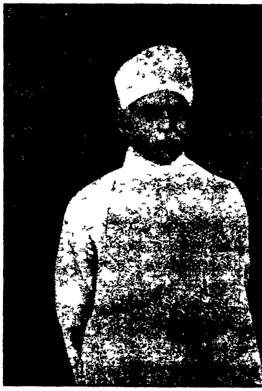
केवल यही नहीं, वायसराय महोदय ने यह भी सकेत कर दिया था कि 'यदि प्रान्तों में परिस्थिति अधिक गम्भीर हो गई तो प्रान्तीय सरकारें इस बात से निश्चिन्त रहें कि मैं उनका पूर्ण समर्थन करूंगा।'

स्वराजी कच्चे तो थे नहीं। उन में अनेक विचक्षण विद्वान् थे। उनके अतिरिक्त श्रीमान् प० मदनमोहन मालवीय, श्री विपिनचन्द्र पाल और मि० जिन्हा सरीखे राष्ट्रभक्त सज्जन भी असेम्बली में आ गये थे। सब लोगों ने चेष्टा करके संयुक्त राष्ट्रीय दल' का निर्माण किया और उसका नेतृत्व एक कमेटी के सुपुर्द कर दिया। इस कमेटी के सदस्य सर्वश्री प० मोतीलाल नेहरू, विट्ठलभाई पटेल, नृसिंह चिन्तामणि केलकर, रामचन्द्रराव, रंगास्वामी आयंगर, मदनमोहन मालवीय और मुहम्मद अली जिन्हा थे। सत्तर सदस्य इस दल में भर्ती हो गये। इस दल की शक्ति के आगे सरकार की एक न चली।

राष्ट्रीय मांग

राष्ट्रीय दल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य 'राष्ट्रीय मांग' थी। मांग का प्रस्ताव रूप में म-द्रास के दीवान बहादुर टी० रंगा-चार्य ने पेश किया था। किन्तु उस पर पं० मोतीलाल जी ने एक सं-शोधन पेश किया। दीवान बहादुर ने उस संशोधन को स्वीकार कर लिया। उस संशोधन द्वारा पण्डित जी ने भारत की सम-स्याओं को सुलझाने के लिये गोल-मेज सभा आमन्त्रित करने का प्र-स्ताव किया था और भारत के स्वाधीनता के अधिकार को स्वी-कार करने को कहा था। दो दिन तक उस मांग पर गरमागरम बहस

असेम्बली में स्वराज्य-दल के परम सहायक



महामना मदनमोहन मालवीय

होती रही। प्रस्ताव (६४ पक्ष व ४८ विपक्ष) बहुमत म पास हो गया। महात्मा जी की रिहाई क प्रस्ताव क पश होन क पूर्व ही वे रिहा कर दिय गय थ।

बजट नामंजूर

सन् '१९२४ का फाइनन्स बिल (आय-व्यय का सरकारी मस्विदा) पेश हुआ। स्वराजी चाहते थ कि वह पास न हो पर सयुक्त राष्ट्रीय दल क अन्य दलपति सहमत न होते थ। सरकारी माग (E\ 1 D 1) को ही रद्द कर दना व पर्याप्त समझत थ। मौके म एक बात हो गई। जैतो में सिक्ख सत्याग्रहिया पर गोली चली। एक दर्शक न उसका करुण विवरण आकर देहली में सुनाया। पूज्य मालवीय जी का नवनीत-कोमल ब्राह्मण-हृदय द्रवीभूत हो उठा। उन की आत्मा क्रन्दन कर उठी। उन्होंन चट नहरु जी को फोन किया कि वे (मालवीय जी) बजट' रद्द करन का प्रस्ताव पेश करेंगे। नहरू जी क लिय तो घर बैठे गगा आई। उन्होंन फौरन स्वीकार कर लिया। पूज्य पण्डित मालवीय न बजट का विरोध करत हुय बडे मार्के का भाषण दिया था। उन्होंन कहा — जब तक 'गवर्नमेंट आफ इण्डिया एक्ट' का सशोधन नहीं होता, आत्म-सन्मान की भावना और परमात्मा न जो थोडी बहुत बुद्धि मुझे दी है वे मुझे आज्ञा नहीं देतीं कि मैं आज या निकट भविष्य में करों का समर्थन करू।

बजट पास न हो सका। ६० वोट मालवीयजी क पक्ष मे थ और सरकार ५७ वोट ही पा सकी। इसम स्वराजियों की बडी धूम मच गई। लण्डन तक सनसनी फल गई और कानून क दिग्गज पण्डित प्रवर भी कांप उठे।

स्वराज्य दल म फूट

सन '१९२५ स्वराज्य दल क लिये और भारत क लिय बडा ही अशुभ वर्ष था। इस साल स्वराज्य-दल क सभापति देशबन्धु श्री चित्तरंजनदास जी की असमय में ही इहलोक-लीला सवरण हो गई। देशबन्धु की मृत्यु के कुछ पूर्व ही बगाल के कई सुप्रसिद्ध स्वराजी, जिनमें श्री सुभाषचन्द्र बसु, श्री सत्येन्द्रचन्द्र मित्र श्री अनिलवरण राय आदि के नाम मुख्य हैं—काले कानून द्वारा नजरबन्द कर दिये गये। यह तो हुआ ही था। देशबन्धु को निधन हुये दो मास भी पूरे नहीं हुये थे कि मध्यप्रान्त के श्री ताम्बे न—आप बाद को गवर्नरी भी पा चुके हैं—सरकारदत्त मंत्री पद स्वीकार कर लिया। यह खुला विद्रोह था। मध्यप्रान्त के नता डा० मुंजे न उनके इस कार्य की प्रशसा की और बम्बई में मि० जयकर और पूना स मि० केलकर न भी उनके इस कार्य का समर्थन किया। किन्तु स्वराज्य-दल के बहुमत को यह विद्रोह पसद न आया। फिर भला प० मोतीलाल जी स तेजस्वी पुरुष यह कम सहन कर सकत थे। उन्होंन कठोर शब्दों में मि० ताम्बे के इस कृत्य की निन्दा की और महाराष्ट्र-नताओं क प्रति भी असन्तोष प्रकट किया था।

चाह !

चाह नहीं है नता बन कर जग म पैर पुजाने की !
चाह नहीं है अखिल विश्व से महापुरुष कहलाने की !
चाह नहीं है राज्य पदवियां, पद उपाधियां पाने की !
चाह नहीं है विश्व शिखर पर विजय ध्वजा फहराने की !

चाह ! एक बस है जीवन म क्या पूरी होगी भगवान् ?
जननी जन्म भूमि क पद पर हो जाऊं हस कर बलिदान !

—कल्याणकुमार जैन 'शशि'

महाराष्ट्र-नता कहते थ आपन स्वय पटेल जी का सभापति चुनवाया है। पर नहरु जी आदि का उत्तर था कि सभापति का पद सरकारदत्त नहीं होता। इसी बात को लेकर स्वराज्य-दल मे फूट पड गई।

श्री विट्ठलभाई झवेरभाई पटेल का निर्वाचन भारतीय इतिहास की अनुपम एव चिरस्मरणीय घटना है। उनका मुकाबिला था दीवान बहादुर टी० रगाचार्य स। कवल दो वोट क बहुमत स पटेल जी विजयी हुय। इतिहास साक्षी है कि श्री पटेल सरीखा विचक्षण विद्वान एव निष्पक्ष सभापति बिरला ही हुआ होगा। सन २६ में स्वराज्य दल वाले धारासभा से उठ आये। प० मोतीलाल ने जी एक वक्तव्य दिया। उसमें उन्होंन कहा कि हम इस सरकार की शक्ति से अपरिचित नहीं हैं। हम अपनी कमजोरियों स भी वाकिफ हैं। देश की वर्तमान गिरी हुई हालत में हम यह भी जानत हैं कि हमारा अन्तिम सत्याग्रह भी सम्भव नहीं है। फिर भी हम यह समझते हैं कि हमारा अब यहां ठहरना व्यर्थ है। उन्होंन स्पष्ट कह दिया कि लडाई जारी रहेगी और स्वराजी लौटग। प० जी के इस वक्तव्य से जाहिर है कि उनको उस रगमच तक का भी मोह नहीं था जहा के वे सर्वश्रेष्ठ अभिनता थे। जिन जीवन का मोह न हो वह खिलौन को कम प्यार कर सकता था। स्वराज्य दल क उठ आन क बाद ही सभापति पटेल न धारासभा यह कह कर भग कर दी कि चूकि विरोधी-दल उठ गया इससे सरकार को यह शोभा नहीं देता कि वह धारासभा जारी रखे। पर दूसर दिन उन्होंने अपन वक्तव्य की व्याख्या कर दी और यह कहा कि पहिले दिन वाला वक्तव्य केवल सलाह-मात्र थी।

सन १९२५ के अन्त में कानपुर काग्रेस में स्वराज्य-दल और प्रतिसहयोगियों का मुकाबिला हुआ। प्रतिसहयोगी-दल का नतृत्व ग्रहण किया मालवीय जी न। नहरु जी को सौभाग्य स लाला लाजपतराय का सहयोग प्राप्त हो गया। विजय स्वराज्य-दल को हुई और प० मालवीय का सशोधन गिर गया। इसके बाद प्रतिसहयोगी हिन्दूसभा स्वतंत्र काग्रेस आदि २ नाम रखकर भिन्न-भिन्न स्वार्थों और वर्णों के लोग चुनाव की लडाई लडने को कटिबद्ध हुये। सन २६ का-सा कटु-निर्वाचन भारत में तो अबतक हुआ नहीं। भविष्य की कौन कह सकता है। इसी बीच में अज्ञात कारणों से लाला जी भी दल से हो गये थे। वे भी मालवीय जी से मिलकर स्वराज्य-दल के विरुद्ध युद्ध में सहायता दे रहे थ। भीषण सघर्ष क बाद चुनाव समाप्त हुआ। पजाब युक्तप्रान्त और मध्यप्रान्त में कांग्रेस की करारी हार हुई। ला० दुनीचन्द, श्री आसफअली डा० सत्यपाल, दीवान चमनलाल (ला० लाजपतराय सन् २६ मे दो निर्वाचन क्षेत्रों स खडे हुय थे और सफल भी हुये थे। बाद मे उन्होंन एक स त्याग-पत्र द दिया और उन क स्थान पर दीवान चमनलाल निर्वाचित हो गय थे) श्री श्रीप्रकाश श्री अभ्यकर सरीखे प्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी पराजित हुय। किन्तु यह कमी मद्रास और बिहार न पूरी कर दी। मालवीय जी के दल को भी कुछ बहुत अधिक सफलता नहीं मिली। फिर भी काग्रेस के ५० और मालवीय-दल क १७-१८ सभ्य निर्वाचित हो गय। सन्तोष की बात है चुनाव की कटुता को लोगों न सभा मण्डप क बाहर ही छोड दिया। देश क हितों का ध्यान सभी न पूरा पूरा रक्खा और कभी भी व्यक्तिगत वैमनस्य द्वारा देश को क्षति नहीं पहुचाई।

अन्य महत्वपूर्ण बिल

तीसरी असेम्बली का इतिहास बहुत ही महत्वपूर्ण है। देश की अनक महत्वपूर्ण समस्याओं का निर्णय हुआ। पहिला महत्वपूर्ण कार्य तो विट्ठलभाई का अविरोध निर्वाचन ही था।

'रिजर्व बैंक की नींव भी इसी असेम्बली मे पडी थी। तत्कालीन अर्थसचिव, सर बैसिल ब्लैकेट, इसे अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य बनाना चाहते थे। बैंक का विचार उत्तम था। काग्रेस वादियों न इसका स्वागत किया। काग्रेस की ओर से श्री जमनादास महता श्री रगास्वामी आयगर और श्री आर० के० षणमुखम चेट्टी (अब सर षणमुखम सभापति असेम्बली) उपसभापति सदस्य बन। उपसमिति की रिपोर्ट मे मतभेद था। भारतीय सभ्य चाहते थे कि बैंक का सचालन निर्वाचित डायरक्टर करें, पर सरकार को यह मजूर नहीं था। श्री श्रीनिवास आयगर — स्थानापन्न काग्रेस-नेता (प० मोतीलाल जी यूरोप गये हुये थे) — न समझौते का एक जरिया निकाल दिया और उसे सरकार ने

स्वीकार भी कर लिया। परन्तु इसके बाद यह बिल खटाई में पड़ गया। देहली में एक नया बिल पेश किया गया। किन्तु श्री अय्ये ने उस पर आपत्ति की कि पुराना बिल जब तक उठा न लिया जाय, तब तक नया बिल पेश नहीं हो सकता। श्री पटेल ने इस मत का समर्थन किया और नये बिल को रोक दिया। फिर अचानक सरकार ने वह बिल ही उठा लिया।

इसके अतिरिक्त दूसरी महत्वपूर्ण आर्थिक समस्या थी, सिक्के की दर। दर १६ पेंस हो या अठारह पेंस—यह प्रश्न था। भारत के हित की दृष्टि से तो दर-निर्णय उचित न था। १८ पेंस तो हानिकर ही था। इस पर अत्यन्त कठिन युद्ध हुआ पर विजय (६७ वोट पक्ष में—६८ विपक्ष में) सरकार की हुई। श्री एस० एन० हाजी के 'सागर टैरिफ बिल' पर कड़ी लड़ाई हुई पर इसका निर्णय तब हुआ, जब स्वराजी असेम्बली छोड़ चुके थे।

जन-रक्षा बिल

भारत के इतिहास में 'जन रक्षा बिल (Public Safety Bill) पर कांग्रेस दल का युद्ध अमर रहेगा। खास कर श्री पटेल ने जिस अद्भुत साहस और पं० मोतीलाल ने जिस प्रकाण्ड पाण्डित्य का परिचय दिया था उस का स्मरण करके ही हृदय भर आता है। इस बिल द्वारा सरकार चाहती थी भारत में विदेशों द्वारा किया गया प्रचार रोका जाय। इस का स्पष्ट अर्थ यह था भारत मे साम्यवाद का जो प्रचार हो रहा था उस का प्रतिबन्ध हो। सन् १६२८ में शिमला में यह बिल पेश हुआ। पंडितजी ने सभापति से रूलिंग (निर्णय) मांगी कि वे इस बिल को गैर-कानूनी करार कर दें, क्योंकि असेम्बली को यह अधिकार नहीं है कि वह विदेश-सम्बन्धी विधान बनाये। सभापति ने निर्णय बाद मे सुनाने का निश्चय किया और बिल की पहिली रीडिंग (६१ पक्ष ५० विपक्ष) पास हो गई। सन् १६२६ मे तो दिल्ली मे बड़े मार्के का मोर्चा हुआ। दीवान चमनलाल ने कहा कि भूखी पेटें ही वर्गवाद (कम्यूनिज्म) की जन्मस्थलियां हैं। पं० मोतीलाल जी ने भी विरोध करते हुए बड़ा ही ओजस्वी भाषण दिया। उन्होंने कहा:—

'अब तक किसी भी धारा-सभा ने शासकों को इतनी जबर्दस्त शक्ति इसलिये नहीं दी, क्योंकि उनके पास मुकदमा चलाने को पर्याप्त गवाह नहीं थे। यह बिल कांग्रेस और भारतीय राष्ट्रीयता पर सीधा आक्रमण है। क्या आप हमारे राष्ट्रीय भावों को नष्ट कर सकते हैं। वे समय चले गये।

वस्तुतः हम सब शान्तिमय क्रान्तिकारी हैं।

पूज्य मालवीय जी ने भी बड़े मार्के का भाषण दिया था। उन्होंने कहा था:—

"क्या हम भारतीय के नाते से अपने युवकों को शिवाजी और गुरु गोविन्द की स्वातन्त्र्य-भावना न सिखावें और भारत में स्वशासन स्थापित करने के लिये शिक्षित न करें। यदि हम उन्हें ऐसी शिक्षा दें तो क्या तुम—अंग्रेज लोग—हमारी इज्जत न करोगे। यदि हम प्रत्येक बालक के हृदय में यह विचार भर दें कि वर्तमान शासन हमारे हितों के लिये घातक है तो क्या आप हमारी प्रतिष्ठा न करेंगे?

ब्रिटेन से सम्बन्ध-विच्छेद कर पूर्ण स्वतन्त्रता की भावना युवकों में बढ़ रही है। सरकार के बड़े-बड़े शस्त्रागार और सेनायें भले ही कुछ लोगों को मार दें किन्तु युवकों मे उठती हुई इस भावना को नष्ट करने मे वे कभी सफल नहीं हो सकतीं।"

परन्तु सरकार की विजय हुई। (पक्ष ६१ विपक्ष ५०)। किन्तु पटेल जी ने दूसरी अप्रैल १९२९ को बिल पर बहस रोक दी। क्योंकि उसमे एक विचाराधीन मुकदमे की आलोचना होना अनिवार्य हो गया था। मेरठ-षड्यन्त्र केस चल रहा था। ४ तारीख को तत्कालीन गृह-सदस्य सर जेम्स क्रेगर ने सभा-भवन में आकर घोषणा की कि सभापति का निर्णय अनधिकारपूर्ण था। दूसरे दिन सर्वश्री नेहरू आयंगर तथा जयकर जैसे विचक्षण विद्वानों ने सभापति के निर्णय का समर्थन किया। ८ ता० को ज्यों ही सभापति पटेल अपनी रूलिंग देने खड़े हुए, दो 'बम' सभा-मंडप में आकर गिरे। और इनकिलाब जिन्दाबाद के नारे से सभास्थल गूंज उठा। बम फेंकने वाले स्व० सरदार भगतसिंह और श्री० बटुकेश्वर दत्त थे। ११ तारीख को सभापति ने अपने निर्णय को फिर दुहराया, किन्तु दूसरे दिन लार्ड इरविन ने उस काला कानून (Ordinance) बना दिया।

व्यापारी बिल पर भी खूब चखचख रही। साइमन कमीशन के बहिष्कार का प्रस्ताव भी इसी दर्म्यान में पेश हुआ। पंजाब-केसरी ला० लाजपतराय ने प्रस्ताव पेश करते हुए अत्यन्त ओजपूर्ण भाषण दिया। बहिष्कार का प्रस्ताव (६८ पक्ष—६२ विपक्ष=१३०) पास हो गया। असेम्बली में इससे अधिक वोटिंग कभी भी नहीं हुई। इसके अतिरिक्त दीवान बहादुर हरबिलास शारदा का बाल-विवाह निषेध बिल सर हरिसिंह गौड़ का सहवास-सम्मति बिल भी पास हो गये।

स्वराज्य दल का उपसंहार

इतने दिनों मे देश की परिस्थिति बहुत बदल गई थी। रावी के किनारे स्वाधीनता का शंख फूंक दिया गया था और कांग्रेस ने घोषणा कर दी थी कि अब स्वाधीनता संग्राम फिर छिड़ेगा। फिर आजादी के वे दीवाने भारत के वे सुपूत सभा-भवन मे कैसे ठहरते? जनवरी १६३० मे कांग्रेस-दल ने त्याग-पत्र दे दिया। और कुछ समय के लिये स्वराज्य-दल का अन्त हो गया। थोड़े ही दिनों बाद पं० मालवीयजी और श्री पटेल आदि भी त्यागपत्र देकर निकल आये। यद्यपि सर्व श्री सत्येन्द्रचन्द्र, अमरनाथ दत्त तरुणराम फूकन षणमुखम् चेट्टी सरीखे कुछ लोग बाहर नहीं आये, फिर भी स्वराज्य-दल का खातमा हो गया। नवीन स्वराज्य-दल की सृष्टि बच्चे स्वराजियों ने की पर वह चला नहीं। मध्यप्रांत मे और बंगाल में स्वराज्य-दल की विजय पूर्ण रही। द्वैध-शासन का उन दोनों प्रान्तों मे अन्त हो गया। पंजाब और बम्बई मे स्वराजियों का बहुमत कभी नहीं रहा। मद्रास और बिहार मे अवश्य उन्होंने जोर मारा और कुछ कर भी दिखाया। संयुक्त प्रान्त मे भी स्वराज्यदल का जोर रहा।

स्वराज्य दल का कार्यक्रम केवल विध्वंसात्मक ही नहीं था। यह कहना कि वे केवल विध्वंस करना चाहते थे, सत्य नहीं है।

स्वराज्य दल ने सात वर्षों में एक भी अवसर ऐसा नहीं दिया जब यह कहा जा सके कि उसने देश-हित के विरुद्ध कार्य किया। स्वयं विश्ववंद्य महात्मा ने अभी काशी में कहा था कि पं० मोतीलाल और उनके दल ने ऐसा एक वाक्य भी नहीं कहा, जिसके लिये देश लज्जित हो। उनकी खूबी यह थी कि उनको न पदों का पुरस्कार था न खिताबों का मोह। फिर भी संगठन सुदृढ था उनका संचालन वैज्ञानिक सामयिक ढंग से होता था और उनका संयम सराहनीय था। भारत के किसी अन्य दल को यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। विपक्षियों तक ने उनके संगठन और संयम की प्रशंसा की थी।

कुछ प्रमुख सदस्य

स्वराज्य दल के कुछ प्रमुख व्यक्तियों का वर्णन करके अब इस लेख को समाप्त करूंगा। प्रमुखों के प्रमुख थे—पं० मोतीलाल जी नेहरू! नेहरू जी सच्चे राजर्षि थे। उनका प्रकाण्ड पाण्डित्य उनकी तीव्र बुद्धि, उनकी अद्भुत प्रतिभा उनका सेना-संचालन-नैपुण्य उनका व्यक्तित्व उनका त्याग देश को सदा याद रहेगा। उनकी स्मृति देश की अक्षय और अमर सम्पत्ति है। वीरवर विट्ठलभाई पटेल ने सभापति बन कर दिखा दिया कि भारतीय निरे निकम्मे ही नहीं हो सकते। वायसराय, सेनापति गृह-सदस्य सभी को उसने नीचा दिखाया। लोग कहते हैं कि जिस दिन अन्तिम बार वे सभापति की कुर्सी पर बैठे थे उस दिन वे असाधारण रूप से गम्भीर थे और जब

उन्होंने कहा Gentlen en, the l e ıs a l] ıne l तब एक सन्नाटा सा छा गया और लोगों ने यह अनुभव किया कि जैसे अमे म्बली मर गई। उनकी इस उक्ति में कितना व्यग है, कितनी वेदना। 'I l v art p a a a l pe ı ı पटन महोदय 'पीयरेज और पेन्शन तो नहीं मगर एक राष्ट्र का कृतज्ञ हृदय आपको सदा याद करगा। स्व० श्री० ए० रग-स्वामी आयगर (हिन्दू—सपादक) भी बडे गम्भीर विद्वान और अर्थ-शास्त्र और शासन विधान सम्बन्धी गुत्थियों को सुलझान मे एक ही थे। लाहोर के दीवान चमनलाल और कलकत्ते क श्री तुलसीचरण गोस्वामी भी वाग्मी सदस्य थे। श्री श्रीनिवास आयगर अब राज-नीति स अलग हो गय हैं, पर वे भी स्वराज्य दल के एक बल थे। प्रातों में सर्वश्री मनगुप्त सुभाष बसु, नलिनीरजन सरकार, शरत बसु, (बगाल) श्रीकृष्णसिंह राय वृजकृष्ण (विहार) श्रीगोविंद वल्लभ पन्त गणेशशकर विद्याथी, सम्पूर्णानन्द (युक्त प्रात) मुहम्मद आलम (पजाब) नरीमान (बबई) सत्यमूर्ति (मद्रास) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आज ग्यारह वर्षों के बाद इतिहास अपने को दुहरा रहा है। आश्चर्य है कि स्वराज्य दल के जन्म के समय जिन डा० अन्सारी और श्री राजगोपालाचार्य ने उसका प्रबलतम विरोध किया था वे ही उसक पुनर्जन्म में सब से अधिक-प्रभावशाली हुए हैं। विश्वास है कि देश अपन इन बाके सिपाहियों को अपनायगा और य भी अपन पूर्व-गोरव की रक्षा करेंगे और दश क सम्मान का—स्वाधीनता का झण्डा न झुकन देंगे।

— ० —

क्लाइव के धन एकत्र करन के माग में स्वय उसके सयम क अति-रिक्त और कोई बाधक नहीं था।

वह सोन और चादी के ढेरों में होकर चलता था। उन ढेरों के ऊपर हीरों और लालों का ढेर लगा होता था। उसमें स वह अपनी इच्छानुसार लेने के लिय स्वतन्त्र था।

—मैकाले

— —

सचित्र
अर्जुन
साप्ताहिक

वर्ष १

अङ्क ४७

सोमवार १६ सितम्बर सन १९३५ ई०   Monday 16th September 1935



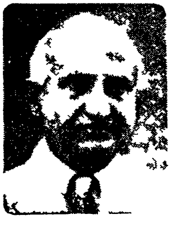
श्री पोचखानावाला



श्री झालावाड़ नरेश



श्री ह्यू० पी० लौंग



श्री भूलाभाई देसाई

वार्षिक मूल्य ३।)]   सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार   एक अङ्क का मूल्य -)।

विषय-सूची

विषय		लेखक	पृष्ठ-संख्या
१ सप्ताह के प्रसिद्ध व्यक्ति			मुख पृष्ठ
२ सप्ताह की डायरी			३
३ सप्ताह की हलचल			४
४ सम्पादकीय			५
५ पाकिस्तान की योजना			७
६ कृषक की आह	(कविता)	श्री मोलादत्त	८
७ हिन्दी	,,	श्री हरिवल्लभ	८
८ हे कलाकार!	,,	श्री दुजेन्द्रनाथ	८
९ ज्योत्स्ना		श्री लक्ष्मीप्रसाद	८
१० हमारी चित्रावलि			९
११ बेएडा गाव का मामला			१०
१२ सास और बहू		श्री बैजनाथ	११
१३ पतिदेव	(कविता)	श्री रत्नमाला	११
१४ लड़कियों की दो समस्यायें		श्री कल्याणसिंह	१२
१५ विधवाओं की चिन्ता		श्री बलीराम	१२
१६ आधुनिक हिन्दी के तीन युग			१३
१७ कविता की मजदूरी		श्री राजेन्द्रप्रसाद	१५
१८ आंखों की प्राकृतिक चिकित्सा		डा० रघुवीरशरण अग्रवाल	१६
१९ अपराधी कौन ?	(उपन्यास)		१८
२० सरकार की ग्राम सुधार योजना			१९
२१ दो आंसू	(कहानी)	श्री ब्रजमोहन गुप्त	२१
२२ प० बुद्धदेव और सार्वदेशिक सभा का निर्णय		श्री रामचन्द्र देहलवी	२३
२३ व्यापारिक-जगत्			२४

साप्ताहिक डायरी

५ सितम्बर

—३१ अगस्त को समाप्त होने वाले सप्ताह में मध्यप्रान्त व बरार में २५६१ व्यक्तियों को हैजा हुआ, जिन में से १०२३ मर गये।

—नवाबशाह (करांची) में एक निराश प्रेमी ने अपनी प्रेमिका व उस के पिता की इस कारण हत्या कर डाली कि पिता ने अपनी लड़की की शादी उस के साथ नहीं की।

—फ्लोरिडा के तूफान के संबंध में सरकारी तौर पर अब तक कुल २५६ व्यक्तियों के मरने व २५२ के घायल होने की खबर मिली है।

६ सितम्बर

—सौथापेठ गांव (नेल्लोर) में एक भाई न अपनी स्त्री के चरित्र पर सन्देह करके उस्तरे से उस का गला काट दिया।

७ सितम्बर

—पं० जवाहरलाल नेहरू के करांची से यूरोप रवाना होते समय डा० ताराचन्द लालवानी ने उनका हाथ देख कर कहा—

"आप की धर्मपत्नी इस अग्नि-परीक्षा से सुरक्षित निकल आयगी। आप हमारे राजा बने गे।'

६ सितम्बर

—बरली में कुछेक मुस्लिम गुडों ने शराब के नशे में शहर में चक्कर लगाकर कई व्यक्तियों और पशुओं पर भाले आदि से आक्रमण कर दिया। शहर में सनसनी फैल गई है।

—पटियाला में एक महनत मजदूरी करने वाली स्त्री के देहान्त होने पर उस के घर म ५००००) का माल निकला है।

७ सितम्बर

—रंगून कारपोरेशन ने वेगू योमस वाटर-सप्लाई योजना के लिये १,८१,००,०० रुपये का कर्ज लेने का निश्चय किया है।

८ सितम्बर

—बरेली जेल में सेठ-जमनालाल बजाज ने खान अब्दुलगफ्फार खां से मुलाकात की खान साहिब बहुत कमजोर हो गये हैं।

—देवबन्द (सहारनपुर) में कृष्णलीला के जलूस पर लगाई गई पाबन्दियों के हटाने आदि कार्यों के लिए ७ आदमियों की एक कमेटी बना दी गई है।

९ सितम्बर

—अलीपुर अब्जर वेटरी के भूकम्प मापक यंत्र में आज सुबह कलकत्ता से ३६१२ मील के फासले पर भूकम्प होना अनुभव किया गया।

—कालापाहल नरेश ने राज्य भर का सं० १९९० तक का बकाया माफ कर दिया तथा पहले जमीनें जो काश्तकारों के खाते में चल रही थीं और जिन का मुफ्त में लगान देना पड़ रहा था, खाते में खारिज करने का हुक्म दे दिया है।

—महाराजा जयपुर के बलायत से आने पर जलूस निकालने के समय एक स्त्री अपना दुखड़ा सुनाने के लिये उन की मोटर के आगे लेट गई।

—लाहौर के सीनियर पुलिस सुपरडेंट ने महकमाना जांच करके जिला पुलिस के ४ अफसरों को दंगा करने व उधम मचाने के अभियोग में सजा दी है।

१० सितम्बर

—पेडुआ (इटली के पास दो रेलगाड़ियों में भीषण टक्कर हो गई। जिस से ५ व्यक्ति मर गए और ५० के करीब घायल हो गए।

—आगरा में जोन्स मिल के ४००० मजदूरों ने दो मास से वेतन न मिलने के कारण एकाएक हड़ताल कर दी। कलक्टर ने उन की कष्ट कथा सुन कर सुलह करा दी।

—बर्मा के इनसीम जिले में बाढ़ के कारण १७ गांवों को हानि हुई है। हजारों एकड़ धान के खेत नष्ट हो गये हैं।

—मोमन्दो इलाके (सरहद) पर विद्रोही कबीले वालों और सरकारी फौजों में फिर मुठभेड़ हो गई, जिसमें ३ सैनिक मारे गए व ७ घायल हुए।

—कमोठा ग्राम (अहमदाबाद) की पाठशाला में हरिजन बालकों को को प्रवेश करने का अधिकार डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड के अधीनस्थ स्कूल बोर्ड ने दे दिया है।

—भारत के मनोनीत वायसराय लार्ड लिनलिथगो के नाम—'जोनबुल' ने मनोरंजक चिट्ठी लिखी है। उस में लिखा है कि लार्ड लिनलिथगो ने अभी निश्चय कर लिया है कि वह भारतीय संघ शासन का प्रथम प्रधान मन्त्री सर तेजबहादुर सप्रू को बनायेंगे।

—पंजाब सरकार ने एक विज्ञप्ति द्वारा सब लोगों को तलवार रखने की आज्ञा दे दी है।

११ सितम्बर

—फेरीबहलो केस के सम्बन्ध में जिन ६५ व्यक्तियों के विरुद्ध मुकद्दमा चल रहा था, उन में से २३ को प्राण दंड, १० को आजीवन कैद और १२ को १५-१५ साल कैद की सजा दी गई है। शेष छोड़ दिये गए।

—लाहौर की खबर है कि सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर ने कांग्रेस कार्य समिति की सदस्यता से इस्तीफा दिया दे दिया है।

—वर्धा की खबर है कि मीरा बहिन पर पिछले चार दिनों से तीव्र ज्वर का प्रकोप है। महात्मा गांधी स्वयं उनकी सुश्रुषा में लगे हुए हैं।

—लिस्बन (पुर्तगाल) का समाचार है कि वहां एक घातक षड्यन्त्र के सम्बन्ध में जिस का भेद सरकार को खुल गया है, सेना के कुछ आफिसर तथा तोपखाने के बहुत से कर्मचारी गिरफ्तार कर लिये गए।

—हैदराबाद (दक्षिण) में श्रीमती सरोजिनी नायडू के अस्वस्थ होने की खबर है। आप शिमला में होने वाली कांग्रेस पार्लमेण्टरी बोर्ड की महत्वपूर्ण बैठक में सम्मिलित नहीं हो सकेंगी।

—फेनी (बंगाल) के वकील श्री० सतीशचन्द्र वर्धन के विरुद्ध बंगाल टेररिस्ट एक्ट के मातहत मुकद्दमा चल रहा है। आप अपनी पहुंच की सूचना बिना दिये अपने मुहर्रिर के घर में ठहर गये थे।

—शिमला की खबर है कि एम० सी० राजा एम० एल० ए० के हरिजनों का सामाजिक बहिष्कार सम्बन्धी प्रश्न सभापति ने पेश होने से रोक दिया है।

—रुहेलखण्ड कुमायूं रेलवे के होम बोर्ड ने एक पत्र भेजा है कि आगे से साम्प्रदायिक संख्याओं के आधार पर ही रलवे स्टाफ में भरती की जाय। तदनुसार हिन्दुओं को ४०, मुसलमानों को ५५ तथा अन्य सब को ५ प्रतिशत के हिसाब से नौकरियां मिलेंगी।

—पारसी फेडरल कौन्सिल ने बम्बई के गवर्नर व बम्बई सरकार के होम मेम्बर को तार दिया है कि उस खानदानो फिल्म के प्रदर्शन को रोका जाय, जिस में कि दो पारसी युवतियां काम करती है।

—"गत सोमवार को कठपुतली के हिन्दुओं ने जलझूलनी का जलूस निकाला। मुस्लिमों न लाठियो से हमला किया और गड़बड़ मचा दी।"

—रियासत-मैसूर को भारत-सरकार ने लिखा है कि भारतीय रियासतों के प्रान्तीय कोआपरेटिव बैंकों को फिलहाल रिजर्व बैंक आव इण्डिया एक्ट की मद में शामिल नहीं किया जायगा।

१२ सितम्बर

राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने अपील निकाली है कि २४ सितम्बर से २ अक्तूबर तक समस्त भारत में गांधी जयन्ती सप्ताह मनाया जाय तथा उस अवसर पर फेरी लगाकर खादी बेची जाय।

—सुना है कि श्री० सी० वाई० चिन्तामणि ने 'लीडर' के सम्पादकत्व से त्यागपत्र दे दिया है।

—क्वेटा शहर में खुदायी का कार्य बदस्तूर जारी है। मलबे में से जो लाश बरामद होती हैं उन्हें विधिपूर्वक ठिकाने लगा दिया जाता है।

कल रात को यहां से गुरखा पलटनें सपरिवार छुट्टी मनाने के लिये नेपाल चली गयी हैं।

— आज प्रातः लखनऊ में बड़ी सनसनी फैल गयी जब लखनऊ के एक प्रसिद्ध व्यापारी आबिद को विक्टोरिया स्ट्रीट में अपने घर में बेहोश पाया गया। उस के पास उसकी प्रेमिका रानी एक नर्स की मरी हुई पड़ी थी। दोनों के शरीर पर बन्दूक की गोली के घाव थे। कहा जाता है

असेम्बली में सरकार की जबरदस्त हार

क्रिमनल ला अमेंडमेंट बिल ठुकरा दिया गया

जन-पक्ष के सदस्यों की सरकार को फटकार

—:

"अपराधियों का पता नहीं लगा सकते तो निकल जाओ यहां से।" —गोविन्दवल्लभ पन्त

"हम लोगों को भोजन और स्वतन्त्रता दे दो तो आतङ्कवाद का देश में नाम भी न रहेगा।" —अखिलचन्द्र दत्त

"यह या ऐसे पचासों कानून क्यों न हों, हम तो अपना आन्दोलन चलाये ही जायंगे।" —भूलाभाई देसाई

असेम्बली की सोमवार ९ सित० की बैठक में क्रिमिनल-ला अमेंडमेंट बिल पर और बहस हुई लेकिन इस दिन भी वह पूरी नहीं हो पाई।

डा० देशमुख ने अपने मनोरंजक ढंग से इस दिन भी सरकार की चुटकियाँ लीं। श्री आर० एस० शर्मा, सर मुहम्मद याकूब और मि० मोर्टिमर सरकार की हिमायत में रहे। सरदार जोगिन्दरसिंह और आसफअली ने जोरदार विरोध किया।

मंगलवार को भी असेम्बली में क्रिमिनल-ला अमेंडमेंट बिल पर बहस जारी रही लेकिन समाप्त नहीं हुई।

इस दिन डा० दलाल और महाराजकुमार विजयानगरम ने सरकार का पक्ष लेते हुए बिल का समर्थन किया और श्री० बी० दास अखिलचन्द्र दत्त, फजलुलहक तथा प० गोविन्दवल्लभ पन्त ने विरोध किया।

आतंकवाद का मूल कारण है, भोजन और स्वतन्त्रता की भूख। यह कहते हुए श्री अखिलचन्द्रदत्त ने कहा 'लोगों को भोजन और स्वतन्त्रता दे दो तो आतंकवाद का देश में नाम भी न रहेगा। यह नहीं आपने चुनौती भी दी कि 'सरकार हमें स्वतन्त्र कर दे, फिर देखो हम सब के भोजन की व्यवस्था करते हैं या नहीं।'

प० गोविन्दवल्लभ पन्त ने बिल पर तीक्ष्ण प्रहार करते हुए होममेम्बर के इस कथन की धज्जियाँ उड़ाई कि इस का उद्देश्य देश को उत्तरदायी शासन के लिए तैयार करना है। आपने कहा 'तुम्हारे अबतक के कारनामों को देखते हुए हम अपने ऐसे स्वत्वों को तुम्हें कैसे सौंप सकते हैं, जो कि हमें अत्यन्त प्रिय हैं?

श्री० बी० दास ने बिल का उद्देश्य सरकारी काले कृत्यों को प्रकाश में आने से रोकना बताया और अखबारों के साथ पक्षपात करने की नीति की निन्दा की। श्री० फजलुलहक ने बिल को बिलकुल व्यर्थ और अनावश्यक बताते हुए सरकार को अपनी अव्यवस्था सुधारने की दोस्ताना सलाह दी।

बुधवार ता० ११ सितम्बर को असेम्बली में क्रिमिनल-ला अमेंडमेंट बिल की बहस का पाँचवाँ दिन था, मगर इस दिन भी बहस समाप्त नहीं हुई।

इस दिन की बहस में व्यवसाय सदस्य सर जफरुल्लाखाँ और यूरोपियन ग्रुप के नेता मि० जेम्स ने सरकार का समर्थन किया और प० गोविन्दवल्लभ पन्त तथा श्री० अब्दुलमातीन चौधरी ने विरोध किया।

बहस की विशेषता यह रही कि जहाँ विरोधी पक्ष वालों ने युक्तियों और आंकड़ों का सहारा लिया वहाँ सरकारी समर्थकों ने युक्तियों के अभाव में डाट-फटकार और अपशब्दों तक को अपनाया। मि० जेम्स ने तो श्री सत्यमूर्ति को लक्ष्य करके यहां तक कह डाला कि 'तुम मूर्खों के स्वर्ग में जाओगे और वहीं जाने के लिए असल में तुम बने भी हो।'

पूरी ६ दिन की गरमागरम बहस के बाद बृहस्पतिवार ता० १२ सितम्बर के सायंकाल असेम्बली ने ६१ के विरुद्ध ७१ मतों से क्रिमिनल-ला अमेंडमेंट बिल पर विचार करने से इन्कार कर दिया। यही नहीं सरकार प्रस्ताव के रद्द होते ही विरोधी दल के मेम्बरों ने बिल को फाड़ कर फेंक दिया।

इस दिन की बहस में मुहम्मद यामीनखाँ ला मेम्बर सर नृपेन्द्रनाथ सरकार और होम मेम्बर सर हेनरी क्रैक ने जोरों के साथ बिल का समर्थन किया तथा श्री एन० एम० जोशी (मजदूरों के नामजद प्रतिनिधि) मौ० शौकतअली श्री माधव श्रीहरि अणे (कांग्रेस-नेशनलिस्टों के नेता) और भूलाभाई देसाई (कांग्रेस) ने विरोध किया।

बहस में जहां हाउस के लीडर सर नृपेन्द्र ने नगण्य हिन्दू अखबारों से मुसलमानों के विरुद्ध उद्धरण छाँट कर और बंगाल के सम्बन्ध में म० गांधी को भेजी गई श्री कृष्णदास की कथित चिट्ठी के उद्धरण सुना कर सदस्यों को साम्प्रदायिक भावों से प्रेरित और आतंकवाद से भयभीत करने की कोशिश की, वहाँ विरोधी दल के नेता श्री भूलाभाई देसाई ने बड़ी गम्भीरता और शालीनता के साथ बिल के पक्ष में पेश की गई युक्तियों का खण्डन किया और घोषणा की— यह या इस तरह के पचासों कानून क्यों न हों, हम तो अपना आन्दोलन चलाये ही जायंगे। यही नहीं आपने यह भी स्पष्ट कह दिया कि सत्याग्रह या सविनय अवज्ञा की अब भी जरूरत मालूम पड़े तभी उसे शुरू किया जा सकता है।

बिल फिर पेश होगा?

बिल पर सरकार की बुरी तरह हार हुई है, फिर भी वह इसे छोड़ती मालूम नहीं पड़ती। ऐसा खयाल किया जाता है कि शीघ्र ही गवर्नर जनरल की सिफारिश के साथ वह फिर असेम्बली में विचारार्थ पेश होगा।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

सोमवार ता० ९ सितम्बर से बृहस्पतिवार ता० १२ सितम्बर तक जो प्रश्नोत्तर हुए, उन में से मुख्य मुख्य निम्न प्रकार हैं:—

इकरारनामा

श्री आसफअली के प्रश्न पर इण्डियन नेशनल ऐयरवेज के साथ सरकार ने वायुयान सम्बन्धी जो समझौता किया है, वह उपस्थित किया गया। इस में सरकार ने पहले छः महीने १८००) रुपये मासिक उसे इस लिए देना मन्जूर किया है कि सिविल एवियेशन के डायरेक्टर द्वारा परखा हुआ आवश्यक स्टाफ

(शेष पृष्ठ २८ पर)

अबीसीनिया का मामला अभीतक नहीं सुलझा

लड़ाई अवश्यम्भावी है?

अबीसीनिया और इटली के मामले को सुलझाने के लिये राष्ट्र संघ की कौंसिल की बैठक तो असफल रही ही, ९ सितम्बर से राष्ट्र संघ की असेम्बली की जो बैठक हो रही थी उसकी सफलता की भी विशेष आशा नजर नहीं आती।

अबीसीनिया पर इलजाम

लीग कौंसिल की बैठक में इटली ने अबीसीनिया पर चार इलजाम लगाये:—

(१) अबीसीनिया ने नये सिरे से सरहदबन्दी करने से इन्कार कर दिया और इटालियन प्रदेश पर गैर-कानूनी कब्जा कर लिया, (२) इटली के राजकीय प्रतिनिधियों पर नित्यप्रति हमले होते रहते हैं। (३) अबीसीनिया में रहने वाले इटालियनों के जान माल पर लगातार धावा बोला जाता है, और (४) इटालियन सोमालीलैण्ड में रहने वाले इटालियनों पर भी इसी तरह के हमले होते रहते हैं।

साथ ही अबीसीनिया पर इटली का विश्वास न रहने की घोषणा करते हुए राष्ट्र संघ में अबीसीनिया का दर्जा बराबरी का न रखने पर जोर दिया।

लीग कौंसिल ने सान्योर मडरियागा (स्पेन) की अध्यक्षता में मि० ईडन, मो० लेविल, कर्नल बेक (पोलैण्ड) और तौफिक अरस (टर्की) की एक उपसमिति समझौते का रास्ता निकालने के लिए नियत की और उसने इटली की अबीसीनिया को राष्ट्र-संघ से हटाने की मांग पर विचार करने के लिए अपनी एक उपसमिति बनाई।

लीग असेम्बली

९ सितम्बर से डा० बेनेस की अध्यक्षता में राष्ट्र संघ की असेम्बली का अधिवेशन भी शुरू हो गया है। इसमें विभिन्न राष्ट्र संघ के सन्धिपत्र का समर्थन किया है। जिनमें ब्रिटेन और फ्रान्स भी हैं। इटली की ओरसे बैरन अलायसी ने यह आश्वासन देने से इन्कार कर दिया कि अबतक समझौते की बातचीत चल रही है वह युद्ध शुरू नहीं करेगा। इधर सर सेम्युअल होर और मों० लेवल के स्पष्ट रूप से

(शेष पृष्ठ २६ पर)

अर्जुन

सोमवार ता० १६ सितम्बर १९३५ ई०

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

प्राचीन स्मृतियों की रक्षा कीजिये

उदयपुर-दरबार से निवेदन

(ले०—श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)

गत मास मुझे उदयपुर रियासत जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने चित्तौड़गढ़ भी देखा और उदयपुर के अन्य ऐतिहासिक स्थानों के भी दर्शन किये। जिस वीर-भूमि के एक-एक चप्पे में से सैकड़ों मारू गीतों की प्रतिध्वनि आज भी आ रही है, उसे देख कर किस भारत-वासी का हृदय रोमांचित न होगा। मेरे दिल ने भी वहां एक वेदना को और स्फूर्ति को अनुभव किया। वेदना इस बात पर कि क्या थे, और क्या हो गये। जिन के पूर्व-पुरुषाओं की निःशंक वीरता के सामने सिंह भी मात थे, उनकी सन्तान आज गीदड़ों की भाषा बोलती और गीदड़ों के तत्व ज्ञान पर अभिमान करती है। स्फूर्ति का कारण यह विचार था कि जो कुछ आज से ४ या ५ सदी पूर्व हुआ वह अब भी हो सकता है। उस का होना असम्भव नहीं है। इस प्रकार वेदना और स्फूर्ति की तरंगोंमें डुबकियां लेते हुए मैंने उस तीर्थयात्रा को समाप्त किया। एक कमी रह गई। मौसम के अनुकूल न होने से लेखक और उस के परिवार के कारणों से अमर हल्दीघाटी को न देख सका। वह फिर किसी दूसरे समय पर देखूंगा। इस समय तो जो कुछ देखा है, उसी को अनुभव करने और उस पर विचार करने में मुझको कठिनाई अनुभव हो रही है। न्यूं सकता के सिद्धान्तों का मनन करते-करते हम लोगों के पास वह चित्रपट ही कहां रह गया है, जिस पर हम्मीर, कुम्भ, सांगा और प्रताप के चित्र खेंचे जा सकें। उस मानसिक चित्रपट को तैयार करना बड़ी साधना का काम है। उस के लिये समय और तपस्या चाहिये।

अस्तु। यह तो हुई कल्पना-जगत् की बातें। अब मैं उन स्मारकों की वर्तमान स्थूल दशा पर आता हूं। उदयपुर सरकार की ओर से चित्तौड़-गढ़ की रक्षा का थोड़ा-बहुत प्रयत्न अवश्य किया गया है और उस के लिए वह धन्यवाद के योग्य है, परन्तु मुझे यह कहते दुःख होता है कि एक जाति की स्वर्गीय स्मृति-यों की रक्षा जिस सावधानता से होनी चाहिये, उस में अभी बहुत कमी है। पहले चित्तौड़गढ़ को ही लीजिये। प्रथम द्वार में प्रवेश करते ही जिस वस्तु का अभाव अनुभव होता है, वह यह है कि न कोई मार्ग-दर्शक मिलता है और न उप-योगी साहित्य। द्वार में घुसते ही जेल के दर्शन होते हैं। वहां एक सिपाही खड़ा रहता है, जो सीधे मुंह से बात भी नहीं करता। अन्दर आ कर दर्शक या तो तांगा चलाने वाले की दया पर रह जाता है या किसी गंवार-गाइड के पाले पड़ जाता है।

कदम-कदम पर ऐतिहासिक स्थान हैं, परन्तु न उनकी रक्षा का पर्याप्त प्रबन्ध है और न उनके पास दर्शकों की जानकारी के लिये ऐसे बोर्ड हैं, जिन पर ब्योरा लिखा हो। जयमल और फत्ता की छत-रियां तक बिना किसी निर्देश के पड़ी हैं। सब से बड़ी दुःख की बात यह है कि दर्शक उन स्थानों की तलाश में व्यर्थ ही भटकता फिरता है, जहां पर हजारों वीर राजपूत रमणियों ने हंसते-हंसते धर्म पर प्राण दे दिये थे। जौहर के स्थानों का कोई निशान नहीं है, जो स्थान दिखाया जाता है, वह बिलकुल गन्दा और कूड़े से भरा पड़ा है। यह दशा अन्य ऐतिहासिक स्थानों की है। चित्तौड़गढ़ में फतेह-निवास नाम का एक नया महल बनाया है, जिस में कई लाख रुपया खर्च हुआ बतलाया जाता है। यदि यह रुपया गढ़ की पुरानी इमारतों की रक्षा में खर्च किया जाता, तो उत्तम होता।

यही दशा उदयपुर के ऐतिहा-सिक स्थानों की भी है। एक ही दृष्टान्त लीजिये। उदय-सागर की पाल पर कोई स्थान था, जहां राजा-मानसिंह राणा प्रतापसिंह के मेह-मान बने थे। वह घटना इतिहास में बहुत प्रसिद्ध है, परन्तु उदय-सागर पर आकर यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि वह स्थान कौनसा था? कोई निर्देशक बोर्ड तो वहां अवश्य चाहिये।

यह सौभाग्य की बात है कि यह सब स्थान बप्पा रावल की सन्तान के हाथों में हैं। यह और भी हर्ष की बात है कि वर्तमान महाराणा एक रोशन दिमाग और उदार हृदय शासक हैं। उनके समय में उदय-पुर रियासत की कई तरह की उन्नति हुई है। क्या मैं उदयपुर-दरबार से यह नम्र प्रार्थना कर सकता हूं कि वह अपने अमर पूर्व पुरुषाओं की स्थूल स्मृतियों की रक्षा की ओर विशेष ध्यान दें। वह पूर्वपुरुषा केवल मेवाड़ के ही नहीं, अपितु सारी हिन्दू-जाति के अमूल्य धन थे! उन की स्मृतियों की रक्षा हिन्दू जाति के मान रक्षा हैं। मैंने प्रायः सभी जिव्हाओं से उदय-पुर के वर्तमान शासककी उदारता और सौजन्य की प्रशंसा सुनी है। क्या वह मेरे इस निवेदन पर ध्यान दे कर चित्तौड़गढ़, हल्दी घाटी तथा ऐसे ही अन्य ऐतिहासिक स्थानों की रक्षा की ओर विशेष ध्यान देंगे?

दमन का लंगड़ा समर्थन

असेम्बली में दमन-सम्बन्धी आर्डिनेन्स कानूनों के समर्थन पर जो बहस हुई है, उसने दोनों ही पक्षों के बलाबल को खूब स्पष्टता से प्रगट कर दिया है। दमन सम्बन्धी कानूनों के समर्थन में, सरकार की ओर से जो दलीलें दी गई हैं, वह लंगड़ी और अत्यन्त निर्बल हैं। जब कांग्रेस की ओर से कानून भंग जारी था, तब कहा जाता था कि कानून-भंग के प्रभाव को दूर करने के लिये आर्डिनेंसों की आवश्यकता है। जब सत्याग्रह बन्द होगया, तब उसमें पैदा हुई गड़बड़ को समर्थन के रूप में पेश किया गया और अब उनमें से कुछ भी नहीं है। तो भी सरकार दमन-शस्त्र को खूब तेज रखना चाहती है। उसके समर्थन में जो युक्तियें दी जा रही हैं, वह अद्भुत हैं। कहा जाता है कि अपराध की सजा देने से उसे रोकना अच्छा है। दमन सम्बन्धी कानूनों के रहने से राजनीतिक अपराध रुक रहते हैं। इस युक्ति को ठीक मान लें तो सब से अच्छा यह होगा कि हरेक भारत-वासी को कठघरों में नजरबन्द कर दिया जाय, न वह बाहिर जा सके, और न अपराध कर सके। बस—सबसे आसान उपाय तो यही है परन्तु एक बच्चा भी सरकार की दलीलों के बच्चेपन को समझ सकता है, जब तुम किसी मनुष्य को कठघर में कैद कर देते हो, या उसके हाथ पांव बांध देते तो, तब वह न भलाई कर सकता है और न बुराई। वह एक जड़ पदार्थ बन जाता है। शासक का काम यह है कि मनुष्यको काम करने की आजादी दे, और साथ ही बतला दे कि यदि बुरा करोगे तो तुम्हें दंड मिलेगा। कानून का यही काम है। ब्रिटिश सरकार के कानूनी शस्त्रागार में बुराई की सजा देने वाले कानूनों की कमी नहीं। यदि कोई वक्ता या लेखक राजद्रोह का प्रचार करता है तो उसके लिए १२४ ए. विद्यमान है। यदि कोई पागल राजकर्मचारियों पर प्रहार करता है तो उसके लिए एक ही नहीं, अनेकों धारायें विद्यमान हैं। ऐसी दशा में प्रेस ऐक्ट और आर्डिनेन्स ऐक्टों को पुनर्जीवित करने की क्या आवश्यकता है? यदि सरकार का उद्देश्य केवल इतना ही है कि देश में राजविप्लव न हो, तब तो उसकी पूर्ति विद्यमान कानून से ही हो सकती है, परन्तु यदि उद्देश्य इससे कुछ अधिक हो, भारत के

भाग्यविधाता चाहते हों कि देश में राष्ट्रीयता का बीज ही न रहे' तब दूसरी बात है। तब तो आर्डिनेन्स कानूनों का बनना अत्यन्त आवश्यक है। सरकार की ओर से दमन के पक्ष में जो जो युक्तियां दी गई हैं, उनका खोखलापन बिलकुल स्पष्ट है। समाचारपत्रों पर अनुचित रुकावटें डालने से देश की मानसिक उन्नति में कितनी जबर्दस्त बाधा पहुंचती है, इसका प्रदर्शन पं० गोविन्द वल्लभ पन्त ने अपने जोरदार भाषण में किया है। प्रेस ऐक्ट के कानूनी दोषों को मि० सत्यमूर्ति ने बड़ी सुन्दरता से दर्शा दिया है। फिर भी सरकार पर कोई असर हुआ हो, ऐसा नहीं कह सकते। उन चिकने घड़ों पर पानी का क्या प्रभाव होसकता है। उनकी सज्जनता का तो यह हाल है कि जब देश के प्रतिनिधि दमन सम्बन्धी कानूनों के विरोध में बोलने लगते हैं, तब होम मेम्बर तक आराम लेने के लिये चले जाते हैं। उन्हें तो दमन-सबंधी कानून बनाना है। असेम्बली मान तो और न मान तो। तब उन्हें किसी की दलीलें सुनने की क्या आवश्यकता है।

असेम्बली में अब तक जो विवाद हुआ है, उसमे सरकार के प्रस्तावों की निराधारता खूब स्पष्ट होगई है। विरोधी वक्ताओं ने भली प्रकार सिद्ध कर दिया है कि क्रिमिनल ला अमेण्डमेण्ट ऐक्ट सर्वथा अनावश्यक है। परन्तु वहां युक्ति को सुनता कौन है? कह दिया कि होगा, और होना चाहिये सीधी तरह न होगा, तो सर्टिफिकेशन से होजायगा। असेम्बली के भाषण तो केवल आरण्य रुदन हैं।

यह छपते २ मालूम हुआ कि असेम्बली के सदस्यों ने भारी बहुमत से इस काले बिल को अस्वीकार कर दिया। इस कर्त्तव्यपालन के लिए उन्हें बधाई।

सार्वदेशिकसभा और पं० बुद्धदेव जी

(ले० श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति)

पं० बुद्धदेव जी के सम्बन्ध में पंजाब के कुछ स्वार्थी लोगों ने जिस भद्दे प्रकार से आन्दोलन उठाया है, उसकी जितनी निन्दा की जाय कम है। पाठक इसी अंक में दूसरे स्थान पर प० रामचन्द्र जी महोपदेशक का लेख पढ़ेंगे। उस लेख में पंडित जी ने बड़ी उत्तमता से दर्शाया है कि पं० बुद्धदेव जी का कार्य शायद लोकाचार के विरुद्ध कहा जा सके, परन्तु उसे धर्मविरुद्ध नहीं कह सकते। अपने आदमी की छोटो सी भूल को अपराध और अपराध को पाप का रूप देकर, अपने को पराया बना देना आर्य जाति को ही आता है। इस कुप्रवृत्ति ने ही जाति को यह गिरावट का दिन दिखाया है। प० बुद्धदेव जी की जरासी व्यावहारिक भूल को पाप का नाम देकर अदूरदर्शी लोगों ने आर्यसमाज के वायुमंडल को खूब दूषित किया है। दुःख की बात है कि सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा भी उन अदूरदर्शी लोगों का औजार बन गई और न्याय को ताक में रखकर पक्षपातपूर्ण व्यवस्था दे डाली। आर्यसमाज पर सैकड़ों आफतें आईं, तब तो सार्वदेशिक सभा सोई रही और अब अपने आदमी पर कुफ्र का फतवा दायर करने के लिये उसकी नींद एकदम खुल गई। आर्य समाज की शिरोमणी सभा की इस दुरवस्था को देखकर दुःख होता है। जरा फतवे के महत्व को तो सोचिये। ऋषि के अपमान का जुर्म उस व्यक्ति पर लगाया जा रहा है, जिसे ऋषि के नाम पर पागल कहा जा सकता है, जिसने आर्यसमाज की धुन में तन-बदन को भुला रखा है, जो आर्यसमाज और दयानन्द के मान के लिये जान देता फिरता है। आर्यसमाज की दशा सचमुच शोचनीय है, कि वह अपने सच्चे सेवक और दूकानदार में भेद नहीं कर सकता, प्रत्युत दुकानदारी को सेवकों से ऊंचा स्थान देता है।

आर्यसमाज का हित इसी में है कि इस मामले को न्याय की दृष्टि से देखकर शान्त किया जाय, न कि इसमें कि तिल को ताड़ का रूप देकर अपनों को पराया बनाने का यत्न किया जाय। सार्वदेशिकसभा को पं रामचन्द्र जी के लेखानुसार पक्षपात-हीन दृष्टि से इस मामले पर विचार करना चाहिये, द्वलबन्दी का शिकार होना सभा की शान के योग्य नहीं।

सार्वदेशिकसभा के प्रधान का वक्तव्य भी इसी अंक में प्रकाशित हो रहा है। पं० रामचन्द्र जी के पत्र में उसका पूरा उत्तर आगया है।

सम्पादकीय विचार

पर उपदेश कुशल बहुतेरे

सर सेमुअल होर ने राष्ट्रसंघ की असेम्बली में एक बात बहुत सच कही है कि वर्तमान परिस्थितियों में किसी भी ऐसे देश को, जिस के पास साम्राज्य नहीं है, यह संदेह हो जाना स्वाभाविक है कि साम्राज्य वादी देश अपने उपनिवेशों में मिलने वाले कच्चे माल पर एकाधिकार कर लेंगे और अन्य देश उन से कोई फायदा नहीं उठा सकेंगे। लेकिन यह सत्य केवल 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे, की उक्ति का स्मरण कराता है। ओटावा पैक्ट द्वारा ब्रिटेन ने अपने साम्राज्यान्तर्गत देशों के विशेषकर भारत के व्यापार को कितनी क्षति पहुंचाई है, यह पाठकों से छिपा नहीं और यह पैक्ट तब बना, जबकि आप उपदेश देने वाले सर होर भारत मन्त्री थे। नया शासन विधान यदि भारत को स्वशासन देता है, तो ऐसा स्वशासन कोई देश नहीं चाहेगा।

स्वास्थ्य-कामना

श्रीमती कमला नेहरू के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में फिर चिन्ताजनक समाचार मिलने लगे हैं। इस से सारे देश में भय व आतंक फैलना स्वाभाविक है। वे वीर, जवाहरलाल की पत्नी हैं। भारत वर्ष श्रीमती कमला नेहरू को अपनी वीर भगिनी के रूप में मानता है। उन की स्वास्थ्य-कामना प्रत्येक भारतीय सच्चे हृदय से करता है। वे शीघ्र ही स्वस्थ होकर भारत पहुंचे, यही सब की प्रार्थना है।

पंजाब सरकार की विज्ञप्ति

पंजाब सरकार शायद बहुत दिनों बाद पंजाब की साम्प्रदायिक स्थिति की गम्भीरता को समझने लगी है। शहीदगंज-आन्दोलन के प्रारम्भ और उस से पहले मुसलमानों के साथ सरकार ने जो उपेक्षा-पूर्ण नीति बरती थी, उसी का परिणाम आज प्रत्यक्ष हो रहा है। रावलपिंडी में अनेक मुस्लिम आंदोलनकारियों ने शहीदगंज के संबंध में कुछ निश्चय किये थे। पंजाब सरकार ने अनेक आंदोलनकारियों को नजरबन्द कर दिया और एक वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिस में शहीदगंज आन्दोलन के अतिरिक्त हजारा जिले की सीमा पर किये गये आक्रमणों का भी उल्लेख किया है, जिसका उद्देश्य गैर-मुस्लिम लोगों को कत्ल करना तथा उनकी सम्पत्ति और धार्मिक स्थानों को छीनना है।' सरकार ने सब आन्दोलन कारियों को खुली धमकी दी है कि वह शान्ति-रक्षा के लिये सब उपाय बरतेगी। क्या मुस्लिम नेता अपना कर्तव्य और मार्ग निश्चित कर सांप्रदायिक विद्वेष को नष्ट करने पर कमर बांधेंगे?

—:—:—

शान्ति में सन्देह

अबीसीनिया इटली का मामला अभी सुलझता नहीं दीखता। राष्ट्रसंघ ने इस मामले पर विचार करने के लिये जो कमेटी बनाई है। उसने समझौते की जो रूपरेखा दी है। ब्रिटेन के परराष्ट्र सचिव सर सेमुअल होर ने यद्यपि यह कह दिया है कि सन्धि पत्र की शर्तों की अवहेलना करके युद्ध उतारू होने वाले राष्ट्र के प्रति राष्ट्रसंघ के अन्य सदस्य राष्ट्रों को कर्तव्य बताया है कि वे मिल कर युद्ध रोकें और दुनिया में शान्ति कायम करें, तथापि हमें पूर्ण संदेह है कि राष्ट्रसंघ की इस धमकी का इटली पर कोई प्रभाव पड़ेगा। यदि वह देखेगा कि राष्ट्रसंघ उस के विरुद्ध जा रहा है, तो राष्ट्रसंघ को भी ठुकरा देने का निश्चय कर चुका है। ऐसी अवस्था में राष्ट्रसंघ शान्ति स्थापित कर सकेगा, इस में पूरा संदेह है।

हिन्दुस्तान में मुसलमानों का अलग प्रदेश रहे

पाकिस्तान की योजना

'पाकिस्तान नेशनल मूवमेण्ट' के अध्यक्ष का वक्तव्य

पाकिस्तान का आन्दोलन हाल ही के वर्षों में हमारे सामने आया है। पंजाब, सीमाप्रान्त, सिन्ध और बिलोचिस्तान को मिला कर पाकिस्तान कहा जा रहा है। मुसलमान चाहते हैं कि इन्हें पाकिस्तान के नाम से ऐसा राष्ट्र स्वीकार कर लिया जाय जिसकी जन संख्या में मुसलमानों की प्रधानता रहे और शासन में भी उन्हीं का मुख्य भाग हो। इस प्रकार भारत को हिन्दू भारत और मुस्लिम भारत के रूप में वे विभक्त करवाना चाहते हैं। 'पाकिस्तान नेशनल मूवमेण्ट' के नाम से उन्होंने अपना आन्दोलन चला रक्खा है। यहां तक कि उसके अध्यक्ष की हैसियत से श्री रहमतअली नामक एक सज्जन ने पिछले जुलाई मास में जबकि इण्डिया बिल पार्लमेण्ट के समक्ष उपस्थित था, एक वक्तव्य भी निकाला था। यह वक्तव्य विलायत के मुख्य मुख्य व्यक्तियों में वितरित किया गया था और इसमें बताने की चेष्टा की गई थी कि मुसलमान पाकिस्तान को क्यों अलग देश बनाना चाहते हैं। उस वक्तव्य के मुख्य-मुख्य अंश सर्व साधारण की जानकारी के लिए हम यहां दे रहे हैं।

पाकिस्तान हिन्दुओं की भूमि नहीं है

पाकिस्तान हिन्दुओं की भूमि नहीं है। और न इसके निवासी ही हिन्दुस्तानी नागरिक हैं। इस की सत्ता से पृथक ऐतिहासिक भौगोलिक, आध्यात्मिक और राष्ट्रीय व्यक्तित्व रहा है। इतिहास के आरम्भ ही से यह हमारे राष्ट्र का निवास स्थान रहा है और यहां तक कि प्राचीन काल में भी यह हमारी सभ्यता का केन्द्र था। भूतकाल में यहीं हमारा पालन पोषण हुआ और भविष्य में हमारी आशा भी इसी पर है। जैसे हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तान को जन्म से मातृ-भूमि मानते हैं उसी तरह हम पाकिस्तान को अपनी पितृ-भूमि मानते हैं। हिन्दुस्तान में कुल जन संख्या का ३/४ भाग होने के कारण यदि हिंदुस्तानी उसे अपना मानते हैं तो पाकिस्तान भी हमारा है, क्योंकि इस में हमारी संख्या ४/५ भाग है।

हम, पाकिस्तानी इस में अतीत काल से अपना अनूठा जीवन बिताते आये हैं और राष्ट्रीय समस्याओं का हल भी अपने ही ढंग से करते आये हैं। अपने पिछले काल में पाकिस्तान ने अपने अस्तित्व की रक्षा, अपने कानूनों की रक्षा की और अपने ही धार्मिक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आदर्शों को पवित्रता के साथ कायम रक्खा, जो कि हिन्दुस्तान के आधार भूत आदर्शों से बिलकुल भिन्न हैं।

यदि सामूहिक रूप में देखा जाय तो उन से हमारी कोई बात नहीं मिलती और न उन की ही कोई बात हम से मिलती है। जिस प्रकार सामूहिक रूप से वे हम से भिन्न हैं उसी प्रकार हमारी व्यक्तिगत आदतें भी उन से बिलकुल नहीं मिलतीं, जिस प्रकार कि अन्य देशवासियों से नहीं मिलतीं।

सभ्यता और संस्कृति का भेद

हिन्दुत्व जिन आधारभूत सिद्धान्तों पर निर्मित है वे उन आदर्शों से बिलकुल भिन्न हैं, जिन के आधार पर कि हमारे राष्ट्रीय जीवन की सृष्टि होती है। हमारा प्राचीन सामाजिक प्रणाली और प्राचीन संस्कारों ने हमें ऐसी सभ्यता, ऐसा दर्शन, ऐसी संस्कृति, ऐसी भाषा, ऐसी साहित्य और ऐसी कलाएं दी हैं, जो कि हिंदुओं की संस्कृति और सभ्यता से बिलकुल भिन्न हैं। केवल यही नहीं, हमारा एक दूसरे के साथ खान-पान का व्यवहार नहीं विवाह सम्बंध नहीं और न हमारे रीति रिवाज, भोजन और वस्त्र ही एक दूसरे से मिलते हैं। इन सत्य बातों में विवाद के लिए स्थान नहीं है, जिस प्रकार कि भूतकाल में इन में परिवर्तन होने की कोई आशा नहीं की जा सकती। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का यह मौलिक भेद एक ऐसा नित्य सत्य है, जो कभी मिट नहीं सकता। हमारे विधान निर्माताओं को प्रकृति के इस निर्णय को स्वीकार करना ही चाहिये।

जाइण्ट सिलेक्ट कमेटी का समर्थन

जाइण्ट सिलेक्ट कमेटी ने हमारे विचारों की पुष्टि निम्न शब्दों में की है:—

भारत में इस प्रकार की कितनी ही जातियां रहती हैं, जो कि अपने उद्गम आदर्श और संस्कारों में एक दूसरे से इतनी भिन्न हैं, जितने कि यूरोप के राष्ट्र एक दूसरे से। भारत के दो तिहाई निवासी किसी न किसी रूप से हिन्दू धर्म को मानते हैं और ७ करोड़ ७ लाख से अधिक इस्लाम के अनुयायी हैं। इन दोनों में संकुचित रूप से केवल धर्म का ही भेद नहीं है, बल्कि यह कानून और संस्कृति में भी एक दूसरे से भिन्न हैं। कहा जा सकता है कि दोनों दो पृथक सभ्यताओं के प्रतिनिधि हैं। हिन्दुओं की सामाजिक और धार्मिक प्रणालियों का मुख्य आधार वर्ण व्यवस्था है, जिन में कि पश्चिमी प्रभाव पड़ने से बहुत थोड़ा ही परिवर्तन हुआ है परन्तु इस्लाम धर्म का मुख्य आधार मनुष्य मात्र की समानता है।

प्राकृतिक पृथक्करण

केवल यही नहीं, भौगोलिक दृष्टि से भी पाकिस्तान एक पृथक प्रदेश जान पड़ता है। प्रकृति ने पाकिस्तान को हिन्दुस्तान से जमुना-नदी द्वारा पृथक कर दिया है और दोनों प्रदेशों के बीच में पानीपत का ऐतिहासिक और सकरा मैदान ही है।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच जो भेद हैं वे बिलकुल स्वाभाविक हैं और इसी लिए नित्य और स्थायी भी हैं। अतीत काल से वे रहे हैं और सदैव रहेंगे। यह हमारी आत्मा और शरीर के प्रतिनिधि स्वरूप हैं और यह हमें अपना पृथक राष्ट्र बनाने का ऐसा अधिकार देते हैं, जिस से कोई इन्कार नहीं कर सकता। धर्म और पितृभूमि हमारी पैत्रिक सम्पत्ति है और इसकी रक्षा के लिये हम दृढ़ प्रतिज्ञ हैं।

पाकिस्तान का आन्दोलन

पाकिस्तान का आन्दोलन इन नित्य सत्यों के आधार पर चल रहा है और उसका उद्देश्य ब्रिटिश राष्ट्र समूह में हिन्दुस्तान के समान बराबरी का पद पाना है। हम पाकिस्तान का पृथक संघ इस लिये चाहते हैं कि हिन्दुस्तान से मिलने पर हमारी राष्ट्रीय उन्नति ऐसी न हो सकेगी, जैसी कि करने की तजवीज भारतीय शासन-संघ में की गई है। हम पृथक राष्ट्र के साधारण अधिकार के सिवाय और कुछ भी नहीं चाहते। कदापि नहीं, यह बात बिलकुल स्पष्ट है। हमारा यह दावा केवल आत्मरक्षा के ही लिये है। पाकिस्तानी न तो ब्रिटेन के विरोधी हैं और न हिन्दुस्तान के समर्थक। हम ब्रिटिश साम्राज्य से सहयोग करने और हिन्दुस्तान से समझौता करने के भी खिलाफ नहीं। हमारा विरोध तो केवल भारतीय शासन संघ योजना से ही है जिसमें हमारे साथ घोर अन्याय किया गया है।

हमारी हिन्दुस्तानी राष्ट्रीयता स्वीकार कर लेना और हिन्दुस्तान के साथ मिल जाना केवल असम्भव ही नहीं बल्कि मानव हित की दृष्टि से भी अवांछनीय होगा। इसलिये हम पाकिस्तान के सिद्धांतों और उस की पवित्रता के लिये दृढ़ हैं और और हम अपने को पाकिस्तानी कहने में ही सन्तुष्ट रहेंगे। भारतीय संघ योजना का सभी वैध उपायों के द्वारा विरोध करना हमारा नैतिक और कानूनी कर्तव्य है।

साम्प्रदायिक नहीं अन्तर्राष्ट्रीयता

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की समस्या साम्प्रदायिक समस्या नहीं है और साम्प्रदायिक आधार पर इसका हल नहीं हो सकता। यह तो एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। अस्तु, इस का हल भी उसी आधार पर होना चाहिये। शासन विधान चाहे किसी भी तरह का क्यों न हो जिसमें इस भेद की उपेक्षा की गई हो, वह पाकिस्तानियों के लिए तो विनिष्टकारी होगा ही, किंतु साथ ही अंग्रेजों और हिंदुओं के लिये भी लाभकारी नहीं हो सकता।

निश्चिन्त नहीं रह सकते

पाकिस्तान आंदोलन का प्रवर्तक होने की हैसियत से यह बताना मेरा कर्तव्य है कि हम पाकिस्तानियों के लिये संघ योजना द्वारा पैदा की हुई परिस्थिति की उपेक्षा करना स-

(शेष पृष्ठ २२ पर)

कृषक की आह !

किसे सुनायें कष्ट कहानी,
कौन हमारा है, जग में।
आहों को गाना सुनते हैं,
काँटे चुनते हैं मन में ॥१॥

दिन के साथी सूर्य हमारे,
तन-मन को झुलसा जाते।
सन्ध्या होती तारे आते,
सुधा सुधाकर बरसाते ॥२॥

आकुल प्राणों को दिन-भर की,
चिन्तायें घर रहतीं।
जिसके बच्चों को ले बैठी,
गृहणी कष्ट-कथा कहतीं ॥३॥

आया था जिमिदार तुम्हारा,
कहता मुझ को दो 'बाकी'।
कुड़क करूंगा बैल तुम्हारे,
अब के तुम न जो ना की ॥४॥

छाती टूट गई देखो तो,
पानी भीतर ही आता।
सोन को भी जगह नहीं है,
सील गई पृथ्वी माता ॥५॥

एक घड़ा बस मिट्टी का है,
और नहीं कुछ भी घर में।
सन्निपात का ज्वर शिशु को है,
वस्त्र नहीं कोई तन में ॥६॥

क्या होते हैं सुख दुनिया के,
नहिं कुछ भी हम ने जाना।
भारत के हैं कृषक तभी तो,
घेरे रहते दुःख नाना ॥७॥

भर-पेट नहीं रोटी मिलती है,
समय-समय पर कभी नहीं।
रोते शिशु हैं, कोसें हमें फिर,
पशु भी रहते मौन वहीं ॥८॥

दाने दाने को रोना है,
विधिना ने है यही लिखा।
शान्ति सदन हैं ग्राम नहीं अब,
छाया रहता कोप महा ॥९॥

अनावृष्टि अति वृष्टि सदा ही
दया हमी पर है करती।
जिमिदारों की कोप दृष्टि भी
सिर पर ही नर्तन करती ॥१०॥

—भोलादत्त ज्योतिर्विद

हिन्दी

मिश्र बन्धु, कामता, द्विवेदी द्वार रक्षक हैं,
शुक्ल, हरिऔध हैं सप्रेम चौर ढारत।
सुभद्रा, महादेवी जो राई नोन वारती हैं,
गुप्त, रत्नाकर हैं चरण पखारत।
शंख, घड़ियाल हैं अनूप जी, वियोगी हरि,
श्रद्धा से बजाते और विरद उचारते।
शंकर, निराला, पन्त हिन्दी-हिन्द-मन्दिर में,
मातृ-भाषा हिन्दी की हैं, आरती उतारते।

—हरिवल्लभ 'हरि'

हे कलाकार ?

हे हरिश्चन्द्र ! हे भारतेन्दु,
हे कलाकार ! हे कवि-उदार।
हे निर्धन के धन हे अनूप,
हिन्दी विभूति के मूर्तिकार ।१।

खण्डहर से सूने मन्दिर में,
तुम कुसमयमें आने वाले।
जननी के पावन चरणों में,
रोते रोते हंसने वाले ।२।

कुछ ऐसी मय लेकर आये,
आये ऐसी मस्ती ढाले।
दो-चार बूंद में बना दिये,
कितने ही पागल मतवाले ।३।

आँखों से ओझल हो कर भी,
घर-घर जादू करने वाले।
दुनिया अचरज से देख रही,
तुम मरकर भी जीनेवाले ।४।

बिजली बन कर चमके नभ में,
बरसे अविरल शत धारों में।
माता का हर भर-भर आया,
गूंजी वसुधा जयकारों से ।५।

वे दिवस क्षितिजके पार छिपे,
छिप गई कहीं वह छवि प्यारी।
अब याद तुम्हारी शेष रही,
ये शेष रहीं बातें सारी ।६।

नूतन विधि से गूंथी माला,
हैं फूल अनोखे रंग वाले।
लेकर आये स्वीकार करो,
ओ स्मृति में ही प्राण वाले ।७।

—श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'

ज्योत्स्ना (कविता)

देवि, कौन तुम सुरबाला सी, उतर व्योम से जगतीतल पर।
इठलातीं, बल खातीं, प्रतिपल, निज-यौवन-प्याला छलका कर ॥
मधुर हास भर जग प्रांगण में, कुसुम चमेली के बिखरातीं।
नवजीवन का सुरभि लिये सी, मन्द-मन्द मुसकाती आतीं ॥१॥

चाँदी सी सुषमा अपार ले, कूद पड़ीं तुम सरिता-जल पर।
कौन राग गातीं गरिमा सी, वन-देवी के वक्षस्थल पर ॥
मादकता उड़ल वसुधा पर, मुकुलित वेले में बरसातीं।
जग-उपवन की काली-काली में, मधु, परिमल, पराग छलकातीं ॥२॥

पिरो सूत्र में टाँके मोती, तुमने निशि के नीले पट पर।
निखर तुम्हारी दिव्य प्रभा से, प्रमुदित दुग्ध बहाता निर्झर ॥
नन्दन-वन-सा जग-उपवन यह, आज शान्त, अविकल, सुषुप्त है।
इस निशीथ में स्वर्ग-परी सी, श्वेताम्बर तू विलुप्त है ॥३॥

सजनि, हृदयं-वीणा निज ले तुम, मलराग गाती मृदुस्वर भर।
सावन झूला झूल रही हो, सरोजिनी की पखड़ियों पर ॥
देवि, आज, खिल, निज अधरों से, बरसातीं अमृत की धारा।
सदा अमरता देती हो तुम, पिला सोमरस जगको सारा ॥४॥

मलय-पवन अब तुम्हें छेड़ कर, रंगरेलि करता किरनों में।
प्रतिभा फूट निकलती है तब, एकाकी कवि के नयनों से ॥
बस, सुख-चाँद खिले भारत में, बरस पड़ें दुख-घन आँसू बन।
सुखद 'ज्योत्स्ना' से परिपूरित, होवे अब जन-जन का जीवन ॥५॥

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र 'कवि हृदय'

इटली अबीसीनिया के संघर्ष से सम्बद्ध राजनीतिज्ञ

इटली का तानाशाह



सीन्योर मुसोलिनी

लीग असेम्बली के अध्यक्ष



डा० बेनेस

अबीसीनिया का सम्राट



रासतफारी

इटालियन प्रतिनिधि



बैरन अलायसी

फ्रेंच प्रतिनिधि



मो० लेवल

ब्रिटिश प्रतिनिधि



मि० ईडन

इटली का सेनापति



जनरल ग्रेज़ियानी

ब्रिटिश पर-राष्ट्र मन्त्री



सर सेम्युअल होर

अबीसीनिया का सेनापति



जनरल एरिक विर्जिन

बेरड़ा गांव का मामला

गोरों ने स्त्रियों को नंगा किया और उनका सतीत्व नष्ट करने की कोशिश की

गोद से बच्चा छीनने की कोशिश

पत्थरों, लकड़ियों व ठोकरों से गोरे ग्रामीणों को मार रहे थे

अदालत में इकबाली गवाह, स्त्रियों तथा अन्य व्यक्तियों के बयान

किंग्सरजिमेंट के १९ गोरे सैनिकों के विरुद्ध हत्या व दंगे के अभियोग का मुकदमा जबलपुर में मि० ई० ए० स्नलसन आई० सी० एस० की अदालत में जारी है।

गांव वाले भाग रहे थे

४ सितम्बर को इस्तगासे की ओर से अमोलसिंह ठेकेदार की गवाही हुई। उसने कहा कि १॥ मास के करीब हुआ, मैं एक रोज शाम को ७॥ बजे अपने घर पहुंचा, वहां कुछेक ग्रामीणों ने मुझे बताया कि गोरे लोग ग्रामीणों पर हमला कर रहे हैं और ग्रामीण गांव से भाग रहे हैं। मैंने एक ग्रामीण को अपनी साइकिल दी और उससे कहा कि मामले की रिपोर्ट पुलिस में कर दो। अपने घर से मैंने लगभग ३०–४० सैनिकों को गांव में ऊधम मचाते हुए देखा। मैं डर के मारे उनके पास नहीं गया। गांव वालों को, जिन में स्त्रियां व बच्चे भी शामिल थे, मैंने गांव से भागते हुए देखा। केवल ५–६ आदमी मेरे घर में आश्रय लिये हुए थे। मैंने जिन घायलों को अपने घर में रक्खा था, उनमें ४–५ स्त्रियां भी थीं।

मैं प्यारी (मृत व्यक्ति की घायल लड़की) को जानता हूं।

गवाह ने अदालत में उस रुमाल को पहचाना जो, घायल लड़की के माथे पर बन्धा हुआ था।

गोपाल चमार ने कहा कि मुझे इस मामले के बारे में कुछ नहीं मालूम, क्योंकि मैं गोरों को देख कर अपनी झोंपड़ी में घुस गया और जब तक गोरे चले न गये, झोंपड़ी से बाहर न निकला।

कामता चमार ने बतलाया कि मैंने लगभग ५०–६० गोरों को दंगा करते हुए देखा। वे ग्रामीणों को ठोकरों, लकड़ियों व पत्थरों से मार रहे थे। मेरे पीछे भी १५–२० गोरे दौड़े। उन्होंने मुझे पकड़ कर खूब पीटा और मेरे बर्तन भांडे तोड़ दिये।

दुलार नामक एक अन्य ग्रामीण ने अपनी गवाही में कहा कि मुझे भी गोरों ने मारा पीटा।

इस के बाद एक १२ वर्षीय लड़के व एक चमार की गवाही हुई।

आग लगाने व गोद से बच्चे छीनने की कोशिश

५ सितम्बर को वाल्टर एण्ड्रूज पारसी नाम के दूसरे इकबाली गवाह की गवाही हुई। उसने कहा कि प्राइवेट केनडी पर ग्रामीणों द्वारा किये हमले का बदला लेने के लिये गत १८ जुलाई की शाम को लगभग ४० ५० गोरे बेरड़ा गांव पर चढ़ गये। हम ५ ५ व ६-६ आदमियों की टोलियों में गांव में दाखिल हुए। गांव के बच्चे हमें देख कर भागने लगे। हमने एक छप्पर में आग लगाने की कोशिश की मगर हम अपने प्रयत्न में असफल न हो सके। बाद को हमने ग्रामीणों पर आक्रमण किये। जब हम गांव से बाहर निकले तो हमने ग्रामीणों की उस पार्टी को जिसमें ३ मर्द व ३ औरतें एवं कई बच्चे शामिल थे, अपनी ओर आते हुए देखा। हमने उन पर भी हमला किया। हमारे एक साथी ने एक ग्रामीण को गिरा दिया और उसे खूब पीटा। एक मर्द की गोद से एक बच्चे को छीनने की भी कोशिश की गई। पश्चात् मैं कुछेक अन्य साथियों के साथ बैरकों में वापस चला गया।

६ सितम्बर को लान्स कारपोरल पैट्रिक गेम्बलिन ने कहा कि गत २८ जुलाई को मैंने ४ अभियुक्तों को गिरफ्तार किया था।

कपड़ों पर धब्बे थे

दूसरे गवाह मारकेट थामस विलियम्स (कपड़े धोने की 'बी' कम्पनी के इन्चार्ज) ने अपने बयान में कहा कि १९ जुलाई को सुबह कुछेक अभियुक्त मेरे पास आये और उन्होंने कुछ कपड़े जिन पर तरह तरह धब्बे लगे हुए थे, उन्हें धोने के लिये दिये। इस पर मुझे कुछ सन्देह हो गया। मैंने इस बात की सूचना सारजण्ट बिरकिट को दे दी। वह मुझ से उक्त कपड़े ले गया।

१४ वर्षीय लड़की की गवाही

मुसम्मात प्यारी (१४ वर्ष) ने अदालत में गवाही देते हुए कहा कि १८ जुलाई की शाम को जब मैं अपने पिता बिधाता व कुछेक अन्य स्त्रियों के साथ घर वापिस आ रही थी, तो मैंने दूर से कुछेक सैनिकों को गांव पर आक्रमण करते हुए देखा। इतने में सैनिकों की एक पार्टी ने हम को घेर लिया और बिना किसी भेदभाव के सब को पीटना शुरू कर दिया। मेरे सिर पर चोट लगी। मैं गिर पड़ी। सैनिकों ने मेरी 'साड़ी' खोलने की कोशिश की, मगर वे अपने प्रयत्न में सफल न हो सके। मेरे पिता ने मुझे बचाने की कोशिश की, मगर सैनिकों ने उन्हें इतना घायल किया कि वह मर गये। एक सैनिक ने मेरे सिर पर एक रूमाल बांधा था, जो कि बाद को मैंने पुलिस को दे दिया था।

प्यारी की गवाही की पुष्टि

इसके बाद बुधा नामक एक १३ वर्षीय चमार लड़के ने मुसम्मात प्यारी के बयान की पुष्टि करते हुए कहा कि बिधाता ने जब अपनी लड़की प्यारी को सैनिकों के आक्रमणों से बचाने की कोशिश की तो सैनिकों ने लकड़ियों से उस पर हमला कर दिया। वह सख्त घायल हुआ और मर गया। सैनिकों की संख्या १०० के करीब थी, वे सब लकड़ियां लिये हुए थे। कुछेक सैनिकों ने हमारी पार्टी की ३ स्त्रियों को भी नंगा किया था।

जलपान के बाद गरीबा गड़िया चमार की गवाही हुई। उसने बुधा के बयान की पुष्टि की। गरीबा गड़िया की स्त्री तेरासिया ने अपनी गवाही में कहा कि मैंने पचासों सैनिकों को बिधाता पर हमला करते हुए देखा था। सैनिकों ने हमारी पार्टी को घेर लिया और मेरे कपड़े फाड़ डाले। मेरे छाती, कमर व चूतड़ों पर चोट आयी। मुझे यह नहीं मालूम कि प्यारी के साथ क्या गुजरी। हमारी पार्टी की अन्य स्त्रियों की भी इसी प्रकार बेइज्जती की गयी। मैं उस अभियुक्त को नहीं पहचान सकती, जिसने मुझ पर आक्रमण किया था, क्यों कि सभी अभियुक्तों की शक्ल एकसी है।

सतीत्व नष्ट करने की कोशिश

मुसम्मात शुगरी ने तेरासिया की गवाही का समर्थन करते हुए कहा कि मेरी गोद में एक बच्चा था, मगर फिर भी सैनिकों ने मेरे कपड़े फाड़ डाले और मुझे नंगा करके मेरे सतीत्व को नष्ट करने की कोशिश की।

नंगा गोरा

मुसम्मात शुगरी ने जिरह में बतलाया कि मेरी गोद में बच्चा होते हुए भी गोरों ने मुझे मारा व तंग किया था।

मुसम्मात दुखिया ने अन्य गवाहों के बयानों की पुष्टि करते हुए कहा कि मैंने एक गोरे सैनिक को मुसम्मात प्यारी की ओर नंगा जाते हुए देखा था।

डा० की गवाही

डा० मेहता ने, जिसने बिधाता के शव की परीक्षा की थी, अपने बयान में कहा कि मृत व्यक्ति को बुरी तरह घायल किया गया था और जख्मों की वजह से ही उस की मृत्यु हुई थी। मैंने कई अन्य ग्रामीणों के जख्मों का भी निरीक्षण किया था।

खुदाबख्श धोबी (किंग्ज रेजिमेंट का एक धोबी) ने अदालत में उस रुमाल की पहचान किया जो प्यारी के सिर पर बन्धा हुआ मिला था।

मुकदमा अभी चल रहा है।

महिला-जगत

सास और बहू

(ले०—श्रीयुत वैजनाथ महोदय)

संसार में सास बहू का रिश्ता सनातन है। संसारके प्रारम्भ से वह चला आया है। और अनंत काल तक वह जारी रहेगा। परन्तु अभी तक भी यह संस्कृत की "अहि नकुलम्" वाली कहावत के अनुसार ही प्राय बना हुआ है। सास बहू को कैसा रक्खे तथा बहू सास के साथ कैसी रहे इस पर शायद वेदों के विशेष ज्ञान की जरूरत है। संसार में आज नि शस्त्रीकरण की समस्या पर जितना ध्यान दिया जा रहा है असंख्य भारतीय कुटुम्बों के लिए शायद यह समस्या नि शस्त्रीकरण की अपेक्षा भी अधिक महत्वपूर्ण है। बालविवाह की प्रथा के कारण हमारी लड़की तो बचपन से ही बूढ़ी बन जाती है और परदे ने उसे पूरा पशु तथा कैदी बना दिया। लड़कियों की सारी प्रसन्नता खेलन कूदन तथा आनन्द मनाने की उमंगें जहां की तहां रह जाती हैं और पशु की तरह उन की रस्सी एक दूसरे शख्स के हाथ में दे दी जाती है। कौन कह सकता है कि उस कोमल हृदय पर बिलकुल अपरिचित जगह पर क्या क्या बीतती है। उस पर जो शब्द प्रहार होते हैं उन्हें सुन कर वेद नेति नेति कह कर भागने लगते हैं। उस पर दिन में और रात में जो मार पड़ती है शायद वही जानती है। ननद और देवर उन के दिल में जो कुछ आवे कहते और उस से मन माना काम कराने को मानों नहीं सचमुच अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानते हैं। सदा सवार रहते हैं। मुझे अब भी याद है कि मैं अपनी नई नई भौजाइयों को बचपन में कितना तंग किया करता था। परन्तु मानव हृदय सब जगह अपनी छाप डालता ही है। और वह हर विकट परिस्थिति में से अपना रास्ता निकाल लेता है। उस कठिन परिस्थिति में पले और बढ़े हुए लड़के लड़कियों में भी प्रेम का लहलहाता अपूर्व पौधा तैयार हो जाता है। सासें भी सब एसी कठोर नहीं होतीं। उन्हें धुन होती है बहू को सुधारने की और इस जल्दबाजी में वे बहू के हृदय का ख्याल न कर जैसे मुंह में आता है अक्सर बोल जाती हैं। इस सनातन संघर्ष से सास बहू वेद तैयार होता है। लड़की की मां अपनी लड़कीको ससुराल भजते समय इसका पाठ पढ़ाती हैं। बेटी! सास, ननद देवर जेठानी इन की आज्ञा मानना इन का आदर करना। इन को अपने भाई बहिन समझ कर प्यार करना। अब तेरे भाई बहन मां बाप सब कुछ यही हैं। हम तो दो दिन के साथी हैं। कभी कभी तू यहां आयगी। बाकी सारी जिन्दगी तेरी वहीं कटेगी। इसलिये अपनी नम्रता प्रेम आज्ञा पालकता काम की चतुराई उद्यम शीलता पाक निपुणता गृह प्रबन्धता कठोर वचन सहलेन की वृत्ति किफायतसारी स्वच्छता सुघड़ता मर्यादा आदि दैवी —संपति से सब को वश मे कर देना। कभी किसी का मुंह न पकड़ना। एक स्त्री के लिये इस से खराब दुर्गुण दुनिया में नहीं है। इस का ध्यान तो सब लोगों के लिए जरूरी है। मुंह पकड़ने से फौरन लड़ाई होती है। मनुष्य अन्तर्मुख बनने के बजाय बहिर्मुख अर्थात दूसरे के दोष देखन वाला बन जाता है। और बड़ा मनुष्य कभी यह बरदाश्त नहीं कर सकते दुखी हो जाता है। इसलिये बेटी जब भी कोई तेरा दोष बतावे फौरन उस सुधार ले और प्रसन्न चित्त से उनकी सूचना का स्वागत करे। तब तू सब की प्यारी हो जायगी और घर की सच्ची मालकिन हो जायगी।

इत्यादि! पर यह ख्याल नितान्त भ्रमपूर्ण है कि सभी सासें कठोर ही होती हैं। आखिर वे भी तो जानती हैं कि घर की असली मालकिन तो एक दिन यही होगी वे उसे अपनी बेटी की तरह प्यार करती हैं वह परिवार में इस बात का खास तौर से ध्यान रखती हैं कि काम का बोझ उस पर अधिक न पड़ने पावे। वे उस का पक्ष लेकर उस का जवाब भी करती हैं और इस तरह की चीज बना कर उसे खिलाती भी हैं।

कि उस के दोष तू बतावे। तेरा भी इस में हानि ही है। जब तू दूसरो के दोष देखने लगेगी तब तेरी नजर अपने दोषों पर न जावेगी। हमेशा तेरे दिल में यही ईर्षा और मत्सरकी आग जलती रहेगी कि मुझे ही यह लोग ऐसा क्यों कहते हैं। मेरी ननद में भी तो यही औगुन हैं। देवर ने भी यही गलती कल की थी। सास जी भी तो कई मर्तबा इसी तरह काम बिगाड़ देती हैं। इस तरह की दलीलें उस के दिल में उठने लगती हैं और वह अच्छी बातें ग्रहण करने के बजाय तुलना के फेर में पड़ जाती है। नित्य नये कलह होते हैं तथा घर नरक सा बन जाता है। ऐसे घर में सास बहू पति पत्नी सब का जीवन मैला सास बहू में आगे चल कर मां बेटी सा सच्चा प्यार हो जाता है। सास बहू की मां बन जाती है। और बहू बेटी बन कर सास की अनन्य भाव से सेवा करती है।

पर जैसे जैसे बालविवाह की प्रथा टूटती जा रही है सास बहू की समस्या नये रूप में सामने आने लगी है। पलड़ा उलट गया नये पुराने और पुरानों में वैसे भी एक पुश्त का फर्क तो होता है। फिर अगर बहू बेटे थोड़ी बहुत हिंदी अंग्रेजी पढ़े हों तब तो कहना ही क्या! भर्तृहरि ने ठीक ही कहा है।

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः। ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति ॥

कि कम पढ़ लिखे आदमी से भगवान बचावे। अपढ़ मनुष्य अच्छी जल्दी समझाया जा सकता है। उसमें बड़ों के प्रति श्रद्धा होती है। अपनी अज्ञता का भान होता है। उस से अच्छा विशेषज्ञ। क्योंकि उसे अपनी अल्पज्ञता का भान हो जाता है। उस से बातचीत करने में आनन्द आता है। परन्तु कम पढ़ लिखे श्रद्धा रहित मनुष्य को ब्रह्मा स्वयं भी सन्तोष नहीं दे सकते। थोड़ा सा पढ़ लेने से उसे यह अहंकार हो जाता है कि मैं पढ़ गया हूं। परन्तु उनको अच्छी शिक्षाओं को उस के अन्दर अपनी जड़ जमाने का अवसर नहीं मिल पाया।

यह तो श्रद्धापूर्वक दृढ अभ्यास करने से होता है। इधर पुराने कुसंस्कार तो मन में जड़ जमाये बैठे रहते हैं थोड़ा पढ़ लिख ज्ञान के कारण न्याय अन्याय समाधिकार सत्य और असत्य की चर्चा करना सीख लेते हैं। अगर ऐसी बहू को पुराने ढंग की सीधी सादी और मामूली देहात की रहने वाली सास मिल जाय तब तो उस की बेचारी की वही जान। तात्पर्य में पति तो स्वभावतः स्त्री के वश में रहता है और लड़का बहू खाने कमाने लायक होकर अलग रहने लग गये तब तो उन माता पिता की पूरी कमबख्ती ही समझिए। अगर साथ रहे तो आज पुराने जमाने की सास का स्थान बहू ले लेती है और वह सास को डिक्टेट करती है। सास कहती है— ऐसा होना चाहिये बहू कहती है— नहीं यह होगा मान मर्यादा उस का ख्याल सब ताक में रख दिये जाते हैं। अब तो समानाधिकार का जमाना जो है जिस के दिल में जो पैदा हुआ वह सब तड़ाक से कह दिया और जो कह दिया वह सब सत्य ही होते हैं।

परदा टूट गया। पति पत्नी अब तो दो मित्र हैं। सुधार के नाम पर आचार विचार कुल धर्म सब का स्वच्छन्दतापूर्वक त्याग होने लगता है। बाहरी बन्धनों की दीवार हटते ही मनुष्य एक खुले हुए बछड़े की तरह प्रोटेस्ट में उछलता है कूदता है और नाचता है।

यद्यपि यह स्वाभाविक है परन्तु इस तरह काम नहीं चल सकता। जिस परिवार में ऐसा दाम्पत्य है वहां सुख और शांति अधिक समय तक कैसे रहेंगी। इसलिये नवविवाहित युवकों तथा युवतियों को बहुत सावधानी से आगे बढ़ना चाहिये। युवक यह खूब समझ रक्खे कि

पतिदेव

(१)

विश्व विपन में खिला करेंगी कलियां यों ही नई नई।
मधुकर! तुम को मिला करेंगी अलियां यों ही कई कई॥

(२)

किन्तु प्राणधन भूल न जाना मुझ अबला की दीन पुकार।
निज चरणों से विलग न करना विनती यही है बारम्बार॥

रतनमाला जैन मेरठ शहर।

उक्त कविता रचयित्री ने अपने विवाह के अवसर पर लिखी थी।

अगर वे अपने जन्मदाता माता-पिता अथवा इन्हीं के समान पूजनीय सास ससुर को संतोष नहीं दे सकते उनको आराम नहीं पहुंचा सकते, उनके साथ शांतिपूर्वक नहीं रह सकते तो और दूसरों के साथ कैसे रह सकेंगे? कुल धर्म को सब से पहली शिक्षा है अपने को भूल जाओ जहां सच्चा प्रेम है, वहां सहनशीलता, नम्रता जरूरी हो होती है। जहां प्रेम है वहां कष्ट सहन का पार हो नहीं। पर यह कष्ट सहन तो मनुष्य के लिये आनन्द की वस्तु होता है। वहां मनुष्य बनिये की तरह यह गिन कर नहीं बता सकता कि लो, मैंने तुम्हारे लिए यह किया, यह दिया वह सहा। जिस मनुष्य की जबान पर यह आ गया तो समझना चाहिये कि उसने कुलधर्म का रहस्य नहीं समझा।

प्रत्येक घर में विचार स्वातन्त्र्य, तो होना ही चाहिए। सिद्धांतनिष्ठा के लिए भी कभी कभी घर में मतभेद होता रहता है। और वह अच्छी चीज है। पर इसके कारण परिवार में कटुता आने का कोई कारण नहीं है। मैंने अभी तक ऐसा परिवार नहीं देखा जिसमें सास बहू के बीच सिद्धान्त की लड़ाई हुई हो। जिसमें सिद्धांत समझने की उसको मजबूती के साथ पालन करने की बुद्धि होती है, उसमें यह भी विवेक पैदा हो ही जाता है कि दूसरे के साथ खास कर अपने बड़े बूढ़ों के साथ जहां इन बातों का सम्बन्ध आता है वहां पर अपने आचार में कितना और कहां तक समझौता किया जा सकता है।

युवतियां स्मरण रक्खें कि लड़ाइयां, कटुतायें सिद्धांतों के कारण नहीं, छोटी-मोटी, खान-पान की, पहनने, ओढ़ने की, बिलकुल तुच्छ बातों पर और खासकर वाणी के असंयम से पैदा होता है। उनमें अगर वे चतुरता से, नम्रता से, सरलता से काम लेंगी तो सद्धांतिक मतभेद, नयेपन और पुरानेपन की खाई होने पर भी सास बहू के बीच आदर्श प्रेम पैदा हो सकता है। बहुयें याद रक्खें कि अगर ५-७ साल के अभ्यास के कारण उनकी रुचियां, आचार-विचार मजबूत हो गये हैं तो अपने गुरुजनों के संस्कार कई गुने अधिक मजबूत होते हैं। उनके लिए तो अपने आचार-विचार में परिवर्तन करना, सहिष्णुता दिखाना और भी कठिन है। इसी लिए अहिंसा को राजमार्ग बताया है। इस रास्ते पर चलने से सारी कठिनाइयां हल होजाती हैं। नम्रता, विवेक, मर्यादा प्रेम, सहिष्णुता मधुरता आदि इसी महान गुण के अनेक पहलू हैं। जिसने इस महायोग को साध लिया वह सबको अपने वश में कर लेता है।

लड़कियों की दो समस्यायें

(ले०—श्रीयुत कल्याणसिंह वैद्य, इन्दौर)

(१)

क्या शिक्षा दी जाय?

इस प्रश्न ने अच्छे से अच्छे दिमागों को परेशानी में डाल रक्खा है। लड़कों को शिक्षा का ही तजर्बा रद्दी साबित हुआ। ग्रेजुएट बन कर भी कुछ न बन, किसी काम के साबित न हुए और उलटे गलग्रह सिद्ध हुए। तब इसी शिक्षा 'वे कमाकास्त' लड़कियों पर लादना कहां की बुद्धिमानी है?

जीवन का मूल तत्व कार्य परिश्रम है। परन्तु वर्तमान काल का शिक्षित युवक शारीरिक परिश्रम व घर के काम-काज से जी चुराता है, उसे फैशन के खिलाफ समझता है। यही हाल वर्तमान काल की पढ़ी-लिखी लड़कियों का है, वे सिवाय उपन्यास पढ़ने के और कोई काम करना नहीं चाहती। हर वक्त बनाव सिंगार, उपन्यास पढ़ना और आराम बस यही काम है। मगर, इस काम से गृह-स्थाश्रम या मनुष्य समाज नहीं चल सकता। लड़कियों का क्षेत्र घर है, घर को अधिक-से-अधिक आराम देह, बल्कि स्वर्ग तुल्य सुखद बनाना यह उनका उद्देश होना चाहिये। उन्हें बच्चे पैदा करने हैं, उनका परवरिश करनी है, उन्हें योग्य बनाना है, यह काम कम जिम्मेदारी का नहीं है। अगर वे बच्चों को योग्य बना सकीं, तभी देश, जाति और समाज का उद्धार होगा। एक भी योग्य बच्चा देश के उत्थान के लिये काफी होता है, पुनः यदि सब बच्चे योग्य निकलें तो देश और जाति के उत्थान में सन्देह ही नहीं हो सकता। ऐसे आवश्यक विषयों की उचित शिक्षा न पाना और अनावश्यक ऊल जलूल बातें पढ़ते रहना कहां की बुद्धिमानी है? जो लोग लड़कियों को उनके उचित क्षेत्र से हटा कर, इधर-उधर भटका रहे हैं, हमारी समझ में वे समाज की भारी हानिकर रहे हैं। घर कम दिलचस्पीक चीज हर्गिज नहीं है, जो लोग इस के लिए कुछ नहीं करना चाहते और इधर-उधर उड़ना चाहते हैं—कमाल करते हैं।

"हजारों काम मजे के हैं,
दाग! 'घर के लिये'।
जो लोग कुछ नहीं करते,
कमाल करते हैं।"

अगर कुछ खुले दिमाग की लड़कियां गृहस्थाश्रम में न आवें और ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी या स्त्रियों की उन्नति या समाज की उन्नति संबन्धी दूसरे उन्नत कार्यों में लगें तो कुछ हर्ज नहीं उनके लिये क्षेत्र खुला रहे वे उधर काम करें यद्यपि मनुमहाराज तो बहुत उच्च कोटि की शारीरिक और दिमागी शक्ति रखने वाले स्त्री-पुरुषों को ही गृहस्थाश्रम में आने की सलाह देते हैं:—

"स सन्धार्यः प्रयत्नेन,
स्वर्गमक्षय मिच्छता।
सुखं च हेच्छता नित्यं,
योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः।"

(२)

विवाह

लिखी पढ़ी लड़कियों के विवाह की समस्या विकट हो उठी है, ऐसी लड़कियों के अभिभावकों को बड़ा परेशान देखता हूं। लिखे-पढ़े लड़कों का रेट चढ़ गया है, उनके मां-बाप बहुत ज्यादा दाम मांगने लगे हैं, जिन घरानों और बिरादरियों में पहले दहेज पर बातचीत करने का कोई प्रश्न ही न था, उनमें भी ठहरौनी होने लगी है। बीमारी नष्ट होने की बजाय नये-नये क्षेत्रों में घुस रही है। पहले कायस्थ, कनौजिया ब्राह्मण, राजपूत, बंगाली और बिहारी ये ही लोग बदनाम थे। अब देखते हैं कुल शिक्षित समाज विवाह में लेन-देन ठहराने लगा है। अर्थ पिशाच ने लोगों को पतित कर दिया है, इस वक्त कमाने पैसे की अमलदारी है, इसने और सब को पीछे छोड़ दिया है। हर एक भले बुरे काम में सब से आगे यही खड़ा दिखाई देता है। यद्यपि पढ़े लिखे लड़कों की वर्तमान काल की दशा अच्छी नहीं है। कोई नौकरी और रोजगार उनको नहीं मिल रहा, बकौल अकबरः—

"कालिज से मदा आ रही,
है पास पास की।
और नौकरियां से आ रही,
है। दूर दूर की।"

परन्तु विवाह के बाजार में उन के करारे दाम उठ रहे हैं। इसलिए क्यों न फायदा उठाएं। परन्तु!

ऐसे निमेगी कबतक?

'घर के लिये' की जगह असली पाठ (उल्फत में) ऐसा है।

विधवाओं की चिन्ता

(ले०—बलीराम घनश्याम कमल)

बिहार के बाद-कोइटा भूचाल प्रलय और पेशावर अग्निकाण्ड के संसार व्याप्त दुःख ने समस्त देश को अनेक चिन्ताओं से आक्रान्त कर दिया है, जहां पर असंख्य दुःखियों के दुःख दूरीकरण, घायलों की चिकित्सा अंगविहीनों और बूढ़ों की सुश्रूषा और विपत्ति जन्य अनाथ बच्चों के भरण, पोषण और शिक्षा आदि मानवोचित अनेक विचारणीय प्रश्न जाति को चिन्ता सागर में डुबा रहे हैं वहां पर विधवाओं का भी एक बड़ा भारी विचारणीय प्रश्न है। जो विचारकों के रक्त को खौल खौल कर पी रहा है। शरणहीन वृद्ध अंगहीन युवक अनाथ बच्चे निसन्देह सदा से अन्न वस्त्र पाते आ रहे हैं। पाते जायगे। हिन्दू जाति में इनके लिये औदार्यता है। मानो मर्यादा सम्पन्नता है। इस में पूर्ण विश्वास है। अनेक स्थानों में सहायक मंडल रक्षा केन्द्र नियत हैं। यह हर्ष और गौरव का विषय है। परन्तु अब तक कहीं से यह आवाज नहीं उठी कि इन असहाय निरपराधिनी दुःखी विधवाओं के जीवन को किस तरह सुखमय बनाया जाय। उनके भविष्य निर्माणक साधन कैसे विचारे जायं। जहां पर हिन्दू जाति अपनी दानशीलता के कारण अनाथों की रक्षार्थ सर्वदा हाथ बढ़ाती रही है। वहां पर उसे अपनी निधि की रक्षा का ख्याल भी अवश्य होना चाहिये। इस नारी धन को जिसके अन्दर अनेक निधियां निहित हैं यदि समय पर न सम्हाला गया तो लुटेरे उसे लूट ले जायंगे और हिन्दू माता विधवा हो जायगी। जहां पर उनके धर्म की रक्षा जातीय गौरव का सुन्दर कामना होनी चाहिये वहां इस हिन्दू जाति की लाडली विधवाओं के प्रति कई पापी गृध्रों की पापमयी-वासनामयी दृष्टि आठो याम लगी रहती है। उन्हें बलात भ्रष्ट और अपमान करने की अनेक चेष्टायें की जाती हैं। हिन्दू जाति ने विचारों की संकीर्णता में पड़ कर विधवाओं को त्याज्य और निस्साहस जान कर अनेक हानियां उठाई हैं। कई एक रत्नगर्भा सुन्दरियां वोजातिच्युत कर के विधर्मियों की कुल वधूमा बनाने में सहायता दी है। हिन्दु जाति की ठुकराई हुई अन्य-शरणीयाभिना विधवाओं ने अपने धर्म देश और समाज को अभिवृद्धि को सचेष्ट राखा है। पापपंक और

(शेष पृष्ठ २७ पर)

आधुनिक हिन्दी के तीन युग

हरिश्चन्द्र युग, द्विवेदी युग और दुलारे युग

वर्तमान हिन्दी के जन्म और उन्नति की कथा बताते हुए श्री चतुरसेन शास्त्री ने एक विस्तृत लेख सुधा में लिखा है। हम उसके कुछ अंश यहां देते हैं। लल्लूजीलाल और ऋषि दयानन्द आदि की सेवाओं का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं—

इस समय भारतेंदु हरिश्चन्द्र का जन्म हुआ। बाल्यकाल ही में उनके माता पिता का स्वर्गवास होजाने से १५ वर्ष की अवस्था ही में उनकी शिक्षा समाप्त होगई। इसके बाद उन्होंने सकुटुम्ब जगदीश की यात्रा की। इस यात्रा में इनका परिचय बंगला साहित्य से हुआ। उस समय प्लासी हो चुका था, और अंगरेजी राज्य जम कर बैठ गया था। अंगरेजी शिक्षा का प्रभाव तेजी से बंगाल पर पड़ रहा था। इस सबसे यह बड़े प्रभावित हुए। इन्होंने बंगला नाटकों को चाव से पढ़ा, और एक नाटक, 'विद्यासुन्दर' का अनुवाद भी किया। यही इनकी प्रथम रचना थी। इसके बाद इन्होंने चौखम्भा स्कूल स्थापित किया, और और भी साहित्य संस्थायें स्थापित कीं। यह महाराणा सज्जनसिंह के निमंत्रण पर मेवाड़ भी गये। इन्होंने कुल ३४ वर्ष की आयु पाई सिर्फ १८ वर्ष समाज की सेवा कर सके। इसी बीच में इन्होंने हिंदी-भाषा को अपना रूप दिया और उसमें एक नवीन युग का प्रारम्भ कर दिया। हिंदी-भाषा में देश-काल के उपयुक्त भाव और विचार उत्पन्न किये। उन्होंने शुद्ध हिन्दी का पक्ष लिया और उसे नए सांचे में ढाला। वह एक उत्कट देश-प्रेमी थे और उनकी रचनायें देश भक्ति से ओत प्रोत हैं। उन्हें पढ़ कर देश के लाखों युवकों ने देश प्रेम की भावना को अपनाया। देश-भक्ति के उनके उद्‌गार नीलदेवी, भारत दुर्दशा और अन्धेर नगरी में कूट-कूट कर भरे हैं।

भाव, भाषा और शैली की दृष्टि से हरिश्चन्द्र की कविता आदर्श कही जा सकती है। शृंगार, देश-भक्ति और प्रेम, इनका वर्णन ऐसा नैसर्गिक, सच्चा और मर्मस्पर्शी हुआ है कि देखते ही बनता है। हास्य-रस का भी जहां प्रसंग आया है, कमाल कर दिया है।

हरिश्चन्द्र से प्रथम हिन्दी गद्य की शैली में बहुत कृत्रिमता थी। कविता कवित्त, घनाक्षरी और सवैयों में कैद थी। कभी कभी दोहे कुंडलियां भी कही जाती थीं। पर आप ने उन्हें विविध राग-रागिनियों में विभाजित कर दिया। कई पद उर्दू की बहरों में भी लिखे। उन्होंने अलंकारों के प्रदर्शन की कविता नहीं लिखी। व्यापक विषयों का उसमें प्रकटीकरण किया। फिर भी इनकी कविता अलंकारों से परिपूर्ण ही रही।

यद्यपि इनकी कविता की भाषा ब्रजभाषा थी परन्तु इन्होंने भारत की अन्य प्रांतीय भाषाओं का भी काफी उपयोग किया। इनकी रचनायें बड़ी तेजी से पसन्द की जाने लगीं और इनका प्रचार बढ़ गया। इन्होंने अप्रचलित शब्दों को कविता से निकाल दिया, और शब्दों को तोड़ना भी बंद कर दिया जैसा तत्कालीन कवि किया करते थे। इससे इनकी भाषा में नवीन ज्योति उत्पन्न हो गई।

हरिश्चन्द्र ने कविता को पुराने सभी बंधनों से मुक्त किया और नैसर्गिक प्रवाह में बहा दिया। नाटकों की तो उन्होंने हिन्दी में प्रथम बार ही रचना की। इस प्रकार यह महासंस्कृत आत्मा अल्प काल में ही हिन्दी का नवीन युग प्रवर्तन करके परलोकगत हुई।

भारतेंदु हरिश्चन्द्र की हिन्दी को आगे बढ़ानेवालों में प० बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, प० केशवराम भट्ट प० राधाचरण गोस्वामी प० अम्बिकादत्त व्यास और प० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या मुख्य थे। प० केशवरामजी ने बिहार में हिन्दी को खूब प्रचलित किया। प० राधाचरणजी ने समाज सुधार की भी चेष्टायें कीं। प० अम्बिकादत्त व्यास संस्कृत के भारी पंडित थे। यह बड़े अच्छे वक्ता भी थे। इन्होंने बिहारी पर एक विस्तृत व्याख्या लिखी। कई नाटक भी लिखे। मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या इतिहास के अच्छे जानकार थे। उन्होंने हिन्दी को खूब बढ़ाया।

प० भीमसेन शर्मा स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिष्य थे। इन्होंने प्रांजल भाषा में अनेक पुस्तकें लिखीं इनकी हिन्दी साहित्य में अपना एक स्थान रखती थी। संस्कृत के आप असाधारण पंडित थे।

इस प्रकार हरिश्चन्द्र के युग में इस मंडली ने हिन्दी को सब भांति प्रौढ़ता देनी प्रारम्भ कर दी।

धीरे-धीरे अनेक लेखक उत्पन्न हुये, और पत्रों का जन्म हुआ। बाबू कार्तिकप्रसाद खत्री ने कलकत्ते से 'हिन्दी-दीप्ति प्रकाश' नामक एक पत्र निकाला। इसके बाद प० दुर्गाप्रसाद मिश्र, प० छोटूलाल मिश्र, प० सदानन्द मिश्र, बाबू जगन्नाथ खत्री ने 'भारतमित्र कमेटी' बनाई और भारतमित्र-पत्र प्रकाशित करना शुरू कर दिया। उसकी शीघ्र ही धूम मच गई। उन्हीं दिनों लाहौर में मित्रविलास पत्र निकला। कुछ और भी पत्र पत्रिकाएं निकलीं। अन्त में कालाकांकर नरेश राजा रामपालसिंह जी के उद्योग से हिन्दुस्तान नामक पत्र अंग्रेजी हिंदी में प्रकाशित हुआ जिस का सम्पादन प० मदनमोहन मालवीय प० प्रतापनारायण मिश्र बाबू बालमुकुन्द गुप्त आदि से जन्मा किया। इसी समय बाबू रामकृष्ण वर्मा ने काशी से भारत जीवन पत्र निकाला।

अब जो नवीन लेखक समुदाय उत्पन्न हो गया था उसने बंग भाषा से उपन्यासों की भरमार करनी शुरू कर दी। बाबू गदाधरसिंह प० राधाचरण बाबू राधाकृष्णदास आदि ने अनेक उपन्यासों का अनुवाद किया। इन उपन्यासों में कुछ बंग-परिभाषाएं ज्यों की त्यों हिन्दी में आ गईं। प० बालकृष्ण भट्ट ने दो मौलिक उपन्यास भी लिखे।

द्विवेदी युग

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के साथ जिस लेखक मण्डल का उदय हुआ उसने ग्रन्थों के अलावा भिन्न भिन्न विषयों पर निबन्ध भी लिखे जिनमें प० गोविन्दनारायण मिश्र तथा प० माधवप्रसाद मिश्र प्रमुख रहे। इस प्रकार भारतेन्दु के बाद हिन्दी साहित्य का निर्माण-कार्य तो चल निकला, पर उस की प्रगति अभी धीमी थी। अदालतों की भाषा उर्दू थी। अंग्रेजी स्कूलों में अंग्रेजी व उर्दू की तालीम भी दी जाती थी। यद्यपि प्रतापनारायण मिश्र हिन्दी हिंदू हिन्दुस्तान की तान छेड़ते ही रहते थे। फिर भी हिन्दी पुस्तक प्रकाशन बढ़ता ही न था, पाठक थे ही नहीं। सरकारी दफ्तरों में नागरी का प्रवेश नहीं था।

अन्त में बाबू श्यामसुन्दरदास प० रामनारायण मिश्र और ठाकुर शिवकुमारसिंह ने नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। इनके सहायक हुए, रायबहादुर प० लक्ष्मीशंकर मिश्र एम० ए०, बा० रामदीनसिंह 'खड्गविलास प्रेस' के स्वामी बा० रामकृष्ण वर्मा बा० गदाधरसिंह और बा० कार्तिकप्रसाद खत्री आदि। इस सभा के दो उद्देश्य हुए—नागरी अक्षरों का प्रचार और हिन्दी साहित्य की समृद्धि। इस सभा ने नागरी के लिये बहुत उद्योग किया। कई बार डेपूटेशन वायसराय से मिला। अन्त में कचहरियों में हिन्दी जारी हो गई। इस से इस सभा की बड़ी प्रतिष्ठा हुई। पीछे सभा ने अपनी पत्रिका भी निकाली और फिर बहुत से ग्रन्थ भी। यह सभा हिंदी को दूसरे युग में ले आई।

इस युग के अधिष्ठाता आचार्य महावीरप्रसाद जी द्विवेदी हैं। इन्होंने दो महत्कार्य किये एक यह कि प्रतिष्ठित विद्वानों को हिन्दी सेवा में लगाया दूसरे हिन्दी की भाषा व्याकरण शब्द योजना को सुसंगठित किया। हिन्दी भाषा को यह महान सम्पादक हिन्दी को संसार की जीवित भाषाओं की टक्कर के योग्य बना सका।

यह वह समय था जब बंगला-उपन्यासों में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों के प्रयोगों को जानकर लोग खिचड़ी कच्ची हिन्दी लिखने लगे थे। परन्तु केवल शब्दों ही से कोई भाषा नहीं बनती भाव से वाक्य-विन्यास की सफाई मुहाविरे व्याकरण के नियमों की पाबन्दियां आदि सभी बातों की आवश्यकता है। प० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी व्याकरण को बहुत शुद्ध रूप दिया। उन्होंने पचासों लेखकों को उनकी भाषा तथा व्याकरण-सम्बन्धी गलतियों को सुधार सुधार कर सावधान किया। कई लेखक द्विवेदी जी से चिढ़ गये पर द्विवेदी जी हार मानने वाले जीव न थे। देखते ही देखते सब लेखकों की भाषा मानो स्नान करके निकलने लगी और उस की शुद्धता पर सब कोई मोहित हो गये।

ज्यों ही व्याकरण की ओर द्विवेदी जी ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया त्यों ही सामयिक पत्रों में व्याकरण की चर्चा चल निकली। खूब खंडन मंडन का शोर मचा प० गोविन्दनारायणजी ने विभक्ति विचार लिखा जिसमें उन्होंने हिन्दी विभक्तियों को शुद्ध विभक्तियाँ बता कर लोगों को उन्हें मिला कर लिखने की सलाह दी।

शीघ्र ही भाषा की शैली के भी अनेक रूप हो गये। ऐसे लेखक उत्पन्न हो गये थे जिन की शैली अपनी रूप थे। वाक्य-विन्यास

और विराम घट गये थे। पाश्चात्य भाषाओं के पंडितों ने हिंदी में अभिव्यञ्जन प्रणाली का अच्छा प्रसार किया। साहित्य का अर्थ-गांभीर्य भी बढ़ता गया।

बंग भाषा के उपन्यासों के अनुवाद के बाद ही मौलिक उपन्यास लिखे गये। इसी समय एक अद्भुत प्रतिभाशाली व्यक्ति पैदा हुए। यह थे बा. देवकीनन्दनखत्री, जिनके तिलस्मी उपन्यास 'चन्द्रकांता' और 'चन्द्रकांता-संतति' की एक बार धूम मच गई। इन उपन्यासों ने लाखों हिंदी-भाषा-भाषी पैदा किये। इनके पढ़ने पर ऐसे ही उपन्यास पढ़ने की लोगों की प्रवृत्ति बनी रही, तब अन्य लेखकों ने भी वैसे ही उपन्यास लिखे। इनमें बा. हरिकृष्ण जी जौहर सर्व प्रमुख थे।

बा. देवकीनन्दन की भाषा साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं, परन्तु जिस पुस्तक ने हिंदी के लाखों पाठक पैदा किये, वह सच्ची भाषा की पुस्तक कहला सकती है।

उपन्यासों का ढेर लगाने वाले दूसरे व्यक्ति पं० किशोरीलाल जी गोस्वामी थे। इन्होंने ६० के लगभग उपन्यास लिखे। इन के उपन्यासों को साहित्य की कोटि में लाया जा सकता है, परन्तु उन में समाज की वासनाओं का उत्कट रूप देख पड़ता है। यद्यपि इनका प्रभाव नवयुवकों पर अच्छा नहीं पड़ा, फिर भी इन्होंने भाषा के साथ मज़ाक किया। कुछ दिन इन्होंने उर्दू ढंग पर लिखने की चेष्टा की। उनके उपन्यास में वस्तु स्थिति बहुत कम थी, क्योंकि वे बहुधा काल्पनिक थे। बाबू गोपालराम गहमरी ने प्रथम बंगाली उपन्यासों का अनुवाद दिया, पीछे अपनी खास भाषा में मौलिक उपन्यास भी दिए। उनकी भाषा में मुहाविरे बहुत ही जानदार थे। पं० लज्जाराम मेहता और पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय ने भी कुछ उपन्यास लिखे।

इस युग में निबन्ध खूब लिखे गये। इन निबंधों में पं० महावीरप्रसाद जी ने जान डाल दी। जब उन्होंने सरस्वती का सम्पादन-भार लिया, तो वह लिखने में जुट गये। उन्होंने सरस्वती-सम्पादन के अलावा छोटे-बड़े अनेक लेख और कवितायें भी लिखीं। द्विवेदी जी के लेखों में बात को बारम्बार समझाने की चेष्टा की गई है। एक एक बात हेर-फेर कर कई बार कही गयी है। द्विवेदी जी के दाहिने हाथ स्वरूप एक प्रतिभाशाली लेखक उत्पन्न हुए। वह पं० माधवप्रसाद मिश्र थे। बा. बालमुकुन्द गुप्त भी तेजस्वी कलम के धनी रहे। खेद है, वह बहुत ही कम आयु में स्वर्गवासी हो गये!! इन के बाद पं. जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी भी हास्य-रस के अच्छे लेखक हुए। बा. गुलाबराय एम.ए. भी उत्तम निबंध-लेखक रहे।

पं० महावीरप्रसाद जी द्विवेदी ने जो दूसरी नवीनता हिंदी-भाषा में पैदा की, वह समालोचना है। यह पहले गुण-दोष दर्शन के रूप में पैदा हुई। पुस्तकों की समालोचना सर्वप्रथम उपाध्याय पं० बदरीनारायण चौधरी ने अपनी 'आनन्दकादंबरी' में शुरू की। उन्होंने लाला श्रीनिवासदास के नाटक 'संयोगिता-स्वयंबर' की खूब विस्तृत और कड़ी समालोचना की। परन्तु पं० महावीरप्रसाद जी ने सब से प्रथम कालिदास की आलोचना पर एक पुस्तक ही छाप डाली। इसमें कालिदास की रचनाओं के हिन्दी अनुवाद के दोष, जो लाला सीताराम-कृत थे, खूब स्पष्ट दिखलाये गये थे। इसके बाद उन्होंने संस्कृत काव्यों की खरी समालोचना की। जब उनकी 'कालिदास की निरंकुशता' छपी, तो खूब हलचल मची। हिन्दी की नवीन पुस्तकों की तो वह सदैव खरी समालोचना करते ही रहे। इन सब कारणों से हिंदी भाषा बहुत सुधरी। यदि द्विवेदीजी मुस्तैदी से काम न लेते, तो अव्यवस्थित, व्याकरण-विरुद्ध, ऊट-पटांग भाषा में अगणित किताबों का ढेर लग जाता।

पं० पद्मसिंहजी शर्मा की बिहारी सतसई के प्रकाश में आने पर तुलनात्मक समालोचना के पीछे लोग बेतरह पड़ गये।

कविता के क्षेत्र में भी द्विवेदीजी ने एक प्रणाली को जन्म दिया। गद्य पर उन्होंने जिस भांति अपना सिक्का जमाया, उसी भांति पद्य पर भी। भाषा में सफाई तो वह प्रथम ही ला चुके थे। उन्होंने प्रेरणा करके बहुतों को नवीन कवि बनाकर उनसे खड़ी बोली की कविता कराई। उन कविताओं का वह बड़े प्रयत्न से संशोधन कर दिया करते थे। धीरे २ सरस्वती की कविताओं में एक नूतन जीवन दिखाई देने लगा। सिर्फ यही नहीं कि उन्होंने केवल भाषा का ही परिष्कार किया, बल्कि मराठी और संस्कृत-पद्यों के ढंग पर कविता भी की और कराई। उन पर इंगलैण्ड के प्रसिद्ध कवि वर्ड्सवर्थ का भी काफी प्रभाव पड़ा। और, उन्होंने गद्य की भांति ही पद्य का भी पद-विन्यास कर दिया। अब बोलचाल की भाषा हिंदी में कविता का प्रवाह बह चला। द्विवेदीजी के स्कूल के तीन शिष्य बहुत भारी कवि निकले—बाबू मैथिलीशरण गुप्त, पं० रामचरित उपाध्याय और पं० लोचन प्रसाद पांडे। बाबू मैथिलीशरण गुप्त इस शैली में खूब उन्नत हुए। पं० रामचरित उपाध्याय संस्कृत के अच्छे पण्डित हैं। इनकी भाषा में सफाई तो है ही, वाग्वैदग्ध्य भी है। इनके सिवा बहुत कवि उत्पन्न हुए। उनमें कुछ ऐसे भी हैं, जो द्विवेदीजी के प्रभाव से उन्मुक्त हैं। स्वर्गीय प० नाथूराम जी 'शंकर' शर्मा, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, राय देवीप्रसाद जी 'पूर्ण', पं० गयाप्रसाद जी शुक्ल 'सनेही', पं० सत्यनारायण जी कविरत्न, लाला भगवानदीन जी, पं० रामनरेश त्रिपाठी और वियोगी हरिजी मुख्य हैं।

द्विवेदीजी ने २०-२५ वर्ष घोर परिश्रम किया, और हिंदी-गद्य-पद्य को पूर्ण रूप से संगठित किया। परन्तु साहित्य और कला की प्रदर्शिनी में उनकी कौनसी कृति रक्खी जा सकती है, यह प्रश्न अक्सर किया जाता है। हमारा उत्तर है, उनकी कृति तो उनका भाषा संस्कार ही है। आधुनिक गद्य-पद्य यद्यपि और भी ऊंचा उठ रहा है, फिर भी उसे द्विवेदीजी के प्रशस्त मार्ग ने बहुत आगे बढ़ाया था।

इसमें तत्कालीन नवयुवक यद्यपि विद्वान् नहीं, तो बहुदर्शी तथा विज्ञ अवश्य होगए थे। कालेज की सहायता से उनके विचारों में प्रौढ़ता आ गई थी, और ज्यों ही उनकी रचनाओं को द्विवेदीजी की भाषा का संस्कार प्राप्त हुआ, वे प्रफुल्लित हो उठीं।

सरस्वती विविध विषयक पत्रिका थी। उसमें सिर्फ द्विवेदीजी की परिष्कृत भाषा ही न थी, उनका चुनाव भी था। वह स्पष्ट, स्वच्छ भाषा में लोक-रुचि की वस्तुएं देने लगी। उसमें द्विवेदीजी का प्रबल सिद्धांतवाद तो था ही, उन्होंने अपने लेख छांट लिये थे। संस्कृत-साहित्य का परिचय, प्राचीन अनुसंधान, इतिहास, जीवन-चरित्र, यात्रा-विवरण, नवीन अभ्युत्थान का परिचय और हिंदी-प्रचार, यह सब सरस्वती का ध्येय था। इसके सिवा प्रचलित साहित्य और सामयिक पुस्तकों पर सरस्वती में टिप्पणियां रहती थीं। इन सब चीजों से सरस्वती प्रत्येक मास ओत-प्रोत होकर निकलती थी, और उसे पढ़ कर पाठकों को एक नवीन ज्ञान और विविध वस्तुओं का परिचय मिलता था। उसके द्वारा दूसरी भाषा न जानने वाले भी बहुदर्शी बनते जा रहे थे। इस प्रकार सरस्वती हिंदी पाठकों के लिए बुद्धि-विवेचना और विस्तृत ज्ञान को बढ़ाने वाली चीज थी। और, इसके लिये द्विवेदीजी को विविध भाषाओं का मंथन करके उनका निष्कर्ष लेना और भगीरथ प्रयत्न करना पड़ता था।

इसमें संदेह नहीं कि सरस्वती विचार की अपेक्षा प्रचार की पत्रिका थी, पर यथासंभव द्विवेदीजी ने उसे अपने व्यक्तिगत विचार की पत्रिका कभी नहीं बनाया। उसके द्वारा प्रोपेगैंडा कभी नहीं किया, यद्यपि एक परिधि बना ली थी, जहां प्रतिद्वंदी लेखकों का प्रवेश न था।

दुलारे-युग

द्विवेदी-युग में जो प्रौढ़ कलाकार हिंदी में उत्पन्न हुए, उनका स्थान साधारण नहीं। निबंध और विवेचनात्मक प्रौढ़ विषयों का प्रदर्शन करने में मिश्रबन्धु, पुरातत्व में पं० गौरीशंकर हीराचंद जी ओझा, काव्य-कला में शंकर जी, हरिऔध जी, रत्नाकर जी, लाला भगवानदीन जी आदि समालोचकों में पं० पद्मसिंह जी शर्मा तथा प्रबन्ध-विचार में बाबू श्याम सुंदरदास, पं० रामचन्द्र शुक्ल आदि हैं। इन्होंने अपना पृथक स्थान निर्माण किया है। इन महानुभावों की हिंदी-सेवा असाधारण तथा अप्रतिम है। द्विवेदी-युग की छाप तो उन पर है, परन्तु उनकी रचनाएं द्विवेदीजी के प्रभाव से मुक्त स्वतंत्र एक अपना व्यक्तित्व लिये हैं।

द्विवेदी-युग अब समाप्त हो गया है। इस युग के जो उत्तराधिकारी पैदा हुए हैं, उनकी विचार-धारा आगे बढ़ गई है। हिंदी में एक नवीन लहर उत्पन्न हुई है। द्विवेदीजी ने उन लोगों के ज्ञान की वृद्धि के लिये, जो हिन्दी के सिवा अन्य भाषायें नहीं जानते थे, हिन्दी में उन्हें अन्य भाषाओं के उपयोगी तथा प्रौढ़ विषय पढ़ने को दिये थे। एक प्रकार से द्विवेदी युग को अनुवाद का युग भी कह सकते हैं। यदि द्विवेदी-युग के साहित्य को ध्यान से देखा जाय, तो वह विविध-व्यापक विषयों के अनुवादों ही का युग है। द्विवेदीजी की सरस्वती की सम्पादकीय टिप्पणियों तक में अन्य भाषाओं के अनुवाद की छाप है। परन्तु अब जो मौलिकता की लहर उठी है, उसने हिन्दी-संसार को क्षुब्ध कर दिया है। इस समय हिन्दी का प्रवाह मुक्त धाराओं में बह निकला है। उसके अनेक मुख हो गये हैं। उसमें वेग है, स्पर्धा है और उत्क्रान्ति है। इस युग में उपन्यास-क्षेत्र में अनेक श्रेष्ठ औपन्यासिक उतर पड़े हैं। सरस, सुसंस्कृत और ओज-पूर्ण

(शेष पृष्ठ २७ पर)

कत्तिनों की मजदूरी का प्रश्न

(ले०—श्री राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद)

महात्मा गांधी जी ने खादी सम्बन्धी काम करनेवालों के बीच खलबली पैदा कर दी है। उनका कहना है कि हम जो खादी खरीदते हैं, वह इतने कम दाम पर लेते हैं कि सूत कातनेवाली कत्तिन को बहुत कम मजदूरी मिलती है। हिसाब लगाकर देखा गया है कि जो कत्तिन सात आठ घन्टे प्रति दिन सूत कातती होगी, उसको भी चार पांच पैसे से अधिक नहीं मिलते होंगे—जो बहुत मोटा सूत कातती होगी, उसको इसमे भी कम ही मिलता होगा। दूसरी ओर खादी खरीदनेवाले यह कहते हैं कि इस पर भी खादी देशी अथवा विदेशी मिल के बने कपड़े से महगी पड़ती है। चर्खासंघ का प्रयत्न यह रहा है कि जहां तक हो सके खादी को सस्ती बना कर मिल के कपड़े से उसका मुकाबला कराया जाय और पिछले बारह-तेरह वर्षों के अनवरत परिश्रम और उद्योग का यह फल हुआ है कि खादी बहुत सुन्दर टिकाऊ और कुछ सस्ती भी हो गयी है। आशा की जाती थी कि इस प्रकार से कुछ दिनों बाद हम और भी सस्ते दाम पर बेचना सम्भव हो सकेगा। पर महात्मा जी की घोषणा के कारण सारे खादी-समाज में वाद विवाद उठ खड़ा हो गया है।

खादी प्रचार का उद्देश्य है देश को कपड़े के मामले में स्वावलम्बी बनाना। यह उद्देश्य दो प्रकार से प्रसिद्ध हो सकता है भारत निवासी प्रत्येक मनुष्य अपने लिये जरूरी कपड़ों के लिये सूत स्वयं अपने हाथों कात ले और वह यदि स्वयं न बुन सके तो गांव के जुलाहे या तांती उसे बुन दें। हम बहुत अनुद्यमी और आलसी हो गये हैं, नहीं तो यह काम कुछ असम्भव नहीं है। एक घन्टे में चार सौ गज सूत कात लेना आसान है। यदि हम प्रतिदिन एक घन्टा समय इस काम में नियमित रूप से लगा दें, तो वर्ष में ४० गज कपड़े के लिये सूत बन जाय। भारत वर्ष में आज प्रति मनुष्य १४ गज के लगभग कपड़ा वर्ष भर में खर्च होता है, जिस में बड़ों के तोशेखानों के बक्स के बक्स भरे वस्त्र और गरीबों की लंगोटिया, बड़ों की २० २० गज की पगड़ियां और बच्चों को छुपाने के लिये कपड़ों के टुकड़े, सभी का हिसाब जोड़ कर औसत निकाला गया है। विचार में तो काम सीधा और आसान जान पड़ता है, क्यों कि एक घन्टा समय प्रतिदिन सभी लोग खुशी से निकाल सकते हैं। पर यदि आज की अवस्था पर विचार किया जाय तो इने-गिने ऐसे लोग मिलेंगे जिन्होंने इस नियम का पालन किया हो और वस्त्र के बारे जो अपने का स्वावलम्बी बना चुके हों। इसलिये यदि कहा जाय कि यह काम सहज होने पर भी बहुत कठिन है तो इस में कोई अयुक्ति नहीं होगी। चर्खा संघ ने कई स्थानों पर इस का प्रयत्न किया है कि स्थान विशेष की सारी जनता इस प्रकार वस्त्र स्वावलम्बी हो जाय और इस में उसे सफलता भी मिली है यद्यपि यह सफलता बहुत परिश्रम और समय के बाद मिली है और स्थायित्व अभी निर्विवाद नहीं कहा जा सकता। इसी सफलता के आधार पर चर्खा संघ कुछ दिनों से इस विषय पर अधिक जोर देने लगा है और महात्मा जी ने भी इस प्रयत्न को और विस्तृत करने का परामर्श दिया है। हम खादी के सम्बन्ध में इसकी चर्चा अब अधिकाधिक सुनते जायेंगे। कार्यकर्ताओं ने भी समझ लिया है कि इन प्रयत्नों में पूरी सफलता न मिलने का बहुत बड़ा कारण उन की न्यूनता है और अब इस बात की कोशिश है कि प्रत्येक खादी कार्यकर्ता चर्खा बनाने से लेकर महीन से महीन सूत कातने तक के सभी मर्म केवल सिद्धांत रूप से ही नहीं अपने हाथों से काम करके समझ ले और जनता को इस शास्त्र का ज्ञान देने में पूरी योग्यता प्राप्त कर ले। जिस हद तक हम इस ज्ञान को पर्याप्त बना सकेंगे, उसी हद तक हमारी सफलता होगी और जहां जहां इस ज्ञान के साथ काम किया गया है सफलता मिली भी है। यह हुआ खादी-प्रचार का पहला और सर्वोत्तम प्रकार।

दूसरा प्रकार वह है जिसके द्वारा जो स्वयं खादी नहीं बना सकते उनके लिये खादी तैयार करा कर बाजार में मुहैया करना और उसे सस्ते से सस्ते दामों में खरीदारों तक पहुंचाना, जिसमें वे उसे ले सकें। चर्खासंघ आजतक मुख्यतः इसी पर जोर देता आया है। यह आवश्यक भी था, क्योंकि यदि इतना प्रयत्न नहीं किया जाता और इतने दिनों में अनुभव प्राप्त नहीं किया जाता, तो न तो जनता में खादी के लिये वह भावना ही पैदा होती जो आज वर्तमान है और न सूत चर्खे का वह ज्ञान ही प्राप्त होता जिसके बल पर स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाने की हमें आकांक्षा होती है। सस्ती खादी बनाने में हम इस हेतु प्रयत्नशील थे कि जो मिल के कपड़े से मुकाबिला कर उनपर भी हम कुछ कह सकें और खादी को बाजार में बिकने योग्य वस्तु बना सकें। अभी तक हम इस प्रयत्न में पूरी तौर से सफल नहीं हुये हैं। पर इस ओर प्रगति बहुत हुई है और इतना तो अवश्य हम बता सके हैं कि चर्खे द्वारा सुन्दर से सुन्दर, महीन से महीन कपड़े हम बना सकते हैं। लोगों ने यह भी मान लिया है कि चर्खा के बन्द हो जाने से करोड़ों गरीबों की जीविका हाथ से निकल गयी है और इसे पुनर्जीवित करके हमने बहुतों को अधिक नहीं तो एक टुकड़ा रोटी पहुंचाने में सफलता पायी है। महात्माजी कहते हैं—एक टुकड़ा रोटी काफी नहीं है। जिस तरह दूसरा काम करके लोग पेट भर खाना कमा सकने की आशा करते हैं उसी प्रकार चर्खा चलाने वाली स्त्री को भरपेट भोजन तो अवश्य मिल जाना चाहिये। और वे तो यह चाहते हैं कि जो मजदूरी दूसरे लोगों को मिलती है उतनी इसमें भी मिलनी चाहिये। भारत वर्ष इतना बड़ा देश है कि इसमें मजदूरी भी सभी जगहों में एक सी नहीं मिलती और न हम यही कह सकते हैं कि दूसरे सभी रोजगारों में भरपेट खाने को मिल जाता है। काश्तकारी में जो मजदूर काम करते हैं उनकी मजदूरी इतनी कम है कि शायद एक आदमी अपना पेट दोनों शाम किसी प्रकार भर लेता हो और साथ ही वह काम भी ऐसा नहीं जो जो वर्ष के प्रतिदिन उन मजदूरों को मिलता हो। इतने पर भी काश्तकारी कुछ बहुत मुनाफे का काम नहीं है। यह तो भारतवर्ष की आज की परिस्थिति का एक फल है कि करोड़ों काम करने-वालों को पेटभर खाना दोनों शाम नहीं मिल सकता। सूत कातने वाली स्त्रियां अधिकांश ऐसी हैं जो वैसे तो दूसरा काम करती हैं पर बचे हुये समय में सूत कातकर कुछ और पैदा कर लेती हैं पर चर्खे पर गुजारा करने वाली स्त्रियों का संख्या अनुमानतः कम ही होगी। ऐसी अवस्था में अन्य प्रकार की मजदूरी से चर्खे का मुकाबला हो सकता ... हम यह भी नहीं कह सकते कि यदि इस खादी ... तो खरीदने वालों का ... और उत्साह ... एक हद जब हम उसका दाम बहुत ... सब वे खादी खरीदना बन्द कर और जब ... जो भी चर्खा चलते हैं वे ... जायगा और ... आज कत्तिनों को मिल रहा है ... भी मिलना रुक जायगा। इस ... यद्यपि हमारी कोशिश यह अवश्य होनी चाहिये कि कत्तिनों की मजदूरी जहां तक अधिक हो सके मिले पर हम को यह मानना ही पड़ेगा कि उस की वृद्धि सामने है और ज... उस सीमा को हम पार जायगे त... कत्तिनों का रोजगार फिर एक बार बन्द हो जायगा। चर्खासंघ के सामने आज यह जटिल प्रश्न महात्मा गांधी जी ने उपस्थित कर दिया है और उसके सभी कार्यकर्ता इस के ह... करने में अपनी सारी बुद्धि और शक्ति लगा रहे हैं। मैं बिहार के अपने कुछ पुराने अनुभव से कह सकता हूं कि चर्खा संघ के दफ्तर खर्च में, जिसमें उन सभी कार्यकर्ताओं को वे... भी शामिल है जो सूत खरीदने से लेकर कपड़ा बेचने तक, और हिसाब किताब रखने में लगे हैं, कमी की गुंजायश कम है। इस समय जितने आदमी बिहार शाखा में काम करते हैं उन में ... प्रतिशत २... या इस से कम मासिक पर काम करते हैं और प्रायः २५ प्रतिशत (१०) या इस से कम पाते हैं। ... नयी योजना में हम को अधिक कार्यकर्ता लगाने पड़ेंगे, क्योंकि उसका मुख्य अंग यह होगा सभी कत्तिनों के चर्खों की देख... चाहिये और उनको व्यक्तिगत ... रेख रख कर प्रगति बढ़ानी चाहिये जिन से घन्टे में कम से कम ४०० ... तो अवश्य वे सूत कात सकें। ... प्रगति के लिये पूनी अच्छी बन... चाहिये और इसके लिये धुनाई औजार भी अच्छे और धुनाई विद्या भी अच्छी होनी चाहिये। चर्खा हमेशा ठीक रहना चाहिये और उसकी देखभाल बहुत रहनी चाहिये। जब कत्तिन इन चीजों को ... त हैं सीख जायेंगी तब इतनी ... रानी नहीं रखनी पड़ेगी ... पर रम्भ में तो बहुत काम बढ़ जाय इसलिये खर्च कम होना असम्भव है—हो सकता है कि बढ़ जाय।

इन सब विचारों से स्पष्ट ... कि कत्तिनों की मजदूरी बढ़ाने ...

आंखों की प्राकृतिक चिकित्सा

चश्मे की निरुपयोगिता

(ले०—श्री डा० रघुवीरशरण अग्रवाल)

(२)

सूर्य प्रकाश से लाभ

सूर्य का प्रकाश आज जब साधारण की दृष्टि में उनकी आंखो को विकारी बना देन वाला माना जान लगा है लोग अन्धेरे कमरे में रहते हैं। हाथो से आंखो को ढक रखते है। छाता तो लगाते ही हैं ज्यां आंख में कष्ट हुआ कि डाक्टर के पास पहुंचते हैं। डाक्टर साहब ऐनक चश्मा तजवीज कर देते हैं पर उनका दर्द बढ़ता जाता है। वे ज्यो-ज्यो सूर्य के प्रकाश से भागते , त्यो त्यो उनकी आंख रोगी होती आती है। भारतवर्ष सुनहले प्रकाश का देश है। इस पर भगवान भुवन भास्कर की जीवनप्रद रश्मियां प्रति दिन बिखरी रहती हैं। वे इस निवासियो को बलवान हृष्ट पुष्ट और शक्तिशाली नेत्रो वाला बनाना चाहती हैं। अत भाइयो! आप अमूल्य वरदान से क्यो वंचित रहते । लक्ष्मी के दरिद्री मत बनो। प्रकृति ने मानुषी आंखो को सूर्य के प्रकाश को सहन करने के योग्य बनाया है। ऐनक आदि का व्यवहार अप्राकृतिक है। प्रकृति के विरुद्ध कदम उठाना विनाश की ओर जाना है और आज उसी ओर अंधे के समान जनता दौड़ी हुई जा रही है।

सूर्य किरण शक्ति

सूर्य की किरणों में वह शक्ति है जो तुम्हे नवीन बल सम्पन्न आंख देगी तुम्हारे प्रत्येक नेत्र विकार का समूल नाश करगी और सर्वदा के लिये चश्मे की दासता से तुम्हें मुक्ति प्रदान करेगी

सावधान हो जाओ! आज तुम्हारे जीवन का स्वर्ण प्रभात है।

निवार्य फल खादी के दाम में बढ़ती । इस के लिये हम को तैयार रहना चाहिये क्योकि यद्यपि यह तर्क ठीक है कि चर्खा उस समय में ही चलाया जाता है जो बर्बाद होना था तथापि उस समय में जो काम उठाया जाता है उसके लिये कुछ भी रकम तो अवश्य मिलना चाहिये कत्तिनो को मालूम भी पड़े कि पा रहा हैं। कत्तिन का काम सा समझा जाना चाहिये और जो पैसे मिलते हैं उन को खैरात भीख न मान कर काम का मेहनताने के रूप में समझा चाहिये। खादी पहनने वालो को यह मान लेना होगा कि यदि खादी पहननी है तो वह मुफ्त में नहीं मिल सकती और उसके लिये भी कुछ त्याग आवश्यक है। खादी के एकमात्र अनुभव, उद्यम उत्साह और बुद्धिमत्ता पर यह निर्भर है कि वे कहां कत्तिन और पहनने वाले दोनो को खुश रख सकेंगे।

नवीन चक्षु-चिकित्सा के आविष्कार



डा० बेटस

यह प्रयोग १० मिनिट से ३० मिनिट तक करते रहो फिर पीठ सूर्य की ओर करके या छांह में आ कर दोनों हथेलियों से नेत्रो को ढक लो तनिक भी प्रकाश अन्दर न आने दो। नेत्रो को बन्द करके किसी प्रिय वस्तु का ध्यान करो। हथेली हलके से रखो। आंखों पर कोई दबाव न पड़े। पांच या सात मिनट के बाद हाथ हटाओ।

लाभ

आंखें खोलकर फिर अपनी दृष्टि काम में लाओ। अब यह बढ़ी हुई मालूम होगी और नेत्रो में अपूर्व शीतलता प्रतीत होगी। इन अभ्यास को प्रतिदिन दो बार करना लाभदायक है। इससे नेत्र पीड़ा दूर होगी। दृष्टि तीव्र होगी। चकाचौंध लाना प्रकाश को देखने पर आंखों में दर्द होना दूर होगा और नेत्र निर्मल होंगे।



सूर्य चिकित्सा

चिकित्सा विधि

अपनी दृष्टि को पहिले दृष्टि पत्र पर जांच लो। प्रातःकाल का समय सर्वोत्तम है। अब सूर्य की ओर मुख करके बैठ जाओ नेत्र बन्द कर लो। अपनी गर्दन मस्तक और मूंदे हुए नेत्रो को धीरे धीरे दाहिनी ओर से बायीं ओर और बायीं ओर से घुमाओ इस प्रकार कि सांप अपने फन को तुम्बे की आवाज पर हिलाता है। नेत्र सिर के साथ घूमता रहे और नेत्र या दृष्टि न घूमे और यदि घूमे तो दूसरी तरफ।

सूर्य-किरणों से कब लाभ उठाओ

जब सूर्य की ओर मुख किये बैठे होओ, तो सूर्य की ओर देखने की चेष्टा मत करो। जब कड़ी गर्मी हो या तेज धूप हो तब मत बैठो। प्रातःकाल की किरणें अच्छी होती हैं उन से रंग काला नहीं पड़ता। इस समय की किरणें चमड़े में खूबसूरती ला देती हैं और त्वचा निर्विकार हो जाती है।

सूर्य की ओर देखने से नीला, पीला, लाल आदि अनेक रंग दिखाई देता है यह शिथलीकरण प्रयोग से दूर किया जा सकता है। इन प्रयोगो की विस्तृत व्याख्या (Dr bates Perinciple of perfe t sight Witho it G asses) नाम की अंग्रेजी पुस्तक में की गयी है।

सूर्य चिकित्सा के बाद ५ से १५ मिनट तक पामिंग करना चाहिये। (देखो दृष्टि पामिंग पृष्ठ) रंगों का दिखना इससे दूर होगा।

चकाचौंध दूर करने का उपचार

जिन्हें धूप में चलने पर चकाचौंध आती है वे बहुधा आंख ऊपर करके चलते हैं और पलक नहीं मारते। चलते समय उन्हें चाहिये कि नीचे देखकर चलें पलक मारते रहें और यह ध्यान करें कि चलने की सड़क पीछे की ओर चलती है और वे आगे आ रहे हैं।

लाभ

सूर्य चिकित्सा से नेत्रो के अनेक रोग शान्त हो जाते हैं यथा पीला मोतिया मोती बिन्द आंख का दुखना आंख जख्म फूली इत्यादि।

आंखों की ज्योति बढ़ाने के लिये पामिंग की उपयोगिता पर मैंने पिछले लेख में कुछ पंक्तियां लिखी थीं। पामिंग का अभ्यास निम्न लिखित विधि से किया जा सकता है।

दृष्टि-पत्र को दीवार में अच्छे प्रकाश में लगाओ। इस से दस फीट की दूरी पर एक कुर्सी पर बैठ जाओ। दृष्टिपत्र की ऊंचाई उतनी होनी चाहिये जितनी कि तुम्हारी आंखें। अब अपने हाथ और उंगलियों को गाय के कान की आकृति का बनाओ और दाये हाथ को दाहिनी आंख पर इस प्रकार हलके से रखो कि हथेली का खड्डा आंख के ऊपर रहे और उंगलियां कुछ तिरछी हो कर बायीं भौंह के ऊपर होकर बायें कपाल को ढक लें। दूसरे हाथ को भी ऐसा ही बनाकर बायीं आंख के ऊपर रखो और बायीं उंगलियों को दायें हाथ की उंगलियों के ऊपर कुछ दायीं ओर झुका हुआ रखो। इसी अवस्था में अन्दर आंख खोल कर

देखो कि अंगुलियों आदिके छिद्रों में से किसी में प्रकाश तो नहीं आता। यदि आता हो, तो उसे बन्द करो, और आँखें मूंद लो। अब ध्यान करो, जैसा कि ऊपर कह आये हैं। चलती फिरती और स्थिर वस्तुओं की मानसिक प्रतिमा देखो। यह प्रतिमाएं कांपती हुई दिखाई देंगी। जो वस्तु हम रात दिन देखते हैं और जो हमारे मनको प्यारी लगती है, उस का ध्यान अच्छा होता है। हर एक का ध्यान अपना अपना अलग होता है। केवल बात इतनी ही है कि घूमती चीजें, जैसे झूला, चकई, लट्टू का घूमना, वृक्षों का हिलना आदि देखना चाहिये। ५ से १५ मिनिट तक इस प्रकार ध्यान करने पर अपनी एक हथेली हटाओ। आहिस्ते से आंख खोलो और पलक मार-मार कर दृष्टि पत्र के अक्षर पढ़ो। पहले तो अक्षर बड़े साफ और घन काले दीखेंगे। पर कुछ देर बाद फिर धुंधले पढ़ने मालूम होंगे। ज्यों ही धुंधले अक्षर दीखने लगें, आंख को बन्द कर हथेली से ढककर दूसरी आंख खोलो और उस से पलक मार-मार कर पढ़ना आरम्भ करो, फिर पामिङ्ग करना शुरू करदो और १०-१५ मिनिट बाद पुनः उसी भांति अक्षरों को पढ़ो। पामिङ्ग करते समय यदि दोनों हाथ थक जावें, तो उन को मेज़पर टेक लो या कोहनी के नीचे तकिया लगा लो। खड़े खड़े पामिङ्ग नहीं करना चाहिये। लेटे हुए पामिङ्ग करना अच्छा है। खराब दृष्टि वाले को दिन में कम से कम चार या पांच बार पामिंग करना ही चाहिये। उन्हें चाहिये कि वह पामिंग करते-करते सो जाय और प्रातः उठते ही पामिंग करें। यदि दोनों नेत्र एक समान कमज़ोर हों, तो दोनों आंखें खोल कर अक्षर पढ़ने का अभ्यास करो। बच्चों को पामिंग के समय कोई मनोरञ्जक कहानी सुनाओ।

लाभ

सिर दर्द, कमज़ोर दृष्टि जल्दी अच्छे हो जाते हैं। कई मरीज़ जो जन्म से अन्धे थे, अच्छे हो गये। एक बालक १२ वर्ष का, जो दो घंटे में अच्छा हो गया।

दृष्टि पट

दृष्टि पट का लेख में उल्लेख किया जा चुका है। उस के देखने की विधि निम्न लिखित है:—

दृष्टि-पट से १० फीट दूर खड़े हो जाओ। अपने एक हाथ की गाय के कान ऐसा बनाओ, तब इस हाथ से एक आंख को हलके से ढको। आंख पर किसी प्रकार का भी दबाव न हो। अब दूसरी आंख, जो खुली है, उससे पलक मार-मार कर सब लकीरों के अक्षर पढ़ जाओ। जिनके नेत्र कमज़ोर होंगे वे भी यदि नित्य नियमानुसार यह दृष्टि-पट पढ़ लिया करेंगे तो कुछ समय बाद उनकी दृष्टि तीव्र हो जायगी। बच्चों की दृष्टि अच्छी रखने और स्वस्थ रखने का यह उत्तम साधन है। इस प्रयोग को पाठशालाओं में प्रचलित करके परीक्षा ली गई है। इसका लाभ शत प्रतिशत होता पाया गया है। प्रत्येक पाठशाला के अध्यापकों को इस सरल प्रयोग द्वारा बच्चों की आंखें स्वस्थ रखनी चाहिये।

C

R B

T F P

5 C G O

4 K B E R

3 V Y F P T

2 O C O C D B C

R Z 3 B 8 S H K F O

F T Y V P E C D O B R K 5 F

धारावाही उपन्यास

अपराधी कौन ?

(ले०—श्री देव)

मिल की एक मजदूर युवती की गुण्डों के आक्रमण से उम्मेद ने रक्षा की। मिल का खजांची उसे बुरी दृष्टि से देखता था और इस मौके पर मिल की सहायता के नाम पर उसे १०) दे गया। उम्मेद यह सुन कर बहुत क्रुद्ध हुआ।

उम्मेद का अतीत जीवन बहुत बड़ा नहीं है। उसकी वृद्ध माता ने ही उसे पाला था। वह कुछ शरारती लड़कों की संगति के कारण नारंगियाँ चुराने के नाममात्र अपराध पर तीन मास की जेल भी भुगत आया था। उसकी मां मर चुकी है और अब वह ५ साल से मिल में काम कर रहा है। आज कल वह जाबर है।

(अंक ३७ से आगे)

हम बता आये हैं कि भरूचा कारखाने में अपने चरित्र के लिये बहुत बदनाम आदमी था। वह इस घर में घुसा है, यह सुन कर उम्मेद पर मानो वज्र गिरा एक ही दिन में यह घर उसे अपना सा लगने लगा था। मानो उसको खोई हुई कोई चीज पा गई हो। उस घर में भरूचा का घुसना ऐसा प्रतीत हुआ जैसे सेंध लगा कर कोई चोर घुस आया हो।

श्यामा अपनी धोती के लड़ में बंधे हुये नोट को खोल कर ले आई, और देखने के लिये उम्मेद के हाथ में दे दिया। नोट में कोई विशेषता नहीं थी, वैसा ही था, जैसा बाजारों में चलता है, पर उम्मेद को वह कांटेदार सा प्रतीत हुआ। उसे हाथ से छोड़ते हुए उम्मेद ने कहा—

"भरूचा बहुत बुरा आदमी है। वह शराब पीता है, और बदचलन भी है। उसके हाथ से तो एक पैसा लेना भी हराम है। उसकी आंख बहुत बद है। तुमने उससे यह नोट क्यों ले लिया और तुमने (श्यामा की ओर देख कर) माँ को यह नोट लेने से क्यों न रोका ?'

सुखदेवी ने घबरा कर कहा 'तो बेटा, वह तो कहने लगा कि यह रुपया मील वालों ने भेजा है, मैंने उसकी बात सच्ची समझ कर ले लिया। तो क्या उसने झूठ ही कहा था।'

"हाँ उसने बिलकुल झूठ कहा था। कारखाने वाले ऐसे झगड़ों में किसी की मदद नहीं करते। वह बड़े मतलबी हैं। उनका काम होना चाहिये फिर कोई मर या जिये। यह नोट तो भरूचा ने अपने ही पास से दिया है। इसे तुम न लेतीं तो अच्छा था।'

"तो अब भी कुछ नहीं बिगड़ा बेटा, वह आज सांझ को आने की बात कह गया है। मैं उसे नोट वापिस कर दूंगी।

सांझ की बात सुन कर उम्मेद के तन में आग सी लग गई। एक बार उसने श्यामा की ओर देखा और दूसरी बार सुखदेई की ओर कुछ सोच कर चुप सा रह गया वह बोला नहीं।

उसे चुप देख कर श्यामा घबरा गई। वह बातचीत में कोई हिस्सा न लेकर केवल बात सुन रही थी परन्तु यह सुनना बोलने से भी अधिक महत्वपूर्ण था। वह बातें सुन रही थी, और उम्मेद की ओर देखती जाती थी। भरूचा क्यों आया ? और उसका आना उम्मेद को क्यों बुरा लगा, इन सब बातों का रहस्य वह समझना चाहती थी, पर समझ न सकी तो भी उसके दिल में यह बात बैठ गई कि भरूचा बुरा आदमी है और उम्मेद अच्छा।

उम्मेद का जी बुरा सा हो गया। वह थोड़ी देर तक चुपचाप बैठा रहा सुखदेई उसके मुंह की ओर देख रही थी, श्यामा पास ही नीचे को मुंह किये खड़ी थी भरूचा का दिया हुआ नोट उम्मेद के पांव के पास पड़ा था और उम्मेद अन्यमनस्क सा होकर दरवाजे की ओर देख रहा था।

(६)

आज रात कल के ही समय फिर द्वार खुला, और माँ बेटी ने घबराई हुई आंखों से भरूचा को अन्दर आते देखा। भरूचा की आंखों में और चेहरे पर कल की अपेक्षा लाली अधिक थी, और उसके पांव लड़खड़ा रहे थे। उसे अन्दर आता देख कर सुखदेई चारपाई पर से उठ कर बैठ गई और श्यामा अपने कपड़ों में और अधिक सिमट कर बन गई। भरूचा ने सुखदेई के पास आकर पूछा—

'बुढ़िया तुम्हारा क्या हाल है? अब चल फिर सकती हो ?

'अब तो अच्छी हूं, बाबूजी, तुम्हारी दया से चल फिर सकती हूं पर कमजोरी बहुत है।

"तो चलो। तुम अपनी बेटी को लेकर यहां से चलो। मैंने तुम लोगों के लिये एक दूसरा मकान किराये पर ले लिया है"। इस गन्दे मकान में तुम्हारी कमजोरी दूर नहीं हो सकेगी।'

इस नए प्रस्ताव को सुनकर सुखदेवी कुछ आश्चर्य में पड़ गई। उसे याद आया कि वह तो १०) का नोट वापिस देने का वायदा कर चुकी थी और यहां मकान किराये पर ले लिया। बोली—

'बाबू जी, हम गरीबों पर आप इतनी दया क्यों कर रहे हैं ? हम तो इसी छोटे से घर में खुश हैं। आप की क्या इतनी दया कम है कि आप हाल-चाल पूछ लेते हैं। नये मकान में हम नहीं जाना चाहतीं। हां—और आप कल जो १०) का नोट दे गये थे वह ले लीजिये, हमें उस की दरकार नहीं।'

भरूचा कुछ चकरा गया। कल तो बुढ़िया आसानी से हाथ में आ गई था और आज उलटी बात करती है, बात क्या है ? इसे किसी ने जरूर बहकाया है ? भरूचा को क्रोध आने लगा, परन्तु उसे दबा कर वह सुखदेई की खाट के पास बैठ गया और चिकनी-चुपड़ी बातें करके उसे फुसलाने लगा। बातें सुखदेई से कह रहा था और आंख श्यामा पर थी, उसे कपड़ों में सुकड़ी हुई, छिपती सी देख कर उसे और भी अधिक घबराहट हो रही थी।

बहुत सी बातें समझाई, पर बुढ़िया अपनी बात पर जमी रही। भरूचा की आंखें आज भयावनी थीं उन्हें देख कर सुखदेई और भी घबरा गई और उस से पिंड छुड़ाने का प्रयत्न करने में दृढ़ हो गई, जब देर तक समझाने से भी सुखदेई न मानी तो भरूचा के कोप का पारा चढ़ने लगा। उसने आज नित्य से भी कुछ अधिक मात्रा में शराब चढ़ाई थी। धैर्य हाथ से निकल गया और शैतान अपने असली रूप में दिखाई देने लगा। वह आंखों से आग और मुंह से झाग बरसाता हुआ चिल्लाने लगा—

"तो तू मेरी बात नहीं मानना चाहती, बहुत अच्छा। कान खोल कर सुन ले। मैं तेरी कोई पर्वा नहीं करता। मैं श्यामा को चाहता हूं और उसी को लेजाना चाहता हूं। श्यामा, चल उठ, तू मेरे साथ चल"

इस समय दरवाजे पर किसी के हिलने की आहट हुई, परन्तु भरूचा आपे से बाहर होने के कारण उसे न पहचान सका।

श्यामा कपड़ों में और भी अधिक सुकड़ती हुई कातर दृष्टि से दरवाजे की ओर देख रही थी।

भरूचा चारपाई पर से उठ कर श्यामा की ओर बढ़ा। सुखदेई ने हाथ जोड़ कर कहा—

'बाबू जी-बाबू जी, क्या करते हो, उस बेचारी को माफ करो। गरीब को इस तरह न सताओ।"

पर भरूचा आगे बढ़ता ही गया और श्यामा के पास आकर बोला।

'चलती है या नहीं, या तुम्हें जबरदस्ती पकड़ कर लेजाना पड़ेगा।'

दरवाजा और अधिक जोर से हिला और जोर जोर से सांस चलने की भी आवाज आई। सुखदेई बेचारी चारपाई पर से उठ कर बेटी की रक्षा के लिये आगे बढ़ना चाहती थी, परन्तु बुढ़ापा और निर्बलता के कारण पछाड़ खाकर गिर पड़ी। गिरते हुए मुंह से केवल इतना ही कह सकी— हाय बेटी"

भरूचा ने बुढ़िया के गिरने की पर्वा न करके श्यामा का हाथ जोर से पकड़ लिया। श्यामा ने डर कर चीख मारी। भरूचा ने चीख को रोकने के लिये अपना दूसरा हाथ श्यामा के मुंह की ओर बढ़ाया ही था कि दरवाजा धड़ाके से खुल गया और इस से पहले कि भरूचा सम्भलता, उम्मेद के मजबूत हाथों ने उस की पीठ में इस जोर से मुक्का दिया कि वह श्यामा को छोड़ कर लड़खड़ाता हुआ सुखदेई की खाट से जा टकराया।

(क्रमश.)

(पिछले कुछ अंकों में यह उपन्यास प्रकाशित नहीं हुआ। अब धारावाही रूप से प्रकाशित हुआ करेगा। —स०)

भारत सरकार की ग्राम-सुधार योजना

विभिन्न प्रान्तों को सहायता

भारत सरकार ने ग्रामोद्धार की योजना के लिये एक करोड़ रुपया स्वीकृत किया था। उसके विभाजन और सहायता की रिपोर्ट सरकार ने प्रकाशित की है। उसी के कुछ अंश दिये जाते हैं।

मद्रास	१४ लाख रु०
बम्बई	७ ,, ,,
बंगाल	१६ ,,
युक्तप्रांत	१५ ,,
पंजाब	८५ ,,
बर्मा	५ ,,
बिहार और उड़ीसा	१२५ ,,
मध्यप्रान्त	५ ,,
उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत	३ ,,
आसाम	५ ,,
दिल्ली	०५ ,,
अजमेर मेरवाड़ा	०४ ,,
कुर्ग	०५ ,,
कुल जोड़	१२५ ,,

सरकार ने कुछ शीर्षक बतला कर जिनके अन्तर्गत सरकार की दृष्टि में ग्राम्य-जीवन की अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकतायें आजाती हैं, स्थानीय सरकारों का नेतृत्व करने का निश्चय किया और इस प्रकार उनको सक्रिय लाभ पहुंचाया। ये शीर्षक हैं.

१ स्वास्थ्य रक्षक उपाय, अर्थात

(क) मलेरिया नाशक योजनायें।

(ख) ग्रामों में जल का प्रबंध जिसके अन्तर्गत नालीदार कुएं भी हैं।

(ग) ग्रामों की सफाई जिसमें नालियाँ बैठाना भी शामिल है।

२ खेतों को छोटे २ भागों में विभक्त होने से बचाना।

३ गावों में सड़कें बनाना।

४ जिला अफसरों को स्वेच्छानुसार स्थानीय छोटे-छोटे सुधार कार्यों की उन्नति अथवा सहायता के लिये रकम मन्जूर करना।

बम्बई

१ ग्राम सुधार योजना:—

	रुपये
उत्तरी विभाग	१,०८०००
मध्य विभाग	२,०२०००
दक्षिणी विभाग	१,५८०००
सिन्ध	१,३८०००
	६,०६०००

(२) मैंसों का सुधार और दूध की व्यवस्था ५,२०००

(३) मुर्गी-मुर्गा रक्षा में सुधार १,५०००

(४) अण्डों के संग्रह और विक्रय में सहयोग २०००

(५) चमड़ा कमाना और उसे सुरक्षित रखना ४५०००

(६) तालाबों में मछली पकड़ना १००००

कुल जोड़ ७०००००

बम्बई सरकार की ग्राम सुधार योजना की महत्वपूर्ण बात यह है कि सबसे पहले खास—खास गांव के निवासियों की अत्यावश्यक अभावों की पूर्ति की जाय और फिर कृषकों की सर्वांगीण उन्नति की ओर ध्यान दिया जाय। इस कार्य में सरकार स्थानीय अधिकारी गैरसरकारी संस्था और स्थानीय व्यक्तियों के सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है। योजना इसी धारणा पर निर्भर है कि जब तक स्वयं गांव वाले सहयोग न करेंगे, उपयोगी उन्नति साध्य नहीं हो सकती और इस सम्बन्ध में सबसे पहला कार्य यह है कि उनमें अपनी अवस्था सुधारने की इच्छा और रुचि पैदा की जाय।

इस योजना के अनुसार ग्राम सुधार के समस्त कार्य डिस्ट्रिक्ट एक्जिक्यूटिव कमेटी द्वारा सञ्चालित किये जायेंगे जिसके चेयरमैन का स्थान कलक्टर ग्रहण करेंगे और डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड का प्रेसीडेंट वाइस—चेयरमैन होगा। कमेटी के सदस्यों में साधारणतः वे सरकारी कर्मचारी होंगे जो सरकार के समाज सेवक विभाग के प्रतिनिधि स्वरूप हैं तथा स्थानीय संस्थाओं के प्रतिनिधि जैसे लोकल बोर्ड और उन्हीं की भांति अन्य संस्थायें और समाज सेवा, शिक्षा इत्यादि संस्थाओं आदि से संयुक्त व्यक्ति।

डिस्ट्रिक्ट एक्जिक्यूटिव कमेटी की देख रेख में, तालुका कमेटियाँ स्थापित करके अथवा जहां तालुका सुधार संघ हैं वहां उनके द्वारा प्रत्येक तालुके में काम हो रहा है स्वयं ग्रामों में ग्राम पंचायत कानून के अनुसार पंचायतें अथवा स्थानीय समितियों का उपयोग किया जा रहा है। विशिष्ट उप-समितियाँ कायम करके खास खास विषयों में जैसे शिक्षा, आर्थिक उन्नति आदि के संबंध में भी विचार किया जा सकता है।

स्थानीय सरकार ने सिफारिश की थी और भारत सरकार उससे एक मत हो गई कि सहायता की रकम का अधिकांश भाग बम्बई प्रांत में, इसी योजना को, जिसके द्वारा उत्तम परिणाम दृष्टिगोचर हुआ है आगे बढ़ाने में खर्च किया जाय। ६०६००० रुपयों में जो इस योजना को क्रियात्मक रूप देने में व्यय होंगे, २००००० रुपये जिला अफसरों में बांट दिये जायंगे।

मुर्गी मुर्गा रक्षा सुधार की योजना दो भागों में विभक्त होगी कुछ ग्रामों में अच्छी नसल के मुर्गे रखे जायेंगे और उन मुर्गी मुर्गा फार्मों के मालिकों को जो कुछ शर्तों का पालन करना स्वीकार करेंगे जिनमें एक यह है कि इनके अण्डे स्थानीय रूप में मुर्गे पालन के उद्देश्य से नियमित मूल्य पर बेचे जायेंगे, सीमित संख्या में प्रीमियम पुरस्कार दिए जायंगे।

युक्त प्रान्त

	रु०
(१) खास स्कीम	७००००
(२) कृषि विषयक योजनायें	३५८०००
(३) पब्लिक हेल्थ और मेडीकल रिलीफ की स्कीमें	३१६०००
(४) औद्योगिक योजनायें	७००००
(५) प्रचार और प्रकाशन की योजनायें	३६०००
(६) कुमायूं जिला	५००००
कुल जोड़	१५०००००

(१) उल्लिखित "खास स्कीम स्थानीय सरकार की देहात सुधार योजना है जिसका उद्देश्य ग्रामीणों में स्वावलम्बन प्रवृत्ति की वृद्धि करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थानीय सरकार लगभग २ वर्ष के लिए एक स्पेशल स्टाफ नियुक्त करने का विचार कर रही है, जिन में निम्न व्यक्ति रहेंगे.—

(क) ४८ जिलों में, प्रत्येक में कम से कम ६ संगठन कर्ता (कमायूं के तीन पहाड़ी जिले इन के बाहर हैं),

(ख) प्रत्येक जिले में एक-एक इन्सपेक्टर होगा जो संगठनकर्त्ताओं के कार्यों का निरीक्षण और उन का पथप्रदर्शित करेगा। प्रत्येक संगठनकर्ता बहुत कुछ उसी ढंग से काम करेगा, जिस ढंग से विलेज गाइड्स" सहयोगसमिति आन्दोलन के सम्बन्ध में करते हैं। अनुमान किया जाता है कि वह १२ ग्रामों की देखरेख कर सकेगा, लेकिन सम्भव है कि यह संख्या बाद में बढ़ा दी जावे।

(२) विचार है कि "१८००००) रुपये सहायतार्थ हर मामले में एक तिहाई तक वर्तमान कुओं में ट्यूब वेल लगाने के लिये खर्च किया जाय। जिन स्थानों में नहरें अथवा ट्यूब वेल नहीं हैं वहां दो वर्ष से भी अधिक समय तक ३००० ऐसे नालीदार कुएं बनाये जायंगे। असफलता का सामना करने के लिए १८०००) रुपये का अतिरिक्त रकम गारंटी के तौर पर जोड़ दी गयी है।

७६०००) रुपये घाट बनाने में खर्च किये जायेंगे, जिससे जमीन कटे नहीं और नमी बनी रहे खास कर पूर्वीय जिलों में। इन घाटों के बनाने के लिये एक ट्रैक्टर खरीदा जायगा, जिस से नालों में और समय पर घास कास खोदने का काम लिया जायगा। ५५०) अस्थायी जलकुंड खोदने की आशा की जाती है और इस के लिये सरकार एक तिहाई खर्च देगी वही हर एक जलकुंड के लिये अधिक से अधिक ३०००) रुपये हो सकते।

प्रांत में फलों की खेती सुधारने के लिये खास स्कीम के अन्तर्गत आने वाले ग्रामों को फल पौदे और बीज दिये जायेंगे। हर एक जिले में एक-एक माली नियुक्त किया जायगा। इन उपायों के लिए कुल ४००००) रुपये खर्च होंगे।

८००००) रुपया अधिक रूप से गांवों में खराब बीज खरीदने और उस की जगह कृषि-विभाग के उत्तम बीज बांटने तथा कृषि विभाग के बीज की वितरण प्रणाली में सुधार करने के लिये खर्च किये जायेंगे इस में प्राइवेट रूप से चलने वाले बीज के स्टोर को भी सहायता मिलेगी और साथ ही आवश्यकता होने पर बीज बढ़ाने की प्रणाली में भी सुधार किया जायगा।

२००००) रुपये जलेश्वर और इटावा में मुर्गी मुर्गा पालन के काम चलाने में खर्च किये जायंगे और ८०००) रुपये बकरियों के सुधार के लिये दिये जायंगे जिसमें ४ रु० बकरे बांटना और उन्हें पालना भी सम्मिलित होगा।

(३) स्थानीय सरकार ने स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित करना चाहा है प्रत्येक केन्द्र के अन्तर्गत लगभग ५० गांव होंगे जिन की जनसंख्या लगभग ३०००० होगी और इन पर अनुमानतः प्रति वर्ष १५०००) रुपये खर्च होंगे। सरकार का यह भी विचार है कि इन स्वास्थ्य केन्द्रों के साथ-साथ चिकित्सा की योजना को भी क्रियात्मक रूप दिया जाय

जिस में अनुमानतः प्रत्येक केन्द्र पीछे प्रति वर्ष २५४० रुपये खर्च होंगे और एक यह योजना भी कि खास स्कीम के अन्तर्गत आने वाले गावों के लिये दवाओं के सन्दूक दिये जायं, जिस में ३६०००) रुपय खर्च होंगे।

प्रारम्भिक दो वर्षों में कुल आनुमानिक खर्च ३१६०००) रुपये होगा।

स्थानीय सरकार की धारणा है कि ग्राम-उद्योग धन्धो को सहायता पहुंचाने के लिये हाट व्यवस्था का सुधार सब से अधिक आशाप्रद कार्य होगा। इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए ८०००) रुपये लखनऊ के गवर्नमेंट एम्पोरियम आफ आर्टस एंड क्रैफ्टस के लिये अलग कर दिये जायंगे, जिसे सूचि-पत्र मूल्यसूची, नमूने आदि-आदि तैयार करने और ग्राम उद्योग धंधों की वस्तुओं के क्रय--विक्रय में होने वाली संभाव्य हानि की पूर्ति के लिये खर्च किया जायगा। घी पैदा करने वाले इटावा, आगरा, मथुरा, अलीगढ़ और एटा के जिलों में घी के हाट व्यवस्था के लिये को आपरेटिव प्रबन्ध करने और घी की विशुद्धता की परख करने के लिये इटावा में जो संस्था स्थापित की गई है, उसी के ढंग पर हाथरस और आगरा की प्राइवेट संस्थाओं को आर्थिक सहायता देने का भी विचार किया गया है। यह भी विचार है कि इस शीर्षक के अन्तर्गत ४००००) रुपय और खर्च किय जायं, लेकिन इस के लिए अभी स्थानीय सरकार की अन्तिम सिफारिशें प्राप्त नहीं हुईं।

(४) ग्रामोद्धार कार्य के अनवरत सुफल प्राप्त करने के लिये खास स्कीम के अन्तर्गत आने वाले ३२८० गांवो को सप्ताह में कम से कम एक बार निःशुल्क समाचार पत्र मासिक और रिप्रिन्ट जिन में ग्रामोद्धार विषयक लेख रहेंगे और समाचार दिये जायंगे, इस के लिये प्रारम्भिक दो वर्षो में अनुमानतः ३०००•) रुपय खर्च होंगे।

६०००) रुपय की लागत से ग्रामोद्धारविषयक एक सौ सेट ग्रामोफोन रेकार्ड भी तैयार किये जायेंगे।

(६) "खास स्कीम" कुमायूं डिवीजन के पहाड़ी स्थान में लागू न होगी। फिर भी इस फायदा पहुंचाने के लिए ५००००) रुपय खर्च करने का विचार है और उपयोगी योजनाओं पर विचार किया जा रहा है।

पंजाब

	रु०
(१) खेतों को टुकड़े-टुकड़े होनेसे बचाना	१०४०००
(२) गुजरात जिले के ग्रामों में स्वास्थ्य-सुधार	६०००
(३) गुड़गांव जिले की शंकरगढ़ तहसील में सण्डास	१०,०००
(४) जल प्रबन्ध की योजनायें	२२५०००
(५) टीके की दवा के गुदाम	२००००
(६) रोहतक जिले में पशु चिकित्सालयों का पुनर्निर्माण	१२०००
(७) १० पशु चिकित्सालयो का निर्माण	६००००
(८) ब्राडकास्टिङ्ग स्कीम	४८०००
(९) खाल कमानेकी योजना	७६०००
(१०) फलों का उत्पादन	६२०००
(११) नालीदार कुएं	५००००
(१२) सिनेमा फिल्म और लाउड स्पीकर	५६०००
(१३) मंडों का सुधार	१५०००
(१४) जिला अफसरों को स्वेच्छानुसार खर्च करने के लिये दी जाने वाली रकमें	१०० ००
कुल जोड़ जोड़	८५००००

(१) यह पूर्ण रूप से स्वीकार किया जा चुका है पंजाबके जमींदारों के लिये इस से अधिक फायदे की और कोई बात नहीं हो सकती कि उन के खेतों को टुकड़े होने से बचाया जाय। इस समय ११ जिलों में प्रति वर्ष ६०००० एकड़ के हिसाब से सहयोग समितियों के द्वारा यह काम हो रहा है। ये सहयोग समितियां ८ इंस्पेक्टर और १०४ सब-इन्स्पेक्टरों की जिन्हें सरकार ने अपने खर्च से नियुक्त किया है, देख रेख और नेतृत्व में काम कर रही हैं इन्स्पेक्टर और सब इन्स्पेक्टरों को सहायता के लिये एक ३ असिस्टेण्ट इंस्पेक्टरो और २२ सब इन्स्पेक्टरो का स्टाफ है और इन का खर्च उन व्यक्तियों के चन्दे से पूरा किया जाता है जो खेतों को टुकड़े २ होने से बचाने की दरख्वास्त देते हैं। इस कार्य को शीघ्रतापूर्वक चलाने के लिये एक स्पेशल कन्सोलिडेशन अफसर, ८ इन्स्पेक्टर और ८८ सब इन्स्पेक्टर नियुक्त करने का विचार है। फायदा उठाने वाले जमींदारों से जो कुछ भी रकम मिलेगी उसे अतिरिक्त स्टाफ रखने में खर्च किया जायगा।

(२) इन सुधारों के अन्तर्गत गन्दे नाले बनाये जायंगे, उन के किनारे-किनारे सूखी ईंटें जमाई जायंगी, हाथ से चलने वाले पम्प लगाये जायंगे, दरारेदार कुओं की मरम्मत की जायगी और उन पर कुन डालीं जायगी। इसी प्रकार के और भी काम होंगे। जिला अफसरों की सलाह से गांवों का चुनाव कर लिया गया है। खर्चे का एक तिहाई इस ग्रान्ट से लिया जायगा, एक तिहाई ग्रामों की इस्लाही तरक्की कमेटियों से लिया जायगा।

(३) गुड़गांव जिले की शंकरगढ़ तहसील में अंतड़ियों में पड़ने वाले कीड़ों की बीमारी है। सण्डास बनाने का उद्देश्य यही है कि कीटाणु नष्ट हो जायं और बीमारी न फैले। रुपया छेद करने वाले औजारों और पायदान खरीदने में खर्च किया जायगा। अतिरिक्त खर्च होने पर उसे जिला बोर्ड पूरा करेगा।

(४) जल प्रबन्ध की योजनाओं द्वारा कांगड़ा, शाहपुर, मियांवाली, डेरागाजीखां और झेलम जिले में पीने का शुद्ध पानी पहुंचाया जायगा क्यों कि वहां इस की खास जरूरत है।

(५) उपयुक्त केन्द्रों में टीके की दवा रखने के लिए १०० गुदाम बनाये जायगे जिस से कि जब पशुओं की कोई बीमारी फैले तो टीके तुरन्त लगाये जा सकें। इस का मासिक खर्च जिला बोर्ड बर्दाश्त करेंगे।

(६) सन् १९३३ की बाढ़ में रोहतक जिले के पशु चिकित्सालय की इमारत को बड़ा नुकसान पहुंचा था और जिला बोर्ड उस की मरम्मत नहीं करवा सकता।

अब ग्रांट के खर्च से उस की मरम्मत की जायगी।

(७) घसी और हरियाना को पशुपालन योजना के अन्तर्गत आने वाले देशों में १० नये पशु चिकित्सालय खोले जायगे क्यों कि जिला बोर्डों के पास इस के लिये रुपया नहीं है। जिला बोर्ड इन का मासिक खर्च बर्दाश्त करेंगे।

(८) दिल्ली ब्राडकास्टिंग स्टेशन के अत्यन्त निकट जो जिले हैं जिनके नाम रोहतक करनाल और गुड़गांव हैं, निवासियों की शिक्षा और मनोविनोद के लिये, ४० रिसीवर सेट, दो वर्षों के लिये लगाने का विचार है। भारत सरकार के परामर्श से देहात सुधार कमिश्नर के अधीनस्थ ग्रामों में दिल्ली से उपयोगी कार्यक्रम ब्रौडकास्ट का प्रबन्ध किया जायगा।

(९) बकरे की खालों के निर्यात के लिए पंजाब भारत के प्रमुख केन्द्रों में एक है। और भेड़ की खालों के निर्यात व्यापार पर तो इस का एकाधिकार है। जो चमड़ा विदेशों को भेजा जाता है उस में से केवल ८ फीसदी चमड़ा पंजाब में कमाया जाता है। पंजाब की खालें भी अच्छी होती है और कमाने के मसाले भी वहीं से सप्लाई किये जाते हैं। दो भ्रमणशील प्रदर्शन पार्टियों के साथ-साथ अनुसंधान और प्रदर्शन के लिए एक केन्द्रीय टैनिंग (चमड़ा कमाना) इंस्टीच्यूट खोलने का विचार है।

(१०) ४७००० रुपय विश्वस्त फलों के बागों से पौदे पैदा करने और उन्हें बहुत बड़ी तादाद में सस्ते दामों में वितरण करने में खर्च किये जायंगे और १५०००) रुपये फलों को सुरक्षित रखने की मशीन का प्रयोग और प्रदर्शन के लिए अर्ध-व्यवसायिक रूप से लगाने में खर्च किये जायगे। पूर्वोक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये वर्तमान बगीचे बढ़ा दिये जायगे और नये लगाये जायंगे। दो साल बाद योजना (आत्मनिर्भर) हो जायगी। रकम का दूसरा हिस्सा लायलपुर में डिब्बे का एक कारखाना खोलने में खर्च किया जायगा, क्यों कि पंजाब को फलों की खेती के लिए इस की अत्यन्त आवश्यकता है। आशा की जाती है कि पहले साल बाद से इस कारखाने का मासिक खर्च आमदनी से पूरा हो जायगा।

(११) प्रान्त के अनुभव से सिद्ध है कि नालीदार कुओं से पानी ३०० फी-सदी बढ़ जायगा। कुओं में छोड़े जाने वाले नल और कुओं की कीमत के अलावा सरकार इस समय छेद करने के लिए, चाहे उन से पानी निकले या नहीं, १२ आने लेती है, इस दशा में सर्वसाधारण के प्रोत्साहन और सहायता के लिए सरकार २ साल तक १२ आने फी-फीट की माफी देने का विचार कर रही है। इस में अनुमानतः ५००००) रुपय खर्च होंगे।

(१२) सिनेमा के तमाशे खूब देखे जाते हैं और पंजाब में वे लाभदायक प्रतीत हुए हैं और जनता उन्हें देखने के लिए पैसे भी खर्च करने को तैयार है। स्थानीय सरकार के पास अभी दो भ्रमणशील फिल्मों का सामान है, तीन और एक-एक डिवीजन के लिए चाहिए और एक सुरक्षित रखा रहेगा। इस के अतिरिक्त शिक्षा उद्देश्य के लिए अच्छे और अधिक फिल्मों की आवश्यकता होगी। प्रस्ताव है कि ऐसे फिल्मो पर ३६०००) रुपय खर्च किये जाय और ५०००) रुपये विनोद के फिल्मों के लिए खर्च किये जायं। दो सेट लाउडस्पीकरों का भी प्रबन्ध किया जायगा।

राजकुमार, तुम भूल रहे हो, कहां तो विजयगढ़ का भावी नरेश और कहां एक निर्धन राजपूत कन्या !"

"नहीं विभा, भूल कैसी ! शुद्ध प्रेम के मार्ग में न तो धन दो व्यक्तियों को एकता के सूत्र में बांधने के लिए बंधन ही हो सकता है और न दोनों को अलग रखने के लिए कंटक ही ।

"किंतु तुम्हें तो एक से एक रूपवती राजकन्यायें प्राप्त हो सकती हैं।"

"विभा ! भोली विभा ! शुद्ध-प्रेम के लिए सौन्दर्य जैसी अस्थायी वस्तुयें आकर्षण नहीं होतीं । उसमें इन्द्रियजन्य सुखों की लालसा नहीं होती !। उसका संबंध हृदय से होता है विभा, और आत्मा से । वह धन से खरीदी जा सकने और रूप से बदली जा सकने वाली वस्तु नहीं।"

"राजकुमार ! तुम किस निद्रा में हो ? महाराज को यह कैसे स्वीकार हो सकता है कि विजयगढ़ के भावी नरेश की सहचरी एक निर्धन राजपूत कन्या बने ?"

"अगर कोई भावी विजयगढ़ के नरेश हो तब तो निस्सन्देह अड़चन हो सकती है ।"

'कैसी विचित्र बातें कर रहे हो राजकुमार ? क्या तुम एक निर्धन राजपूत कन्या के लिए राज्य-सुख को लात मार दोगे ?"

"सुख ! राज्य-सुख ? तुम कितनी भोली हो विभा ! सुख तो हृदय की शांति का नाम है । वह राजसिंहासन का दास नहीं, और मुझे ज्ञात है कि उस सुख के लिये जिसे तुम सुख कहती हो—तुम्हीं क्या सारा संसार ही सुख कहता है, छोटा भाई अधिक इच्छुक है । मेरा राज-सिंहासन तो तुम्हारा हृदय है विभा ! यदि मुझे इस पर स्थान मिल गया तो किसी और राजसिंहासन की लालसा न रहेगी ।"

विभा ने अपने चंचल तथा सुन्दर नेत्रों से राजकुमार की ओर देखा। उस की दृष्टि में विस्मय था और स्नेह भी । राजकुमार ने भी अपने बड़े २ नेत्र विभा की ओर फिराये उसकी दृष्टि में सुखद शांति थी और अटल विश्वास भी । और क्षण भर बाद ही दोनों एक दूसरे के बाहुपाश में बंध गये ।

इस समय सूर्य भगवान् जो तीव्र गति से अस्ताचल की ओर पदार्पण कर रहे थे, वह प्रेम-क्रीड़ा देखने के

कहानी

दो आंसू

(ले०—श्री ब्रजमोहन गुप्त रामेश्वर स्ट्रीट, देहरादून)

लिए क्षण भर को ठिठक गये। सायंकालीन मंद पवन पुष्पों की मधुर सुगंधि को चारों ओर फैला रहा था और उस रम्य वाटिका के पत्ते २ को कर रहा था वही अलौकिक संगीत सुनाने को प्रेरित ।

इसी समय किसी मधुर कंठ की ध्वनि सुनाई दी 'चोली चाहिये चोली !' और एक युवती, जिसकी आयु लगभग बाईस वर्ष की होगी, उस ओर से आती हुई दिखाई दी । यद्यपि उसके वस्त्र फटे हुए थे, मुरझाये पुष्प जैसे चेहरे पर चिन्ता के बादल स्पष्ट दृष्टिगोचर होते थे, फिर भी देखने से ज्ञात पड़ता था कि वह भी कभी किसी रम्यवाटिका की कली रही होगी । विभा ने उसे बुलाया और चोली देखी । चोली देखते ही राजकुमार और विभा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । संभवतः राजकुमार ने भी अपने जीवन में पहिले कभी इतनी सुन्दर चोली नहीं देखी थी। यह रेशम के डोरे से बुनी हुई थी और उस पर सलमे सितारे और सच्चे मोतियों का काम था । उसे देखने से ज्ञात होता था कि कम से कम किसी की तीन चार साल की मेहनत का फल है ।

विभा ने उसका मूल्य पूछा । चोली वाली ने दो हजार रुपया बताया। राजकुमार ने उसी समय चोली का मूल्य मंगवा दिया। जिस समय चोली वाली ने चोली विभा को दी और उसके मूल्य को चौकस अपनी उस फटी सी धोती के एक कोने में बांधा तो उसके रोकने का लाख प्रयत्न करने पर भी उसके मुरझाये हुये कमल के समान नेत्रों से निकल ही पड़े "दो आंसू।"

विभा ने सहसा कहा—"अरे तुम रो रही हो जितना मूल्य तुमने मांगा, तुम्हें दे दिया । फिर रोने का क्या कारण ?"

उसने बात टालने का लाख प्रयत्न किया, किन्तु विभा और राजकुमार के आग्रह पर उसे अपनी राम कहानी कहनी ही पड़ी। उसने कहना आरम्भ किया ।

"अब से लगभग दस वर्ष पूर्व की बात है कि हमारे गांव में भयंकर प्लेग का प्रकोप हुआ, उस समय हमारे कुटुम्ब में केवल तीन प्राणी थे। मैं, मेरी माता और मेरे पिता । एक दिन माताजी के अचानक गिल्टी निकल आई । तीसरे दिन उनका स्वर्गवास होगया, और क्रूर प्लेग का आक्रमण हुआ पिताजी पर भी । मेरी आयु उस समय बारह वर्ष की होगी । यद्यपि उस समय मुझे दौड़ धूप दवा दारू का ज्ञान न था और



श्री ब्रजमोहन गुप्त

घर में कोई तीसरा प्राणी भी न था फिर भी पिताजी के एक मित्र की कृपा से उनकी सेवा शुश्रूषा में कुछ भी कमी न आई । वे हमारे घर के समीप ही रहते थे । उनके कुटुम्ब में केवल दो प्राणी थे । वे स्वयं और एक उनका चौदह पन्द्रह वर्ष का पुत्र । वे दोनों तीन दिन तक हमारे ही यहां रहे । रात भर पिता जी के समीप बैठे रहते । तीन दिन तक सोने का नाम भी न लिया । चौथे दिन पिता जी की तबियत अधिक खराब हो गई । वे अपने मित्र से जो उनके समीप बैठे हुए थे बातचीत कर रहे थे। मैंने देखा कि उस समय दोनों की आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी । मैं भीतर बैठी उनकी बातें सुन रही थी और रो भी रही थी, उनकी बातों का महत्व समझ कर नहीं बल्कि उन दोनों को रोता हुआ देख कर । पिताजी कह रहे थे "मुझे अपने मरने की चिन्ता नहीं यह तो संसार का नियम ही है, जो आया सो जायगा अवश्य ।" दो दिन पहले या दो दिन बाद । मुझे तो चिन्ता बच्ची की है । अगर उसका विवाह हो लिया होता तो मैं बड़ी शांति से मरता । उसके भविष्य के सहारे तुम ही हो मनोहर । इसका उसका ध्यान रखना ।" और कहते कहते उनका कंठ रुंध गया वे आगे कुछ न कह सके ।

"आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें आप की बच्ची को आप के पीछे किसी प्रकार का कष्ट न होगा मैं उसे अपनी पुत्री की तरह रक्खूंगा और कोई सुयोग्य वर ढूंढ कर उस का विवाह भी कर दूंगा।" मनोहर ने उत्तर दिया ।

पिता जी ने आवाज दी 'बच्ची' मैं उनके समीप गई उन्होंने मेरा हाथ अपने मित्र के हाथ में पकड़ाते हुए कहा 'लो बच्ची आज से इन्हीं को अपना पिता समझना और इन्हीं की आज्ञा में रहना। ईश्वर तुम्हें सुखी रखे ।'

और इस के पश्चात् वही हुआ जो इस पृथ्वी मंच पर होने वाले नाटक के सूत्रधार की इच्छा थी।' मेरे प्रिय पिता जिन्होंने मुझे नेत्रों की पुतली की तरह रक्खा था, जिन के कारण मुझे माता जी की मृत्यु का भी अधिक दुःख न हुआ था ही मुझ से सदा के लिये अलग हो गये।

इस के पश्चात् मैं उन्हीं के यहां रहने लगी वहां मुझे किसी प्रकार का कष्ट न था हां माता जी तथा पिता जी की स्मृति कभी कभी चित्त को अवश्य विचलित कर देती थी । जब मनोहर मेरी आंखों में आंसुओं की झलक भी देख लेते तो मुझे बड़े स्नेह से अपनी गोदी में बिठा मेरे दुःख का कारण पूछते, मुझे समझाते और मेरे चित्त बहलाने के लिये मुझे इधर उधर की बातें सुनाते इसी प्रकार उन को पिता जी के समान ही सुखद गोद में चार वर्ष व्यतीत हो गये । किन्तु विधाता को यह भी स्वीकार न था एक दिन उन के लिये भी वहीं से जहां माता जी जा चुकी थीं—और पिता प्रस्थान कर चुके थे जहां प्रत्येक ने एक दिन इस नश्वर जगत को त्याग कर प्रत्येक को जाना पड़ता है—निमन्त्रण आ गया और अब हम दो ही प्राणी रह गये। मैं और उनका पुत्र । हम दोनों के पारस्परिक प्रेम ने कुछ ही दिन में उन की मृत्यु का दुःख भुला दिया।'

× × ×

"एक दिन सायंकाल को आंगन में बैठी बुन रही थी । बाहर से हड़बड़ाते हुए आये और कहने लगे 'एक बहुत आवश्यक

कीय कार्य आ पड़ा है । मुझे कल बाहर जाना है ।'

बाहर कहाँ मैंन उत्सुकता म पूछा ।

'भारत वर्ष म भी बाहर योरप । लगभग आठ महीन लगेंगे किन्तु कोई चिन्ता की बात नहीं तुम्हारा सब प्रबन्ध कर जाऊंगा उन्होंन उत्तर दिया ।'

'मैं तो इतन दिनों तक यहा अकली नहीं रह सकती । मुझे भी साथ ही ले चलिय ।' मैंन आग्रह क साथ कहा ।

'यह तो असम्भव है सरोज ! तुम विदेश क झंझटों को नहीं समझतीं ।' मुझे चुप हो जाना पड़ा ।

'यह क्या बुन रही हो?' उन्होंने पूछा ।

'चोली' मैंन उत्तर दिया ।

'हां जब तक मैं आऊंगा इस पूरी कर लेना । फिर इसे अपनी शादी में पहिनना ।' उन्होंन हसत हुए कहा ।

'शादी ! शादी किस के साथ' मेर मुंह म सहसा निकल गया ।

'क्या यह भी बताना पड़ेगा' म्हेंन गम्भीरतापूर्वक कह अपन बाहुपाश में जकड़ और मेरे कपोलों पर कर दो प्रेमचिन्ह अंकित, जिन की स्मृति हृदय मे कवल मृत्यु मिटा सकती है । उस समय मैं पगली सी हो गई । हृदय गति भी तीव्र हो गई थी । लाख प्रयत्न किया कि मैं भी एक बार उनके चरणों को चूम लूं । उन्हें एक बार कह लू—'प्राण नाथ' और अपन हृदय का बोझ हलका कर लूं ।' किन्तु मुंह म एक शब्द तक न निकला और वे अगले दिन चले भी गय हां, मेरी यह सुखद निद्रा भंग हाने म पहिले ही !

उन के पीछे मेरा सारा समय चोली क निकालन में ही व्यतीत होता था । उन क पत्र बराबर आत रहते और वहां सदा पत्रों क रूप में पहुंचत रहने मेर हृदयोद्गार, और इसी प्रकार आठ महीने व्यतीत हो गय मैं रात दिन उन का प्रतीक्षा में रहने लगी । किन्तु एक दिन उनके बदले मिला उन का एक पत्र जिसन मेर ऊपर वज्रपात किया ।

उस में लिखा था—

प्यारी सरोज—

मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम बड़ी व्यग्रता क साथ मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी । तुम्हें एक शुभ सम्वाद सुनाना दूं जिस से सम्भवतः तुम्हें कुछ दुःख हो, किन्तु तुम समझदार हो, परिस्थितियों पर विचारकर तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये । मुझे यहां पर एक तीन सौ रु० माहवार की नौकरी मिल गई है । तुम जानती हो कि यहां पर रहते हुए जीवका उपार्जन का प्रश्न कितना कठिन है । घर में इतने धन नहीं कि चैन से बैठ कर खा पहिन सकें ऐसी अवस्था में मैं नौकरी छोड़ कर आना उचित नहीं समझता । हां, दो वर्ष कार्य करने के पश्चात छः महीने की छुट्टी मिल जायगी तब आकर तुम्हें भी ले आऊंगा । तुम किसी प्रकार का चिन्ता मत करना । तुम्हार लिए यहां म बराबर खर्च भजता रहा करूंगा । पत्र डालन में विलम्ब न किया करो ।

तुम्हारा,

नरेन्द्र ।

वे बराबर मेर पास १०० रु० माहवार भेजते रहे, यद्यपि मैंन कई बार लिखा भी कि मेरे पास इतने रुपये भेजने की आवश्यकता नहीं । पचास भी आवश्यकता से अधिक है । आप को वहां मेरे कारण स्वयं कष्ट न सहने चाहिये । किन्तु वे सदा लिख देते थे इन बातों की चिन्ता न किया करो । मैं चाहता हूं सरोज, तुम्हें वहां किसी प्रकार का कष्ट न हो । तुम्हारे सुख में ही मेरा भी सुख है । शायद उन्हें ज्ञात न था कि रु० म मेरा कष्ट दूर नहीं हो सकता ।

उस मरु भूमि में भी एक उद्यान था, वह था उस चोली का बुनना । जब मैं एकान्त मे बैठी इस चोली को बुनती होती तो प्रायः मेरे कानों में उन के य शब्द गूंजा करते—'जब तक मैं आऊंगा इसे पूरी कर लेना फिर इसे अपनी शादी में पहिनना ।'

'शादी ! शादी किस के साथ ?'

'क्या यह भी बताना पड़ेगा ?'

और इस के बाद ? आह ! वह स्मृति मात्र मुझे में नवजीवन का संचार कर देती और कर देती मेर हृदय प्रदेश में टिमटिमाते हुए आशा दीपक के लिय घी का काम । जब चोली पूरी हो गई, तो मैंन उस सलमें सितारों से सजाना आरम्भ किया, किन्तु एक दिन वह कार्य भी समाप्त हो गया । अब मैंने चोली को सच्चे मोतियों म सजाना आरम्भ किया और इसी खेल में दो वर्ष व्यतीत हो गये और एक दिन वह मुझे मिल हो गया, जिस का मैं दिन रात प्रतीक्षा कर रही थी । वह था उन का पत्र, जिस में उन्होंने लिखा था—।

'मेरी सरोज ! तुम्हें देखने के लिये मेरा मन कितना व्यग्र है यह बतान के लिय मेरे पास शब्द नहीं । मैंने घर का यात्रा आरम्भ कर दी है आशा है तीन महीने में तुम्हारे पास आ जाऊंगा .... ।"

मैंने तीन महीने तार गिन २ कर काटे । किन्तु आह उस निष्ठुर विधाता को मुझे इतना दुख देने के पश्चात सुखी देखना स्वीकार न था । मुझे सूचना मिली कि जिस जहाज में वे आ रहे थे वह जहाज भूमध्यसागर में तूफान आजाने क कारण इटली के समीप डूब गया । और उस जहाज के साथ ही समुद्र मे अन्तर्धान होगया मेरी आशाओं को आधार, मेर दुखी-जीवन का एक मात्र साथी—हां वह मेर जीवन का सहारा भी ।"

उसका कंठ रुंध गया था। उसने बड़ी कठिनाई म कहा — "बहुत रो चुकी बहिन ! हृदय का रक्त भी आंसुओं क रूप में बहा चुकी ! अब इन निष्ठुर आंखों के लिए और आंसू कहां से लाऊं ? और चल दी । मैंन पूछा अब क्या विचार है बहिन ? उसने जाते जाते कहा था "विचार ? मनुष्य के विचार मे क्या होता है वही होगा जो उसे स्वीकार होगा।"

× × × ×

लगभग चार महीन के बाद लोगों न अखबार में पढ़ा —

'विचित्र घटना'

एक यूरोप जाती हुई युवा स्त्री ने, जब जहाज भूमध्य सागर को पार कर रहा था, इटली के समीप जहाज म समुद्र में कूद कर प्राण त्याग दिये । बहुत खोज की किन्तु उसकी आत्महत्या का कुछ कारण ज्ञात न हुआ ।

कारण ? उसकी आत्महत्या का कारण वही निष्ठुर सागर जानता है, जिसके अनन्त आंचल में उसन शरण ली ।

पाकिस्तान की योजना

(पृष्ठ ७ का शेष)

म्भव नहीं । अब तक हिन्दुस्तान से पृथक विधान दिये जाने की बात स्वीकार नहीं की जाती तब तक हम में निश्चिन्तता की भावना किसी तरह स्थान नहीं पा सकती । जबकि बरमा को उसका पृथक पद देकर अलग किया जा रहा है तो क्या कारण है कि पाकिस्तानियों की अपीलों की उपेक्षा करते हुये पाकिस्तान का अलग विधान नहीं दिया गया ?

यदि इण्डिया बिल के समर्थक यह समझें कि बिल पास होने पर हम मान जायेंगे तो वे गलती करते हैं । वे लोग कानून बना सकते है पर वे पाकिस्तानियों का सहयोग विधान में नहीं पा सकते ।

गुलामी की स्थिति

जहां तक पाकिस्तान आन्दोलन का सम्बन्ध है, फेडरेशन ऐक्ट को हम उस समस्या का अन्तिम निर्णय कभी नहीं मान सकते । भारती संघ योजन में हम से जो आत्मघात करने की नीति पर चलने को कहा गया है, उसका हम कभी अनुसरण नहीं करेंगे । अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार में जो हमें प्राप्त हुआ है, उसे हम कभी नहीं दे सकते और न कभी अपने वीरों और शहीदों ने हमें जो कुछ दिया है, उसका बलिदान हो कर सकते हैं ।

हम सब कुछ का बलिदान कर सकते हैं, पर भारतीय संघ योजन में शामिल होकर अंग्रेजों को खुश करने अथवा हिन्दुओं को सन्तुष्ट करने के लिये गले में फांसी लगा कर मर नहीं सकते । गुलामी की यह स्थिति कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान की आधीनता में उसका एक जिला बना कर रहे, हम कभी स्वीकार नहीं कर सकते । अपना पृथक राष्ट्र अस्तित्व कायम रखने का हमारा परम पवित्र कर्तव्य है और हम पूरा करने क लिये हम दृढ़ प्रतिज्ञ हैं ।

विनयपूर्वक निवेदन है कि जिस समय उपर्युक्त प्रस्ताव सभा के सामने पेश था मैं भी श्रीमान की आज्ञानुसार वहां उपस्थित था। प्रस्ताव पर मेरी राय भी दरियाफ्त की गयी थी। परन्तु मैंने कई महानुभावों को बजाय न्यायशीलता की भावना के, बदले, के जज्बे से मुतास्सिर पाकर और प० बुद्धदेव जी को गैर-हाजिर देखकर अपने को उदासीन रखना ही उचित समझा और यह कहकर "चूंकि वातावरण अनुकूल नहीं है इस लिए कुछ भी कहना बहतर नहीं समझता" खामोश रहा और एक दर्शक की तरह सब कार्यवाही देखता रहा। इस कार्यवाही का जो प्रभाव मेरे मन पर पड़ा और जो उस वक्त से अब तक अविचल रूप से चला आता है, वह यह है कि प० बुद्धदेव जी के साथ पूर्ण न्याय नहीं हुआ। कारण निम्नलिखित हैं, आशा है कि उन पर विचार करके उचित कार्यवाही करने की कृपा करेंगे :—

(१) प० बुद्धदेव जी को अन्तरंग सभा की बैठक की तारीख से काफी समय पहले सूचना नहीं दी गई और उनको बतलाया नहीं गया कि अगर तारीख मुकर्ररा पर हाजिर न हुए तो सभा उनके सम्बन्ध में अपना निर्णय उनकी गैरहाजिरी की वजह से स्थगित नहीं करेगी।

(२) उक्त पण्डित जी को अपनी सफाई पेश करने का मौका नहीं मिला। जबकि उनकी गैरमौजूदगी में ही प्रस्ताव पास कर दिया गया यह एक निहायत जरूरी बात थी जिस को ख्याल नहीं रखा गया।

(३) प्रस्ताव गैरमामूली उजलत से पास किया गया, क्योंकि पण्डित जी को हाजिरी की आवश्यकता का सवाल पेश होने पर भी प्रस्ताव को पास ही कर दिया गया फिर सूचना देने का क्या अर्थ था, यह समझ में नहीं आया।

(४) जिन गैरमामूली हालात में उक्त पण्डित जी को यह कार्य करना पड़ा उनकी बारीकी पर कुछ भी विचार नहीं किया गया और ऐसी अवस्था में जिस रियायत के वह मुस्तहक थे, वह उनके साथ नहीं की गयी, बल्कि उसको एक साधारणावस्था का कार्य मानकर अति-निन्दनीय करार दे दिया गया।

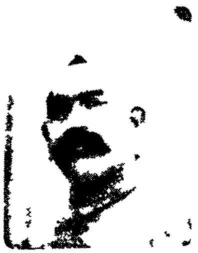
(५) प्रस्ताव में "धर्म-विरुद्ध" आरोप का निर्णय मनु धर्म शास्त्र व श्री स्वामी दयानन्द जी की सम्मति के अनुसार कम से कम १० या बहुत कम हो तो ३ धर्मात्मा विद्वानों की

बुद्धदेव और सार्वदेशिक सभा

(लेखक—श्री रामचन्द्र देहलवी)

उप सभा द्वारा किया जाना चाहिये "धर्माधर्म" जैसी सूक्ष्म और शास्त्रीय बात के निर्णय के लिये चुने हुए धार्मिक विद्वानों की सभा में अतिरिक्त संस्था का फैसला न युक्त हो सकता है और न शान्तिदायक। प्रबन्धकारिणी कमेटी के Jurisdiction से ऐसी बात का निर्णय सर्वथा बाहर है, चाहे उस में कुछ धर्मात्मा विद्वान भी क्यों न शामिल हों।

अन्त के दो कारणों पर जरा विशेष प्रकाश डालना चाहता हूं। प० बुद्धदेव जी शास्त्री की यह पुरानी आदत है कि जब कभी शास्त्रार्थ में सामने वाले पंडित ने उन पर आक्षेप किया कि आर्यसमाजी भी हमारी तरह मूर्ति पूजक हैं क्योंकि ऊखल मूसल की पूजा करते हैं। तो पण्डित जी यथार्थ उत्तर देने के पश्चात् यह भी कह दिया करते थे कि अगर आप को शक है कि हम ऊखल मूसल को पूजते हैं तो लाओ मैं उस के पांच जूते लगा देता हूं और आप भी अपने लगा दीजिये। इस पर अमूमन सनातनी पण्डित खामोश हो जाया करता था और प० बुद्धदेव जी का पल्ला भारी हो जाता था। परन्तु इस दफा प० माधवाचार्य की चालाकी ने इस दलील ने विपरीत गति धारण कर के प० बुद्धदेव जी को ही दबा लिया और रबड़ की गेंद की तरह टप्पा खाकर उन्हीं की ओर वापिस आ गई। यह है वह मुकाम, जहां से प० बुद्धदेव जी की परेशानी व मजबूरी का शुरू होना है। प्रतिवादी यह ओर से कह रहा है कि आज इसी पर फैसला रहा, अगर आप स्वामी दयानन्द की तस्वीर पर लगायें तो आप जीते और हम हारे। तमाम मजमा पण्डित जी की ओर टकटकी लगा कर देख रहा है और इन्तज़ार कर रहा है कि पण्डित जी क्या जवाब देते हैं। और क्या करते हैं। पण्डित जी आप अपने दाम में फंसे हुए सोच रहे हैं कि इस आपत्ति का निवारण कम से कम भौंडे तरीके से कैसे किया जावे। विचार करने को कुछ सैकंड रही हैं। अगर जरा सी देर करते हैं तो असर बुरा पड़ता है लिहाजा पंडित जी ने आर्य समाज के सिद्धान्त की रक्षा के लिये स्वामी जी की तस्वीर को, जोकि मेज पर पड़ी एक किताब के टाइटल पेज पर थी, पांव लगा दिया। जो प्रभाव वहां पड़ा, उस को अच्छी तरह तो वही लोग जानते होंगे, जो वहां मौजूद थे, परन्तु हैदराबाद समाज के मन्त्री के पत्र से यही ज्ञात होता है कि उन को इस घटना का इतना ख्याल नहीं है, जितना कि प० जी के प्रतिज्ञा हेतु का बिना विचार रखते हुए शास्त्रार्थ करने का, और प० वंशीलाल तो स्पष्ट रूप से इस घटना के बुरे प्रभाव का इन्कार करते हैं जिसका प्रमाण यह है कि वहां इसकी वजह से कोई गड़बड़ नहीं हुई। ऐसी सूरत में आप विचार कर सकते हैं कि पण्डित बुद्धदेव जी का यह कार्य साधारणावस्था का काम नहीं था कि पण्डित माधवा



प० रामचन्द्र देहलवी

चार्य ने केवल अपनी ओरसे यह कहा है कि अगर आप मूर्ति पूजक नहीं हैं तो स्वामी जी की तसवीर पर लगा दीजिये और पण्डित जी ने अपनी मूर्खता का प्रमाण दिया है। उनको तो अपनी शुरू की गलती के नतीजे में मजबूरन ऐसा करना पड़ा इसलिये वह ५जून वाली बदसूरत दलील देने के तो दोषी हो सकते हैं परन्तु बाद के फेल के नाम मात्र ही दोषी करार दिए जा सकते हैं श्री स्वामी दयानन्दजी महाराज सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास में भी श्री स्वामी शंकराचार्य के असाधारणावस्था में किये हुए कार्य को कैसा समझते हैं। यह विचारणीय है—

"अब इसमें विचारना चाहिये कि जीव ब्रह्म की एकता जगत मिथ्या शंकराचार्य का निज मत था तो वह अच्छा नहीं और जो जैनियों के खंडन के लिये उस मत को स्वीकार किया हो तो कुछ अच्छा है।" "अनुमान है कि शंकराचार्य आदि ने तो जैनियों के मत के खंडन करने ही के लिए यह मत स्वीकार किया हो क्योंकि देश काल के अनुकूल अपने पक्ष को सिद्ध करने के लिये बहुत से स्वार्थी विद्वान अपने आत्मा के ज्ञान से विरुद्ध भी कर लेते हैं।

ऊपर वाले लेख से साफ जाहिर है कि ऋषि दयानन्द स्वामी शंकराचार्य के मत को, यदि वह उनका निज मत था तो अच्छा नहीं बतलाते यानी वेद विरुद्ध बताते हैं और अनुमान करते हैं कि उक्त आचार्य ने इस मत को शायद देश काल के मुताबिक अपने दावे को साबित करने के लिये बहुत खुदगर्ज आलिमों की तरह अपने जमीर के इल्म के खिलाफ जैनियों के इल्म के खण्डन के लिये ही स्वीकार किया हो। फिर अपनी राय का इज़हार करते हैं कि ऐसी असाधारण अवस्था में यदि शंकर ने इस मत को स्वीकार किया तो अच्छा ही किया अर्थात् अनीति शिष्टाचार और ... के विरुद्ध नहीं किया, परन्तु सार्वदेशिक सभा की निगाह में करीब इसी प्रकार का कर्म उपयुक्त शास्त्र के विरुद्ध है यह समझ में नहीं आ सकता।

इसके अतिरिक्त यह बात विचारणीय है कि केवल जीव और जगत् को अनादि मानने और ईश्वर को जगत्कर्ता न मानने से यदि जैनों का मत वेद विरुद्ध हो सकता है तो क्या जगत्कर्ता परमेश्वर ही एक अनादि सिद्ध मानकर जीव और जगत् को मिथ्या मानने में शंकराचार्य का मत वेदविरुद्ध नहीं हो सकता? मैं निस्संकोच कहूंगा कि इन दोनों मतों के वेदविरुद्ध होने में कोई भी शंका नहीं। फर्क सिर्फ इतना है कि शंकराचार्य वेदानुयायी थे और जैन वेद विरोधी। अर्थात् वेद का मानने वाला वेद विरोधी के मत के खण्डन के लिए वेदविरुद्ध मत को स्वीकार करके उसको बतौर औजार इस्तमाल कर सकता है और निर्दोष ठहर सकता है परन्तु पण्डित बुद्धदेव मूर्ति पूजा जैसे स्पष्ट वेद विरुद्ध विषय के खण्डन के लिए एक वेद के अविरुद्ध क्रिया को बतौर औजार इस्तमाल करने से निर्दोष नहीं ठहर सकते यह आश्चर्य ही है।

बहुत से लोग प्रश्न करते हैं कि क्या ऋषि दयानन्द मूर्तिपूजा के यहां तक खिलाफ थे कि कला शास्त्र के भी मुआफिक नहीं थे? मैं आज कहूंगा कि वह कलाशास्त्र के वहीं तक मुआफिक थे जहांतक कि वह हानिकारक न हो। इसी ग्यारहवें

(शेष पृष्ठ २१ पर)

व्यापार-डायरेक्टरी

आवश्यक वस्तुयें निम्न पते से खरीदिये—

हैजा का अचूक इलाज

विश्वसुधा

है

मूल्य १) प्रति शीशी

विश्वसुधा कार्यालय,
नया बाजार, देहली।

विजयदशमी

का

उपहार

छालियाँ काटने की मशीन

मूल्य ४०)

बाली कम्पनी

चांदनी चौक,
देहली।

जापान की हजारों चीजों के लिए एजेंट चाहियें, सब तरह की काम में आने वाली वस्तुओं के नाम व पते इसमें खुलासेवार लिखे हैं।

दूसरा १९३५ संस्करण **जापान** देश व विदेशों में डायरेक्टरी ख्याति प्राप्त

मूल्य सिर्फ १) पोस्टेज जुदा, आज ही हमें लिखिये:—

मैनेजर—सिन्हा एंड संस, (५) सिन्हा बिल्डिंग, इंदौर सी० आई०।

बांझ स्त्रियों के पुत्र होंगा

बांझ स्त्रियां सब तरह के इलाज और हजारों रुपये खर्च करने पर भी निराश हो चुकी हैं वह हमारी अचूक दवा जो बांझ स्त्रियों को रामबाण क समान है एक या दो माह क खाने स अवश्य गर्भवती होकर पुत्र का सुख पावेगी। अधिक प्रशंसा वृथा है। परीक्षा कीजिये। एक माह की दवा की कीमत ५॥) डाक खर्च। हैरिस ब्रादर्स, कानूनगोयान स्ट्रीट, अलीगढ़।

पिक्चर मर्चेण्ट

हमारे यहां से हिन्दुस्तान मे सब से बड़े स्टाक से सिनेमा स्टार, धार्मिक, सीनरी, सुन्दरियों इत्यादि के चित्रों के नमूने, नियम व प्राइसलिस्ट मुफ्त मंगावें। पिक्चर मर्चेंटों के पते भेजने वालों को, पतों की जांच करके नमूने का सेट मुफ्त दिया जायगा।

दि सेन्ट्रल पिक्चर कम्पनी,
(अ) बल्देव बिल्डिंग, झांसी यू० पी०

१।)
प्रतिवार

३) प्रतिवार

५) प्रति वार

दांतों के सर्व रोगों के लिये
दन्त सुधा मंजन

प्रयोग में लाइये

विश्वसुधा कार्यालय नया बाजार, देहली।

भृगु संहिता

(योगसागर फलित खंड भाषा टीका)

संवत् १९२० से २००० तक संसार भर की जन्म कुण्डलियों का भूत, भविष्य वर्तमान तीन जन्म का हाल ज्ञात होगा। फल सुनकर लोग कहते हैं कर्णपिसाचिनी सिद्ध है। चार मास के लिये रियायती मूल्य ३), पो० ॥) फिर सौ रुपये को भी न मिलेगी, पुस्तकें थोड़ी ही हैं।

भृगु संहिता कुन्डली खण्ड

(भाषा टीका उदाहरण सहित)

सम्वत् १९०० से २००० तक की पृथ्वी भर के मनुष्यों की कुंडली मिलेगा। नष्ट जन्मपत्री बना कर कई रुपये भी सारिखी हैं। मूल्य २) पो० ॥) चार मास तक। फिर सौ रुपये को भी न मिलेगी।

पता—
ज्योतिषरत्न, प० अयोध्याप्रसाद मिश्र
JHANSI झांसी नं० २१

५)
प्रतिवार

असेम्बली में सरकार की हार

(पृष्ठ ४ का शेष)

यह देहली में रख ले । छः महीने बाद सरकार कुछ नहीं देगी, फिर भी उस स्टाफ ज्यों का त्यों रखना पड़ेगा ।

हरिजनो के लिये पानी की व्यवस्था

ग्राम-सुधार के लिए सरकारी सहायता का जो विवरण प्रकाशित हुआ है, उस मे हरिजनों के लिय पानी की व्यवस्था करन की मद खास तौर पर बिहार-उड़ीसा और आसाम के लिए हो रखी गई है, क्या अन्य प्रांता की सरकारों को भी ऐसा करन की हिदायत की जायगी ? प्रो० रंगा क इस प्रश्न पर अर्थ-सदस्य न कहा, मुझे इस बात में कोई सन्देह नहीं है कि जो सरकारें पानी की योजना कर रही हैं, उन्हें हरिजनों का भी पूरा ध्यान है ।

क्वेटा का पुनर्निर्माण

श्री सत्यमूर्ति न पूछा कि क्वेटा के पुनर्निर्माण क लिये क्या सरकार कर्ज लेने का विचार कर रही है ? इस पर अर्थ-सदस्य ने कहा कि इसके लिए आवश्यक रकम में से जितनी के लिए हाउस की इजाजत लेने की जरूरत होगी, उसे पेश किया जायगा । श्री सत्यमूर्ति न कहा कि यह निश्चय करन से पूर्व कि क्वेटा को ही फिर से बसाया जाय या कोई और जगह चुनी जाय, क्या सरकार हाउस की राय लेगी ? परन्तु कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया गया ।

बेगडो-दुर्घटना पर ला-मम्बर के रिमार्क

बेगडा (जबलपुर) में किंग्स-रजिमेंट के गोरों द्वारा स्त्रियों और गांव वालों पर ढाय जाने वाले जुल्मों पर विचार करन क लिए सेठ गोविन्ददास द्वारा पेश किये जाने वाले स्थगित प्रस्ताव पर ला मेम्बर ने यह कहा था कि अभी मामला विचाराधीन है, सम्भव है यह सिद्ध हो जाय, उन्हो ने यह सब आत्म-रक्षा के लिए किया था । इस पर श्री सत्यनारायणसिंह न आपत्ति उठाई कि यह तो अप्रत्यक्ष रूप से मुकद्दमा करने वाले मजि० को ऐसा निर्णय करने की प्रेरणा देना हुआ । पर ला-मेम्बर ने पूरा वाक्य उद्धृत करते हुए कहा कि मेरी यह मन्शा नहीं थी ।

अन्डमान के लिये गैरसरकारी निरीक्षक

होम मेम्बर सर हेनरी क्रेक न कहा कि कालेपानी (अन्डमान) के लिये गैरसरकारी निरीक्षकों का एक बोर्ड नियुक्त करने के बारे में विचार हो रहा है । सर्दियों में वहां का चीफ कमिश्नर देहली आने वाला है तब इस बारे में और विचार होगा ।

पद और भारतीय

होम मम्बरने एक वक्तव्य उपस्थित किया जिस में बताया कि भारत-सरकार के दफ्तर में ऊंचे ओहदों पर कितन हिंदुस्तानी और कितन गैर हिन्दुस्तानी हैं । १६२५ में कुल १४ सेक्रटरियों, २ ज्वायन्ट सेक्रेटरियों, २० डिप्टी सेक्रेटरियो और १२ अण्डर-सेक्रेटरियों में हिंदुस्तानियों की संख्या क्रमशः २,०,३ और ६ थी । अर्थात कुल ४८ ओहदों में सिर्फ ११ हिन्दुस्तानियो को मिले हुए थे। १६३० में य संख्या य क्रमश. १७,५,२०,१२ और ३,१,५ ६ थीं अर्थात ५४ ओहदो म १८ हिन्दुस्तानियों को मिले हुये थे । और १६३५ मे इन का क्रम है '१,७,२०,१' तथा ४,२,६ ६ अर्थात इस वर्ष भी कुल ५५ ओहदों में से सिर्फ २१ पर ही हिंदुस्तानी हैं, शेष सब गैर हिंदुस्तानियों को मिले हुये हैं ।

भारतीय सेना युद्ध के लिये तैयार नही हो रही

आर्मी सेक्रेटरी मि० टौटनहम न कहा कि हिन्दुस्तानी फौज युद्ध के लिये तैयार हो रही है, यह खबर गलत है ।

भारतीय व्यापार

व्यवसाय सदस्य न बताया कि सब स हाल के अंकों क मुताबिक (१) १६३४-३५ में भारत स यूनाइटेड किंगडम (इंग्लैण्ड स्काटलैण्ड और वेल्स) को ४७ ८१ करोड़ ८० का माल गया, जब कि १६३३-३४ में ४७.२१ करोड़ का गया था, अर्थात ६० लाख का ज्यादा गया । (२, यूनाइटेड किंगडम से १६३४-३५ में ५३.७२ करोड़ का माल भारत में आया, जब कि १६३३-३४ में ४७.५६ करोड़ का आया था अर्थात ३१ करोड़ का ज्यादा आया । (३) ब्रिटिश साम्राज्य क अन्य देशों को १६३४-३५ में भारत से २१५३ लाख का माल गया जब कि १६३३-३४ में २६ करोड़ का गया था, अर्थात ८.४१ करोड़ का कम गया । (४) साम्राज्य के अन्य देशों स १६३४ ३५ में ११.६२ करोड़ का माल भारत में आया, जब कि १६३३,३४ में १०.११ करोड़ का आया था, अर्थात १.५१ करोड़ का अधिक आया । इस प्रकार साम्राज्यान्तर्गत देशों से आने वाले माल में ८.२ करोड़ ८० की वृद्धि हुई ।

व्यवसाय-सदस्य ने इस बात को मंजूर किया कि हिन्दुस्तान से बाहर जो माल गया उस में जापान में ज्यादा गया । जर्मनी, फ्रांस, इटली और टर्की को जाने वाले माल में बहुत कमी हुई है, मगर कुल मिला कर विदेशो को जाने वाले माल में वृद्धि हुई है ।

भारतीयो का अपमान

मलाया में मनाये जाने वाले ब्रिटिश सम्राट के रजत-जयन्ती समारोह का जो वर्णन पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ है उस में क कुछ ऐसे वाक्यों की ओर ध्यान दिलाते हुए, जिन मे भारतीयों का अपमान होता है, श्री सत्यमूर्ति न पूछा कि क्या सरकार उस पुस्तक को जब्त करने या इस लिय कोई कार्यवाही करने का इरादा रखती है ? इस पर सर गिरिजाशंकर बाजपेयी न कहा—वहां रहने वाले भारतीयों न इस सम्बन्ध में उज्र उठाया था जिस पर वहां के गवरनर न खुद प्रकाश कर दिया है और भविष्य में पुस्तक क उन अंशों को निकाल दने का आश्वासन दिया है इसलिय अब और कोई कार्यवाही नहीं की जायगी ।

जवाब नहा दिया जा सकता

डा० खानसाहब न पूछा कि सीमान्त में जगो खां की हत्या कराने में क्या सरकारी पोलिटिकल विभाग का हाथ नहीं है ? और श्री सत्यमूर्ति न सरहद्दी कबीलों के प्रवेश क बारे में जानना चाहा । पर मि०अचेसन ने पहले प्रश्न पर आपत्ति की और दूसरे क बारे में कहा—मै इस सम्बन्ध में व्याख्यान माला शुरू कर सकता हूं पर प्रश्न का जवाब नहीं दे सकता ।

बेगडा (जबलपुर) में किंग्स रेजिमेंट के गोरे फौजियों द्वारा मचाये गये उत्पात क बारे में श्री० सत्यमूर्ति न पूछा कि जिन लोगों पर उस में भाग लेने का शुबहा था उन सब पर मुकद्दमा चलाया गया है और जंगीलाट सेना में अनुशासन का भाव दुरुस्त करन क लिय क्या करना चाहते हैं ? परन्तु सेना मन्त्री मि० टौटनहम ने जवाब देने स इन्कार करदिया ।

भारतीय सुवर्ण के लिये विदेशी कम्पनी

श्री आयंगर को जवाब देते हुए मि० मिचल न कहा कि नीलगिरी की जनमन भूमि में से सुवर्ण निकालने की इजाजत 'विनाडगोल्ड डवलेपमेंट कम्पनी लिमिटेड' को दे दी गई है, जिस के डाइरेक्टर अंग्रेज और आस्ट्रेलियन हैं । यह पूछने पर कि यहीं कोई कम्पनी क्यों नही बना ली गई या सरकार न स्वयं ही इस काम को क्यों नहीं उठा लिया, आपने कहा कि यहां से निकलने वाले कच्चे सुवर्ण में सोन का हिस्सा इतना कम होता है कि उस में मुनाफा नहीं हो सकता । 'फिर विदेशी कम्पनी न क्यो यह काम उठाया ?' यह पूछने पर कहा,

—:०:—

दिल्लीका व्यापार

साप्ताहिक रिपोर्ट

चांदी भी सारे सप्ताह अस्थिर रही, कुछ न-कुछ परिवर्तन होते रहे । बाजार का नर्म रुख स्थिर रहा । आज चांदी का भाव ६६।≡) ह, जब कि पिछले सप्ताह ६५।।। थी ।

कपड़े

स्थानीय मिलों की हालत कुछ अच्छी रही । आगामी क लिय आर्डर खूब मिले । स्थानीय कपड़ क बाजार की हालत भी पहले स अच्छी रही ।

अनाज

अनाज के बाजार में स्थिरता रही । गेहू का बाजार एक आना इधर उधर होता रहा । खरीफ की खड़ी हुई फसल की हालत अच्छी है । नहरी पानी दिया जा रहा है । भाव निम्नलिखित हैं :—

गहूं सरबती	२।।।≠)।।
,, सफद	२।।।)
चावल १	१६)
, २	१२)
दालें उर्द	६)
,, मूग	४।)
,, अरहर	७।)

बम्बई की कपास की रिपोट

बम्बई—(२६०१ प्रतिशत) बुआई के रकबे का अन्दाजा पहली अगस्त तक १५६५००० एकड़ था जो कि पिछले वर्ष की संख्या स ३। प्रतिशत अधिक है । इसका कारण यह बतलाया जाता है कि बुआई क समय मौसम अच्छा रहा और पिछले वर्ष कपास का भाव भी करारा बना रहा । फसल अच्छी जमी है और मौसम अनुकूल होन की वजह स अच्छी तरह बढ़ रही है । पूर्वीय प्रांत में कुछ अधिक वर्षा होने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है । नहर क इलाकों में फसल को कीड़ों से कुछ नुक्सान पहुचा है जो कि जून मास के अन्त की वर्षा स प्रायः सब मर मर गये हैं ।

श्री पं० बुद्धदेव जी और आर्य्य सार्वदेशिक सभा

(पृष्ठ २३ का शेष)

समुल्लास के नीचे वाले प्रमाण मे यह सिद्ध हो जावेगा कि वह इस शास्त्र को भो एक मर्यादा में रखना चाहते थे—

'जो कोई धार्मिक राजा होता तो इन पाषाणप्रियों को पत्थर तोड़ने और बनाने और घर रचने आदि कामों में लगा के खाने पीने को देता निर्वाह कराता।''

यानी ऋषि दयानन्द बजरिये राजा के वह इंतजाम चाहते थे कि कोई कारीगर मूर्ति न बनावे ताकि जाहिल लोग कलाशास्त्र को छलांग कर पूजा करने न लग जावें।

पांचवें कारण के सम्बन्ध में भली भांति जानते हैं कि "विरोध" सिद्ध करने के लिये किसी स्पष्टाज्ञा का, जो विधि रूप हो, भंग करना सिद्ध होना चाहिये—जब तक ऐसा न हो, तब तक कोई कर्म विरुद्ध कहा ही नहीं जा सकता। बहुत से काम ऐसे होते हैं कि वेद में न उनका विधान है और न निषेध ऐसे कर्मों को शास्त्रीय परिभाषा में अविहितप्रतिषिद्ध कहते हैं (neither enjoined nor prohibited) इस लिये यह निर्णय करने के लिए कि प० बुद्धदेवजी ने अमुक कार्य धर्मानुकूल किया है अथवा धर्मविरुद्ध किया है या इन दोनों से अलग अविहित, प्रतिषिद्ध की गणना में आता है, मनु शास्त्रोक्त सभा के द्वारा ही होना चाहिये, ताकि नियम का भंग न हो।

इन कारणों की बिना पर मैं विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूं कि एक ऐसी धर्मार्यसभा द्वारा, जिस में आधे आदमी पं० बुद्धदेव जी के तजवीज किये हुये हों और आधे सार्वदेशिक सभा द्वारा नियत किये हुये हों- इस बात का निर्णय करावें कि उन पण्डित जी का यह कार्य धर्म विरुद्ध था कि नहीं, वर्ना कृपा करके पास हुए प्रस्ताव में से "धर्म-विरुद्ध" आरोप को निकाल दिया जाए। नीति व शिष्टाचारविरुद्ध के साथ मैं अविरोधपूर्वक समझौता कर सकता हूं, परन्तु धर्म विरुद्ध ने मुझे बड़ा बचैन किया हुआ है।

मेरा अपना विचार प० बुद्धदेव-जी के सम्बन्ध में यह है कि — वह पांच जूते वाली वजह वकील देने के अवश्य दोषी हैं और उनका तस्वीर तत्सम्बन्धी कार्य निहायत नकनियती से किया हुआ .मौजूदा कानून के खिलाफ और असाधारणावस्था की नीति और शिष्टाचार के अविरुद्ध कर्म है धर्म विरुद्ध मानने में मुझे संकोच है।

अन्त में निवेदन है कि मैं ने यह लेख अपनी आत्मा की आवाज के मुताबिक लिखा है। किसी के विशेष राग या द्वेष के कारण नहीं। इस लिये मैं आशा करता हूं कि इन को ऐसा ही समझा जावेगा। है तो केवल इतना कि जो मेरा नाम है वही इनके पिता का नाम है।

सार्वदेशिक सभा का निर्णय

प्रधान सभा का वक्तव्य

श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार के सम्बन्ध में जो आन्दोलन हैदराबाद के शास्त्रार्थ के सम्बन्ध में उठ रहा है वह शीघ्रता के साथ खत्म हो जावे, इसलिये तथा इसलिये भी कि अनेक स्थानों से पत्र आ रहे थे कि 'यह सभा अपनी सम्मति शीघ्र देवे'' इस सभा ने ११-८ के लिये अन्तरंग सभा की बैठक बुलाई। मीटिंग का नोटिस ता० २ अगस्त को जारी हुआ था और साधारणतया दूर से दूर रहने वाले को भी सूचना मिलने के लिये यह समय काफी से अधिक था। ११-८ की बैठक में यद्यपि पं० बुद्धदेव जी उपस्थित नहीं थे परन्तु उन का वक्तव्य जो सविवरण आर्य वीर लाहौर में छपा था तथा आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के प्रधान महोदय का वक्तव्य भी अन्तरंग सभा में सुनाये गये थे। उनके सुनने के बाद ही सभा ने अपना निर्णय दिया। पं० बुद्धदेव जी को इस निर्णय के सम्बन्ध में दो शिकायतें हैं:—(१) यह निर्णय उनकी अनुपस्थिति में हुआ। (२) धर्म सम्बन्धी व्यवस्था इस सभा को नहीं अपितु धर्मार्य सभा को देनी चाहिये थी।

देहली में जब पं० जी थे तब उनको यह शिकायत मुझ तक पहुंचाई गई थी। मैंने पहली बात के सम्बन्ध में उसी समय प० जी को पत्र लिख दिया था कि आर्य्य वीर पत्र में छपा हुआ उनके नाम से जो वक्तव्य है यदि वह उनका नहीं है अथवा उस में कोई ऐसी बात छूट गई है जो वह सार्वदेशिक सभा को लिखते तो वे उसे लिख कर भेज देवें उस पर अन्तरंग सभा पुनः विचार कर लेगी परन्तु उनका कोई उत्तर जहां तक मुझे मालूम है नहीं आया। २२-८ के अर्जुन में छपे उनके वक्तव्य देखने से प्रगट हुआ कि उसमें आर्य्य वीर में छपे वक्तव्य की अपेक्षा कोई ऐसी नई बात जिस से उनकी सफाई हो सकती हो, नहीं है परन्तु फिर भी यदि पं० बुद्धदेव जी चाहें तो इस दूसरे वक्तव्य से भी छूटी हुई कोई बात अपनी सफाई को लिख कर भेज सकते हैं। सार्वदेशिक सभा का अगली अन्तरंग सभा ता० २९ सितम्बर को होने वाली है- उसमें उस पर विचार कर लिया जायगा। यदि पं० जी चाहें तो स्वयं उपस्थित होकर अपना बयान दे सकते हैं।

(२) धर्मार्य सभा में, केवल धर्म का नाम आजाने मात्र से, कोई विषय, प्रवेशनीय नहीं हो सकता। धर्मार्य सभा का नियम यह है कि जिस सार्वदेशिकसभा भेजे उसी पर वह विचार कर सकती है। धर्मार्य सभा असाधारण शास्त्रीय विषयों पर विचार करने के लिये बनाई गई थी और ऐसा ही काम वह अब तक करती रही है। यह विषय बिलकुल साधारण और इस योग्य है कि सार्वदेशिक सभा की तो कथा ही क्या किन्तु कोई भी आर्य्यसमाज या प्रतिनिधि सभाएं इस पर विचार करके अपना निर्णय दे सकती हैं और दे रही हैं। इस लिये इस शिकायत में कोई सार नहीं है।

यदि प० बुद्धदेव जी ने कोई ऐसी बात अपनी सफाई की प्रगट न की जो अब तक उनके वक्तव्यों में न आ चुकी हो तो वे अपने ही अब तक के वक्तव्यों के आधार पर भूल करने के अपराध से मुक्त नहीं हो सकते और ऐसी अवस्था में इस भूल के लिये पश्चात्ताप करना ही आर्योचित व्यवहार हो सकता है।

मैं अन्त में समस्त आर्य्य पत्रकारों से प्रार्थना करता हूं कि वे इस विषय में अब वाद विवाद खत्म कर दें। यदि कोई नई बात हुई तो २९—९—३५ को अन्तरंग सभा के बाद उसकी सूचना आर्य्य पत्रों को दे दी जायगी अन्यथा यह विषय समाप्त समझा जावे।

नारायण स्वामी
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,
बलिदान भवन, देहली।

(पृष्ठ ४ का शेष)

संधिपत्र का समर्थन करने से इटली और भी खिजा मालूम पड़ता है।

लड़ाई को तैयारियां

लड़ाई की तैयारियां जोरों से जारी हैं। इटालियन फौज अबीसोनिया की सीमा तक पहुंच भी गई। मि० लायड जार्ज ने तो कह भी दिया है कि 'मुसोलिनी अब किसी की अपील व बहाने नहीं सुनेगा, इसलिए राष्ट्रसंघ को उसके विरुद्ध कड़ा कार्यवाही करना चाहिए।' परन्तु मौ० लेवल अभी भी यह यत्न कर रहे हैं कि कोई ऐसा रास्ता निकल जाय कि इटली युद्ध से रुक जाय, इसके लिये उसे जो रिआयतें देनी पड़ें उसके लिये वह ब्रिटेन को तैयार करने का भी इरादा रखते हैं। परन्तु मुसोलिनी ने तो ब्रिटेन की नीयत पर ही हमला कर दिया है, जबकि एक पत्र प्रतिनिधि से उन्होंने कहा कि ब्रिटेन अबीसोनिया को स्वयं हड़पना चाहता है इसलिये हमारे हाथ में उसका जाना से खुश नहीं है।

आधुनिक हिन्दी के तीन युग

(पृष्ठ १४ का शेष)

भाषा प्रवाह दिखलाई पड़ता है। कहानीका क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया है। बीसों कहानी लेखक पैदा होगये हैं। सैकड़ों सुन्दर कहानियाँ लिखी जा चुकी हैं।

कविता-उपवन सभी प्रकार के सुन्दर सुमनों से सुरभित हो उठो है। नाटकों का निर्माण भी तेजी से हुआ है और हो रहा है। अध्ययन साध्य विषयों पर स्वतन्त्र निबन्ध लिखने वाले अनेक पैदा होगये हैं। इतिहास विज्ञान अर्थशास्त्र, दर्शन और विविध कलाओं के ज्ञाता दृष्टिगोचर होरहे हैं। द्विवेदीजी का लेखक समूह परिमित था, दुलारलाल का अपरिमित है। इस समय लगभग २१० प्रमुख हिन्दी कलाकारों के मध्यबिन्दु दुलारलालहैं। वह उनकी रचनाएं धड़ाधड़ छापते हैं उनकी भाषा का संस्कार करते हैं, उनके विषयों का सपादन करते हैं, उनकी कविताओं, लेखों और पुस्तकों को शुद्ध करते हैं। इन सबके ऊपर यह कि यथासाध्य पारिश्रमिक भी देते हैं।

दुलार युग से प्रथम कदाचित् ही किसी लेखक को पुरस्कार मिलता हो 'और मिलता भी था, तो बहुत कम। दुलारेलाल ने क्रमशः गंगा पुस्तकमाला माधुरी और सुधा निकाल कर पुरस्कार को रीति फैलाई। इससे सैकड़ों लेखकों का निर्वाह हुआ। लेखन कला व्यवसाय का रूप धारण करने लगी, और विशुद्ध साहित्यापजीवी अनेक व्यक्ति दिखाई पड़ने लगे। मासिक पत्र के संपादकों को २००) तक वेतन मिला, और लेखकों को ८० रुपये प्रति पृष्ठ तक।

मौलिक रचनाओं का दुलारेलाल ने ढेर लगा दिया। इनमें से बहुत सी साधारण हैं, उनके लेखक अज्ञात, अकुशल हैं, परन्तु दुलारेलाल अपने युग के इन समस्त साहित्य-विद्यार्थियों को लेखक बनाते ही जो रहे हैं। गत कुछ वर्षों में उन्होंने हिन्दी में सबसे अधिक मौलिक पुस्तकें प्रकाशित कीं सबसे अधिक रुपया लेखकों को दिया। अभी दुलार युग का मध्यकाल हो प्रारम्भ हुआ है, किन्तु अब तक दुलारेलाल एक लाख से अधिक रुपया हिन्दी कलाकारों को पारिश्रमिक स्वरूप बाँट चुके हैं। इनमें वर्तमान काल के श्रेष्ठ साहित्यिक भी हैं, और कच्चे पक्के नौसिखिए भी, जिन्हें अन्यत्र पुरस्कार मिलना तो दूर जिन की रचनाएं भी न छपतीं, और जो हिन्दी-क्षेत्र से निराश होकर अलग हो गए होते। उन्होंने भाषा-संस्कार की अपनी अलग शैली बनाई है, जो छापने की कला की दृष्टि से बहुत सुविधाजनक और महत्व पूर्ण है। दुलारेलाल द्वारा संपादित प्रायः सभी ग्रन्थों में एक भाषा, एक शैली एक सा पद-विन्यास, शब्दों का एक-सा रूप आदि मिलेगा। यह उन का घोर अध्यवसाय है। वह एक विपरीत परिस्थितियों में डूबा हुआ नवयुवक कवि है जिस की भावना बहुत ऊंची है, जिस में परिश्रम करने की असाधारण शक्ति है जो हिन्दी के विराट स्वरूप को चरितार्थ करने के स्वप्न देखता है, जो असाध्य साधन की कल्पना कर रहा है जो अपनी साहित्यसेवा से सन्तुष्ट नहीं।

गंगा पुस्तकमाला, माधुरी और सुधा द्वारा, जो इस युग का खास चीज है उदीयमान मौलिक लेखकों ने साहित्य साधना का प्रशस्त मार्ग ही नहीं, आजीविका भी पाई। इस के बाद तो फिर हिन्दी पत्रिकाओं की बाढ़ बह चली। माधुरी के प्रकाशन के एक वर्ष बाद सरस्वती अपनी गाढ़ निद्रा से चौकन्नी हुई। उस ने अपना कलेवर बदल डाला। जो अन्य पत्रिकाएं प्रचलित हुईं, सभी माधुरी सुधा के आदर्श पर। प्रत्येक में प्रतिस्पर्द्धा के भाव उत्पन्न हो गये, और वे अभी तक हैं।

दुलारेलाल ने केवल बालों के गद्य और पद्य के मौलिक लेखक ही पैदा नहीं किये, और साहित्य का पहाड़ ही नहीं खड़ा किया प्रत्युत उन्होंने हिन्दी में एक और भी महत्व पूर्ण बात की। खड़ी बोली के नवीन युग में प्राचीन ब्रजभाषा की काव्य सुधा बह गई थी। प्राचीन कवियों और लेखकों को लोग भूल जा रहे थे। उन कवि कोविदों से लेख और पुस्तकें लिखवाकर वह फिर उन्हें हिन्दी संसार के सम्मुख लाये। इन कृतविद्य कलाकारों में प्रेमघनजी राधाचरणजी गोस्वामी लाला सीतारामजी, रत्नाकर जी व किशोरी लाल जी गोस्वामी आदि मुख्य हैं। दुलारेलाल ने ब्रजभाषा की मुरझा रही बेल को फिर रस सिंचित किया। उनकी रचना में मौलिकता तो थी ही, उन्होंने अचानक अपनी अप्रतिम कवित्वमेधा दिखा कर हिन्दी-संसार को चमत्कृत कर दिया। उन्होंने बिहारी की शैली पर सरसमय दोहों का एक अनोखा संग्रह प्रकाशित कराया। इस दोहावली ने ब्रजभाषा का सर्वप्रथम देव पुरस्कार [illegible] ...

...निक जीवित कवियों में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुए। यह एक ऐसी अद्भुत घटना थी कि हिन्दी-संसार में क्षोभ मच गया। कुछ कलुषित हृदय लोगों ने उन्हें इस सम्मान से वंचित करने के लिये आन्दोलन उठाया, परन्तु प्रायः समस्त हिन्दी संसार ने इस काव्य-ग्रन्थ की मुक्त कंठ से प्रशंसा की, और पुरस्कार के साहसी एवं मर्मज्ञ निर्णायकों ने इस अनुचित और असामयिक आन्दोलन की ओर ध्यान न देकर दुलारेलाल को इस परम सम्मान से पुरस्कृत किया।

दुलारेलाल को यह सोई हुई कवित्व-शक्ति, मालूम होता है, एकाएक ही जाग्रत हुई है। दुलारे दोहावली में महाकवि बिहारी की शैली अवश्य है, पर उद्भावनाएं नवीन और मौलिक हैं। उस में शृंगार ही नहीं, तत्वज्ञान, समाज राजनीति विश्व दर्शन, प्रकृति निरीक्षण और अध्यात्म भी है। अश्लीलता नहीं है वह इतनी परिष्कृत अलंकारिक और सापत्त है कि निस्सन्देह आधुनिक युग में सर्वाधिक श्रेष्ठ है।

परन्तु जिस प्रकार मौलिक साहित्य-सृजन और प्रचार की दृष्टि से दुलारेलाल का मध्य युग है, काव्य की दृष्टि से तो दुलारेलाल का बाल्य काल ही है। अचानक जो प्रतिभा उनकी दोहावली में प्रस्फुटित हुई है, वह एक दिन इस प्रकार पल्लवित होगी कि हिन्दी-साहित्य उसके रस से शताब्दियों तक प्लावित रहेगा यह तो सत्य ही है कि पिछले ५० वर्षों में हमारी भाषा (खड़ी बोली) ब्रजभाषा से बहुत भिन्न होगई है। उसके मुहाविरे और संस्कार तक बदल गये हैं। बिहारी के काल में वह लौकिक भाषा थी। मुंह चढ़ी हुई

(शेष पृष्ठ २८ पर)

विधवाओं की चिन्ता

(पृष्ठ १२ का शेष)

वासनाओं में पड़ कर कितनी ही हिन्दु विधवाओं ने विधर्मियों से सन्तान प्राप्त कर उन्हें हिन्दु कल्पतरु माता के पदपंकज पर कुठाराघात करने के लिये शिक्षित किया है। एक एक विधवा ने अधिक से अधिक सन्तान पैदा करके विपक्ष जातियों की अभिवृद्धि और हिन्दु जाति की अकथनीय क्षति की है। हिन्दू कुल में विधवाओं का सुगमता पूर्वक जीवनचर्या धर्म रक्षा, के साधन उनकी बढ़ती हुई मानसिक पशुिक प्रबलताओं को ठीक उपचर्यता सुलभ न होने के कारण वे अन्यकुल गामिनी होकर भ्रष्ट होती जाती हैं।

आर्य जाति के प्रत्येक परिवार में सहस्रों कुरीतियां विषधर बन कर डस जाती हैं। विधवा विवाह नाक काटने वाली प्रथा बताई जाती है हिन्दुकुल में जिन विधवाओं के दर्शन यम-यातना सदृश दुःखमय और अमंगलजनक बतलाये जाते हैं वह पवित्र हिन्दुस्तान की विधवायें अपनी रक्षा के लिये अन्य जाति के धर्म पूजा पात्र बनकर द्वार पर खड़ा प्रतीक्षा करता रहता है जिन्हें यह हतभाग्य जाति ठुकरा कर निकाल देती है उन्हें भाग्यशाली जातियां हृदय से लगा कर हृदयगामी बना लेती हैं। उन अनेक लाभ और सुख उठाती हैं।

प्रधान नगर और भाग्यशाली कस्बा में भी हिन्दु जाति के अमर शहीद ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और स्वामी दयानन्द सरस्वती के उज्वल प्रकाश और सुधार की चारु रश्मियाँ पहुँच सकी हैं वहाँ विधवाओं के लिये सुन्दर सचालित आश्रम विधवा पुनर्विवाह तक के अनेक सुधार साधन उपस्थित हैं विधवायें अपने मनमिलषित कार्यों में रह कर मनोविनोद में वैधव्य का यन्त्रणा को भुला कर जीवन के दिन बिताती हैं। परन्तु उन विधवाओं के लिये है जो छोटे २ ग्रामों में हृदयहीन धर्मियाओं के पशुओं के आतंक में शिक्षाविहीनता की कलुषित यामिनी में असह्य दुःख भोगती हैं। उनका में विधवाओं का जीवन घोर दुःखमय होता है। 'उस समय नव विवाहित मातृ गृह में अपने बचपन की सहेलियों, भावज ननद श्वसुर गृह ननद जेठानियों का सुख राग रंजन देखती हैं। उस समय उनके हृदय उनके बस में नहीं रहते। वे जीवन को भारवत् समझ कर अन्य मार्ग में जुट जाती हैं। जिस मार्ग निर्णय पर वह पद रखने लगती हैं वही मार्ग हिन्दु कुल के लिए घातक बन बैठता है। इसलिए प्रत्येक देश विशेषतः गढ़वाल सदृश जिले के होनहार नौनिहालों को जिनके हृदय में अपनी जाति के लिए कुछ भी तड़प है उन्हें चाहिए कि वे अपने समाज में ऐसी लहर पैदा करें जिससे कि समस्त विधुर और अविवाहित नौजवान विधवाओं के पाणिग्रहण का स्वीकार करके उन्हें चिर सुखिनी बना कर अक्षय पुण्य प्राप्त करें। बाधाओं की चिन्ता न करते हुए कर्तव्य पालन अपने इष्ट मन में तुल जायें तो देश और विधवा दोनों का भारी कल्याण हो सकता है।

(पृष्ठ २७ का शेष)

थी। यद्यपि अनेक कवियों ने ब्रज-भाषा में इधर भी रचना करने का प्रयत्न किया था, पर वे इतने सफल नहीं हुये थे। दुलारेलाल की ब्रजभाषा खरी है। शब्द और भाव मानो जवाहर तोलने की तराजू पर तोल कर रक्खे गए हैं। यही कारण है कि दुलारे दोहावली के अनुकरण पर पचासों कवि दोहे लिख चुके और लिख रहे हैं।

रायबहादुर प० शुकदेवबिहारी, मिश्र, डाक्टर भगवानदास, प० अयोध्यासिंह उपाध्याय, डाक्टर गङ्गानाथ झा, श्री प० मधुसूदन ओझा, प० बालकृष्ण मिश्र, प० रामचन्द्र शुक्ल, डाक्टर बड़थ्वाल, बाबू मैथिलीशरण गुप्त, निरालाजी, पन्तजी सियारामशरणजी प० अमरनाथ झा पोद्दारजी प्रो रामकुमार वर्मा प्रो जीवनशंकर याज्ञिक प्रो. शिवाधर पाण्डेय प्रो रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' आदि संस्कृत और हिन्दी के धुरन्धर विद्वानों ने दोहावली की असाधारण कवित्व शक्ति और माधुर्य, ओज तथा प्रसाद गुण से ओत-प्रोत बताया है!

सबके अन्त में मैं यह कहना चाहता हूं कि यह दुलारे युग हिन्दी का अशासित, अनियन्त्रित युग है। स्वच्छंदता और निरंकुशता से उन्मुक्त कलाकार मनमानी दौड़ लगा रहे हैं। उन्हें श्रेणीबद्ध करना, व्यवस्थित करना, उनकी परिधि नियमित करना यह इस युग के प्रवर्तक काम है। इस काम के लिए बहुत भारी प्रयास और उद्योग चाहिये। दुलारेलाल काम से भय करने वाले व्यक्ति नहीं। उन्हें अपने युग का ऐसा संगठन करना चाहिए कि जो पद गौरव समय ने उन्हें दिया है, वह अन्त तक उन्हीं का रहे।

हिन्दी साहित्य की प्रगति के सम्बन्ध में श्री चतुरसेन शास्त्री ने एक नवीन दृष्टिकोण से विचार किया है। सम्भव है कि अनेक साहित्यिक उनसे असहमत हों। यदि वे चाहें तो अपने विचार भेज सकते हैं। उन्हें भी स्थान दिया जायगा, परन्तु प्रार्थना है कि लेख संक्षिप्त हो। —सम्पादक

पं० रामगोपाल विद्यालंकार प्रिंटर और पब्लिशर द्वारा अर्जुन प्रेस, ३ श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली में छपा

सचित्र अर्जुन साप्ताहिक

वर्ष १ | अङ्क ४२

Illustrated ARJUN

सोमवार २३ सितम्बर सन् १९३५ ई० : Monday 23rd September 1935



वार्षिक मूल्य ३॥)] सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार एक अङ्क का मूल्य -)

विषय-सूची

विषय		लेखक	पृष्ठ-संख्या
१ बच्चा और कुत्ता			मुख पृष्ठ
२ सप्ताह की डायरी			३
३ सप्ताह की हलचल			४
४ सम्पादकीय			५
५ अमरिका का हिटलर			७
६ अनुभूति	(कविता)	श्री द्विजेन्द्रनाथ	८
७ धिक रिश्वत रानी		श्री जगन्नाथ	८
नारी के प्रति		श्री रामस्वरूप	८
९ जगावें		श्री लक्ष्मीप्रसाद	८
१० हमारी चित्रावलि			९
११ महासमर के प्रहयोग		श्री मकपण यास	१०
१२ महिला जगत			११
विवाहित जीवन सुखी रखने के उपाय			११
कन्या ने स्वयं पति चुना			११
सेवा बनाम वासना		श्री शान्तिस्वरूप गौड़	१२
१३ पाडिना बस्त्र स्वालम्बन		श्री काशीनाथ त्रिवेदी	१३
१४ आयुर्वेद विकित्सा वैज्ञानिक है		श्री पार्वतीप्रसाद	१४
१५ वास्तविक शक्ति पूजा		श्री कालीप्रसाद	१५
१६ कला		श्री यादराम	१६
१७ प्रेमी के पत्र	(कहानी)	श्री जगदीशचन्द्र	१७
१८ साहित्य समालोचन			२०
१९ अपराधी कौन ?	(उपन्यास)		२१
२० सिनेमा की दुनिया			२२
२१ बालबन्धु परिषद्			२३
२२ व्यापारिक जगत्			२४

साप्ताहिक डायरी

१४ सितम्बर

—पूना में पुलिस ने एक दुकान पर छापा मारकर २१ सट्टे बाजों को गिरफ्तार कर लिया।

—बर्लिन की एक खबर से ज्ञात हुआ है कि श्रीमती कमला नेहरू की छाती में अधिक पसीना निकलने के कारण श्वास की गति ठीक हो जाने से उन की तबीयत पहिले की अपेक्षा अच्छी हो गई है। आप का तापमान घट गया है तथा आप अधिक आहार लेने में समर्थ हो गई है।

—कनाडा के प्रधान मन्त्री श्री० ...ट ने देश की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालते हुए ओटावा से अपने ब्रोडकास्ट भाषण में कहा कि 'धनियों की स्वयं प्रेरित उदारता आवश्यक होते हुए भी अपर्याप्त है। इसलिये अधिक रूप से उन पर टैक्स लगाने चाहिये। पूंजी राष्ट्र और प्रजा की सेवा में हो लगनी चाहिए।

१५ सितम्बर

—कोलम्बो में मि० विलियम स्मास नामक एक प्रख्यात शिल्पकार की मोटर एक अन्य मोटरकार से टकरा गई। जिस से मि० स्मास की मृत्यु हो गई।

—करांची की खबर है कि महाराजा काश्मीर डाक के वायुयान द्वारा आज लन्दन से वापिस भारत आ गए।

१६ सितम्बर

—रंगून के एक बाजार में भीषण आग लग जाने से २३ मकान जलकर खाक हो गए। नुकसान का अन्दाजा ३ लाख रुपये का लगाया जाता है।

—दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी के ...री ने म्यूनिसिपल-कमेटी के ... की आजादी को रोकने के ... उनके मताधिकार पर अधिक पाबन्दियां लगाने का प्रस्ताव रखा है।

जापानी मंत्रिमण्डल को बम से उड़ाने तथा राजनीति व अर्थ के नेताओं का खून करने के लिये एक भीषण षड्यन्त्र की तैयारी हुई थी। उस का विस्तृत रहस्य अब खुला है। इस सम्बन्ध में २७ व्यक्तियों पर केस चल रहा है।

—जर्मनी में एक ऐसा कानून ... दिया गया है कि कोई भी ... कहीं किसी आर्य लड़की को नौकर नहीं रख सकेगा। इस से १०००० यहूदी-मित्र लड़कियां और स्त्रियां बेकार हो जायेंगी।

—विद्याधर गांव (जयपुर) में एक खेत पर दो दलों में दंगा हो गया। जिस से एक व्यक्ति मरा और ४ घायल हो गए।

—क्वेटा में माल की खुदाई का काम जारी है। अभी तक ७॥ लाख रुपयों का माल असत तथा क्षत इमारतों से निकाल कर उनके मालिकों को सौंपा जा चुका है।

१७ सितम्बर

—आसाम कौंसिल ने १९३५ के आसाम क्रिमिनल ला एमेंडमेंट बिल की धाराओं पर विचार करके उसे स्वीकार कर लिया।

—अहमदाबाद की खबर से ज्ञात हुआ है कि बम्बई सरकार ने बारडोली आश्रम को, जिसे सरकार ने सत्याग्रह आन्दोलन के दिनों में अपने कब्जे में कर लिया था, कांग्रेस को वापिस देने का फैसला कर लिया है।

१८ सितम्बर

—कौंसिल आव स्टेट में सर एन० चोकसी का प्रस्ताव फीरोज सेठना के संशोधित रूप में ११ के विरुद्ध २४ मतों से स्वीकृत हो गया। प्रस्ताव में सरकार से अनुरोध किया गया है कि वह रद्दी तथा नकली औषधियों की बिक्री रोकने के लिये प्रभावशाली कानून बनाए।

—बम्बई पुलिस ने रूस से आए हुए कम्यूनिस्ट साहित्य की खोज में २० से अधिक मजदूर नेताओं जिन में मेरठ षड्यन्त्र केस के भू०पू० अभियुक्त श्री० निम्बकर श्री० जोगलेकर भी शामिल हैं, के मकानों की तलाशी ली। पुलिस बहुत से आपत्तिजनक कागजात अपने साथ ले गई।

—आगरे में पुलिस कप्तान की नई आज्ञानुसार २० सितम्बर से पुलिस एक्ट की दफा ३० फिर लग जायगी। इसके अनुसार कोई भी पुलिस कप्तान से लायसेन्स लिए बिना जलूस नहीं निकाल सकेगा।

सूचना

—*—

'साप्ताहिक अर्जुन' का आगामी ४४वां अङ्क पाठकों के सम्मुख महिला-अङ्क के रूप में आयगा। ३० सितम्बर के अङ्क की 'अर्जुन' छुट्टी लेगा। ७अक्तूबर को साधारण अङ्क पाठकों की सेवा में न पहुंच कर महिला-अङ्क पहुंचेगा। पाठक तथा एजेन्ट नोट करलें।

—व्यवस्थापक

—शहीदगंज आन्दोलन के सम्बन्धमें सरकार ने रावलपिण्डी में दो मुस्लिम नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।

—कुम्भकोणम् में एक आदमी ने, जो पुलिस की हिरासत में कहीं ले जाया जा रहा था, भागने की कोशिश में असफल होने पर, पुलिस वालों पर हमला कर दिया। पुलिस वालों ने आत्मरक्षा के लिये गोली चलाई जिस से उक्त व्यक्ति मर गया।

—सिसली द्वीप के पास से रात में एक भारी बवन्डर उठा और ब्रिटिश आइल्स की ओर अग्रसर हुआ। इस से ब्रिटेन में आतंक छा गया। शहरों में तारों और वृक्षों से सड़कें पट गई हैं। जहाज भी मुसीबत में हैं। एक जहाज तो डूब भी गया है। तूफान अभी शान्त नहीं हुआ।

—शिमला की खबर है कि श्री० सत्यनारायणसिंह एम० एल० ए० का कमेटी सम्बन्धी पत्रव्यवहार प्रकाशित करने के विषय में आवश्यक प्रश्न अस्वीकृत हो गया। उन्होंने पुनर्विचार के लिये प्रार्थना की है।

—बम्बई के आसपास कई गांवों में जोर का भूकम्प हुआ। ४५ सेकिण्ड तक जमीन हिलती रही।

—मदरास के प्रामाणिक क्षेत्रों से ज्ञात हुआ है कि कोचीन बन्दरगाह के शासन प्रबंध के प्रश्न पर सरकार तथा कोचीन व ट्रावन्कोर के दरबारों में समझौता हो गया। बन्दरगाह का नियंत्रण कोचीन दरबार के हाथ में रहेगा।

१९ सितम्बर

—ब्रिटेन में हवाई तूफान से टेलीफोन की ११००० लाइनें खराब हो गई हैं।

—स्टेट्समैन की खबर है कि फीरोजपुर में रहने वाले संसार के सब से बूढ़े आदमी की मृत्यु हो गई। १०० वर्ष की आयु होने पर इसके बाल काले हो गये थे और दांत नए निकल आये थे। यह व्यक्ति ७८ वर्ष तक पेंशन पाता रहा।

—कोलम्बो की खबर है कि गत ५ महीनों से बान्द्रा बेला में पानी नहीं बरसा है जिस से वहां सूखा पड़ने के आसार नज़र आ रहे हैं।

—अमरोहा (यू० पी०) में ३ दिन की भीषण वर्षा से नदी नालों में बाढ़ आ गई है। चार स्थान पानी से भरे पड़े हैं। सड़कें टूट गई हैं। खेती भी नष्ट हो गई है।

—बम्बई में शेयर मार्केट को अनिश्चित काल के लिये बन्द कर दिया गया है। कारण, सट्टे वाले स्टाक का मूल्य गिरा रहे थे और एक बड़ी जबरदस्त समस्या पैदा हो गई थी।

—बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के इस निर्णय को कि ओहदे स्वीकार करने के सम्बन्ध में विचार करने के लिये, कोई कानफरेन्स न की जाय, ठुकराकर कांग्रेस साम्यवादियों ने कानफरेन्स करने जो प्रयत्न किया है उसके लि... प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी उन ... विरुद्ध अनुशासन सम्बन्धी कार्यवाही करेगी।

ऊपरी आस्ट्रिया के लिंज नामक स्थान पर एक ऐसे षड्यन्त्र का पता चला है, जिसमें १० प्रमुख राजनीतिज्ञों को कत्ल करने की कोशिश की गई थी।

—इलाहाबाद की खबर है कि सरदार शार्दूलसिंह कवीश्वर ... कांग्रेस-कार्यसमिति की सदस्यता से स्तीफा स्वीकार कर लिया गया है।

—लखनऊ कांग्रेस कमिटी के सदस्यों में मतभेद बढ़ता ही जा रहा है। वाइस प्रेसीडन्ट श्रीमती मिसर तथा अन्य कुछेक मेम्बरों ने नगर कांग्रेस कमेटी से स्तीफा दे दिया है।

—न्यू-गायना को जाने वाले तीन ब्रिटिश वायुयानों में से दो वहां पहुंच गए हैं। तीसरा वायुयान लापता बतलाया जाता है।

—खागा तहसील (फतेहपुर) के प्रमुख जमींदार ला० शिवनारायणसिंह अपने दो मित्रों के साथ हटगांव पुलिस स्टेशन से घर लौट रहे थे। मार्ग में कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने उन्हें लूट लिया और गोली से मार दिया।

२० सितम्बर

—दिल्ली के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट व डिप्टी कमिश्नर ने एक विज्ञप्ति निकाल कर ता० २२ सितम्बर से एक मास के लिये दफा १४४ लागू करदी है।

—मोतीहारी से खबर मिली है कि गण्डक नदी में बहनवा घाट के पास एक देशी नाव के उलट जाने से ३० व्यक्ति पानी में बह गये। ... एक डाक हरकारा भी था ... स्त्रियों की लाश मिल चुकी ...

———

असेम्बली

वायसराय की सिफ़ारिश ठुकरा दी गई

काला कानून फिर रद्द

शुरू से आखिर तक धोखा ही धोखा

इस सप्ताह असेम्बली के अधिवेशन में पहले दिन को छोड़ कर कोई विशेष हल-चल नहीं रही। पहले दिन वायसराय का भाषण हुआ, उस में आप ने विविध विषयों की चर्चा करते हुए कहा—

गिलगित वजारत का सिन्ध-नदी पार का इलाका काश्मीर-राज्य से भारत सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया है। उसका स्वामित्व तो अभी भी काश्मीर का ही होगा, पर नियन्त्रण और व्यवस्था सम्पूर्ण रूप में सरकार की होगी।

सिनकियांग या चीनी तुर्किस्तान की परिस्थिति अभी तक अनिश्चित है और वहां की आंतरिक ... के फलस्वरूप कराकारम के रास्ते चीन और भारत में पुराने जमाने में जो व्यापार होता आ रहा था, वह रुक गया है।

भारत के विदेशिक व्यापार के बारे में आपने कहा कि संसार की परिस्थिति में अभी तक कोई सुधार नहीं हुआ है, उलटे इटली व जर्मनी में बाहर से आने वाले माल पर रुकावट लगी है, फिर भी ... तक भारत में सम्बन्ध है, इस वर्ष के प्रथम चार महीनों में गत वर्ष (१९३३) के इन चार महीनों में ४। करोड़ का माल ज्यादा गया है। अलबत्ता जापान ने इस साल गत वर्ष से २॥ करोड़ का रुई कम खरीदा है।

नये शासन-विधान का उल्लेख करते हुए आपने इस बात पर गौरवानुभव किया कि समस्त भारत को एक सूत्र में बद्ध करने का जो प्रयत्न अशोक के वक्त से होता आ रहा था पर पूरा नहीं हुआ था वह आपकी वायसरायलटी में ... यह कानून बनने के रूप में हुआ है।

"वैध उपायों को छोड़ देने या खाली विध्वंस की भावना से विधान पर अमल करने में कोई लाभ न ... ।" यह कहते हुए आपने ... गों से नये विधान को अपनाने ... गह दी—(१) इसमें भारत ... में आबद्ध होता है और ... ज्यान्तर्गत उपनिवेश जिस राजनीतिक सत्ता का उपभोग कर रहे हैं उसको पूर्णरूप से प्राप्त करने की यह आवश्यक और सर्वोत्तम भूमिका है। वैध उपायों को छोड़ देने से तो," आपने कहा, "न हमें पहले ही कुछ हाथ आया है और न भविष्य में ही कभी कोई नतीजा हासिल हो सकता है।'

अन्त में साम्प्रदायिक वातावरण की विभीषिका उपस्थित कर 'ब्रिटिश भारत की शान्ति, सुरक्षा व भलाई' के नाम पर क्रिमिनल ला अमेंडमेंट बिल को स्वीकार कर लेने की अपील करते हुए आपने अपना भाषण समाप्त किया।

शाम को असेम्बली में बिल फिर पेश हुआ।

विरोधी-दल के नेता श्री भूला भाई देसाई ने विरोध करते हुए कहा,—

हम लोगों में थोड़ा-बहुत भी वैधानिक भावना है तो अपने गुरुवार के निश्चय का खयाल करके हम इस को पेश नहीं होने देंगे।

मत लेने पर ५७ के विरुद्ध ६७ मतों से बिल को पेश करने का प्रस्ताव रद्द हो गया।

क्रिमिनल ला अमेंडमेंट एक्ट का रद्द करना

क्रिमिनल ला अमेंडमेंट एक्ट (१९०८) को रद्द करने के श्री भुवनेश्वरदास के बिल पर, साढ़े पांच महीने के बाद, मंगलवार को फिर बहस शुरू हुई।

पिछली बार ला-मेम्बर सर नृपेन्द्रनाथ सरकार का भाषण पूरा नहीं हो पाया था, अतः उन्होंने उसे पूरा किया। उन्होंने यह स्वीकार किया कि आतंकवाद न तो दमन से मिट सकता है और न शासकों के न्याय के अधिकार सौंप देने से। लेकिन आवश्यकता से विवश होकर दमनकारी कानून बनाने ही पड़ते हैं।

समर्थन और विरोध

ला० शामलाल ने, जो ऐसे मामलों में सफाई के वकील रह चुके हैं, जुडीशियल रिकार्ड से कुछ

(शेष २६ पर)

उपसमिति की रिपोर्ट ठुकराई जायगी

इटली लड़ने के लिये तैयार

लड़ाई की हलचल

इटली अबीसीनिया की चर्चा अभी तक कठिन ही होती जा रही है। पांच राष्ट्रों की जो उपसमिति बनी थी, उस की रिपोर्ट तैयार हो गई है।

रिपोर्ट में क्या

कहा जाता है कि कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में निम्न सिफ़ारिशें भी की हैं—

(१) अबीसीनिया के शासन प्रबन्ध को विभिन्न शाखाओं के लिये सलाहकार नियुक्त किये जायं। उक्त सलाहकार किस किस देश के होंगे, यह रिपोर्ट में बतलाया गया है।

(२) इटालियनों तथा अन्य विदेशियों की रक्षा की योजना रखी जाय और इटालियन सीमाओं की रक्षा का विश्वास दिलाया जाय।

(३) ब्रिटिश व फ्रेंच सोमालीलैंड के कुछ हिस्से छोड़े जायं।

दोनों देशों की सरकारें इस पर विचार कर रही हैं। 'डेलीमेल' के रोम स्थित सम्वाददाता से इटली के नानाशाह सीनयार मुसोलिनी ने ५ राष्ट्रों की कमेटी के प्रस्तावों के बारे में निम्न प्रकार कहा है:—

राष्ट्रसंघ की योजना केवल अस्वीकार्य ही नहीं बल्कि उपहासजनक भी है। ×××× कमेटी ने यह समझा है कि इटली अफ्रीका के रेगिस्तान का संग्रहकर्ता है!

रोम में यह अफवाह जोर पकड़ रही है कि इटली का मन्त्री मंडल राष्ट्र संघ की कमेटी द्वारा पेश की गयी समझौते की योजना को ठुकरा देगा और बाद को समझौते की कोई बातचीत नहीं शुरू करेगा

यह भी खबर है कि इटली युद्ध शुरू करने के लिये कोई नियमित घोषणा नहीं करेगा, बल्कि किसी छोटी सी घटना को लेकर संग्राम प्रारम्भ कर देगा।

५ राष्ट्रों की कमेटी की योजनायें अबीसीनिया के सम्राट के पास पहुंच गई हैं। कहा जाता है कि सम्राट उक्त योजना को स्वीकार कर लेगा। इस बारे में विचार करने के लिये सम्राट ने अपने मन्त्री मण्डल की एक विशेष बैठक बुलाई है।

(शेष पृष्ठ २५ पर)

म० गांधी फिर लौटेंगे?

'हिन्दुस्तान टाइम्स' को मालूम हुआ है कि म० गांधी बहुत सम्भवतः राजनीति में पुनः प्रवेश करेंगे।

गान्धीजी के पुनः राजनीतिक क्षेत्र में आने की सम्भावना इसलिये है कि जिन कामों के लिये वह पृथक हुये थे सब अब जम चले हैं।

ग्राम-उद्योग-संघ अपने पैरों पर खड़ा होगया है, उसके लिये ऐसे कार्यकर्ता और साधन जुट गये हैं कि महात्मा गान्धी की अनुपस्थिति में भी काम चलता रह सकता है। हरिजन-कार्य निर्बाध रूपसे हो रहा है और खादी कार्यक्रम में भी सन्तोषजनक प्रगति हो रही है।

यह भी याद रखने की बात है कि म० गांधी हमेशा के ... नीति से नहीं हटे हैं, ... अलग होते समय उन्होंने यही ... था कि जब मैं यह समझूंगा देश की आजादी की लड़ाई में उपयोगी हो सकता हूं तभी पुनः कांग्रेस में आऊंगा।

लेकिन यह सब अभी है सिर्फ कल्पना, यह सही होगी या नहीं, यह तो तभी पता चलेगा जब कि इस साल के अन्त में म० गांधी वर्धा छोड़ेंगे।

पं० रामचन्द्र का अनशन

पशु-बलि का विरोध

पं० रामचन्द्र शर्मा ने कलकत्ते के काली-मन्दिर में पशु-बलि होने के विरोध में गत ५ सितम्बर से आमरण अनशन शुरू कर दिया है। उन की प्रतिज्ञा है कि जबतक उस मंदिर में पशु-बलि बन्द नहीं होगी, तबतक मेरा अनशन जारी रहेगा। पशु-बलि हिन्दू धर्म के विपरीत है। म० गांधी तथा राजेन्द्र बाबू ने अनशन का विरोध किया। लेकिन उन्होंने नहीं माना। कलकत्ते और विशेष कर मारवाड़ियों में इस की बड़ी चर्चा है। खूब सभायें हो रही हैं, परन्तु बंगालियों पर अभी इसका बहुत कम प्रभाव पड़ा है।

श्री रामचन्द्र शर्मा का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया है। मुंह में से खून निकलने लगा है, १०० तक ज्वर रहने लगा है और भी तकलीफ हो रही हैं। यदि अनशन कुछ अधिक समय तक चला तो कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य पड़ेगा। कुछ मारवाड़ी-युवक मन्दिर पर पिकेटिंग लगाने की भी सोच रहे हैं। इस लिए मजिस्ट्रेट ने १४४ धारा लगा दी है।

अर्जुन

सोमवार ता० २३ सितम्बर १९३५ ई०

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

विशेष अधिकारों का दुरुपयोग

(ले०—इन्द्र विद्यावाचस्पति)

भारत सरकार दमन-कानून (क्रिमिनल ला अमेण्डमेंट बिल) को असेम्बली से स्वीकार कराना चाहती थी। असेम्बली ने बहुसम्मति से उसे अस्वीकार कर दिया। वायसराय ने उसे फिर अपनी जबर्दस्त सिफारिश के साथ असम्बली के पास भेजा। असेम्बली ने फिर बहुसम्मति से गिरा दिया। पहली बार विरोधी मतों में १० की अधिकता थी, दूसरी बार वह बढ़ कर १२ हो गई। इस प्रकार देश के प्रतिनिधियों ने दो बार अपना मत स्पष्ट-रूप में प्रकट कर दिया।

यह तो सर्वसम्मत बात है कि वर्तमान असेम्बली पूरी तरह देश के प्रतिनिधियों का सभा नहीं है, उसे हम प्रतिनिधियों की सभा कह सकते थे, यदि उस के सभी सदस्य चुन हुए होते। परन्तु इस समय तो सभासदों का एक बहुत बड़ा हिस्सा सरकार का नौकर है, और एक दूसरा बड़ा हिस्सा सरकार द्वारा मनोनीत होने के कारण सरकारी ही है, ऐसी असम्बली ने दो बार प्रस्तावित दमन-कानून को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। जिसका अभिप्राय सर्वथा स्पष्ट है कि देश दमन कानून को नहीं चाहता।

किसी भी सभ्य देश में असेम्बली के दोबार विरुद्ध मत प्रकाशन का यह परिणाम होता कि वह प्रस्ताव भूमि की बड़ी गहराई में दफना दिया जाता, परन्तु भारतवर्ष चमत्कारों की भूमि है, यहां परस्पर विरुद्ध अनहोनी बातें दिन रात सम्भव होती दिखाई देती हैं। असेम्बली द्वारा दोबार ठुकराये हुए बिल को अपनी सहीसे प्रकाशित करके वायसराय ने उस प्रस्ताव को स्वीकृति की सिफारिश के साथ कौंसिल आव स्टेट में भेज दिया है। कौंसिल आव स्टेट सरकार का गढ़ समझा जाता है, इस कारण सम्भव है, वहां दमन कानून पास होजाय, परन्तु उससे यह सिद्ध न होगा कि देश उस काले कानून को स्वीकार करता है। कौंसिल आव स्टेट की तो उपयोगिता ही यह है कि सरकार को सर्वसाधारण के लोकमत के विरुद्ध सहारा मिलता रहे, उसका मत प्रजा का मत नहीं है वह तो कुछ धनी लोगों का मत है। आशा तो यह की जाती है कि ऐसी कौंसिल आव स्टेट भी शायद दमन कानून को अस्वीकार कर दे।

फिर क्या होगा?

फिर वायसराय महोदय उस कानून को अपने विशेष अधिकार से स्वीकार करके कानून की पुस्तक में चिपका देंगे। पूछा जा सकता है कि देश के सामने ऐसी क्या विकट परिस्थिति आगई है कि लोकमत का सर्वथा तिरस्कार करके वायसराय अपने विशेष अधिकारों का उपयोग में लाये, और दमन कानून को स्वीकार करें? न देश के अन्दर कोई गड़बड़ है, और न बाहिर से कोई आक्रमण हो रहा है। असाधारण परिस्थिति तो दो ही तरह से पैदा हो सकती है। अन्दर से या बाहिर से। देश का राजनीतिक जीवन बिलकुल साधारणगति से चलता प्रतीत होता है, और भारत की सीमाओं को कोई खतरा नहीं, फिर वायसराय को अपने विशेष अधिकारों के प्रयोग की आवश्यकता क्यों प्रतीत हुई?

नये शासन विधान में भी वायसराय को दो विशेष अधिकार दिये गये हैं, वह धारा सभा द्वारा स्वीकार किये गये प्रस्ताव को रद्द (Veto) कर सकता है और धारा सभा द्वारा अस्वीकार किये गये प्रस्ताव को स्वीकार (Certify) कर सकता है। यह दोनो विशेष अधिकार उसे नये विधान में भी प्राप्त रहेंगे। इन विशेष अधिकारों पर प्रारम्भ से भारत-वासियों की ओर से आक्षेप किया गया है। कहा गया है कि इन विशेष अधिकारों से तो प्रजा के मत का सर्वथा विघात होता है, उसका कोई मूल्य ही नहीं रहता। इस आक्षेप का उत्तर सरकार की ओर से यही दिया जाता है और नये विधान में लिखा भी यही है कि यह विशेष अधिकार बहुत कम, विशेष अवस्थाओं में ही व्यवहार में लाये जायगे, परन्तु हम देखते हैं कि उन अवस्थाओं की विशेषता का निर्णय सर्वथा अधिकारियों की मर्जी पर है और उनकी संख्या भी कम नहीं है। देश में कोई विशेष परिस्थिति नहीं है, लोकमत दमन-कानून के सर्वथा विरुद्ध है, फिर भी आश्चर्य है कि वायसराय उसे अपनी मुहर द्वारा स्वीकार करना आवश्यक समझते हैं।

ब्रिटिश गवर्नमेंट चाहती है कि भारत वासी उसकी बात पर विश्वास करें। भारत सचिव और वायसराय बार-बार दुहराते हैं कि भारत-वासियों को नये शासन विधान का प्रारम्भ विश्वास और सहयोग की भावना से करना चाहिये। परन्तु विश्वास और सहयोग ऐसे वातावरण में कैसे पैदा हो सकते हैं। शीघ्र ही भारत पर नये शासन-विधान का परीक्षण होने वाला है। उस के लिये शान्ति और परस्पर विश्वास के वायुमण्डल की आवश्यकता है, परन्तु यहां उनका कोई चिन्ह ही नहीं है, और न कोई इच्छा ही प्रतीत होती है। यदि भारत के राजनीतिक वायुमण्डल को अशान्त और अविश्वास पूर्ण करने का कोई सर्वोत्कृष्ट साधन हो सकता था, तो वह दमन-कानून को असेम्बली से दो बार अस्वीकृत होने पर भी वायसराय द्वारा स्वीकृत करना था, लार्ड विलिंगडन ने भारत छोड़ने से पूर्व वह भी कर दिया। भारत आप के अधिकार काल को चिरकाल तक न भूलेगा।

—:०—

सम्पादकीय विचार

जयपुर के अधिकारियों से

श्री जमनालाल बजाज ने सीकर और जयपुर के जाट आंदोलन के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है। उसमें उन्होंने लिखा है—

जब तक उन कष्टों को दूर नहीं किया जाता तब तक उनको मानसिक शांति नहीं मिल सकती, जो कि वास्तविक उन्नति का चिन्ह है। सन्तुष्ट किसान ही किसी राज्य की असल ताकत हैं। सीकर के वर्तमान शासन के सम्बन्ध में यह लिखना ठीक है कि वहां के शासकों ने भी इस बात को महसूस कर लिया है और मुझे आशा है कि वे यथाशक्ति उन कष्टों को दूर करने का यत्न करेंगे अब तो जयपुर के महाराजा भी विलायत से लौट आए हैं इसलिए आशा की जा सकती है कि वह इस विषय में पूरी दिलचस्पी लेंगे तथा अन्याय नहीं होने देंगे। राजपूतों ने यह अनुभव कर लिया प्रतीत होता है कि जाटों की कुछ मांगें तो [illegible] कम उचित हैं और उन्हें [illegible] नहीं कहा जा सकता और [illegible] बहुत से तो यह मानते हैं कि जाटों को भी नागरिता के वे अधिकार मिलने चाहिये जो कि उनको मिले हुए हैं।

क्या हम आशा करें कि श्रीयुत बजाज की यह अपील बहरे कानोंपर नहीं पड़ेगी और राज्य के अधिकारी क्रियात्मक रूप से इसका उत्तर देंगे।

स्त्रियों पर से पाबन्दी उठी

कौंसिल आफ स्टेट ने महिलाओं पर से मताधिकार की पाबन्दी उठा कर वस्तुतः एक उचित कार्य किया है। स्त्रियां इसके लिये खड़ी हों या न हों, यह प्रत्येक महिला के लिए अपने अपने विचार की चीज है परन्तु स्त्री होने के कारण उन पर कोई प्रतिबन्ध अत्यन्त अवांछनीय है। इस प्रतिबन्ध का स्पष्ट अर्थ यह है कि हम स्त्री को पुरुष की अपेक्षा कम महत्व देते हैं और उसे अयोग्य मानते हैं। इस प्र[illegible] को पास कर कौंसिल आफ स्टेट ने उचित ही किया है। फैक्टरी

अनवरत जागरूकता !

वायसराय ने असेम्बली के भाषण में जंजीबार प्रवासी भारतीयों के प्रश्न पर विचार करते हुए असेम्बली के सदस्यों को यह विश्वास दिलाया है कि मेरी सरकार इस मामले में अनवरत जागरूकता और उद्विग्नता के साथ काम ले रही है।

जंजीबार कोई बहुत बड़ा मुल्क नहीं है। वह ब्रिटिश सरकार का उपनिवेश ही है। इस लिये वहाँ भारतीयों के कष्ट को यदि ब्रिटिश सरकार चाहे तो एकदम रोक सकती है। जंजीबार के भारतीयों का सम्पूर्ण इतिहास श्री पन्तजी के शब्दों में दुःख रंज और अपमान की कहानी है। जंजीबार के लौंग-सम्बन्धी विधान तो निश्चित रूप से जातीय पक्षपात से पूर्ण है। यह मामला साल भर से चल रहा है। ब्रिटिश औपनिवेशिक सचिव भी विचार कर रहे हैं लेकिन अब तक समस्या हल नहीं हुई। यदि किसी देश में ब्रिटेन की गोरी प्रजा के लिये ऐसे ही नियम बना दिये जावें तो क्या ब्रिटिश सरकार भी ऐसा ही अनवरत जागरूकता दिखायगी जैसा कि अब भारत सरकार दिखा रहा है और जिससे एक साल तक भी समस्या का हल नहीं हुआ। हमें निश्चय है कि यदि अंग्रेज प्रजा के लिये कहीं ऐसे अपमानजनक कानून बन जावें तो ब्रिटिश सरकार भरसक कुछ न उठा रखेगी और उस में बदला लेने का भी निश्चय तुरन्त कर लेगी। लेकिन भारत सरकार की अनवरत जागरूकता किसी भी अन्य स्वतन्त्र राष्ट्र की अनवरत जागरूकता से भिन्न होनी चाहिये।

—

गांधी-जयन्ती कैसे मनायें ?

राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद ने सम्पूर्ण राष्ट्र से अपील की है कि वह गांधी सप्ताह समारोह में राष्ट्र के सम्राट म० गांधी की जयन्ती और गत सप्ताह अधिक से अधिक हाथ कती और हाथ बुनी खादी खरीदें। म० गांधी दरिद्रनारायण के सच्चे उपासक हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन दरिद्रों की सेवा में बीता है। इसलिये यदि हम म० गांधी की जयन्ती सच्चे हृदय से मनाना चाहते हैं, तो खद्दर बुन लेने और उसे अधिकाधिक मात्रा में खरीदने के सिवा और कोई अच्छा उपाय नहीं है। खद्दर का अधिकांश भाग किसानों और बुनकरों को ही मिलता है। इसलिये म० गांधी के जयन्ती सप्ताह को मनाते समय यदि हम अधिकाधिक खरीदेंगे, तो म० गांधी के कार्य में भी पूर्ण सहायता दे सकेंगे।

—

अन्त में पशु ही

मनुष्य अन्त में पशु ही रहा और विजय उसी की होगी जिस का पाशविक बल अधिक होगा। इटली और अबीसीनिया की चर्चा के प्रसंग में आयर्लैंड के डी वेलरा ने राष्ट्रसंघ में उक्त शब्द कहे थे। आज की वस्तुस्थिति की इससे अच्छी आलोचना हो नहीं सकती। यूरोप की सम्पूर्ण राजनीति पर, फिर वह चाहे इटली अबीसीनिया सम्बन्धी हो या किसी अन्य साम्राज्यवादी देश के सम्बन्ध में हो ये शब्द पूर्णतः चरितार्थ होते हैं। आज जिसकी लाठी उसकी भैंस की ही उक्ति सर्वत्र चरितार्थ हो रही है। इसीलिये बहुत से राष्ट्र परतन्त्र हैं और बहुत से साम्राज्यवादी। आज सदियों के बाद भी मनुष्य की संस्कृति का विकास पशुत्व तक ही जा सका है। इससे बढ़ कर मानव जाति के लाञ्छन और अपमान की क्या बात होगी? क्या यूरोप के राजनीतिज्ञ कुछ अनुभव करेंगे?

—

पंजाब में जहर

पंजाब में साम्प्रदायिकता का विष बढ़ता जा रहा है। शहीदगंज आन्दोलन के प्रथम डिक्टेटर पीर जमात अली शाह ने हिन्दू बहिष्कार का नया आन्दोलन शुरू किया है। उन्होंने एक सभा में सब श्रोताओं से हाथ उठवा कर प्रतिज्ञा कराई है कि वे न तो खुद किसी हिन्दू की दुकान से सौदा खरीदेंगे और न अपनी स्त्रियों को हिन्दुओं की दुकान पर भेजेंगे। यह आन्दोलन अत्यन्त निन्दनीय और शरारत से भरा है। इन मुसलमान नेताओं को यह समझ लेना चाहिये कि वे हिन्दुओं के सहयोग के बिना जी नहीं सकेंगे। यदि यह बीमारी कहीं हिन्दुओं में फैल जाय, तो मुसलमानों की आफत आ जाय। हमें यह विश्वास है कि यह आन्दोलन सफल न होगा। मुसलमान जनता इतनी भोली नहीं है कि इन साम्प्रदायिक नेताओं के बहकाव में आ कर वह अपना लाभालाभ न सोच सके। जिन से पीढ़ियों से उस का लेनदेन हो रहा है वह छूट नहीं सकता। हाँ इतना अवश्य है कि इस प्रकार के आन्दोलन परस्पर विष फैला देते हैं, जो अन्त में कभी न कभी दुष्परिणाम ही उत्पन्न करेंगे। क्या कभी इन साम्प्रदायिक नेताओं में समझ आवेगी और क्या मुसलमानों के राष्ट्रीय नेता इसे नष्ट करने के लिये प्रयत्नशील होने का कर्तव्य समझेंगे?

यात्रियों से दुर्व्यवहार

ईस्टइण्डियन रेलवे ने श्री मृणाल कान्ति घोष से क्षमा माँग ली, क्योंकि रेलवे अधिकारियों ने उन के साथ दुर्व्यवहार किया था।

रेलवे अधिकारियों का यात्रियों और खास कर तीसरे दर्जे के यात्रियों के साथ दुर्व्यवहार कोई नयी चीज नहीं है। इस की आम जनता को बहुत शिकायत है। श्री मृणालकान्ति घोष समर्थ और शक्ति सम्पन्न हैं। वे अपने अधिकारों को समझते हैं। उन्होंने रेलवे पर दावा दायर कर दिया और रेलवे ने माफी माँग ली। लेकिन लाखों अशिक्षित असमर्थ यात्री तो अपने अधिकारों को पहचानते नहीं और जो पहचानते भी हैं वे इतने समर्थ नहीं हैं कि रेलवे पर मुकदमा चला सकें। लेकिन रेलवे-अधिकारियों को इसी उदाहरण से यह शिक्षा लेनी चाहिये कि रेलवे-अधिकारी जब इतने उच्चशिक्षितों से अपमानजनक व्यवहार करते हैं, तो सर्वसाधारण से तो न जाने किस बुरी तरह पेश आते होंगे। रेलवे-अधिकारियों का कर्तव्य है कि वे यात्रियों को दुःख पहुंचाने वाले कर्मचारियों पर विशेष निगरानी करें और जो भी कोई इस का अपराधी पाया जाय, उसे पर्याप्त दण्ड दिया जाय।

५ लाख से भी कम

कांग्रेस कमेटी ने यह निश्चय किया था कि कांग्रेस के १० लाख सदस्य बन जाने चाहियें। लेकिन अभी तक ५ लाख भी सदस्य नहीं बने, यह हमारे लिये अत्यन्त खेद का विषय है। कांग्रेस के नये शासन-विधान के अनुसार ५०० से कम सदस्य अपना एक भी प्रतिनिधि नहीं चुन सकते। एक दो प्रांत ऐसे भी हैं, जिनके सदस्यों की संख्या ५०० से कम है। इस कानून के अनुसार उन प्रांतों का एक भी प्रतिनिधि लखनऊ कांग्रेस नहीं जा सकेगा। यह अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। कांग्रेस हमारे राष्ट्र की सर्वोच्च और नैतिक संस्था है। उसके १० लाख सदस्य भी नहीं बने यह हमारे आलस्य और पारस्परिक विद्वेष का स्पष्ट परिणाम है। सभी स्थानों पर कांग्रेसी नेताओं में व्यक्तिगत संघर्ष ने कांग्रेस की स्थिति को खराब कर दिया है। लोगों का कांग्रेस के लिए प्रेम है, यह हमारा विश्वास है यदि वे सदस्य नहीं बने तो इसका कारण केवल यह है कि अपने नेताओं के क्षुद्रतापूर्ण झगड़ों से वह ऊब गई है। क्या कांग्रेसी कार्यकर्ता इधर ध्यान देंगे?

निर्यात में कमी

जनवरी १९३५ से जून तक ६ महीनों के व्यापारिक आंकड़े ओटावा पैक्ट के बाद ब्रिटेन से भारत का व्यापार कैसा रहा, इस पर अच्छी तरह प्रकाश डालते हैं। उनको देखने से प्रतीत होता है कि ब्रिटेन की भारतीय कच्चे माल की खरीद में उत्तरोत्तर कमी ही हो रही है। कपास की खरीद में १९३४ की अपेक्षा बहुत कमी हुई है। इसी प्रकार अन्य मालों में भी कमी हुई है। उदाहरण के लिए ऊन ९००० पौं० जूट ८००० टन, अलसी ४४००० टन कच्चा तम्बाकू २००००० पौंड, जूट के कपड़े ३८००० गज, बिना कमाया चमड़ा २०००० टन, कच्चा लोहा (इस पर चुंगी भी नहीं लगती) १०००० टन पिछले वर्ष की अपेक्षा कम खरीदा गया है। ये सच्चाइयें अपनी कहानी स्वयं ही कह रही हैं। क्या अब भी सरकार यह कहने का दावा करती है कि ओटावा पैक्ट से भारत को हानि नहीं हुई।

अमेरिका के हिटलर की हत्या

श्री ह्यू० पी० लौंग के जीवन पर कुछ प्रकाश

संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, सैनेटर लौंग को किसी ने गोली मार दी और डाक्टरों के अत्यन्त प्रयत्न करने पर भी उन की मृत्यु हो गई। श्री लौंग बड़े अनोखा ढंग के राजनीतिज्ञ थे। संयुक्त राष्ट्र में लोक तन्त्र की भावना बड़ी प्रबल है, जब से वह एक स्वतन्त्र राष्ट्र बना है तब से वहां लोकतन्त्र शासन-प्रणाली ही रही है, परन्तु श्री लौंग का मुसोलिनी और हिटलर जैसी तानाशाही में अधिक विश्वास था। आप लुईसियाना प्रान्त के रहने वाले थे और कम से कम उस प्रांत में तो आप की तानाशाही स्थापित हो ही चुकी थी। अभी चन्द दिन पहले आप ने यह घोषणा की थी कि राष्ट्रपति रूजवेल्ट का कार्यकाल समाप्त होने पर जब भावी राष्ट्रपति का निर्वाचन होगा तो आप इस पद के लिये उम्मीदवार बनेंगे। इस समाचार से काफी सनसनी फैली थी क्योंकि लोगों का यह खयाल था कि अगर वह राष्ट्रपति हो गये तो दूसरे मुसोलिनी या हिटलर ही प्रमाणित होंगे और संयुक्त राष्ट्र में लोकतन्त्र का खात्मा हो जायगा। परन्तु इस घोषणा को दस दिन भी न बीतने पाये थे कि किसी विरोधी ने उन्हें अपनी गोली का निशाना बनाकर दूसरे लोक में पहुंचा दिया।

सैनेटर लौंग का जन्म अगस्त सन् १८९३ में हुआ था और इस प्रकार मृत्यु के समय उनकी अवस्था केवल ४२ वर्ष थी। उन का जन्म एक गरीब घर में हुआ था और लड़कपन में उन्हों ने अखबार तथा पेटेंट दवाएं बेचने का भी काम किया था। उन का विद्याध्ययन भी अधूरा ही रह गया था। वह विश्वविद्यालय तक पहुंच तो गये परन्तु बी० ए० पास न कर सके। खैर उन्होंने वकालत की परीक्षा पास कर ली और वकालत करने लगे।

सन १९२४ में श्री लौंग लुईसिआना प्रान्त की गवर्नरी के लिए खड़े हुए, परन्तु निर्वाचित नहीं हुए। १९२८ में वह दूसरी बार फिर खड़े हुए और अब की बार निर्वाचित भी हो गए। गवर्नरी का कार्य काल समाप्त होने में अभी एक वर्ष की देर थी कि वह संयुक्त राष्ट्र की सैनेट (पार्लिमेंट की बड़ी सभा) की मेम्बरी के लिए खड़े हुए और निर्वाचित भी हो गए। इस पर उन के नायब गवर्नर श्री ऐस्टर ने कहा कि सैनेटर हो जाने के कारण श्री लौंग की गवर्नरी का स्वतः खातमा हो गया, और इस लिए अब मैं गवर्नर हूं। लेकिन श्री लौंग इस तरह के कानून कायदों के ऐसे पाबन्द न थे। उन्होंने फौरन हुक्म निकाल दिया कि अगर श्री ऐस्टर पार्लिमेंट में आ कर अपने को गवर्नर कहें तो पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर ले। और इस खयाल से कि कहीं पुलिस उन की आज्ञा का पालन करने में पसोपेश न करे, उन्होंने फौज को भी बुला लिया।

अपनी ऐसी ही हरकतों के कारण श्री लौंग तानाशाही के समर्थक समझे जाते थे। एक बार उन्होंने लुईसिआना के किसानों के नाम आज्ञा निकाल दी थी कि इस वर्ष कोई कपास की खेती न करे ताकि रुई की कीमत चढ़ जाय। इसी तरह एक बार उन्होंने लुईसिआना की पार्लमेन्ट में यह कानून पास करा दिया था कि यदि कर्जदार को कर्ज चुकाने में कोई दिक्कत हो तो उन्हें दो साल की मोहलत अवश्य दे दी जाय। इस से लोगों में इतनी नाराजी फैली कि दुकानदारों ने यह इरादा कर लिया कि हम उधार बेचना ही बन्द कर देंगे। उन्होंने अपनी प्रांतीय पार्लमेंट से यह अधिकार भी प्राप्त कर लिया था कि वह गैस पानी बिजली आदि की कीमत निश्चित कर सकेंगे, और फिर उन्होंने कम्पनियों के नाम यह फर्मान निकाल दिया था कि या तो फौरन अपनी चीजों की कीमत खूब घटाओ, नहीं तो हम जबर्दस्ती घटा देंगे।

श्री लौंग फिर दूसरी बार तो लुईसिआना की गवर्नरी के लिये खड़े नहीं हुये, परन्तु उन्होंने अपने एक पिट्ठू को गवर्नर निर्वाचित करा दिया था और उस द्वारा स्वयं गवर्नर न रहने पर भी वास्तव में शासन वही करते थे। लुईसिआना की पार्लमेंट में अभी उन के आज्ञाकारी सदस्य भरे हुए थे और म्यूनिसिपल बोर्डों आदि में भी उन्होंने अपने पिट्ठुओं की भरमार कर दी थी।

उन के इतने अधिक प्रभावशाली होने का कारण यह था कि उन्होंने कई बातें ऐसी की थीं जिन से साधारण गरीब जनता में वे बड़े लोकप्रिय हो गये थे। उदाहरणार्थ उन्होंने अपने यहां यह नियम बना दिया था कि स्कूलों में पढ़ने वाले लड़कों को किताबें स्कूल से मुफ्त मिलेंगी। कुछ समय से उन्होंने 'सम्पत्ति विभाजन" का आन्दोलन चला रक्खा था जिस का मुख्य सिद्धान्त यह था कि धनी लोगों के पास अधिक रुपया न रहने दिया जाय ताकि गरीबों को अधिक रुपया मिल सके। इस का उपाय वह यह बतलाते थे कि रुपये वाले आदमियों पर खूब भारी इन्कमटैक्स लगाया जाय जब किसी धनी व्यक्ति की मृत्यु हो तो उस के उत्तराधिकारी से सरकार भारी रकम वसूल करे और यह नियम बना दिया जाय कि अगर किसी की वार्षिक आय इतने से अधिक होगी या किसी कुल की कुल सम्पत्ति इतने



श्री ह्यू० पी० लौंग

से अधिक होगी तो बाकी रुपया सरकार का हो जायगा। इस आन्दोलन में उन के समर्थकों की संख्या ५॥ करोड़ बताई जाती है और सारे देश भर में उन के समर्थकों के 'सम्पत्ति विभाजन क्लब' कायम हो गये थे। इस प्रकार के आन्दोलन के समर्थकों की संख्या काफी होना कोई आश्चर्य की बात तो हो नहीं सकता।

श्री लौंग साधारण और गरीब लोगों में यह भावना उत्पन्न करने के लिये कि वह उन्हीं की श्रेणी के हैं इतने उत्सुक रहते थे कि उन के सम्मुख भाषण करते समय जान बूझ कर गलत और गंवारू भाषा का व्यवहार किया करते थे। उन्होंने अपने खास खास अनुयायियों का एक संगठित दल बना लिया था और उसे अपनी प्राइवेट सेना कहते थे। अकसर वह अपने पांच पांच हजार सैनिकों को साथ लेकर फुटबाल मैच देखने जाया करते थे।

श्री लौंग फुटबाल के बड़े शौकीन थे। एक बार उन्होंने एक फुटबाल के खिलाड़ी को लुईसिआना की पार्लमेंट का मेम्बर बना दिया। विद्यार्थियों की एक पत्रिका ने उन के इस कार्य की प्रतिकूल आलोचना कर दी। इस पर उन्होंने उस पत्रिका को बन्द करा दिया और कहा कि लुईसिआना का विश्वविद्यालय मेरा विश्वविद्यालय है, मैं यह सहन नहीं कर सकता कि कोई विद्यार्थी मेरी आलोचना करे अपनी आलोचना रोकने के लिये अगर मुझे एक सहस्र विद्यार्थियों को भी विश्व विद्यालय से निकाल देना पड़े तो मुझे उसमें भी संकोच न होगा।

यदि ऐसा व्यक्ति संयुक्त राष्ट्र का राष्ट्रपति हो जाता तो उस के दूसरा हिटलर बन जाने में किसे सन्देह हो सकता है।

अनुभूति

कुछ मत पूछो ' निर्दय कैसे होते हैं, पहिचान चुका,
कैसे हँस कर ठुकरा देते हैं, यह तो मैं जान चुका।
द्रवित न हो कैसा होता है दयाहीन पाषाण हिया,
निःस्नेही आँखों का कौतुक अब तो मन देख लिया।
देखा है मैंने गरीब के,
रोने पर हंस-हंस गाना।
कोई तड़पे इधर-उधर,
अपने जुल्मों पर इतराना।
अब तक आये भाग्यहीन के,
दुःखों का ताना बाना।
तब प्रमुदित होना, प्रमुदित हो-
उन आहों पर मुसकाना।
रुँधे कंठ से "भूल गई क्या? सुन विरक्ति का बढ़ जाना,
और किसी के कोमल उर का पल भर में मुरझा जाना।
गला जले प्यासे प्राणी का मूक व्यथा में अकुलाना,
पूर्ण पात्र लेकर हाथों में एक बूंद को तरसाना।
टूक-टूक हो जाय कलेजा,
कर निराशा आलिंगन।
रो-रो कर सोये प्राणों को,
रुकती जाती हो धड़कन।
कोई उन का द्वार छोड़ कर,
सूने मग में आ जावे।
उथल-पुथल हो दूर, कहीं फिर-
'शांति शांति' यदि सुन पावे॥
पर तब देखा है:—
मन्थर गति में धीरे-धीरे आ जाना,
जादू वाली उन आँखों में "प्यार करूंगी" कह जाना।

—श्री ब्रिजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'

———०:———

धिक् रिश्वत रानी

(तर्ज आरती)

धिक रिश्वत रानी, धिक रिश्वत रानी
जो कोई बन उपासक, सहे परेशानी
धिक रिश्वत रानी॥
पढ़ अपढ़ हो जावे, साधु अभिमानी
क्षमी बन अधर्मी, ज्ञानी अज्ञानी
धिक रिश्वत रानी॥
दया कूच कर जावे, क्रूर बन दानी
सदाचारी दुष्कर्मी, फिसल जाय ध्यानी
धिक रिश्वत रानी॥
चोर चोरी छोड़, न्यायी निगरानी
साहू चोर बन जावे, चोर बइमानी
धिक रिश्वत रानी॥
नाच, रंग मन भावे, कर नशे पानी
वर्षा-गार मचावें, सन्तति सहलानी
धिक रिश्वत रानी॥
ज्यों आवे त्यों जावे, व्यर्थ खाक छानी
सर धुन-धुन पछतावे निष्फल जिन्दगानी
धिक रिश्वत रानी॥
तेरी आमद आफत, जिस ने ना जानी
पलक चैन नहिं पावे, अन्त धूल-धानी
धिक रिश्वत रानी॥
काटो दूर किनारा, तुझ से महारानी
"जागन" प्रभु का निश दिन रहे महरबानी

—श्री जगन्नाथ उपाध्याय।

—: नारी के प्रति :—

(१)
प्रेममय है सभी तुम्हारा,
जीवन, सरल, सुन्दर वेष!
मातृ-गृह में आई तुम जग को,
देने प्रेम का सत् सन्देश!!

(२)
पवित्र हृदय, कोमल भुज से,
भुला-भुला करके सादर!
दान स्वरूप में सब को देती,
यह विश्व-प्रेम संदेश प्रखर!!

(३)
इस पर भी ये नर करते हैं,
तुम पर अगणित शब्द प्रहार!
धन्य नारि-जाति सब सहकर भी,
करती तुम उन का उपकार!!

(४)
क्रूर स्वार्थ-रत विश्व-मध्य तुम,
फैलाए हो भुजा विशाल!
अमर सरलता का, सेवा का-
देन अभय दान सब काल!!

(५)
अङ्ग प्रत्यंग पुलकित रहता,
करने को सेवा प्रतिक्षण!
समझ सकते हैं सहृदय ही,
उस के सब ये भाव गहन!!

(६)
स्वार्थ-लोभ, उत्सुक समझे क्या,
तुम अनन्त का गौरव गान!
सेवा-योगिन! प्रेम मूर्ति-
तुम्हारे सब कृत्यों का ज्ञान!!

—श्री रामस्वरूप शर्मा, देहरादून।

———

जगावें

हे करुणेश, सुनो विनती हम आज तुम्हें कर जोड़ सुनावें।
देश दुःखी यह आज बड़ा, इसको अब आप न और रुलावें॥
फूट मिटे घर की घर में, सब आपस में अति नेह बढ़ावें।
कर्म करें जग में रह के, हम दीनन के हतभाग्य "जगावें"॥१॥

ज्ञान प्रभा चमके उर में, मद, मोह निशा तम दूर भगावें।
दीन, किसान, अछूत, दुखी, इन के दुःख में हम हाथ बटावें॥
वैभवहीन—करें उन को, नित जो जन दीनन को तड़पावें।
वीर बनें हम भारत में, फिर से नवजीवन-ज्योति जगावें॥२॥

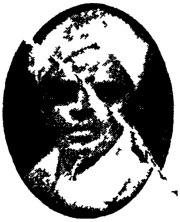
—श्री लक्ष्मीप्रसाद मिश्र "कवि हृदय"।

लार्ड विलिंगडन



आपने क्रिमिनल ला अमेण्डमेण्ट बिल को एसेम्बली के दो बार गिराने पर भी सर्टिफाई कर दिया।

श्री सत्यमूर्ति



आपने वायसराय की आलोचना करते हुये कहा है कि सरकार की हैं धनोति असफल हुई है।

श्री श्यामलाल



आपने सरकार को दिये गये विशेषाधिकारों के दुरुपयोग की असेम्बली में बहुत कहानियां सुनाई।

श्री मालवीय जी



आपने बगाल के बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिये एक बहुत ही मार्मिक अपील की है।

श्री हर्र हिटलर



आपने एक महत्वपूर्ण घोषणा द्वारा यहूदियों को फिर से कुचलने की धमकी दी है।

श्री घनश्यामदास बिड़ला



आप अभी इंग्लैण्ड से कई मास के प्रवास के बाद भारत लौटे हैं और सीधे वर्धा गये हैं।

श्री एच० जी० वेल्स



आप मुंह पर सीढ़ी गिरने के कारण घायल हो गये हैं।

सर शादीलाल



आप लण्डन से स्वास्थ्य सुधार के लिये भारत पहुंचे हैं और बहुत सम्भवतः वापस नहीं आवेंगे।

प्रिंस आफ वेल्स



आप भी अस्वस्थ हैं और वीयना में चिकित्सा करा रहे हैं।

महिला जगत्

विवाहित जीवन सुखी रखने के १५ उपाय

पत्नी का कर्तव्य

पहला नुसखा—पत्नी को पति के नए घर में प्रवेश करने के दिन से ही अपने कर्तव्यों का पालन आरम्भ कर देना चाहिये यहाँ तक कि उस घर में प्रथम ही दिन भोर होते ही अपने पति के लिये चाय बना कर देनी चाहिये।

आपे से बाहर न हो

दूसरा—गृह को शांति बनाये रखने के लिये सीधा-सा नुसखा यह है कि एक ही समय में पति और पत्नी दोनो ही आपे से बाहर न हो जायें। ज्योंही दोनों आपे से बाहर होजाते हैं त्यों ही घर में भारी अशांति भड़क उठती है। जब आग भड़क उठे, तब जिसका मस्तिष्क अधिक ठंडा हो, उसे कमसे-कम उस समय चुप रह जाना चाहिए।

धन का भेद न छुपाओ

तीसरा—पति और पत्नी के बीच धन सम्बन्धी कोई भेद कभी न रहना चाहिये। अवश्य, पत्नी के पास घर का काम चलाने के लिए काफी पैसे होने चाहिए, परन्तु उसे सदा यह पता होना चाहिये कि घर में कितनी रकम है।

पति सर्वोपरि रहे

चौथा—घर की सूची में बच्चे को कभी प्रथम स्थान न दिया जाना चाहिये। आरम्भ में जिस तरह पति को सबसे अधिक महत्व का व्यक्ति समझा जाता है वैसा ही उसे सदैव समझते रहना चाहिये।

पति का स्वागत करने को

पांचवां—अगर पति प्रति दिन सवेर काम पर जाता है और रात में प्रायः एक निश्चित समय पर वहां से लौटा करता है, तो पत्नी को चाहिये कि उस समय उसका स्वागत करने के लिए घर में रहे।

पति की बुद्धिमत्ता

छठा—बुद्धिमान पति वह है जो पत्नी के कहे बिना ही यह समझ जाय कि वह थकी हुई है। उसी समय वह पत्नी को आरामकुर्सी पर आसीन करके अपनी कमीज की बांहें मोड़ कर उन कामों को करने में लग जाता है, जो उसे रात करने हैं।

पति के मन की तरंग

सातवां—किसी पति के मनकी तरंग ऐसी न होनी चाहिए कि उसी के पीछे उसका सारा समय व्यतीत हो। उसके मन की तरंग किसी खास ओर हो तो कोई हर्ज नहीं है, परन्तु उसी में उसका सारा समय न लगना चाहिए।

सम्बन्धियों के झगड़े में जाना व्यर्थ

आठवां—सम्बन्ध के प्रश्न पर मतैक्य होने का नुसखा यह है कि सम्बन्धियों के झगड़ों में न पड़ा जाये पति और पत्नी को अपने सम्बन्धियों की बातचीत गंभीरता के साथ कभी न करनी चाहिए।

भोजन का नियम

नवां—घर में भोजन परोसने में भी खूबी होनी चाहिये। अधिकांश भोज्य पदार्थों का सुन्दर गरम होना आवश्यक है उनमें भिन्नता भी होनी चाहिए और कुछ भी हो उनका ठीक समय पर होना आवश्यक है। जो आदमी भोजन के समय घर नहीं आता, वह आफत बुलाता है।

विवाद से बचना

दसवां—विवाहित जनों को विवादग्रस्त बातों से दूर ही रहना चाहिये। अगर पति और पत्नी में धर्म, राजनीति और कलाओं के सम्बन्ध में मतैक्य न हो तो उन्हें इस सम्बन्धमें मतभेद से बुरा कदापि न मालूम होना चाहिये। खास कर पुरुषों को यह अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि स्त्रियों को भी पुरुषों के समान ही अधिकार हैं, जिन्हें काम में लाने को वे स्वतन्त्र रहती हैं।

विवाह की चटनी।

ग्यारहवां—प्रशंसा करना विवाह की चटनी है। जो स्त्री बराबर अपने पति की प्रशंसा कर रही है, उसे यह दोष कभी नहीं दिया जा सकता कि वह उसका मूल्य नहीं समझती है। इसी तरह वह आदमी अधिक सुखी रहेगा जो यह कहता है कि, मेरी स्त्री विश्वास-पात्र है। जो आदमी यह कहता है कि मेरी स्त्री अच्छी तो है, लेकिन सभी स्त्रियां कभी कभी बेहूदा होती हैं, वह उतना सुखी कदापि नहीं रह सकता।

घर का अभिमान।

बारहवां—अगर पत्नी को अपने घर का अभिमान है, तो उसे साथ ही अपना अभिमान भी होना चाहिये। घर को असबाब की दूकान की भांति बना देना ठीक नहीं है।

विवाह में धन को सर्वोपरि स्थान प्राप्त होता है, यह तो सच है, लेकिन इसके सम्बन्ध में यदि सावधानी से काम लिया जाय, तो आमदनी के भीतर ही खर्च करने में कोई कठिनाई नहीं उपस्थित हो सकती।

बाहर भी एक दूसरे का ध्यान रहे

तेरहवां—पति और पत्नी जब मित्रों के साथ बाहर जाय, तब भी एक दूसरे का पूरा ध्यान रखना जरूरी है। एक दूसरे की उपेक्षा करने से बड़े अनर्थ हो जाया करते हैं और वैवाहिक जीवन दु:खमय हो जाता है।

उदासी ठीक नहीं।

चौदहवां—विवाहित पुरुषों को पत्नी के लिए और पत्नी को अपने पति के लिये हो अपना सारा उदास स्वभाव न बना रखना चाहिये।

नम्रता की आवश्यकता।

पन्द्रहवां—वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने का सब से बढ़िया नुसखा नम्रता है। ज्यों ही पति अपनी पत्नी की और पत्नी अपने पति की उपस्थिति में नम्र होना बन्द कर, त्यों ही सुख की समाप्ति आरम्भ समझना चाहिये।

ऊंची एड़ी के जूते

यूरोपियन महिलाओं में फेशन नहीं रहा

यूरोपियन महिलाओं के फेशन में अभी हाल में ऐसा परिवर्तन हुआ है, जिस का सभी जगह स्वागत किया जा रहा है। सब लोग जानते हैं कि नीची एड़ी का जूता सब से अधिक आरामदेह और स्वास्थ्यप्रद होता है, परन्तु फेशन के आगे इन सब बातों की उपेक्षा कर दी गयी। जैसे किसी जमाने में ऊंची एड़ी के जूते का फेशन जोरों से चला था वैसे ही अब नीची एड़ी के जूते का रिवाज चल पड़ा है कि कहा जाता है कि नीची एड़ी के जूतों का रिवाज अब फिर इतना चल पड़ा है कि ब्रिटेन के जूते बनाने वाले कारखाने इस मांग की पूर्ति के लिए रात दिन काम करने में लगे हुए हैं।

अब इतनी नीची एड़ी के जूते का फैशन चला है कि जूते चप्पल के समान ही समतल बनने लगे हैं। कुछ लोगों को इस में बड़ा खतरा दिखलाई दे रहा है। उनका कहना है कि जो महिलायें इतने दिनों से ऊंची एड़ी के जूते पहिनती आई हैं, उनके लिए एकाएक नीची एड़ी के जूते पहिनना बहुत ही कष्टकर होगा।

कन्या ने अपना पति चुना

पिता का असन्तोष

तवरधार जिले के शहर में कुछ महीनों से एक युवती की विशेष रूप से चर्चा हो रही है। कहानी इतनी करुणाजनक है कि उस को प्रकाश में लाना कुछ आवश्यक सा प्रतीत होता है। मोरेना के एक कुलीन सज्जन की चार कन्यायें हैं। प्रथम कन्या का विवाह हो चुका है। द्वितीय कन्या का विवाह गत फरवरी मास में किया जाने वाला था। बारात भी आ गई थी, परन्तु इस समय ऐसी घटना हो गई कि जिस से उक्त कन्या की करुण कहानी लोगों के सामने आ गयी। सुना है कि जिस समय विवाह की चर्चा हो रही थी उसी समय लड़की ने अपने माता पिता से कह दिया था कि उसने अपनी इच्छा से अपना पति चुन लिया है और वह उसीसे विवाह करेगी। कन्या का चुना हुआ वर कन्या के पिता को बिलकुल पसन्द न आया। वह युवक पाठशाला का अध्यापक सुधारक सज्जन का सज्जाता उनकी कन्याओं को भी पढ़ाता पिता ने लड़की को सब तरह समझाया। उसके पसन्द [illegible] को गरीबी में होने वाला की भी खूब चर्चा की कि पर इसका कोई असर फिर भी लड़की की इच्छा उसका विवाह एक [illegible] साथ करना तय कर लिया [illegible] युवती ने महारानी ग्वालियर की सेवा में एक पत्र लिखा, जिसके परिणाम स्वरूप ता० ८—९—१९३५ को ७ बजे सवेरे एक इन्सपेक्टर कुछ सिपाहियों को लेकर कन्या के घर पहुंचे और पिता व पुत्री के बयान लिये। पुत्री ने सुना है, स्पष्ट कह दिया कि शादी उसकी मर्जी के खिलाफ तय की गई है यदि वह शादी करेगी तो अपने पसंद किये हुए वर के साथ ही करेगी। इस पर पुलिस ने पिता पुत्री को हवालात में ले जाने की बात कही। किसी प्रकार पिता ने पुलिस से लड़की समझाने का समय मांगा और इस अपमान से बचने के लिए पुत्री से कहा कि उसका विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध न होगा। अपने घराने की मान मर्यादा तथा माता पिता की रक्षार्थ पुत्री ने पुलिस को लिख दिया कि वह शादी के लिए तैयार है। पुलिस के चले जाने के

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सेवा बनाम वासना

पश्चिमी शिक्षा में त्रुटि

(ले०—श्री शान्तिस्वरूप गौड़)

समय का प्रत्येक पग एक अनोखी विचित्रता के साथ आगे बढ़ता है कभी वह अन्धा बन किसी दलदल में जा फंसता है और कभी उस भाग्यशाली स्थानमें जा पहुंचता है, जहां थोड़े मे परिश्रम से ही सुख की अतुल-राशि प्राप्त हो जाती है। मनुष्य का सुख दुःख भी समय के भाग्यशाली एवं भाग्यहीन होने पर ही निर्भर है। समय के सुख में ही मनुष्य का सुख है और उस के दुख में ही मनुष्य का दुख। इस का अनुभव मनुष्य पगपग पर करता चला आ रहा है। एक वह समय था, जब भारत में धन धान्य की प्रचुरता थी, जीवन का सुख था और भगवान की भक्ति के साथ साथ सांसारिक सुख की बहुलता थी, परन्तु आज दिनों देख रहे हैं कि इन में से एक भी नहीं। समय के फूटे भाग्य के साथ सब कुछ खो गया। न धन धान्य ही रहा, न जीवन का सुख ही और न भगवान की भक्ति ही रहा। मनुष्य के जीवन का ह्रास हो रहा है, जो समय के फूटे भाग्य का द्योतक है।

दुर्भाग्य के साथ साथ भाग्य इतना हीन हो ... सोचते ही रोंगटे खड़े ... हैं, शरीर में से प्राण से ... जाते हैं। वे दिन कितने सुन्दर ... समय भाग्यशाली था और ... । वह समय ऋषियों ... काल का है। उन स्वर्णीय ... मनुष्य सत्यवादी थे, ... थी । प्रेम का ... की अवहेलना ... थी, भगवान की भक्ति थी। प्रत्येक मनुष्य के जीवन का लक्ष्य होता था, जिस तक पहुंचने के लिये उस को सब सामग्री पूर्ण मात्रा में मिलती थी। स्त्री-पुरुष दोनों धर्म-पूर्वक अपनी पूर्ण-आयु समाप्त कर उस अवस्था के बन्धन को छोड़कर इस लोक से उस लोक को चले जाते थे। परन्तु अब वह भाग्यशाली समय नहीं। अब वह अभागा समय दानवता का सेवक बना हुआ है। जिस के फलस्वरूप भारत में अराजकता, झूठ, व्यभिचार, नास्तिकता और अनेक प्रकार के दुखों का प्रसार सामान्य है। पुरुष समझते हैं कि पाप में ही जीवन का सुख है। स्त्रियां विचारती हैं कि ढोलकी न पीटकर तबले पर चोट करना ही श्रेयस्कर है। गृहदेवियां न बन कर अदालती हाकिम बनना ही अधिक उपयुक्त है।

निर्मूल धारणा

कुछ काल बीता, स्त्री शिक्षा को पुनर्जीवित होते देख कर भारतवर्ष की अतृप्त आंखें इन कुमारियों की ओर लगी थीं। देश को इन से बड़ी बड़ी आशाएं थीं। पुरुषों का एक बहुत बड़ा समुदाय समझता था कि भारत में अब फिर उसी दाम्पत्य सुख के दर्शन होंगे, लेकिन अब देख रहे हैं, हमारी वह धारणा निर्मूल थी। पश्चिमी ढंग से दी जाने वाली इस दूषित शिक्षा ने समाज का रूप और विकराल एवं घृणास्पद कर दिया। अंग्रेजी के केन्द्रों में ऊंची शिक्षा का अध्ययन करने वाली आर्य कुमारियों ने अपने रीति रिवाज, धर्म कर्म आदि सब ही कुछ भुला दिये। जिस के कारणवश दाम्पत्य, जीवन सुखी होने के विपरीत और दुःख-मय होगा। दिन प्रति-दिन घरों में देखते हैं कि सास और बहू की आपस में बनती ही नहीं। वैदिक धर्म में किसी अंश तक ज्ञान रखने वाली सास अपना धर्म समझ बहू को अपने आधिपत्य में रखना ठीक समझती है तो इस के विपरीत नवीन वायु मण्डल में, नये ढंग से शिक्षा प्राप्त करने वाली बहू उसका यह अत्याचार समझ अपनी सास को घृणा की दृष्टि से देखती है, अपनी स्वतन्त्रता में सास को बाधक समझ कर वह उस से कटु वचन बोल बोल कर उस का सर्वदा तिरस्कार करती रहती है। मां बेटे से बहू के उद्दण्ड एवं विचारहीन स्वभाव की शिकायत करती है। तो बहू पति से सास को बेवकूफ आदि शब्दों से सम्बोधित कर उसे अनधिकारिणी सिद्ध करने का भरसक प्रयत्न करती है। बेचारा निर्दोष पुरुष एक दिन बहुत तंग आकर आत्महत्या करके अपने जीवन का अन्त कर देना ही उपयुक्त समझता है और प्रायः ऐसा ही होता है। मां के इकलौते पुत्र की दशा का यह करुणा-चित्र आंखों में आंसू ला देने की पूर्ण सामर्थ्य रखता है। मां रो रो कर जीवन व्यतीत कर देती है।

जहां भारतवर्ष के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि आज दिन स्त्री समाज शिक्षित होता जा रहा है, वहां यह बड़े दुख की भी बात है कि स्त्रियां शिक्षित होकर भी वैदिक संस्कृति को न अपनाकर पश्चिमी सभ्यता की ओर ही झुकी जा रही हैं वे नहीं चाहती हैं कि वे ऊंची-ऊंची शिक्षा प्राप्त करके घर तथा देश के लिये लाभकारी सिद्ध हों, बल्कि इस के विपरीत पढ़ लिख कर वे गृहस्थ से छुटकारा पाकर पुरुषों के समान नौकरियां करना ही पसन्द करती हैं। उन की यह नीति प्रकृति के विरुद्ध अनधिकार चेष्टा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। अपने शरीर की रचनानुसार स्त्रियां गृहदेवी के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकतीं। जिस से उन का सब से पहिला धर्म अपने घर के लिये लाभकारी ही बनना है। घर ही उन का देश है। घर को सुचारू रूप से चलाने से ही स्त्री देश की सेवा कर सकती है, अन्यथा नहीं। घर में भोजन बनाना, बच्चों का पालन पोषण करना, सास-श्वसुर की सेवा करना और पति को ही सर्वस्व समझना स्त्री की सबसे बड़ी घर और देश के लिये सेवा है। स्त्री के लिये यही गौरवकी बात है। उसका सबसे बड़ा त्याग इसी में छिपा हुआ है। इस की पुष्टि के लिये श्री प्रेमचन्द जी कहते हैं—'सोचिये, जिस देवी की आप पूजा करते हैं, वह सिंहासन से उतर कर आप के साथ सपड़ २ खाने लगे तो आप की भक्ति बनी रहेगी? गृहिणी अपने त्याग, सेवा और प्रेम से घर पर हकूमत करती है। स्त्री अपनी निस्वार्थ सेवाओं से ही घर का सब से जरूरी अंग बन जाती है। परन्तु अब गृहिणी का पद छोड़ कर वे विलासिनी बनती जा रही हैं और उन अमीर-जातियों की नकल कर रही हैं, जो संसार को लूट कर अपना घर भर चुकी हैं।' स्त्रियां घर की देवी हैं। देवी को अपना उच्च-स्थान त्याग कर विलासमय नीच-स्थान में पहुंचना शोभा नहीं देता। वैदिक-सभ्यता द्वारा मिला हुआ गौरव छोड़ कर अंग्रेजी सभ्यता द्वारा केवल नुमायश और विलास की वस्तु बन कर अपनी दिव्यता को नष्ट करना कोई बड़प्पन की बात नहीं।

उपर्युक्त कथन में मेरा यह आशय कहीं भी नहीं है कि स्त्रियों की बढ़ती हुई शिक्षा में रुकावट पैदा कर दी जाय या उन को शिक्षा से बिलकुल वंचित ही कर दिया जाय, बल्कि मैं तो वैदिक-धर्म के अनुसार स्त्रियों की शिक्षा भी उतनी आवश्यक समझता हूं, जितनी कि पुरुषों की। वेद कन्या को सब से पहिले ज्ञानोपार्जन की ओर ही संकेत करते हैं, लेकिन उनका संकेत इस लिए नहीं कि वे घर से बाहर पुरुषों की भांति जीविका-उपार्जन करें, बल्कि इस लिये जिस से उनके हृदय का अज्ञानान्धकार दूर हो जाय और वे गृहस्थी का भार संभालने के लिए उपयुक्त सिद्ध हो सकें। वे विद्वान बन कर संसार सागर में अपनी जीवन नौका को सफलता-पूर्वक उस पार लेजा सकें। अपनी सन्तान को अर्जुन, भीष्म, ध्रुव, और गार्गी के समान बना सकें। परन्तु आजकल की बढ़ती हुई यह नई सभ्यता स्त्रियों को प्रेम और सेवा के वायुमण्डल से निकाल कर वासना और निर्लज्जता की ओर लेजा रही है। स्त्रियां गृह के स्वतन्त्र-कार्य को भूल कर पुरुषों के साथ परतन्त्र-कार्य में हाथ-पैर पीटना ही उचित समझती चली जा रही हैं। ऐसी शिक्षा से भारत-माता को कोई लाभ नहीं। यह उनकी शिक्षा में दोष ही नहीं, बल्कि महादोष है, जिस से उनकी शिक्षा निष्फल हो जा रही है।

(पृष्ठ ११ को शेष)

बाद पिता ने पुत्री को शादी के लिए फिर दबाया, पर वह किसी प्रकार राजी न हुई। पिता का संकट तथा बहिन की वेदना को देख कर तीसरी कन्या ने कहा कि पिताजी बरात न लौटाइये। मेरी शादी कर दीजिए। उधर बराती भी बिना शादी किए लौटने की अपेक्षा इस प्रस्ताव पर राजी होगए और आये हुवे लड़के के साथ उक्त सज्जन की तीसरी कन्या की शादी होगई। तब से, कहते हैं यह दूसरी कन्या अनेक कष्टों का शिकार हो रही है। मगर उसने दृढ़ संकल्प कर लिया है वह अपनी प्रतिज्ञा पर डटी हुई है। पिता अच्छे सुधारक विचार के हैं, उदार भी हैं, न मालूम इस वक्त वे ऐसी सकारणता में किस तरह फिर गए हैं। यदि वे चाहें तो उक्त युवक की भी अच्छी स्थिति कर सकते हैं।

इस घटना की ओर पिता सहृदयता के साथ देखें उनकी स्वाधीन शिक्षा का क्या यही परिणाम होगा कि उनकी कन्या दारुण वेदनाओं की शिकार बनी रहे?

हमारी वास्तविक शक्ति पूजा

(ले०—श्री कालीप्रसाद "विरही")



दुर्गा

दुर्गा पूजा का त्यौहार वर्ष में एक बार नहीं दो बार आकर हमारे उजड़, उपवन और टूटे खंडहरों में ऋषि का वही पवित्र सदेश सुना जाता है कि यदि तुम अपनी तथा अपने राष्ट्र की शत्रुओं से रक्षा करना चाहते हो और संसार मे विजयी बनना चाहते हो तो उसी शक्ति की उपासना करो जिस की शुंभ निशुंभ आदि दैत्यो से त्राण पाने के लिए देवताओ ने की थी! उसी दुर्गा मैया पर विश्वास रखो जिस ने राजा सुरथ को विजय वैजन्ती माला पहनाई थी। किन्तु हमें इतना सुध कहां जो हम ऋषि के वचनो का सुनने और समझने का कष्ट करें। आप की हमारी दुर्गा-पूजा वास्तविक दुर्गा पूजा नहीं, वरन् यदि मैं सत्य कहू तो मुझे कहना चाहिये कि आप, हम वास्तव में शक्ति पूजा के नाम पर अपनी शक्ति और समय का दुर्पयोग कर रहे हैं। कोरी जय जयकार का कोई अर्थ नहीं है और न थोथी श्रद्धा का कोई मूल्य! आज हम प्रत्येक वर्ष जिस प्रकार बकर भैंसे काट कर दुर्गापूजा का पवित्र त्यौहार भ्रष्ट करते हैं वह हमारी प्रतिष्ठा को कलंकित करने का उद्योग है! न कि शक्ति की उपासना उस शक्ति की उपासना जो निरीह प्राणियों की रक्षा करना है और वि.... का दमन!! यदि हम सच्चे सपूत और भारतीय होने का अभिमान करते हैं तो हमें अपनी भारतीयता की रक्षा करने के लिए कोई काम ऐसा नहीं करना चाहिए जो हमारे देश की प्रतिष्ठा को गिराने वाला अथवा हमारे पूर्वजों की बुद्धि पर अविश्वास उत्पन्न करने-वाला हो। अन्यथा न हमें भारतीय कहाने का ही अधिकार है और न अपने को "आर्य्यपुत्र" कहलाकर दंभ करने का हक!

मैं अपने पिछले लेख में जिस में नेमैं गणेश जी के स्वरूप के संबन्ध में, कुछ निवेदन करने का साहस किया था, यह लिख चुका हूं कि हमारी अधिकांश पौराणिक कथाएं, उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति अलंकार प्रधान कविताएं हैं! और उन कविताओं की तह में ऐसे २ जगमगाते अमूल्य रत्न छिपे हुए हैं जिन के सन्मुख विश्व की आंखें चौंधिया जाती हैं। और जिन्हें हम न दुर्भाग्यवश या तो कंकड़ समझ कर उपेक्षा करते है अथवा अन्धश्रद्धा से उन्हें पूजा मात्र की वस्तु समझ कर मस्तक झुका दिया है! और सच तो यह है कि हमने अपने पूर्वजों की आज्ञाएं पालन करना, नहीं उन्हें पूजना ही अपना कर्त्तव्य समझ लिया है, जो आज हमारे इस वर्तमान पतन के कारणों में से एक प्रधान कारण है!

यदि हम दुर्गा सप्तशती नामक ग्रन्थ से-जिस की आज हम कथा सुनकर ही शक्ति प्रसन्न होने की कल्पना कर लेते हैं—उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति अलंकार हटा दें और संक्षेप में कहें तो कथा इस प्रकार रह जाती है कि "जब देवता शुंभ निशुंभ आदि दैत्यों से अपनी २ रक्षा न कर सके तो उन्होंने एकत्रित होकर शक्ति की उपासना की जिस से एक शक्ति का अवतार हुआ--जिस ने शुंभ निशुंभ आदि दैत्यों का संहार किया" यह है वह मूल कथा जिस पर 'दुर्गा सप्तशती' जैसे महाकाव्य की रचना हुई है और कथावाचक पंडितों की 'दूकान' हो रही है! और यदि हम इस से भी अधिक स्पष्ट शब्दों में ऋषि का सदुद्देश्य व्यक्त करना चाहें तो हमें इस प्रकार कहना चाहिए कि "देवताओं के एकत्रित होकर प्रार्थना करने पर 'संघ शक्ति' ने अवतार लेकर शुंभ निशुंभ आदि दैत्यों का नाश किया"। और आज जिसे मानने में शंका की गुञ्जायश ही नहीं रहती क्योंकि 'संगठन' में उस शक्ति का निवास है जिस के सन्मुख विश्व की बड़ी से बड़ी शक्ति का भी सिर झुका देना पड़ता है! किन्तु बेचारे मार्कण्डेय ऋषि को क्या खबर थी कि उनकी भावी सन्तान उनकी 'कविता पर ओफल पुष्प चढ़ा कर उसे निर्जीव प्रतिमा की भांति से पूज कर उसका अपमान करेगी।

इतना ही नहीं, भारतीय चतुर चित्रकारों ने मार्कण्डेय ऋषि के कथा के आधार पर दुर्गा का जो चित्र निर्माण किया है, उसने ऋषि के पावन उद्देश्य के साथ मिलकर 'स्वर्ण में सुगन्ध' का काम किया है, आइये आज उस पर भी विचार करलें।

दुर्गा के वैसे तो अनेक रूप-रंग के चित्र बनाये जाते हैं किन्तु, सब में एक ही भाव निहित है— सब का जन्म एक ही उद्देश्य को लेकर हुआ है। सब एक ही ध्येय को चित्रित करने के लिए अंकित किये गये हैं। आप दुर्गा के अधिकांश चित्रों में देखेंगे कि उनके चरणों तले 'शंकर' हैं जो वैराग्य की प्रतिमा है! दुर्गा के एक हाथ में तलवार है और दूसरे में नर मुण्ड तीसरे हाथ में रक्त का खप्पर, और चौथे हाथ से 'अभय' का संकेत है! दुर्गा के इस भावपूर्ण चित्र से जो उपदेश हमें मिलता है वह यह है कि यदि हम संसार में विजयी बनना चाहते हैं यदि हम विश्व में जीवित बनकर रहना चाहते हैं तो हमें वैराग्य की भावनाओं को कुचल कर-पैरों तले रौंध कर, खड़े हो जाना चाहिये। हमारे एक हाथ में अपने तथा अपने राष्ट्र के शत्रुओं के दमन के लिये तलवार की धार के समान नष्ट करने की, काट डालने की शक्ति होनी चाहिये, और साथ ही दूसरे हाथ में अपना मस्तक भी, होना चाहिये अर्थात प्रत्येक वीर को दूसरों पर विजय पाने से पहले अपना मस्तक हथेली पर समझना चाहिये। और भी स्पष्ट शब्दों में उसे आत्मबलिदान करने के लिये सदा उद्यत रहना चाहिये। और जहां यह दोनों शक्तियां हों वहीं अपने आश्रित और भयातुर निरीह प्राणियों को अभय कर देने की सामर्थ्य भी चाहिये आज के आपके ये शुंभ निशुंभ जो आपको सुख की नींद नहीं सोने देते, आपके अधिकारों पर अपना कब्जा किये बैठे हैं आप के एकत्रित होते ही, आप के 'संघ-शक्ति' को जन्म देते ही अपने आप नष्ट हो जायगे। उन बेचारों में तो रक्त बीज की शक्ति भी नहीं, मैं समझता हूं तभी होगी हमारी वास्तविक शक्तिपूजा! उसी दिन हम अपने को शक्ति का उपासक कहने के अधिकारी होंगे, अन्यथा मुझे यह कहने दीजिये आप बकरे भैंस काट कर, मिठाई से देवी की पूजा कर, मांस मदिरा का भोग लगाकर और सप्तशती की कथा सुन



कालीप्रसाद 'विरही'

कर कभी भी अपने शत्रुओं का दमन नहीं कर सकते! वरन् उल्टा अपने सिर निरीह प्राणियों को धर्म के नाम पर काट कर देवी को प्रसन्न करने के बदले अपनी शक्ति को नष्ट कर रहे हैं! यदि शक्ति की पूजा के लिये-उस की प्रसन्नता के लि बलिदान की आवश्यकता है आत्मबलिदान कीजिये, न कि निरीह प्राणियों का! छिः अधिक धर्म का अपमान है।

(पृष्ठ १२ का शेष)

तात्कालिक फल तो यह। घर की बहनों ने ताश कर दिया है, और अब चर्खे की ओर आकर्षित हैं। स्वयं मिश्र जी में आकर धनना स। कर घर की स्त्रियों का सिखा... दो बहनें तो अब धुनने भी लगी हैं। आजकल इनके घर तीन चर्खे चलते हैं। अब तक १४ नम्बर का तीन सेर सूत इन्होंने जुलाहों को बुनने के लिए दिया है।

इन तीन परिवारों की इस साधना के अतिरिक्त यहां के खादी-कार्य की प्रगति का सार यह है कि प्रति मास आठ मन तक सूत भंडार में खरीदा जाने लगा है। गत अगस्त महीने में ११। मन से कुछ अधिक सूत खरीदा गया। रुई सहित इतने सूत की कीमत ४३४॥)॥। दी गई है। १८) रुपये प्रति मन के हिसाब से रुई के दाम काट कर २४४-)॥। कत्तिनों को उनकी कताई के रूप में मिले हैं। रुई भोगल जाति की है, जो मिवाण से आती है। रुई का बाजार भाव प्रति रुपया २। से २ सेर तक है।

संक्षेप में यहां के कार्य यही विवरण है।

लेखन-कला

(ले०—श्री यादराम शर्मा बुलन्दशहर)

मनुष्य का शारीरिक बल एक दो मनुष्यो पर ठन्डा पड जाता है। वाक् शक्ति पाँच सौ हजार श्रोतागणों पर समाप्त होजाता है। परन्तु लेखन शक्ति सीमा-रहित है और सर्वत्र एकसा प्रभाव रखने वाली है। यह अपनी लेखनी से मनुष्य को ज्ञानी, पागल, बलवान, भीरु चपल अथवा सुस्त आदि सब बना सकती है। यह बेतार का तार हमारा सन्देश वाहक और हमारा मित्र है। इसकी धार तलवार से तीक्ष्ण और वार भीषण तोपों से अधिक आक्रमणकारी है।

क्या यह कभी हमने सोचा है कि जिस लेखनी में इतने गुण हैं, उसके धारण करने वाला कैसा मनुष्य होना चाहिये। हमने शास्त्र बना दिए कवच बना दिए। लेकिन आज उसके धारण करने वाले सैनिक नहीं आए। जिसके जी में आया, वही [illegible] बन बैठा यहीं हम अपने [illegible] रहा भूल बैठे और लेखन शक्ति [illegible] घोर होगया। अब भी समय है [illegible] एक स्टैंडर्ड पर ले

[illegible] अधिकांश लेखकों की [illegible] नारस है। अधिकतर [illegible]नुभव हीन हैं और नौसिख [illegible] लेखक की पदवी धारण [illegible]न-कला को बदनाम कर [illegible]क सघ के सदस्यों से [illegible]कि जहाँ उनको ध्यान [illegible] थियेटर और उपन्यास [illegible] उन्हें लेखन कला [illegible] अपना ध्यान देना चाहिए। इस सम्बन्ध में जितनी पुस्तक आज तक छपी हैं वह उन की सूची प्रकाशित करायें। एक कमेटी बना कर एक कोर्स मुकर्रिर करें और साथ ही साथ परीक्षा का भी प्रबन्ध करें यह काम सरल है और यदि अधिक सहयोग प्राप्त न हो सके तो दो चार निपुण सम्पादक मिल कर इस कार्य को भली भांति चालू कर सकते हैं।

आज सैकड़ों पत्र निकल रहे हैं, जिनमें हजारों अवैतनिक रूप से हिन्दी जगत की सेवा कर रहे हैं। लेकिन अफसोस है कि उनके पत्र सञ्चालक उनके तथा अपने कार्य को सफल बनाने के लिए गाइड de भी बना कर नहीं देते। अत मैंने इस सम्बन्ध में अपने अनुभव द्वारा थोड़ा बहुत जो ज्ञान प्राप्त किया है उसे पाठकों के लाभार्थ उनके सामने रखने का साहस करता हूं। त्रुटियां रहना अनिवार्य है। सहयोगियों से प्रार्थना है वह भी स्वयं इस पर [illegible] डालें।

लेखक कैसा हो

चपल विद्यार्थी का हृदय क्रांति से उथल-पुथल होता है। वह अपने मन की छाप दूसरे हृदय पर डालने का प्रयत्न करता है, उस का यही प्रयास उसे लेखन कला की ओर प्रवृत्ति कराता है। जैसे मनुष्य जल्दी और जोश में अपना काम बिगाड़ बैठता है, वैसे ही लेखक की जल्दी और जोश का उबाल उसके लिए एक घातक वस्तु प्रमाणित होती है। लेखक का हृदय लिखते समय शान्त, उदार और उत्साह वर्धक होना चाहिये। कटु विचार-हीन और असमय के वाक्य विपत्ति और दुःख को आवाहन करने वाले होते हैं और प्राय जेलखाने का निमन्त्रण देते हैं। लेखक का बल धैर्य और साहस है और लगन पागल जैसी होती है। अत. लेखक को साहसी, गम्भीर, पक्षहीन, शांत, उदार और धुनी होना चाहिये। संसार एक तरफ हो और उसकी धुन दूसरी तरफ। पुस्तकें उसके मित्र, लेखनी उस की तलवार और साहित्य उस की सम्पत्ति होनी चाहिये। लोभी और भीरु लेखक लेखन-कला को बदनाम करने वाले होते हैं।

लेखः—लेखक का लेख उसकी सम्पत्ति है यही उस का मान और प्रतिष्ठा है। अत. जब उसे लेख लिखना हो, मन को एकाग्र और शान्त कर ले। विषय का खूब मथन करे। उस के आदि और अन्त पर विचार करके उस से उत्पन्न होने वाले लाभ या हानि पर दृष्टि डाले और लोक व्यवहार का ध्यान रख कर फिर अपनी राय कायम करना चाहिये गप्प और मिथ्या कभी न लिखे। लेख को जितने टुकड़ों में बांट सको, उसे बांट दो और फिर उस के विभाजन अनुसार ठीक २ विचार करके एक एक हैडिंग के ऊपर पैराग्राफ बढ़ा कर लिखते जाओ।

अखबारी दुनिया अन्य विषयों पर लिखे ग्रन्थों से विचित्र होती है, चूंकि उस का सम्बन्ध राजनीति से होता है, इस लिये यह सब से अधिक भयावनी है। तनिक-सी त्रुटि अथवा भूल जेल का आह्वान करती है। राजनीति का सार है, जब मनुष्यों को अपनी ओर करना हो अपने लेख से उन्हें प्रभावित करना हो तो धर्म का सहारा लिया जाता है। धर्म कायर और भीरु मनुष्य को भी बलवान बना देता है। जब किसी संस्था में त्रुटि देखो तो लिखने से पूर्व उस के सदस्यों से हो सके तो विचार विनिमय कर लो और एक एक बात को खूब ठोक पीट कर लिखो। इच्छा हो लेखक बनने से पहले किसी पत्र का सम्वाददाता बन जाय, वहां खबरों का ठीक ठाक जुटाना और उनकी हैडिंग देना और लिखना सीख ले। अनुभवहीन होने पर अपने पत्र प्रबन्धकों से परामर्श करें और यह मालूम कर लें कि कौन कौन से आफिस अधिकारी वर्ग खबर देने पर बाधित है और सम्वाददाता का क्या कर्तव्य है। चुप्पी भीरुपन और लड़कपन सम्वाद दाता के लिये दुःखदायी है। इस सम्बन्ध में मुझे जो ज्ञान है, उसे पाठकों के लाभार्थ नीचे देता हूं।

क्या २ बातें सम्वाददाता लिख सकते हैं

अपनी आंखों देखी बात, दूसरों की बताई या सुनी बात पुष्टि होने पर, कोई सच्ची घटना हस्ताक्षर प्राप्त होने पर विवादग्रस्त विषय सरकारी तथा अर्ध-सरकारी रिपोर्ट निष्पक्ष समाचार [illegible] कर्मचारियों की शिकायत पुष्टि होने पर,

क्यों क्या बात न लिखनी चाहियें

कोर्ट में चालू मुकदमे, ऐसी बातें जिस पर मुकदमे पर प्रभाव पड़े, द्वेष राग फैलाने वाली बात, बिना सबूत की बातें मुकदमे में पहिले मजिस्ट्रेट की जांच मुकदमे में किसी पार्टी की तरफदारी की बातें किसी ऐसे व्यक्ति का फोटो जिस की मुकदमे में शनाख्त होनी हो किसी की इज्जत पर बट्टा लगाने वाली बातें।

अपने बचाव की बातें

लिखने से पूर्व अपने दिल में उत्तर प्राप्त करके लिखो ? १ क्या इस बात से किसी की इज्जत पर बट्टा लगता है ? अगर बट्टा लगता है तो क्या मुकदमा चलने पर वह बात साबित हो सकती है ?

—

पीड़ितों का वस्त्र स्वावलम्बन

(ले०—काशीनाथ त्रिवेदी)

मुजफ्फरपुर जिले के बदौल ग्राम में जो डाक खाना सकीसेदपुर के करीब है, गत वर्ष फरवरी में भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिये बिहार की केन्द्रीय रिलीफ १९३४ कमेटी के प्रयत्न से एक कताई केन्द्र खोला गया था। नीचे इस केन्द्र के व्यवस्थापक जो का भेजा हुआ गत वर्ष से अब तक के कार्य का विवरण दिया जाता है। इस केन्द्र के कार्यालय का नाम अशोक आश्रम है। नीचे क विवरण म पाठकों को इस आश्रम की स्थिति और इस के कार्य की प्रगति का कुछ पता चल सकगा, और बिहार क इस भाग की करुणाजनक परिस्थिति का एक हृदय द्रावक वर्णन भी पढ़न को मिलेगा।

अशोक आश्रम बदौल क व्यवस्थापक लिखते हैं —

"बिहार के उस प्रलयकारी भूकम्प के बाद १२ फरवरी १९३४ को मैं बदौल ग्राम में आया। मर आन से पहले कलकत्ता सहायक कमेटी की ओर से श्री० सत्यदेव जी विद्यालंकार यहां भूकम्प पीड़ितों की सहायता कर रहे थे। उनकी विद्वता और सौजन्य से आकृष्ट हो कर मैं भी यहीं जम गया और उन की देख रख में काम करन लगा। तब से अब तक म यहीं हू।

इस स्थान का इतिहास यह है कि पिछले ७-८ वर्षो से यहां लगातार बाढ़ आती हैं। समाचार पत्रों के पाठकों न यहां क भरथुआ चौर का नाम कदाचित सुना होगा? यह वह स्थान है जो १० मील की लम्बाई चौड़ाई में बारहों महीनों पानी से घिरा रहता है। बारिश में यही पानी बढ़ कर आस पास ४० मील के घेरे में फैल जाता है। लगातार बाढ़ पर बाढ़ आन से यहा की बहुतरी उपजाऊ जमीन प्रति वर्ष कट-कट कर पानी के साथ बह जाती है। भरथुआ चौर क आस पास जितने गांव हैं उन सब गांवो क किसान प्रायः अपनी मौत क दिन गिना करते हैं। जिन क पास सौ बीघा जमीन है, उन के खेतो में भी खान भर को अन्न पैदा नहीं हो रहा है। इन किसानो क बाग बाग खत और पेड़ तो प्रायः सब क सब सूख गये हैं। बहुतेरे गांव ऐसे हैं कि जिन में दतौन तकक लिये लकड़ी नहीं मिल रही है। इस चौर के कारण यहां के इस उपजाऊ प्रदेश की जो बरबादी हो रही है, वह बहुत ही हृदय-विदारक है।

* * *

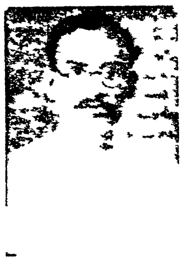
चर्खा-सघ का केन्द्र खुलन से पहले यहां चर्खो का नामोनिशान तक नहीं था अब इस विस्तार में जिन लोगों ने चर्खे को अपनाया है, वे अधिकतर ऐसे लोग हैं जो सच्च भावो में गरीब कहे जा सकते हैं। इन गरीबों में भी चर्खे को अपनाने वालों में अधिकतर परिवार मुसलमानों के हैं, इन लोगो की अप। कोई जमीन नहीं है। पुरुष बाहर मजदूरी करते हैं। और स्त्रियां घरो में चर्खा चलाती हैं। चर्खे म अभी तक इन गरीबो को वह मदद मिली है। कि वह इन की रोटी पर नमक दे देता है। यहां के किसानो के पास जो थोड़ी बहुत ऊंची जमीन बची है उस में प्रायः शकरकन्द को खती करते हैं। यह जमीन कार्तिक से लेकर ज्येष्ठ तक सूखी रहती है। इन्हीं महीनो में लोग यहां इस को खती करते हैं। यह कन्द यहां एक बीघे में कम स कम ढाई सौ म लेकर तीन सौ मन तक पैदा होता है। फसल के दिनो में इस का भाव फी रुपया तीन से चार मन तक रहता है। यदि किसानो न इस फसल को न अपनाया होता तो आज यह स्थान उजड़ कर एक निर्जन बनसा हो चुका होता। गरीबो का तो एक मात्र आधार यह कन्द ही है। चर्खा चलान वाले गरीबो को सूत की कताई से जो चार पैसे मिल जाते हैं, उन पैसों से य सस्ते शकरकन्द खरीद कर उन म किसी तरह व अपने पेट की आग बुझात हैं।

जमीन यहां की बहुत उपजाऊ है। धान और रब्बी की फसल काफी उपजती है, पर पानी म सारा जमीन धुल जाने क कारण किसानो का कोई बस नहीं चलता। बारिश क पहले हर साल किसान कर्ज निकालत और बड़ी आशा से धान का फसल बोत हैं। धान उगता है, पौधे पनपत हैं खेतो में खड़ हुए इन हरे भरे लहराते पौधो को देख कर किसान की छाती दुगुनी हो जाती है। उसकी प्रसन्नता का पार नहीं रहता। पर इतने में एकाएक मूसलधार पानी बरस पड़ता और जोरो की बाढ़ आ जाती है। यह बाढ़ इन हरे भरे खेतों के साथ किसानो की आशा और सम्पदा को भी बहाले जाती है। किसान बिचारे मन मसोस कर रह जाते हैं।

इस साल करीब २ आधे अगस्त तक वर्षा बहुत कम हुई थी। किसानों ने धान की फसल को बड़े उत्साह से आबाद किया था। लोगो का ऐसा अनुमान था कि इस साल बाढ़ नहीं आवेगी और वे धान की फसल ले सकेंगे। भरथुआ चौर का पानी भी और सालो की अपेक्षा इस साल बहुत सूख गया था। पर अगस्त के जाने जाते तो इतनी जोरकी बाढ़ आई कि किसानो की सारी आशा धूल में मिल गई। इस समय यहां का दृश्य देख कर कलेजा मुह को आता है। पचासो मील में समुद्र की तरह पानी ही पानी बह रहा है। गांव-गांव और घर-घर में पानी घुसा हुआ है।

* * *

यह तो हुई यहां की परिस्थिति। अब पिछले दिनो चरखे का जो काम यहां हुआ है उसे भी सुन लीजिये।



काशीनाथ त्रिवदी

चर्खे से सबन्ध रखन वाला जितना सामान है वह सब हमन यहीं के कारीगरों स बनवाया है। जो चर्खे बनवाये गये हैं, उनका व्यास १६ से १८ इंच तक है। इस तरह का बना बनाया चर्खा यहां के बढ़ई ॥।) बारह आने में बचते हैं। चमरखें यहां के चमार बनाते हैं और फी पैसा एक जोड़ा क हिसाब से बेचते हैं। गांव का लुहार तकुये बना देता है और फी तकुआ तीन पैसे लेता है। चर्खे के एक चक्कर में तकुआ ८४ मर्तबा फिरता है। हमारे चर्खे पर यहीं क बने तकुए से एक घंटे में ३०० गज सूत आसानी स कत जाता है। सूत औसतन १२ से १६ नम्बर का कतता है। भीषण गरीबी के कारण यहा की अधिकतर कत्तिनें अपना सूत बेच देती हैं। इस विस्तार में अभी तो केवल तीन परिवार ऐसे तैयार हुये हैं जो अपने सूत की खादी खुद बनवा लेते हैं। ये तीनों परिवार स्वावलम्बन के पथ पर हैं, और अधिकतर खादी ही पहनने लगे हैं। इनमें एक परिवार ऐसा भी है, कि जिसन अपन कते सूत को बेच कर अपनी जीविका भी चलाई है, और बचे हुये सूत की ४४ इंच की १६ गज खादी भी बनवाई है। इस परिवार क मुखिया का नाम घूरन राउत है ये खुद चर्खा चलात हैं। इनको एक छोटी लड़की है जो घर का बहुत कुछ काम और भोजन आदि बना लेती है। इनके पास अपनी कुछ जमीन भी है और दो तीन गाय बैल भी हैं। अपनी खती और पशुओं की सार-सम्हाल करते हुए बाकी समय में य काफी सूत कात लेते हैं। बाप और बेटी, दोनों शुद्ध खादी-धारी है।

दूसरे व्यक्ति ह श्री० महेन्द्र मिश्र। य घर क सुखी आदमी हैं। इनक पास अपनी काफी जमीन है जिसम खान भर का अन्न तरह पैदा हो जाता है। घर बुढ़िया मा है जिनको समय सूत कातने म रोज का करीब २॥ तो० लेती हैं। इनक सूत का से कुछ ऊपर ही होता है। ये अपन कते सूत की १० इंची दो जोड़ साड़ियां बु है और इतने ही अर्ज की साड़ियां और बुन देने जुलाहे को दे चुके हैं मिश्र अभी २० विवाहित नवयुवक चर्खे में इनका अपार धुनने का इनका ढंग बहुत ही आकर्षक होता है। जब य धुनने उठते हैं, तो इच्छा होता है कि देखत ही रहें। इनक पड़ोसियो क यहा कुल आठ चर्खे और चलते हैं। इन आठ चर्खो क लिए आवश्यक सारी रूई मिश्रजी ही धुन कर देते हैं। नित्य बीस तोला रूई धुनने क बाद ही किसी दूसरे काम को हाथ लगाते हैं। धुनाई बारडोली के ढङ्ग की मध्यम पींजन से करते हैं।

तीसरे व्यक्ति श्री देवचन्द्र मिश्र हैं। इन्होंने बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। ये काफी सम्पन्न और अमीर आदमी हैं। इनके घर की स्त्रियों को सिवा ताश खेलने क और कोई काम नहीं रहता था। रसोई बनाने और घर गृहस्थी के दूसरे काम करने के लिए नौकर रक्खे गए हैं। श्री देवचन्द्र मिश्र ने खादी और चर्खे क महत्व को समझा है। वह अपने परिवार की स्त्रियों की बेकारी मिटाने का सिर तोड़ परिश्रम कर रहे हैं। इनके इस परिश्रम

शेष पृष्ठ १८ पर

आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली-पूर्ण वैज्ञानिक है

(ले०—श्री वैद्यभूषण पावनिप्रसाद शर्मा, वैद्यराज आयुर्वेदाचार्य)

युक्त प्रांतीय मेडीकल विभाग के इन्सपेक्टर लेफ्टीनेन्ट मि० बक्ले ने हाल ही में अपने एक भाषण में कहा है कि आयुर्वेदि चिकित्सा प्रणाली अवैज्ञानिक है। मालूम नहीं कर्नल साहब जैसे विचार शील विद्वान की यह धारणा कैसे हो गयी। क्या कर्नल महोदय ने आयुर्वेद शास्त्र का भली भांति अध्ययन किया है या मनगढ़न्त ही यह निश्चय कर लिया? कर्नल साहब ने यदि आयुर्वेद का अध्ययन नहीं किया था तो यूरोप के उन विचारशील डाक्टरों के गवेषणात्मक विचारों का अध्ययन करते जिस में उन्होंने आयुर्वेदिक चिकित्सा-प्रणाली को पूर्ण वैज्ञानिक बतलाया है।

जिस विज्ञान को लेकर कर्नल महोदय आयुर्वेद को अवैज्ञानिक बता रहे हैं, वह विज्ञान ही अभी ...है।

...तिहास के पाठकों से यह ...है कि एलोपैथिक के जन्म... स को जन्म जब हुआ ...त में आयुर्वेद की ध्वजा ...थी। आयुर्वेद ही नहीं ...न विद्याओं के शिक्षाकेन्द्र ...और तक्षशिला के विश्व... ये और उस समय उनका करने वाला संसार में ...टी न थी। कर्नल महो...र परिचित होंगे।

...क चिकित्सा

...आयुर्वेदिक चिकित्सा सिद्धान्त वाद पर निर्भर है। उसका प्रत्येक अक्षर सार गर्भित है। आयुर्वेदिक साहित्य में प्रत्येक बात को सूत्र-रूप में वर्णित किया गया है। अनकों बातें जो आज आविष्कार समझी जा रही हैं, वे आयुर्वेद के ग्रन्थों में हजारों वर्ष पूर्व में वर्णित हैं। आधुनिक वैज्ञानिक जिन बातों का अभी पता नहीं लगा सके हैं, वे भी आयुर्वेद में विद्यमान हैं।

तुलसी रोपण की प्रथा हमारे यहाँ चिरकाल से चली आई है। वैज्ञानिकों को अब पता चला है कि इस में अनेक रोगों के हरन की शक्ति है। प्रातःकाल में उठना हमारे यहाँ बहुत समय से प्रचलित है। वैज्ञानिकों को पता चला है कि अल्ट्रा वायो लेट किरणों का नेत्रों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है।

माल्टा ज्वर फैलने के बाद ही वैज्ञानिकों को पता चला कि बकरी का दूध कच्चा पीना उचित नहीं। आयुर्वेदज्ञ इस बात को हजारों ...पूर्व बतला गये हैं कि बकरी का ...न पीना चाहिये। बच्चों के गले में तांबा डालना बहुत समय से प्रचलित है। जर्मनी में एक बार हैजा फैला और तांबे की खान पर काम करने वालों पर उसका आक्रमण नहीं हुआ, तब उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि तांबे में हैजे के कीटाणुओं को नष्ट करने की शक्ति है। तांबे के पात्र में पानी पीना हमारे यहाँ आयुर्वेदज्ञों ने बतलाया है। अब वैज्ञानिक भी कहते हैं कि तांबा जन्तुनाशक (Anticeptic) है।

प्राच्य सिद्धान्त जो हजारों वर्ष पूर्व से चले आये हैं वही आज भी उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। परन्तु पाश्चात्य विज्ञान में एक शताब्दी में ही बहुतेरे हेर फेर होते रहते हैं। पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र के सिद्धान्त बार बार बदलते रहते हैं। पिछले सिद्धान्तों को आधुनिक चिकित्सक हानिकारक बतला रहे हैं। आयुर्वेद में जिस औषधि में जो गुण २००० वर्ष पूर्व था वही आज है, आप किसी प्रयोग को लीजिये उसमें वही गुण मिलेगा। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि भारत के ऋषि मुनियों ने पूर्ण अनुभव के बाद ही उसे लिखा। परन्तु पश्चिम का विज्ञान इससे भिन्न प्रतीत होता है। सुप्रसिद्ध डाक्टर जेनर ने चेचक के टीके का आविष्कार किया था इस पर उसे ब्रिटिश पार्लियामेंट से ३०००० पौंड पारितोषिक मिला इसी का प्रचार जैसे संसार के राष्ट्रों में बढ़ता गया वैसे २ चेचक की वृद्धि होती रही। यहाँ तक कि सन् १८५३ में जब इंग्लैण्ड में चेचक का टीका अनिवार्य हुआ तब थोड़े समय में ही पहली यह बीमारी बढ़ गई। लिस्टन नगर में तो जब टीका प्रारम्भ हुआ, तभी मृत्यु संख्या बढ़ने लगी।

जिन बड़े बड़े स्कॉलरों ने आयुर्वेद को अच्छी तरह समझा है उनमें से कुछ ये हैं—सरविलियम हंटर, कर्नल एम० ए० क्लार्क, लार्ड राम्पाथिल, डाक्टर फर्नल कलकत्ता हाईकोर्ट के भूतपूर्व चीफ जस्टिस मिलौरेंस, डाक्टर ए० पी० रुडोल्फ मोरुल्ड (सी० आई० ई० पी० एच० डी०) सर चार्ल्स पार्डील्यूकिस (मर्जन जनरल गवर्नमेंट आफ इण्डिया), मि० एलीफिन्स्टन, सर चार्ल्स हैवलोक (प्रिंसपल गवर्नमेंट कालेज कलकत्ता), भारत के भूतपूर्व वायसराय लार्ड हार्डिंग आदि। इनमें से कुछ को हम हिन्दी में अनूदित करके पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दिये देते हैं।

सर विलियम हंटर कहते हैं कि हिन्दुओं के निघंटु शास्त्र में बहुत सी औषधियाँ वनस्पतियों और प्राणिधारियों से संकलित थीं, उनमें से बहुतों को यूरोपियन चिकित्सकों ने अब ग्रहण किया है। एक जगह फिर लिखते हैं कि हमने नाक, कान, मुंह बनाना वैद्यक से सीखा है। यह इलाज आयुर्वेद में अति प्राचीन है।

डाक्टर कर्नल डिपुटी सर्जन-जनरल ने कहा था कि हिन्दुओं की चिकित्सा पद्धति संसार में सबसे बढ़ कर है।

सर चार्ल्स पार्डील्यूकिस कहते हैं। जितने ही अधिक समय तक मैं भारत में निवास करता हूं, उतनी ही मेरे हृदय में प्राचीन चिकित्सकों की दूरदर्शिता के प्रति श्रद्धा अधिक हो जाती है और मैं यह उतने ही अधिक ज़ोर से महसूस करता हूं कि पाश्चात्य देशों को इस प्राच्य देश से बहुत-कुछ सीखना है।

मि० एलीफिन्स्टन कहते हैं कि भारतीय रसायन बुद्धि बहुत चमत्कारिक और अनुमान से बहुत चढ़ी-बढ़ी है।

भारत के भूतपूर्व—वायसराय लार्ड हार्डिंग कहते हैं कि जब मुझे याद आता है कि जो लोग बड़े-से-बड़े डाक्टरों को बुलाने के योग्य धनीमानी हैं, वे आज-कल भी भारतीय चिकित्सा-क्रम से इलाज कराना अच्छा समझते हैं, तब मैं इस परिणाम पर पहुंच जाता हूं कि इस चिकित्सा शास्त्र को उन्नत और समृद्ध करने वाली योजना को निरुत्साहित करूं तो मेरी बड़ी भूल होगी। देश के ९० फी-सदी प्रजाजन आयुर्वेदिक यूनानी चिकित्सा से आरोग्यता प्राप्त करते हैं, अतः उनकी उपयोगिता को माने बिना मैं नहीं रह सकता।

ये उद्धार सिर्फ २-४ के ही लिखे गये हैं। यदि सबों के उद्धृत किये जायं तो एक पुस्तक बन सकती है। क्या कर्नल साहब अपने देश के गण्यमान्य व्यक्तियों के वाक्यों पर विचार करेंगे। यदि कर्नल साहब आयुर्वेद का अध्ययन करते या आयुर्वेद के विद्वानों से इस विषय पर बातें करते तो हमें आशा है, कर्नल साहब की यह सम्मति न होती। हाँ, यह हो सकता है कि कर्नल साहब ने नीम-हकीमों तथा अत्तारों की बातें सुन कर ही ऐसी धारणा कर ली हो। इस के लिये कर्नल साहब को यह चाहिये कि अत्तारों को बन्द करें, न कि आयुर्वेद को अवैज्ञानिक बतलावें। आयुर्वेदिक चिकित्सा-प्रणाली स्वाश्रय है। यह ज़रूर है कि सरकार इस ओर ध्यान नहीं देती।

सरकार जितना व्यय डाक्टरी में करती है, यदि उस से चौथाई भी व्यय आयुर्वेद में करती तो आज आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली उसी रूप में होती, जैसी कि चन्द्रगुप्त और अशोक आदि शासकों के समय में थी, परन्तु आज भी राजकीय सहायता न होने पर भी भारत की अधिकांश प्रजा वैद्यों से ही आरोग्य पाती है, इस बात को लार्ड-हार्डिंग महोदय कह चुके हैं। डाक्टरी के जितने भी साधन हैं, वे अभी दीन हीन किसानों की झोपड़ियों तक नहीं पहुंचे हैं, वहाँ पर आयुर्वेद के छोटे-छोटे चुटकुले ही काम आते हैं। आयुर्वेद एक उच्च कोटि का चिकित्सा-विज्ञान है, यह अवैज्ञानिक और गड़रियों के गीत नहीं। आशा है कि कर्नल साहब भविष्य में ऐसी सम्मति न देंगे।

कहानी

प्रेमी के पत्र

(ले०—श्री प्रो० जगदीशचन्द्र शास्त्री काव्यतीर्थ)

ने हुए व कमला का और — ह हुआ थो उस यद्यपि म से कहता कि प्रभा… स्त्री रह कर सुखी मय अमन उसका विश्वास संकट गल्थी थी कि न तो इच्छो थी, न उसमें क शबर । था जिससे मैं गृहस्थ मों अपने को धन्य विह साथ अब पूछा आय तो का उ मन हो मन जिस ग हैं। दरबत खींचा रखा ए होगा सब गुणों को गके बहु जब मेरे मित्र लोगो तुम कैसी स्त्री म कारक त हो तो मैं हसते पल रखे। सुन्दर हो कवि हृदय म भाति क्रम जो प्रफुल्ल-रीहर हो।' गी) मैं इसी की बात थी परन्तु अन्तर्हृदय में यह भाव अवश्य था कि मेरी स्त्री कमला जैसी सीधी-सादी न हो। यद्यपि मैं यह नहीं चाहता था कि मेरी स्त्री मेम साहिबों की तरह दिल्ली की सड़कों पर स्वच्छन्दता-पूर्वक—विहार कर मेरी आज्ञा की खुल्लमखुल्ला अव हेलना कर। परन्तु मैं यह भी नहीं चाहता था वह घर की चहारदिवारी के भीतर बन्द रह और जो कुछ मैं कहू उसे आंख मूद कर मान ले।

कमला का जन्म गाव में हुआ था। वह एक साधारण परिवार में पली थी। उसके पिता वहाँ सुधारकों में गिन जाते थ और इसीलिय उन्होंने अपनी कन्या को गाँव के स्कूल की अन्तिम परीक्षा (मिडिल) पास करा दी थी। यद्यपि उनके विचार बहुत उदार थ परन्तु बीसवीं सदी में दुनियाँ जिस तेज रफ्तार से दौड़ रही है उसक देखते हुए वह बहुत पछड़े हुए थे। दिल्ली जैसे नगर में रहने वाले के लिये तो वह एक प्रकार से गवार ही थ। उन्होंने कमला का मुझसे सबध करके अपने को धन्य माना। उन्होंने न मेरी स्थाई सम्पत्ति के विषय में पूछ-ताछ की न कभी यह पूछा कि मुझे आजकल क्या वेतन मिलता है। सम्भव है उन्होंने गुप्त रीति से इन बातों की जाँच पड़ताल की हो। परन्तु उनकी इसी सज्जनता ने मेरे हृदय को खींच लिया था। मैं उनके सामने कुछ बोल न सका। मेरा सिद्धांत था कि मैं कन्या को देख बिना विवाह न करूगा परन्तु गाँव में भगीरथ प्रयत्न करने के बाद भी यह सम्भव न था। बड़ी मुश्किलों से मुझे अपनी भावी पत्नी की फोटो मिली। आखिर मैंने इसीमें सन्तोष किया। ईश्वर के नाम पर मैंने भी अपनी अन्तिम स्वीकृति दे दी। एक शुभ दिन शुभ घड़ी में कमला और मैं पति पत्नी बन गये।

विवाह से पूर्व मैंने विवाह के पक्ष और विपक्ष में बहुतसी युक्तियाँ सुन रखी थीं। मेरे मित्रों में दोनो प्रकार के उदाहरण मिलते थे। सब की दशा देख कर मैंने यही परिणाम निकाला था कि यह दिल्ली का लड्डू है इसको खाता है वह भी पछताता है जो नहीं खाता वह भी पछताता है इसलिये मैंने इस लड्डू का स्वाद चखने का ही निश्चय किया। इसे भाग्य कहिये या ईश्वर की कृपा कि कमला जैसी धर्मपत्नी पाकर मेरा यह विचार भ्रम सिद्ध हुआ कि दिल्ली का लड्डू खाने वाला भी पछताता है। मुझे कमला के रूप में स्वर्ग की देवी मिली और गृहस्थ मेरे लिये स्वर्ग हो गया। कमला दस पाँच दिन में ही मेरे स्वभाव को समझ गई और गाँव की वह गवारिन लड़की दिल्ली में आकर दिल्ली वाली बन गई। सचमुच स्त्रियों मे एक अद्भुत गुण है कि वह भिन्न २ परिस्थितियों में अपने आपको बड़ी आसानी से ढाल लेती है।

(२)

विवाह के पहले दिन मस्ती के होते है। वर वधू इस नये जीवन का मजा बड़े मजे से ले लेकर लूटते हैं। कुछ दिनों के लिये तो वे भूल जाते है कि ससार में हम दोनों को छोड़ कर किसी और का भी अस्तित्व या। नहीं इसी लिये इस छोटे से जीवन को बिताने के लिए लोग वर्षों से तैयारी करते हैं। इसी क्षणिक जीवन पर बड़े २ लम्बको ने सोहाग रात और बहूरानी को सीख जैसी पुस्तकों की रचना की है। पाश्चात्य देशों में इसी का नाम हनीमून है इसका आनन्द लेना यौवन का चरम लक्ष्य समझा जाता है।

कमला के साथ मेरे दिन भी खूब मजे से कटे। मैंने तो विवाह सबधी बहुत सा साहित्य पढ़ा था परन्तु वह बेचारी इस प्रकार किताबी ज्ञान से शून्य थी। फिर भी वह किसी बात में मुझ से पीछे न थी। शायद स्त्रियों को इन बातों को सीखने के लिए किसी पुस्तक को पढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

इसी प्रकार हमारे जीवन के इस नए अध्याय को प्रारम्भ हुए ६ मास व्यतीत होगए। एक दिनकी बात है। कमला कहीं गई हुई थी। मैं अपनी घड़ी ढू ढ रहा था ढू ढते २ मैं कमला के बिस्तरे पर पहुचा। ज्योंही मैंने उसका तकिया उठाया उसके नीचे मुझे एक लिफाफा मिला। उस पर कमला का पता लिखा हुआ था। सिद्धान्त रूप से मैं इस का विरोधी हू कि कोई किसी का पत्र पढ़े। परन्तु जब मैंने एक सुन्दर लिफाफे पर किसी पुरुष का हस्त लेख देखा तो मैं उसके पढ़ने की उत्सुकता को न दबा सका। मैंने चोर की



श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री

तरह डरते २ उस लिफाफे को उठाया। उसके भीतर सुगन्धि निकल रही थी। मेरा हृदय जोर २ से धड़कने लगा। मैंने झट उस लिफाफे को खोला और पढ़ने लगा

लाहोर
ता० १०।११।३३

प्यारी कमला,

तुम सचमुच बड़ी कठोर हो लोग पुरुषों की तो तोताचश्मी की निन्दा करते है। परन्तु क्या तुम्हें अच्छा लगेगा यदि मैं स्त्रियों की तोताचश्मी की निन्दा करू। मेरा दिल चाहता है मैं तुम पर क्रोध करू पर तुम्हारा ध्यान आते ही क्रोध काफूर हो जाता है। मुझे तुम्हारे सौभाग्य से ईर्ष्या होती है परन्तु मैं नहीं चाहता तुम इस मधुर जीवन में मेरे कटु स्मरण को स्थान दो। लिखता तो नहीं—परन्तु इसलिए लिख रहा हू तुम पर मैं कुछ अपना अधिकार समझता हू और दुर्भाग्य से तुमने भी उस अधिकार को स्वीकार किया है। मैं तुम्हारे आनन्द में बाधा नहीं डालता परन्तु मैं चाहता हू तुमने प्रेम के जिस टुकड़े का दान मुझ जैसे अभागे को दिया है उसे छीन मत लो तुम जानती हो मेरा सर्वस्व छिन गया है। अब तुम भी नहीं हो जो मुझे ढाढस बधा सको। क्या कभी २ एक दो मिनट मुझ अभागे के लिए भी रखना और हृदय के किसी कोने में मुझे भी पड़े रहने देना। करुणा के विषय में क्या लिखू तुम्हें मुझ से अधिक मालूम होगा। अच्छा तुम्हारा अधिक समय नहीं लूगा। ईश्वर तुम्हारे सौभाग्य को अचल रखे।

तुम्हारा—
रमाकान्त

मैं एक सांस में पत्र को पढ़ गया। एक बार दो बार नहीं कई बार मैंने इस पत्र को पढ़ा। मेरा हृदय बार बार यही कह रहा कि निश्चय इस पत्र को बोला कोई उस का प्रमा जितना मैं इस समस्या … करता था, उतना ह बढ़ता जा रहा था। मेरे यह पहला अवसर था, इतना बड़ा धोखा हुआ। मेरे मित्र ठीक कहते तिरिया चरित्र में बड़ा हैं। इसी सिलसिले में दादी की बात याद एक दिन मुझ से तुम ने क्या … पढ़ स्त्री को समझाने न लगने की इच्छा से मैंने कहा—दादी मैंने बड़ी मोटी मोटी पोथा पढ़ी है। यह कह कर मैंने उसे अपनी डिक्शनरी दिखला दी।'

बढ़ा तुम ने तिरिया चरित्र भी पढ़ा है?' उस ने फिर पूछा।

मैंने कहा—'नहीं।

तो तुमने कुछ नहीं पढ़ा है। उस ने जरा तिरस्कार के साथ कहा उस दिन के बाद ही मैं बाजार से तिरिया चरित्र खरीद कर लाया और उसे आद्योपान्त पढ़ गया

तब से आज तक मैं उस विद्या का उपयोग नहीं कर सका था

विवाह के बाद उसके उपयोग करने का अवसर आया, परन्तु मैं कमला के चकमे में आ गया देहात की एक गवार लड़की मुझ जैसे देहली वाले को ठग गई। यह सोच कर तो मैं और भी पागल होता जा रहा था। मैंने मन ही मन में कहा—"अच्छा, मैं भी बदला लेकर छोड़ूगा।

सोमवार २६ अगस्त सन् १९३५ ई० : Monday 26th August 1935



श्री विली पोस्ट



श्री डि वेलरा



सर एच० पी० मोदी



सरदार तारासिंह

वार्षिक मूल्य ३।)]   सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार   एक अङ्क का मूल्य -)

विषय-सूची

———:———

विषय		लेखक	पृष्ठ-संख्या
१ सप्ताह के प्रसिद्ध व्यक्ति			मुखपृष्ठ
२ सप्ताह की डायरी			३
३ सप्ताह की हलचल			४
४ सम्पादकीय			५
५ गंगा मैया		श्री दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर	७
६ आकर्षण	(कविता)	श्री राधारमण गर्ग	८
७ अंग यात्रा	,,	श्री लक्ष्मीप्रसाद मिश्र	८
८ तुलसीदास	,,	श्री रहमान सागरी	८
९ धन से	,,	श्री राजकुमार झा	८
१० अखबार बेचने वालों की पुकार	,,	श्री लज्जेश	८
११ हमारी चित्रावली (१)			९
१२ रूस और जर्मनी			१०
१३ महिला जगत्			११
आधुनिक शिक्षा प्रणाली में हमारा ह्रास		श्री ज्ञानकुमारी झवर	११
सौन्दर्य के दस शत्रु			१२
स्त्री शिक्षा की जरूरत			१२
१४ एक असाधारण खगोलज्ञ		श्री महादेवभाई देसाई	१३
१५ क्या कर्जदार अब जेल नहीं जाया करेंगे ?			१५
१६ अल्मोड़ा में ऊनी खादी		श्री मथुरादत्त त्रिवेदी	१६
१७ हमारी चित्रावली (२)			१७
१८ श्याम कृष्ण और गोरी राधा		श्री जगदीशप्रसाद माथुर	१८
१९ भारत में योरोपियन जजों की नियुक्ति क्या ठीक है ?			१९
२० सिनेमा स्टूडियो या वेश्यालय			२०
२१ टाकी स्टार	(कहानी)	श्री पुरुषोत्तम महादेव	२१
२२ सप्ताह का राशिफल		श्री संकर्षण व्यास	२२
२३ व्यापारिक संसार			२५

——:*::——

साप्ताहिक डायरी

१५ अगस्त

शिमले का समाचार है कि डा० फकीरचन्द की खाली सीट के लिए डा० नन्दलाल बार-एट-ला, भूतपूर्व एम० एल० ए० भी उम्मीदवार हैं।

—ब्रिटिश पत्रकार गेरथ जोन्स को चीनी डाकुओं ने पावलन्द (चीन) के पास गोलियों से छेद कर मार डाला।

१६ अगस्त

—बर्मा प्रान्तीय हिन्दू-महासभा ने मिस्टरसभा को एक मान-पत्र दिया है।

—फीरोजाबाद दंगे के पीड़ितों को १० हजार रुपये बतौर मुआविजा देना जिला अधिकारियों ने स्वीकार किया है।

१७ अगस्त

—शेखूपुरा जिले में रावी नदी की बाढ़ के कारण एक गांव तो पानी में डूब गया और दूसरे गांव के डूब जाने का अन्देशा है।

—जोधपुर का समाचार है कि वहां एक बन्दी खान के नौकर ने बन्दी-खान के सुपरिंटेंडेंट के विरुद्ध अदालत में एक अर्जी पेश की है कि मेरी स्त्री को रामसिंह सुपरिंटेंडेंट ने अपनी दूषित इच्छाओं की पूर्ति के लिये बलपूर्वक अपने घर में रखा हुआ है।

—नवसारी ग्राम के पास एक चीते ने दो व्यक्तियों को मार दिया तथा कइयों को घायल कर दिया है।

—लाहौर हाईकोर्ट ने दुबारा एक सरक्यूलर निकाल कर वकील, मजिस्ट्रेट और जजों को ता० १ अक्तूबर से अदालत खुलने पर काले कोट पहन कर ही आने की आज्ञा दी है।

१८ अगस्त

—लाहौर में एक लुहार की भट्ठी में अचानक दो बम फट गये, जिसमें एक व्यक्ति मर गया और दो सख्त घायल हुए।

अलबानिया बलकान-राष्ट्रमें अनरल मिकारटी की हत्या के परिणाम-स्वरूप भारी विद्रोह हो गया है।

—मुरादाबाद की खबर है कि एक बीमार स्त्री के इक्के में सफर करते हुए बच्चा पैदा होकर सड़क पर गिर गया और तुरन्त मर गया।

१९ अगस्त

सं० प्रा० के अस्पतालों के इन्स-पेक्टर जनरल लेफ्टीनेंट कर्नल एच डी. बक्ले ने बनारस में कहा है कि आयुर्वेदिक चिकित्सा अवैज्ञानिक है।

—कलकत्ता हाईकोर्ट के जजों ने श्री नरेन्द्रनाथ देव प्लीडर (सिलहट) का वकालत करने का सर्टीफिकेट रद्द कर दिया। 'गत भद्रअवज्ञा आन्दोलन में सजा भुगतने के कारण जजों ने उनपर कैरेक्टर को खराबी का जुर्म लगाया है।

—बांसवाड़ी के महाराज ने युवराज के सफल आपरेशन के बाद स्वास्थ्य लाभ करने के उपलक्ष में १ लाख रुपये की छूट दी है।

—लाहौर के एक मजिस्ट्रेट ने १० सिक्खों को अदालत उठने तक कैद तथा ५)-५) जुर्माने को सजा एक से अधिक कृपाण रखने के जुर्म में दी है।

—जोधपुर में स्पेशल ट्रिब्यूनल ने आलो सिक्के और नोट बनाने के दो मामलों में फर्दजुर्म लगा दी है। मिठड़ी के ठाकुर भोमसिंह पर दफा ४८९ की फर्द जुर्म लगा दी गयी है।

—जालंधर की खबर है कि पंजाब क्रिमिनल ला अमेण्डमेंट एक्ट के मातहत मजरचन्द भाई धर्मसिंह अपने गांव से गायब हो गये हैं।

—दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी ने अपने स्टाफ में मुसलमानों को ४ प्रतिशत स्थान अधिक देनेका फैसला किया है। अब हिन्दुओं को ४८ प्रतिशत तथा मुसलमानों को ५२ प्रतिशत स्थान मिला करेंगे।

२० अगस्त

हैदराबाद की निजाम सरकार ने ३॥) रु० फीसदी ब्याज पर १ करोड़ रुपया कर्ज लेने की घोषणा की है।

—आगरा सेन्ट्रल जेल में उर्रा-शूटिंग केस के श्री रमेशचन्द्र गुप्त तथा काकोरी षड्यन्त्र केस के श्री० मन्मथनाथ गुप्त ३ अगस्त से भूख-हड़ताल कर रहे हैं। अधिकारियों ने उनके भाई तक को मिलने की इजाजत नहीं दी।

—मुरादाबाद जिले में घोर वर्षा के कारण नदियों में बाढ़ आ जाने से किनारे पर के बहुत से गांव जल-मग्न हो गये हैं।

—सोनामपुर पुलिस ने वहीं एक मकान की तलाशी लेकर कई शस्त्र बरामद किये। एक लंगड़े युवक और मकान मालिक को गिरफ्तार कर लिया गया।

—क्वेटा में शाम के ४ बजे के करीब फिर भूकम्प का धक्का आया।

२१ अगस्त

पन्ना जेल से भागे हुए पठान कैदी की तलाश में २०० सिपाहियों ने पार्वती मंदिर के आस-पास जबरदस्त छानबीन की। मगर कुछ पता नहीं चला।

—इलाहाबाद हाईकोर्ट ने पी० बी० जौन नामक एक ईसाई को लात-घूंसों से अपनी स्त्री को मार डालने के अभियोग में आजीवन कारावास की सजा दी है।

—डा० खरे आगामी असेम्बली में यह प्रस्ताव पेश करेंगे कि भारत-मंत्री ब्रिटिश पार्लमेंट में न बैठें।

—रंगून में आबकारी महकमे वालों ने दो मोटरों द्वारा एक मोटर का पीछा करके ३१२० तोले गांजा बरामद किया।

—श्रीनगर की सोप धर्मशाला सम्बन्धी सिक्ख-हिन्दू झगड़े ने भीषण रूप धारण कर लिया। १७ ता० को १०० सिक्खों ने प्रताप भवन में हिन्दुओं पर हमला कर दिया, जिसमें १२ हिन्दू और २ मुसलमान घायल हुए हैं।

—बांदा (नागपुर) जिले में दो व्यक्तियों को फांसी और ३ को आजीवन काला पानी की सजा नरबलि के जुर्म में दी गई है। वहां एक वृद्ध पुरुष की बलि फसल सुधार के लिये दे दी गई थी।

२२ अगस्त

—हबीगंज (सिलहट) में अनेक मकानों की पुलिस ने तलाशी ली। कुछ कारतूस मिले भी हैं।

—जर्मनी में दो भयंकर दुर्घटनायें इस सप्ताह हुईं। एक रेडियो-प्रदर्शनी का भयंकर अग्निकांड और दूसरा भारी सुरंग दुर्घटना। सुरंग गिरने से बहुत से आदमी दब गये।

—राजस्थान के प्रख्यात राजवैद्य श्री रामदयालजी का ७५-७६ साल की उम्र में देहांत होगया।

२३ अगस्त

—दिल्ली में ६ बज कर २ मिनट पर भूकम्प का धक्का आया जो २-३ सेकिंड तक रहा।

—कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने आगामी १ सितम्बर को भारत में 'अबीसीनिया' दिवस मनाने का निश्चय किया है।

—शिरोमणि अकाली दल की कार्यकारिणी की बैठक २६ सितम्बर को शहीदगंज पर विचार करने के लिये बैठेगी।

—दामोदर और अजय नदियां फिर बढ़ रही हैं।

सरकार ने 'आजाद' अखबार का भारत में आना बन्द निषिद्ध कर दिया है।

—बंगाल कौंसिल में होम मेम्बर ने बंगाल पब्लिक सिक्योरिटी (एक्सटेंडिंग) बिल कौंसिल में पेश कर दिया है।

चित्र-परिचय

विलीपोस्ट — आप अमरिका के प्रसिद्ध उड़ाके थे और अमरिका से रूस तक का हवाई यात्रा के महान पराक्रम करते हुए हवाई दुर्घटना के कारण मर गये।

डी-वलेरा — आप ने घोषणा की है कि आप राष्ट्र-संघ में उपस्थित हो कर अबीसीनिया के पक्ष का समर्थन करेंगे।

मा० तारासिंह — आप ने एक वक्तव्य निकाल कर पंजाब के हिन्दुओं व सिक्खों को आने वाली गंभीर परिस्थिति से सावधान होने की सूचना दी है।

सर एच० पी० मोदी — आप ने नये शासन विधान को चलाने के लिये एक नयी पार्टी खड़ा करना चाहा है।

जापान का ब्रिटेन को इन्कार

जल-सेना की बातचीत में भाग नहीं लेगा

विश्वस्त रूप से ज्ञात हुआ है कि जल सेना सम्बन्धी बातचीत को पुनः जारी करने के विषय में ब्रिटेन ने जापान का रवैया जानने का यत्न किया था। जापान के मन्त्री-मण्डल ने अपने लण्डन-स्थित राजदूत को हिदायत दी है कि वह ब्रिटेन को यह जतला दे कि जब तक जापान का समानता का दावा मंजूर नहीं कर लिया जायगा तब तक वह किसी प्रकार की भी बातचीत में शामिल होने के लिये तैयार नहीं।

सप्ताह की हलचल

भारत से अबीसीनिया को फौज रवाना

पेरिस कान्फरेन्स भंग

इटली की सामरिक तैयारियाँ

अक्टूबर में युद्ध शुरु होगा ?

———:———

इटली अबीसीनिया की स्थिति विषम होती जा रही है। पेरिस में इटली, फ्रान्स और ब्रिटेन की जो कान्फरेन्स हो रही थी वह किसी निर्णय पर न पहुँच सकने के कारण भंग हो गई। इटली ने अपनी माँग में कमी नहीं की। वह ब्रिटेन के इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हुआ कि इटली अबीसीनिया पर केवल आर्थिक प्रभुत्व करे। वह तो अबीसीनिया पर अपनी सार्वभौम सत्ता कायम करना चाहता है। मि० ईडन तो इस कान्फरेन्स के भंग होने से निराश हो गये हैं लेकिन फ्रान्स के प्रधान-मन्त्री मि० लेवल को अब भी आशा है कि ४ सितम्बर को जेनवा में होने वाली कानफरेन्स में कोई राह निकल आयगी। रोम में खयाल किया जा रहा है कि समझौता नहीं होगा।

इटली की तैयारियाँ बदस्तूर जारी हैं। उसने अपनी वायु-सेना में १६,००० सैनिकों की वृद्धि और करके उनकी कुल संख्या ४०८५३ कर ली है। ब्लैकशर्ट डिवीजन के ८००० सैनिक २१ अगस्त को नेपल्स से अफ्रीका के लिये और रवाना हुए हैं। फासिस्ट पार्टी के प्रमुख व्यक्तियों ने युद्ध के लिये अपनी सेवायें समर्पित की है, जिन्हें उपयुक्त अवसर पर स्वीकार करने की मुसोलिनी ने इच्छा भी प्रकट कर दी है।

इटली के प्रतिनिधि बैरन अलोयसी ने एक वक्तव्य में कहा है कि अबीसीनिया की सेना भंजन में इटली का मुख्य उद्देश्य अबीसीनियन आक्रमण से अपने को रक्षित रखना ही है और इसके लिये अबीसीनिया को निःशस्त्र करना पड़ेगा। इटली राष्ट्र-संघ को नहीं छोड़नी चाहता, पर आवश्यकता पड़ने पर वह उसे छोड़ भी देगा।

ब्रिटेन में चिन्ता

पेरिस कान्फ्रेन्स भंग होने के बाद से ब्रिटेन में अत्यन्त गंभीर परिस्थिति उत्पन्न हो गयी है। ब्रिटेन की नीति क्या हो, इस पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है। ता० २२ अगस्त को ब्रिटिश मन्त्री मण्डल की बैठक हुई। कहते हैं कि—

विचारोपरान्त मन्त्रि मण्डल इस निश्चय पर पहुँचा कि राष्ट्र संघ की बैठक तक फ्रान्स के साथ मिल जुल कर समझौते का रास्ता निकालने का ही प्रयत्न जारी रखा जाय और इस बात को मद्दनजर रखते हुए शस्त्रास्त्र के निर्यात पर लगाये हुए प्रतिबन्ध बदस्तूर कायम रहें। राष्ट्र संघ और उसके सन्धि पत्र के सम्बन्ध में जिस नीति की घोषणा पहले कई बार की जा चुकी है, उसी पर कायम रहने का भी निश्चय हुआ।

भारत से फौज रवाना

ब्रिटिश सरकार को अबीसीनिया में अपने हितों की रक्षा के लिए चिन्ता हो रही है। वहाँ रहने वाले ब्रिटिश और भारतीयों की रक्षा के नाम पर वहाँ भारत से ५।१४ वीं पंजाब रेजिमेंट गत २९ अगस्त को रवाना कर भी दी गई। यह उस भारतीय सेना की सहायता करेगी जो अदीस अबाबा के ब्रिटिश दूतावास में नियत है।

स्वेज नहर का रास्ता बन्द होगा ?

यह भी सोचा जा रहा है कि इटली पर दबाव डालने के लिये स्वेज नहर के रास्ते इटालियन जहाजों का आना जाना रोक दिया जाय और उसकी जल शक्ति के खिलाफ जबरदस्त जल शक्ति का प्रदर्शन किया जाय परन्तु इसके लिये राष्ट्र संघ को पहले जल शक्ति वाले अपने हिमायती राष्ट्रों अर्थात् ब्रिटेन और फ्रांस का आश्रय करना पड़ेगा। कहते हैं इस सम्बन्ध में ब्रिटेन जो भी करेगा अकेला नहीं करेगा।

हर हाल में ऐसा अनुमान है, एक पक्ष के अन्दर २ लड़ाई और राष्ट्र संघ के भाग्य का फैसला हो जायगा।

——

लोहारू की भीषण परिस्थिति

गाँवों पर पुलिस का घेरा

जंगलों में बच्चे पैदा हुए

लोहारू के किसानों के सम्बन्ध में अब तक सनसनीखेज खबरें आ रही हैं। सिंघानी गाँव के अतिरिक्त अन्य गाँवों में भी पुलिस के अत्याचार बढ़ रहे हैं।

लोहारू रियासत से जो लोग भागकर आये हैं वे वहाँ की परिस्थिति के बारे में भयंकर वर्णन कर रहे हैं। कहा जाता है कि खड़खड़ी और गोठड़ा गाँव पुलिस के घेरे में हैं और वहाँ लूटमार हो रही है। लोग जंगलों में भागकर जान बचा रहे हैं। जंगलों में धूप और वर्षा में पड़ी हुई कुछ गर्भवती स्त्रियों के बच्चे होने की भी खबर आई है।

भिवानी अस्पताल में पड़े घायलों में अभी कुछ की हालत ज्यादा खराब है।

घायलों में बेचैनी

मालूम हुआ है कि लूटमार के ताजे समाचारों से घायलों में बड़ी बेचैनी है। उन्होंने पंजाब की रियासतों के ए० जी० जी० को रक्षा के लिये तार दिया है।

भिवानी में कल लोहारू पीड़ित-सहायक सभा की बैठक हिसार के चौधरी लाजपतराय साहब की अध्यक्षता में हुई। निश्चय हुआ कि लोहारू की स्थिति के सम्बन्ध में पम्फलेट छपा अधिकारियों तथा सर्वसाधारण के पास भेजे जायें। एक जबरदस्त डेपूटेशन भी वायसराय तथा ए० जी० जी० के पास भेजने की तजवीज है।

पं० नेकीराम शर्मा ने एक वक्तव्य के सिलसिले में लिखा है:—

पीड़ित तथा अन्य लोगों से लोहारू के विषय में मैं जितना जान पाया हूँ उसके बल पर मुझे विश्वास हो गया है कि अभी वहाँ की स्थिति बिलकुल ठीक नहीं हो सकी है, प्रत्युत मैं तो यह भी कह सकता हूँ कि लूटपाट स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार निर्दय लाठी प्रहार और निष्ठुरता पूर्वक गोली चलाने की जो बातें कही जाती हैं वे सत्य और साधार हैं।'

"मुझे मालूम हुआ है कि अब भी गाँव लूटे जा रहे हैं और गाँवों वाले पिट रहे और गिरफ्तार किये जा रहे हैं तथा डर हुये लोग जंगलों में शरण ले रहे हैं जहाँ गर्भवती स्त्रियों के बच्चे तक होने की खबर है। यही कारण मालूम होता है कि राज्याधिकारी जिम्मेवार व्यक्तियों को राज्य में नहीं घुसने देते और वहाँ की स्थिति देखने नहीं देते तथा निष्पक्ष जाँच की आवश्यकता को अस्वीकार करते हैं।"

सीमा प्रांत में उपद्रव

गोलाबारी शुरु

पहरेदारों पर आक्रमण

गत १६ अगस्त को सीमाप्रांतीय सरकार ने सरहद की गड़बड़ के बारे में निम्न विज्ञप्ति प्रकाशित की है:—

लोअर मोहमन्द इलाके में अपर मोहमन्दियों के हमलों से लोअर मोहमन्दियों की रक्षा के लिये १९३३ में शबकद्र से यूसुफ खेल तक एक सड़क बनायी गयी थी। अलिंगर के फकीर ने ९०० सहायकों की मदद से उक्त सड़क को तोड़ने की कोशिश की। इस पर हकीम जादू लश्कर के लोग फकीर से लड़ने को तैयार हो गये। गत जुलाई मास में डायक और कापर्कोडो के बीच में सड़क की कुछ मरम्मत की जा रही थी। ईसाखेल लश्कर के नौजवान कबीले वालों ने सड़क की मरम्मत के विरुद्ध प्रदर्शन किया। २९ जुलाई को सुबह २०० कबीले वालों ने अचानक गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। सरहदी सिपाहियों ने उनका मुकाबला किया और पीछे हटा दिया। दोनों ओर से दिन भर गोलियाँ चलती रहीं। फौजें भी घटनास्थल पर पहुँच गयीं। मगर उन्होंने लड़ाई में कोई भाग नहीं लिया। ८ अगस्त तक सड़क की मरम्मत पूरी होगई। सरकारी आदमियों में से किसी के चोट नहीं आई, परन्तु ३ कबीर हताहत हुए।

३ अगस्त को मुल्ला हाजी तुरंगजई का बेटा बादशाहगुल लोअर मोहमन्द इलाके में उतर आया। उसके पास एक मशीनगन थी। बुरहानखेल ईसाखेल वालों ने बादशाह गुल से वापिस चले जाने को कहा, मगर वह वापिस नहीं गया। ७ अगस्त को बुरहानखेल कबीरों ने ८,० गज तक टेलीफून के तार काट दिये और सरहदी पुलिस वालों पर हमला कर दिया।

१५ अगस्त को बादशाहगुल की पार्टी ने सड़क को तोड़ना शुरु कर दिया। विद्रोही चिमनाई भी गुल के साथ था। गुल की इन हरकतों को देख कर सरकारी फौज घटनास्थल पर भेजी गयी।

——

अर्जुन

सोमवार ता० २६ अगस्त १९३५ ई०

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्

विश्वविद्यालय और बेकारी

भारतीय विश्वविद्यालयों की वर्तमान उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में असन्तोष शनैः शनैः उग्र रूप धारण करता आ रहा है। प्रायः सभी प्रान्तों के अधिकांश विचारक और शिक्षाशास्त्री वर्तमान अंग्रेजी शिक्षा के दुष्परिणामों को अधिकाधिक अनुभव करते आ रहे हैं। केवल विचारक और शिक्षाशास्त्री ही नहीं यूनिवर्सिटियों के संचालक सरकारी अधिकारी भी वर्तमान शिक्षा के क्रम में दोष देखने लगे हैं। यही कारण है कि आजकल किसी विश्वविद्यालय का दीक्षांत अभिभाषण हो, वर्तमान उच्च शिक्षा की त्रुटियों पर अवश्य प्रकाश डाला जाता है और शिक्षा-क्रम में परिवर्तन पर जोर दिया जाता है। वस्तुतः आज की उच्च शिक्षा विद्यार्थी को जीवन-यात्रा के निर्वाह के योग्य नहीं बनाती १४ साल तक एक विद्यार्थी अपने माता पिता का अमित धन, अपनी शक्ति और सब से बढ़ कर अपना स्वास्थ्य नष्ट कर ग्रेजुएट बनता है। उसके हृदय में बड़ी २ उमंगे होती हैं, वह समझता है कि संसार में उसका बड़े प्रेम से स्वागत होगा और उसकी जीवन-यात्रा बड़े आराम से व्यतीत होगी। लेकिन संसार-क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद वह देखता है कि उसकी सब आशायें, सब स्वप्न, मिट्टी में मिल गये। संसार में सभी स्थानों पर उसका तिरस्कार होता है। उसे अपनी शिक्षा पर किया गया व्यय भी पूरा करना मुश्किल हो रहा है। वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है और अत्यन्त दीनता और नम्रता से—अपना आत्मसम्मान खोकर २५)-३०) की नौकरी के लिये प्रार्थना करता है, लेकिन हर जगह उसे 'नो वकेंसी' का टाटूक सा जवाब मिलता है। तब वह सोचने लगता है कि इतनी भारी शिक्षा क्या निरुपयोगी ही हुई है। आज बढ़ती हुई शिक्षित बेकारी की समस्या ने भीषण रूप धारण कर एक बार सभी विचारकों और शिक्षा शास्त्रियों का ध्यान जबर्दस्ती अपनी ओर खींच लिया है। बम्बई विश्वविद्यालय में दीक्षांत भाषण देते हुए बम्बई गवर्नर लार्ड ब्रेबोर्न ने भी स्वभावतः ही इस आवश्यक विषय पर प्रकाश डाला है। शिक्षित बेकारी का उल्लेख करते हुए वे कहते हैं— 'मैं इन सब का उल्लेख इन बेकारी की उत्पत्ति पर किये गये व्यर्थ व्यय को दिखाने के लिए कर रहा हूं। माता पिता, जो अपने गाढ़े पसीने की कमाई में से जो कुछ बचाते हैं वह सब अपने पुत्र की शिक्षा पर व्यय कर देते हैं, अपने धन का दुरुपयोग ही करते हैं। विश्वविद्यालय भी उन्हें शिक्षित करने में शक्ति और अपने साधनों का तथा सरकार अपनी सहायता का दुरुपयोग करती है।" वस्तुतः उस धन और शक्ति का व्यय दुरुपयोग ही कहा जावगा जिसका कोई अच्छा परिणाम न निकलता हो।

इस स्थिति का कारण क्या है? क्यों शिक्षित युवक बेकार रहते हैं? इसका विवेचन करते हुए बम्बई गवर्नर ने बहुत ठीक कहा है—"जैसा कि आप जानते हैं, यूनिवर्सिटी से शिक्षाप्राप्त युवक साधारणतया क्लर्की के सिवा और कोई काम करना ही नहीं चाहता। हालत इतनी खराब है कि कृषि पढ़े हुए बी० ए० भी खेती का हाथ का काम करना नहीं चाहते।" विश्वविद्यालयों की शिक्षा विद्यार्थी को निस्तेज और निरुत्साहित कर देती है उसमें किसी कार्य को करने का, कष्ट उठाने का साहस नहीं रहता, उसका मन और आत्मा दोनों निर्बल हो जाते हैं। यही वर्तमान उच्च शिक्षा का सब से बड़ा दोष है। यदि वह उच्च शिक्षा में धन का दुरुपयोग न कर वह धन किसी शिल्प का सीखने में या व्यापार प्रारम्भ करने में लगाता, तो अधिक अच्छा होता। कालेज के ८ सालों की शिक्षा पर औसतन ४०००)—५०००) रु० माता पिता व्यय कर देते हैं और सरकारी सहायता, दान आदि के रूप में जो धन एक विद्यार्थी पर व्यय होता है, वह इससे पृथक है। भारत में बीसियों विश्वविद्यालय और सैकड़ों कालेज हैं। इन सब में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के व्यय की एक बार कल्पना तो कीजिए। कितनी भीषण और विशाल धन राशि व्यर्थ व्यय जा रही है। यदि यह रुपया व्यापार व व्यवसाय में लगाया जाय, तो देश की बेकारी समस्या भी दूर हो और देश की समृद्धि भी बढ़े।

एक बड़ा भारी भ्रम हम लोगों में यह फैल रहा है कि साधारणतः प्रत्येक व्यक्ति के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना—बी० ए०, एम० ए० बनना आवश्यक है। मानवजीवन का ध्येय परीक्षाएं पास करना नहीं है। परीक्षा और उच्च शिक्षा तो मानसिक विकास का साधन है। कालेजों में तो उन्हीं विद्यार्थियों को जाना चाहिये जो प्रतिभाशाली हों जिनकी रुचि बौद्धिक विकास की ओर हो। ऐसे विद्यार्थियों को, जिन की रुचि व्यापार, व्यवसाय और शिल्प की ओर हो, कालेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की क्या आवश्यकता है। वे क्यों वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने में अपने समय और धन का दुरुपयोग करें, जो उनके लिये लाभप्रद न हो। क्यों न वे अपना समय और धन उस कार्य में व्यय करें, जिसे सीखकर वे संसार के संघर्षमय वातावरण में अपनी जीवन यात्रा निर्विघ्न गुजार सकें। इस भ्रम के दूर होने पर ही हमारी बेकारी की समस्या हल हो सकती है।

———

सम्पादकीय विचार

जनता का हृदय और राष्ट्र भाषा

"भारत के देशभक्तों ने प्रारम्भ में राष्ट्र-भाषा का महत्व नहीं आं-

का था। वे अंग्रेजी में बोलना गौरव समझते थे। किन्तु अब लोगों का यह दृढ़ धारणा हो गई है कि भारत की विशाल जन-संख्या के हृदय में पहुंचने के लिए इस की महान् आवश्यकता है। फलस्वरूप हिन्दी ने, जो सर्वसाधारण की भाषा है, राष्ट्र-भाषा का पद एवं गौरव प्राप्त किया है।' कलकत्ता यूनिवर्सिटी के भाषा विज्ञान के प्रोफेसर डाक्टर सुनीतिकुमार चटर्जी ने लन्दन में एक भाषण देते हुए उक्त शब्द कहे। इन शब्दों की व्याख्या व्यर्थ है। जनता के हृदय तक पहुंचने के लिए राष्ट्र-भाषा की आवश्यकता होती है और सर्वसम्मति से यह गौरव हमारी हिन्दी को मिल चुका है। परन्तु यह अफ़सोस की बात है कि आज भी अधिकांश कांग्रेसी नेता अंग्रेजी में ही वक्तव्य दिया करते हैं। स्थिति इतनी खराब है कि कांग्रेस कमेटियां देशी भाषा के अखबारों को भी अंग्रेजी में सूचनायें भेजती हैं, क्या राष्ट्र भाषा के प्रेमी इस की ओर ध्यान देंगे।

गांवों की ओर

स्काउटिंग या बालचर्य आज-कल यदि ठीक दिशा में चलाया जाय, तो चरित्र-निर्माण का प्रधान साधन है। अन्य देशों में इधर काफी ध्यान दिया जाता है। भारत में भी बेडनपावल और सेवासमिति प्रयाग की ओर से दो बालचर संस्थायें चल रही हैं, लेकिन इन दोनों का कार्य अधिकतर शहरों में ही है, गांवों में नहीं या बहुत थोड़ा। लेकिन भारत की ९८ फीसदी जनता गांवों में निवास करती है। इसलिए यदि ग्रामीणों की सेवा करनी हो, तो बालचर-आन्दोलन के नेताओं को गांवों को अपना मुख्य कार्य-क्षेत्र बनाना होगा। हर्ष की बात है कि चीफ कमिश्नर श्री हृदयनाथ कुंजरू ने इस की ओर ध्यान दिया है। उन्होंने एक कान्फ़रेन्स में भाषण देते हुए कहा कि—आवश्यकता इस बात की है कि स्काउटिंग गांवों और देहातों में और भी अधिक फैल जाय, क्योंकि वहां शिक्षा का अभाव है। देहातों में तो स्काउट मास्टर ही बच्चों तथा ग्रामीणों के पथप्रदर्शक होते हैं। "देहातों में बालचर-आन्दोलन फैलने के अनेक लाभ होंगे। देहातियों में भ्रातृत्व, सेवा और विपत्ति में उत्साह आदि की भावनायें पैदा होंगी। पर ग्राम-प्रचार के लिये स्काउट मास्टरों में यदि निस्स्वार्थ सेवा भाव न होगा, तो कोई लाभ न होगा। आशा है कि बालचर-आन्दोलन के कार्यकर्ता श्री कुंजरू के परामर्श पर विचार करेंगे।

मांग के पीछे बल

कलकत्ते में श्री चिन्तामणि के सभापतित्व में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए हैं। प्रेस इमर्जेंसी पावर्स एक्ट, देशी राज्य-रक्षा कानून और बंगाल क्रिमिनल एमेण्डमेण्ट एक्ट तथा अन्य दमनकारी साधनों का तीव्र प्रतिवाद करते हुए पत्रकार सम्मेलन ने सरकार से प्रबल अनुरोध किया है कि इन्हें एक दम रद्द कर दिया जाय। वस्तुतः ये कानून अखबारों पर नंगी तलवार का काम करते हैं। प्रत्येक पत्रकार दफ्तर में बैठ कर अपने सामने लटकती हुई नंगी तलवार से कांपता है। और कभी वस्तुस्थिति का सच्चा वर्णन नहीं कर सकता। पत्रों की स्वतन्त्रता और विकास के लिए इन कानूनों का रद्द होना अनिवार्य है। सम्मेलन ने अन्य भी अनेक उपयोगी प्रस्ताव पास किये हैं। लेकिन यदि इन प्रस्तावों के पीछे कोई शक्ति न हो, तो इन प्रस्तावों का कोई अर्थ नहीं रहता। क्या हम पत्रकार सम्मेलन के सभापति श्री चिन्तामणि से यह आशा रखें कि वे इन प्रस्तावों को कार्यान्वित कराने के लिए एक प्रबल आन्दोलन चलायेंगे। उन्हें अबतक के अनुभव से यह मालूम हो गया होगा कि जिस मांग के पीछे कोई बल नहीं है, वह मांग बहरे कानों ही पड़ेगी।

अभी से

राष्ट्रपति बा॰ राजेन्द्रप्रसाद ने अभी एक वक्तव्य देते हुए कांग्रेस कमेटियों का ध्यान एक बहुत महत्वपूर्ण मामले की ओर खींचा है। नये शासन विधान में कांग्रेस की नीति क्या होगी, यह तो अभी निश्चित नहीं हुआ है, परन्तु फिर भी यदि असेम्बली, कौंसिलों पर कब्ज़ा करने का निश्चय हो, तो उसके लिए तैयारी अभी से शुरु कर देनी चाहिए। अनेक प्रान्तों में मतदाताओं की सूची तैयार हो रही है। यह सूची जितनी पूर्ण होगी, जनता का उतनी ही ठीक प्रतिनिधित्व हो सकेगा। इसलिये "प्रान्तीय कमेटियों को जनता में वोटरों की सूची में अपना नाम दर्ज कराने के सम्बन्ध में प्रचार अवश्य करना चाहिये।' जितने अधिक राष्ट्रीय विचार के लोग मतदाताओं में अपना नाम लिखा सकेंगे, उतने ही अधिक, यदि चुनाव में कांग्रेस खड़ी हुई, कांग्रेसी उम्मीदवार सफल हो सकेंगे। भावी शासन विधान में कांग्रेस की विजय कितनी आवश्यक है, यह सभी जानते हैं। यदि चुनाव में कांग्रेस खड़ी न हो, तो मतदाता उदासीन रह सकते हैं। लेकिन यदि कांग्रेस चुनाव में खड़ी हो गई, तो आज की उदासीनता हमारे लिए घातक सिद्ध होगी। इसलिए सभी कांग्रेसियों का कर्तव्य है कि वे इस ओर उदासीनता न दिखावें और अधिकाधिक संख्या में मतदाताओं की सूची में अपना नाम लिखावें।

अंग्रेजी अनिवार्य नहीं है !

अंग्रेजी राज-भाषा है और उसके द्वारा अनेक विज्ञान अध्ययन किये जा सकते हैं, यह मानते हुए भी हम यह मानने को तैयार नहीं कि प्राइमरी या मिडिल विद्यालयों के लिये भी अंग्रेजी को अनिवार्य कर दिया जाय। अंग्रेजी शिक्षा नौकरी वालों या ऊंची शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए तो आवश्यक है, इसमें कोई संदेह नहीं। परन्तु सर्वसाधारण के लिए, जिन्होंने ग्रामों में खेतीबाड़ी दुकानदारी या अपने शिल्प पर बसर करना है, अंग्रेज़ी के ज्ञान को अनिवार्य नहीं ठहराया जा सकता। हिंदी या प्रांतीय भाषायें इतनी उन्नत हो चुकी हैं कि सर्वसाधारण जनता को प्रत्येक विषय का साधारण ज्ञान उन भाषाओं द्वारा हो सकता है। इस अवस्था में अंग्रेज़ी को अनिवार्य कर के विद्यार्थियों का धन, समय और श्रम नष्ट करना बुद्धिमत्ता नहीं है। अभी ग्वालियर के मिडिल स्कूलों में अंग्रेज़ी को अनिवार्य कर दिया गया है, इससे उन ग्रामीण विद्यार्थियों को बहुत असुविधा हो गई है, जो अपने २ गांवों से ४ या ६ श्रेणियां पास कर आते हैं। पहले वे मिडिल स्कूल में ५ वीं या ७ वीं श्रेणी में भरती हो जाते थे, लेकिन अब उन्हें अंग्रेजी पढ़ने के लिए फिर तीसरी कक्षा में भरती होना पड़ता है इससे उनके ४ साल खराब हो जाते हैं ' कोई भी विदेशी भाषा अनिवार्य नहीं है, इस सत्य को समझ लेना चाहिए। आशा है ग्वालियर का शिक्षा विभाग इस निवेदन पर ध्यान देगा।

लोहारू-प्रवेश पर पाबन्दी

भाई परमानन्द गोलीकांड पीड़ित आर्तों की स्थिति का अध्ययन करने के लिये लोहारू जा रहे थे। वे हिंदू महासभा के अध्यक्ष हैं उनका वहां की विषम स्थिति की जांच करना आवश्यक था। लेकिन लोहारू के अधिकारियों ने रोक दिया। उन्हें जो तार मिला है, वह अत्यन्त अशिष्ट है। उसमें लिखा है कि "हम जोश और उससे पैदा होने वाले उपद्रव से बचते हैं।" क्या इसका अर्थ यह नहीं है कि अधिकारियों की सम्मति में भाई परमानन्द जोशीले और उपद्रवी हैं। अन्य भी अनेक सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को वहां जाने से रोक दिया गया है। इस रुकावट के कारण वहां की सच्ची स्थिति के सम्बन्ध में जांच होना कठिन ही नहीं, असम्भव है। इस जांच के अभाव से यदि लोग अत्याचार और गोलीकांड की उन रोमाञ्चकारी कथाओं पर विश्वास करलें, जो अखबारों में प्रकाशित हुई है, तो आश्चर्य न होगा। यदि नवाब साहब सचमुच यह चाहते हैं कि वे अपनी प्रजा का विश्वास सम्पादन करें, तो उनका कर्तव्य है कि वे सार्वजनिक कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त करें।

गंगा—मैया

(ले०—श्री दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर, वर्धा)

गंगा कुछ न करती, केवल देवव्रत भीष्म को जन्म देती, तो भी वह आज आर्य जाति की माता के रूप में प्रख्यात होती ! पितामह भीष्म की टेक, भीष्म की निस्पृहता, भीष्म का ब्रह्मचर्य और भीष्म का तत्त्वज्ञान आर्य जाति के लिये सदा आदर पात्र ध्येय बन चुका है। ऐसे महापुरुष की माता के रूप में ह लोग गंगा को जानते हैं।

नदी को यदि कोई उपमा सजती है तो वह माता की ही ! नदी तीर पर रहें तो अकाल का भय तो रहा ही नहीं। मेघ राजा धोखा देदे तब नदीमाता हमारी फसल को परिपक्व बनाती है। नदी का तीर शुद्ध और शीतल हवा का धाम है। नदी के किनारे किनार भ्रमण करने जाय तो कुदरत के मातृवात्सल्य के अखंड प्रवाह का दर्शन होता है। नदी बड़ी हो तथा उसका प्रवाह धीर गंभीर हो तब तो उसके तीर पर बसने वाले लोगों की समृद्धि उस नदी पर ही अवलम्बित होती है। वस्तुतः नदी जन-समाज की माता है। नदी-तीर पर बसे हुए नगर की गली गली हम घूम रहे हों और किसी एक आध कोने से नदी का दर्शन हो जाय तब हमको कितना आनन्द होता है। कहां शहर का मलिन वातावरण और कहां नदी का प्रसन्न दर्शन ! तुरन्त ही दोनों का भेद मालूम होजाता है नदी ईश्वर नहीं है, पर ईश्वर का स्मरण कराने वाली देवती है। यदि गुरु को नमन करना योग्य है तो नदी को भी वंदन करना उचित है।

यह तो हुई सामान्य नदी की बात। गंगा मैया तो आर्य जाति की माता है। आर्यों के बड़े २ साम्राज्य इसके किनार पर ही स्थापित हुए है। कुरुपांचाल देश का अंगबंगादि देशों के साथ गंगा ने ही संयोग किया है। आज भी भारतवर्ष की आबादी गंगा के किनारे पर ही अधिक से अधिक है।

अब हम गङ्गा का दर्शन करते हैं तब फसल से लहलहाते खेत ही हमारे ध्यान में नहीं आते, माल से लदे हुए जहाज ही हमारे ध्यान में नहीं आते पर, साथ ही ही व्यास और वाल्मीकि के काव्य, बुद्ध और महावीर के विहार, अशोक, समुद्रगुप्त, और हर्ष तुल्य सम्राटों के पराक्रम तथा तुलसीदास और कबीर सरीखे सन्तजनों के भजन—इन सबका स्मरण होता है। गंगा का तो दैव्यपावनत्व का प्रत्यक्ष दर्शन है।

पर गंगा का दर्शन एक प्रकार का ही नहीं है। गंगोत्री के समीप हिमाच्छादित प्रदेशों में इसका क्रीड़ा-पूर्ण कन्या रूप है। उत्तर काशी की ओर टीड़ देवदार के काव्य मय प्रदे. में इसका मुग्धा स्वरूप है। देवप्रयाग के पहाड़ी और सकरे प्रदेश में चमकीली अलकनंदा के साथ इसकी क्रीड़ा, लक्ष्मण झूले की करालदंष्ट्रा में से छूटने के बाद हरद्वार के पास उसका अनेक धाराओं में स्वच्छन्द विहार, कानपुर को घिस कर आता हुआ इसका इतिहास प्रसिद्ध प्रवाह, प्रयाग के विशाल पाट में इसका कालिन्दी के साथ त्रिवेणी सगम प्रत्यक की शोभा कुछ जुदी जुदी ही है। एक दृश्य देखन से दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रत्येक का सौंदर्य जुदा, प्रत्यक का भाव जुदा, प्रत्यक का वातावरण जुदा और प्रत्येक का माहात्म्य जुदा है।

प्रयाग से गंगा जुदा ही स्वरूप धारण करती है। गंगोत्री से लेकर प्रयाग तक गंगा प्रवर्धमान होती हुई भी एकरूप मानी जा सकती है। परन्तु प्रयाग के पास इसको यमुना मिलती है। यमुना का कांठा (तीर) तो पहिले से ही दुहरा है। वह खेलती, कूदती है परन्तु खिलाड़ी नहीं प्रतीत होती। गंगा शकुन्तला जैसी तपस्वी कन्या दीखती है और काली यमुना द्रौपदी सरीखी मानिनी राजकन्या प्रतीत होती है। शर्मिष्ठा और देवयानी की कथा सुनते हैं उस समय भी प्रयाग के समीप गंगा और यमुना का बड़ी कठिनता से मिलता हुआ शुक्ल-कृष्ण प्रवाह याद आता है। भारतभूमि में असंख्य नदियां हैं, अतः उनके सगम भी अगणित हैं। हमार पूर्वजों न इन सब संगमों में गंगा यमुना का यह संयोग सबसे अधिक पसद किया है और इसीलिए उसका प्रयागराज जैसा गौरव भरा नाम रक्खा है। भारतवर्ष में मुसलमानों के आने के बाद जिस प्रकार भारत के इतिहास का रूप बदल गया है, उसी प्रकार दिल्ली आगरा और मथुरा-वृन्दावन के समीप म आते यमुना क प्रवाह के कारण गंगा का स्वरूप भी सर्वथा बदल गया है।

प्रयाग क बाद गंगा कुलवधू की भांति गभीर और सौभाग्यवती दिखाई देती है। इसके पश्चात् इस को बड़ी २ नदियां मिलती जाती हैं।



यमुना का जल मथुरा वृन्दावन म श्रीकृष्ण के संस्मरण अर्पित करता है। अयोध्या म आने वाली सरयू आदर्श राजा रामचन्द्रजी के प्रतापी परन्तु करुण जीवन की स्मृतियां लाती है। दक्षिण की ओर से आने वाली चबल नदी रन्तिदेव के यज्ञ याग की बात करती है, उधर महान कोलाहल करता हुआ शोण भद्र गज ग्राह के दारुण युद्ध की झांकी कराता है। इस प्रकार पुष्ट बनी हुई गंगा पाटलिपुत्र के समीप मगध साम्राज्य के समान विस्तीर्ण होजाती है। तो भी गंडकी अपना अमूल्य कर-भार लाने में हिचकती नहीं। जनक और अशोक तथा बुद्ध और महावीर की प्राचीन भूमि म निकल कर आगे बढ़ती हुई गंगा मानो विचार में पड़ जाती है कि अब कहां जाना चाहिए। इतनी प्रचन्ड वारिराशि अपने अमोघ वेग से पूर्व की ओर बढ़ रही हो तो उसे दक्षिण की ओर मोड़ देना क्या सरल बात है ? तथापि 'वह इस ओर मुड़ गई है। दो सम्राट अथवा दो जगद्गुरु जिस प्रकार एकाएक एक दूसर को नहीं मिलते हैं, उसी प्रकार गंगा और ब्रह्मपुत्रा का हाल है। ब्रह्मपुत्रा हिमालय क दूसरी ओर का समस्त पानी लेकर आसाम में होकर पश्चिम की ओर आती है और गंगा इस ओर से पूर्व की तरफ जाती है। इनका मिलाप आमने सामने किस प्रकार हो सकता है ? कौन किसको प्रथम झुके अथवा कौन किसको मार्ग देवे ? अन्त में दोनों न निश्चय किया कि दोनों को दाक्षिण्य—चातुर्य—का विचार करके सरित्पति—समुद्र—के दर्शन के लिए जाना चाहियें और भक्ति-नम्र होकर जाते-जाते, जहां भी हो सके वहां, मार्ग में एक दूसरे को मिल लेना चाहिए '!

इस प्रकार जब गोलंदो के समीप गंगा और ब्रह्मपुत्रा की विशाल जल-राशि एकत्र होती है तब शंका उत्पन्न होती है कि क्या सागर इससे भिन्न होता होगा ? विजय प्राप्त करने के पश्चात जिस प्रकार बड़ी हुई सेना भी अव्यवस्थित हो जाती और विजयी वीर जहां चाहें वहां घूमते हैं, उसीप्रकार इन महान नदियों की भी, इसके बाद यही अवस्था होती है। ये जाकर अनेक मुखों द्वारा सागर को मिलती हैं। गंगा और ब्रह्मपुत्रा एक होकर पद्मा का नाम धारण करती है। यही आगे जाकर मेघना नाम से पुकारी जाती है।

यह अनकमुखी गङ्गा कहां जाती है ? सुन्दरवन के वन के झुण्ड उगाने के लिए या सगर-पुत्रों की वासना तृप्त करके उनका उद्धार करने के लिये ? आज जाकर देखोगे तो प्राचीन काल की कोई बात यहां नहीं रही है। जहां देखो वहां सन की बोरियां बनाने वाली मिलें—पुतलीघर—तथा इसी प्रकार अन्य अशुभ कारखाने खड़े हैं। जहां से भारतीय कारीगरी की असख्य वस्तुयें भारतीय जहाजों में लंका तथा जावा द्वीप तक जाती थीं, वहीं से अब विलायती और जापानी आगबोट परदेशी कारखानों में बना हुआ कूड़े कचरे जैसा माल हिन्दुस्थान के बाजारों में भर देने के लिए आती हुई दिखाई देती है। गङ्गा मैया तो पहिले की तरह ही हमको समृद्धि अर्पित करती है, परन्तु हमारे निर्बल हाथ उसको संभाल नहीं सकते ! गंगा मैया, यह दृश्य देखना तेरे भाग्य में कब तक बदा रहेगा ?

अनुवाद कर्ता—शंकरदेव विद्यालंकार

आकर्षण

कितना प्रिय आकर्षण !
विहग-विकूजित यमुना तट की,
सुभग शिला के वक्षस्थल पर।
मृदु लतिकाओं से परिवेष्ठित,
मंजु निकुञ्ज पुंज के भीतर।
प्रेम-मूर्ति का दर्शन !
कितना है आकर्षण !
मन्थन ध्वनि गुंजित प्रांगण में,
बाल कृष्ण का अविरल क्रन्दन ;
स्नेहमयी जननी के उर को,
क्रन्दन-जनित मधुर आल्हादन !
अनुपम नन्द-निकेतन !
कितना प्रिय आकर्षण !

—राधेश्याम गर्ग

जग-यात्रा

जग-यात्रा करने को मैं भी निकल पड़ा दीवाना।
कण्टकमय होगा कितना मग, नहीं जरा अनुमाना ॥ १ ॥
पता नहीं कब अवधिपूर्ण हो ? किस मंजिल तक पहुंचूं ?
कौन जानता बुत सा कब तक, खड़ा खड़ा यों सोचूं ? ॥ २ ॥
इस अनन्तमयविश्व-काव्य की, कहो कौन परिभाषा ?
सोच सोच मैं हार गया पर, थकी न पगली आशा ॥ ३ ॥
जगत मार्ग है बीहड़ अतिशय, यहां मोह-तम, माया।
लोभ, स्वार्थ, मद, मान, क्रोध के, कांटों से पथ छाया ॥ ४ ॥
इस असीम की कहो भला कब ? किसने सीमा बांधी ?
इस अनन्त पथ में कितनों को, उड़ा ले गई आंधी ॥ ५ ॥
भाई के सिर पर भाई चढ़, इठलाता जाता है।
उदधि तरंगों सा जन जन का, जीवन मिट, बनता है ॥ ६ ॥
देखा यहां का विषम विवर्तन, कहो कौन टिक पाता ?
किसे पता है; मृत्यु गोद में, कौन कहां सो जाता ? ॥ ७ ॥
जग-संचालक काल-चक्र जो, प्रति पल चलता जाता।
दैव वही या 'अलख' वही, कुछ नहीं समझ में आता ॥ ८ ॥
बहा रहे रो रो सरितायें, जीवन दुखमय सब के।
शैशव, यौवन, और बुढ़ापे बीत गये कितनों के ॥ ९ ॥
"जग-यात्रा" में मुझ पागल को, समय-प्रवाह बहाता।
सबके साथ साथ मैं लघु कण, अविकल उड़ता जाता ॥ १० ॥

—लक्ष्मीप्रसाद मिश्र

तुलसीदास

प्रेम की मय से है पुर मयखाना तुलसीदास का।
भक्ति-रस से है भरा पैमाना तुलसीदास का ॥
देखते हैं वह हर इक शै में उसी के नूर को।
क्या अनोखा रंग है मस्ताना तुलसीदास का ॥
इश्क थो तो राम से और प्रेम था तो राम से।
राम थे गर शमा, दिल परवाना तुलसीदास का ॥
दिल के इत्मीनान को खातिर जिधर भी जा बसे।
बन गया राम-आश्रम का शाना तुलसीदास का ॥
उनकी रामायण पै क्यों हम हिन्दियों को हो न नाज़।
मोतरिफ है जिसका हर बेगाना तुलसीदास का ॥
क्यों न ऐसे ज़िक्र से 'रहमान' हो दिल को सुरूर।
क्या सबक आमोज़ है अफ़साना तुलसीदास का ॥

—'रहमान' सागरी।

घन से—

घन गरज न हिय तरसा !
रे पागल ! निद्रित जग में फिर कोलाहल न मचा !
सोने दे बिखरी-सी आशा !
सोने दे असफल अभिलाषा !
मुस्काने दे निठुर निराशा !
युग युग की सोई स्मृति दीवाने फिर न जगा !
बना न फिर पागल मतवाला !
पिन्हा न अरमानों की माला !
मन्द सुलगने दे यह ज्वाला !
अरे बावले दो कण जल से और न अग्नि बढ़ा !
रे घन गरज न हिय तरसा।

—राजकुमार झा 'दीन'

अखबार बेचने वालों की पुकार

लीजो अखबार मेरो आनन्द बढ़ावै तेरो,
हाल वर्तमान लौको पत्र माँहि पेखो है।
अबते निहारो मन मोद लखि आयो अति,
अतिहु अनोखो समाचार सब चोखो है ॥
डारते नवीन बहु भाँति देश देशन की,
बैठि पढ़ि लैवो ग्रह माँहि यदि धोखो है।
कहाँ लौ बखानै 'लज्जेश' गुण याके आज,
अर्जुन अखबार बाबू देखलो अनोखो है ॥

—'लज्जेश'

पं० जवाहरलाल नेहरू



आप लखनऊ कांग्रेस की स्वागत कारिणी के सभापति चुन गये हैं।

श्री राजेन्द्रप्रसाद



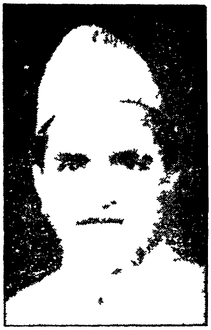
आपन कांग्रेसियो को सामा निर्धारिणी समितियों म असहयोग का आदेश दिया है।

श्री श्रीनिवास शास्त्री



आपन कांग्रेस का पद-ग्रहण को नाति स्वाकार करन का परामर्श दिया है।

श्री चिमनलाल



आपने मध्य एशिया की यात्रा करने वाले किसी भारतीय पत्रकार को ४००) रु० देन का वचन दिया है।

श्री सुभाषचन्द्र वसु



आपन बगाल प्रां० कां० कमेटी की अध्यक्षता स्वीकार करन की एक यह भी शर्त रखी ह कि उक्त कमेटी साम्प्रदायिक निर्णय का अस्वीकृत कर दे।

भिक्षु उत्तमा



आप ५ साल बाद अपने प्रांत बरमा पहुच हैं और वहां हिन्दू व बौद्धों में एकता स्थापित करन का यत्न कर रहे हैं

भाई परमानन्द



आपको लोहारू रियासत में प्रवेश करन म रोक दिया गया है।

श्री जमनालाल बजाज



आप सीकर आंदोलन के सिलसिले में वैद्य सीनियर अफसर से मिले।

श्री हृदयनाथ कुंजरू



आपन स्काउटिंग आन्दोलन को गांवों के लिए अधिक उपयोगी बनाने पर जोर दिया है।

रूस और जर्मनी

रोमां रोलां और डा० शाख्त के पत्र

—*:*—

अभी पिछले दिनों फ्रांस के विश्वविख्यात लेखक रोमां रोलां सोवियट यूनियन में भ्रमणार्थ गये थे। अपनी यात्रा के बाद इन्होंने स्टालिन को जो पत्र लिखा है, वह अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। आप लिखते हैं कि—

प्यारे कामरेड स्टालिन,

मास्को से अपने प्रस्थान के समय मैं आपको हार्दिक बधाइयाँ देता हूं। सोवियट सोशियलिस्ट प्रजातन्त्र में कतिपय दिनों में ही मैं उस महान जाति के सम्पर्क में आया हूं जो हजारों विघ्न बाधाओं के होते हुए भी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में बड़ी वीरता और नियन्त्रित यत्न के साथ

विश्व उन्नति सोवियट सोशियलिस्ट प्रजातन्त्र के भाग्य के साथ अविच्छिन्न रूप में बंधी हुई है—यह कि संसार के श्रमजीवियों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का प्रज्वलित भट्ठी सोवियट सोशियलिस्ट प्रजातन्त्र संपूर्ण संसार का बन जायगा, और यह कि संसार के सम्पूर्ण देशवासियों का यह कर्तव्य है कि वह इस प्रजातन्त्र के

झांकी निम्न अंक बता सकते हैं:—

एक रूबल	=१॥)
वृद्धावस्था प्राप्त मजदूरों पर	२१ ७००,०००
अस्थायी बीमारों व गर्भिणी स्त्रियों पर	१०,०००,०००
कारखानों में आकस्मिक कारणों से आहतों पर	१०,०००,०००
विकलांगों को सहायतार्थ	१५ ००० ०००

क्या कोई पूंजीपति साम्राज्यवादी देश सामाजिक उन्नति क्षेत्र में उपर्युक्त अंकों का मुकाबिला कर सकता है? हमारा विश्वास है कि नहीं।

जर्मनी

आर्थिक उन्नति ही किसी देश की सर्वतोभद्र उन्नति का निदर्शक यन्त्र है। ऊपर हम रूस के विषय में कुछ अंक दे आये हैं। अब डा० शाख्त के शब्दों में ही नाजी जर्मनी के बारे में सुन लीजिये।

'अपने कार्य को पूर्ण करने की समस्या पर—जिस में पुनः शस्त्रीकरण भी सम्मिलित है, विचार कर मेरा माथा फटा जाता है। विद्यमान

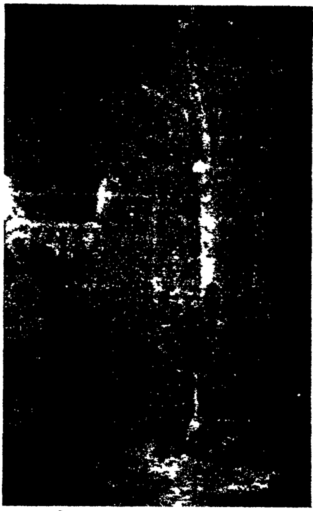
जेनवा की झील



(चित्र परिचय के लिए पृष्ठ १७ देखिए)

जेनवा आजकल अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हो चुका है। परन्तु यह केवल राजनैतिक दृष्टि से ही नहीं, प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। जिनवा की झील बहुत लम्बी चौड़ी है। इसका परिक्रमा में पूरा एक दिन लग जाता है। इसी के किनारे शहर बसा हुआ है।

जंजीरबद्ध बोनिवार्ड



बोनिवार्ड एक बार जेल से निकल भागा था उसे गिरफ्तार कर फिर यहां चित्र में प्रकाशित खम्भे के साथ जंजीर में बांध दिया गया। वह इसी खम्भे के चारों ओर सालों घूमता रहा। इसीलिए पैरों के नीचे पत्थर भी घिस गये आज भी पथ प्रदर्शक इन पत्थरों को दिखाकर बोनिवार्ड के दुःख की कल्पना कराते हैं।

एक नवीन संसार की रचना कर रहे हैं। मैं इस जाति की स्वस्थ शक्ति, उसके जीवनानन्द की क्षमता अभाव और भूख के मुकाबले जो दिन प्रतिदिन कम हो रहे हैं उनका नाश देख कर प्रसन्न हूं, जिससे उनके महान् श्रम का मूल्य और अधिक बढ़ जाता है।

मैं अपनी यात्रा से पहिले की कल्पना और भावनाओं की पूर्ण पुष्टि और उन में विश्वास के साथ लौट रहा हूं कि संसार की वास्त-

शत्रुओं से जो इसकी उन्नति में बाधक हैं रक्षा करें।

प्यारे कामरेड! आप जानते हैं कि मैं अपने इस कर्तव्य में कभी विमुख नहीं हुआ और नाहीं जब तक तन में प्राण हैं मैं इससे चूकूंगा।"

सोवियट सरकार अपने देशवासियों पर स्वास्थ्यरक्षा पर ही कितने रूबल खर्च करती है। इसकी एक

सामाजिक बीमा वाले व्यक्तियों के बच्चों की सहायतार्थ	४८४६००,०००
विश्रान्तिगृह, स्वास्थ्य गृह इत्यादि पर	४०३ ७५०,०००
स्वास्थ्य शिक्षा प्रचारार्थ	१५४,५५०,०००
नागरिक निवास सुधार	१,१४०,८६०,०००
सामाजिक बीमा	
१९२७ में	३००,००० ०००
१९३५ में	७,०७१,०००,०००

व्यवस्था और प्रचार द्वारा पूर्ण समझना मूर्खता ही नहीं, अपितु बड़ा खतरनाक है। संपूर्ण संसार संकट और कष्ट में है। ऐसी हालत में यदि हम अपने देश को अपवाद समझें तो उपहासास्पद ही है।

इस के विपरीत हमारा कर्तव्य अत्यन्त कठिन है। हमारे नेता की नीति तभी सफल हो सकती है, कर्तव्य को सिर्फ सस्ते धुआंधार

(शेष पृष्ठ २३ पर)

महिला-जगत

आधुनिक शिक्षा-प्रणाली से हमारा ह्रास

(ले०—श्री ज्ञानकुमारी भंवर खुर्जा)

——*:*——

सौभाग्यवश आज भारतवर्ष में स्त्री शिक्षा का प्रचार अत्यन्त ज़ोर पकड़ रहा है। किंतु हमें यह देखना है कि शिक्षा का अर्थ क्या है। आत्मा एवं मानसिक शक्तियों के सुचारुतया विकास द्वारा लौकिक व्यवहार सिद्धि पूर्वक निर्वाण-पद प्राप्ति ही शिक्षा का शब्दार्थ है। वैदिक शिक्षा अभ्युदय तथा निःश्रेयस दोनों जीवन ध्येयों की साधक है। वैदिक शिक्षा के द्वारा ही दाम्पत्य जीवन नितान्त सुखमय एवं शान्तिकारक होता है। नर या नारी का प्रत्येक के साथ जो उत्तम कर्त्तव्य होता है, उसका यथावत् शिक्षण वैदिक शिक्षा से मिल जाता है। धर्म, जाति और देश के प्रति जो कर्त्तव्य होना चाहिये उससे उक्त शिक्षाप्राप्त नर नारी कभी विमुख नहीं हो सकते। वैदिक शिक्षाप्रणाली पुरुषों के ही लिये नहीं, प्रत्युत नारी वर्ग के लिये भी सर्वथा निर्दोष एवं पूर्ण उन्नति और हितसाधक है। वैदिक शिक्षा का ध्येय सांसारिक तुच्छ स्वार्थ नहीं, विलासमय जीवन बनाने के लिये यह शिक्षा आज्ञा नहीं देती। सांसारिक त्रिगुणजन्य पदार्थों में रम कर आत्मा-परमात्मा प्रकृति के रहस्य से विमुख होकर जीवन को नष्ट करने में कभी सहायक नहीं हो सकती। सुचारुतया अभ्युदय सिद्ध करते हुए निःश्रेयस या मानव-जीवन में उच्च ध्येय अर्थात् निर्वाण-पद प्राप्ति करना है। इस बात का पूर्ण परिचय तो वैदिक-शिक्षा से ही मिल सकता है। उक्त शिक्षा से शिक्षित अथवा प्रभावित प्राचीन आर्य देवियों का जीवन आदर्शमय था, शांति के अन्दर स्वर्ग का भंडार था, अपने उज्ज्वल चरित्र से बड़े २ प्रकांड विद्वान और अनोखे वीरों को जन्म देती थीं। इसी कारण उनको 'शक्ति' का रूप माना जाता था और 'देवि', इस दिव्य नाम से विभूषित किया जाता था। प्रत्येक उत्तम गुण शिक्षा और शिक्षाप्रणाली से ही प्राप्त किया जा सकता है। किंतु आज वैदिक समय नहीं है। वैदिक शिक्षा का दौर-दौरा भी नहीं। वैदिक शिक्षा प्रणाली का तो सर्वथा लोप ही हुआ समझना चाहिए। आज हमारे इस स्वर्णमय भारत में पाश्चात्य अधूरी शिक्षा का और उसकी दूषित प्रणाली का प्रचार और प्रसार है। प्रायः प्रत्येक शिक्षणालय में मुख्यतया इंग्लिश भाषा द्वारा भारतीय बालक और बालिकाओं को शिक्षण दिया जाता है। किसी भी देश या जाति की भाषा बुरी नहीं। शिक्षा और शिक्षा प्रणाली दोषकारक हो सकती है इन दोनों में भी उन्नति या अवनति-कारक प्रधानतया शिक्षा प्रणाली ही होती है। जिस प्रकार की शिक्षा प्रणाली होगी उसी प्रकार का प्रभाव पाठक या पाठिकाओं पर पड़ता है। आज कल भारत वर्ष में विदेशी सरकार द्वारा परिचालित भारतीय बालक बालिकाओं की शिक्षा प्रणाली हलाहल विष के समान दोनों के लिए घातक सिद्ध हो चुकी है। विशेषतया बालिकाओं के लिए तो अतीव हानिकारक सिद्ध हो रही है।

इस शिक्षा से शिक्षित बालिकायें अपना स्वास्थ्य एवं सदाचार सदा के लिए खो बैठती हैं। कोई न कोई रोग राक्षस की भांति पीछे पड़ा ही रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि आगे चल कर गृहस्थ में प्रवेश होते ही डाक्टर और वैद्यों के आने के लिए घर केन्द्र बन जाता है। स्वास्थ्य बिगाड़ कर रोग मोल लेना डाक्टर और वैद्यों के द्वारा निरन्तर सुख की अपेक्षा स्वयं दुःखी रह कर सब परिवार वालों को सदा चिंतित रखना यही उपलब्ध होना है। कालेज और स्कूलों में पढ़ने वाली बहनों की अपवित्र प्रेम-पूर्ण मनोवृत्ति और बुरी हालतों से कौन परिचित नहीं है? गृहसम्बन्धी या गार्हस्थ्य जीवनोपयोगी उत्तम कार्यों में पढ़ने वाली बहिनें हाथ लगायें, यह उनकी शान के विरुद्ध है। पानी के एक ग्लास के लिए भी किसी अन्य व्यक्ति से कहना ही पड़ेगा, यदि किसी घरवाले ने कार्य करने की ओर संकेत भी किया तो उससे कोप भाजन होना ही पड़ेगा।

जहां उत्तम शिक्षाप्रणाली से वृत्तियों में सात्विकता और जीवन में सादगी और सुन्दर चरित्रबल द्वारा मानसिक सुख शान्ति प्राप्त होनी चाहिए थी वहां आज जीवन नितान्त विलासमय हो गया है। जिधर देखो भारतीय बहिनें विदेशी वेश-भूषा या फैशन की पुतलियें नजर आती हैं। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तरह २ के कृत्रिम तेल, क्रीम, स्नो, पाउडर आदि से सौन्दर्य सम्पादन के लिये भारी कोशिश में दृष्टिगोचर होती हैं। पीयर सोप के बिना स्नान हो ना तो कठिन ही है। सारांश यह है कि विदेशी चीजों के लिये लालायित रह कर अपने शरीर को विदेशी वस्त्रों द्वारा अलंकृत करने में अपना अहोभाग्य समझती हैं। पूज्य बापू जी अथवा देश का अन्य कोई नेता अपनी आवश्यकताओं को कम करने के लिये कितना भी कहे अथवा कितना भी आग्रह खादीधारण करने को कहें, वे सदुपदेश तो एक कान से सुने दूसरे से निकाले। जहां वैदिक-शिक्षा-प्रणाली से भारतीय बहिनों में धर्मपरायणता का भाव उद्भव होता था वहां आज वह विषमय वातावरण से दूर बहुत दूर उड़ाया जाता है। जातिसेवा की भावना आज भारतीय बहिनों के हृदयों में नहीं रही। जाति में अनेक कुरीतियों ने अड्डा जमा रक्खा है। रूढ़िवाद जाति को घुन की तरह खोखला कर रहा है। दूषित वृत्ति स्वीकृत करने वाली बहिनों की भी संख्या बढ़ती ही जा रही है। किन्तु इसकी चिन्ता किसको है? हो भी क्यों? वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ने तो काया ही पलट दी है। इसके कारण प्रवृत्तियां गुणों की तरफ न होकर अवगुणों की तरफ़ झुक रही हैं। आज हमारा देश विदेशियों से शासित और गुलाम है। विदेशियों से पद-दलित भारत वसुन्धरा को संकट-मुक्त करना सर्वप्रथम हम भारतीय बहिनों का कर्त्तव्य था। इसके लिए पुरुषों को हमारे द्वारा उत्साह मिलना चाहिए था, स्वतंत्रता की लड़ाई में सर्वप्रथम हमें कूदना चाहिए था। किंतु चारों ओर से नेतृ वर्ग द्वारा पुकार जाने पर भी देश की लड़ाई में मुट्ठी भर बहिनों ने ही साथ दिया। इसमें भी दोष हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली का है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली भारतीय बहनों को उन्नति की तरफ नहीं ले जा रही है, भारी अवनति या ह्रास की ओर ले जा कर संकट के गर्त में डालना चाहती है। मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि जब तक भारत में विदेशियों का स्वार्थ-पूर्ण शासन रहेगा, जब तक विदेशियों द्वारा परिचालित यह दूषित शिक्षा-प्रणाली रहेगी और जब तक भारतवर्ष में गुलामी के अड्डे कालिज आदि शिक्षा संस्थायें रहेंगी, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की जड़ें उखाड़ कर क्षार समुद्र में नहीं फैंक दी जायेंगी, तब तक भारतीय और विशेषतया भारतीय बहिनों का उद्धार कठिन ही नहीं प्रत्युत असंभव ही है। इस लिये मैं वर्तमान भारत के पूज्य नेताओं और अभिनेत्रियों से साग्रह प्रार्थना करूंगी कि यदि वे भारतीय भगिनी-मंडल का उद्धार चाहते हैं तो उनका परम कर्त्तव्य है कि वर्तमान स्त्री-शिक्षा-प्रणाली जड़ से ही बदलने और सुधारने की कोशिश करें। तभी इस मंडल के द्वारा सबको कल्याण संपादित होना संभव है। अन्यथा "अब पछताये क्या होवत है, जब चिड़ियन चुग गयी खेत" वाली लोकोक्ति चरितार्थ होगी।

सौन्दर्य के दस शत्रु

इनसे बचिये

सौन्दर्य स्त्रियों का एक स्वाभाविक गुण है और प्रत्येक स्त्री के मन में सुन्दर बनने की स्वाभाविक इच्छा होती है। आज तक शायद ही कोई ऐसा स्त्री सुनी गई हो जिसे सुन्दर बनने ... आधुनिक संसार ने सौन्दर्य के अनेक साधन उपस्थित कर ... है और पाश्चात्य देशों में तो ... साधना की ... और ... पड़ ... है। सौन्दर्य बढ़ाने ... पढ़ ... है कि सौन्दर्य के शत्रुओं ... किया जाय और उनसे दूर रहा जाय ... नाम के एक विख्यात सौन्दर्यविशेषज्ञ ... कहना है कि सौन्दर्य के दस शत्रु हैं और प्रत्येक स्त्री का यह कर्तव्य है कि वह इनको ... दूर रक्खे।

सौन्दर्य को हानि पहुंचाने वाला सब ... वस्तु ... है। ... आपके भोजन में ... की मात्रा अधिक है और फलों तथा शाक आदि की कमी है तो उससे आपके स्वास्थ्य और सौन्दर्य दोनों को ही हानि पहुंचेगी।

कम ... भी सौन्दर्य को नष्ट करते हैं। हिन्दुस्तान जैसे देश में सौन्दर्य ठीक रखने के लिये दिन रात में ८ घंटे अवश्य सोना चाहिए। यदि गर्मियों में आपको नींद कम आती है तो आप लापरवाही न कीजिए और किसी न किसी उपाय से अपनी नींद अवश्य पूरी कीजिए। नहीं तो आपका सौन्दर्य नष्ट हो जायगा।

इसी प्रकार प्रति ... करना भी अपने सौन्दर्य के साथ शत्रुता करना है। प्रति दिन शीतल छाया में कुछ देर ... आपका सौन्दर्य बढ़ेगा और आपका स्वास्थ्य भी सुधरेगा।

सौन्दर्य के अन्य शत्रु

इसके बाद सुन्दर तथा भद्दी आकृति का प्रश्न आता है। यह सब आदत पड़ने की बात है। हसते समय आंख ऊपर चढ़ा लेने की आदत बहुत ही खराब है और इस से चेहरे का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार भौंह तान देने से माथे पर सिकुड़न पड़ जाती है और वह भी सौन्दर्य को धक्का पहुंचाता है। तीसरी बुरी आदत आंखों को बार बार मलना है। इससे पलकें मोटी पड़ जाती हैं और चितवन बिगड़ जाती है।

आंखों पर अधिक भार पड़ने से उनको बहुत हानि पहुंचती है। परिणाम यह होता है कि ऐसी स्त्री अपनी आयु से भी अधिक बूढ़ी जान पड़ने लगती है। कम अथवा अत्यंत अधिक प्रकाश में काम करने तथा पढ़ने से आंखों पर अनावश्यक जोर पड़ता है।

शरीर को ठीक तरह से पालना भी एक कला है। आजकल के जमाने में प्रत्येक सुन्दरी सोने से पूर्व अपने चेहरे तथा शरीर को अवश्य ही सावधानी से पोंछती है परन्तु इन में अधिकांश को यह क्या मालूम नहीं है। लापरवाही से रगड़ कर शरीर पोंछने का परिणाम ठीक नहीं होता। इससे चमड़े पर झुर्रियां पड़ जाती हैं। अधिकांश स्त्रियां अपने चेहरे को खुरदुरे तौलिये से रगड़ डालती हैं। उन्हें चाहिए कि वे मुलायम कपड़े से ... उसे सुखा लें।

इसके बाद अन्य ... बातों पर ध्यान देने का सवाल उठता है जिनको अधिकांश स्त्रियां भुला देती हैं। यदि हमारे पाउडर अथवा पफ बालों के ब्रश या इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं में जरा भी खराबी आ गई है या वे हमारी आवश्यकता के अनुरूप नहीं हैं तो हमें चाहिए कि हम उन्हें तुरन्त ही बदल दें।

सौन्दर्य का नवां शत्रु उसके साधनों की कमी होना है। साबुन का अच्छा न होना अथवा घटिया पाउडर लगाना और ... इस्तेमाल सौन्दर्य को अवश्य बिगाड़ देगा।

सौन्दर्य का दसवां शत्रु तो सब से जबरदस्त है। ... डाक्टरों से उचित सलाह लिए बिना ही अन्दाज से सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए अनेक दवाओं का इस्तेमाल करने लगते हैं। यह बहुत ही हानिकारक होता है। अच्छी तरह से निश्चित किये बिना मोटाई कम करने की गोलियां खाना या इसी प्रकार की किसी और दवाई का प्रयोग सौन्दर्य को सुधारने के बदले उसे बिगाड़ देता है।

क्या आप बेकार हैं ?

क्यों नहीं घर बैठे डाक्टर बनते आज ही -) का टिकट भेज कर नियम मंगाइये। पता—प्रिंसिपल मेंबर होम्योपैथिक इन्स्टीट्यूट बिशनु लेन, लाहौर।

स्त्री-शिक्षा की जरूरत

रानी लक्ष्मीकुमारी का भाषण

आर्यसमाज कन्या पाठशाला के वार्षिकोत्सव पर रानी लक्ष्मीकुमारी धर्मपत्नी स्व० अवधेशसिंह जी (कालाकांकर) ने निम्नलिखित आशय का भाषण रक्षाबन्धन के दिन दिया था —

पहले भारतवर्ष में स्त्रियों का स्थान उच्च था लेकिन आज उसी भारतवर्ष में यह कहते हुए अति दुख होता है कि स्त्री जाति का पतन हो रहा है। आज स्त्रियों का कोई स्थान ही नहीं रहा है। स्थान की बात तो दरकिनार, उनका कोई अस्तित्व ही नहीं। समाज ने स्त्रियों को ... निकाल फेंका है जैसे दूध से मक्खी, इसके कारण अनेक हैं। परन्तु किसी को दोष न देकर मैं यही कहूंगी कि इस दुरवस्था का कारण अशिक्षित रहना ही है। हमें अपने अधिकारों का कुछ ज्ञान ही नहीं। ज्ञान हो भी कहां से क्योंकि हम लोग अशिक्षित रखी जाती हैं। अशिक्षित रहने के कारण स्त्री जाति की दशा अत्यन्त शोचनीय है। लोग लड़कियों को शिक्षा देना पसन्द ही नहीं करते। अशिक्षित रह कर स्त्रियां आगे के जीवन में नाना प्रकार के कष्ट उठाती हैं। उनको इतनी भी शिक्षा नहीं देते कि वे अपना हिसाब, चिट्ठी आदि गृहकार्य भी उचित रूप से कर सकें।

हम सब का धर्म है कि मिल कर बालिकाओं में शिक्षा का प्रचार करें। यों तो शिक्षा का प्रचार स्त्रियों में आरम्भ हो ही गया है और नगरों में स्त्रियां और बालिकायें स्कूल कालेज में पढ़ने लगी हैं परन्तु शिक्षित स्त्रियां अभी उंगलियों पर गिनी जा सकती हैं। स्त्रीशिक्षा की गति बहुत धीमी है। शिक्षा की गति तेज करने के लिये हमें बहुत जोर लगाना चाहिये, क्या आप उस दिन देखने की आशा नहीं करेंगी जब कि भारत का प्रत्येक स्त्री और बालिका पुरुष समाज के साथ २ सुशिक्षित हो कर अपना ही नहीं बल्कि कुल भारतीय समाज का कल्याण करें।

मैं अक्षरों के लिखने पढ़ने को ही शिक्षा नहीं समझती। मेरा शिक्षा से अर्थ, धार्मिक, मानसिक और शारीरिक विकास है ऐसी शिक्षा हो जिस से हम अपना भला बुरा तथा देख, और संतान की ओर कर्तव्य पहिचान लें। हमें शिक्षा से यह ज्ञान हो कि हमारे क्या अधिकार हैं, क्या कर्तव्य हैं ?

मुझे बड़ा हर्ष होता है जब कन्याओं और बालिकाओं को पाठशालाओं में पढ़ने आती देखती हूं। मैं सदैव भगवान से प्रार्थना किया करती हूं कि हे भगवन्! हम भारतीय स्त्रियों को बुद्धि ज्ञान और बल प्रदान करें कि जिससे हमारा भी दूसरे देश की स्त्रियों की तरह समाज में मान हो।

मैंने अपने पूज्य पति स्वर्गीय राजा साहेब के साथ यूरोप की यात्रा की थी। परन्तु अस्वस्थ होने के कारण मैं अधिक कुछ ज्ञान प्राप्त न कर सकी। परन्तु यह देख कर मेरी आंखें खुल गईं कि योरोपियन स्त्रियां कितनी सुशिक्षित हैं। वह पुरुषों के साथ जीवन के हर एक विभाग में भाग लेती हैं। उन्हें पुरुषों के साथ धार्मिक सामाजिक राजनैतिक अधिकार प्राप्त हैं। वह केवल अच्छी तरह आभूषण और वस्त्रों से ही अलंकृत और सुसज्जित हो कर रहना ही नहीं जानतीं बल्कि वह हर तरह से सुशिक्षित हैं। उन्हें हर एक बात का ज्ञान प्राप्त है। वह धार्मिक सामाजिक राजनैतिक आर्थिक गृहस्थ और स्वास्थ्यरक्षा के विज्ञानों से भली भांति परिचित हैं शिक्षा और ज्ञान के प्रभाव से वह मानव जीवन का पूर्ण लाभ उठाती हैं।

प्यारी बहिनो! क्या आप भी इसी प्रकार शिक्षा पाकर भारतीय स्त्री समाज को सम्मानित बनायेंगी ?

एक असाधारण खगोलवेत्ता

अध्यात्मिक जीवन से प्रेम

(ले०—श्रीमहादेवभाई देसाई)

कारेल दुयेर एक असाधारण व्यक्ति है। इसे हमारे यहां (भारत) आये भी थोड़े ही दिन हुए हैं उम्र सिर्फ ३२ साल की है। पर बात कुछ ऐसी अनुभवजनित आत्मश्रद्धा के साथ करता है, जैसे कोई ६० वर्ष का अनुभवी वृद्ध हो। सभी विषयों में प्रवेश है। और फिर चक्षु-प्रवेश नहीं, किन्तु विचार अथवा गहरे संस्कार के परिणामस्वरूप परिपक्व ज्ञान उसमें दिखाई देता है। यह युवक ज़ेकोस्लोवेकिया का है। वह अपना परिचय खगोलवेत्ता के नाम से देता है और खगोलवेत्ता है। दुनिया में वह खूब घूमा है। खगोलविद्या का अध्ययन करने के लिए वह एक वर्ष इंग्लैन्ड में, दो वर्ष फ्रांस में और पांच वर्ष अमेरिका में रहा है, यूरोप की सभी भाषाएं जानता है। केवल सूर्यचन्द्रादि ताराओं से विभूषित नभोमंडल को देखकर वह संतोष माननेवाला जीव नहीं, उसे तो इस नभोमंडल की अतुलनीय व्यवस्था, अपार शांति और अद्भुत संगीत हमारी इस पृथिवी पर उतारना है। इतनी कम उम्र में वह अहिंसा का पुजारी है। टाल्सटाय को गुरुवत् मानता है। खगोल विद्या में फ्रांस के महान् खगोलवेत्ता फ्लामेरियों को वह अपना गुरु मानता है। और अहिंसा के पुजारी गांधीजी के साथ कुछ दिन रहने के लिए वह यहां आया है। दिल्ली में वह गांधीजी से मिला था। पर उसकी दस-पांच मिनिट की बातचीत का गांधीजी पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने उसे वर्धा आने के लिये कहा। वह भारत में छः-सात महीने से है। भारतवर्ष के प्राचीन खगोल विज्ञान का अध्ययन करके अब वह अपने देश को वापस जा रहा है। फ्लामेरियों जैसे और भी खगोलवेत्ता आज यूरोप में हैं, जीन्स तो है ही, पर फ्लामेरियों को कारेल दुयर ने अपना गुरु क्यों बनाया? इसका कारण यह है कि फ्रांस का यह खगोलशास्त्री एक संत था। उसका सिद्धान्त यह था कि सच्चे खगोलवेत्ता का जीवन मलिन होना ही नहीं चाहिए। फ्लामेरियों ने कभी शराब या सिगरेट नहीं पी, और इसी तरह "हमारे राष्ट्रपति मसरिक का जीवन" कह कर वह तुरत अपने देश की स्तुति करने लगता है। उसकी देशभक्ति उसके रोम रोम में दिखाई देती है। "हमारा देश ही यूरोप का एक सच्चा प्रजातंत्रात्मक देश है। हमारे ८६ वर्ष के प्रेसिडेंट मसारिक की प्रकृति में ही सीज़र-शाही, हिटलरशाही, या मुसोलिनी शाही नहीं है। उसे एक भी बात बिना प्रजा की राय के करना असुहाती लगती है। शराब से उसे बड़ी ही सूग है। उसकी चले तो वह शराब का बहिष्कार सारे राज्य में करा दे। उसका शासन-सूत्र इतना सुन्दर चल रहा है कि १७ बरस से हमारा वही प्रेसिडेन्ट बना हुआ है। दूसरा प्रेसिडेन्ट चुनने का हमारा मन ही नहीं होता हमारा। प्रेसीडेन्ट टालस्टाय का भक्त है। टालस्टाय से मिलने वह रूस गया था। गांधीजी



नेपाल के प्रधान मन्त्री श्री जुद्धशमशेर राणा जंगबहादुर



आपका नाम हिन्दू महासभा के आगामी अधिवेशन के सभापतिपद के लिए लिया जा रहा है।

को भी वह जानता है, और उनकी खूब प्रशंसा करता है।

स्वदेश की बात करते हुए तो कारेल दुयर कभी थकता ही नहीं। "हम स्लाव लोगों और आप भारतीयों के बीच परापूर्व का संबंध है। हम लोगों ने एक ही संस्कृति का दूध पिया है। हमारी भाषा को ही देखिये। ज़ेक और स्लोवाक प्रजा कहने को दो हैं, पर दोनों की भाषा करीब करीब एक ही है। आपकी भाषा और हमारी भाषा में यों देखने में भारी अन्तर मालूम पड़ता है। पर हमारी भाषाओं का मूल तो एक ही है। हमारी भाषा का शब्द 'द्वेजे' ले लीजिए। स्लोवाक लोग उसका 'द्वेरे' उच्चारण करते हैं, ज़ेक लोग 'द्वजे' कहते हैं। 'द्वेरे' और संस्कृत 'द्वार' में क्या अन्तर है? द्वजे और फारसी 'दरवाजा' में क्या कोई बड़ा फर्क है? 'दूम' शब्द का अर्थ हमारी भाषा में घर होता है। 'दूम' और 'धाम' शब्द में अन्तर ही कितना है? आपको आश्चर्य होगा कि हमारे पड़ोस की भाषा लिथुएनियन ने संस्कृत का 'गुरु' शब्द ज्यों का त्यों ले लिया है। पर यह तो भाषा की बात हुई, मैं तो आप से यह कहता हूं कि हम लोगों की धमनियों में एक ही प्रकार का शांत रक्त प्रवाहित हो रहा है। आप लोग अहिंसा के उपासक हैं, और यूरोप में स्लाव लोग अहिंसा के सच्चे उपासक हैं।"

"पर रूस में भी स्लाव लोग ही हैं न?" मैंने पूछा।

"हां वहां भी स्लाव ही हैं, पर उन स्लावों का दिमाग आज चक्कर खा गया है। ठिकाने आयगा। रूस में यह विप्लव का बीज फ्रेंच विप्लव से आया है। तो भी स्लावों का सच्चा प्रतिनिधि तो टाल्सटॉय ही था। रूस का यह हिंसा तो एक ऊपरी चीज़ है। रूस धर्म की नहीं, किन्तु मौजूदा धर्म संस्था की निंदा करता है क्योंकि धर्म ने नहीं, बल्कि धर्म संस्था यानि चर्च ने यह सब सत्यानाश किया है। चर्च ने हमेशा ही धनिकों की खुशामद की है, और गरीबों को चूसने में मदद दी है। यों तो मैं भी किसी चर्च को नहीं मानता। जन्म मेरा रोमन कैथोलिक घराने में हुआ था पर रोमन कैथलिक चर्च छोड़े तो मुझे कई साल हो चुके हैं। आज तो मैं 'ईसाई' बनने का विनम्र प्रयत्न कर रहा हूं।

"पर हमारे यहां भी इस ज़माने की हवा बह रही है। हमारे शहरों में आप घर-घर रेडियो लगे देखेंगे। हम जो यह मानते हैं कि रेडियो से हमारी ज्ञान वृद्धि होती है, वह हमारा भ्रम है। अरे, यह सब धनियों के चोंचले हैं। इस रेडियो के द्वारा ही लड़ाइयां और खून-खराबियों की अधकचरी खबर गांव-गांव में फैलाई जाती हैं।

"और यह चर्खा भी किसी ज़माने में हमारे घरों में गूंजती थी। हमारी भाषा में चर्खे और कर्घे पर अनेक गीत मिलते हैं। पर आज तो हम लोग भी इस 'उद्योगवाद' के शिकंजे में फंसे हुये हैं। अब हमारे यहां चर्खे और कर्घे की कहानी ही कहने को रह गई है।"

पर अब महान् प्रतिभावान् कारेल दुयर के खगोल ज्ञान की थोड़ी सी बानगी दे दूं। वह यह मानता है कि खगोल विज्ञान का आध्यात्मिक सन्देश ग्रहण करने के लिये खगोल शास्त्री होने की आवश्यकता नहीं। हम लोग साधारणतया आंख मूंद कर और कान बन्द करके जीते हैं, इसलिए विश्व में जो सीखने की चीज़ है वह हम नहीं सीख सकते। कारेल दुयर को अगाध ज्ञान देख कर गांधी जी ने जमनालाल जी

से कहा कि इसका यहाँ भाषण कराना चाहिए। अपने भाषण से हमारे उस युवक महमान ने सबको मंत्र मुग्ध कर दिया। उसकी मातृ-भाषा अंग्रेजी नहीं है। साधारण बातचीत में अकसर अशुद्ध व्याकरण के प्रयोग करता है और भाषा भी उस टूटी-फूटी हो जाती है। पर जब वह भाषण देने के लिए खड़ा हुआ और बोलने लगा, तब ऐसा लगा कि जैसे कोई द्रष्टा बोल रहा है। वह बोलता तो जमीन पर था, पर उड़ता आसमान में। उसकी असाधारण तन्मयता देखकर आश्चर्य होता था। बल्कि यह तन्मयता ही उसके जीवन की कुंजी है। उसके भाषण को मैं शब्दशः दूं तो पाठक उसे ठीक ठीक समझेंगे नहीं और जो लंबी कराड़ों और अर्व-खर्व के आँकड़े वह उगलता चला जा रहा था, वह सब मैं यहाँ दूं, तो पाठक घबरा जायेंगे। इसलिए मैं तो उसके भाषण का केवल सारांश ही दूंगा।

विशाल विश्व

अनादि अनन्त काल का भान हमें सब से पहिले खगोल विद्या ने कराया। और हमारा जीवन इस अनादि काल में एक बिंदु मात्र है। इस बात का हमें अपने इस ग्रहों और नक्षत्रों से विभूषित नभोमंडल से चलता है। यह सामने दिखाई देने वाला शीतल चन्द्रमा हम से इतना दूर है कि अगर हम वहाँ जाना चाहें, तो एक एक्सप्रेस गाड़ी में बैठ कर १७५ दिन में हम चन्द्र-लोक में पहुंच सकेंगे। और सूर्य तक पहुंचने में? सूर्य की बात इस से भी निराली है। हम अपनी इस पृथ्वी की ही विशालता से विस्मित हो रहे हैं। पर सूर्य तो इस पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा है! सूर्य तक पहुंचना हो, तो ७५ मील की स्पीड वाली एक्सप्रेस ट्रेन से १७८ वर्ष में हम वहाँ पहुंचेंगे। और फिर नभो-मंडल में यह एक ही सूर्य नहीं है। ऐसे अगणित सूर्य आकाश-मंडल में हैं। यह अखिल विश्व-ब्रह्मांड अनादि काल से चला आ रहा है और अनंत तक चलेगा। इसका कभी नाश होने का नहीं, यद्यपि इसमें परिवर्तन तो प्रतिक्षण होता ही रहता है। यह सूर्य भी कई लाख वर्ष के बाद नष्ट हो जायगा, किन्तु लाखों सूर्यों की भस्म से अन्य अनेक नये सूर्य प्रगट होते रहेंगे। प्रयत्न मिथ्या नहीं जाता। इस जीवन में नहीं तो अनेक जीवनों के अनन्तर वह अवश्य सफल होगा, इस जीवन के नाश में से अनेक उज्ज्वल जीवन प्रगटेंगे। लॉवेल नाम का एक साधु चरित खगोल-शास्त्री सारी जिंदगी अन्वेषण करते करते मर गया, अपनी शोध का फल उस ने तो नहीं उसके बाद के लोगों ने देखा। उसने तो सामग्री इकट्ठी की और उंगली से दिखाकर वह बतला गया कि, 'देखो, फलां जगह नया ग्रह 'प्लूटो' होना चाहिए।' सन् १९१४ में वह गुजर गया, और १९३० में उसके बताये ग्रह का दर्शन हुआ। अन्वेषक के बाद अन्वेषण का दर्शन हुआ। पर क्या उसे कम सफलता मिली? उसने तो इस अनंत अपार विश्व के एक अल्प अंग के रूप में अपना पुरुषार्थ जगत को अर्पित कर दिया, और अपने जीवन का साररूप यह सिद्धांत संसार के आगे रख गया कि, 'नभोमंडल के तत्व तो उसके भक्तों के ही लिये हैं।' और फिर वे भक्त कैसे? इस दुनिया के वातावरण से अपने चित्त को पराङ्मुख करके जगत् से निवृत्त होकर हृदय की गुफा में प्रवेश करके संपूर्ण आत्म-शुद्धि कर चुकने बाद ही मनुष्य सच्चा भक्त बन सकता है। जिस आत्मशुद्धि की साधना हमारे पूर्व के ऋषि मुनियों की थी, वही आत्मशुद्धि हमारी आंख को सच्ची दृष्टि देगी, हमारे कान को सच्ची श्रवण-शक्ति देगी। तभी हम अदृष्ट देख सकेंगे, अश्रुत सुन सकेंगे।

यह सारा विश्व अहर्निश घूम रहा है। एक ग्रह के आसपास अनेक चन्द्रमा घूम रहे हैं। कुछ तो एक दूसरे के आसपास घूमने वाले दुगुने, तिगुने और चौगुने आकार वाले नक्षत्र हैं ये सब अपनी इतनी नियमित गति से घूमते हैं कि उसमें क्षण के एक हजारवें भाग के जितना भी फर्क नहीं पड़ता। ईश्वरीय नियम से ये सब नक्षत्र अपनी अपनी कक्षा में घूमते हैं, इसीसे वे आपस में कभी टकराते नहीं। इसीलिए विश्व में विवाद नहीं, किन्तु संवाद है कोला-हल नहीं, बल्कि स्वर्गीय संगीत है। इस संगीत को सुनकर भी हम अल्प जीव क्या आपस का कलह नहीं भूलेंगे? हमारा जीवन क्या है! खगोल की इस विशाल घड़ी के खटकन की टिक् टिक् की अपेक्षा हमारा जीवन कितना क्षणिक है! इसलिए हम गरूर किस बात का करें? किस गुमान में रहें? लेकिन फिर भी आज हम आँखें होते हुए भी अंध होकर घूम रहे हैं, कान होते हुए भी बहरे बने फिर रहे हैं! जहाँ एक भूकम्प पलक मारते हजारों के प्राणों को ले लेता है, वहाँ बड़े-बड़े युद्ध करोड़ों का संहार कर देते हैं। हमारे जीवन कलह के नीच स्थानों का भी कोई पार नहीं। अमेरिका में ऐसे ऐसे करोड़पति पड़े हुए हैं, जिन्हें यह भी पता नहीं कि वे अपने पैसे का किस प्रकार उपयोग करें, और उनकी आँखों के आगे ही लाखों बेकार आदमी भूखों मरते रहते हैं। जहाँ एक १३०० फुट ऊँची इमारत ७५ लिफ्ट लगे हैं जो लोगों को ११५ वीं मंजिल तक पहुंचाते हैं, वहाँ कितने ही ऐसे मनुष्य हैं, जिन्हें रहने को झोंपड़ी तक नहीं। कनसास के परगने में मेरे देखते-देखते लाखों टन गेहूं नष्ट कर दिया गया, और टेक्सास के परगने में लाखों टन रुई की गाँठों में आग लगा दी गई—इसलिए कि रुई और गेहूं का भाव कहीं गिर न जाय, और धनाढ्य लोग कहीं कम धनवान् न हो जायं! जब कि उसी अमेरिका में हजारों लोग चिथड़ा लपेटे घूम रहे थे, अब अमेरिका में ही नहीं, बल्कि हिंदुस्तान और चीन में लाखों नंगे और भूखे मनुष्य बिलबिलाते फिरते थे। यह सभ्यता है या जंगलीपना? अब भी हम चेत जायं, तो विधिनियंता के नियम पर टिके हुए इस दिव्य नभो-मंडल का दर्शन करके अपना यह मलिन हृदय शुद्ध कर लें, और मनुष्य-मनुष्य और राष्ट्र-राष्ट्र के बीच का यह नाशकारी कलह दूर करके पृथ्वी पर स्वर्ग को उतार लें।

('हरिजन सेवक' से)

क्या कर्जदार अब से जेल नहीं जाया करेंगे ?

भारत सरकार का नया बिल

छः प्रांतीय सरकारें बिल के पक्ष में

पक्ष और विपक्ष में युक्तियां

———(:⊙:)———

कुछ समय मे विभिन्न प्रान्तों में कर्जा-कानून जारी हो रहे हैं। प्रायः सब प्रान्तों के कानूनो का एक ही अभिप्राय है और वह यह कि ऋण-ग्रस्त किसानो और अन्य व्यक्तियों को सहायता दी जाय, उन्हें महाजनों या जमींदारों के अत्याचारों मे बचाया जाय। इन बिलों में सूद की उच्चतम दर नियत करन, किश्तो में अदायगी करने और समझौता बोर्ड कायम करन आदि का विधान है। पंजाब के बिल मे एक और धारा भी जोड़ी गयी थी कि कर्जदार को कर्ज अदा न कर सकने का हालत में गिरफ्तार भी न किया जा सक। इसका पजाब में बहुत विरोध हुआ और वह धारा पास न हो सकी।

अब भारत-सरकार के गृह-सदस्य सर हेनरी क्रेक न सिविल प्रोसीजर एक्ट ५९ धारा में एक सशोधन पेश किया है, जिस क अनुसार कर्जदार व्यक्तियों को जेल न भजा जा सकेगा। यह बिल लोकमत क लिये प्रचारित किया गया था। भारत-सरकार क पास इस बिल पर सरकारा, गैर-सरकारी, हाईकोर्टों के जजों, बार-एसोसियशनों और व्यापारिक-सघों तथा अन्य व्यक्तियो के मत आय हैं। इन सम्मतियो में तीव्र मतभेद है। कुछ इस धारा को अत्यन्त आवश्यक मानते हैं और कुछ इसे लेन-देन के कारोबार के लिये अत्यन्त हानिकर।

पक्ष में

कर्जदार को जेल भेजने की धारा को उड़ान के पक्ष में जितनी युक्तियां आई हैं, उन में म कुछ नीचे दी जाती हैं।

१. कैद और जेल बहुत आतंककारी है। अपनी बिरादरी का अपमान और जेल की तंगियों म बचन के लिए उस का बिरादरी वालों को रुपया चुकाना पड़ जाता है।

२. जेल मे बचने के लिये प्रायः कर्जदार को बहुत भारी सूद पर किसी और महाजन मे कर्ज लेन के लिये बाधित होना पड़ता है। इस का परिणाम यह होता है कि वह और भी कर्ज के समुद्र में डूब जाता है।

३. अपने पावने वसूल करने के लिये उत्तमर्ण (लेनदार) जिस सम्पत्ति को कानून क द्वारा लेने का अधिकारी नहीं भी है, वह भी जेल के डर दिखा कर वह वसूल कर लेता है।

४. कर्ज न दे सकन के कारण प्रतिष्ठित व्यक्तियो को फौजदारी मुजरिमों के साथ रखा जाता है, जो अत्यन्त अनुचित है।

विपक्ष में

वर्तमान कानून में कोई भी परिवर्तन करन के विपक्ष में निम्नलिखित युक्तियां दी जाती हैं -

१. जब अधमर्ण (कर्जदार) कर्ज चुकान की क्षमता रखता भी है, तब भी वह संयुक्त परिवार को प्रथा की आड़ में या कोई और बहाना बना कर कर्ज देने म इन्कार कर देता है। यदि कैद की सजा का डर न रहे, ता इस प्रकार क बहाने बहुत बढ़ जायगे।

२. उस मनुष्य की साख बिलकुल न रहेगी, जिस क पास जायदाद न हो या थोड़ी हो।

३. जहां अधमर्ण की बहुत बुरी हालत होती है और कर्ज चुकान में असमर्थ होता है, वहां साधारणतः उत्तमर्ण उसे जेल भजना हा नहीं, क्यो कि उसके भोजनादि का व्यय व्यर्थ करना पड़ जाता है।

४. वैसे भी बहुत कम हालतों में अधमर्ण जेल जाते हैं। इस लिये थोड़े से लोगों क लिये नया कानून बनाने की जरूरत नहीं रहती।

५. आज का कानून भी ईमानदार कर्जदार को जेल स बचाने की पर्याप्त सुविधायें दता है।

कुछ लोगों ने यह भी सलाह दी है कि कानून में सब के लिये कोई नियत व्यवस्था न हो, लेकिन हर एक के मामले में अदालत अलग अलग विचार करे। जो आदमी दे सकता हो और देता न हो, उसे जेल भेजा जावे, लेकिन जो दे ही न सकता हो, उसे गिरफ्तार न किया जाय।

दिल्ली के शासक

यह समझा जाता है कि देहली के चीफ कमिश्नर अधमर्णों को जेल भेजने क हक में नहीं हैं। उनका कहना है कि यह अधिकार केवल सरकार को होना चाहिये कि वह समाज के हित की दृष्टि म किसी व्यक्ति की स्वतन्त्रता छीन सके। यह अधिकार महाजनों को तो कभी भी नहीं सौंपना चाहिये। किसी भी हालत में अदालत को बिना जांच किये किसी कर्जदार को जेल में नहीं भेजना चाहिये। वे नये संशोधन को बहुत अधिक पसंद करते हैं।

लेकिन दिल्ली के सबजज दीवान श्रीराम पुरी इस बिल को बहुत उग्र समझते हैं। उनका ख्याल है कि इस मे उत्तमर्णों का अधिकार छिन जायगा। इससे पंजाब और दिल्ली में तो कर्जदारों को कर्ज न चुकाने का साहस हो जायगा, क्योंकि वहां तो किसानों की जमीन भी जब्त नहीं की जा सकती।

मध्यप्रांत की सरकार ने बिल का पूर्ण समर्थन किया है। नीमाड़ के जिला और सेशन्स जज न यह सलाह दी है कि यह बिल केवल गरीब कर्जदारों क लिए ही रखा जाय।

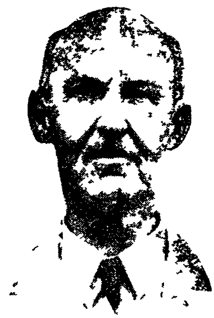
बरार में यह अनुभव किया जा रहा है कि इस बिल के बनाने की कोई खास जरूरत नहीं है। इसे यदि प्रांतीय कौंसिलों पर छोड़ दिया जाय, तो अधिक अच्छा हो।

अजमेर मेरवाड़ा का अडिशनल जिला जज जहां इस बिल से सहमत है, वहां इस बिल को १००) रु० तक वेतन भोगियों क लिये रखने की आवश्यकता नहीं समझते। वे कहते हैं कि आमदनी छोटी या बड़ी हो, इसका खयाल नहीं करना चाहिये। सभी के लिये यह बिल लागू होना चाहिये।

अजमेर के सब जज स्माल काज की सम्मति है कि बिल लाभ की अपेक्षा हानि अधिक करेगा।

बिहार व उड़ीसा की सरकार, मालूम हुआ है, इस बिल के सिद्धान्त के विरुद्ध है। उसकी सम्मति में यह संशोधन अनावश्यक है और यह बिल धोखेबाजी को बढ़ाने और उत्तमर्णों पर अनुचित भार बढ़ावेगा।

सर हेनरी क्रेक



बम्बई सरकार ने इस बिल का पूरा समर्थन किया है। लेकिन बम्बई हाईकोर्ट क जजों न वर्तमान कानून में संशोधन का विरोध किया है। उनकी सम्मति है कि यदि कर्जदार दीवाले के कानून की शरण नहीं लेता, तो यह समझा जा सकता है कि वह अपनी जायदाद को बचाना चाहता है।

संयुक्तप्रान्त का सरकार बिल के हक में है।

बंगाल सरकार इस बिल को बहुत लाभप्रद समझती है।

मुस्लिम चैम्बर कामर्स कलकत्ता इस बिल के पक्ष में है। ब्रिटिश इण्डियन एसोसियेशन कलकत्ता की सम्मति है कि इस बिल मे उत्तमर्णों के अधिकारों का नाश हो जायगा।

पंजाब सरकार इस बिल का समर्थन करते हुए इसे अपने कानून से कम पर्याप्त समझती है।

अब यह बिल असेम्बली के शिमला अधिवेशन में पेश होगा। देखना चाहिये कि भारतीय जनता के प्रतिनिधि अधमर्णों का पक्ष लेते हैं या उत्तमर्णों का और उससे कर्जदार जेल जाने से बच सकते हैं या नहीं ?

———

अल्मोड़ा में ऊनी खादी

(ले०—श्री मथुरादत्त त्रिवेदीसम्पादक 'शक्ति')

कुमाऊं के पर्वती खंड में, साल के छह महीने जाड़ों की ऋतु में ऊनी वस्त्रों की आवश्यकता पड़ती है। गढ़वाल कुमाऊं के शीत प्रधान खंडों में ऊन कातने व बुनने का रिवाज प्राचीन काल से अंग्रेजी राज्य के आरम्भ काल तक बराबर चलता रहा है। अंग्रेजों के आने के बाद जब विदेशी ऊनी व सूती वस्त्रों का प्रचार बढ़ा तब ऊन कातना शनैः शनैः कम हो गया। ऊन कातने की प्रथा बनी रही तो वह कुमाऊं के भोट इलाके में और गढ़वाल के उत्तरी भाग में। भोट के बने ऊनी माल की बाजार में खपत है। भोट-निवासी ही दिहातों ऊन को कुमाऊं व गढ़वाल के लोगों के घरों में पहुंचाते रहे हैं।

अन्तिम २०-३० वर्षों के बीच ऐसी अवस्था कुमाऊं में आ गई है कि लोगों को कातने के लिये तिब्बती ऊन मिलना कठिन हो गया है। लाल इमली व धारीवाल मिलों के एजन्टों ने सारी तिब्बती ऊन अपना लिया है। वैसे कुमाऊं में भेड़ें बहुत कम पाली जाती हैं, इधर कोई पालने का यत्न भी करे तो जंगलात विभाग के कड़े नियम होने से ऐसा करना भी कठिन है। भोटिया व्यापारी यद्यपि पशु कर देते हैं, तो भी वह स्वच्छंदतापूर्वक कुमाऊं के किसी रिजर्व या सिविल जंगल में अपना भेड़ों का गल्ला नहीं रख सकते।

तिब्बती माल को भारत के बाजार में पहुंचाने वाले व्यापारी इस समय तरह-तरह के विदेशी माल का तिब्बत देश की मंडियों में व्यापार करते हैं। भोटियों के जिन करघों में अपने हाथ का कता तिब्बती 'पशम' बुना जाता था आज उन्हीं करघों में आस्ट्रेलियन ऊन (कता हुआ) बुना जाता है। अब भोटियों के घरों का यह हाल है, तो दूसरी मिल्स फैक्टरियों में विदेशी मिलों में कते ऊन के तागों के बुने जाने का क्या दुःख रोना।

ऊन कातने का सरल साधन तकली है। भोट व उत्तरी गढ़वाल निवासी अपनी कमर में एक तकला व कुछ धुली ऊन की पिन्डियां रखते हैं। थोड़ी ही फुर्सत पर, या बात करते २, या रास्ता चलते चलते ऊन कात लेते हैं। इसके सिवाय ऊन कातने का एक चरखा भी इधर प्रयोग में आने लगा है। इस चर्खे का 'श्रीकृष्ण चरखा' कहते हैं। आदि में इस के बनाने वाले स्वर्गीय श्री कृष्ण जोशी जी थे। पीछे प० लक्ष्मीदत्त त्रिपाठी शास्त्री, श्री० प्रभुदास गांधी, ठा० जीतसिंह (चर्खाश्रम) बोरगांव वाले ने इस के सुधार का प्रयत्न किया। स्वर्गीय पं० श्री कृष्ण जोशी जी के बाद डा० जीतसिंह जी का चर्खे में सुधार का परिश्रम सफल रहा। यह चर्खा सिंगर कम्पनी की पैर से चलने वाली सीन की मशीन की तरह है। हाथ से ऊन देते रहो। मशीन सूत कात देगी। उसे स्वतः लपेट लेगी। कते हुए सूत को दुहरा कर देवेगी। साधारण चर्खे की कीमत आठ रुपये है। चरखा तरोड़ मरोड़ कर पैक किया जा सकता है। यह चरखा महात्मा गांधी जी के पास पहुंच चुका है और उन्होंने इसकी तारीफ की है। चर्खे में दो आदमी एक साथ काम कर सकते हैं और एक आदमी १ घंटे में पाव भर ऊन कात लेता है। इस चरखे का प्रचार शनैः शनैः बढ़ रहा है।

अल्मोड़े में ऊन-कताई के काम के पुनरुद्धार का श्रीगणेश सन् २१ २२ में कांग्रेस कमेटी के द्वारा हुआ था। संभवतः उस समय तिलक स्वराज्य फन्ड से कई हजार रुपया इस काम के लिये जिला कांग्रेस कमेटी अल्मोड़ा को मिला भी था। बाद में सोनलाखत, ताड़ीखेत बागेश्वर, देघाट आदि स्थानों में कताई बुनाई के काम का जीवन देने के लिये कांग्रेस की ओर से काम हुआ इन स्वतंत्र केन्द्रों में मिल मिला कर एक लाख रुपया तक खर्च हुआ होगा।

अल्मोड़े जिले में ऊनी खादी के काम का सन् १९२६ में जब कि जिला बोर्ड के सभापति प० हरगोविन्द पन्त जी और मंत्री श्रीयुत जोशीजी थे हाथ में लिया गया था। उस समय जिला बोर्ड में स्वराजी' कहे जाने वाले मेम्बरों का बहुमत था। राष्ट्रीयदल का ध्यान रचनात्मक कार्य की ओर था। उत्साही व आशावादी चेयरमैन व सेक्रेटरी का रोब डि० बो० स्कूल के अध्यापकों पर गालिब था। वह उनकी इज्जत करते थे। बोर्ड में ऊन कताई का प्रस्ताव पास हुआ और अध्यापकों व छात्रों ने वचन दे दिया कि स्कूल समय के बाद एक घंटा हम व हमारे विद्यार्थी बोर्ड की ऊन निःशुल्क कात देंगे। सर्वप्रथम खादी संचालक प० शिवदत्त जोशी जी नियुक्त हुए। आप एक स्कूल के अध्यापक हो थे और अब भी हैं। बीच में आप आन्दोलन में आगये थे। आप साबरमती आश्रम में भी कुछ दिन रहे। आपने बड़े जोश व लगन से प्रायः ४ वर्ष खादी का काम किया। आपने जब त्यागपत्र दे दिया तब महात्मा गांधीजी की सलाह से श्री शांतिलाल त्रिवेदी खादी संचालक बनाये गए। आपने भी सन् ३४ के अन्त में स्तीफा दे दिया है।

सन् २६ से मार्च सन ३५ तक डि० बो० अल्मोड़ा ने २५२९४) रु० ऊनी खादी के प्रचार में खर्च किया है। इन वर्षों के बीच माल की बिक्री से आमद ८१९५ रु० की हुई है। डि० बो० के गुदाम में कता हुआ सूत व बुना हुआ सामान बाकी है। इस समय डि० बो० के अल्मोड़े जिले में सात खादी केन्द्र हैं,—तथा अल्मोड़ा, खनोखान, बरोनाग, पोला गणनाथ, सामम (ठा० रामसिंह धोनी आश्रम) और गणनाथ, विद्यापीठ। १५० अपर स्कूलों और १२ मिडिल स्कूलों में ऊन काती जाती है।

सन ३२ से ३५ तक इस तरह ऊन खरीदी व काती गई।

३१—३२	२७॥।८=॥। वजन	६७० १३-० फी मन
३२—३३	१५८७॥ ,,	४२६ १५ ० ,,
३३—३४	२०८ ,,	३००-० ० ,,
३४—३५	१४८३	३०८-७-० ,,

कुल खर्च अन्तिम वर्षों इस तरह पर था।

७३२ ३३	१७६१) रु०
७३३ ३४	२८८४) रु०
७३४ ३५	३२००) रु०

कार्यकर्ताओं के वेतन में ही अन्तिम वर्ष में २७६६) रु० निकल गया। १२ कताईनिरीक्षक सेन्टरों के इन्चार्ज अध्यापकों को १) रु० माह के हिसाब से १४४) देना पड़ा। ऊन सिर्फ २००) की कती, वह भी निःशुल्क।

ऊन बहुत कुछ बर्बाद जाती है, इसका बोर्ड का ध्यान नहीं है। कते हुए मोटे सूत का अब तक एक मात्र उपयोग गलीचों को तैयार करने में होता रहा है। जो कती ऊन काम में नहीं लाई जा सकी, उसकी बर्बादी हुई है। प्रसन्नता है कि बोर्ड ने अब मोटी ऊन के कम्बल तैयार करने की सोची है। बोर्ड के खर्च से ठा० कृष्णसिंह व पं० शिवदत्त कम्बल बुनने में ट्रेन्ड होकर वापिस आगए हैं। कम्बल बुनने के लिए जरूरी सामान भी बोर्ड के पास तैयार है। बोर्ड का अपना अनुमान है कि १२ सेन्टरों से बोर्ड को सन ३४ की कती हुई ऊन प्रायः १०८ मन जमा होगी। सन ३५ के लिए केवल ८॥८५ ऊन बाहर भेजी गई है!

इधर जिले में डेढ़ दो दर्जन प्राइवेट केन्द्र, जहां कि ऊन काती बुनी जाती है कायम हो गए हैं। कोई २ केन्द्र नफे के साथ काम कर रहे हैं। उनका कताई व बुनाई काम सफलता पूर्वक चल रहा है। (लेखक डि० बो० सम्बन्धी आंकड़ों के लिए बो० देवीसिंह कुंवर बोर्ड के एक उत्साही मेम्बर का ऋणी है।)

अल्मोड़ा डि० बोर्ड ने सन २६ से आगे अब तक कई सौ या हजार विद्यार्थियों को दफा ४ और मिडल पास का सार्टीफिकेट देकर तथा ऊन कातना सिखा कर अपनी रोजी पैदा करने के लिये संसार क्षेत्र में छोड़ दिया है।

आग बोर्ड के इस काम को व्यापक रूप देने तथा इसके जरिये बेकारी के प्रश्न को हल करने के लिए तीन तरह से मदद चाहता है।

(१) सरकार—सरकार ग्राम-उद्योग धंधों का पुनरुद्धार करने जा रही है। कुमाऊं में ऊनी खादी के कार्य का बढ़ावा देना सरकारी ग्राम उद्योग-धंधा विभाग का मुख्य काम होना चाहिए। श्रीयुत मोहन जोशी जी ने सन ३० के लगभग इस खादी धंधे को व्यावसायिक रूप देने की सरकार के सामने एक स्कीम पेश की थी और उस काम के लिये १ लाख की सहायता चाही थी। उस समय डाइरेक्टर आफ इन्डस्ट्रीज ने इस स्कीम पर विचार करने का वचन दिया था। सरकार को भेड़ पालने के लिये कुमाऊं के लोगों को उत्साहित करना चाहिए। महात्मा गांधी जी—सन २९ के दौरे में महात्मा गांधी जी को कुमाऊं के

(शेष पृष्ठ २२ पर)

चिलों का किला--तीन दृश्य

जेनेवा की सुन्दर झील के उत्तरी तट पर चिलों का सुन्दर प्रसिद्ध किला है। किसी समय यह अभेद्य दुर्ग माना जाता था। इस किले में स्वतन्त्रता के कितने भक्त सरकार की कोपदृष्टि के पात्र होकर अपनी उम्र गुजार चुके हैं। सोलहवीं सदी में सवाय के ड्यूक ने जनेवा के स्वतन्त्रता आन्दोलन के नेता बोनिवार्ड को इसी किले में कैद कर रखा था। बोनिवार्ड वस्तुतः ड्यूक का ही कर्मचारी था, लेकिन ड्यूक के जनेवा के निवासियों पर अत्याचारों को देखकर ही वह स्वतन्त्रता आन्दोलन में सम्मिलित होगया। किले में तहखाने में उन पर अत्यन्त भयानक अत्याचार होते थे और सरदार भवन में ड्यूक आमोद प्रमोद में मस्त रहता। बोनिवार्ड छः वर्ष तक कैद रहा। जंजीराबद्ध बोनिवार्ड का चित्र अन्यत्र देखिये।



जिनवा की झील से किले का दृश्य



चिलो का किला जहाँ बोनिवार्ड कैद था



किले का सरदार भवन

श्याम कृष्ण और गौरी राधा

कवियों की अनूठी कल्पनायें

(ले०—श्री जगदीशप्रसाद माथुर "दीपक", राजस्थान-पत्रकार)

हिन्दी का प्रत्येक पाठक जानता है कि यदि किसी को श्री कृष्ण का वात्सल्यरस चखना हो, मोर-मुकुट, वन-माला, रस-विहार का सुख लूटना हो, गोपियों की विरहाग्नि में जलना हो, तो वह बृज भाषा के सजीव कृष्ण-साहित्य का, हिन्दी की अन्य-कृष्ण भक्ति अनुरंजित काव्य-माधुरी का परिशीलन कर जाय। शत-शत कवियों ने लीला बिहारी, रास क्रीड़ा-कौतुक के आगार और तदुपरान्त भी योगी राज, कृष्ण को भक्ति के प्रबल प्रवाह में आत्म-विस्मृत हो, ऐसा ले दे झकझोरा है कि क्या कहा जाय? भक्तों ने जिस तूफानी आवेश में भगवान को आड़े हाथों लिया है, उसे आप ढिठाई और मुंह लगे-पन की अन्तिम सामा-रेखा तक तो पहुंचा हुआ ही समझिये। हम यहां अपनी इस भूमिका-कथन को स्पष्टीकरण एक अनूठ उद्धरण से करके अपने मूल-विषय पर आयेंगे कि कवियों ने अपने भगवान को विपरीत रंग की जुगल-जोड़ी को भी कविता का कैसा अनूठा विषय बना लिया है।

इस ढिठाई की हद है। उदाहरण देखिये पाठक! एक भक्त शिरोमणि कहां तक मुंहलगे हैं, अपने भगवान के कि कृष्ण महाराज को यहां तक नीचा दिखाते नहीं डरते !! कहते हैं, भिन्न २ पशु-रूप में अवतार ले कर कब तुम ने गोपियां नचाईं, मत्स्य अवतार में किस के चीर हरे, कच्छप रूप में कब बांसुरी बजाई, किस की छातियां छुईं। यह तो राधा-लीला ही ऐसी प्रगट हुई कि जिन्हीं में तुम ने काम-कला का पाठ पढ़ा है। नहीं तो, शायद, इस में भी कोरे रह जाते! क्यों कवि जी महाराज, यही सन्देह रहा होगा न आप का, जब कि आप ने गाया थाः—

सूकर है कब रास रच्यो,
अरु बामन है कब गोपिन नचाई?
मीन है कौन के चीर हरे,
तिमि कच्छप है कब बेनु बजाई?
होय नृसिंह कहो हरि जू!,
तुम कौन की छातिन रेख लगाई?
वृष-भानुसुता प्रगटी जब ते,
तब ते तुम केलि कला निधि पाई?

इतना ही नहीं सम्भवतः यह पल्ला झाड़ कर अपने भगवान के पीछे पड़े मौजी कवि 'रसखान' थे, जो और आगे बढ़ कर 'अहिर की छोरियां की छछिया भर छाछ पर नाचने वाले और फिर भी अगम्य (?) प्रभु की पोल खोलते हैं—

नारद से सुक व्यास रटैं पचिहारे,
तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहिर की छोहरियां छछिया,
भर छाछ पै नाच नचावैं।

वाह, वाह! क्या खूब! छोरियों के, चुल्लूभर छाछपर योगीराजका नाच!

*　　*　　*

आइये पाठक, देखें—यह विश्व-विमोहन गोरा 'सांवला' क्यों है? कवियों के कल्पना की उड़ान में इस का कारण ढूंढना हो तो नागरीदास जी सहज ही गा चुके हैं ना, सहस्रों कजरारी आंखों वाली गोपियों की आंखों में समाया गोरा भला काला क्यों कर न होः—

कजरा ही अंखियानि में,
बस्यौ रहै दिन रात।
प्रीतम प्यारो है सखी
या तें सांवल गात।

*　　*　　*

कुंवारे-पन ही में कुमारियों के नैनों में घुम २ कर काले तो हो गये हुए। अब कृष्ण प्राणधन, नव विवाहिता दुलहिन आई। कवि प्रीतम के रूप में उनकी आंखों का भी लगाने का अछूता साधन अपनी कल्पना की उड़ान में ले आता है और कृष्ण-प्रणेता अपनी नायिका से कैसी मनोज्ञ की श्याम लिवाना है यह कहला कर—

सांवरे श्याम के सांवरा रूप में,
नैनन को कजरा करि राख्यो।

*　　*　　*

'स्याम कृष्ण और गोरी राधे' का अलौकिक रंग, कवियों की कल्पना उड़ान के लिये होली के उन रसीले खिलैया नायक नायिकाओं पर रंग छिड़कवाने में भी, चातुर्य-भरी बात कहलाने का कारण भूत होने से, न बच सका। यहां तो कवि-चातुरी ने प्रणय माधुर्य की ऐसी रंग सृष्टि की है कि बस, सुनते ही बनती है—

विहरति सह राधिकया रंगी।
मधु-मधुरवृन्दावन राधा सिहरिरिह
हर्ष तरंगी॥

अर्थात्—विलासोत्सुक तथा हर्षोन्मत्त श्रीकृष्ण, वसन्तागमन पर, कुञ्जों विटपों में, श्री राधा से क्रीड़ा कर रहे हैं।

विकिरति यन्त्ररित मघ वैरिरिग राधा
कुंकुमपंकम्।
दयिताम् यमपि सिंचाति मृग मद रस
राशिभिर विशंकम्॥

अर्थात्—राधाजी श्रीकृष्ण पर कुंकुम आदि आनन्ददायक वर्षा फेंक रही हैं और इनके प्रतिरोध स्वरूप श्रीकृष्ण कस्तूरी मिश्रित-वारि की पिचकारी अपनी प्रेयसी की देह पर मार रहे हैं।

यहां श्याम और गोरी की रंग-रसानुभूति का मनोरंजक बोध कराने के लिये सम्भवतः स्पष्ट विश्लेषण की आवश्यकता रह गई है। सुनिये—

राधाजी के वर्ण-साम्य से पीला कुंकुम श्रीकृष्ण को प्रिय होजाना स्वाभाविक ही है। ठीक इसी प्रकार, श्री कृष्ण का वर्ण-साम्य हेतु कस्तूरी भी श्री राधाजी को सहज प्रिय हो ही जाती है।

इतना ही नहीं, श्याम और गौर के इस रंग-खेल में दूसरा काव्य सादृश्य महाकवि ने यह अन्तर्निहित किया है किः—

श्रीकृष्ण के श्याम अंगों में, पन्ने (हरे रंग के जवाहिर यो मणि विशेष) के साथ स्वर्ण की भांति कुंकुमशोभित करवाकर और राधा के गौरांग में, चांद के कलंक की भांति, गहरी कस्तूरी शोभावर्द्धक रंग मंजित करने की कल्पना कर, उनके प्रेमाधिक्य के सहज चित्रण के साथ सुगन्ध भर दी है।

*　　*　　*

श्याम-कृष्ण को पन्ने की झांई में मिलाकर, उन पर पड़े कुंकुम के छींटों को स्वर्णवत् सौभाग्यमान बताते हुए, एक और महाकवि की उक्ति हृदय हुलसित करती निकली पड़ती है। गौरवदनी राधा और श्याम वर्ण कृष्ण के एकात्मक भाव की क्या सुन्दर उपमा बांधी है। सुनिये.—

"राधे सोने की अंगूठी, स्याम नीलम नगीना है।"

*　　*　　*

लो यह तो हुईं स्याम और गोरी की जवानी की बातें। अज्ञात यौवना निर्बोध राधा के बालहठ की ओर भी हजरत कृष्ण की महाकवि देव ने अच्छी किरकिरी दरसाई है।

एक दिन कान्ह कृष्ण को बीच में सुलाकर, उसके पास ही बाल राधा को एक ओर सुलाय, 'धाय' सोना ही चाहती थी कि हठीली गौरी-राधा काले कृष्ण के संसर्ग से स्याम रंग चढ़ जाने का भय खाकर चहुंक उठी। चतुर धाय ने बाला को भुलावा तो दिया किन्तु उस में भी स्वर्ण राधिका के सामने बेचारे स्याम को कसौटी की उपमा सहनी पड़ी है। कवि ही के शब्दों में—

"राधिका माधवै एक ही सेज पै,
धाय लै सोई सुभाय सलौने।
पारै 'महाकवि' कान्ह को मध्य में,
राधे कह्यो "यह बात न हौन॥
सांवरो होउंगी सांवर संग में",
"बावरी तोहि सिखाई है कौने।
सोने को रंग कसौटी लगै,
पै कसौटी को रंग लगै नहिं सोन॥"

*　　*　　*

बचपन की यही, सांवरे के स्पर्श से, ऐसी भोली बाला, जवानी में श्याम रंग के बिरद गाती न अघाती है। यहां कवियों ने प्राकृत स्वाभाविकता की क्या ही खूब रक्षा की है। यौवन की मादकता ही तो वह काल है, जहां नारी का पूर्ण आत्म-समर्पण सहज मिलता है और उसके हृदय पर नर का एकाधिपत्य। अब वही राधे समझीः—श्याम से उज्ज्वलता मिलती है।

'कोटि भानु जो ऊगवै, तऊ उजयार
न सोय।
तनिक स्याम की स्यामता, जो दृग
लगी न होय॥'

*　　*　　*

राधा के इस मानस-परिवर्तन का निरंतर विकास बिहारी की शब्द-जादूगरी में देखिएः—

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै
नहिं कोय।
ज्यों ज्यों बूड़े श्याम रंग, त्यों त्यों
उज्जल होय॥

*　　*　　*

मन ही मन यह पराजय अनुभव करते हुए भी, कृष्ण के—"तेरो मुख मोको कि मेरा राधे प्यारी?"—ऐसा पूछने पर क्या ही मुंहतोड़ उत्तर दिया है.—

"हम का कहें तुमहीं क्यों न देखो,
मैं गोरी तुम श्यामबिहारी।
हमरे बदन उगे चंदा की उजियारी,
तुम्हरा बदन ज्यों रैन अंधियारी॥
तुम्हरे भाल पर मुकुट बिराजै,
हमरे सीस पर तुम गिरिधारी।
'चन्द्र सखी' भजु बाल कृष्ण छवि,
दोउ ओर प्रीति बढ़ी अति भारी॥

इसी दुरूह स्वभाव ही का तो स्त्री को "मन ही मन हांहि कहैं पै बैनन ही ते नहियां" कह कर कवियों ने सहज गाया है।

भारत में योरोपियन जजों की नियुक्ति क्या ठीक है?

जजों को सर लालगोपाल मुकर्जी के परामर्श

साम्प्रदायिकता से बचो

वेतन से ही सन्तुष्ट रहो

ठीक समय पर अदालत में हाजिर हो

अवध चीफ कोर्ट के न्यायाधीश सर ए० नर्किंग के सम्मान के उपलक्ष्य में किये गये युक्त प्रान्तीय जुडिशियल आफिसर एसोसियेशन के दशम सम्मेलन में उस के सभापति सर लालगोपाल मुकर्जी ने निम्नलिखित आशय का भाषण दिया:—

यूरोपियन जजों की नियुक्ति

मुझे यह एक बड़ी खेदजनक बात जान पड़ती है कि इस देश के न्याय विभाग का संपूर्ण शासन देशवासियों के हाथ में नहीं है, देशवासियों का ही मुकदमे लड़ने वालों की भाषा रीति-रिवाज आदि से परिचय होता है और इसीलिए वे उनके मामलों पर अधिक अच्छी तरह से विचार कर सकते हैं। आप लोग सब यह जानते हैं कि जिन दाम्पत्तिक मामलों में यूरोपियनों का सम्बन्ध रहता है उन पर सभी जज विचार नहीं करने पाते। इसका कारण यह दिया जाता है कि भारतवासियों को यूरोपियनों के नियमों और रीति-रिवाजों का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं है। यदि यह सिद्धांत ठीक है—तो यह इस देश के मामलों पर इसी देश के विचारपतियों द्वारा विचार करने की समस्या पर भी लागू होता है। कहा जाता है कि कुछ यूरोपियन जज इस में भी बहुत सफलता प्राप्त करते हैं परन्तु उनको यह सफलता कितना अनुभव प्राप्त करने के बाद आरम्भ होती है और इस बीच में उन के अनुभव प्राप्त करने तक कितने निर्दोष व्यक्तियों को हानि उठानी पड़ती है, यह कौन कह सकता है।

हाईकोर्ट में नियुक्तियों के संबन्ध में कहा जाता है कि इंगलैण्ड की अदालतों का अनुभव प्राप्त किये हुए लोगों के यहां आने से हाईकोर्टों का बड़ा लाभ होगा। परन्तु आप उन अफसरों के सम्बन्ध में क्या कहते हैं जो कि कालेजों से शिक्षा प्राप्त करके ताजे ही आते हैं और उन्हें अंग्रेजी कानून विधान का भी अच्छी तरह ज्ञान नहीं रहता। इस प्रकार के युवकों के हाथ में न्याय विभाग में जिम्मेवारी पूर्ण पद देने का कोई भी औचित्य नहीं बतलाया जा सकता।

आई० सी० एस० वाले

शासन विभाग में कुछ थोड़ा सा ही अनुभव प्राप्त करने के बाद सिविल सर्विस वाले युवकों को डिस्ट्रिक्ट जजों के पद देने में भी कहां तक न्याय है। वे उन सबार्डिनेट जजों और मुंसिफों की अपीलें सुनते हैं, जो कि उनमें कहीं अच्छे वकील रह चुके होते हैं और जिन्हें उनकी अपेक्षा कहीं अच्छा अनुभव होता है मुंसिफी का बड़ी कड़ी परीक्षा पास करनी पड़ती है और उन्हें १२ साल का अनुभव प्राप्त किये बिना सबार्डिनेट जज के पद पर नियुक्त किया भी नहीं जाता। आई० सी० एस० पास युवक इन लोगों तथा कई साल के अनुभव प्राप्त सबार्डिनेट जजों का अपील सुनता है। इस प्रथा से न जनता के स्वार्थों की भी रक्षा नहीं होती और मुकदमा लड़ने वालों को व्यर्थ में हानि उठानी पड़ती है। इस के सिवाय यदि आई० सी० एस० वाला सज्जन अंगरेज हुआ तो उस देश की रीति-रिवाज भाषाओं और प्रथाओं का भी कुछ अनुभव नहीं रहता। यदि आई० सी० एस० हिंदुस्तानी हुआ तब उसे कानूनी ज्ञान और अनुभव की आवश्यकता रहती है। पहले आई० सी० एस० वालों को मुंसिफी का पद मिलना चाहिए और तब कहीं तरक्की करते करते उन्हें डिस्ट्रिक्ट जज के पद पर पहुंचना चाहिए।

साम्प्रदायिकता का विष

सज्जनो! साम्प्रदायिकता का विष हमारे भारतीय समाज में बुरी तरह घुसा हुआ है। मैं सच्चे हृदय से विश्वास करता हूं कि इस प्रान्त की जुडिशियल सर्विस वाले इस विष से अछूते हैं। आप लोग विचारपति हैं और न्याय के पवित्र सिंहासन पर आसीन होते हैं। परमात्मा ही कानून है और आप उसके प्रतिनिधि हैं जब कि आप न्याय के आसन पर बैठते हैं। परमात्मा मनुष्य मनुष्य में भेद नहीं करता और सभी समान रूप से उसके पुत्र हैं। इस सम्बन्ध में भगवान श्रीकृष्ण के शब्दों का उल्लेख करूंगा—'समोहम् सर्वं भूतेषु'—अर्थात् मैं सभी प्राणियों के लिये समान रूप में हूं। मुझे विश्वास है कि इसी प्रकार के कथन सब धर्मों में होंगे, जिन्हें मैं यहां सुना नहीं सकता। यदि ईश्वर सभी के लिए समान रूप से है तो वह मनुष्य कि जो उसका प्रतिनिधि है विविध व्यक्तियों के लिये विविध प्रकार का कैसे हो सकता है। जिन लोगों का ईश्वर में विश्वास नहीं है उन पर साम्प्रदायिकता का तो कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा पर वे जातीय विद्वेष की भावना के शिकार हो सकते हैं। उन के लिए मैं कहूंगा कि न्याय में कोई राजनीतिक प्रभाव नहीं पड़ सकता। मुझे आशा है कि इस प्रकार के लोगों से मैं कहूंगा कि मनुष्यत्व के नियम के आगे उन्हें भी अपना सर झुकाना पड़ेगा। बहुत दिन हुए महात्मा कबीर ने जिन्हें हिन्दू हिन्दू मानते थे और मुसलमान मुसलमान—गाया था,

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ,
पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का,
पढ़े सो पण्डित होय॥

प्रेम की सहायता से आप सच्चे और बुद्धिमान जज बन सकेंगे।

सज्जनो! आप जानते हैं कि प्रांतीय जुडिशियल सर्विस के नये उम्मेदवारों का वेतन कम कर दिया गया है। परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि नये साहब ईमानदारी के रास्ते में किंचिनमात्र भी हटें। वास्तव में मनुष्य का सभी आवश्यकताएं बहुत कम होती हैं। बात यह है कि मनुष्य के अस्वाभाविक जीवन के ही कारण उसको अरूरि यातें भी बढ़ जाती हैं। प्रत्येक भारतीय चाहे वह किसी भी जाति का क्यों न हो, इस बात को भली भांति जानता है। शारीरिक वासनाओं के पीछे फिरने से अपनी कभी तुष्टि नहीं मिल सकती। यदि ऐसा न होता तो धनी व्यक्ति संसार में सब से अधिक सन्तुष्ट होते। परन्तु क्या परिस्थिति वास्तव में यही है? इसलिए मैं आप से आग्रह करता हूं कि जो कुछ भी वेतन आपको मिलता हो उसी से सन्तुष्ट रहिये।

सच्ची सलाह

अब मैं अपने लम्बे भाषण को सर्विस में नये आने वालों को सच्ची सलाह देकर समाप्त करूंगा। आप लोग सदा बड़ी अदालतों और प्रिवी कौंसिल के फैसलों को पढ़ते रहिये ऐसा करने से आपको अनुभव होगा कि आप मुकदमों का फैसला जल्दी करने लगेंगे और इस तरह से आपके समय की भी काफी बचत होने लगेगी। जो मामला आपके सामने हो उस पर निर्णय देने में कभी जल्दबाजी न करिये। अन्तिम बात समय की पाबन्दी है। अदालत में आने के सम्बन्ध में ही नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, यदि समय की पाबन्दी करियेगा तो आपको काफी फुरसत मिलेगी, जिसमें आप कसरत मनोरंजन आदि करके अपना स्वास्थ्य बना सकेंगे।

अन्त में मैं आप की कान्फ्रेंस की सफलता की कामना करता हूं, और अपने अध्यक्ष बनाये जाने के लिये आप सब को फिर धन्यवाद देता हूं।

———

सिनेमा स्टूडियो या वेश्यालय : एक अभिनेत्री की आत्मकथा

मैं सच कहती हूं कि वास्तव में मुझे अपनी जीवन कथा लिखते हुए लज्जा आती है और मेरी लेखनी रुकी सी जाती है। कारण? मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब सिनेमा प्रेमी मेरी जीवन कहानी से परिचित हो जायगे, तो वे मुझ पर दया करना तो दरकिनार बल्कि उल्टे मुझे घृणा की दृष्टि से देखने लगेंगे। सचमुच मैं अपनी जीवन-कथा न लिखती और अपने विचारों को न प्रकट करती, कारण मेरा हृदय इस बात की गवाही न देता, परन्तु चूंकि मि० सुभाषचन्द्र बोस ने मुझे जोर दिया है कि मैं अपनी जीवन कथा स्पष्ट रूप से लिखूं, ताकि जो लोग इस क्षेत्र में हैं तथा जो पड़ने वाले हैं उनके लिये हितोपदेशी साबित हो। इस लिये मैं इतने स्पष्ट शब्दों में आज अपनी जीवन कथा लिख रही हूं।

बहुत दिनों की बात है ठीक तो नहीं बता सकती, परन्तु लगभग १५ वर्ष से कम न हुए होंगे कि मैं १० वर्ष की एक सुन्दर कन्या थी। मेरे पिता स्वर्गीय मानीलाल जी एक स्कूल के प्रिंसिपल थे और सारे शहर में उनका बड़ा मान था। वह एक अच्छे तथा ऊंचे कुल के सज्जन पुरुष थे और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट थे। परन्तु मुझे शोक सहित कहना पड़ता है कि जिस माता से मैं जन्मी थी वह ऊंचे कुल की न थी, बल्कि एक नीच वातावरण में उन्होंने जन्म लिया था। जब मैंने होश संभाला उस समय मेरी आयु केवल ७ वर्ष की थी और उसी अवस्था में मेरे पिता ने मुझे एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के लिये भेजा। इस स्कूल में मैंने एक साल तक पढ़ा। इस के बाद मेरे पिता का देहान्त हो गया।

वास्तव में मैं अबोध अवस्था ही से बड़ी सुन्दर थी। इतनी सुन्दर थी कि जब मैं स्कूल में पढ़ने के लिये जाती तो बहुत से युवक मेरी ओर घूर २ कर देखते। मुझे यह देख कर बड़ा बुरा मालूम होता था, पर उस समय कर ही क्या सकती थी। मुझे यह भी याद है कि इसी अवस्था में बहुधा अच्छी-अच्छी प्रेम की पुस्तकें तथा उपन्यास पढ़ा करती थी। यही नहीं बल्कि खूब सिनेमा भी देखा करती थी और मैं सच कहती हूं कि इन्हीं दो बातों (उपन्यास का पढ़ना तथा

क्या कुलीन देवियों को फिल्मी दुनिया में जाना चाहिये ?

(ले०—श्री शान्ताकुमारी)

सिनेमा देखना) ने मेरे हृदय में कूट कूट कर प्रेम भर दिया था और मेरा हृदय प्रेम से इतना प्रचण्ड हो गया था कि मेरी यही प्रबल इच्छा होती कि कोई मुझ से प्रेम करे। पर पाठक इस बात को ध्यान रक्खें कि मेरा मतलब प्रेम से उस प्रेम का नहीं था जो बाजार में सस्ते दामों बिकता है और जिसे हर कोई खरीद सकता है। कारण मैंने यह पहले ही से निर्णय कर लिया था कि मैं अपने पिता के नाम को कलंकित न करूंगी। परन्तु शोक मेरी यह सब आशायें खाक में मिल गईं और मैं अति शीघ्र अपनी प्रतिज्ञा को भूल गयी।

भाग्य की बात है कि मैं स्कूल में केवल साल भर ही पढ़ पाई थी कि मेरे पिता का स्वर्गवास हो गया। मेरे पिता की मृत्यु के बाद मेरे घर में तबाही आ गई। अब मेरी माता को पूरी आजादी मिल गई। वह अपनी वास्तविकता पर आ गईं और खूब जी भर कर अपनी मनोकामनायें पूरी करने लगीं। ईश्वर जाने उनके हृदय में किस प्रकार का प्रेम था, किस प्रकार की अग्नि उनके अन्दर प्रचण्ड थी। वह हर समय एक न एक युवक को अपने पास रखना पसन्द करती थीं। यही नहीं, बल्कि उन्होंने यह भी चाहा कि मैं भी स्कूल जाना बन्द कर दूं और उन्हीं की भांति जीवन को उसी कुमार्ग की ओर डाल दूं। परन्तु मैंने ऐसा नहीं किया। अन्त में जब उन्होंने मुझ पर बहुत जोर दिया तो मैंने स्कूल जाना बन्द कर दिया और इस बात को स्वीकार कर लिया कि मैं गाना सीख लूंगी और लोगों को गाना सुनाया करूंगी। थोड़े दिनों के बाद मैंने कई अच्छे २ गाने सीख लिये। इस प्रकार मैं उन लोगों को जो मेरी मां के पास आते अपने गाने सुनाती। परन्तु इसके अतिरिक्त मैं किसी अन्य बात में शामिल न होती। दुर्भाग्यवश ऐसा हुआ कि मेरे गाने सुन कर सैकड़ों मुझे चाहने लगे। उस समय मैं यह सोचती थी कि ए परमात्मा! मैं भला किस प्रकार इतने युवकों को प्रसन्न कर सकूंगी, परन्तु कुछ दिनों के बाद सब कुछ होने लगा और मैंने अनुभव किया कि मैं सब कुछ कर सकती हूं।

इस के बाद सिनेमा की ओर मेरा ध्यान दौड़ा और मेरी यह इच्छा हुई कि मैं किसी प्रकार सिनेमा ऐक्ट्रेस बनूं। सन १९२० ई० में मैंने सब से प्रथम सिनेमा क्षेत्र में पदार्पण किया। चूंकि मैं काम करने में पहले ही से बड़ी निपुण थी इस लिये शीघ्र ही मैंने इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर ली। बस कुछ ही दिनों में मैं एक प्रसिद्ध ऐक्ट्रेस हो गई और सारे सिनेमाप्रेमी मुझे चाहने लगे।

इस प्रकार मुझे सिनेमा क्षेत्र में काम करते २ लगभग १५ वर्ष हो गये हैं। इन्हीं १५ वर्षों में मुझे इस क्षेत्र का काफी अनुभव हो गया है। मेरा तो यह अनुभव है कि सिनेमा-कम्पनियों के मालिक, सिनेमा इण्डस्ट्री की तरक्की देने के लिये नहीं बल्कि अपनी मनोकामनाओं को पूरी करने के लिये कम्पनियां खोलते हैं। कारण जहां कोई सुन्दर अभिनेत्री इनके हाथ आई झट इन्होंने अपनी कामना पूरी की। पाठकों को यह बात आश्चर्यजनक मालूम होगी परन्तु मेरा तो यही अनुभव है। कम-से-कम मुझे तो यह मुसीबत भोगनी पड़ी दिन-भर तो मैं कैमरा के सामने काम करती और रात को अपने मालिकों, डायरेक्टरों तथा ऐक्टरों की 'नाइट ड्यूटी' करती। मैं ही नहीं बल्कि मेरा तो यह अनुभव है कि जितनी भी ऐक्ट्रेसेज हैं प्रायः रसिक तथा मनचले मालिकों डाइरेक्टरों और एक्टरों का मासिक वेतन शीघ्रातिशीघ्र वसूल कर लेती हैं। कारण एक्टर व डाइरेक्टर जो कुछ भी कमाते हैं वह सब इन्हीं ऐक्ट्रेसों को दे देते हैं। मुफ्त नहीं। यह हाल है सिनेमा जगत का। बस, मैं अपनी बहिनों से प्रार्थना करूंगी कि वह कभी भी इस क्षेत्र में पदार्पण करने की चेष्टा न करें और कभी भी फिल्म ऐक्ट्रेस बनने का विचार न करें। कारण यदि वह ऐसा करेंगी तो उन्हें भी "नाइट ड्यूटी" (Night duty) करनी पड़ेगी। मैं कहती हूं कि सिनेमा-क्षेत्र में कोई भी एक्टर या एक्ट्रेस पाकदामन हो कर नहीं रह सकती ऐसा करना बड़ा कठिन है। और यदि कोई एक्ट्रेस ऐसी है जो बिलकुल पाक व साफ है (मुझे तो कम से कम विश्वास नहीं) तो वास्तव में वह एक्ट्रेस तारीफ के काबिल है। यही नहीं बल्कि हम लोग उनकी इज्जत करें।

वास्तव में मुझे यह सब लिखते लज्जा आती है परन्तु फिर भी ऐसा कर रही हूं क्योंकि मैं समझती हूं कि इस लेख से मेरी बहुत सी शरीफ बहनों का फायदा पहुंचेगा। सिनेमा क्षेत्र में पदार्पण करने से पूर्व ही मेरे बहुत से चाहने वाले थे, परन्तु जब मैं फिल्मों में काम करने लगी तो मेरे चाहने वाले और भी बढ़ गये और अब तो मुझे बड़े २ शरीफ लोग भी चाहने लगे हैं। परन्तु मैं अनुभवशून्य थी और मैंने यह नहीं सोचा कि बड़े २ प्रेम करने वाले अपना मतलब निकल जाने के बाद मुझ से ऐसे निठुर हो जायेंगे मानो मुझे जानते ही न थे परन्तु मैं उन का कर ही क्या सकती थी। भाग्यवश कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने वर्षों तक मेरा साथ दिया और बड़ी मुहब्बत करते रहे, परन्तु वे भी जब मेरी सुन्दरता कम हो चली, निठुर हो गए और प्रेम करना तो दूर किनार फिर दुबारा सूरत भी न दिखाई। सच है प्रेम करना कोई आसान काम नहीं। सच्चा प्रेमी इस संसार में मुश्किल से मिलता है। मुझे खूब याद है कि मेरे जीवन में मुझे प्रेम करने वाला केवल एक ही ऐसा युवक मिला था जो वास्तव में मुझ से प्रेम करता था। परन्तु शोक! अत्यन्त शोक! मैंने उसकी कद्र न की उसके प्रेम को न पहचान सकी यह न जान सकी कि उसका प्रेम सच्चा है, और वह बिचारा (मेरा सच्चा प्रेमी) मेरी निठुरता देख कर जहर खाकर मर गया। आज दिन जब मुझे उस प्रेमी की याद आती है तो मेरा हृदय तड़प उठता है और कलेजा मुंह को आ जाता है। परन्तु अब वह कहां मिले जो मेरे जीवन की नाव को पार लगाये। बस यह है मेरे प्रेम की कहानी और यही है मेरी जीवन-कहानी।

(रंगभूमि से)

कहानी

टाकी स्टार

(ले०—श्री पुरुषोत्तम महादेव वैद्य सिनमेटोग्राफर, इंदौर)

"बैचलर आफ आर्टस" "डलीकेट मिशन" "टाकी स्टार" इत्यादि सचित्र साप्ताहिक "अर्जुन" में प्रकाशित होने वाली मेरी लिखी कहानियों का अनुवाद या रूपान्तर, उपन्यास नाटक सिनेमा-ड्रामा में इनका उपयोग और इन्हें पुनः प्रकाशित करने का अधिकार मैंने अपने स्वाधीन रखा है।—लेखक

नरेन्द्र के सिर पर टाकी-स्टार बनने की धुन सवार है। यूं तो किसी चित्रपट में पार्ट करने का निश्चय वह पहले कई बार कर चुका था, पर अब की छुट्टियों में उसका यह मर्ज अपनी आखिरी डिग्री पर पहुंच गया। गांव का सेवक बना रहने के बजाय परदेश में लीडर बनना ठीक समझ कर उसने बम्बई का टिकट कटवाया और वहां पहुंचते ही पम्पायर होटल में आ ठहरा।

होटल के कमरे में बैठा हुआ वह 'सिनमा-संसार' में छपी हुई किसी "मिस" की तसवीर पर दृष्टि जमाये कुछ सोच रहा था कि एक नौकर ने आ कर कहा "ग्रेट, इंडियन पिक्चर्स के मैनेजर टेलीफोन से कह रहे हैं कि आप एक बजे डाइरेक्टर से कम्पनी में मिल सकते हैं।"

"ठीक है, साढ़े बारह तो बज भी चुके हैं लेकिन"'क्यों जी, दादर कहां है?"

"दादर! क्या आप ने होटल में आते वक्त दादर नहीं देखा? अच्छा चलिये मैं बतला दूं पास ही तो है!"

नरेन्द्र उठ खड़ा हुआ और नौकर के साथ हो लिया। दो-चार कमरे पार कर नौकर ने रुक कर कहा, "यहां है दादर"

"कहां है?"

"यह क्या है फिर? आप देखते नहीं ये लोग चढ़ उतर जो रहे हैं!"

"ओफ! तो क्या तुम लोग यहां जीने का दादर कहते हो!" भाई मैं पूछ रहा हूं, जहां फिल्म कम्पनियां हैं, वह दादर कहां है?"

"अच्छा, अब मैं समझा दादर परेल के पास है।"

"और परल"

"परल दादर के पास है"

"बड़े अजीब आदमी हो! ये दोनों कहां हैं?"

"कौन दोनों?"

"परल और दादर"

"देखिये, चिंचपोकली का अगला स्टेशन परेल, परल से अगला स्टेशन दादर और दादर से आग"

"बस करो, रहने दो तुम"'देखो जल्दी से एक टैक्सी बुलवा दो।"

\+ \+ \+

"गुड मार्निंग डाइरेक्टर!"

"गुड मर्निंग मिस्टर' '?"

"नरेन्द्र।"

"मिस्टर नरन्द्र, आइय-आइये, कहिय मैं आप क लिये क्या कर सकता हूं?"

"आप मुझे टाकी-स्टार बना सकते हैं?"

"बड़ी खुशी से। मेरे खयाल से आप बंगाली हैं?"

"जी हां, मैं कलकत्ते रहता हूं, वहीं से आ रहा हू।"

"ओहो, मैं समझता हूं कलकत्ते में तो आप के लिये सिनेमोटोग्राफी का काफी "स्कोप" था।"

"माफ कीजिये डाइरेक्टर, लेकिन मैंने सुना है, आप हॉलीवुड से ट्रेनिंग लेकर भारत आये हैं"

"जी हां।"

"फिर वहां तो आप के लिए काफी से भी ज्यादा स्कोप थो?"

"ओ, हो, भाई सी आप की ऊंचाई क्या है?"

"जनाब, मैं हर हिटलर से सिर्फ आधा इंच नाटा हूं।"

"ठीक है, आप बाक्सिंग जानते हैं?।"

"बखूबी हमार कालेज का मैं फेदरवेट और मीन लाइटवेट चैंपियन हू।"

"बड़ी अच्छी बात है, तैरना तो आप को याद ही होगा?"

"मुझ से आप तैरने की कैफियत पूछते हैं डाइरेक्टर! तो फिर आप ने अखबारों में मेरा नाम नहीं देखा?"

"जी नहीं और हम लोगों को इतनी फुर्सत कहां है"?

"अफसोस! अजी साहब गंगा की बड़ी धार में तैरते हुए कलकत्ते से मुजफ्फरपुर पहुंचने का मेरा आल इन्डिया रकर्ड है!"

"ओह! सो ग्लेड टू मीट यू मिस्टर?"

"नरेन्द्र!"

"मिस्टर नरेन्द्र माफ कीजिये, मैं हर वक्त आप का नाम भूलता हूं!"

"क्या हर्ज है, आज तो पहली रात और मान पहला ही दिन है, देखिये रसाई होते-होते शनासाई भी हो जायगी"

"दरअसल अजी आप हमारे फोल्ड में आइये तो! बड़ी चैन से गुजरेगी, समझे मिस्टर'''?"

"नरेन्द्र।"

"मिस्टर नरन्द्र, माफ कीजिये, फिर भूल गया लेकिन देखिये हम सोशियल और हिस्टारकल सभी फिल्म बनाते हैं। क्या मैं आपसे और भी कुछ सवाल कर सकता हू।"

"अजी आप मुझे क्रास और रीक्रास कर सकते हैं"

"आप को तलवार के हाथ याद हैं?"

"जरूर याद हैं।"

"और घोड़े की सवारी?"

"वाह! यह बात खूब पूछी आप ने जात का अरब और घोड़े पर न चढ़े! अजी हजरत, मेरे पापा के दर्जनों घोड़े कलकत्ता 'टर्फ' में दौड़ते हैं, कई घोड़े तो मैंने खुद ट्रेन किये हैं और दो मर्तबा रेस में दौड़ा कर फर्स्ट आया हूं मैं! कहिये और?

"जी नहीं और कुछ नहीं, हम बड़ी खुशी से आप को चान्स देंगे लेकिन हां एक बात रह गई"

"सो कौनसी?"

"क्या आप गाना जानते हैं?"

"जी नहीं, मैं गद्य-काव्य का पुरस्कर्ता हूं।"

"हमारी नजर में यह बड़ी कमजोरी है?"

"इसमें कमजोरी की क्या बात है। इस मुश्किल को आप सहज में आसान कर सकते हैं। देखिये, जब गाने की जरूरत होगी, मैं सिर्फ अपना मुंह हिलाया करूंगा और कोई दूसरा जानकार गाया करेगा, यह हथकंडा तो आपके मुहावरे का।"

इतने में एक नौकर ने कहा "डाइरेक्टर साहब, कोई नयी ऐक्ट्रेस आई है, बम्बूभाई आपको बुला रहे हैं।"

"मैं आता हूं क्यों रामू, बापा आये?"

"अभी नहीं आये।" कहकर वह चला गया।

नरेन्द्र ने पूछा, 'ये बापा कौन हैं?"

"मालिक कम्पनी है।"

"अच्छा! तो आप मालिक को बापा कहते हैं?"

"जी हां, यहां यही रिवाज है, सिनेमा कम्पनी के मालिक अकसर बापा, काका, या दादा के नाम से ही पुकारे जाते हैं अच्छा, आप तशरीफ रखिये, मैं अभी हाजिर हुआ।"

* * *

डाइरेक्टर के चले जाने के बाद नरेन्द्र ज्यादा देर चुप न बैठ सका। कुतुब के मीनार सा एक जगह डटे रहना उसके मिजाज के खिलाफ था। वह कुर्सी पर से उठा और पतलून की जेबों में अपने दोनों हाथ डाले मुंह से सीटी बजाता हुआ कमरे में रखी चीजों को घूम फिर कर देखने लगा, दीवालों पर बहुत सी तसवीरें लटक रहीं थीं, किसी तसवीर में मिस नैना अपनी जहरीली आंखों से देखने वाले पर छुरियां चला रही थीं तो किसी में मिस नैना अपने होठों की मसीहाई पर इतरा रही थीं देखते देखते नरेन्द्र की नजर एक टेबल पर पड़ी, उस पर शृंगार का सामान और एक बड़ा आइना सजा हुआ था। सभी सामान एक जगह देखकर उसे भी 'मेक अप' करने की इच्छा हुई। उसने तुरन्त अपना चेहरा बड़ी कुशलता से रंगा, भौंह साफ कीं और पौडर लगाकर झाड़ डाला, ओंठ पोंछे, "क्रप-हेयर" काट छांट कर उसने अपने सफाचट ओंठों के ऊपर बड़ी रुआबदार मोंछें चिपका लीं और हाथों पर रंग मल लिया, पास ही खूंटी पर टंगी एक पारसी पगड़ी सिर पर रख अपना चश्मा नाक पर चढ़ा लिया, बड़ी शान से जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाई और अकड़कर इधर उधर टहलने लगा।

"क्या मैं अन्दर आ सकती हूं जनाब?" कमरे के बाहर से आई हुई बड़ी मोठी आवाज उसके कानों पर पड़ी। देखा, दरवाजे में एक जवान लड़की खड़ी उसकी तरफ आशा भरी आंखों से देख रही है।

"आइये तशरीफ लाइए, घर आपका ही तो है, मैं तो बड़ा आपका फर्मांबर्दार हूँ। कहिये, क्या हुक्म बजा लाऊँ? लेकिन पहले आप यह बतलाइये, आपको मैं किस नाम से पुकारूँ?"

श्वेत वदना सुंदरी ने कमरे में आकर बड़ी अदा और अदब से कहा—'सरकार, मेरा नाम महताब है क्यों? आपने अपनी आँखें क्यों मूँद लीं?'

'अजी, महताब की रोशनी में बड़े बड़ों की आँखें चौंधिया जाती हैं! फिर मैं तो एक नाचीज़ शख्स हूँ।

हुजूर बड़े दिलवर मालूम होते हैं बंदी किस लायक है?

"आप मेरी दिली-सल्तनत की मलका बनने लायक हैं लेकिन आप कुर्सी पर तशरीफ तो रखिये देखिये, आप खड़ी हैं पैरों में मेरे दर्द उठता है बैठिये आप सिगरेट का शौक तो जरूर करती होंगी?

जी मुझे आदत तो नहीं है कभी कभी।

'अजी रहने भी दो यह चीज तो ताजमहल बनवाने वाले शाहजहाँ को भी मयस्सर न थी। देखिये

अब तरस आया हमारे
हाल पर अंगरेज को।
बख्श दी फौरन हमें
यह नियामत सिगरेट की।

उनकी इस आला रहम को तो हमें गले लगानी चाहिए—लीजिये।'

'जी बड़ी खुशी से अजी मैं खुद सुलगा लूँगी आप क्यों तकलीफ करते हैं अजी सरकार ऐसी बातें कर मुझे शर्म में न डालिये जी हाँ बेशक सिगरेट दरअसल बढ़िया मार्का है लेकिन गुस्ताखी माफ हो मैंने सुना है पारसियों के मजहब में तो तमाखू पीना कतई मना है।

छोड़ो भी झगड़े को! आप क्यों मजहबी दलदल में फँस रही हो? मेरे खयाल से अब भी आप कूढ़ों के सवारों का ख्वाब देखती हैं, अजी अब तो महताब की जगह बिजली ने हथिया ली है और कासिद को टेलीफोन ने खदेड़ दिया है जिस पर मैं सिगरेट पी रहा हूँ यह बात इस घड़ी सिवा आपके दूसरा कौन जानता है?

'खुदा तो हाजिर नाजिर है।

वाह क्या फिलासफी है! अजी खुदा के तो हम सभी बंदा बंदी हैं न?....फिर ..बाबा आदम की पैदा की हुई चीज हम खूब शौक से बरत सकते हैं!'

'अगर आपके उसूल ऐसे ही हैं तो मैं खुश हूँ खैर, अब मैं सरकार से कुछ अपना भी हाल बयान करूँ?"

"जरूर, आप इतनी पशोपेश में क्यों पड़ती हैं, क्या हम दो हैं?'

महताब ने अपनी कुर्सी नरेन्द्र के बिलकुल पास सरका ली और कहा, "खुदा न करे, हम दो हों, देखिये मैं बनारस की रहने वाली हूँ, गाने बजाने का मेरा पेशा है मैं डेरेदार हूँ।

'अच्छा! तो आपने अपना डेरा किस मैदान में खड़ा किया है? हम बरसात के दिनों में।'

'जी आप समझे नहीं, बंदी का कुसूर माफ हो, डेरदार से मतलब है खानदान का मैं खानदानी तवायफ हूँ।"

'ओह! माफ कीजिये मुझे अब मैं समझा लेकिन यह तो बतलाओ यह सब मुझ से किस मतलब से कह रही हो?

महताब ने नरेन्द्र के हाथ पर अपना मुलायम हाथ बड़े प्रेम से रख कर मधुरता से कहा "अजी साहब, बगैर मतलब के तो मक्खी भी फूल पर नहीं बैठती! बंदी की अर्ज है, सरकार मुझ पर करम करें और एक्ट्रेसों में मुझे नौकर कर लें।

'यह बात तो आपको डाइरेक्टर से कहनी चाहिए।

'जी, उनसे तो मैं अभी मिलकर ही आ रही हूँ, उन्होंने खुद मुझे आपकी खिदमत में भेजा है।'

क्यों?

'आप मालिक कम्पनी जो हैं, सिवा आपके हुक्म मेरी दर गुजर

आप गलती कर रही हैं, मैं मालिक कम्पनी नहीं हूँ मैं तो खुद यहाँ नौकरी की तलाश में आया हूँ

'अजी आप मुझे क्यों बनाते हैं, भला खाक के ढेर में कुन्दन की डली भी छुप सकती है! प्यारे! इस बंदी को अपने कदमों में जगह दीजिये। कहते कहते महताब ने उसके गले में अपनी सुडौल बाहें डाल दीं और उसके सीने पर अपना सिर टेक दिया। नरेन्द्र उसकी इस हरकत से एका-एक सिहर उठा और दूर हटाने की कोशिश करता हुआ बोला "छोड़ो। छोड़ दो मुझे तुम! देखो तुम्हारे बालों में लगे तेल से मेरा कमीज खराब हो रहा है।'

'वल्लाह! क्या कहने हैं, अजी हुजूर इस सिर को अपने सीने से लगाने की उम्मीद में सैकड़ों सेठिया मेरे कूचे की खाक छानते फिरते हैं और आपको अपने कमीज की पड़ी है? बगैर वायदा किये आप अब नहीं छूट सकते मैं आपको हरगिज नहीं छोड़ने की'

* * * *

"क्यों नहीं छोड़ने की! यह कम्पनी का दफ्तर है या तुम्हारी खाबगाह?' एक बूढ़ा सा भाटिया कमरे में आकर बुरी तरह बिगड़ा।

महताब उछलकर नरेन्द्र से दूर जा खड़ी हुई और उस बूढ़े को सलाम कर बोली 'अजी तो बाबाजान आप इतने नाराज क्यों हो रहे हैं?'

"बाबाजान किसे कहती हो जी! जरा भर तमीज नहीं रखती! औरत जात हो नहीं तो बतलाता!"

नरेन्द्र बीच ही में बोल उठा 'क्या बतलाते आप? अपने मुँह में लगे बनावटी दाँत बतलाते! लो बाबा जान कह दिया तो तमक उठे! क्यों आपकी सफेदी पर चढ़ा हुआ खिजाब घुल गया!

देखो जी मुँह सम्हाल कर बोलो वरना"

अजी आप इतने पाजामें में से क्यों मीन धोती से बाहर क्यों हो रहे हैं? देखिये, आपकी साँस फूल रही है बैठ जाइये जरा कुर्सी पर दम लीजिये महताब खड़ी देखती क्या हो जरा आगे बढ़ कर अपने दामन से हवा झलो सेठ पर बैठिये सेठ जी मैं आपकी पीठ मल दूँ।

'चुप रहो! तुम जानते नहीं मैं कौन हूँ!'

'मैं जानता हूँ आप इन्सान हैं मगर शैतान के फेर में पड़ कर हम पर नाहक बिगड़ रहे हैं।'

महताब आँखें मटका कर बोली और नहीं तो क्या जरासी बात पर इतनी नाराजी आप जैसे बुजुर्गों को भली नहीं मालूम देती। भला आपने कुछ देख भी लिया तो उस पर परदा डाल देना था आप के बाल बच्चे भी तो घर में कुछ करते ही होंगे।

चुप रहो जी! फुजूल की बकवास मैं नहीं चाहता, मैं पूछता हूँ उस बात का जवाब दो।

"आप मुझ से जवाब तलब करने का क्या हक रखते हैं?'

मैं इस कम्पनी का मालिक हूँ। समझीं'

नरेंद्र घबरा कर बोल उठा "तब तो बड़ा गोलमाल हो गया। आप अगर कम्पनी के मालिक हैं तो मुझे यहाँ से सही-सलामत निकल भागने की बात सोचनी पड़ेगी"

(शेष पृष्ठ २७ पर)

अलमोड़ा में ऊनी खादी

(पृष्ठ १६ का शेष)

प्रायः २५ हजार रुपया खादी-कार्य के लिये भेंटस्वरूप दिया गया था। महात्मा जी ने यह वचन दिया था कि इस धन को कुमाऊँ में खादी कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए खर्च किया जावेगा। हमारी महात्मा जी से निवेदन है कि वह देखें कि चर्खा-संघ कुमाऊँ के हिस्से के धन को कहाँ और कैसे खर्च रहा है। चर्खा संघ से सीधी सहायता अल्मोड़ा डि० बोर्ड के नाम आनी चाहिए। युक्त प्रान्त में सिर्फ अल्मोड़ा डि० बोर्ड ही ऐसा बोर्ड है जो कि खादी का काम करता है और पिछले वर्षों २५ हजार रुपया कताई बुनाई के प्रचार-कार्य पर खर्च कर चुका है। सम्भवतः डि० बोर्ड (अल्मोड़ा) के सेक्रेटरी प० गौरीवल्लभ पंत जी का महात्मा जी के साथ विस्तृत पत्र व्यवहार हुआ है।

अल्मोड़ा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को अब खादी का काम इस ढंग पर चलाना चाहिए कि जिस से उसे ऊनी-खादी के काम से कुछ प्राप्ति हो। कम से कम उसे इस काम में घाटा न उठाना पड़े। डि० बोर्ड ऊन खरीदे। उसको बिक्री करे। या उसे बिक्री करने प्राइवेट संस्थाओं के हाथ सौंप देवे। कारपेन्टरी स्कूल में ऊन कातने के चरखे तैयार कराकर या ठा० जोतसिंह को आर्थिक सहायता देकर ऊन कातने के चरखा का प्रचार बढ़ावे। स्वतंत्र संस्थाओं को जमानत पर रुपया ऊनी खादी का काम करने के लिए उधार दे। बागेश्वर व दूसरे स्थानों में ऊनी माल की प्रदर्शिनी अपने खर्च पर करे। ऊनी वस्तुओं के लिए बाहर बाजार खोज दे। सरकारी वीविङ्ग स्कूल के साथ सहयोग कर वहाँ के अध्यापकों को नये २ डिजाइन तैयार करने के शिक्षा देने के लिए देहात भिजवावे।

चूँकि इस समय बेकारी को दबाने तथा ग्राम उद्योग धंधों को उत्साहित करने की ओर सरकार व महात्मा गाँधी जी का ध्यान है, इसलिए हमें आशा करनी चाहिए कि किसी न किसी दिशा से कुमाऊँ में खादी के काम को सहायता मिलेगी। सहायता पहुँचाने का जरिया डि० बो० अल्मोड़ा है।

———

सप्ताह का फल

राशि-क्रम से

(ले०—श्री सकर्मण्य व्यास)

ता० २६ अगस्त से १ सितम्बर तक

मेष

मनः स्थिति खराब रहेगी, शत्रुवर्ग से सचेत रहना चाहिये। राजकार्यों में यश मिलेगा। भागीदारी में व्यवसाय करना चाहिये। बाल बच्चे और स्त्री तकलीफ भोगेंगे, आर्थिक स्थिति सन्तोषप्रद न रहेगी। एकाध कार्य हाथ से बिगड़ जाना सम्भव है, मन में पश्चात्ताप रहेगा।

वृष

आर्थिक परिस्थिति से असन्तोष रहेगा। कर्जदार सतायगे। आय साधारण होगी सवारी से भय रखना चाहिये। कारखानदारों को अपने नौकरों से सतर्क रहना चाहिये। घरके लोगों के द्वारा सकष्ट के सामने करने पड़ेंगे। भागीदारी में व्यवसाय करने से कुछ बचत हो सकेगी।

मिथुन

नौकरी की तलाश में घूमना व्यर्थ है। औरत की तरफ से चिन्ता बहुत सतायगी। बहुत श्रम का अल्प फल मिलेगा। साथी रख कर व्यवसाय में पैसा कमाना ठीक नहीं। मन में अस्थिरता रहेगी। देश विदेश घूमने से शारीरिक स्थिति बिगड़ी रहेगी। लकड़ी-कोयले के व्यापारी घाटे में रहेंगे।

कर्क

आय साधारण होती रहेगी। साथी को सहायता रहेगी। राजकार्यों में यश की उम्मेद रहेगी। नवीन लोगों से परिचय बढ़ेगा। लोहे लंगर के सामान में विशेष खर्च होगा। हलके दर्जे के व्यवसाय में अधिक मन लगेगा। नौकरी की तलाश में रहने वाले कुछ स्थान पा जायँगे। बीच २ में शीत विकार का अन्देशा रहेगा।

सिंह

देश विदेश घूमने में व्यय विशेष होगा। सब प्रकार से सुख रहते हुए भी मन में सन्ताप रहना सम्भव नहीं। आपस के लोगों से कलह के कारण बढ़ेंगे ऊंचे से गिरने की चोट का सन्देह है। बहुत दिनों की बंधी आशा पर पानी फिर जायगा। स्त्री की तरफ से चिन्ता बढ़ेगी। राजकार्यों में सफलता मिलेगी। भाई २ में कलह हो सकती है।

कन्या

आय अच्छी होगी परन्तु खर्च के रास्ते भी हजारों खुले रहेंगे व्यापार में लाभ सम्भव है किन्तु रिश्तेदार ठग लगा देंगे। शारीरिक श्रम बहुत उठाना पड़ेगा। नौकरी की तलाश में रहना आशाप्रद है। कर्जदारों के लिए सप्ताह खराब है। वकालत पेशे वाले और पटवारी वर्ग के लिए सप्ताह नेष्ट है, शारीरिक श्रम बहुत उठाना पड़ेगा। नौकरी की तलाश में कुछ आशा बंध सकेगी।

तुला

गल्ले के व्यौपारी सुखी रह सकते हैं आय के नवीन रास्ते बढ़ेंगे दूसरों की दलाली में खुद चैन उड़ायेंगे, अर्श के बीमारों का और मुख की (पायरिया) बीमारी वालों को सतर्क रहना चाहिये, स्त्री की तरफ से चिन्ता के कारण उपस्थित होंगे। दूसरे के आश्रय से धन्धे लगने की उम्मेद रखना चाहिए स्त्री की तरफ से चिन्ता के कारण उपस्थित होंगे। परन्तु खुशामद बहुत उठानी पड़ेगी। नौकरी की तलाश में रहना बेकार है।

वृश्चिक

आय की औसत से खर्च की स्थिति बढ़ी हुई रहेगी, अपचन की शिकायत कभी रहेगी। राजकार्यों में सफलता मिलेगी व्यापार में भी लम्बी अवधि में आशा रखनी चाहिए घर के मामले आमन हर दम चिन्ताप्रद रहेंगे। नौकरी की धुन में रहना ठीक है।

धन

व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा। सहायता मित्रों की रहेगी, शारीरिक स्थिति भी अच्छी रहेगी परन्तु मानसिक कमजोरियां अकारण बढ़ेंगी। राजकार्यों में सफलता की आशा रहेगी। भागीदार पर विश्वास रखना ठीक नहीं। वात के रोगी कुछ तकलीफ उठा सकते हैं।

मकर

शारीरिक परिस्थिति एक दम खराब रहेगी, दूसरों की सहायता से प्रत्येक कार्य होंगे। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी कुछ फंसा हुआ माल निकलवाने में राजकार्यों की झंझट सहनी पड़ेगी। राजकार्यों में सफलता की आशा कम रहेगी। सप्ताह मध्यम है।

कुम्भ

आर्थिक परिस्थिति एकन्दर में अच्छी रहेगी, बीच २ में नुकसान लगने के आसार बनेंगे परन्तु बड़ों की सहायता से आपत्ति का छुटकारा हो जायगा घर के लोगों की बीमारी परेशान करेगी, श्रम बहुत उठाना पड़ेगा। राजकार्यों में भी असफलता प्रबल रहेगी।

मीन

मन में चंचलता विशेषकर होगी काम काज में मन कम लगेगा कारीगर और सुनार शिल्पी वर्ग के लोग कष्ट उठायेंगे गुर्दे के बीमार और अर्श तथा निमोनिया के बीमारों के उपचार चिन्ता से करना चाहिये राजकार्यों में सफलता की आशा रहेगी भागीदारी में व्यापार रखना ठीक है, सप्ताह मध्यम है।

चांदी का भाव कुछ नरम होकर ऊपर चढ़ेगा, गल्ले का बाजार कड़क रह सकेगा। हुंडी और होशायान तथा जूट पाट के भाव में साधारण तेजी रहेगी वायदे का भाव कुछ तेज होना सम्भव है।

(पृष्ठ १० का शेष)

जब कि सम्पूर्ण राष्ट्र की उसको मदद हो और हम दृढ़ निश्चयी हों यदि आर्थिक दृष्टि से हम सफल नहीं होते तो ये लोग जवाबदेह होंगे, जो अनियम से चलते हैं।

आगे चलकर डा० शाख्त कहते हैं कि—

मैं तब तक अपने प्रयत्नों में ढील नहीं करूंगा जब तक कि वर्तमान विदेशी ऋण असम्भव नहीं चुकाये जाते।

शस्त्रीकरण ने। मजदूरों के काम पर नियुक्त करने की स्कीमों पर लगाई महान धन राशियों का रहस्य सम्पूर्ण आर्थिक नीति के केन्द्रीकरण में है। ये सब धनराशियां—जो नार्मल-स्टण्डर्ड के मुकाबले में अत्यन्त विशाल हैं, किसी भावी तिथि में जर्मन जनता की बचत तथा उन के श्रम से ही चुकाई जायगी।

'मैं ऐसे समय चेतावनी देना चाहता हूं और जता देना चाहता हूं कि प्रत्येक छदाम जो व्यर्थ खर्च की जायगी वह हमारे देश की हालत को खराब ही करेगी।"

व्यापार-डायरेक्टरी

आवश्यक वस्तुयें निम्न पते से खरीदिये—

हैजा का अचूक इलाज

विश्वसुधा

है

मूल्य १) प्रति शीशी

विश्वसुधा कार्यालय, नया बाजार, देहली।

आग बुझाने का

पम्प

——

यह पम्प तुरन्त की लगी हुई आग को तुरन्त ही बुझा देता है

मूल्य ४०)

बाली कम्पनी

चांदन चौक, देहली।

जापान की हजारों चीजों के लिए एजेंट चाहियें, सब तरह की काम में आने वाली वस्तुओं के नाम व पते इसमें खुलासेवार लिखे हैं।

दूसरा १९३५ संस्करण **जापान** देश व विदेशों में ख्याति प्राप्त

मूल्य सिर्फ १) पोस्टेज जुदा, आज ही हमें लिखिये:—

मैनेजर—सिन्हा एंड संस, (ए) सिन्हा बिल्डिंग, इंदौर सी० आई०।

२।) प्रतिबार

१।) प्रतिवार

३) प्रतिवार

५) प्रति वार

दांतों के सर्व रोगों के लिये

दन्त सुधा मंजन

प्रयोग में लाइये

विश्वसुधा कार्यालय नया बाजार, देहली।

भृगु संहिता

(योगसागर फलित खंड भाषा टीका)

संवत् ११२० से २००० तक संसार भर की जन्म कुण्डलियों का भूत, भविष्य वर्तमान तीन जन्म का हाल ज्ञात होगा। फल सुनकर लोग कहते हैं कर्णपिसाचिनी सिद्ध है। चार मास के लिये रियायती मूल्य ३), पो० ।।) फिर सौ रुपये को भी न मिलेगी, पुस्तकें थोड़ी ही हैं।

भृगु संहिता कुन्डली खण्ड

(भाषा टीका उदाहरण सहित)

सम्वत् १९०० से २००० तक की पृथ्वी भर के मनुष्यों की कुंडली मिलेगी। नष्ट जन्मपत्री बना लो कई उपय भी साक्षी हैं। मूल्य २) पो० ।।) चार मास तक। फिर सौ रुपये को भी न मिलेगी।

पता—

ज्योतिषरत्न प० अयोध्याप्रसाद मिश्र

JHANSI झांसी नं० २१

५) प्रतिवार

व्यापार-संसार

दिल्ली का व्यापार

साप्ताहिक रिपोर्ट

(इंडस्ट्री सुपरिन्टेन्डेन्ट दिल्ली द्वारा)

२३ अगस्त

सोने का बाजार स्थिर रहा और सोने का भाव ३४॥) पर ही स्थिर रहा स्थानीय बाजार में व्यापार साधारण रहा। गत सप्ताह ३४।≈) दाम थे, आज ३४॥) है। इसी तरह गिनी के दाम २२=)॥ से २२=) हो गये हैं।

चांदी का बाजार भी स्थिर रहा। भाव ६४॥−) से ६५॥।−) तक घटते बढ़ते रहे। पिछले सप्ताह ६६॥−) दाम थे, आज ६५॥−) हैं। अभी तक भी रुख नीचे होने का है।

कपड़े—देसी कपड़े का बाजार बहुत मंदा रहा, क्योंकि मांग बहुत कम हुई है, इस सप्ताह दिल्ली के 'पीसगुडस' के बाजार में कोई उन्नति नजर न आई।

अनाज—इस सप्ताह अनाज का बाजार एक सा रहा। आज के भाव यह हैं:—

गेहूं (शरबती)	२॥।−)।
सफेद	२॥≈)
चावल (१)	१६)
(२)	१३)
दालें उर्द	५॥)
मूंग	३॥।≈)
अरहर	६॥)

हिन्दुस्तान में बहुत गेहूं जमा हो गया है

ठिकाने पर पहुंचाने का प्रबन्ध हो रहा है

माल भेजने के सम्बन्ध में स्थानीय जहाजों के दलालों में जांच करने पर ज्ञात हुआ है कि प्रति दिन १३,००० बोरी गेहूं करांची में आती है और इस समय गोदामों में ११ लाख बोरियां जमा हो चुकी हैं। व्यापारी लोग प्राणपण से प्रयत्न कर रहे हैं कि इस माल को ठिकाने पर पहुंचा दें। 'माई सरवाई' जहाज जो कि १५ दिन पहिले कलकत्ता के लिए रवाना हुआ था, वहां पहुंच चुका है और उसके अधिकारी 'बरोदे कमांद' जहाज से पत्र-व्यवहार कर रहे हैं ताकि उस जहाज द्वारा एकत्रित माल यथास्थान पहुंचाया जा सके।

मर्चेण्टस कान्फरेन्स ने माल भेजने की दर ५) से ४) रु० कर दी है। इस प्रकार कलकत्ते के बाजारों में बराबर हो गई है।

विदेशों में गेहूं की हालत

(निज सम्वाददाता द्वारा)

अमरिका के संयुक्त देश से विशेष रूप से जो समाचार मिले हैं उन से ज्ञात होता है कि सन् १६३५ की गेहूं की पैदावार तथा रकबे का अन्दाजा क्रमशः ६०-० लाख बुशल तथा ५२२२६ हजार एकड़ है। जब कि पिछले वर्ष की संख्या क्रमशः ४६६० लाख बुशल और ४२२३५ थी।

कनडा में गेहूं की बुआई के रकबे का अन्दाजा इस वर्ष २४११६ एकड़ है और पैदावार का अन्दाजा औसत से ८६ प्रतिसत है।

आस्ट्रेलियन गेहूं की पैदावार का अन्दाजा १८४४३० बुशल (३६०१०००) टन है जो कि पिछले वर्ष से २४ प्रतिशत कम है।

अरजेण्टाइन में पैदावार का अन्दाजा ६३८२००० टनों का है जब कि पिछले वर्ष ७६६२००० टन था। १६३५ ३६ की फसल के लिये बुआई का काम वर्षा न होने की वजह से हलका पड़ा है और अगले साल का रकबा इस साल से भी कम रहेगा।

इटली की पैदावार का अन्दाजा इस वर्ष का ७५१४००० टन का है। जब कि पिछले वर्ष की संख्या केवल ६२३३००० टन थी।

यूरोपीय देशों में गेहूं का रकबा हजारों में

	सन १६३५	सन १६३४
फ्रांस	१३२३४	१३२०२
स्पेन	११०६३	११०३६
रूमानिया	७४५८	६८२४
यूगोस्लेविया	५३५४	५०८१
जरमनी	५३२६	५४३१
पौलेंड	४४०१	४३८२
बलगेरिया	३०३७	३०५७
ग्रीस	२०२०	१६८३

१६३४-३५ में गेहूं की पैदावार

अन्तिम भविष्यवाणी

सन् १६३४-३५ में भारतीय गेहूं की पैदावार के बारे में अन्तिम फोरकास्ट निम्न प्रकार है.—

सं० प्रां० में गेहूं का दाना बहुत पतला पड़ जाने से पैदा बहुत कम हुई थी। पैदावार की औसत इस वर्ष ६३२ पौंड फी एकड़ और पिछले साल ५८६ पौंड थी। उपरोक्त रिपोर्ट ८८ प्रतिशत रकबे की दी है इसके अलावा जो रकबा बाया जाता है वहां की पैदावार का अन्दाजा क्रमशः ५४६००० एकड़ और १५४००० टन है। अलग २ प्रान्तों में पैदावार और रकबा इस प्रकार है:—

प्रान्त	पैदावार १००० टनों में	एकड़ रकबा १००० में
पंजाब	३४६८	
सं० प्रां०	२५५४	१०४८३
मध्यप्रान्त व बरार	७८१	३७१३
बम्बई	७०६	३३८४
बिहारउड़ीसा	५०५	११६७
उत्तरीय पश्चिमीप्रांत	२३१	६६४
बंगाल	५१	१५५
देहली	१२	३४
अजमेर	६	३०
मध्यभारत	४१६	२३१६
राजपूताना	३८३	१५२०
ग्वालियर	३६४	१६४६
हैदराबाद	१५६	१२५६
बड़ोदा	१७	७४
मैसूर	×	२

इस वर्ष कुल रकबा बुआई का ३४४८५००० एकड़ था, जबकि पिछले वर्ष ३५६६२००० एकड़ था। पैदावार का अन्दाजा जो कि कट चुकी है, ६७२४००० टन है पिछले वर्ष ६४१४०००टन थी। एकड़ों में ४ फी सदी की कमी और पैदावार में ३ फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। सूबवार सूची देखने से पता चलता है कि लगभग तमाम सूबों में जहां कि गेहूं बोया जाता है पैदावार बढ़ा।

चांदी के बाजार में खलबली

अमरिका ने खरीद बंद की

कुछ समय पहले अमरिका ने चांदी की खरीद की थी, जिसके कारण चांदी के दाम एक दम बढ़ गये थे। और भारत के भी बड़े २ व्यापारियों ने भारी मात्रा में चांदी खरीद रखी थी। अब अमरिका के खरीद अकस्मात् ही बन्द करने से चांदी के दाम एकाएक गिर गये। इससे बम्बई के चांदी के व्यापारियों में बड़ी घबराहट फैल गई है। अनेक कम्पनियां ठीक लेनदेन न कर सकीं। चांदी के बाजार में क्रान्ति आन लगी, इस लिये दो तीन दिन के लिये वह बाजार ही बन्द कर दिया गया है। ३। प्रतिशत की सिक्यूरिटी के दाम भी कम होगये हैं।

युद्ध की संभावना और बाजार

अबीसीनिया-इटली की लड़ाई अभी शुरू नहीं हुई परन्तु उसकी सम्भावना ने बाजार पर असर करना शुरू कर दिया है लण्डन के स्टाक एक्सचेन्ज में उदासी छा गई और प्रायः सभी तरह के शयरों के भाव गिरने लगे हैं, इसके विरुद्ध गेहूं, रूई, मक्का आदि अनाज और जिन धातुओं से सिक्के बनते हैं, उनके दाम बढ़ने लगे हैं। विदेशी विनिमय में सरकारी तौर पर लीरा की दर कायम रखने का दृढ़ता से यत्न किया जा रहा है, पर सौदा बहुत कुछ गैरसरकारी तौर पर उसके दाम कम आंक कर ही हुआ है। बैंकर और माल भेजने वाले व्यापारी इटली के साथ कोई ऐसा नया सौदा करना भी नहीं चाहते, जिससे उनका रुपया वहां फंसता हो। 'न्यूज क्रानिकल' के अनुसार लण्डन के पांच बड़े बैंकों में से एक ने तो इटली में लगी हुई अपनी सब पूंजी को वहां से मंगवाया है।

यह भी खबर है कि बम्बई में इटली और अबीसीनिया की सरकारों के लिये अनाज तथा आवश्यक सामान की खरीद की जा रही है। कलकत्ता में जूट की बोरियों का आर्डर अधिक आने की संभावना की जा रही है।

निजाम हैदराबाद और आर्यसमाज

स्थानीय प्रतिनिधि सभा ने अवज्ञा शुरू कर दी

सब आर्यसमाजें तैयार रहें

आर्य सार्वदेशिक सभा के मंत्री सूचित करते हैं कि निजाम हैदराबाद में आर्यसमाज के प्रचार पर जो पाबन्दी लगाई गई है, उसके विरुद्ध आर्यप्रतिनिधि सभा निजाम स्टेट ने प्रचार शुरू कर दिया है क्योंकि अधिकारियों से सब प्रार्थनायें बेकार गईं। सार्वदेशिक सभा ने भी सहायता का आश्वासन दिया है और गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक प्रसिद्ध आर्य मिशनरी पं० केशवदेव शर्मा को हैदराबाद भेजा है। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों से अपील है कि वे महान से महान बलिदान के लिये तैयार रहें।

सिखों और मुसलमानों में फिर तनातनी

सिखों पर दो मुकद्दमे

शहीदगंज की गूंज

लाहौर की स्थिति अधिकाधिक विषम होती जा रही है। शहीदगंज को आंदोलन एक बार समाप्त हो कर फिर जारी होने के आसार नजर आ रहे हैं।

मुसलमानों ने शहीदगंज गुरुद्वारे के सम्बन्ध में एक नई शिकायत पेश की है कि सिख लोग उन की एक कबर को, जो कि गुरुद्वारा के आंगन में विद्यमान है। उखाड़ रहे हैं। यह समाचार मिलते ही सीनियर पुलिस सुपरडंट मि० रमल, मजिस्ट्रेट तथा अन्य आफिसरों के साथ तुरन्त घटना स्थल पर पहुंचे। वहां कोई कबर नहीं दिखाई पड़ी। एक पब्लिकवर्क्स इञ्जीनियर को इस बात के लिए नियुक्त कर दिया गया है कि वह जांच करके बताये कि कोई कबर वहां खोदी गई है या नहीं। इंजीनियर की रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने ४ सिखों को, जिन में एक औरत भी है, ताजीरात हिन्द की दफा २९५ और २९७ के मातहत गिरफ्तार कर लिया। औरत बाद में १०००) की जमानत पर रिहा कर दी गई।

गत शनिवार की रात को एक भीड़ ने गुरुद्वारा शहीदगंज का सामा में घुसने का भी प्रयत्न किया परन्तु पुलिस ने उन्हें बलपूर्वक तितर-बितर कर दिया।

मकबरे की खोज

शनिवार को सारे दिन मिस्मार की गई मस्जिद के मलबे में एक मजिस्ट्रेट व सिख मुसलिम नेताओं के सामने मकबरे की खोज होती रही है, बड़ी खोज के बाद कुछ ऐसी ईटें दिखाई दीं, जिन पर सीमेन्ट लगी हुई थी। मुसलिमों ने उसी को मकबरा बतलाया।

सिखों ने उसे पेशाब के बर्तनों के टुकड़े बताये। इसी सिलसिले में सिखों पर एक मुकद्दमा दायर भी किया है। खाकसार एसोसियेशन के मन्त्री ने दूसरा मुकद्दमा कब्र के गिराने के अभियोग में दायर किया है। इसमें मि० खलीफा लतीफ गौबा एम० एल० ए० मुसलमानों की ओर से वकालात कर रहे हैं।

शहीदगंज गुरुद्वारा और पीर-ककूशाह के मकबरे के सम्बन्ध में विचार करने के लिए मुसलमान नेताओं और वकीलों की एक बैठक 'रियासत' पत्र के दफ्तर में गत २१ अगस्त को दोपहर के २ बजे हुई। यह फैसला किया गया कि—

ककूशाह की कब्र पर अधिकार के लिए दी गई दर्ख्वास्त के सम्बन्ध में मुसलमान पुलिस के साथ कोई बात चीत नहीं करेंगे और न कोई वक्तव्य देंगे, वे ऐसा करने को बाधित भी नहीं हैं। यह पुलिस का काम है कि वह उचित जांच-पड़ताल के बाद मुकद्दमे का चालान पेश करे।

— —

कां० स्वागत समिति का चुनाव

बैलटों द्वारा होगा

डा० मुरारीलाल को कार्यभार मिपुर्द

गत १८ ता० को लखनऊ में कां० स्वागत समिति के पदाधिकारियों का चुनाव श्री श्रीप्रकाश की अध्यक्षता में हुआ। चुनाव में दोनों पार्टियों के लोग पूरे बल के साथ उपस्थित थे।

स्वागत समिति के अध्यक्षपद के लिये श्री प० जवाहरलाल नेहरू का नाम पेश हुआ और सर्वसम्मति से स्वीकृत होगया। इसके बाद मन्त्री पद के लिए श्री चन्द्रभानु गुप्त और श्री मोहनलाल सक्सेना के नाम पेश हुये। बैलट डालते समय गड़बड़ बहुत बढ़ गई। इसलिए सभापति ने सभा भंग कर दी। इसके बाद संयुक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की विशेष बैठक हुई, जिसमें यह निश्चय हुआ कि स्वागत समिति का सम्पूर्ण कार्य-भार लखनऊ टाउन कांग्रेस कमेटी से लेकर कानपुर के डा० मुरारीलाल को सोंप दिया जाय ताकि प्रतिद्वन्द्वी कांग्रेस दलों के झगड़े से समिति के काम को ठेस न पहुंच सके।

यह भी निश्चय किया गया कि स्वागत समिति के सदस्य' की भरती १५ अक्तूबर तक जारी रखी जायगी और पदाधिकारियों के चुनाव के लिए बेलट पेपर सीधे सदस्यों के पास ही भेजे जायेंगे, जो कि २० नवम्बर तक वापिस करने पड़ेंगे। बाद को प्रांतीय कांग्रेस कमेटी पदाधिकारियों के चुनाव का नतीजा घोषित कर देगी।

पदाधिकारियों का चुनाव करने के लिए अब स्वागत-समिति की कोई बैठक नहीं होगी, क्योंकि इस प्रकार की दो बैठकें व्यर्थ साबित हो चुकी हैं।

———

क्वेटा में सफ़ाई

बहुतसी दुकानें साबुत निकलीं

क्वेटा में सफाई का काम जोर शोर से जारी है। गवास-रोड, ब्रूस रोड गुरुदत्तसिंह रोड और शाहमोहम्मद रोड भी साफ की जा चुकी हैं। आजकल जिन सड़कों की सफाई को जा रही है वे मलवे से पटी पड़ी हैं।

६०० भूकम्प पीड़ित

अब यहां के कैम्पों में भूकम्प पीड़ितों की संख्या ६०० से भी कम रह गयी है।

भूकम्प में गिरे मकानों की सफाई भी कुछ कुछ शुरू होगई है और जो मालमता उन में से निकल रहा है वह मकान मालिकों अथवा सम्पत्ति के असली हकदारों को दिया जा रहा है। बहुत सी दुकानें अन्दर सही सलामत निकल रही हैं।

सम्पत्ति के हकदारों को ठहराने के लिए टीन की झोंपड़ियां बनाई जा रही हैं।

देहातों में सफाई कार्य

बलूचिस्तान के देहातों में भी शीघ्र ही सफाई का काम शुरू किया जायगा। इस काम में १। लाख के लगभग रुपया खर्च होगा। यह भी खबर है कि भूकम्प पीड़ित ग्रामीणों को नये मकान बनाने के लिये सरकार की ओर से रुपये की सहायता दी जायगी।

———

कहानी

(पृष्ठ २२ का शेष)

मेहताब ने हाथ नचा कर कहा, देखिये तो ! आप कम्पनी के मालिक बने हैं, आप की तसवीर गजट में छपा करने लायक है जनाब !

इतने में डाइरेक्टर ने कमरे में पैर रखा, उन्हें देखते ही उसने पूछा "क्या डाइरेक्टर साहब आप ने बनारस से मुझे इस लिए बुलवाया है कि मैं इस बूढ़े

"चुप रहो मेहताब ! मालिक कम्पनी से अदब करो"

"क्या यह वाकई में हमारे मालिक हैं ? तो फिर बन्दी लाख लाख गुनहगार है मेरा खता माफ हो हुजूर" कह कर मेहताब मालिक की बगल में जा खड़ी हुई और बोली "अल्लाह ने खैर की हुजूर जो आपने मौके पर आकर मुझे बचा लिया, वरना यह शख्स तो मुझे उड़ा ले जाने की फिक्र में था ।'

डाइरेक्टर ने आंखे फाड़ कर नरेन्द्र से पूछा 'क्यों जी आप कौन हैं ? यहां कैसे आना हुआ आप का ?"

"जी मैं आप के बापा के सेठ का "हेट कलक्टर' हू कम्पनी पर चढ़ा हुआ रुपया वसूल करने आया हू"

मालिक कम्पनी बड़ी नरमाई से बोले "मुझे माफ कीजिये, अगर मैं कुछ ज्यादा कम बोल गया हू देखिये, सेठ जी से मेरी जय श्री कृष्ण कह देना और मेरी तरफ से अर्ज कर देना कि हमारी नयी पिक्चर परदे पर आते ही हम हिसाब कर देंगे।"

'कितने दिन और लगेंगे आप की पिक्चर को ?

"अभी तो 'आउट डोअर' शूटिंग हो रहा है करीब दो महीने तो और लग ही जायेंगे

हम बहुत ठहर चुके, सेठ साहब, अब हमारी लाचारी है कल आपके पास हमारे वकील का नोटिस आजायगा इतना कह कर नरेन्द्र वहां से जाने लगा ।

ठहरिये, जरा आप, कहते हुये सेठजी ने अपने मनीबैग से सौ-सौ के पांच नोट निकाले और नरेन्द्र की तरफ अपना हाथ बढ़ाते हुये कहा आप दो महीने और निभा लीजिये मुझ पर बड़े अहसान होंगे आपके, मैं आपका भूलूंगा नहीं यह लीजिये आपके लिये

आपही रखिये इन्हें, कह कर नरेन्द्र कमरे के बाहर चला और दरवाजे में कुछ देर रुक कर बोला 'जब जब भी मौका मालूम होगा आपको अपना और ये मेहताब इन पांचसौ रुपयों के लिये पांच महीने आपके आगे पानी नाचा करेगा

पं० रामगोपाल विद्यालंकार प्रिंटर और पब्लिशर के लिये अर्जुन प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली में छपा